प्रथम संस्करण : अक्तूबर, १९५७

मूल्य
बारह रुपये

प्रकाशक : राजपाल एंड संज़, दिल्ली
मुद्रक : नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, दिल्ली

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रथ की आवश्यकता उसका लेखन प्रारभ करने से बहुत पहले प्रतीत हुई थी। हिदी का लेखक प्राय: संसार के सारे साहित्यो के लेखको से कम पढा-लिखा है। यह दर्द की बात है और मै यह कहते हुए अपने को भी उसी वर्ग में गिन रहा हूँ। लगा कि इस प्रकार का साहित्य प्रस्तुत कर दिया जाय जिससे दूसरे साहित्यो का ज्ञान हमारे सक्रिय लेखको को हो और वे जानें कि हमें और बहुत जानना है और कि हमारे समानधर्मी विदेशी साहित्यकारो ने किन-किन परिस्थितियो में कैसी-कैसी कृतियो का सृजन किया है। इसी उद्देश्य को सामने रखकर प्राय. छ महीने की दिन-रात की मेहनत से इसे प्रस्तुत कर सका हू। ग्रथ के सम्बन्ध में किसी प्रकार की मौलिकता का दावा स्वाभाविक ही नही करता। मेहनत का दावा जरूर करता हूँ क्योकि बड़ी-बडी पुस्तको को छान-निचोड़कर आखिर ग्रथ के विविध साहित्यो के इतिहास प्रस्तुत हुए है। हां, उस छान-निचोड की दिशा में यदि कुछ वैभव बन पड़ा हो तो, पडितो और लेखको की तृप्ति से, सुख पाऊगा। आशा करता हूं कि लेखक ग्रथ को पढेंगे और विविध साहित्यो से बल प्राप्त करेंगे। इसी उद्देश्य को सामने रखकर पुस्तक लिखी गई हैं, इसी उद्देश्य से यह लेखको को ही समर्पित भी हुई हैं।

'विश्वसाहित्य की रूपरेखा' की पाडुलिपि आज पाच साल से ऊपर हुए तैयार होकर पडी थी। आज तक ग्रन्थ क्यो नहीं छप पाया इसकी एक कहानी है, जिसे कहने की जरूरत नही। वर्तमान प्रकाशको ने इस बडे ग्रन्थ को छापकर मेरा और लेखको का हित किया है।

कहना न होगा कि ग्रन्थ लिखने में मुझे प्रभूत परिश्रम करना पडा था, और कार्य खोज के आनन्द से भी संयुक्त न था, निरंतर श्रम का था।

काशी
१९-९-५७

भगवतशरण उपाध्याय

हिन्दी के लेखकों को समर्पित

अनुक्रमणिका

१. अंग्रेजी साहित्य

: १ :

ऐंग्लो-सैक्सन साहित्य

(६००-१०६६ ई०)

इस देश के निवासियो के लिए, जो अपना इतिहास सहस्राब्दियो मे गिनते हैं, इंग्लैंड का इतिहास बहुत प्राचीन नही। उसके साहित्य का इतिहास तो अपेक्षाकृत नितान्त आधुनिक है। साधारणत उसका आरम्भ कवि चॉसर[1] से माना जाता है।

आरभ

परन्तु चॉसर से पहले ही अग्रेजी साहित्य का जन्म हो गया था, यद्यपि चॉसर पूर्व के छह सदियो के उस साहित्य को कुछ समृद्ध नही कहा जा सकता।

अग्रेजी का उद्भव ऐंग्लो-सैक्सन बोली से छठी सदी ई० मे हुआ। इससे पूर्व इग्लैंड पर ५५ ई० पू० से ४१० ई० तक रोमन्ज़ का अधिकार रह चुका था, फलत वहाँ लैटिन भाषा का प्रभुत्व था। रोम पर आई आपत्ति के समय जब रोमन्ज़ अपने देश लौट गए तो इग्लैंड के देशज सैल्ट्स ने अपनी रक्षार्थ जर्मन निवासी जूट्स को निमत्रित किया जिनके पीछे-पीछे सैक्सन्ज़ और ऐंग्ल्ज़ इग्लैंड पहुँचे। उनकी भाषा और साहित्य का प्रभाव सातवी सदी के अग्रेजी साहित्य पर प्रकट रूप से दिखाई देता है। यह सही है कि उस काल का साहित्य जिस भाषा मे प्रस्तुत हुआ वह भी अग्रेजी कहलाती है, यद्यपि आज हम उसे अपने प्राकृत रूप मे नही समझ सकते, अनुवाद-रूप मे ही पढ पाते है। इसी कारण कुछ विद्वानो ने उसे अग्रेजी मानने मे भी आपत्ति की है। परन्तु विशेष अन्तर काल की दूरी ने डाल दिया है और चॉसर-कालीन भाषा-साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप मे ही चाहे क्यो न हो, हमें उस प्रारभिक अग्रेजी साहित्य पर एक नजर डालनी ही होगी। उस प्राक्-चॉसर-साहित्य के निर्माण का सबध दो विशेष घटनाओ से है। उनमें एक तो छठी सदी ईस्वी मे ऐंग्ल्ज़, सैक्सन्ज़ आदि का इग्लैंड-प्रवेश है, दूसरी ५९७ ई० मे ऑगस्टाईन[2] का केन्ट मे ईसाई धर्म का प्रचार।

प्राचीन काव्य

जर्मन लोग जहाँ जाते थे, आज ही की भाँति, वे अपनी अनुश्रुतियाँ भी साथ लिये

---

१ Geoffrey Chaucer (१३४०-१४००); २ Saint Augstine (मृ० ६०४)

जाते थे। चॉसर-पूर्व का अंग्रेजी काव्य इन्ही जर्मन अनुश्रुतियो पर अवलंबित है। यह काव्य तत्कालीन पश्चात्कालीन हस्तलिपियो मे इग्लैड के अनेक सग्रहालयो में अशत आज भी सुरक्षित है। इनमें 'बोवुल्फ' की काव्य-बद्ध कथा विशेष महत्व की है। कथा के रूप मे तो 'बोवुल्फ' की अनुश्रुति इग्लैड मे एग्ल्ज के आगमन के साथ ही पहुँच गई थी परन्तु उसका पद्याकन सातवी सदी के अन्त (प्राय ७०० ई०) में हुआ, जब भारत मे हूणो की रौदी भूमि पर जहाँ-तहाँ राजपूत-राजकुल खडे हो रहे थे। 'बोवुल्फ' की हस्तलिपि अठारहवी सदी मे जलते-जलते बच गई थी और उसकी सिकी-तपी प्रति आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में सुरक्षित है। जर्मन काव्य से सबधित 'वाल्डेयर' नामक काव्य के भी दो अश पिछली सदी मे उत्तरार्द्ध में कोपेनहागेन के राजकीय पुस्तकालय में मिल गए थे।

'बोवुल्फ' की कथा का सबध इग्लैड अथवा एग्ल्ज से नही है। जर्मन जाति सदा से अपनी अखडता मे विश्वास करती आई है। इसी से वह इस स्कैंडिनेविया (नॉरवे, स्वीडन, डेनमार्क) सबधी अनुश्रुति की रक्षा भी कर सकी। कथा अनैतिहासिक है, ग्रेन्डेल नामक उस दैत्य की, जो डेनराज ह्रोथगर की सभा को भयानक रूप से भग कर दिया करता है और जिसका सहार अपने दल की सहायता से बोवुल्फ नाम का पराक्रमी वीर करता है। काव्य के उत्तरार्द्ध मे बोवुल्फ राजा बनकर अग्निदैत्य से अपने देश की रक्षा करता है। निश्चय ही कथा कल्पित जगत् की है, परन्तु उसमे जो वीरो के दरबार, उनका रहन-सहन, आपान आदि का वर्णन है, वह तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। काव्य की पक्तियाँ अतुकात और लबी है, किंतु प्रत्येक पक्ति में अनुप्रास की रवानी है और कवि की भारती तो नि सदेह विशद है, अशत लाक्षणिक भी। वस्तु-नाम उसने साधारणत चित्र-नाम से अकित किये हैं। उदाहरणत समुद्र को वह 'हस-पथ' और शरीर को 'पजरालय' कहता है।

यह जर्मन अनुश्रुति-प्रधान काव्य ईश्वरवादी ईसाई धर्म के विश्वासो से सर्वथा मुक्त है, यद्यपि अपने निर्माणकाल में, उस धर्म-प्रचार का समसामयिक होने के कारण, उसमें जहाँ-तहाँ ईसाईवादी विधि-क्रियाओ का उल्लेख हो गया है। उसकी काव्यधारा सशक्त है—महाप्राण, अतीव शालीन, वीरकाव्यसी।

इसी जर्मन परपरा में कुछ और खण्ड-काव्य या स्फुट कविताएँ है, जिनकी वेदना-व्यजक अनुभूति पाठक के हृदय को छू लेती है। इनमे प्रधान है 'दि ड्योर्स लेमेंट', 'दि मेडन्ज कम्प्लेंट', 'दि हज्बैड्ज मैसेज', 'दि रुइन, 'दि वाडरर', 'दि सीफेअरर'। अधिकतर कविताएँ जर्मन सामन्तो के दरबारो की है, शक्तिमय वीरकार्यो की।

धर्म-काव्य

इन कविताओ का सबध तो उस जर्मन जीवन से है जो ऐंग्ल-सैक्सन-जूट्स के साथ

अनुश्रुतियो की परपरा मे इग्लैंड पहुँचा। इनके अतिरिक्त उस प्राक्-चॉसर-काल मे ईसाई धर्म के प्रादुर्भाव ने भी कुछ कम काव्य स्फूर्ति नही सिरजी।

छठी सदी ईस्वी के अन्त मे आगस्टाईन ने रोम से इग्लैंड जाकर केट के जूट्स को ईसाई बनाना शुरू किया। इसी काल आयरलैंड के ईसाई साधुओ ने भी, नॉर्थब्रिया में अपने मठ बना, प्रचार-कार्य प्रारभ किया। इसी प्रचार-प्रेरणा से तत्कालीन धर्म-काव्य प्रस्तुत हुए। इनकी कथाएँ तो ईसाई धर्म की थी, पर वाक्यावली, शब्दयोजना, काव्यप्रवाह सभी कुछ उसी पुरानी जर्मन अन-ईसाई परपरा का था। ईसाई धर्म के समसामयिक प्रचार मे इस नीति ने दूरगामी सफलता पाई। 'अन्द्रियाज' उसी परपरा का काव्य है, जिसमें सेट एन्ड्रू द्वारा सेट मैथ्यू की रक्षा वर्णित है। इस काल के दो कवि विशेष जाने हुए है—कीड-मन[१] और 'साइनेवुल्फ'[२]। इन्होने अनेक ईसाई सन्तो की कथा काव्यबद्ध की। 'बाइबिल' की अनेक कथाओ को इन्होने काव्य का रूप दिया। 'सेट जुलियाना', 'एलीनी' अथवा 'हेलेन', 'जूडिथ' आदि उस काल की कुछ जानी हुई कृतियाँ है। इनमें 'दि ड्रीम ऑफ दि रूड' जहाँ प्राचीन अग्रेजी काव्यो में कल्पना के क्षेत्र में अपना सानी नही रखता, वहाँ 'जूडिथ' (निरकुश होलोफर्निज़ का जूडिथ द्वारा सहार) ऐंग्लो-सैक्सन काव्य-परपरा में लोमहर्षक वर्णन और अभिनयोचित तथ्य मे बेजोड है। कीडमन और साइनेवुल्फ के व्यक्तिगत जीवन के आँकडे हमे उपलब्ध नही।

प्राचीन गद्य

यह तो हुई उस काल की काव्य-रचना, पर तब का गद्य-सृजन भी कुछ कम महत्व का नही। वस्तुत उस दिशा के गद्य-प्रयास अनेकार्थ में काव्य से अधिक महत्व के है। कम से कम उस काल के अग्रेज लेखको और विद्वानो को हम कवियो की अपेक्षा अधिक जानते है। शेरबोर्न का बिशप आल्धेलम[३] पहला ज्ञात व्यक्ति है, जिसने इग्लैंड मे अलकृत लैटिन मे गद्य-रचना की। तब की रचनाएँ लैटिन में ही है। परन्तु उस काल का महान् पडित और रचयिता बीड[४] है, जिसने अरबो से आक्रात यूरोप के इस पश्चिमी द्वीप में सस्कृति का एक प्रशस्त केन्द्र स्थापित किया और जिसके 'दि एक्लेज़ियास्टीकल हिस्ट्री ऑफ दि ऐंग्ल्ज़' (लैटिन मे) ने उसके लिए अक्षय कीर्ति अर्जित की। बीड इतिहास, ज्योतिष आदि का प्रकाण्ड विद्वान् था, यद्यपि जैरो के मठ से आए तपोनिष्ठ साधुओ में उसका स्थान विशिष्ट था। बीड के कुछ ही काल बाद डेन्ज के आक्रमण शुरू हुए। उन्होने अग्रेजी सस्कृति पर विकराल चोटे की। परन्तु उन चोटो और अत्याचारो का जनता ने खुलकर सामना भी किया। ऐंग्ल-सैक्सन राजा ऐल्फ्रेड[५] ने अपने देश की रक्षा मे स्तुत्य कार्य किया। वह

---

१ Caedmon, २ Cynewulf, ३ Aldhelm (६५०-७०९), ४ Bede (६७३-७३५), ५ King Alfred (८४९-९०१)

केवल सैनिक ही न था, भोज की भाँति वह विद्या-व्यसनी भी था। समर से समय मिलते ही भोज की ही भाँति वह भी भारती का रूप सँवारता। उसने ग्रेगरी महान् के 'पैस्टोरल राइल' का अनुवाद प्रस्तुत किया और बीड के इतिहास का अग्रेजी रूपान्तर अपनी प्रजा को दिया। उसके किए अन्य अनुवादो में ओरोसियस का 'दि यूनिवर्सल हिस्ट्री' और बोएथियस का 'दि कन्सोलेशन आफ फिलॉसफी' है। इसी काल उसी नृपति के तत्वावधान में 'दि क्रॉनिकल आफ विंचैस्टर' नामक एक राष्ट्रीय इतिहास भी प्रस्तुत हुआ। इससे उस काल के इग्लैड के विदेशियो के साथ सघर्ष, तप और त्याग का परिचय मिलता है।

प्रथम लैटिन-इग्लिश शब्दकोष

इसी डेन-आक्रमण-काल मे दो धर्म-गुरुओ ने अत्यन्त निर्भीकता और साहस के साथ अपने उद्गारो और रचनाओ द्वारा अपनी जनता का नेतृत्व किया। ये थे, ईल्फ्रिक[१] और वुल्फस्टैन[२]। ईल्फ्रिक ने पहला लैटिन-इग्लिश कोष तैयार किया, अग्रेजी में अपने प्रवचन दिए और मधुर प्राय गेय गद्य में अपने श्रोताओ को 'बाइबिल' का सन्देश सुनाया। वुल्फस्टैन की वाणी देश के शत्रुओ के विरुद्ध उठी और वह अपने राजा ईथेलरेड को भी उसकी कमजोरी और कायरता के लिए विधिवत् धिक्कारने से न चूका। डेन्ज़ के अत्याचारो के बीच उसके अग्रेजी में दिये प्रवचन वायु में गूँज उठे। उसके 'प्रवचनो' ने जनता में अपने शत्रुओ के विरुद्ध एक नई स्फूर्ति भर दी।

: २ :

साहित्यिक आदर्श में परिवर्तन

नार्मन विजय से चॉसर तक (१०६६-१३५०)

नार्मन्ज़, जिन्होने १०६६ ई० में इग्लैड को विजय किया, डेन्ज़ के भाई-बद होते हुए भी, भाषा और सस्कृति की दृष्टि से फ्रैंच बन चुके थे और फ्रैंच विधि तथा प्रशासन के साथ-साथ वे साहित्य मे भी फ्रैंच आदर्शों के प्रवर्तक बने। ऐंग्लो-सैक्सन साहित्य मानो इस द्वीप से लुप्त हो गया। नये मॉडल प्रस्तुत हुए जिनमें 'चॉसन डे रोलेंड' तथा 'रोमन डे ला रोज' का यथेष्ट स्थान है। नार्मन विजय के सौ साल पश्चात् नये साहित्य की रचना होने लगी जिसे 'ऐंग्लो-नार्मन' साहित्य की सज्ञा दी जाती है और जिसे हम ऐंग्लो-सैक्सन और फ्रैंच परपरा का घोल कह सकते है।

इस नई परपरा में लिखित पहला ग्रथ 'पोयमा मौरेले' (११७०) था जो पूर्णत धार्मिक रग में रँगा है और जिसमें आक्रात ब्रिटन्ज़ की लाचारी झलकती है। ब्रिटन्ज़ के दिलो

---

१. Ælfric २. Wulfstan

मे आत्मविश्वास उत्पन्न करनेवाली कृति का सृजन (१२००) लायामन[1] ने किया। लायामन ने वारसे की कृति 'ब्रूट' का अनुवाद प्रस्तुत किया था जिसमे नार्मन्ज़ की बर्बरता का चित्रण है किन्तु उसने अपनी ओर से भी कहानियाँ जोडी है जिनमे किंग आँर्थर की कहानी उल्लेखनीय है।

नार्मन्ज़ के अतिरिक्त और भी बहुत से प्रभाव काम कर रहे थे। अरब जिन्होने भारत और चीन से बहुत कुछ सीखा था समस्त यूरोप को नये विचारो से ऋद्ध कर रहे थे। क्रूसेड्ज़ (अर्थात् यूरोसेलेम को तुर्कों से छुडाने के लिए ईसाइयो ने जो युद्ध किये) ने भी नये विचारो का सचार किया। इसके फलस्वरूप इंग्लैड में भी स्फूर्ति दिखाई देने लगी। 'कर्सर मुडी' (१३२०) जो 'न्यू टैस्टेमेंट' की कहानियो का सग्रह है एक अपूर्व ग्रन्थ है। इससे पूर्व १३०३ में रॉबर्ट मानिंग[2] ने फ्रैंच कहानियो का अनुवाद प्रस्तुत किया था जिसका लोकपरक साहित्य में अपना स्थान है। इनके अतिरिक्त, फेबल्ज़ जिन पर पचतत्र की कहानियो का प्रभाव दीख पडता है प्रचलित हुई। इन कहानियो मे 'दि वीपिंग विच', 'दि फॉक्स एड दि वुल्फ', 'स्प्रिग टाइम' तथा 'दि साग ऑफ दि हज़्बेंडमन' प्रसिद्ध है।

इस काल के लेखको में से केवल एक ही लेखक के जीवन-चरित का पता चलता है। वह था रिचर्ड रोल्ले[3] जो पुराने तपस्वी सन्तो और फॉक्स, बुन्यन तथा वेज्ले मे सयोजन का काम करता है। इस काल का अन्त लॉरेंस मिनोट[4] से होता है जिसने ऐडवर्ड तृतीय[5] की विजयो का हाल लिखा।

इग्लैड में एक नई शैली का उद्भव होने लगा जो व्यग्य प्रधान थी। इस शैली का रूप 'दि आउल एड दि नाईटिंगेल' मे दिखाई देता है।

लैटिन और फ्रैंच का रोमास (एक प्रकार का शौर्य काव्य) के प्रभावाधीन इग्लैड में 'हेवैलॉक' तथा 'हॉर्न' की रचना हुई। इसी प्रभाव के फलस्वरूप ऑर्थर की गाथाये पुन. जीवित हो उठी।

: ३ :

अंग्रेजी काव्य

चॉसर और उसके परवर्ती (१३५०-१५१६)

आधुनिक अग्रेजी काव्य-साहित्य का आरभ ज्योफ्रे चॉसर से होता है। चॉसर सैनिक, राजनीतिज्ञ और विद्वान् था। मध्य-वर्गीय होने के नाते राज-दरबारो और साधा-

---

१ Layamon, २ Robert Manning, ३ Richard Rolle (ज० १२९०); ४ Laurence Minot; ५ Edward III

रण जनता दोनो के सबध में उसका ज्ञान असाधारण था। उसने फ्रास और इटली की यात्राओ में फ्रैंच और लैटिन काव्य-रचना का भी अभ्यास किया था। ओविड और वर्जिल की रचनाएँ उसे कण्ठाग्र थी। समसामयिक साहित्य का उसे समुचित ज्ञान था। रूपक और दरबारी भावाकनो मे उसे विशेष अभिरुचि थी। उसकी प्रारभिक कृतियो 'दि बुक ऑफ दि डचेज़' (१३६९) और 'दि हाउस ऑफ फेम' से रूपक और मध्यकालीन वस्तु-रचना के क्षेत्र मे उसे अच्छी ख्याति मिली। परन्तु उसके वास्तविक कीर्ति-स्तम्भ हैं—'ट्रॉयलस एण्ड क्रिसिडी' (१३८५-८७) 'दि लीजेन्ड ऑफ गुड विमेन' (१३८५) और 'कैन्टरबरी टेल्स'। इनमे अन्तिम रचना चॉसर समाप्त न कर सका था।

'ट्रॉयलस एण्ड क्रिसिडी' इटैलियन कथाकार बोकाचो के 'इल फिलोस्त्रातो' पर अवलम्बित है। पीछे यह शेक्सपियर के इसी नाम के नाटक का आधार बना। यह पद्य-साहित्य में एक प्रकार का उपन्यास है, जिसमें क्रिसिडी के प्रति ट्रॉयलस का प्रणय और क्रिसिडी की उपेक्षा तथा वचकता अकित है। रचना का भावतत्व आज की दुनिया में भी नितान्त सार्थक है और इसके चरित्रो की सजीवता आज भी सिद्ध है। इस महान् रचना की अपेक्षा 'दि लीजेन्ड ऑफ गुड विमेन', जिसमे क्लियोपेट्रा, थिस्बी, फिलोमेला, आदि नारियो के प्रणय-विषाद प्रतिबिम्बित है, गौण कृति है। इसमें फिर भी रूपको, लिरिको आदि की भरमार है।

पर चॉसर का यश विशेषत 'कैन्टरबरी टेल्स' पर अवलबित है। कैन्टरबरी जाने वाले तीर्थयात्रियो की कहानियाँ अद्भुत क्षमता और कुशलता से कही गई है। वैयक्तिक और सामूहिक दोनो रूपो से ये काव्य-कथाएँ मध्यकालीन मानवता का चित्रण करती है। अभाग्यवश 'कैन्टरबरी टेल्स' चॉसर समाप्त न कर सका।

जॉन गॉवर[१] ने भी अपनी रचनाएँ इसी काल मे की। वह चॉसर का समकालीन था। चॉसर की ही भाँति उसने भी फ्रैंच और लैटिन का ज्ञान प्राप्त किया और अंग्रेजी की ही भाँति उन भाषाओ में भी वह स्वाभाविक अधिकार से काव्य-रचना करता था। उसने भी अपने जीवन काल में ही इतनी ख्याति पाई कि कहते है, यदि चॉसर न हुआ होता तो उस काल का प्रतिनिधि कवि गॉवर ही होता।

विलियम लैंगलैंड[२] भी इसी काल हुआ और उसने पश्चिमी बोली मे अपनी 'दि विज़न ऑफ पीयर्स दि प्लाऊमैन' लिखी। यद्यपि लन्दन की भाषा अंग्रेजी की प्रति-भाषा बनती जा रही थी, फिर भी स्थानीय बोलियो का प्रभाव कुछ कम न था। चॉसर पश्चिमी बोली की कविताओ का विरोधी था। विलियम लैंगलैंड ने इसी बोली मे काव्य-रचना की। उसने समसामयिक समाज का अपनी कृति में भरपूर पर्दाफाश किया है। शासन

१ John Gower (मृ० १४०८), २ William Langland (१३३०-१४००)

की दुर्व्यवस्था, धन के अनाचार आदि प्रचुर परिमाण में चौदहवी सदी की इस असामान्य कृति मे प्रतिबिम्बित हे। लैंगलैंड आधुनिक समाज-शास्त्री की भाँति काव्यत समाज का विश्लेपण करता है। उसकी धारणा है कि श्रम और ईसाई धर्म की सेवा मे ही मनुष्य का कल्याण है। उसने ईसाई-जीवन के आदर्शों से अनुप्राणित अग्रेजी का सर्वोत्तम काव्य लिखा और उस क्षेत्र में महाकवि दाते के सन्निकट पहुँच गया। लगता है, यदि वह रहस्यवादी न हो गया होता तो निश्चय ही क्राति का अग्रदूत होता।

पन्द्रहवी सदी का काव्य-साहित्य सर्वथा नीरस तो नही कहा जा सकता परन्तु है वह प्रतीकत 'परावलबित'। उस सदी का अधिकतर काव्य चॉसर से अनुप्राणित और प्रकारत उसी की कृतियो का रूपान्तर है। स्वतन्त्र कृतियो का उस युग मे प्राय: अभाव है जिसका एक कारण शायद यह भी है कि चॉसर-सा सुकवि उसका पूर्ववर्ती प्रतीक है। टॉमस ऑक्लीव[1] और जॉन लीडगेट[2] इसी परपरा के कवि है और वह स्टिफेन हॉवेस[3] भी, जिसने 'दि पास्टाइम ऑव प्लेज़र' की रचना की। पन्द्रहवी सदी के पिछले सपक्ष में जॉन स्कैल्टन[4] नाम का समर्थ कवि हुआ। उसकी कविता में काव्यत्व की कमी है, व्यग्यात्मकता जहाँ-तहाँ फूहड़ तक है परन्तु परपरागत काव्य-सौदर्य के अभाव के बावजूद उसमें एक जनपरक ताजगी है।

स्कॉच कवि

स्काटलैंड में चॉसर का विस्तार अधिक योग्यता से हुआ। 'टैस्टेमेट ऑफ क्रेसिड' और 'किंगिस क्वेर' उस दिशा मे सुन्दर प्रयास है। चॉसर का अनुवर्ती होकर भी विलियम डनवर[5] 'टैस्टेमेट ऑफ क्रेसिड' के रचयिता रॉबर्ट हेनरीसन[6] के विपरीत अपने पैरो पर खड़ा है। मध्यकालीन चारण की भाँति उसकी वाणी तत्कालीन जीवन को मूर्तिमान् करती है। गैविन डगलेस[7] भी इसी परिवार का कवि है और यद्यपि उसकी अपनी स्वतन्त्र कृतियो ने आधुनिक आलोचको को विशेषत प्रभावित नही किया, फिर भी उसका वर्जिल का अग्रेजी अनुवाद नि सदेह सत्य है। स्कॉटलैंड के नृपति जेम्स प्रथम[8] की काव्य-मेधा उस काल सजग थी और उसके 'किंगिस क्वेर' मे राज-रचना का एक नमूना हमें उपलब्ध है।

---

१ Thomas Occlieve (१३७०-१४५४), २ John Lydgate (१३७३-१४५०), ३ Stephen Hawes (१४७५-१५३०), ४ John Skelton (१४६०-१५२९); ५. William Dunbar (१४६०-१५२०), ६ Robert Henryson (१४२५-१५००), ७ Gavin Douglas (१४७५-१५२२), ८ James I (१३९४-१४३६)

इटैलियन प्रभाव (१५१६–१५७५)

सोलहवी सदी के मध्य इटली का सर्वगामी प्रभाव इग्लैंड के साहित्य पर भी पडा। वियाट[1] और सरे[2] ने 'टोटेल्स मिसेलिनी' (१५५९) के नाम से कविता-सग्रह प्रकाशित किया। लार्ड सरे को कामुक राजा के कोप का शिकार बन तीस वर्ष की आयु में ही सिर कटाना पडा। वियाट ने चौदह पक्तियो के इटैलियन सॉनेट को अग्रेजी रूप में सजाया। इस सॉनेट-निर्माता अग्रेजी कवि का काव्य-सस्कार सकर और बोझिल होता हुआ भी अपनी विशेषता रखता है। सरे की काव्य-धारणा अधिक स्वाभाविक है। उसने वर्जिल के 'ईनिड' के दूसरे और चौथे खडो का अग्रेजी ब्लैंक वर्स में अनुवाद किया। सरे को इसका गुमान भी न था कि जिस मुक्त छन्द का प्रयोग उसने पहले-पहल किया वह कालान्तर में अग्रेजी छन्द-परपरा में इतने महत्व का सिद्ध होगा। उसी परपरा का उपयोग अग्रेजी के जगद्विख्यात् कवि मारलो और शेक्सपियर दोनो ने किया। मिल्टन, कीट्स और टैनिसन तीनो सरे के छन्द-विन्यास से प्रभावित हुए।

वियाट और सरे दोनो स्वय पैट्रार्क से प्रभावित थे और एलिजाबेथ-युग के प्राय. सभी कवियो ने पैट्रार्क की ही उन प्रणय-चेष्टाओ का अनुकरण किया जिनकी दाय उनको वियाट और सरे द्वारा मिली थी। सॉनेट की परंपरा का शेक्सपियर, सिडनी आदि ने भी अनुसरण किया। आश्चर्य की बात तो यह है कि शेक्सपियर और सिडनी दोनो ने पहले उस प्रणाली का मजाक उडाया मगर दोनो उसके शिकार हो गये। सॉनेट की शैली अंग्रेजी मे अमर होकर रही। एलिजाबेथ-युग में तो उसका प्रचार रहा ही, बाद के युगो में भी १४ पक्तियो की वह कविता-शैली कवियो द्वारा अपनायी जाती रही। स्वय मिल्टन ने सॉनेट का प्रयोग किया, यद्यपि उसने परपरा के अनुकूल उसका उपयोग प्रणय-सबधी अभिव्यक्ति मे नही किया। जनतान्त्रिक टिप्पणियो में उसे सॉनेट का साहाय्य अत्यन्त शक्तिप्रद सिद्ध हुआ। स्वय वर्ड्स्वर्थ ने इग्लैंड को प्रमाद से मुक्त करने और नैपोलियन को धिक्कारने के लिए सॉनेट को ही उपयुक्त समझा। कीट्स का "चैपमैन्स होमर' सॉनेट की ही पद्धति में लिखा गया। १९वी सदी मे मैरेडिथ ने भी अपनी कविता 'मॉडर्न लव' में प्रेम के विश्लेषण के लिए सॉनेट का ही प्रयोग किया और रोसेट्टी ने भी घूम-फिरकर दाते और पैट्रार्क के ही सॉनेट को काव्याभिव्यक्ति के लिए उचित समझा। इस प्रकार, यद्यपि वियाट और सरे की कविता स्वय इतनी महत्व की न हुई, परन्तु उसे व्यक्त करने के लिए जिस 'सॉनेट' काव्य-प्रणाली का उन्होने प्रयोग किया वह निश्चय ही अगले युगो में अग्रेजी काव्य का सौंदर्य बन गई।

---

१ Sir Thomas Wyatt (१५०३-४२), २ The Earl of Suarey (१५१७-४७)

: ४ :

पुनर्जागरण-युग

(१५७८–१६२५)

ऐडमन्ड स्पैन्सर[1] काव्य-कला का पण्डित माना गया है। केम्ब्रिज मे पढते समय ही उसने अपने गुरुजन और सहपाठियो पर गहरा असर डाला। उसके व्यक्तित्व का प्रभाव सर्वत्र पडा और शीघ्र ही लीसेस्टर के अर्ल ने उसे अपने सरक्षण मे ले लिया वह बराबर आयरलैंड मे रहा और वही से उसने अपनी कविताओ की दो जिल्दे प्रकाशित की—'दि शेपर्ड्स कैलेन्डर' और 'दि फेयरी क्वीन'। स्पैन्सर अग्रेजी भाषा का सस्कर्त्ता माना जाता है। अग्रेजी मे वह होमर और वर्जिल की वीर-काव्य-परपरा स्थापित करना चाहता था जिसमे शब्द-गाम्भीर्य और काव्य-शालीनता नये रूप से अभिव्यक्त हो। अनेक बार उसने ऐसी काव्य-कहानियाँ लिखी जिनमे कथा-वस्तु क्लासिकल पृष्ठभूमि पर खडा हुआ। दरबार को उसने अपनी काव्य-प्रतिभा से विशेषत आकृष्ट किया। 'फेयरी क्वीन' मे तो उसने स्वय रानी एलिजाबेथ को नायिका बना दिया। परन्तु उसकी काव्य-मेधा अभिजात-कुलीय दरबार तक ही सीमित न रह सकी और उसने उसके पार साधारण मानव के अज्ञान, अध-विश्वासो और कमजोरियो पर भी अपनी तीखी निगाह डाली, यद्यपि यह नही कहा जा सकता कि दरबारी परपरा के बाहर भी उसका कृतित्व उतना ही सार्थक हुआ जितना राज-सभा की अभिव्यजना मे। हाँ, इतना जरूर है कि उसके कृतित्व मे 'रेनेसास' और सावधि युगो का समान रूप से योग मिला। वस्तुत वह पुनर्जागरण-युग और आधुनिक काल की सधि पर खडा हुआ है।

उसकी रचना मे शब्द का माधुर्य अमिट है और, यद्यपि काल की गति ने उसकी कृतियो के कथानको को आज नि शक्त बना दिया है, फिर भी उसके काव्य की अभिव्यंजना, कल्पना की सुचारुता और शब्दो का सगीत इस काल भी अपना प्रभाव रखते हैं। 'शेपर्ड्स कैलेंडर' मे पुराण-पन्थिता का प्रचुर-पुट है, फिर भी कविताओ का रूप काफी मनोरम है। 'फेयरी क्वीन' ने स्पैन्सर के बाद के अधिकतर अग्रेज कवियो को आकृष्ट किया है। आज उसकी भी सत्ता कमजोर पड़ गयी है, परन्तु एक समय था जब काव्य-कल्पना मे उसका विशेष महत्व था। एलिजाबेथ के युग से ही 'फेयरी क्वीन' का कथानक पुराना और अस्पष्ट हो चला था, परन्तु उस काल इस काव्य का रूपक लोगो को मोह लेता था। आज की दुनिया मे 'फेयरी क्वीन' का ससार मनुष्य का वह यथार्थ चित्रण हमें नही दे पाता जो चॉसर और शेक्सपियर दोनो की

१ Edmund Spencer (१५५२-९९)

अमित शक्ति। मध्यकालीन जीवन का फिर भी एक सबल रूप स्पैन्सर की कृतियो मे उपलब्ध है।

एलिजाबेथ-युग की वास्तविक और सुन्दर कविता ने नाटक का रूप लिया और यह मानी हुई बात है कि स्पैन्सर को छोडकर कविता के क्षेत्र मे कोई कवि मार्लो[1] और शेक्सपियर[2] का मुकाबला नही कर सका। एलिजाबेथ के नाटककार नाटक के क्षेत्र के बाहर अपनी काव्य-सम्पदा में भी कुछ कम चमत्कार उत्पन्न नही करते, यद्यपि उनका प्रधान ध्येय नाटक है। मार्लो का 'हीरो एण्ड लीयन्डर' शेक्सपियर के 'वीनस एण्ड एडोनिस', 'रेप ऑफ लुक्रीस', और विविध सॉनेट, और बैन जान्सन[3] के अनेक लिरिक उस युग की काव्य-सम्पदा का हमे परिचय देते हैं। उस काल छोटी-बडी सब तरह की कविताएँ लिखी गयी। माइकेल ड्रेटन[4] की कृतियो में कविता की अनेकरूपता का भडार प्रस्तुत है। इटैलियन रोमास की धारा तो उसे न छू सकी, पर स्वय उसने कविता की अनेक प्रणालियो का प्रयोग किया। ड्रेटन की कृतियो मे 'दि बैरन्स वर्स', और 'पोल्योल्बियन' भारी-भरकम कविताएँ है, जिनमे वह इग्लैंड की अनुश्रुतियाँ, जन-विश्वास, भौगोलिक वर्णन आदि प्रस्तुत करता है। परन्तु इनके अतिरिक्त भी उसने कुछ ऐसी कविताएँ छोडी हैं जिनकी भाव-सम्पदा और सुकुमारता असाधारण है। 'निम्फीडिया' परी-साहित्य का एक सुन्दर नमूना है और 'बैलेड ऑफ एजिनकोर्ट' तो अग्रेजी काव्य-साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड गया है।

ड्रेटन की ही परपरा में सेमुएल डेनियल[5] ने भी लिखा। 'वार ऑफ दि रोज़िज़ (लैंकास्टर और यार्क के गृह-युद्धो का इतिहास) उसने पद्य में लिखा, परन्तु उसकी महत्ता वस्तुत 'एपिस्सटल्स' की-मी उसकी कविताओ मे है, जिनका प्रभाव वर्ड्सवर्थ पर काफी पडा। ये कविताएँ वर्णनात्मक इतनी नही जितनी चिन्तनशील है।

एलिज़ाबेथ-काल की लम्बी कविताएँ अपने ऐतिहासिक भार से पाठक को उबा देती है, परन्तु उस काल के गीत और लिरिक अपने प्रभावो मे आज सदियो बाद भी ताजे है। स्वय शेक्सपियर ने अपने नाटको मे जहाँ-तहाँ इन गीतो का उपयोग किया है जो हृदय को छू लेते है। इस प्रकार की गेय कविताओ के क्षेत्र मे जॉन डॉन[6] अनुपम है। वह स्वय रूमानी प्रवृत्ति का व्यक्ति था—प्रणयी, राज-सभासद्, सैनिक—उसका जीवन विविध स्थितियो से होकर गुजरा। फलत उसका चित्त अस्थिर और जागरूक था। उसने पढा बहुत और सोचा भी काफी अत उसके विचारो में तीव्रता काफी थी। उसकी अनुभूति

१ Christopher Marlowe (१५६४-९३), २ William Shakespeare (१५६४-१६१६), ३ Ben Jonson (१५७३-१६३७), ४ Michael Drayton (१५६३-१६३१), ५ Samuel Daniel, ६ John Donne (१५७२-१६३१)

उसके हृदय पर असाधारण प्रभाव डालती थी, परन्तु उसकी मेधा उसके प्रणय को भी चिन्तनशील दर्शन का रूप दे देती थी। वह सौंदर्य के आकार को देखता-समझता है। परन्तु उसके आधार को भौतिक पजर अथवा शव मानता है। प्रणय और चितन दोनों का जॉन डॉन की काव्य-स्थिति में अद्भुत ऊहापोह है। कुछ अजब नही कि सेन्टपाल का डीन होने के बाद युवावस्था मे ही अपने आवेगमय जीवन के आवेगो के कारण ही उसने अपना अन्त कर लिया था।

जॉन डॉन अपने समय का क्रातिकारी कवि है। वह पारपरिक पद्य के रूप को स्वीकार नही करता, न पुरानी उपमाओं को ही स्वीकार करता है। पेट्रार्क के अनुयायी सॉनेट लिखनेवालो की उपमाओं को वह तत्काल त्याग देता है, यद्यपि उसकी अपनी उपमाएँ स्वय अनोखी है। प्रसिद्ध डाक्टर जॉनसन ने कालान्तर मे जॉन डॉन और उसकी प्रणाली को मैटाफिजिकल (भौतिक अनुभूति से परे) कहा, क्योंकि उसकी कविताओ में विरोधी भावनाओं का समरूप मे उपयोग हुआ। जॉन डॉन की पद्धति अनेक बार सूत्रवत् हो जाती है। डॉन का प्रभाव सत्रहवी सदी के धार्मिक कवियो पर बहुत गहरा पडा। जार्ज हर्बर्ट[१] उनमे विशेष प्रसिद्ध है। अपनी कविता 'दि टैम्पल' में उसने धार्मिक अनुभूति का सुन्दर वृतान्त उपस्थित किया। हेनरी वॉन[२] रहस्यवादी कवि हुआ जिसने 'रिट्रीट' और 'आई सॉ इटरनिटी दि अदर नाइट' नाम की महत्वपूर्ण कविताएँ लिखी। रिचार्ड क्राशॉ[३] इस वर्ग का तीसरा कवि है, जिसकी कविता 'स्टैप्स् टु दि टैम्पल' विशेष महत्व की मानी जाती है।

टॉमस कैरो[४] ने 'कवेलियर' कवियो का प्रारभ किया। उसकी शैली मे काफी भावुकता है और सग्रहो मे उसके प्रेम सबधी लिरिको के उदाहरण उपलब्ध है। 'दि रैपचर' नाम की उसकी कविता में शृगार का प्राय नग्न वर्णन हुआ है, जिससे आलोचको ने उसकी तीव्र आलोचना की है। इस कवेलियर काव्य-परपरा में ही सर जॉन सकलिंग[५] भी हुआ जिसने जब-तब उस परपरा को छोडकर विचारशील काव्य की भी रचना की। रिचर्ड लवलेस[६] कैरो या सकलिंग का-सा मेधावी तो न था, पर उसने भी कुछ सुन्दर गीत लिखे। इस परपरा से गीतकार रॉबर्ट हैरिक[७] कुछ विशेष दूर न था, यद्यपि उसे कवेलियरो में नही गिना जाता। वह बैन जॉन्सन का शिष्य था और अपनी कविता उसने डेवेनशायर में लिखी। १६४८ ईस्वी में 'हेस्पराइडीज़' मे उसकी हज़ार से ऊपर कविताओ का सग्रह

---

१ George Herbert (१५९३-१६३३), २ Henry Vaughn (१६२२-९५), ३ Richard Crashaw (१६१२-४९), ४ Thomas Carew (१५९७-१६३९); ५. John Suckling (१६०९-१६४२); ६ Richard Love Lace (१८१८-५८), ७ Robert Herrick (१५९१-१६७४)

प्रकाशित हुआ। विपाद की छाया उसके लिरिको में काफी पडी है और उसका शब्द-चयन तो निश्चय ही अनूठा है। उसकी कविताओ मे इग्लैंड का ग्राम्य जीवन मूर्तिमान् हो उठा है। उसके लिरिक प्रेम और कल्पना प्रधान हैं, उनका प्रवाह सरल और सहज है और सीमित क्षणभगुर आनन्द के प्रति उनकी अभिव्यक्ति हृदयग्राहिणी है। हैरिक के जीवन के प्रति इस दृष्टिकोण मे उसका एकान्तवास भी सहायक हुआ। उसके विपरीत एन्ड्रू मार्वेल[1] प्रवाहित जीवन का सबल सुकवि है। उसने क्रॉमवेल और चार्ल्स द्वितीय-काल के इग्लैंड का मनोहारी वर्णन किया है। प्यूरिटन होने के कारण उसकी कविताएँ व्यग्य और शब्द—प्रहारो से भरी है। इस रूप में उसकी यह कविताएँ अपनी उन पूर्ववर्ती कृतियो के विपरीत पडती है, जो मधुर और सरल थी।

: ५ :

पुनर्जागरण-युग का अन्त

(१६२५–१७०२)

सत्रहवी सदी इग्लैंड के इतिहास मे विशेष महत्व की है। गृह-युद्ध ने उस देश में एक नयी परपरा स्थापित की, जिसने जनतन्त्र के विकास में बडे महत्व के परिवर्तन किये। विज्ञान और तर्कवाद नयी शक्ति धारण कर रहे थे और व्यापार तीव्र गति से एक नई विज्ञानानुमोदित क्राति की ओर बढ चला था। डॉन ने उसी नयी चेतना का अपनी विकल कविताओ द्वारा परिचय दिया। मिल्टन[2] उसी सदी के आरभ में उत्पन्न हुआ और उसने उस काव्य-सम्पदा को सिरजा जो अग्रेजी साहित्य मे अमर हो गयी।

जॉन मिल्टन इग्लैंड के महान् कवियो मे है। यदि हम नाट्य-परपरा के कवियो से उसे अलग कर दें तो निश्चय ही उसकी शालीनता अनुपम है। उसने ख्याति भी अपनी काव्याभिसृष्टि के गौरव के अनुकल ही पायी है। गृह-युद्ध के पहले की उसकी कविताओ में 'कोमस' प्रधान है। उसकी प्रारभिक कविताएँ सन् १६४५ में सग्रहीत हुई। मिल्टन को जो केवल कवि के रूप में जानते है, उनको पता नही कि अपने निबन्धो में उस महाकवि ने गद्य का कितना प्रखर रूप सिरजा है। गृह-युद्धो के अवसर पर उसने जिस गद्य-धारा का सृजन किया वह उस काल के अग्रेजी साहित्य में अनुपम है। मिल्टन अग्रेजी साहित्य का प्रायः पहला पैम्फलेटियर है जिसने कलम का उपयोग जन-सघर्ष के पक्ष में किया। क्रॉमवेल के नेतृत्व ने उसमें मानवता के विजयी भविष्य के प्रति अद्भुत निष्ठा और आशा जगा दी थी। उसी संघर्ष की कटुता और मानवता के प्रति सजग निष्ठा ने जीवन के अतिम सालो में दृष्टिहीन, प्राय निराश, मिल्टन को अपना वह अद्भुत वीर काव्य लिखने को वाध्य

---

१ Andrew Maruell (१६५१-१६७८); २ John Milton (१६०८-७४)

किया जो 'पैराडाइज़ लॉस्ट' और 'पैराडाइज़ रिगेन्ड' के नाम से जगत् में विख्यात हुए। इनमे पहला काव्य-खड सन् १६६७ मे प्रकाशित हुआ, दूसरा चार वर्प वाद सन् १६७१ में।

मिल्टन ने जीवन के भीतर सघर्ष की जो व्यवस्था पायी, वह निश्चय ही तत्कालीन एतिहासिक स्थिति का प्रतिविम्ब थी। 'कोमस' मे उसने उसी अन्तस्सघर्प की व्याख्या की। मिल्टन की सभी कृतियो मे 'कोमस' आज विशेप लोकप्रिय है। इसी प्रकार "पैराडाइज़ लॉस्ट' मे ईव और एडम सघर्ष करते हैं, जैसे क्राइस्ट सेटन के विरुद्ध 'पैराडाइज़ रिगेन्ड' मे सघर्ष करता है और सैमसन 'एगोनिस्टस' मे मिथ्या मतो के विरुद्ध। 'पैराडाइज़-लॉस्ट' सव युगो के लिए महान् कृति है। एडम और ईव, मुमकिन है, हमारे आज के जीवन मे महत्व न रखते हो, परन्तु मिल्टन के शैतान का विद्रोह निश्चय ही एक जीवित परपरा है, जिसमे हम सदा सॉस ले सकते है। मिल्टन न केवल प्यूरिटन सम्प्रदाय का, वरन् विश्व साहित्य का, एक महान् कृतिकार है।

सैमुएल वटलर[1] प्यूरिटनवाद का सवसे वडा तत्कालीन प्रतिवादी है। जहाँ मिल्टन ने प्यूरिटनवाद को सुन्दरतम चित्रित किया वहाँ बटलर ने उसे अपने व्यग्यात्मक काव्य 'हूडीब्रास' मे मिथ्यावाद का मूर्तिमान स्वरूप कहा। वटलर मिल्टन के प्यूरिटनवाद का इस प्रकार सवसे वडा प्रतिद्वन्द्वी हुआ। वटलर का यह भाण वास्तव मे अपनी भणैती की नग्नता मे मिल्टन की शालीनता का ठीक जवाब है। मिल्टन, कहते है, अपने जीवन-काल में जनता मे अप्रिय हो गया था, यद्यपि इसके लिए विशेष प्रमाण नही मिलता। वस्तुत उसके जीवन काल मे ही उसकी कृतियाँ श्रद्धा से पढी गयी और १८वी सदी में तो उसका अनुकरण भी काफी हुआ। इसमे फिर भी सन्देह नही किया जा सकता कि मिल्टन की काव्य-धारा क्लिष्ट है और उसमे लैटिन और ग्रीक सन्दर्भों की भरमार है। 'ल'अलेग्रो' और 'इल पेन्सरेसो' उस शैली के सिद्ध प्रमाण है। मिल्टन की पद्धति के विरोधी कवियो ने हीरोइक कपलेट का प्रयोग किया, जिसे कवि पोप ने विशेप महत्व देकर प्रसिद्ध किया।

इस हीरोइक पद्धति मे भाषा के प्रवाह और सरलता को विशेष महत्व दिया गया। प्रसाद उसका विशेप गुण हुआ। इस प्रकार के छन्दपरक आन्दोलन का प्रथम प्रवर्तक एडमन्ड वालेर[2] और सर जॉन डेनहम[3] हुए। इनके आन्दोलन का परिणाम यह हुआ कि काव्य की विकृत और क्लिष्ट भाषा आशुगम्य और सहज वन गयी। विषय और उसकी अभिव्यक्ति दोनो मे सरल समानता दृष्टिगोचर हुई। डेनहम की प्रसिद्ध कविता 'कूपर्स हिल' को जान ड्राइडन[4] ने जो इतना सराहा वह उसके सहज प्रवाह के कारण ही।

जॉन ड्राइडन—नाटककार, आलोचक और अनुवादक—स्वय इस पद्धति का

---

१ Samuel Butler (१६१२-८०) २ Edmund Waller (१६०६-८७)
३ John Denham (१६१५-६९), ४ John Dryden (१६३१-१७००)

प्रधान व्याख्याता था। सुन्दर प्रभावशाली वाक्यावली से अलकृत, सुष्ठ, सरल कविता लिखना उसकी कला का अन्तरग गुण था। ड्राइडन ने अपनी कृतियो द्वारा बडी कीर्ति कमाई है, यद्यपि अग्रेज जाति ने उसे इतना महत्व न दिया। समकालीन घटनाओ को अपनी कविता मे मूर्त्त कर ड्राइडन ने काव्य-क्षेत्र मे उस काल का एक नया प्रयोग किया। उसका 'एनस मिराविलिस' डच-युद्ध और लन्दन के अग्नि-सहार का काव्य-रूप है। शैफ्ट्सबरी के षड्यन्त्रो और मन्मथ की कृतघ्नता ने उसके 'एबसालोम एण्ड एचिटोफेल' में अपनी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति पायी। इसी प्रकार उसकी अन्य कविताएँ भी समकालीन राजनीतिक और धार्मिक प्रवृत्तियो की पोपक है। ड्राइडन ने वर्जिल, जुवेनल, ओविड और चॉसर के अनुवाद किये। उसने गद्य का भी रूप निखारा। फेबल्स की भूमिका मे जिस गद्य का उसने प्रयोग किया वह उस क्षेत्र मे अनुपम है।

: ६ :

क्लासिकल काव्य

(१७०२–१७७०)

व्यग्य

अलैग्ज़ैन्डर पोप[१] अग्रेजी साहित्य का सबसे बडा व्यग्य-कवि है। व्यग्य को उसने अपनी कला से आलोकित कर एक विशिष्ट रस के रूप में प्रस्तुत किया। उसके आलोचको ने उसे अनेक प्रकार से जाँचा है परन्तु अधिकतर उस पर चोटे ही पडी है। उसके व्यग्य को साधारणत लोगो ने अन्यायनिष्ठ माना है। जो भी हो, इसमें सन्देह नही कि पोप कलाकार था। अग्रेजी भाषा मे उसका स्थान क्लासिकल कवि के सन्निकट है। उसके दृष्टि विस्तार की कुछ सीमाएँ निश्चित है। पोप मे सेवा और त्याग की भावना मिल्टन की ही भाँति प्रबल थी। 'ऐस्से ऑन मैन' मे उसने पद्य मे अपने अध्यात्म का रूप रखा। परन्तु निश्चय ही आध्यात्मिक साहित्य मे उसके दृष्टिकोण की विशेषता नही। उसका महत्व साहित्य मे व्यग्य कृति उत्पन्न करने मे है। 'दि रेप ऑफ द लॉक' में उसने १८वी सदी के समाज का जो चित्र खीचा है, वह व्यग्य के रूप मे बडे महत्व का है। 'डन्सियाड' मे उसने प्रमाद और निष्क्रियता का बुरी तरह मज़ाक उडाया है और समसामयिक मूर्खों का जो रूप उसने उसमे प्रस्तुत किया है वह नितान्त हास्यास्पद है। उसकी अपेक्षाकृत छोटी कृतियाँ तो और भी सुन्दर है। 'दि एपिस्सटल टु डाक्टर आर्बुथनोट' इस दिशा मे सुन्दर दृष्टात के रूप में रखा जा सकता है। स्पोरस अथवा लार्ड हर्वी के व्यग्य चित्र अत्यन्त आकर्षक है। इसमे ऐडिसन पर भी उसकी चोट काफी गहरी है।

---

१ Alexander Pope (१६८८-१७४४);

पोप ने व्यंग्यात्मक काव्य के अतिरिक्त दूसरी कविताएँ भी लिखी है जिनमे होमर के अनुवाद के अतिरिक्त 'पेस्टोरल्स' और 'विन्डसर फॉरेस्ट' महत्व की है। होमर की कृति का उसका अनुवाद तो काफी पढा गया है, यद्यपि उसकी अनुवाद-शैली की आलोचको ने कटु आलोचना भी की है। अनुवाद मे जो उसने अलकरण की बहुलता उपस्थित कर दी है उससे उसके प्रति आलोचना की कटुता भी बढ गई है। उसकी रूमानी प्रवृत्ति का विशेषत 'एलोयसा टु एबेलार्ड' और 'एलिजी टु दि मेमॅरी ऑफ ऐन अनफॉरचुनेट लेडी' मे होता है।

अलेग्जेन्डर पोप ने अपने परवर्ती काल के साहित्य पर कुछ कम प्रभाव नही डाला। उसके अनुयायियो मे विशिष्ट सैमुएल जॉन्सन[1] और ऑलिवर गोल्डस्मिथ[2] हुए, यद्यपि अपनी कला मे दोनो उससे काफी भिन्न है। सैमुएल जॉन्सन ने अधिकतर गद्य ही लिखा, यद्यपि उसके दो व्यग्य 'लन्दन' (सन् १७३८) और 'दि वैनिटी आफ ह्यूमन विशेज़' (सन् १७४९) उसकी व्यग्यात्मक शक्ति को प्रचुरता से प्रदर्शित करते है। गोल्डस्मिथ के काव्य पर एक सामाजिक छाप है। 'ट्रैवलर' (सन् १७६४) और 'डिज़र्टेड विलेज' (सन् १७७०) मे गोल्डस्मिथ ने इग्लैंड और आयरलैंड की सामाजिक और आर्थिक कुरीतियो का चित्रण किया है। समसामयिक सामाजिक स्थिति को समझने और व्यक्त करने की उसमे पोप से कही बढकर शक्ति थी। उसकी शैली चॉसर की कला के अनुकूल थी, और उसकी अभिव्यक्ति मे भावो का सम्मिश्रण असाधारण हुआ।

पोप और उसके अनुयायियो ने अपनी कृतियो पर समकालीन समाज की छाप डाली। १८वी सदी के कवियो की एक विशेषता प्रकृति-पर्यवेक्षण की रही है। जेम्स टॉमसन[3] इस प्रकार का सम्भवत पहला कवि है जिसने प्रकृति का आमूल वर्णन किया है। 'सिक्स सीजन्स' नाम की उसकी कृति ऋतुओ का चित्रण करती है जो कालिदास के 'ऋतुसहार' की भाँति प्रकृति सबधी स्वतन्त्र काव्य है, यद्यपि दोनो की प्राकृतिक सवेदना मे न केवल मात्रा का बल्कि गुण का भी अन्तर है। 'सीजन्स' नाम की यह कविता बडी लोकप्रिय हुई। यह है भी बडी सरल, प्राय १०० वर्षो तक इग्लैंड के कविता-पाठको पर उसका अधिकार बना रहा। साधारण जीवन, गरीबी आदि के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति विशेष लोकप्रियता का कारण हुई। इसी कारण जो लोग पोप की प्रतिभा के समक्ष नही टिक पाते थे उन्होने भी टॉमसन की सादगी को सराहा, थी भी प्रकृति-अकन की उसकी कला सर्वथा मौलिक जो प्रकृति के प्रति लोगो की बढती हुई अभिरुचि को समृद्ध करती गई।

---

१ Samuel Johnson (१७०९-८४), २ Oliver Goldsmith (१७२८-७४); ३ James Thomson (१७००-४८),

भावुकता

तब के इग्लैंड मे एक नयी मानवता का उदय हो रहा था। व्यवसाय ने एक धनी और सतुष्ट वर्ग उत्पन्न कर दिया था जो मनुष्य के प्रति दया और सहानुभूति की प्रेरणाओ से आकृष्ट हुआ और, यद्यपि उसने अपने स्वार्थ के अर्जन मे कभी कमी न की, अपनी अभिरुचि की उसने परिधि निश्चय ही बढा दी। मानव-चित्त में एक प्रकार का विद्रोह उदित हो रहा था और उसका सबध निरन्तर बढते हुए जनान्दोलनो से होता जा रहा था। व्यापार, जो निरन्तर समाज को धनी और कगाल—दो स्पष्ट भागो में विभक्त करता जा रहा था, मानवता के प्रति इस नयी सहानुभूति का विशेष कारण बना। अनेक साहित्यकारो ने उस काल की परस्पर विरोधी तथा मानवता-प्रेरित प्रवृत्तियो का अपनी कृतियो मे अकन किया। विलियम काउपर[1] ने अपनी कृति 'जॉन गिल्पिन' मे इसी प्रकार की प्रवृत्तियो और अनुभृनियो का प्रदर्शन किया। काउपर के 'लेटर्स' अग्रेजी भाषा के सर्वोत्तम नमूने हैं। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'टास्क' है जिसमे कवि नगरो से दूर देहात की दुनिया मे घूमता है और बडे सहज भाव से गाँव के दृश्य प्रस्तुत करता है। उस काल के कवियो ने तर्कवाद के विरोध मे बहुत कुछ लिखा। परन्तु कुछ को इसी कारण तर्कवाद और न्याय-सम्मत जीवन के लोप का भी अदेशा हो आया। काउपर भी उन्ही मे था और उसने अपनी सशक्त कविता 'कास्ट अवे' मे अपने उसी भय का मूर्तन किया।

इस भय ने १८वी सदी के कृतित्व को काफी कलुपित भी कर दिया। फलत एक अद्‌भुत कष्टकर कायिक चेतना कवियो के एक वर्ग में उत्पन्न हुई। विपाद की एक विचित्र अनुभूति का उन्होने अनेकत अकन किया। विपाद प्रेरित काव्य 'एलेजी' का इसी कारण अनेकत अकन उदय हुआ। बहुत कुछ तो हिन्दी के आधुनिक छायावाद की भाँति विपादमय कविता लिखना उस काल का फैशन हो गया था परन्तु, चाहे रीतिवत् ही क्यो न हो, कुछ कवियो का तो इसने जीवन ही अपनी शक्ति से प्रभावित कर दिया। इनमे 'एलेजी' का रचयिता टॉमस ग्रे[2] विशेष प्रसिद्ध हुआ। होरेस वालपोल के साथ अपनी तरुणावस्था मे ग्रे ने यूरोप के समृद्ध और सुखी जीवन का काफी अनुभव किया था। परन्तु १८वी सदी के केम्ब्रिज के उसके पिछले जीवन ने उसे शिथिल कर दिया। विषाद की एक लहर जैसे उसके रोम-रोम मे वहकर भिन गयी जिसने उसकी कृतित्व-शक्ति शिथिल कर दी। अपने समय के यूरोप के प्रसिद्ध विद्वानो मे टामस ग्रे भी एक थ । उसने अपनी कविताओ मे नयी रुचियो का समावेश किया। उसके 'डिसेन्ट ऑफ ओडिन' में नार्वे आदि उत्तरी देशो के प्रति सकेत है और 'दि वार्ड' में मध्यकालीन जीवन के प्रति। विपादपूर्ण एलेजी सवधी साहित्य अग्रेजी मे काफी वढ चला जिसमे कब्रिस्तानो, खडहरो, फैले सुनसान मैदानो का वर्णन महत्व का समझा गया।

१ William Cowper (१७३१-१८००), २ Thomas Gray (१७१६-७१),

विलियम कॉलिन्स[1] तो अपने विषाद के वितरण मे ग्रे से भी बढ गया। कॉलिन्स अपने जीवित वातावरण से अनभिज्ञ हो, यह उसकी 'हाउ स्लीप दि ब्रेव' से तो नही लगता, परन्तु यह निश्चय है कि उसकी प्रवृत्ति प्राय स्वप्निल थी। उसकी कविताओ—'ओड ऑन दि पापुलर सुपर्स्टिशन्ज ऑफ दि हाईलैन्ड्स', 'ओड टु ईवनिंग' और 'डर्ज इन सिम्बेलीन'—मे विषाद की छाया जैसे शब्द-शब्द को अपने भार मे बोझिल कर रही है। साधारणत उसकी कला बोझिल है परन्तु जब कभी वह सरल हो पाता है तब जैसे उसका स्वर मधुर गुनगुनाहट से अद्भुत आकर्षण धारण कर लेता है।

विलियम काउपर के जमाने से ही कविता के क्षेत्र मे असाधारण रुग्णता का प्रारभ हो गया था। क्रिस्टोफर स्मार्ट[2] ने तो इस काव्यगत रुग्णता की पराकाष्ठा कर दी। उसका नितान्त विकृत और बदनाम जीवन पागलखाने मे ही जाकर सुस्थिर हुआ। वहाँ उसने दीवारो पर कोयले से अपना 'साग टु डेविड' लिखा। ब्राउनिंग ने उस गीत को बेहद सराहा है।

जमाने के भौतिकवाद ने कुछ कवियो को जैसे विक्षिप्त कर दिया। अनेको ने अपनी साधना उस भौतिकवाद के विरोध मे प्रयुक्त की। अर्थवाद दिन-दिन जोर पकडता जा रहा था और कवि, जब वे उसका आन्दोलन के रूप मे प्रतिवाद न कर सके तब, स्वप्निल और अन्तर्मुख हो गये, निरन्तर इलहाम-सा उन्हे होने लगा और वे एक प्रकार की रहस्यमयी प्रेरणा से अपना उद्बोधन करने लगे। विलियम ब्लेक[3] ने तो जैसे फरिश्तो और दूसरी अपार्थिव मूर्तियो को स्पष्ट देखा, जैसे वे मूर्तियाँ उसे घेर कर मित्रो के समुदाय की भाँति बगीचो मे बैठने लगी। इस प्रकार के स्वप्नो ने उसे दुनिया से पृथक् कर दिया। उसके आलोचको का कहना है कि उसने मानव-आत्मा को भौतिकता की दासता से मुक्त कर दिया और जीवन को नेक और बद के परे श्वेताकार जलती हुई शक्ति के रूप मे देखा। नि सदेह ब्लेक रहस्यवादी था। अपनी इस नयी चेतना मे काव्य की परपरा से ब्लेक इतनी दूर हो गया है कि उसने अपनी नयी रहस्यमयी भाषा, अपने नये प्रतीक, अपनी नयी शब्दावली बना ली है जो पाठक को उलझन मे डाल देती है। यदि कविता का कोई स्वरूप ब्लेक ने प्रस्तुत किया है तो वह केवल 'साग्स ऑफ इन्नोसेन्स एण्ड एक्सपीरियन्स' और 'एवरलास्टिंग गॉस्पेल' आदि में देखा जा सकता है।

रॉबर्ट बर्न्स[4] भी इसी काल हुआ। उसने बडे सुन्दर व्यग्य लिखे जिससे उसका प्रवेश एडिनबरा के शिष्ट समाज मे हो गया। वह अशिक्षित किसान कवि कहा जाता है, परन्तु कुछ ही दिनो बाद राजधानी के आसव-सिंचित जीवन ने उसे अकर्मण्य बना डाला।

---

१ William Collins (१७२१-५९), २ Christopher Smart (१७२२-७०); ३. William Blake (१७५७-१८२७), ४ Robert Burns (१७५९-९६)

उसे फ्रेंच-राज्यक्राति का शिशु भी कहा गया है। परन्तु उसके ये दोनो विरुद प्रश्नात्मक हैं। वह पोप, टॉमसन, ग्रे, शेक्सपियर सबको पढ चुका था और एक शिष्ट अग्रेज कवि की भाँति लिखता था। साथ ही उसकी सुन्दरतम कृतियाँ फ्रेंच-क्राति के पहले ही लिखी जा चुकी थी। उसने धर्म की कृत्रिमता के प्रति विद्रोह किया और मनुष्य-मनुष्य का भेद उसे असह्य हो उठा। 'जॉली बेगर्स' मे उसने इस भेद पर प्रबल कुठाराघात किया। 'टैम ओ' शैन्टर' भी इसी प्रकार की एक सशक्त कृति है। इसी कारण वह चर्च से विरक्त होकर पानशालाओ की ओर आकृष्ट हुआ, यद्यपि इस आकर्षण ने उसके चित्त को सयत न रहने दिया।

कविता का रूप अब तक बदल चुका था। फिर भी जॉर्ज क्रेब[1] के-से कुछ लोग पोप की ओर जब-तब झुक पडते थे। जिस कपलेट का पोप और जॉन्सन ने प्रयोग किया था, क्रेब ने भी उसका प्रयोग किया। उसकी कविताओ के विषय साधारणत देहाती जीवन के थे। उसने रूमानी माया को अपने पास फटकने न दिया।'दि विलेज', 'दि पैरिश रजिस्टर' और 'टेल्स इन वर्स' उसकी प्रभूत आकर्षक कृतियाँ हैं। उसकी काफी कटु आलोचना हुई परन्तु रूमानी आलोचको ने वस्तुत उसके ऋद्ध यथार्थवाद को न पहचाना।

: ७ :

रोमान्टिक काव्य

(१७७०-१८३२)

१९वी सदी में अग्रेजी कविता में उस नयी धारा की अभिसृष्टि हुई जो साधारणत रोमान्टिक (रूमानी, रोमाचक) कही जाती है और जिसने भारत की भाषाओ के अनेक कवियो को भी समय पाकर प्रभावित किया। रोमान्टिक शैली के कवियो की प्रकृति के प्रति बडी सहानुभूति थी। जीवन के ऊपर प्रकृति का प्रभाव वे प्राय आध्यात्मिक मानते थे। उद्योगवाद और उद्योगशील नगरो से आतकित होकर जैसे वे रक्षा के लिए प्रकृति की ओर बढे। प्राचीन धार्मिक परपराओ की जडता से भी ऊबकर अध्यात्म की नई दशा, एक नई अनुभूति की ओर वे बढ चले। स्पैन्सर, मिल्टन और पोप की दुनिया बाहरी थी, इनकी स्वय इनके आवेगो में बिखरी अथवा कसी। वर्ड्सवर्थ, कोलरिज, स्काट, बायरन, शेली और कीट्स रोमान्टिक शैली के प्रमुख कवि हैं।

टॉमस चैटरटन[2] ने मध्यकालीन काव्यधारा का अनुकरण करते हुए उस अद्भुत रस का कविता मे सचार किया जो रोमाटिक काव्य का आधार बना। चैटरटन नितान्त अल्पायु में मरा, केवल १८ वर्ष की आयु मे। और वह भी सामान्य मृत्यु से नही आत्महत्या

---

१ George Crabbe (१७५४-१८३२), २ Thomas Chatterton (१७५२-७०)

द्वारा। चैटरटन निस्सदेह मनस्वी और मेधावी था और यदि वह जीता रहता तो शायद बहुत कुछ कर सकता, परन्तु उसके भावावेगो ने उसे अकाल ही उठा लिया। उसकी इस अकाल-मृत्यु ने आलोचको मे उसके सम्भावित भावी जीवन के सबध में आशा और निराशा दोनो की प्रवृत्ति जन्मी है, परन्तु उनके प्रति समभाव होकर भी कम से कम हम उसे रोमान्टिक कवियो की परपरा का दूरस्थ प्रवर्तक मान सकते है।

विलियम वर्ड्सवर्थ[1] रोमान्टिक कवियो मे सबसे महान् है। उसका जीवन भी काफी लम्बा था, ८० वर्ष का, यद्यपि मृत्यु से प्राय ३५ वर्ष पहले ही उसकी कवित्व-शक्ति का निधन हो गया। अपने प्रारभिक वातावरण मे अकृत्रिम मानव न उसे आकृष्ट किया। रूसो की विचारधारा ने मानवता के प्रति उसकी आशाओ को सशक्त किया, फ्रच राज्यक्रान्ति को उसने मनुष्य की स्वतन्त्रता के जनक के रूप मे स्वीकार किया, और इग्लैंड की फ्रास के विरुद्ध युद्ध-घोपणा का उसन सबल प्रतिवाद किया, परन्तु जव नैपोलियन की महत्वाकाक्षा शार्लमान का अनुकरण कर चली तव उसे बडा क्षोभ हुआ। बर्क के प्रभाव से उसने भी धीरे-धीरे इग्लैंड की राजनीति का रुख स्वीकार कर लिया और शीघ्र—वह घोर प्रतिक्रियावादी बन गया। इन क्रियाओ—प्रतिक्रियाओ से पृथक् वर्ड्सवर्थ प्रधानत प्रकृति का कवि है। पिछले काल के प्रकृति-प्रेमी कवियो ने उसका अनुकरण भी प्रचुर मात्रा में किया है। वर्ड्सवर्थ की प्रारभिक ख्याति उसके 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन से हुई। इस सग्रह मे उसकी अपनी कविताओ के अतिरिक्त कोलरिज[2] का "एन्शेन्ट मरिनर' भी प्रकाशित हुआ परन्तु जहाँ वर्ड्सवर्थ ने सादे देहाती जीवन की घटनाओ का मूर्तन किया, वहाँ कोलरिज ने विचित्रता की उपासना की। 'दि लिरिकल बैलेड्स' (१७९८) के पहले ही 'दि प्रिल्यूड' का प्रकाशन १८५० में ही हो चुका था। 'प्रिल्यूड' आधुनिक अग्रेजी साहित्य की सबसे महान् कविता मानी जाती है, जिसमे मानव-चित्त की एकानुभूति असाधारण रीति से चित्रित हुई। 'लिरिकल बैलेड्स' के वाद वर्ड्सवर्थ ने कविता मे सॉनेट का ही उपयोग किया। 'ओड टु इम्मोरटेलिटी' मे उस कवि ने जन्मपूर्व के जीवन का एक रहस्यमय अकन किया। 'कैरेक्टर ऑफ दि हैपी वारियर' मे उसने अपने भाई और नेल्सन के कर्मठ जीवन की ससृष्टि की और 'ओड टु ड्यूटी' में वह फिर क्लासिकल अनुभूति की ओर आकृष्ट हुआ। 'लाओडेमिया' भी उसकी एक असामान्य क्लासिकल कृति है। प्रकृति के साथ उसकी घनी सहानुभूति थी और आलोचको का विचार है कि काव्यालेखन मे उसे उस दिशा से वडी प्रेरणा मिली। सम्भव है कि प्रकृति-चेतना का उसे आभास मात्र रहा हो, परन्तु इसमें सन्देह नही कि उसने मनुष्य—प्रकृति की अनजानी

---

१ William Wordsworth (१७७०-१८५०), २ Samuel Taylor Coleridge (१७७२-१८३४)

गहराइयो तक पैठकर अनुभूति की समृद्धि खोजी और पाई। उसकी अपील परिपक्व चेतना के प्रति है।

कोलरिज वर्ड्सवर्थ का मित्र था, अभिन्न मित्र, और दोनो पर एक दूसरे का गहरा प्रभाव पडा। वर्ड्सवर्थ की प्रकृति सयत, धीर और तपस्यापूर्ण थी। उसने काव्य के क्षेत्र मे जो खोजा वह पाया। कोलरिज इसके विपरीत सर्वगामी था। इसी से उसकी बुद्धि एकाकी न हो सकी। कहते है, अफीम के प्रति उसकी अदम्य तृष्णा भी उसमे एकनिष्ठा के अभाव का कारण हुई, यद्यपि अफीम का उपयोग उसने उस रोग के निवारणार्थ किया जो आमरण उसे जकडे रहा। अपने मित्रो और पत्नी तक के प्रति उसका भाव उपेक्षा का था, अनुत्तरदायी, यद्यपि उससे मिलने वाला विरला ही उसके व्यक्तित्व के सम्मोहन और शब्दो के चमत्कार के जादू से बच पाता था।

कोलरिज केवल कवि ही न था,-आलोचक और दार्शनिक भी था। उसने दर्शन, धर्म, विज्ञान और राजनीति का समन्वित स्वप्न भी देखा। उसकी 'बायोग्रेफिया लिट-रेरिया' में कला की आधुनिक दार्शनिक आलोचना के बीज मिलते हैं। कोलरिज की कल्पना में स्मृति और स्वप्न का अद्भुत सयोग था। उसके काल्पनिक ससार मे अद्भुत पक्षियो, अनूठे जहाजो, अनोखे समुद्रो का भी स्थान था। अपार्थिव मूर्तियाँ, अपार्थिव सगीत, अपार्थिव रूपरेखाएँ अद्भुत रूप से जीवित-सी होकर उसके कल्पना-क्षेत्र में विचरण करती थी। 'एन्शन्ट मरिनर' उसके इसी स्वप्न का सत्य है। 'कुबलाखाँ' भी इसी परपरा में एक अबीसीनियन कुमारी का जादूभरा सगीत है। कवि जीवन के तन्तुओ को तोडकर अज्ञात, परन्तु जीवित स्वप्न-देश मे पहुँच जाता है।

सर वाल्टर स्कॉट[१] की गणना भी रोमान्टिक प्रवृत्ति के कवियो में की जाती है। स्कॉट अग्रेजी के प्रारभिक उपन्यासकारो मे है और उसका साहित्य मे अधिकार विशेषत. उपन्यास-रचना पर माना जाता है, परन्तु काव्य के क्षेत्र मे भी उसने काफी ख्याति प्राप्त की, यद्यपि उसका काव्य-क्षेत्र औपन्यासिक विशेषताओ से भरा है। उसकी कविता मे भी उपन्यास की ही भाँति मध्यकालीन सघर्षमय जीवन के आलोक मिलते है। मध्यकालीन वैलेड और रोमास उसकी कविताओ मे सजग है। इस प्रकार की उसकी कविताओ का आरभ 'दि ले ऑफ दि लास्ट मिन्स्ट्रेल' (१८०५) से होता है। 'मारमियन' (१८०८) और 'दि लेडी ऑफ दि लेक' (१८१०) इसी परपरा की कविताएँ है। उपन्यासो मे सफल हो जाने से उसकी निष्ठा काव्य-रचना मे कम हो गई, फिर भी भावो के आवेग, करुण रस की आर्द्रता, वीर और रौद्र रसो के परिपाक और अतीत के चमत्कारी वर्णन में स्कॉट अनोखा है।

---

१ Sir Walter Scott (१७७१-१८३२)

लार्ड बायरन[1] रोमाटिक कवियो मे अपना विशेष स्थान रखता है। बायरन का व्यक्तित्व उसकी कविताओ से कही महान् माना गया है। यद्यपि ऐसा कहने से उसकी कवित्व शक्ति की उपेक्षा भी हो गयी है, फिर भी यह सच है कि बायरन का महान् व्यक्तित्व केवल काव्य-शक्ति तक ही सीमित न था और अनेक बार वह राजनीति के क्षेत्र में भी आकार धारण कर लेता था। यूरोपियन जनता ने तो अधिकतर उसे उसकी स्वातन्त्र्य-प्रियता से जाना। उसने ग्रीक-आजादी के लिए जो कुछ किया, वह सब का जाना हुआ है। बायरन महान् था, व्यक्तित्व मे, आजादी की उपासना मे, प्रणय की रुग्णता में, काव्य की प्रौढता मे। आरभ मे उसने जो 'आवर्स आफ आइडिलनेस' लिखा तो आलोचको और कवियो ने उसे धिक्कारा। इस पर दबना तो दूर रहा, उस महाकवि ने उनका उत्तर 'इग्लिश बार्ड्स एण्ड स्कॉच रिव्युअर्स' (१८०९) नामक अत्यन्त प्रखर चुभने वाली व्यग्यात्मक कविता से दिया। बायरन अत्यन्त सुन्दर था, कुछ लगडा, और घोर प्रणयी, दु साध्य कामुक। कहते है कि एक बार जब एक प्रणयिनी से वह पहले-पहल मिला, तब उसका प्रभाव उस नारी पर ऐसा पडा कि उसे देखते ही नारी ने अपनी डायरी निकाली और उसमें लिखा—'मैड, बैड एण्ड डेन्जरस' (पागल, बद और खतरनाक)। बायरन लार्ड वर्ग का था। लन्दन की बैठको का वह 'विजयी नैपोलियन' माना जाता है, यद्यपि प्रणय के क्षेत्र में उसकी यह विजय इग्लैड तक ही सीमित न रही। यूरोप के कॉन्टिनेन्ट पर भी उसका विस्तार हुआ, और इटली, विशेषकर वेनिस में तो उसने भयानक कामुकता का जीवन बिताया। काउटेस गिचीली से उसका सबध इटली के स्वप्न-जगत् का रहस्य बन गया है। वैसे स्वय इग्लैड में बायरन की कामुकता का व्यापार कुछ कम सजग न था और स्वय उसकी अर्द्धभगिनी के साथ जो उसका प्रणय-सबध बताया जाता है, वह सर्वथा निराधार न था। रोमाटिक प्रवृत्तियो और भावावेगो से उन्मत्त, बायरन की तेजस्विता इग्लैड मे राजनीति के क्षेत्र में विशेष व्यक्त न हो पायी, क्योकि रोमाचकता उसकी राजनीति पर छा गयी थी। एक बार नॉटिघम के श्रमिको के प्राणदड के विरुद्ध जो उसने लार्ड सभा में व्याख्यान दिया, वह अद्भुत शक्ति का था और कुछ लोगो ने आशा भी बाँधी कि एक दिन बायरन इग्लैड के राजनीतिक क्षेत्र का नेतृत्व करेगा, परन्तु उनकी कामना सफल न हुई।

बायरन पर्यटक था। उसने अनेक लम्बी यात्राएँ की और उन यात्राओ में जो रोमाचक साहसिकता का पुट था, उसने उससे अग्रेज पाठको को घर बैठे विदेशो से साक्षात् कराया। 'गियोर' (१८१३) में उसने अपनी पीढी की अभिरुचि को अभिव्यक्त किया। इससे उसकी ख्याति फ्रास से रूस तक फैली। इससे भी अधिक विख्यात 'चाइल्ड हेरल्ड' (१८१२-१८) हुआ, जिसमें उसने लुके-छिपे अपना ही परिचय दिया। इसके पिछले सर्गो का वर्णन व्याख्या-

---

१ George Gordon Lord Byron (१७८८-१८२४)

प्रधान है। नगर, खडहर, फैले मैदान वायरन के तीव्र वर्णन से पाठक के सामने मूर्तिमान हो आते है। इन सबकी पृष्ठभूमि रोमाचक है, जो एक अनोखी शालीनता का सृजन करती है। उसने कुछ सचेतक कारुणिक कथाएँ भी अपने 'मैनफ्रेड' और 'केन' जैसी कृतियो में सिरजी परन्तु वस्तुत उसकी ख्याति काव्य के क्षेत्र मे व्यग्यात्मक रचना 'बेप्पो' (१८१८) 'दि विज़न ऑफ जजमेंट' (१८२२) और 'डॉन जुआन' (१८१९-२४) पर प्रतिष्ठित हुई। 'डॉन जुआन' तो निश्चय ही अग्रेजी भाषा की महत्तम कविताओ मे है। इसमें जीवन की विषमताएँ, कारुणिकता, साहस, आवेग सभी कुछ सजीव हो उठे है। व्यग्य उसके चित्र-चित्र से बोलता है, जीवन शब्द-शब्द से चूता है।

शेली[1] और कीट्स[2] इसी अग्रेजी रोमाण्टिक शैली के कवि है। शेली प्रखर रोमाचक वायरन के विपरीत इस परपरा का सबसे बडा आदर्शवादी है। उसके आदर्शवाद पर कुछ आलोचको ने असन्तोष प्रकट किया है और उसे ब्लेक की श्रेणी मे रखा है। नि सन्देह शेली ब्लेक की ही भाँति द्रष्टा है, परन्तु वह उससे कही वढकर कवि है। आरभ से ही शेली को सघर्ष करना पडा था, पहले पिता के विरुद्ध, फिर अपने आचार्यों के विरुद्ध। ऑक्सफोर्ड में जो उसने अपने अनीश्वरवादी सिद्धान्तो से आचार्यों को चुनौती दी, तो उसे विश्वविद्यालय छोडना पडा। हैरियट के साथ उसका विवाह भी अत्यन्त कष्टकर सिद्ध हुआ और इन कटु अनुभवो ने उसकी प्रकृति को सर्वथा अक्खड बना दिया। उसने अपनी पत्नी को त्याग दिया और पत्नी ने आत्महत्या कर ली। उसके बाद उसने मेरी गोडविन से विवाह किया, जिसके साथ उसने अपने जीवन का बडा भाग स्विट्ज़रलैड और इटली में बिताया, जहाँ स्पेजिया की खाडी में तूफान से उसकी मृत्यु हुई। जिसके जीवन मे इतनी घटनायें घटें, इतनी तिक्त अनुभूतियाँ भरी हो, उसका द्रष्टा हो जाना कुछ अजव नही, विशेषकर जब उसमे कृतित्व की इतनी महान् शक्ति हो, जितनी शेली मे थी। शेली ने जीवन को केवल देखा, उसकी कटु अनुभूतियो को सहा ही नही, उसने उन्हे वदल भी देना चाहा। आशावादी द्रष्टा की भाँति उसने कहा कि यदि अत्याचार दूर कर दिया जाय, क्रूरता और अनाचार का लोप हो जाय, द्वेष और शक्ति के ताडव ससार से उठा दिये जाएँ तो नि सदेह जीवन सुन्दर हो जाय और ससार स्वर्ग। इसी सदेश को लेकर वह मानवता के सामने खडा हुआ और इसी सदेश को लेकर वह 'क्वीन मैव' और 'रिवोल्ट ऑफ इस्लाम' के साथ कार्यक्षेत्र में उतरा। लेकिन उसकी साधना की सिद्धि वस्तुत 'प्रोमेथियूस अनवाउण्ड' में हुई। इस गेय नाटिका मे उसने स्काइलस की 'ट्रैजेडी' को अपना मॉडल वनाया और जुपिटर द्वारा प्रोमेथियूस के चट्टान से वाँवे जाने की कथा लिखी। उसने इसमे मनुष्य को प्रेम की शक्ति से निरकुशता और अत्याचार का प्रतिरोध करने को ललकारा। आधुनिक अग्रेजी-

१ Percy Bysshe Shelley (१७९२-१८२२), २ John Keats (१७९५-१८२१)

साहित्य मे 'प्रोमेथियूस अनबाउण्ड' का लिरिक तत्व अद्वितीय है। शेली की आलोचना भी तीव्र हुई है और इसमे कुछ तथ्य है कि उसमे विनोद की मात्रा बहुत कम है। साधारण जीवन से भी, उसके सघर्ष के बावजूद, उसका सबध कम दीखता है। इस रूप मे न तो वह चॉसर है, न शेक्सपियर, न मिल्टन। ससार से जैसे वह दूर है और उसकी भाव-प्रतिमाओ में वायु, सूखी पत्तियाँ, ध्वनियाँ, लहरे आदि रूप धारण करती है। अनेक बार तो ऐसा लगता है कि वह जीवित जगत से दूर के किसी आत्म-परिवार का परिचय दे रहा है। आज काव्य-पाठको के ससार पर उसकी पकड ढीली पड चली है, क्योकि जीवन उसकी पकड से छूट चुका है। यद्यपि 'ओड टु दि स्काई लार्क' आज भी चाव से पढा जाता है।

रोमाटिक परपरा के विशिष्ट कवियो मे जॉन कीट्स है। रोमाचकता का वह मूर्तिमान् स्वरूप था। इग्लैंड के महान् कवियो मे वह सबसे अल्पायु मे मरा, केवल २५ वर्ष की आयु मे। वह रोमाटिक कवियो मे सबसे पिछला था, सबसे पहले मरा। उसका पिता अस्तबल का रक्षक था। उसने उसे डाक्टर बनाने की प्रभूत चेष्टा की, यद्यपि बचपन से ही काव्य-प्रेम ने कीट्स को कविता के प्रति अनुरक्त कर दिया था। प्राचीन काव्यो से उसने कथाएँ ढूँढ निकाली और स्पैन्सर तथा शेक्सपियर की कृतियो से शब्द की माया-शक्ति प्राप्त की। साथ ही एक्रोपोलिस से लायी एल्गिन की सगमरमर--प्रतिमाओ (एल्गिन मार्बल्स) और उसके मित्र हेडन के चित्रो ने उसे आलेखन की शक्ति प्रदान की। वैसे कविता के क्षेत्र में वह किसी का शिष्य न था, अपने आप उसने उस दिशा में सफलता पाई। उसके 'लैटर्स' उसके आलोचनात्मक विचारो के अद्भुत प्रमाण है, यद्यपि साथ ही वे फैनी ब्राउन के प्रति उसके असीम प्रेम का उद्घाटन करते है। इटली जाकर उसने अपने गिरते हुए स्वास्थ्य की रक्षा का असफल प्रयत्न किया। क्षय ने उसे विवश कर दिया और एक दिन वह दुनिया से चल बसा।

उसकी लम्बी कविता 'एन्डीमियन' (१८१८) उसी साल लिखी गयी, जिस साल यूरोप का महादार्शनिक हीगेल मरा और महामना मार्क्स उत्पन्न हुआ। आलोचको ने 'एन्डीमियन' की या तो सक्रिय उपेक्षा की अथवा उसकी तीव्र आलोचना। यह सही है कि यह कविता अतिरजित है परन्तु इसके अनेक स्थल उस सौंदर्य के प्रतीक भी है जो मूर्तिकार और चित्रकार के समन्वित प्रयत्न शब्दाकन के आधार से प्रस्तुत कर सकते है। 'लामिया', 'इज़ाबेल' और 'ईव ऑफ सेन्ट अग्नीज़' के द्वारा उसने काव्य-कथाएँ प्रस्तुत की जिनकी पृष्ठभूमि रगो के विस्तार मे नितान्त ऋद्ध थी।

कीट्स आवेगो का कवि था, सौंदर्य का उपासक और उसकी प्रेरणा से समर्थ कवि। 'हाइपीरियन' नामक उसकी कविता, यद्यपि अधूरी रह गई, परन्तु उतने से ही प्रमाणित है कि यदि कीट्स ने उसे पूरा कर दिया होता तो वह दार्शनिक कवि के रूप मे भी कितना महान् होता। धीरे-धीरे उसकी सवेदना अपने वातावरण से घनी हो चली थी और जहाँ

शेली एक स्वप्न के देश मे विचरने लगा था वहाँ कीट्स अपने वातावरण का घना स्पर्श पाने लगा था। 'हाइपीरियन' मे पुरानी परपरा के देवताओ के स्थान पर नित्य नये देवो की उठनेवाली शृखला का प्रतिपादन है जो उसकी मिल्टन-वत् प्रगतिशीलता को एक मात्रा तक प्रकट करता है। यदि कीट्स कुछ काल और जी गया होता तो मानवता उसकी सक्रिय भावुकता के योग से नि सदेह बलवती होती।

: ८ :

बुद्धिवाद और विज्ञान

(१८३२-७५)

आशावाद

१९वी सदी के कवि, जिनका आरभ कीट्स तथा अन्य रोमाटिक कवियो के बाद हुआ, अधिकतर मलका विक्टोरिया के समकालीन थे। टैनिसन[1] शायद विक्टोरिया कालीन कवियो में सबसे महान् हुआ, यद्यपि उसके आलोचको ने उसके पराभव मे कुछ उठा न रखा। शब्दो की शालीनता और ध्वनियो के उपयोग मे तो वह अग्रेजी-साहित्य में बेजोड है। उसकी प्रारभिक गेय कविताएँ तो जैसे शब्दो के सुन्दरतम् नमूने बुनती चली जाती हैं। हाँ, इतना जरूर है कि मौलिकता और गहराई मे अपने पूर्ववर्ती रोमाटिक कवियो की अपेक्षा वह काफी पीछे है। उसकी बडी कविताओ में लोगो ने शिथिलता का दोष पाया है, यद्यपि 'उलिसिज़' के सबध मे यह दोष सार्थक नही। 'उलिसिज़' वीर-काव्य की आत्मा को रोमाचक सजीवता से अनुप्राणित करती है।

परन्तु वस्तुत टैनिसन की प्रतिभा उसकी लिरिको और 'दि डैथ ऑफ इनोन', 'दि ड्रीम ऑफ फेयर विमन', 'दि पैलेस ऑफ आर्ट' आदि छोटी कविताओ में है, यद्यपि उसकी महत्वाकाक्षा उसे इन तक ही सीमित न रख सकी। उसकी 'ईडिल्स ऑफ दि किंग' मे चित्रण और रूपको का प्रसार है परन्तु चॉसर या स्पैन्सर के सामने वह फीकी पड जाती है। टैनिसन ने ऑर्थर-सबधी कहानियो को विक्टोरिया-कालीन आचार से मढा, परन्तु वह स्वय समसामयिक युग को पकड न सका। आँखो के नीचे बहता जीवन उसके दृष्टिपथ से ओझल हो गया, और एक दूर की अनजानी स्वप्निल दुनिया उसकी नजरो मे लहरा उठी। 'ईडिल्स' मे ऑर्थर-सबधी काव्य-कहानियो की ही भाँति शब्दो की शालीनता है, कल्पनाकी रोमाचकता है और अनजाने का अनोखापन है, परन्तु वह सारा ही जीवन से परे की दुनिया है, उसका लोक उस 'पोयट लारियट' का लोक है जो टैनिसन था। 'इन मैमोरियम' का

---

१ Alfred Lord Tennyson (१८०९-९२)

लोक निश्चय ही उसका अपना है, टैनिसन का, कवि का, और चूँकि यह कवि की अपनी सच्ची कृति है अत उस युग की वह महान् कृति भी बन गयी है। उसमे उसने अपने मित्र ऑर्थर हैलम की मृत्यु का वर्णन किया है और उसके विचार जीवन-मरण तथा उनके बाद की दुनिया का स्पर्श करते है। सावधि जगत् का विज्ञानवाद उसे जैसे डरा देता है और वह बालक की भाँति भगवान् की सरक्षा का वरदान माँगता है। 'इन मैमोरियम' निस्सन्देह अकृत्रिम कृति है।

टैनिसन काफी पढा गया है, उसका अनुकरण भी काफी हुआ है, इसीसे यह भी प्रत्यक्ष है कि उसके अनेक आलोचक हुए। उसने काव्य के क्षेत्र मे प्रगति करते हुए अपनी आँखे स्वदेश के औद्योगीकरण की ओर से मीच ली। इसी कारण उसकी कविता भी मैथ्यू आर्नल्ड के शब्दो मे 'जीवन की व्याख्या' न बन सकी। इस खतरे से जैसे भयभीत होकर वह अपनी अन्य कविताओ—'लाक्सले हॉल', 'दि प्रिन्सेस' और 'मॉड'—में वास्तविक जीवन के स्तर पर उतर आता है।

जिन नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक समस्याओ का टैनिसन ने स्पर्श-मात्र किया, रॉबर्ट ब्राउनिग[1] के लिए वे प्रधान प्रेरणाएँ बन गयी। रॉबर्ट ब्राउनिग को अधिकतर दार्शनिक कवि माना जाता है। साहस और शक्ति उसके शब्द-शब्द से टपकती है, परन्तु यह सब उसके उस दर्शन से सबध रखता है जिसमें वह निर्भीकतापूर्वक मृत्यु से लडता है अथवा मृत्यु के भय का सफल सामना करता है। इसी कारण उसकी कविता मे जीवन के प्रति बडा विश्वास बन पडा है। आशावादी जीवन स्पष्टत निराशा पर व्यग्य करता है।

ब्राउनिग ने कविताएँ तो लिखी ही, उसने नाटक के भी कुछ प्रयोग किये। उसने ड्रामे का प्रयोग बिना उसके रगमचीय अभिनय के विचारो के किया। उसमें उसका दर्शन-मात्र प्रतिबिम्बित था, जैसा कि 'पैरासेल्सस' (१८३५) या 'पिप्पा पासेज़' (१८४१) से प्रकट है। इन नाटको मे गति केवल मानव-कर्मों की शृखला से प्रस्तुत होती है, उसके लिए अनेक चरित्रो की पारस्परिक प्रतिक्रियाएँ उतना अर्थ न रखती थी जितना एक ही व्यक्ति के आन्तरिक द्वन्द्व। इसी कारण उसने एक प्रकार के एक-पात्रीय वक्तव्य वाली नाटकीयता की नीव डाली। इसी रूप में उसके विशेषत जाने हुए नाटक 'एन्ड्रीया डेल सार्टो', 'फ्रालिप्पो लिप्पी', 'सॉल', और 'दि बिशप आर्डर्स हिज़ टूम्ब' आदि प्रस्तुत हुए। इनका प्रकाशन जिल्दो की एक शृखला में 'ड्रामेटिक लिरिक्स' (१८४२), 'मैन एण्ड विमैन' (१८५५) और 'ड्रामेटिस पर्सोनी' (१८६४) मे सग्रहीत हुए। इन्होने रॉबर्ट ब्राउनिग को जो यश प्रदान किया वह टैनिसन को छोड कर और किसी को १९वी सदी के उत्तरार्द्ध में न मिला।

इसी परपरा मे प्रस्तुत उसकी 'दि रिग एण्ड दि बुक' (१८६८-६९) है, जिसमे

---

१ Robert Browning (१८१२-८९)

एक-पात्रीय नाटकीयता का तन्तु बुना गया है और जो अंग्रेजी साहित्य की सबसे लम्बी कविताओ मे से एक है। इसमें ब्राउनिंग ने एक इटैलियन अपराध-कहानी का काव्य रूप में वितन्वन किया है और उसी सूत्र से उसने अपने रहस्यमय काव्य-दर्शन का अकन किया है। उसकी कविताएँ प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियो से भरी है और इटली का पुनर्जागरण-काल जैसे ब्राउनिंग के पृष्ठो मे एक बार फिर जी उठता है। ब्राउनिंग के साहस और निर्भीकता के बावजूद उसका प्रयास 'डॉन क्विक्ज़ोट' का-सा है। दर्शन के माध्यम से घूमने वाले उसके चरित्र जैसे एक कल्पित ससार मे घूमते है और किसी प्रकार भी उनको स्वतत्र नही कहा जा सकता। लगता है, जैसे उसके नर-नारी पात्र किसी तानाशाही दुनिया के जीव है, जिनका तानाशाह ब्राउनिंग स्वय है।

रॉबर्ट ब्राउनिंग के साथ अंग्रेजी-साहित्य की प्रसिद्ध कवियित्री एलिज़ाबेथ बेरॅट[१] का नाम सबधित है। एलिज़ाबेथ निस्सन्देह ब्राउनिंग के सम्पर्क में विशेष चमकी परन्तु निश्चय ही काव्य के क्षेत्र मे उसका अपना स्थान है और उसकी कविताएँ, 'सॉनेट्स फ्रॉम दि पौर्चुगीज़' 'ओरोरा ले', जो उसने ब्राउनिंग से सबध के पहले लिखी थी, इस दिशा मे ज्वलन्त प्रमाण है। ब्राउनिंग एलिज़ाबेथ को लेकर इग्लैड से वाहर कॉन्टिनेन्ट भाग गया था और उसके अनुयायियो पर उसका यह आचरण रोमाटिक हीरो के रूप में अपनी छाप छोड गया।

नैतिक और साहित्यिक आलोचना

१९वी सदी के उत्तरार्द्ध में मैथ्यू आर्नल्ड, फित्सजेरॉल्ड, रोसेट्टी, स्विनबर्न, मॉरिस, क्रिस्टियना रोसेट्टी, पैटमोर, टॉमसन आदि प्रमुख है। मैथ्यू आर्नल्ड[२] जो आलोचक के रूप मे विशेष प्रसिद्ध है, कविता के क्षेत्र मे भी काफी जाना हुआ है। उसकी कविताएँ—'एम्पिडाक्लीज़ ऑन एटना', 'दि फोरसेकन मरमैन', 'थेरसिस', 'दि स्कॉलर जिप्सी' और 'डोवर बीच'—काफी प्रसिद्ध है। विशेषकर अपनी गद्य-कृतियो मे, उसने मानव-जीवन की समस्याओ पर विचार किया। उसकी 'सोहराब एण्ड रुस्तम' की-सी लम्बी कविता काफी लोकप्रिय है, परन्तु निस्सन्देह मैथ्यू आर्नल्ड का वास्तविक स्थान आलोचना के क्षेत्र में है।

एडवर्ड फित्सजेरॉल्ड[३] अत्यन्त प्रमादी था और स्वतन्त्र कविताएँ भी उसने कुछ बहुत नहीं लिखी परन्तु फारसी कवि उमर खय्याम की अमर रुबाइयो को जो 'दि रुबाइयात ऑफ उमर खय्याम' के नाम से १८५९ मे उसने प्रकाशित की, वह अनूदित साहित्य के क्षेत्र मे एक आलोक-स्तम्भ है। कहते हैं, फित्सजेरॉल्ड ने अनुवाद को मूल मे सुन्दरतर बना दिया है। इस एक सफल अनुवाद ने उसे हजार स्वतन्त्र कृतियो के कवि-सा साहित्य मे प्रतिष्ठित

---

१ Elizabeth Barrett (१८०६-६१), २ Mathew Arnold (१८२२-८८), ३ Edward Fitzgerald (१८०९-८३)

कर दिया और वह १९वी सदी के पिछले दशको मे साहित्य के प्रधान व्यक्तियो में से माना गया है।

फित्सजेरॉल्ड को खोजने का श्रेय डी० जी० रोसेट्टी[1] को है। रोसेट्टी का स्थान विक्टोरिया-काल के साहित्य मे बहुत ऊँचा है। वह इटली के एक राजनीतिक शरणार्थी का वेटा था। विक्टोरिया-काल का साहित्यकार होकर भी उसने साहित्य से दार्शनिक, राजनीतिक और धार्मिक प्रसगो को अलग रखा। वह निरा कलाकार था। वैसे भी वह पहले चित्रकार रह चुका था, जहाँ उसने परपरा की श्रृखला को तोड कर स्वतन्त्रता और सत्य का अन्वेपण किया था। उसका चिह्न प्रतीकवादी और कल्पना-प्रधान था, जिस से उसकी कविता मे भी यथार्थ के विरुद्ध चित्रो का प्राधान्य हो गया है, यद्यपि उसके सिद्धान्तो मे यथार्थता का अभाव नही। चित्त के इस सघर्ष का उदाहरण स्पष्ट रूप से उसके 'दि ब्लेसेड डेमोज़ेल' मे मिलता है, जिसमे काव्य-विस्तार और प्रसग रहस्यवादी है परन्तु अन्तिम लक्ष्य श्रृगारिक है, प्राय यौन, काय-प्रधान। उसकी नितान्त पार्थिव कृतियो मे सर्वत्र प्रतीको की छाया है जो उसके साहित्य पर धुंधले जल-प्रवाह, मलिन ज्योत्सना और जब-तब प्रभूत चित्रो के साथ अवतरित होती है। उसके लिरिको और बैलेडो का यही वातावरण है। यही उसके प्रकाशनो—'पोयम्स' (१८७०) और 'बैलेड्स' तथा 'सॉनेट्स' (१८८१)—में प्रतिविम्बित है। 'दि हाउस ऑफ लाइफ' उसकी प्रसिद्ध कृति है, जिसमे रहस्य और यौन का अद्भुत सम्मिश्रण है। दाते और उसके समवर्ती साहित्यकारो का जो रोसेट्टी ने अनुवाद किया तो वस्तुत वह स्वय उनके गहरे प्रभाव से वचित न रह सका। रोसेट्टी के आकर्षक व्यक्तित्व ने अनेक प्रतिभाशाली तरुणो को आकृष्ट किया।

इन तरुणो मे स्विनबर्न[2] अपनी कविता और उसके नग्न प्रणय-निवेदन से शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। स्विनबर्न पहले इटन और फिर ऑक्सफोर्ड का विद्यार्थी था, जहाँ उसने अपनी जीवन-सबधी चुनौतियो द्वारा काफी हलचल पैदा की और जब १८६६ मे वह साहित्य के क्षेत्र में अपनी 'पोयम्स एण्ड बैलेड्स' लेकर उतरा, तव तो विक्टोरिया-कालीन काव्य में उसके भाव-विद्रोही प्रणय-बहुल नग्न चित्रणो ने उथल-पुथल मचा दी। एक वासना की लहर-सी नये काव्य-क्षेत्र में बह गयी, जिसको विक्टोरिया-कालीन काव्य-क्षेत्र में सहन करने की ताब न थी। एक प्रकार से वह कीट्स की भावनाओ को उनके ग्रीक आधारो से पुनरुज्जीवित कर रहा था। उसके लिरिको ने एक प्रकार से ड्रामा और कोरी कविता के क्षेत्र में विप्लव मचा दिया। उसकी कृतियो मे विशेष 'इटिनस', 'एटलान्टा इन कैलीडन' (१८६५) और 'इरेक्थियस' (१८७६) विशेष प्रसिद्ध है। स्विनबर्न ने कविताएँ

---

१ Dante Gabriel Rossetti (१८२८-८२); २ Algernon-Charles Swinburn (१८३७-१९०९)

और नाटक फिर-फिर लिखे परन्तु उसके कृतित्व की शक्ति उनमें इतनी प्रकट न हो सकी जितनी उसकी प्रारंभिक कृतियो मे हुई थी। कारण यह था कि उसकी वासना-चेतना स्वाभाविक ही कायिक शक्तियो से सम्बद्ध थी और अपनी तरुण आयु में उनका 'डोलोरिस', 'लाउस वेनेरिस', 'फास्टाइन' आदि में वह अकृत्रिम अशृंखलित रूप प्रस्तुत कर सका। शर्म और परहेज उसकी राह मे कही नही अटके।

विलियम मॉरिस[1] भी रोसेट्टी के ही भावो से प्रभावित था। काव्य के क्षेत्र में वह शिल्प के क्षेत्र से प्रादुर्भूत हुआ। उसने शिल्प की चेतना काव्य की सृष्टि मे डाली, और अपने जीवन-काल की उस परिस्थिति को वह न भुला सका जहाँ तीव्र उत्पादन और अमित लाभ का राज है। 'दि डिफेन्स ऑफ गिनिवियर' (१८५८) के चित्र कल्पना-प्रधान होकर भी जीवन से ओतप्रोत है। उनमें शक्ति और वजन है। 'दि अर्थली पैराडाइज़' में उसने लम्बी कविता को चॉसर की भाँति कथालेखन का आधार बनाया परन्तु उसमें न तो चॉसर की सचेष्ट मानवता है, न उसका भाषाधिकार और न शक्तिशाली चरित्र-चित्रण। धीरे-धीरे समसामयिक जीवन की पुरुषता ने उसे कल्पना के अकृत्रिम क्षेत्र को छोडने पर बाध्य किया। उसकी कृतियो मे विशेषत 'ए ड्रीम आफ जॉन बॉल', 'न्यूज़ फ्रॉम नोह्वेयर', 'दि वैल ऐट दि वर्ल्ड्स ऐण्ड' विशेष प्रसिद्ध हुई।

क्रिस्ट्यिना रोसेट्टी[2] यद्यपि प्रसिद्ध रोसेट्टी की ही बहिन थी, परन्तु उसका जीवन भाई के जीवन के बिल्कुल विपरीत था, नितान्त धार्मिक। 'गॉबलिन मार्केट' मे उसने सुन्दर काव्य-चित्रण किया। कॉवेन्ट्री पैटमूर[3] ने इसी काल 'दि एंजिल इन दि हाउस' नाम के काव्य में एक उपन्यास ही रच डाला, जिसमे उसने कविता को रोजमर्रा के जीवन का बाना पहनाया। उसने 'दि अननोन इरोस' द्वारा पेचीदा विचारो को काव्य के रूप मे प्रस्तुत किया और कैथोलिक कवि के रूप में इसी अपनी जटिल रहस्यमय विचारधारा के कारण विशेष प्रसिद्ध हुआ। फ्रान्सिस टॉमसन[4] भी कैथोलिक कवि ही था और उसने भी काफी लोकप्रियता हासिल की। गरीबी और कष्ट के जीवन को उसने अपनी कविता मे प्रतिबिम्बित किया। 'दि हाउण्ड ऑफ हैवन' उसकी जानी हुई कृति है।

: ९ :

नवयुग का उदय

१९वी सदी के पिछले दशको में उपन्यास-साहित्य काव्य-साहित्य के ऊपर उठ गया। कई साहित्यकारो ने पहले काव्य के माध्यम से साहित्य-क्षेत्र मे जीवन आरंभ किया परन्तु

---

१ William Morris (१८३४-९६), २ Christiana Rossetti (१८३०-९४), ३ Coventry Patmore (१८२३-९६), ४ Francis Thomson (१८६०-१९०७)

शीघ्र वे उपन्यासकार हो गये और उपन्यासकार के रूप मे ही वे विशेष प्रसिद्ध हुए। इनमे टॉमस हार्डी[1] और जॉर्ज मैरेडिथ[2] विशेष उल्लेखनीय है। जॉर्ज मैरेडिथ ने अपनी प्रारभिक काव्य-कृति 'लव इन दि वैली' द्वारा अच्छा नाम कमाया। उसकी कविताओ और उपन्यासो मे स्वभावत ही अनेक बार एकरूपता का दर्शन होता है। उसने उपन्यासो की ही भाँति कविताओ मे भी दर्शन की चेतना मूर्त्त की। सदाचार और वनस्पति-शास्त्र के आँकडो को एकत्र कर उसने 'पोयम्स एण्ड लिरिक्स ऑफ दि जौय ऑफ अर्थ' लिखा, जिसमें उसने दिखाया कि पृथ्वी मनुष्य को अपनी वन्य प्रकृति दवा रखने मे उसकी सहायता नही करती। पशुता और भावावेग दोनो मनुष्य को दबाये रखने मे एकत्र प्रयत्न करते है। मैरेडिथ की कविताओ मे मनुष्य की कमजोरियो का प्रभूत चित्रण हुआ है। काव्य-रूप मे उसकी कृतियाँ कठिन है, यद्यपि उनकी भाव-चेतना स्वस्थ और सवल है।

टॉमस हार्डी प्रारब्धवादी था। नर-नारी के कारुणिक प्रसग उसके उपन्यासो और कविताओ, दोनो मे क्रूर प्रारब्ध-चालित रूप मे उपस्थित होते है, जिनका निराकरण वह कभी नही करता। अपनी लघु लिरिको मे वह परिस्थितियो से मजबूर क्रूरता की चपेटो से विह्वल नर-नारियो को प्रारब्ध द्वारा नियत्रित अन्धो की भाँति खिचे जाते चित्रित करता है। जिस सक्षिप्तता और शव्द-लाघव द्वारा हॉर्डी इन चित्रो को उपस्थित करता है, वह वैयक्तिक काव्य-कला की एक विजय है। अपनी उपन्यास-शृखला के बाद उसने नैपोलियन के युद्धो के आधार पर 'दि डाइनास्ट्स' (१९०४-८) नाम का एक वीर-काव्यात्मक नाटक भी लिखा। उसका नाटक रगमच के योग्य तो न हुआ परन्तु चित्त के रगमच पर अनेक आलोचको को वह विशेष सफल जँचा।

टी० ई० लॉरेन्स[3] ने १९०६ ई० मे 'दि डॉन इन ब्रिटेन' नामक लम्बी कविता के कुछ भाग प्रकाशित किये। यह कविता उस काल की काव्य-धारा के नितान्त विपरीत थी। निस्सन्देह रोमान्टिक कवियो की रूमानी चेतना उसमे नही, परन्तु उसकी इस कृति मे सभ्यता के प्रारभिक दिनो के मानव प्रयास के जो चित्र प्रस्तुत हुए है, अपनी नग्न सामर्थ्य में वे निश्चय ही असाधारण है। इस प्रकार की दूसरी कविता 'दि टैस्टोमेन्ट आफ ब्यूटी' (१९२९) रॉवर्ट ब्रिजज़[4] ने लिखी, जो प्रारभ में वडी लोकप्रिय हुई। इस दार्शनिक कविता मे ब्रिजज्ञ ने बुद्धि और सौन्दर्य की परिभाषा की।

---

१ Thomas Hardy (१८४०-१९२८), २ George Meredith (१८२८-१९०९); ३. T E Lawrence (१८८८-१९३५), ४ Robert Bridges (१८४४-१९३०)

: १० :

बीसवीं सदी

२०वी सदी का आरभ अग्रेजी-साहित्य मे एक नये युग के रूप मे आया। यह सही है कि १९वी सदी के पिछले युगो के अनेक कवियो ने अपनी पुरानी निष्ठा किसी न किसी रूप मे जीवित रखी, परन्तु निस्सन्देह उन का युग अब समाप्त हो चुका था। रोमान्टिक परपरा को समाप्त कर उसके स्थान पर कवियो के एक नये दल ने नये लिरिको की रचना की, जिनका स्वर विषाद और करुणा का था और उनकी गेयता में आकर्पक सौन्दर्य था। उन्होने अपनी कविताओ से सदाचार और दर्शन की विक्टोरिया-कालीन समस्याओ को बाहर कर दिया और हल्की-फुल्की पक्तियो मे अपने चित्त और प्रणय की अनुभूतियो को मूर्त्त किया। ऑस्कर वाइल्ड,[1] जिसका नाम काफी बदनाम हो गया है, इन्ही में था। यद्यपि काव्य के क्षेत्र में वह अपेक्षाकृत प्राय अनजाना है, परन्तु नाटक-क्षेत्र में निश्चय ही वह विशेष विख्यात हुआ। अर्नेस्ट डाउसन[2] ऑस्कर वाइल्ड से अपनी कविता के गेय तत्व में कही अधिक ऋद्ध है। काव्य के प्राचीन प्रतीको का वह नये सिरे से प्रयोग करता है। जॉन्सन[3] के लिरिको में एक प्रकार के गम्भीर सौन्दर्य का मूर्तन हुआ है। केम्ब्रिज में लैटिन का प्रोफेसर ए० ई० हॉसमन[4] इन कवियो से जीवन मे भिन्न होकर भी चित्त से बहुत कुछ इन्ही का-सा है। 'श्रोपशायर लैंड' (१८९६) और 'लास्ट पोयम्स' (१९२२) द्वारा उसे इस दिशा में प्रचुर ख्याति मिली है। उसने पुराने शब्दो के नये प्रयोग किये और आवेगो के मूर्तन तथा उनकी अभिव्यक्ति में प्रयुक्त भापा तो निश्चय ही शब्द-रूप में स्वीकार्य है। प्रकृति के प्रति उसकी भावनाएँ भी सवल-सहज तीव्रता प्रस्तुत करती हैं। हॉसमन आवेगो का कवि है।

जॉर्ज पचम के नाम से जिस काव्य-धारा का वोध होता है, वह उस राजा की सम-सामयिकता मात्र से सवध रखता है, कुछ उसके कृतित्व से नही। उसके राज्यकाल के लिरिक कवियो के एक दल को 'जॉर्जियन पोयट्स' कहते है। इधर के आलोचना-क्षेत्र में उन पर गहरा आघात हुआ है। उनको आलोचको ने गाम्भीर्य-हीन, अति समसामयिक माना है। आलोचको का कहना है कि उन्होने घने से घने आवेगो का सुन्दर पद्य-रचना के लिए प्रयोग कर उनके साथ अन्याय किया है। रुपर्ट ब्रूक[5] जिसने १९१४ में स्वदेश-

---

१ Oscar Wilde (१८५६-१९००), २ Ernest Dowson (१८६७-१९००), ३ Lionel Johnson (१८६७-१९०२), ४ Alfred Edward Housman (१८५९-१९३६), ५. Rupert Brooke (१८८७-१९१५)

प्रियता, कर्त्तव्यनिष्ठा और आदर्शवाद पर कुछ सॉनेट प्रकाशित किये, इन आलोचको के रोष का केन्द्र बन गया। ब्रूक ने युद्ध मे मृत्यु को वीर-दर्प का आधार माना। वाल्टर डि ला मेर[१] शब्द का जादूगर माना जाता है, जिसने शब्दो की चेतना मे एक नयी रहस्यमयी ससृष्टि की। उस काल के प्रधान कवियो मे जेम्स एलरॉय फ्लैकर[२] का नाम उल्लेखनीय है। वह फ्रेंच और फारसी पढा हुआ था, जिससे उसने अपनी लिरिको की ध्वनि मे उन भाषाओ के मघुर पद्य का योग दिया। इन कवियो के विरुद्ध जो विशेष आलोचना हुई, उसका स्वर यह था कि कविता मे आज के जीवन का योग होना चाहिए। जॉन मेसफील्ड[३] ने इसी विचार-धारा से प्रभावित हो कर अपने प्रारभिक सागर-सवधी लिरिको को छोड मानव कहानियो की कष्ट-चेतना को अपनाया। 'दि ऐवरलास्टिग मर्सी' और 'दि डेफोडिल फील्ड्स' इस प्रवृत्ति के प्रमाण है। मेसफील्ड ने उन यथार्थवादी प्रसगो को फिर से ग्रहण किया जो उपेक्षित हो गये थे। इस काल के अन्य कवियो ने तो अपने इस विद्रोह को और भी जटिल रूप से प्रकट किया। जेरार्ड मैनली हॉपकिन्स उन्ही मे से है और यद्यपि वह १८८९ मे मर चुका था, १९१८ मे उसकी रचना प्रकाशित हुई। वह जेसुइट कवि था और उसने धार्मिक धाराओ का मूर्तन किया, परन्तु पद्य रचना और विचार दोनो से उसकी मौलिकता प्रमाणित है। उसने कविता की ध्वनि मे शब्द और व्याकरण दोनो को दबा दिया है। उसकी काव्य-शैली का अनेक बाद के कवियो ने अनुकरण किया। विलफ्रिड ओवेन की युद्ध-सबधी कविताओ पर हॉपकिन्स का काफी प्रभाव पडा, यद्यपि वह एक पीढी पहले मर चुका था।

बीसवी सदी के विशिष्ट अग्रेजी कवियो मे एलियट[४] और यीट्स[५] है। एलियट ने पद्य और गद्य दोनो लिखा है और दोनो मे उसने प्रभूत ख्याति पाई है। उसकी प्रारभिक कविताओ का सग्रह १९१७ मे 'फ्रूफ राक' के नाम से निकला था। ये कविताएँ व्यग्यपूर्ण और नाटकीय थी, जिन्होने तत्कालीन सभ्यता पर गहरी व्यग्यात्मक चोटे की। एलियट की साधना और बुद्धि प्रतीकवादी है। उसकी कृति 'दि वैस्ट लैण्ड' का काफी आदर हुआ है। इसमें उसने प्रथम महासमर के बाद के यूरोप का जीवन प्रतिबिम्बित किया है। 'दि वैस्ट लैण्ड' द्वारा उसने यह प्रकट किया है कि आज की सभ्यता का एक अपना अतीत तो अवश्य है, परन्तु न कोई उसका भविष्य है, और न विश्वास, न आदर्श, न निष्ठा। विश्वास तो वह अनिवार्य आवश्यकता मानता है। अपने 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' नामक पद्य-नाटक मे उसने इसका विशेष निरूपण किया है। इसकी पद्य-रचना भी सरल है और इसका तथ्य

---

१ Walter de la Mare (ज० १८८३), २ James Elroy Flecker (१८८४-१९१५), ३ John Masefield (ज० १८७८), ४ Thomas Stearns Eliot (ज० १८८८), ५ William Butler Yeats (१८६५-१९३९)

आधुनिक जीवन का स्पर्श करता है । एलियट का प्रभाव देश-विदेश के नवोदित कवियो पर काफी पडा, यद्यपि आज की नवरगमयी परिस्थितियाँ उन्हे उसकी ओर से विमुख कर चली है ।

यीट्स एलियट का समीपवर्ती हो कर भी उम्र मे काफी बडा था और १९३९ मे उस का देहान्त हो गया । उसके जीवन मे दो पीढियो का काव्य निरजा गया । स्वय उसने उन दोनो काल की प्रवृत्तियो का अनुसरण किया । यीट्स की शुरू की कविताओ मे अलकार और माधुर्य अधिक है और वह उनकी पृष्ठ-भूमि अपने देश आयरलैंड की प्रकृति मे प्रस्तुत करता है । उस काल की रचनाओ में वह सर्वथा 'रोमाटिक' है । 'दि लेक आइल ऑफ इनिसफ्री' उसकी काफी ताजी रचना है । बदलते हुए जमाने और काव्य के रूप को उसने पकडा और इसी कारण वह जमाने की दौड में पीछे न छूट सका । उसने अपनी बाद की रचनाओ मे यद्यपि अतीत के विश्वासो और प्रतिमाओ को निखारा, फिर भी उसकी कल्पना ने कुछ सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत की, जिन का सग्रह चार खडो मे प्रकाशित हुआ— 'दि वाइल्ड स्वान्स एट कूल', 'माइकेल रॉबर्टीज़ एण्ड दि डान्सर', 'दि टॉवर' और 'दि वाइन्डिंग स्टेयर' । यीट्स ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'गीताजलि' का अनुवाद कर उन्हे पाश्चात्य पाठको और आलोचको के सम्मुख पहली बार रखा ।

: ११ :

नाट्य-साहित्य

शेक्सपियर से पूर्व (१५९२ तक)

इग्लैड मे रगमचीय खेलो का आरभ जूलियस सीज़र की विजय के बाद रोमन्ज़ ने किया था । परन्तु उनके इग्लैड छोडने के साथ ही उन खेलो का अन्त भी हो गया । आरभ में विदूषक, भाँड, गायक आदि घूम-घूम कर, स्थान-स्थान, गाँव-गाँव जा-जा कर कुछ ऐसे प्रदर्शन करते रहे, जिनमें विविध चेष्टाओ, भाव-भगियो, गायन आदि मे नाटक का बीज होता था । इन गायको में जो अभिनय के बीजतत्व के भी धनी थे, वे 'मिन्स्ट्रल' कहलाते थे । उनके प्रदर्शनो मे भीड काफी इकट्ठी होती थी और, यद्यपि चर्च बराबर इस प्रकार के प्रदर्शनो का विरोध करता था, उसके पादरियो को व्यक्तिगत रूप से इनमें दिलचस्पी थी । लुक-छिप कर वे बराबर इन प्रदर्शनो को देखते थे ।

धर्म ने आरभ मे निश्चय ही इस प्रकार के नाट्य-प्रदर्शनो का विरोध किया होगा । परन्तु कालान्तर मे वही रगमचीय अभिनयो का कुछ काल के लिए आधार बन गया । ईसा के जीवन की अनेक घटनाएँ धीरे-धीरे चर्च की इमारत में अभिनीत होने लगी जहाँ रगमच पर अथवा फैले मैदान में अभिनेता और दर्शक मिले-जुले रहते थे । यह अभिनय बहुत कुछ

आज की हमारी 'रामलीला' की ही भाँति होते थे। शीघ्र ही चर्च को पता चल गया कि धीरे-धीरे इन नाटको का अभिनय अथवा नाट्य तत्व धार्मिक प्रदर्शनो से बढ गया था। उसने उन का रुख फिर बदलना चाहा पर अब स्थिति उनके हाथ से बाहर निकल गई थी और तेरहवी-चौदहवी सदियो मे अभिनय ने सर्वथा धर्मेतर लौकिक रूप धारण कर लिया। चर्च ने रगमच अपनी इमारतो से अलग कर दिया।

धार्मिक नाटको मे पहले लैटिन भाषा का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता था। अब नाटक के लौकिक हो जाने से उसकी भाषा अग्रेजी हो गयी। मध्यकालीन श्रेणियो और नागरिक सस्थाओ का नाटको के प्रदर्शन मे विशेष हाथ रहा। नाटको का अभिनय-क्षेत्र अब नितान्त विस्तृत हो गया। इन लौकिक नाटको मे भी कथानक विशेषत धार्मिक ही हुआ करते थे, यद्यपि उनके अन्तरग अनेक पारिवारिक दृश्यो से भरे होते थे। इन धार्मिक प्रदर्शनो के बाद उन नाटको की बारी आई जिन्हे मोरैलिटी प्लेज कहते है। पन्द्रहवी सदी के पिछले दशको के इन नाटको मे सदाचार का अभिनय होता था और आचार सबधी ही पाप-पुण्यात्मक पात्र इनकी रीढ थे। ये नाटक स्वाभाविक ही उद्देश्यपरक थे और आचारादर्श उनका लक्ष्य था। फिर भी उनमे यथार्थ और करुणा का प्रचुर समावेश था।

मोरैलिटी नाटको के अतिरिक्त कुछ ऐसी सक्षिप्त नाटिकाएँ भी थी जिन्हे इन्टरल्यूड कहते थे। वे न तो मोरैलिटी नाटको की भाँति रूपक थी और न धार्मिक कथाएँ ही थी। उनका अभिनय अधिकतर ट्यूडर-काल के सामन्त परिवारो मे होता था। उस काल की एक विशेप कृति, हेनरी मैडवल की लिखी, 'फुलगिन्स ऐण्ड लुकरी' है। इस प्रकार की नाटिकाओ में पहली बार सामयिक जनता का भावकोण प्रदर्शित हुआ। १५३३ ईस्वी मे प्रकाशित हेवड का 'दि प्ले ऑफ दि वैदर' एक मनोरजक डायलॉग प्रस्तुत करता है। इन इन्टरल्यूडो ने जनता का विशेष मनोरजन किया। प्रहसन और विनोद अधिकतर ग्राम्य होते थे और अभिनय प्राय भौंडे, फिर भी इन इन्टरल्यूडो का नाट्य-साहित्य के विकास मे महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बाद ही प्राय एकाएक—कम-से-कम मध्य की मजिलो को प्रत्यक्ष करना कठिन है—अग्रेजी के प्रसिद्ध नाटको का आविर्भाव हुआ और मार्लो तथा शेक्सपियर अपनी कृतियाँ लेकर साहित्य मे उतरे।

मार्लो और शेक्सपियर के आविर्भाव के पहले क्लासिकल ड्रामा (ग्रीक और लैटिन) के अग्रेजी में कुछ प्रयोग हुए। जॉर्ज गैसक्वाइडनी, निकोलस उदाल आदि ने कॉमेडी और ट्रेजेडी मे कुछ सराहनीय प्रयत्न किये। ग्रीक और लैटिन साहित्य का अध्ययन इग्लैड मे विशेषत रेनेसान्स से ही आरभ हो गया था और इस दिशा मे ग्रीक और पौराणिक कथाओ ने प्रचुर नाट्य-सामग्री मॉडल के रूप में अग्रेजी नाट्यकारो के लिए प्रस्तुत कर दी। सेनेका के लैटिन व्याख्यानो ने भी इस दिशा मे प्रशस्त पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस क्षेत्र मे सेनेका के भावतत्व से अनुप्राणित १५६२ मे सैकविल और टॉमस नॉर्टन को

अग्रेजी कृति 'गोरबोडक' खेली गयी। उसका रूप चाहे लैटिन हो परन्तु कथानक अग्रेजी था। 'गोरबोडक' वस्तुत साधारण जनता के लिए नही दरबारियो, वकीलो और अन्य बुद्धि-वादी पढी-लिखी जनता के लिए लिखा गया था और स्वाभाविक ही लोकप्रिय न हो सका। इस काल कुछ ऐतिहासिक नाटक लिखे गये जिनको आधार बनाकर शेक्सपियर ने भी अपने अनेक नाटक प्रस्तुत किये। यह सिद्ध हो गया कि स्थानीय और स्वदेशी कथानको से ही विशेषत नाटक जनसाधारण के हृदय मे स्थान पा सकते है। इस दिशा में कीड[1] और मार्लो ने विशेष प्रयत्न किये। टॉमस कीड ने पहली बार अग्रेजी जनता के लिए उचित नाटक और रगमच की रचना की। उसकी 'स्पेनिश ट्रैजेडी' मे सेनेका की पृष्ठभूमि किसी न किसी रूप मे वर्तमान थी, परन्तु फिर भी उसने उसे उस ट्रैजेडी का रूप दिया जो जनता की समझ से दूर न थी। दिन-रात षड्यन्त्रो के जगत् मे रहने वाले लोगो का कीड के इन नाटक ने काफी मनोरजन किया। स्वय शेक्सपियर कीड की इस 'स्पेनिश ट्रैजेडी' से प्रभावित हुआ। क्रिस्टोफर मार्लो केम्ब्रिज का तरुण नाटककार था। प्राय. ३० वर्ष की आयु में नाटक के क्षेत्र मे बहुत कुछ करके वह मर भी गया। परन्तु उसकी कृतियो ने अग्रेजी नाट्य-साहित्य मे एक विप्लव उपस्थित कर दिया। मार्लो का जीवन स्वय विद्रोहात्मक था और उस काल के राजनीतिक षड्यन्त्रों में भी, कहते है, उसका हाथ रहा था। उसकी चार महत्त्व की रचनाएँ ट्रैजेडी के रूप मे १५८७ और १५९३ के बीच प्रस्तुत हुई। वे थी 'टम्बरलेन दि ग्रेट' (दो भागो मे), 'ट्रैजिकल हिस्ट्री ऑफ डॉक्टर फॉस्ट्स', 'दि ज्यू आफ़ माल्टा' और 'एडवर्ड दि सैकेंड'।

इनमे पहली रचना में तातार सरदार तैमूर की क्रूरता और विजयो का निदर्शन है। डॉक्टर फॉस्ट्स मे मार्लो ने एक धार्मिक दार्शनिक भावना का व्यक्तिगत प्रकाशन किया जिसमे अन्तर्वृत्तियो का सघर्ष मुख्य था। 'दि ज्यू ऑफ माल्टा' मे बाराबास नाम के एक यहूदी का चित्रण है जिसने ईसाइयो के अत्याचार का बदला अनाचार से दिया। एडवर्ड द्वितीय मे उसी नाम के राजा के भावावेगो और कमजोरियो का वर्णन है। मार्लो ने मुक्त छन्द में एक नयी साहित्यिक चेतना अपने नाटको में रखी, जो न केवल साहित्य के दृष्टिकोण से क्रातिकारी थी बल्कि धार्मिक दृष्टिकोण से भी, क्योकि उसने 'टम्बरलेन' के माध्यम से सारी अपार्थिव धार्मिकता को चुनौती दे दी। पार्थिव जीवन, जैसे भौतिक को सत्य मान, अनिश्चित के अपने बन्ध तोड स्वतन्त्र हो गया। 'दि ज्यू ऑफ माल्टा' जरूर कुछ कमजोर है परन्तु 'एडवर्ड द्वितीय' 'टम्बरलेन' और 'फॉस्ट्स' की ही भाँति सफल है। मार्लो ने अग्रेजी ट्रैजेडी को मुक्त छन्द की शालीनता दी जो नाट्याकन में चिरप्रतिष्ठित हुई।

कीड और मार्लो ने जिस प्रकार ट्रैजेडी को सुघडता दी उसी प्रकार जॉन लिली[2]

---

१ Thomas Kyd (१५५८-९४) २ John Lyly (१५५४-१६०६)

और रॉबर्ट ग्रीन[1] ने कॉमेडी की रूपरेखा सँवारी। लिली के दर्शक दरबारी थे और उसके अभिनेता अधिकतर बच्चे। लिली की अनेक नाट्य रचनाएँ आज हमे उपलब्ध है, 'कैपेसपे' 'सैफो एण्ड फॉओन', 'गैलेथिया', 'एन्डिमियन', 'मिडास', 'मदर बौम्बी', 'लव्ज़ मेटा-मोरफोसिस' और 'दि वोमन इन दि मून'। इनमे अन्तिम नारी के ऊपर एक सुन्दर व्यग्यात्मक पद्य-नाटक है। लिली यूफ्यूइज्म का जनक कहलाता है। उसकी कला शिष्ट वर्ग के लोगो के लिए थी। शेक्सपियर के शीघ्र ही अद्भुत कॉमेडी कृतियाँ रचने के कारण लिली अन्धकार मे पड गया नही तो स्वय उसकी रचनाओ का कुछ कम महत्व न था।

रॉबर्ट ग्रीन कवि, नाटककार, गद्य-लेखक आदि सभी कुछ था। उसने अपने कथानको मे विविध सामाजिक दलो और भिन्न बौद्धिक मात्राओ के चरित्र एकत्र कर प्रस्तुत किये। वह भी प्रहसनकार (कॉमेडियन) ही था और उसने काल्पनिक जगत् को समसामयिक ससार मे ओतप्रोत कर अपनी कॉमेडियो मे प्रदर्शित किया। उसकी विशिष्ट कृतियाँ 'फ्रायर बेकन एण्ड फ्रायर बन्गे' और 'स्कॉटिश हिस्ट्री ऑफ जेम्स दि फोर्थ स्लेन एट फ्लौडन'।

सोलहवी सदी के अन्त तक अग्रेजी नाटक का रूप स्पष्टत प्रतिष्ठित हो गया। अब उनका प्रदर्शन केवल राजकीय दरबार में ही न होकर जनता मे भी होने लगा, यद्यपि नगरो के प्यूरिटन शासको का दृष्टिकोण उनके प्रति कठोर होने से उन्हे नगर के बाहर सरायो में ही खेलना पडता था। अभिनेताओ को भी उस काल बडी कठिनाइयाँ सहनी पडती थी, क्योकि कानून उनके काम को जायज़ न मानता था और समाज भी उन्हे अधिकतर धूर्त्त और बदमाश ही समझता था। इसी कारण उन्हें रानी अथवा विशिष्ट सामन्तो के सरक्षण मे उनके 'जनो' के रूप में रहना पडता था। रगमच भी आज के रगमच से भिन्न था, उसकी छत न थी, मच एक ऊँचा प्लेटफॉर्म था। पीछे की छत मे एक अट्ट था जहाँ से बिगुल बजाकर खेल का आरभ सूचित कर दिया जाता था। मच पर पर्दे न थे और उसे श्रोतागण तीन ओर से घेरे रहते थे। कीमती वस्त्र पात्रो के रूप और स्थिति को व्यक्त करते थे। मच के पीछे दोनो ओर एक-एक दरवाजा होता, जिससे पात्र आते-जाते थे।

: १२ :

शेक्सपियर और उसके परवर्ती

(१५९२-१६४२)

जिस अग्रेजी नाट्य-साहित्य ने ससार के साहित्य-क्षेत्र मे अपना असाधारण स्थान बनाया उसका अनुपम स्रष्टा विलियम शेक्सपियर था। शेक्सपियर स्ट्रेटफोर्ड ऑन एवॉन

---

१ Robert Greene (१५६०-९२)

का रहने वाला था और अभिनेता तथा नाटककार दोनों था। उसके पहले भी इग्लैंड मे नाटककार हुए थे, परन्तु जिस रूप और मात्रा मे उसने अपनी समकालीन जनता को आकृष्ट किया वैसा न कभी किसी ने पहले किया था न पीछे किया। ससार के नाटक-क्षेत्र पर उसने असाधारण प्रभाव डाला।

शेक्सपियर ने अपनी जनता के लिए लिखा, अग्रेज नागरिकों और अग्रेजी राज-दरबार के लिए। भाषा, भाव-व्यजना, नाटकीय प्रभाव और चरित्र-चित्रण मे वह लासानी है। उसने लिखा भी अमित मात्रा मे, प्राय ३६ नाटक अपनी कविताओं के अतिरिक्त। इनमे कुछ ऐतिहासिक है, कुछ अनैतिहासिक, कुछ कॉमेडी (सुखान्त अथवा विनोद व्यग्य-युक्त नाटक), कुछ ट्रैजेडी (दुखान्त नाटक), कुछ रोमाटिक कॉमेडी और कुछ रोमाटिक ट्रैजेडी। अपने ऐतिहासिक नाटकों के लिए उसने सामग्री इग्लैंड और विदेशो के इतिहास से ली, रेफएल होलिंशेड के 'क्रॉनिकल्स' और प्लूटार्च की 'लाईव्ज़' से।

शेक्सपियर के ऐतिहासिक नाटक है—'हेनरी दि सिक्स्थ' (तीन भाग का नाटक) 'रिचर्ड सैकेण्ड और रिचर्ड थर्ड', 'हेनरी फोर्थ' (दो भाग) और 'हेनरी फिफ्थ'। इनमे से अधिकतर उस महाकवि की प्रारभिक कृतियाँ है। इनमे रिचर्ड-सबधी नाटक ट्रैजेडी है। उसकी अनैतिहासिक कॉमेडियो की सख्या भी काफी है और उन्होने नाटकीय सफलता असाधारण मात्रा में अर्जित की। 'लव्ज़ लेबर्स लॉस्ट', 'दि टू जेन्टिलमेन ऑफ वेरोना', 'दि कॉमेडी ऑफ ऐरर्स', 'दि टेमिंग ऑफ दि श्रू', 'ए मिडसम्मर नाइट्स ड्रीम', 'मच अडो अबाउट नथिंग', 'ऐज़ यू लाइक इट', 'ट्वेल्व्थ नाइट', 'दि मर्चेन्ट ऑफ वेनिस', 'ऑल्स वैल दैट एन्ड्स वैल', 'ट्रायलस एण्ड क्रेसिडा'—सब नाटकीय जगत् में विख्यात है और आज भी ससार के अभिनय-क्षेत्र पर छाए हुए है। इनमे 'ए मिडसम्मर नाइट्स ड्रीम' कॉमेडी के क्षेत्र में अपना सानी नही रखता। इन कॉमेडियो मे प्लॉट का महत्व विशेष नही है। वस्तु के रूप में शेक्सपियर साधारण से साधारण स्थिति या घटना चुनता है परन्तु अपनी लेखनी के जादू से, शब्दावली से, चरित्र-चित्रण से, व्यग्यात्मक चोट से, उन्हें असामान्य, सर्वथा अपना बना देता है—एक नई दुनिया, पर जानी-देखी हुई दुनिया, जिसमें प्रणय और घृणा, क्रोध और दया, मिलन और विरह, ईर्ष्या और जलन, चाटुकारिता—सभी अपने आवश्यक आवेशो के साथ अभिसृष्ट होते है और असाधारण शक्ति से हमें वशीभूत कर लेते है। समसामयिक ससार पर तो शेक्सपियर ने चोटें की ही, विगत ग्रीक जगत् को भी, जो क्लासिकल रूप में उस काल स्तुत्य हो गया था, उसने न छोडा—'ट्रायलस एड क्रेसिडा' मे उसे भी व्यग्यात्मक बाणो से जर्जर कर दिया।

शेक्सपियर की महान् ट्रैजेडी-रचनाएँ 'हैमलेट', 'ओथैलो', 'मैक्बेथ', 'किंग लियर', 'ऐण्टॅनी एण्ड क्लियोपेट्रा' और 'कोरियोलेनस' है। ये सारे सत्रहवी सदी के पहले छह सालो

में लिखे जा चुके थे। परन्तु केवल इन्ही तक उस महाकवि के दु खात्मक आवेगो का अकन सीमित नही है। वस्तुत 'रिचर्ड सेकण्ड' और 'रिचर्ड थर्ड' के रूप मे ही वह अशत ट्रैजेडी प्रस्तुत कर चुका था। जिस प्रकार उसने रोमाटिक कॉमेडियो की रचना की थी, रोमाटिक ट्रैजेडियो का भी सृजन किया। उनका एक सुघड नमूना 'रोमियो एण्ड जूलियट' है। 'जूलियस सीज़र' मे शेक्सपियर ने विगत रोमन इतिहास का ससार फिर से सिरजा और वह इतना सजीव कि उस प्रकार का कोई नाटक न पहले कभी लिखा जा सका था, न पीछे लिखा जा सका। इन ट्रैजेडियो में शेक्सपियर की कला ने अद्भुत शक्ति धारण कर ली है। 'हैमलेट' खून, आत्महत्या, विक्षेप की कहानी है, परन्तु उसके पात्रो का चित्रण अद्भुत है और छन्द का व्यवहार असाधारण निपुण। 'हैमलेट' पुनर्जागरण काल का प्लॉट लेकर रग-मच पर अवतरित होता है। पुनर्जागरण काल की कला, ज्ञान, पापाचरण, शालीन वाता-वरण सभी कुछ उसके अन्तर्मुख, सयाने, तरुण राजकुमार के चतुर्दिक घूमते है। इसमे दृश्य जगत् की सक्रियता अन्तर्मेधा के चिन्तन से होड करती है। 'ओथैलो' प्रणय-सकट, ईर्ष्या और भावावरोध की करुण कहानी है। 'मैक्बेथ' भग्न महत्वाकाक्षा का विमूर्तन है, जिसमे भाषा और भाव सम्मिलित चोट करते है। जीवन की निस्मारता को अभिव्यक्त करते है। 'किग लियर' दु खान्तक नाटको में जैसे वीर काव्य है, महाकाव्य की शालीनता लिए हुए, प्राय वन्य, शक्तिम। 'ऐन्टॅनी एण्ड क्लियोपेट्रा' मे जो मर्यादा प्रणय और नारी को दी है महाकवि ने उन्हें अपनी अन्य कृतियो मे और कही न दी। इसके दोनो चरित्र शेक्सपियर के सबसे कुशल, सफल और सर्वथा अकृत्रिम चरित्रो मे है, प्राय अनुपम। 'कोरियोलेनस' इसके विपरीत राजनीतिक ट्रैजेडी है जिसमें राजनीतिक गाभीर्य वातावरण को कठोर बनाए हुए है।

'दि विन्टर्स टेल' और 'दि टैम्पेस्ट' शेक्सपियर की पिछली रोमाटिक रचनाएँ है। इनमें वह अपनी कुशल ट्रैजेडियो से हट आया है। इनमें से पहली में पशुपालन (पैस्टोरल) ससार जी उठा है,परन्तु ससार जो अनजाना नही है,पहचाना जा सकता है। 'दि टैम्पेस्ट'में पार्थिव-अपार्थिव दोनो शक्तियो का प्रदर्शन है और इसमे कवि की जाग्रत मेधा का विकास है।

महाकवि शेक्सपियर नाटक के ससार मे प्राय अकेला है, काव्य-कुशलता मे, नाट-कीय प्रभाव मे, चरित्र-चित्रण मे, वस्तु के सघटन में, भाषा और भाव मे। वह अपनी जनता की आवश्यकताएँ-कामनाएँ, गुण-दोष जानता है, साथ ही अपने रगमच की सीमाओ को भी। उनके अनुकूल ही वह अपने नाटको के स्थल प्रस्तुत करता है और असामान्य रूप मे सफल होता है।

शेक्सपियर के समवर्ती

शेक्सपियर अग्रेजी साहित्य मे इतना असाधारण है कि उसके सूर्यके समान तेज से और नक्षत्रो का मलिन हो जाना स्वाभाविक है। परन्तु इसमे सन्देह नही कि, यद्यपि उसकी महा-

नता को उसके समकालीन नाटककार न प्राप्त कर सके, निस्सन्देह अनेक ऐसे थे जिनका अंग्रेजी साहित्य में अपना स्थान है। बेन जॉनसन उसी प्रकार का एक यशस्वी व्यक्तित्व था जो शेक्सपियर का अनेकार्थ मे एक प्रकार से जवाब है। जॉन्सन क्लासिकवादी है, ग्रीक और लैटिन नाटको का पोषक और नाटक के क्षेत्र मे सुधारवादी। रोमाचक शैली से मुंह फेर उसने यथार्थवाद को अपनाया और कमिडी के क्षेत्र मे उसने काल, स्थान तथा प्लॉट की एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उसकी प्रारभिक कृतियो मे 'एवरी मैन इन हिज ह्यूमर' अमर हो गया है। उसके पात्र विनोदी है और उसने उनके रुग्ण आचार की अच्छी खिल्ली उडाई है। उसे कुछ लोगो ने सत्य ही १७वी सदी का डिकेन्स कहा है। सम-सामयिक व्यापार और धन ने मध्यवर्गीय जनता को जो नितान्त भ्रष्ट कर दिया था तो जॉन्सन अपने नाटको मे उसका भण्डाफोड करने से न चूका। बेन जॉन्सन अत्यन्त मौलिक है और उसके नाटको ने काफी ख्याति भी पाई है, यद्यपि जितनी ख्याति उसे उनके द्वारा मिलनी चाहिए थी उतनी मिली नही। 'वोल पोने', 'दि साईलैंट वोमन', 'दि अलकेमिस्ट' और 'वार्थोलोमिओ फेयर' अंग्रेजी साहित्य की कॉमेडी के क्षेत्र में अनूठी रचनाएँ है।

बेन जॉन्सन ट्रैजेडी के क्षेत्र में इतना सफल न हुआ। 'सेजेनस' और 'कैटिलीन' ट्रैजेडी के क्षेत्र मे उसकी कृतियाँ है जिनमे जीवन का अभाव है और जिनके पात्र मूर्च्छित से है। शेक्सपियर की समकालीनता जॉन्सन की ख्याति मे विशेष घातक सिद्ध हुई।

इस काल का दूसरा नाटककार जॉर्ज चैपमैन[१] है जो विशेषत होमर के अपने अनुवाद के लिए प्रसिद्ध है। उसने तीन ऐतिहासिक ट्रैजेडी लिखी—'बुस्सी डि एम्ब्वॉए', 'दि रिवैंज ऑफ बुस्सी डि एम्ब्वॉए' और 'दि ट्रैजेडी ऑफ चार्ल्स, ड्यूक ऑफ बिरोन' इनकी ऐतिहासिकता फ्रास के दरबार से सम्बद्ध है और मार्लो से काफी प्रभावित उसकी शब्दावली शालीन है, यद्यपि नाटकीय क्षेत्र में उसको महान् कहना शायद उचित न होगा।

१७वी सदी के कुछ यथार्थवादी नाटककार डैक्कर, फ्लैचर, टूअरनेर आदि हैं। टॉमस डैक्कर[२] यथार्थवादी होता हुआ भी रोमाटिक था। श्रमिको का वह हिमायती था और अपने 'शू मेकर्स हॉलीडे' में उसने उनका प्रशसनीय वर्णन किया है। उसकी रचना 'दि ऑनेस्ट व्होर' बडी करुण कृति है जिसमे उसने यथार्थवादी ढग से समसामयिक समाज का चित्रण किया है। डैक्कर जहाँ श्रमिको और साधारण नागरिको को अपना पात्र बनाता है टॉमस हेवुड[३] नये उठते हुए मध्यवर्ग को चित्रित करता है जैसा उसके 'ए वोमन किल्ड विद काइण्डनेस' से प्रकट है। इस कृति मे साधारण जनता का दिग्दर्शन निस्सदेह उचित नही

---

१ George Chapman (१५५९-१६३४), २ Thomas Dekker (१५७०-१६४१); ३ Thomas Heywood (१५७५-१६५०),

कहा जा सकता। फिर भी इतना सही है कि अब इग्लैंड मे ऐसे नाटककार उत्पन्न हो गये थे जिन्होने अपने कृतित्व का क्षेत्र दरबार से हटाकर विस्तृत जनसाधारण पर रखा। व्योमोन्ट और फ्लेचर, दोनो ने नागरिको को अपने नाटको का केन्द्र बनाया।

जॉन फ्लेचर[1] और फ्रासिस व्योमोट[2] दोनो ने पहले कुछ काल सम्मिलित रूप से लिखा। 'दि नाइट ऑफ दि बर्निंग पेस्टल' उनकी सम्मिलित रचना है जिसमे उन्होंने नागरिको के विश्वासो की आलोचनापूर्ण अभिव्यजना की। उनकी तीन कृतियाँ 'फिलैस्टर' 'दि मेड्स ट्रैजेडी', और 'ए किंग एण्ड नो किंग' विशेष जानी हुई है। इन ट्रैजेडियो का क्षेत्र यथार्थता से काफी दूर है और नाटक-शैली भी यथार्थवादी नही कही जा सकती। कृत्रिम आवेगो का उनमें बरबस योग है। अपनी कृत्रिमता के ही कारण वे शेक्सपियर की-सी स्वाभाविकता अपनी कृतियो मे प्रस्तुत न कर सके।

१७वी सदी के पूर्वार्द्ध मे अपार्थिव प्रसगो की भी काफी रचना हुई। वैब्स्टर[3] ऐसे नाटककारो में काफी प्रसिद्ध हो गया है। उसकी दोनो रचनाओ—'दि ह्वाइट डेविल' और 'दि डचेज़ ऑफ मालफी'—में कथानक प्रतिशोध-प्रधान है। शेक्सपियर के 'हैमलेट' की भाँति उसकी शैली मे षड्यन्त्र ललित कला का रूप धारण कर लेते है। उसकी रचना मे नाट्य तत्त्व प्रभूत है जिसका प्राण कथानक की भयकरता है। जीवन को जॉन वैब्स्टर अपनी कृतियो में भ्रष्ट, भयानक और क्रूर प्रकाशित करता है। सीरिल टूअरनेर[4] की ट्रैजेडी 'दि रिवेंजर्स ट्रैजेडी' और 'दि एथीस्ट्स् ट्रैजेडी' में वैब्स्टर की शैली असाधारण रूप धारण कर लेती है। उसके पात्र नितान्त क्रूर और प्रतिशोधवादी हो जाते हैं, चरित्र नितान्त भ्रष्ट। दरबार का चित्र ही इन कृतियो का क्षेत्र भी है। अस्वाभाविक पुतलियो की भाँति उसके पात्र चलते-फिरते है। वैब्सटर की ही भाँति टूअरनेर भी अपने नाटको में प्रधानत कवि है।

व्योमौन्ट और फ्लैचर की ही भाँति अनेक तत्कालीन नाटककारो ने सम्मिलित रचना की जिससे उनका व्यक्तिगत मूल्याकन और स्वतत्र कृतिमत्ता की व्याख्या कठिन है। उनमें कुछ की कृतियो का हवाला दिया जा सकता है। टॉमस मिडिलटन[5] का नाम दो कॉमेडियो से सम्बद्ध है—'ए चेस्ट मेड इन चीप साइड' उनमे विशेषत प्रसिद्ध है। उसकी ट्रैजेडियो में विख्यात है 'दि चेन्जलिग' जिसमें शेक्सपियर और वैब्स्टर दोनो की शैलियो का योग है। यह कृति भी भयानक घटनावादी है। फिलिप मासिंजर[6] कॉमेडी का सफल नाटककार माना जाता है और उसने अपनी 'ए न्यू वे टु पे ओल्ड डेट्स' नामक रचना मे

---

१ John Fletcer (१५७९-१६२५), २ Francis Beaumont (१५८४-१६१६); ३. John Webster (१५७५-१६२४), ४. Cyril Tourneur (१५७५-१६२६), ५ Thomas Middleton (१५७०-१६२७), ६ Philip Massinger (१५८४-१६३९);

उपन्यास का क्षत्र अपनाया। नाटको के सैन्सर की जो परपरा तब प्रतिष्ठित हुई वह आज भी प्रतिष्ठित है। उस काल के अभिनय-क्षेत्र मे दो नाम अमर हो गये—गैरिक[१] और मिसेज सिडौन्स। इसी मिसेज सिडौन्स का चित्र लिखकर सर जोशुवा रेनाल्ड्स ने अपने को धन्य माना।

१८वी सदी की प्रारभिक कृतियो मे जॉन गे[२] की 'दि बैगर्स ओपेरा' (१७२८) काफी प्रसिद्ध है। अनेक आलोचको ने वालपोल पर इसे एक व्यग्य माना है। इस कृति ने अनेक परवर्ती नाटककारो को प्रभावित किया यद्यपि वे इसकी प्रखरता प्राप्त न कर सके। सामाजिक क्षेत्र मे एक नया जीवन मूर्तिमान हो रहा था, एक नयी दुनिया इग्लैड की जमीन पर खडी हो रही थी और साहित्य में भी तदनुकूल परिवर्तन स्वाभाविक था। भावो और आवेशो की पृष्ठभूमि पर एक नयी अनुभूति की चेतना जगी और १८वी सदी के नाटककारो ने उसकी प्रतिष्ठा मे विशेष योग दिया। उसके प्रारभिक प्रवर्तको मे एक रिचर्ड स्टील[३] है जिसने १७०५ में 'दि टैन्डर हज़्बैंड' लिखकर गार्हस्थ जीवन के सौदर्य का निरूपण किया। जॉर्ज लिल्लो[४] और भी नीचे उतरकर साधारण की परपरा में खडा हुआ और अपने 'लन्डन मर्चेन्ट ऑर दि हिस्ट्री ऑफ दि जॉर्ज बार्न वेल' में जो उसने अप्रैटिस के जीवन का सही गम्भीर और अकृत्रिम खाका खीचा वह ड्रामा के क्षेत्र में एक नया भाव लेकर उतरा। ह्यू कैली[५] और रिचर्ड कम्वरलैण्ड[६] ने भावो के जगत् में अपनी लेखनी चमत्कृत की। कम्बरलैड की कृति 'दि वेस्ट इण्डियन' (१७७१) ने तो भावनाओ के ससार में मानव-प्रश्नो को सर्वथा डुबो दिया। उसका आकार उसकी शैली में सर्वथा नगण्य हो गया। और तब प्रख्यातनामा गोल्डस्मिथ और शैरिडन ने अकृत्रिम, स्पष्ट, मानवेगित नाटक की कैली और कम्वरलैड की परपरा से रक्षा की।

ऑलिवर गोल्डस्मिथ अग्रेजी साहित्य के महान् व्यक्तित्वो में है। १७६८ ईस्वी में उसने 'दि गुड नेचर्ड मैन' लिखा और पाँच वर्ष बाद 'शी स्टूप्स टु काकर'। इनमे दूसरी कृति तो आज भी रगमचो का (विशेषकर गैर पेशेवाले) आकर्षण है। अकृत्रिम मानवता जैसे इसमें सजीव हो उठी है। यद्यपि उसमें असम्भाविता की मात्रा कुछ कम नही, पात्रो का अकन अद्भुत शक्ति के साथ हुआ है। हार्डकेसल और टोनी लम्पकिन अपना व्यक्तित्व रखते हुए भी उस काल के जीते-जागते विनोदी जीव है।

परन्तु १८वी सदी के उस उत्तरार्द्ध मे जिसमे गोल्डस्मिथ ने अपनी रचनाएँ की, रिचार्ड शैरिडन[७] अनुपम हुआ। वह कभी परराष्ट्र-विभाग का उपमत्री और ट्रेजरी का

---

१ David Garrick (१७१७-७९), २ John Gay (१६९५-१७३२)
३ Richard Steele (१६७२-१७२८), ४ George Lillo (१६९३-१७३९),
५ Hugh Kelly (१७३९-७७), ६ Richard Cumberland (१७३२-१८११),
७ Richard Brinsley Sheridan (१७५१-१८१६)

मत्री था। उस काल के रगमच के प्रमुख निर्माताओ मे शैरिडन अग्रणी था। उसकी ख्याति उसकी तीन कॉमेडी-कृतियो पर अवलवित है—'दि राइवल्स' (१७७५), 'दि स्कूल फॉर स्कैन्डल' (१७७७), 'दि क्रिटिक' (१७७९)। शैरिडन नितान्त प्रखर बुद्धि और असाधारण मौलिक था और कॉमेडी के क्षेत्र मे उसने पुनर्जागरण-काल की सजीवता फिर से प्रस्तुत की। उसकी प्रवृत्ति निश्चय ही रोमाचक है। चरित्र-चित्रण के क्षेत्र मे तो वह नितान्त अनूठा है और उसने बैन जॉन्सन की कृतिमत्ता पुन स्थापित कर दी। हाँ, यह मानना होगा कि शैरिडन की दुनिया मे न कोई गहराई है, न मानव-स्वभाव की कोई पहचान या व्याख्या। फिर भी अपने अल्पकालीन साहित्यिक जीवन मे उसने जो कुछ रचा वह प्रतीक वन गया। जिस प्रसाद और सरलता से वह अपने पात्र उपस्थित करता है और दृश्य रँगता है वह साधारण नही। 'दि स्कूल फॉर स्कैन्डल' में उसकी शैली प्रखर और अधिक सक्रिय हो उठती है और दृश्य नितान्त अकृत्रिम हो जाते है। विनोद और हास्य की अभिसृष्टि जितनी उसकी कॉमेडियो में हुई है, उतनी अन्यत्र उपलब्ध नही। १८वी सदी के उत्तरार्द्ध का जो चित्रण उसने किया है उतना कोई अन्य नाटककार न कर सका।

: १५ :

शेरिडन से शॉ तक

(१७७०–१९५०)

औद्योगिक क्रान्ति

शैरिडन के बाद अग्रेजी नाट्य साहित्य पर जैसे तुषारापात हो गया। जहाँ कहानी, उपन्यास और कविता की साहित्य में भरमार हो गई, वहाँ नाटक का क्षेत्र जैसे सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ। उन्नीसवी सदी रोमाटिक कवियो का सृजन-काल है। ऐसा नही कि नाटक लिखने के प्रयत्नो से वह काल सर्वथा रहित हो। नाटक लिखे गये और रोमाटिक कवियो ने स्वय अनेक रचनाएँ उस दिशा मे प्रस्तुत की। परन्तु वस्तुत वे असफल रही। शेली की 'चेंची' को छोडकर और कोई रोमाटिक कृति सफल न हुई और वह 'चेची' भी सर्वथा यौन होने के कारण रगमच पर अभिनीत नही हो सकी, अथवा कम-से-कम इग्लैंड के तत्कालीन सेंसर के अनुकूल नही हो सकी।

उस काल, एलिज़ावेथ-काल के अर्थ मे नाटक तो नही, परन्तु प्रहसन और मेलोड्रामा जरूर लिखे गये। नाटक के प्रति इस उदासीनता का कारण न केवल अभिनय के प्रति रोमाटिको की उदासीनता थी वरन् राजदरवार की उपेक्षा भी उसका एक कारण था। विक्टोरिया को राजनीति साहित्य से अधिक प्रिय थी और इस दिशा मे एलिज़ावेथ से वह सर्वथा भिन्न थी। इस प्रकार उन्नीसवी सदी के नाटक को दरवार की सुरक्षा न प्राप्त हो

सकी, यद्यपि दरबार की सरक्षता प्राप्त न होना नाटक की सृष्टि में विशेष कारण नही माना जा सकता, क्योकि आखिर शेक्सपियर या शॉ के नाटको को भी तो वह सरक्षा आज उपलब्ध नही और अपनी नाटकीय कुशलता के कारण ही तो आखिर वे लोकप्रिय हो सके हैं। नाटक के ह्रास का विशेष कारण हमें अन्यत्र खोजना होगा—जनता की उदासीनता में। औद्योगिक क्रान्ति ने एक नये मध्यवर्ग और उससे भी समृद्ध धनी वर्ग की अभिसृष्टि कर दी थी और ये दोनो साहित्य के प्रति उदासीन थे। एक धन की सीमाओ के बाहर देखता तक न था, दूसरा उसका गुलाम था और कलाकार उनके साथ अपनी आत्मीयता स्थापित न कर सका। सामन्तवाद की हमदर्द सरक्षा उठ चुकी थी और पूजीवर्ग की सरक्षा उपलब्ध न थी और कलाकार भी रोमांटिक होने के कारण यथार्थवादी न हो सका, नये जीवन के नये रूप को अपनी कृतियो में वह मूर्तिमान न कर सका। इसके अतिरिक्त उस काल लन्दन में केवल दो अभिनय गृह—'कोवेन्ट गार्डन' और 'ड्रूरी लेन'—जिनको नाटक खेलने का एकाधिकार प्राप्त था, सीमित सख्या मे ही नाटको का प्रदर्शन कर सकते थे। हाँ, १९वी सदी के तीसरे चरण के अन्त मे निश्चय ही अधिकाधिक नाट्यगृह सर्वत्र बन चले।

उन्नीसवी सदी का अन्त

ऊपर नाटककार की समसामयिक प्रवृत्तियो से आत्मीयता स्थापित न कर सकना उस काल के नाटक-ह्रास का जो एक कारण माना गया है, वह विशेषत स्मरण रखने की बात है। १८वी सदी में लिल्लो ने बदलती हुई जन-प्रवृत्ति का एक अश में अकन किया था। १९वी सदी में नाटक मे समसामयिक जीवन को यदि किसी भाषा मे किसी ने अभिव्यक्त किया तो वह टी० डब्ल्यू० रॉबर्टसन[१] था। उसकी कृति 'कास्ट' मानी हुई रचना है। वह नाटक सगीत प्रधान है और लोग उसे फूहड कहने से भी न चूके, परन्तु अभिनीत होकर वह जीवन को खोलकर रख देता है। उन्ही दिनो नार्वे मे नाटक के असाधारण आचार्य इब्सन[२] का प्रादुर्भाव हुआ। इब्सन ने अपने काल के और परवर्ती कलाकारो को, क्या स्वदेश क्या विदेश में, सर्वत्र प्रभावित किया है। अग्रेजी ड्रामा पर भी उसका गहरा प्रभाव पडा और असाधारण मेधा वाले बर्नार्ड शॉ ने स्वय इब्सन की कृतियो से बहुत कुछ सीखा। उसके नाटक 'ब्रैंड' और 'पियर गिन्ट' के बराबर अग्रेजी में शायद कुछ नही है। उसके अन्य नाटको—'दि डॉल्स हाउस', 'दि घोस्ट्स', 'ऐन एनिमी आफ दि पीपल', "व्हैन दि डैड अवेकन", का जोड भी आधुनिक नाटक-साहित्य मे मिलना सम्भव नही। उसके बाद हेनरी आर्थर जोन्ज[३] और सर ए० डब्ल्यू० पिनेरो[४] का धरातल सहसा बहुत नीचे उतर आता है। इनमें पहले ने 'दि सिल्वर किंग' नाम का सगीत-प्रधान नाटक लिखा और 'सेन्ट्स एण्ड

१. T W Robertson २ Henrik Ibsen (१८२८-१९०६) ३ Henry Arthur Jones (१८५१-१९२९) ४ Sir Arthur Pinero (ज० १८५५-१९३४)

सिनर्स' तथा 'मिसेज डेन्स डिफैन्स' नामक समस्या-नाटक रचे और दूसरे ने 'दि सेकेण्ड मिसेज टैंकुएरे' रचा। परन्तु जोन्ज़ और पिनेरो दोनो इब्सन के मुकाबले नितान्त लघु थे, नगण्य। ऑस्कार वाइल्ड का उल्लेख करने के पहले गिल्बर्ट[1] की ओर सकेत कर देना उचित होगा। दोनो ने ओपेरा (सगीत) नाटक प्रहसन लिखे। वस्तुत दोनो वाइल्ड और शॉ के पूर्ववर्ती थे, जिन्होने उनके लिए क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया। वाइल्ड बडी प्रतिभा का नाट्यकार था। और उसका जेल चला जाना नाटक-साहित्य के लिए बडा घातक सिद्ध हुआ, फिर भी उसकी अनेक कॉमेडी कृतियो मे 'लेडी विंडरमियर्स फैन', 'ए वोमन ऑफ नो इम्पोर्टेन्स', 'ऐन आइडियल हजवैंड' और 'दि इम्पोर्टेंस ऑफ वीग अर्नेस्ट', प्रधान है जो उसकी मेधा प्रचुर मात्रा मे प्रकट करती है।

वीसवी सदी

२०वी सदी नये सम्भार के साथ नाटक के क्षेत्र मे अवतरित हुई। उसके साथ १९वी सदी की किसी प्रकार भी तुलना नही की जा सकती। नाटक सवधी २०वी सदी की यह सम्पदा समृद्धि मे एलिज़ावेथ-काल के समान थी। वार्कर ने अपनी कृतियो द्वारा एक नये प्रकार की नाटय-कुशलता प्रस्तुत की। वार्कर[2] समस्या-सजीव और असाधारण यथार्थ-वादी था। उसके नाटक 'दि वौयसे इनहेरिटेन्स' (१९०५) और 'वेस्ट' (१९०७) इस दिशा मे प्रमाण है। 'दि मैरिंग ऑफ एनलीट' तथा 'प्रूनेला' में उसने रोमाटिक तत्व भी अकित किये। 'प्रूनेला' की रचना उसने लॉरेन्स हॉसमन के सहयोग से की थी।

यथार्थवादी और समसामयिक जीवन की पृष्ठभूमि बनाकर नाट्य रचना करने वाले इस काल के कलाकारो मे जान गाल्ज़वर्दी[3] अग्रणी है। "स्ट्राइफ" (१९०९), 'जस्टिस' (१९१०) और 'लॉयलटीज़' (१९२२) नाम की उसकी रचनाओ ने ड्रामा क्षेत्र में काफी ख्याति पाई। सेन्ट जॉर्ज इरविन[4] ने अपने 'जैन क्लेग' (१९११) और 'जॉन फर्गुसन' (१९१५) में समसामयिक यथार्थवादिता की परपरा रखी। जॉन मेसफील्ड[5] ने १९०८ मे 'दि ट्रैजेडी ऑफ मैन' की रचना की और गार्हस्थ्य पृष्ठभूमि में काव्यगुण का योग दिया।

इरविन के साथ कुछ आइरिश कवियो का भी नाम लिया जाता है, जिन्होने नाटक के क्षेत्र मे कुछ प्रयोग किये। लेडी ग्रैगरी, यीट्स, सिन्ज, ओकेसी आदि उसी परपरा के हैं। यीट्स नाटककार से कवि अधिक सफल माना जाता है। यद्यपि उसकी 'कैथलीननी हाउलीहान' और 'दि लैंड ऑफ हार्ट्स डिजायर' आइरिश कल्पना के प्रकट नमूने है।

---

१ Gilbert Cannan (ज० १८८४) २ Harley Grenville Barker (ज० १८७०) ३ John Galsworthy (१८६७-१९३३) ४ Saint George Irwin ५ John Mase Field (ज० १८७४)

नाटककार के रूप में जॉन मिलिंगटन सिंज[1] उससे कही कुशल कलाकार था। उसका 'प्लेब्वाय ऑफ दि वैस्टर्न वर्ल्ड' आइरिश चरित्र की सुन्दर व्याख्या है। सीन ओ 'केसी[2] ने 'जूनो एण्ड दि पेकौक' और 'दि शैडो ऑफ ए गनमैन' मे डबलिन का जीवन प्रतिबिम्बित किया।

सर जेम्स वेरी[3] की बडी प्रतिकूल आलोचना हुई है परन्तु उसका 'पीटरपैन' कल्पना और भावना का सम्मिलित क्षेत्र होकर भी नाटक के दृष्टिकोण से कुछ कम श्लाघ्य नही। उसकी दो और रचनाएँ—'दि ऐडमिरेवल क्राइटन' (१९०२) और 'डियर ब्रूटस' (१९१७) विशेष प्रसिद्ध हुई।

परन्तु सावधि साहित्य का शेक्सपियर तो जॉर्ज बरनार्ड शॉ[4] है। अनेक आलोचको का कथन है कि अंग्रेजी नाटक-साहित्य मे यदि केवल दो व्यक्तियो का नाम लिया जाय तो उनमे एक शॉ निश्चय होगा। इस राय से कोई सहमत हो या नही, इसमें शायद दो मत नही हो सकते कि शॉ शेक्सपियर के बाद के नाटक-साहित्य का सबसे बडा प्रतिनिधि है। उसका जीवन-काल भी सुदीर्घ था। १८५६ से १९५० तक, ९४ वर्ष। अंग्रेजी साहित्य के क्षेत्र मे सम्भवत कोई कलाकार इतना दीर्घायु न हुआ। अंग्रेजी ड्रामा के इतिहास में शॉ का सृजन काल काफी दीर्घ था। १८९२ मे ही उसने अपना नाट्यकार जीवन 'विडोअर्स-हाउसेज' से आरभ किया और १९३९ तक 'इन गुड किंग चार्ल्ज़ गोल्डन डेज़' तक निरन्तर जारी रखा। शॉ की मेधा असामान्य थी, नितान्त प्रखर। इब्सन की भाँति उसने भी अपने नाटको को अपने विचारो का समर्थ वाहक बनाया। उसके व्यग्य चुभने की शक्ति में बेजोड है, काग्रीव और वाइल्ड दोनो का वह सम्मिलित उदाहरण है। वह सोशलिस्ट था, फेवियन सोसाइटी के निर्माताओ में से, और यौन, धर्म, आचार सभी कुछ उसके अभिप्रेत विषय थे। नाट्य-कुशलता उसमें असाधारण थी।

'मिसेज़ वारेन्स प्रोफेशन' मे उसने गणिका के जीवन में अपने दूषित वातावरण का अनिवार्य परिणाम प्रदर्शित किया है जिसमें नारी वारागना के दूषित पेशे को लाभकर रूप में बाध्य होकर स्वीकार करती है और इस प्रकार केवल रूमानी वेश्या नही रह जाती। आचार और आचरण के परपरागत क्रम को विपरीत कर अकित करना शॉ की सहज कला है। उसकी कॉमेडी के व्यग्य की यही सार्थकता है। यही रूप निरन्तर 'सीज़र ऐण्ड क्लियोपेट्रा' से लेकर उसकी 'सेन्ट जोन' तक की कृतियो में विघटित है।

उसकी रचनायें समस्या-प्रधान और प्रश्न-प्रधान होने के कारण चरित्रो को नही देती। इसका अपवाद उसकी नाट्य-शृखला में बस एक है, 'कैन्डिडा'

---

१ John Millington Synge (१८८१-१९०९) २ Sean O' Casey ३. Sir James Barrie (१८६०-१९३७) ४ George Bernard Shaw (१८५६-१९५०)

(१८९४)। वस्तु का चुनाव वह अपनी समस्याओ के अनुकूल करता है। इसीसे उसके नाटको की वस्तुभूमि निरन्तर समस्याओ की विविधता के अनुकूल बदलती जाती है। कही तो 'दि डैविल्ज़ डिसाइपल' की भाँति उसका प्लॉट साधारण कथानक के रूप मे खुलता है और कही (अधिकतर) जैसे 'गैटिग मैरिड' में कहानी सूक्ष्मतम हो जाती है। फिर भी उसके कुछ नाटको मे इन दोनो तत्वो का सुन्दर सम्मिश्रण है। जैसे—'मेजर वारवरा', 'दि शोइग अप ऑफ ब्लैको पौसनेट' अथवा 'जॉनबुल्स अदर आइलेड' में। इन नाटको की विपेशता इनके कलेवर से अधिक अनेक वार इनकी प्रशस्त भूमिकाओ मे होती है। इन्ही भूमिकाओ मे वह अपने विचारो को व्यग्यपूर्ण शक्तिम चुने शव्दो मे रखता है। 'ऐड्रोक्लीज़ एण्ड दि लॉयन' की भूमिका मे ईसाई धर्म पर उसने प्रबल प्रहार किया है। समस्याओ की प्रधानता पहले महासमर के वाद के उसके नाटको मे विशेष रूप धारण करती है। जैसा 'हार्ट ब्रेक हाउस', 'दि ऐपल कार्ट', टु ट्रू टु बी गुड', 'दि मिलियोनेयर्स', और 'जिनेवा' नाम की उसकी रचनाओ से प्रकट है। उसके 'मैन एण्ड सुपरमैन' और 'वैक टु मैथुसेला' ने कभी नाट्य-ससार पर सम्मोहन डाल दिया था, यद्यपि आज उनके जादू की शक्ति उतनी नही रही। 'पिगमेलियन' का प्रभाव भी दर्शको पर कुछ कम न पडा। फिर भी यह कहना कठिन है कि शॉ का प्रभाव साहित्यिक जगत् पर कब तक रहेगा। इतना निश्चय कहा जा सकता है कि आगे कुछ काल तक उस महान् कलाकार का प्रभावाकार छोटा नही होगा। राजनीति, समाज, अर्थ, दर्शन, सब पर वह अपने व्यग्य का चुटीला प्रहार करता है और समस्याप्रधान होकर भी उसके नाटक अभिनय के क्षेत्र मे आज वेजोड है। उसके नाटको की रगमचीय सफलता अर्थार्जन मे भी उसकी असाधारण रूप से सहायक हुई है। साहित्य के क्षेत्र में अपने जीवन-काल में शायद किसी अन्य कलाकार ने अपनी रचनाओ से इतना धन नही कमाया जितना वरनार्ड शॉ ने।

आधुनिक काल के अंग्रेजी नाटक का विवरण वस्तुत शॉ के साथ समाप्त हो जाता है फिर भी उसके कुछ समकालीनो का उल्लेख यहाँ अनुचित न होगा। टी एस एलियट का उल्लेख कवि-परपरा मे हो चुका है। उसका 'मर्डर इन दि कैथेड्रल' (१९३५) पद्यात्मक ट्रैजेडी का एक सुन्दर नमूना है। ओडन और क्रिस्टोफर इशरुड ने भी कुछ प्रयोग किये है जो दिलचस्प है। इन्होने पद्य और नृत्य के समावेश से नाटक को गद्य के चगुल से मुक्त करना चाहा है। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य उदीयमान नाटककार भी साहित्य-निर्माण मे प्रयत्नशील है, जिनका विवरण यहाँ समीचीन नही।

: १६ :

उपन्यास

आरभ से डि फो तक

कहानी-लेखन की उस परपरा का प्रादुर्भाव जिसे हम उपन्यास कहते है, साहित्य में अपेक्षाकृत काफी पीछे हुआ। कुछ ने तो अग्रेजी मे उसका आरभ रिचर्डसन की 'पामेला' से माना है। जो भी हो, उपन्यास का आरभ १६वी सदी के पहले नही रखा जा सकता। १६वी सदी में भी उपन्यास के रूप मे सर फिलिप सिडनी की जिस कृति 'आर्केडिया' का उल्लेख किया जाता है वह वस्तुत उपन्यास के माने हुए रूप को अभिव्यक्त नही करती।

उपन्यास की परिभाषा तो आसान नही पर साधारणत उसकी व्याख्या मे कहा जा सकता है कि वह गद्य की शैली मे लिखा वह साहित्य है जो कहानी पर अवलम्बित है, जिसमे चरित्र का वर्णन है और युग-विशेष का जीवन प्रतिबिम्बित है। जिसमे भावनाओ और आवेगो की क्रिया और प्रतिक्रिया अकित है और जिससे नर-नारियो का अपने वातावरण के प्रति सक्रिय दृष्टिकोण निदर्शित होता है। इस प्रकार के उपन्यास का आरभ वस्तुत १६वी सदी में सभव न था। फिर भी पृष्ठभूमि के रूप मे सर फिलिप[1] की 'आर्केडिया' की ओर हम सकेत कर सकते है।

जॉन लिली ने भी १६वी सदी में अपने 'यूफएस' और 'यूफएस एण्ड हिज इग्लैड' नाम के मनोरजक रोमास लिखे। एलिज़ाबेथ-युग में ही रॉबर्ट ग्रीन ने भी अपना 'पैन्डोस्टो' लिखा जिसे शेक्सपियर ने अपने 'विन्टर्स टेल' का आधार बनाया। उस तथाकथित उपन्यास मे लन्दन के उपेक्षित ससार का अकन हुआ। टॉमस लॉज[2] ने भी अपनी 'रोजालाईन्ड' तभी लिखी। परन्तु सही मनोरजन की सामग्री टॉमस डिलोने[3] ने प्रस्तुत की। उसके 'जैक ऑफ न्यूबरी' मे जुलाहो का जीवन प्रतिबिम्बित हुआ और 'दि जेन्टल क्राफ्ट' मे चमारो का। टॉमस डैक्कर ने भी समसामयिक घृणित जीवन के चित्र अपनी कृति 'गुल्स हॉर्न-बूक' मे प्रस्तुत किये। टॉमस नैश[4] ने उपन्यास-लेखन की कला में कुछ प्रगति कर १६वी सदी समाप्त की।

१९वी सदी का उतरार्द्ध उपन्यास-लेखन की दिशा मे पिछली सदी में कुछ अधिक जाग्रत हुआ। जॉन बुन्यन[5] का नाम अग्रेजी साहित्य मे काफी बडा है। वह सैनिक

१ Sir Philip Sidney (१५५४-८६), २ Thomas Lodge (१५५८-१६२५); ३ Thomas Deloney (१५४३-१६००), ४ Thomas Nashe (१५६७-१६०१), ५ John Bunyan (१६२८-८८)

और पादरी वारी-वारी रह चुका था और उसने साहित्य-प्रसिद्ध अपनी रचना 'दि पिल्ग्रिम्स प्रोग्रैस' १६७८ में प्रकाशित की। दो साल वाद उसकी दूसरी रचना 'दि लाइफ एण्ड डैथ ऑफ मिस्टर वैडमैन' भी लिखी गयी और अन्त मे 'होलीवार' (१६८२) प्रकाशित हुआ। 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रैस' रूपक है और उसका कथानक कल्पना पर अवलबित है, यद्यपि उसमे कहानी का यथार्थ कुछ कम नही है।

परन्तु उपन्यास का वस्तुत आरभ १८वी सदी मे डेनियल डि फो[1] से हुआ। डि फो ह्विग और टोरी दोनो दलो का एजेट था। वह सट्टेबाज और दिवालिया भी था और उसने कुछ वैज्ञानिक अन्वेषण भी किये। उसने इधर-उधर की यात्राएँ भी की थी और वह उस जमाने का जाना हुआ पत्रकार था। अनेक वार उसे कैद भुगतनी पडी। 'दि रिव्यू', जिसका उसने १७०४ से १७१३ तक प्रकाशन किया, अग्रेजी पत्रकारिता की एक मजिल है। उसकी उपन्यास की दिशा में प्रवल कृति 'रॉबिन्सन क्रूसो' (१७१९) है। यद्यपि 'कैप्टन सिंगिलटन', 'मोल फ्लेन्डर्स', 'कर्नल जैक', 'ए जर्नल ऑफ दि प्लेग इयर', 'रोक्साना', आदि भी कुछ कम जानी हुई कृतियाँ नही है। डि फो अपने पाठको की अभिरुचि के अनुकूल रचना करता था। यही कारण था कि उसकी कृतियो ने प्यूरिटन मध्यवर्ग को शीघ्र ही अपनी ओर आकृष्ट किया। उसकी कल्पना, यथार्थ और यात्रानुभूति ने अग्रेजी साहित्य को 'रॉबिन्सन क्रूसो' के रूप मे जो दिया वह असाधारण देन सिद्ध हुआ। इस कृति का उस साहित्य पर काफी प्रभाव पडा और अनेक भाषाओ मे आज उसके अनुवाद प्रस्तुत है।

'रॉबिन्सन क्रूसो' की पृष्ठ भूमि काल्पनिक होती हुई भी यथार्थ का आभास प्रस्तुत करती है और उसकी सफलता विशेषत उसके इसी गुण पर अवलम्बित है, यद्यपि 'रोक्साना' और 'मोल फ्लैन्डर्स' के चरित्र भी पाठक को वरवस अपनी ओर खीचते है।

: १७ :

रिचर्डसन से स्कॉट तक

(१७४०-१८३२)

भावुकता

डि फो के वाद उपन्यास का क्षेत्र फिर अनुर्वर हो गया। उसके 'रॉविन्सन क्रूसो' के प्रकाशन के प्राय पच्चीस वर्ष वाद रिचर्डसन की 'पामेला' प्रकाशित हुई। सेमुएल रिचर्डसन[2] अग्रेजी साहित्य के प्रधान निर्माताओ मे हो गया है। वह मुद्रक था और जीवन भर मुद्रक ही वना रहा। १७४० मे उसने अपनी 'पामेला' प्रकाशित की। १७४७-४८ में 'क्लैरिसा' और १७५३-५४ में 'दि हिस्ट्री ऑफ सर चार्ल्स ग्रैंडिसन।'

---

१ Daniel De Foe (१६९०-१७३९), २ Samuel Richardson

तीनो उपन्यासो की कहानी साधारण है। 'पामेला' बाँदी है जो अपनी मालकिन के पुत्र के दुराचरण के प्रयत्नो से निरन्तर अपनी रक्षा करती है और अन्त में उसके विवाह-प्रस्ताव को गभीरता से स्वीकार करती है। सर चार्ल्स ग्रैंडिसन भी अपने कुशल व्यवहार और सयम से सदाचरण करता है। रिचर्डसन प्यूरिटन था परन्तु उसकी रचना में कला का प्रचुर निरूपण हुआ।

वास्तविकवाद

रिचर्डसन मध्यवर्ग का था और उसने उसी वर्ग के पात्रो के गुण-दोषो का विवेचन किया। उसका यह अभाग्य था कि हेनरी फील्डिंग, उसके जीवन-काल में ही प्रादुर्भूत हुआ। फील्डिंग अभिजातकुलीय था, अभिजातकुलीयो के स्कूल ईटन में शिक्षा पा चुका था। क्लासिक्स का प्रेमी था और सर रॉबर्ट वालपोल के लाइसेंसिंग ऐक्ट के बनने से पहले तक नाटककार भी था। पेशे से वह जर्नलिस्ट, वकील और जज भी रहा।

१७४२ में उसने रिचर्डसन की 'पामेला' का मजाक बनाने के लिए 'दि हिस्ट्री ऑफ दि ऐडवैंचर्स ऑफ जोजेफ एन्ड्रूज़ एण्ड हिज फ्रैंड मि अब्राहम ऐडम्ज़' प्रकाशित किया। यह 'पामेला' की एक प्रकार से व्यग्यपूर्ण पैरोडी था। इसमें पामेला की स्थिति मे बदलकर एक नौकर रखा गया है, जिसे बिगाडने का प्रयत्न उसकी मालकिन करती है। बाद मे जब वह भाग जाता है तब फील्डिंग की दृष्टि मे रिचर्डसन की दुनिया ओझल हो जाती है और उपन्यास अपने स्वाभाविक पथ पर चल पडता है। उसकी 'हिस्ट्री ऑफ जोनाथान वाइल्ड दि ग्रेट' नामक कृति 'जोजेफ एन्ड्रूज़' से भी अधिक व्यग्यपूर्ण है। फील्डिंग जीवन के आवेशो का खुला पोषक था और इसी विचार की अभिपुष्टि मे उसने 'दि हिस्ट्री ऑफ टॉम जोन्ज़' (१७४९) की रचना की, जो उसकी कृतियो मे सबसे सुन्दर है। उसकी 'अमेलिया' १७५१ मे प्रकाशित हुई। इसकी करुणा इसे अस्वाभाविक बना देती है। जो भी हो, फील्डिंग सहज कलाकार था।

टोबियास स्मोलेट[1] फील्डिंग का समकालीन था। स्कॉटलैंड का निवासी और पेशे का डाक्टर। उसकी अनेक कृतियाँ उपलब्ध है, 'दि ऐडवैंचर्स ऑफ रोडरिक रैन्डम' (१७४८), 'दि ऐडवैंचर्स ऑफ पेरेग्रीन-पिकल' (१७५१), 'ऐडवैंचर्स ऑफ फर्डिनेन्ड काउन्ट फैंदम' (१७५३), दि ऐडवैंचर्स ऑफ सर लैन्सेलॉट ग्रीव्ज़' (१७६२), 'दि ऐक्सपीडीशन ऑफ हम्फ्रे क्लिकर' (१७७१)। इनमे और तो घटिया क़िस्म की है परन्तु 'पेरेग्रीन पिकल' सुन्दर है। इसके पात्र सजीव हैं। उपपात्र तो नायक से भी अधिक। इसमें और स्मॉलेट की अन्य कृतियो मे भी अशान्त और अधीर सामुद्रिक और जहाजी जीवन का सुन्दर और स्वाभाविक चित्र खीचा गया है। उस चित्र में क्रूरता और कामुकता का भी खासा चित्रण है।

---

१. Tobias George Smollet (१७२१-७१)

लॉरेंस स्टर्न[1] अठारहवी सदी का एक अनूठा उपन्यासकार है। वह सिपाही का लडका और पादरी का पोता था। उसने केम्ब्रिज से एम० ए० की डिग्री ली और पादरी वन गया। उसका 'लाइफ एण्ड ओपीनियन्स ऑफ ट्रिस्ट्रम शैन्डी' (१७५९-६७) अनोखा उपन्यास है, सर्वथा मौलिक, जो प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया था। वैसे कहानी भयानक है, और तीसरे खड मे नायक का जन्म होता है। अपूर्ण वाक्य, अपूर्ण सादे पृष्ठ, अनोखा विनोद, सभी कुछ इसमे अजीब है, फिर भी भावो का विचित्र निर्वाह हुआ है। इस प्रकार वह मानव जीवन की विचित्रता का रूप अकित करता है और मानवता की विषादमयी अनुभूति से सहानुभूति प्रकट करता है। उसके 'सैन्टिमैन्टल जर्नी' (१७६१) में फ्रास की यात्रा का अकन है।

अठारहवी सदी के मध्य मे ही उपन्यासो की धारा जो मोटी हो चलती है, वह उसके अन्त तक बाढ वन जाती है और तव साधारण रूप से भी इन उपन्यासो का विवरण कठिन हो जाता है। फिर भी कुछ महत्वपूर्ण कृतियो का उल्लेख समीचीन है। इन्ही मे सेमुएल जॉनसन का 'रैसेलास' (१७५९) है, जो अबीसीनिया की कहानी के रूप में अठारहवी सदी के आशावाद पर एक प्रकार का प्रहार है। इस प्रकार ऑलिवर गोल्डस्मिथ का 'विकर ऑफ वेकफील्ड' भी रूप और शैली मे प्राय अकेला है। इसका आज भी साहित्यिको मे वडा आदर है। गोल्डस्मिथ असाधारण कलाकार है। उसमे हास्य और चित्रण दोनो सपन्न करने की अद्भुत क्षमता है। उसमे गजब की कारुणिकता है, जिससे वह कगालो और आपद्ग्रस्तो के प्रति असाधारण तौर पर अनुरक्त हो जाता है। इसी काल क्वीन कैरोलिन की अनुचरी फैनीबर्नी नाम की नारी ने भी उपन्यास-रचना की। अपने सुन्दरतम उपन्यास 'इवेलिना' (१७७८) मे उसने गाँव की एक लडकी का लन्दन के कृत्रिम भडकीले जीवन मे प्रवेश वडी खूबी से कराया है। उसकी इस कृति की जॉनसन, वर्क, रेनाल्डस आदि ने भूरि-भूरि प्रशसा की थी। उसने 'सेरवीलिया' 'कैमिला', और 'वान्डरर' नाम के तीन उपन्यास और रचे। पर तीनो ही एक से एक गए बीते थे।

भावावेगवादी उपन्यासो का आरभ स्टर्न ने किया था। उनकी परिपाटी चल पडी। हेनरी मैकेन्जी[2] ने अपने 'दि मैन ऑफ फीलिंग' मे उस परपरा को और जाग्रत किया। इसका हीरो स्थल-स्थल पर रो पडता है, जिससे उपन्यास पैरोडी का रूप धारण कर लेता है। इन्ही दिनो टॉमस डे ने अपना 'सैन्डफोर्ड एण्ड मर्टन' (१७८३-८९) नामक उपन्यास लिखा, जिससे नीतिपरक उपन्यासो की परपरा चली। उसका 'फूल ऑफ क्वालिटी' (१७६६-७०) भी उसी शैली का वाद-प्रतिवाद-युक्त उपन्यास है।

उसके बाद ही उस प्रकार के उपन्यास लिखे गये, जिन्हे गौथिक कहते हैं। यह भयपरक है। अपराध, पाप, भय, खून, वदला आदि इस प्रकार के उपन्यासो के चित्रण-

१ Lawrence Sterne (१७१३-६८), २ Henry Mackenzie (१७५५-१८३१)

आधार है। और इनका प्रणयन विशेषत मध्यकालीन 'वस्तु' के पुनरुज्जीवन से आरभ हुआ। इस परपरा का पहला उपन्यासकार प्रसिद्ध सर राबर्ट वालपोल का पुत्र होरेस वालपोल[१] था। अपनी अभिजातकुलीय समृद्धि के वातावरण में उसने महत्वाकाक्षा के लब्ध्यर्थ उन व्यक्तियो को प्रयत्नशील देखा, जिन्हे स्वार्थ साधने में आचारोपचार का मोह न था। उसी वातावरण का होरेस वालपोल ने अकन किया। भेद केवल इतना था कि उसने पृष्ठभूमि मध्यकालीन इटली के पापाचारयुक्त वातावरण से चुनी। वह स्वय पुराविद् था। पुरातत्व से अनेक लोगो को उस काल कुछ प्रेम हो गया था। बात यह थी कि व्यापार, उद्योग आदि से जो समृद्धि हुई तो उसने आखिर ऐसे निठल्ले लोग भी उत्पन्न किये, जो अपना अवकाश —जिसकी कुछ सीमा न थी—भरना चाहते थे। उनकी जागीरदारियो में खडे मध्ययुगीय गिरजो आदि द्वारा उनकी रोमैन्टिक तुष्टि भी हो जाती थी और इस प्रकार एक पृष्ठभूमि भी उनकी कृतियो के लिए मिल जाया करती थी। होरेस वालपोल इसी रूप से अपने उपन्यासो मे पुरावर्ती पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर गौथिक उपन्यास-परपरा की नीव डाल सका। 'दि कासल ऑफ ओट्रैन्टो' (१७६४) इसी परपरा की कहानी लेकर साहित्य क्षेत्र में अवतरित होता है।

विलियम बैकफोर्ड[२] का 'दि हिस्ट्री ऑफ दि कॉलिफ वाथेक' (१७८२) वालपोल की कृति से भी अधिक मध्यकालीन क्रूर घटनापरक है, जिसमें खलीफा की क्रूरता का वर्णन है। इस लोमहर्षक पद्धति के उपन्यासकारो में सबसे जनप्रिय मिसेज ऐन रैडक्लिफ[३] हुई। उसके पाँच उपन्यासो में सबसे प्रसिद्ध 'दि मिस्ट्रीज़ आफ उडोल्फो' (१७९४) और 'दि इटैलियन' (१७९७) थे। उसने मनोवेगो को कायम रखते हुए अपने दृश्यो को प्राकृतिक पृष्ठभूमि दी और इस प्रकार १८वी सदी की निसर्गप्रिय काव्य-परपरा का उपन्यास मे भी निर्वाह किया। उस नारी ने अपनी कृतियो द्वारा लार्ड वायरन और शेली तक को प्रभावित किया। उपन्यासकारो की इसी लोकरजन परपरा मे मैथ्यू ग्रेगरी लेविस[४], चार्ल्स रॉवर्ट मैटूरिन[५], मिसेज़ शेली[६] आदि थे। इन्होने 'दि माक' (१७९६), 'टेल्स ऑफ टेरर', 'टेल्स आफ वडर' (लेविस) 'मेलमोथ दि वाडरर' (मैटूरिन) और 'फ्रैंकेन्स्टीन' लिखकर लोमहर्षक उपन्यासो का भडार भरा। इनमे मिसेज़ शेली का लिखा 'फ्रैंकेन्स्टीन' इस प्रकार के उपन्यासो में वडा सफल हुआ।

उन्नीसवी सदी में सही उपन्यास-कला का जन्म हुआ। ऐसा नही कि लोमहर्षक

---

१. Horace Walpole (१७१७-९७), २ William Beckford (१७६०-१८४४); ३ Mrs Ann Radcliffe (१७६४-१८२३), ४ Mathew Gregry Liewis (१७७५-१८१८); ५ Robert Maturin (१७८२-१८२४), ६ Mrs Mary Wollstone Craft Shelley (१७९७-१८५१)

उपन्यासो का अन्त हो गया हो क्योकि पाठको के मनोरजन के साधन-स्वरूप इस प्रकार के उपन्यासो का सृजन होना स्वाभाविक ही था, कि जब ऐसे पाठको की कमी न थी, परन्तु उन्नीसवी सदी अपने नये वातावरण के साथ आई। उपन्यास अब केवल मनोरजन की सामग्री न था। वरन् स्पष्ट कला के रूप में सिरजा जाने लगा। इस परपरा का आरभ जॉर्ज ऑस्टिन की कन्या जेन ऑस्टिन[1] ने किया। साहित्य में उसकी सूझ सर्वथा नई थी। न तो उसे उसके पूर्ववर्तियो ने प्रभावित किया और न यूरोपियन उथल-पुथल ने। उसने लोम-हर्षक उपन्यासो पर अपनी कृतियो से भरपूर चोट भी की (देखिये उसका—'नार्थेंगर अबे')। उसने वर्णन और यथार्थवादी सूक्ष्मता को बडा महत्व दिया और उसकी लेखनी से पहली बार कला प्रसूत होकर 'प्राइड एड प्रेजुडिस' (१८१३) के रूप में आई। उसके चरित्रो मे अनूठापन कुछ न था। वे समाज में घर-घर चलते-फिरते हाड-मास के जीव थे। जेन ऑस्टिन के सक्षिप्त डायलॉग भी बडे चुटीले हैं। उनकी शक्ति लम्बे वक्तव्यो मे जब-तब नष्ट हो जाती है। इसमें विशेषत दो परस्पर विरोधी पात्रो का चित्रण है। यही रूप हमें उसके दूसरे उपन्यास 'सैन्स एण्ड सैन्सिबिलिटी' (१८११) मे भी मिलता है। जेन ऑस्टिन ने 'मैन्स फील्ड पार्क' (१८१४), 'एम्मा' (१८१६) और 'परसुएशन' (१८१७) नामक तीन और उपन्यास लिखे परन्तु कोई उसके 'प्राइड एण्ड प्रेजुडिस' के स्तर तक न उठ सका।

ऐतिहासिक उपन्यास

इसी काल-प्रसार में सर वाल्टर स्कॉट ने भी अपने प्रसिद्ध उपन्यास लिखे, परन्तु जेन ऑस्टिन के उपन्यासो से सर्वथा भिन्न। ऐतिहासिक उपन्यास-परपरा का प्रारभ सर वाल्टर स्कॉट ने किया। ज्ञान और सुरुचि में शायद सर वाल्टर का जोड नही। घटनाओ की खोज और अध्ययन में उसने असाधारण परिश्रम किया। आलोचना मे भी उसने बडी उदारता दिखाई। जेन ऑस्टिन की कला को अपनी अपेक्षा अत्यधिक ऊँचा घोषित किया। वह स्कॉच था, ऐडिनबरा के एक वकील का पुत्र, और साहित्य मे, विशेषत स्कॉटलैंड की ख्यातो में, उसे बडी दिलचस्पी थी। उसने तत्सबधी कुछ कविताएँ भी लिखी, परन्तु यशस्वी वह अपने उपन्यासो के कारण ही हुआ। अभिजातकुलीयता के स्वाद ने उसे घृणा के भार से दबा दिया था। फिर भी उसका हाथ निरन्तर खुला रहा और धन की आवश्यकता वरावर बनी रही। उसके जर्नल मे धन-सबधी उसकी व्यग्रता का बडा करुण सकेत मिलता है। धन की आवश्यकता ने उसे उपन्यास लिखने को और भी वाध्य किया। मेरिया एजवर्थ ने अपना 'कैंसिल रैक्रन्ट' (१८००) लिखकर ऐतिहासिक उपन्यास का रूप रखा था। परन्तु वस्तुत. वह परपरा स्कॉट के हाथो सँवारी गई। उसमें उसने पृष्ठभूमि, वातावरण आदि प्रकृति

---

१ Jane Austine (१७७५-१८१७)

के स्पर्श और पिछले युगो के सयोग से चित्रित किये जो न फीर्ल्डिग ने किया था न ऑस्टिन ने । सही मे, उसमे मध्यकालीन हीरो की असाधारणता हमे विशेष प्रभावित करती है, परन्तु उस युग के समाज और सामान्य जनता की जितनी प्राजल झलक मे उसके दृश्यो से मिलती है और कही नही।

उसका पहला उपन्यास 'वेवरली' (१८१४) १७४५ के जैकोविन विद्रोह के चित्र उपस्थित करता है। उसी परपरा मे उसके उपन्यास 'गाई मैनरिग' (१८१५), 'दि ऐन्टीक्वेरी' (१८१६), 'ओल्ड मोरटैलिटी' (१८१६), 'दि हार्ट ऑफ मिडलोथियन' (१८१८) और 'रॉबराय' (१८१८) भी लिखे गये। इनमे स्मृति और कल्पना दोनो एकत्र मिलते है। दोनो उसे सम्मिलित रूप से विधायिनी प्रतिभा प्रदान करते है। क्रूसेड-सबधी उपन्यास 'आइवन्हो' (१८२०) और 'दि टेलिस्मान' (१८२५) अत्यन्त लोकप्रिय हुए। 'कैनिलवर्थ' (१८२१) और 'दि फार्चुन्ज ऑफ निजेल' (१८२२) मे अत्यन्त आकर्षक रूप में एलिजाबेथ और जेम्स प्रथम के सबध की घटनाये वर्णित है । उसने केवल स्कॉटलैंड और इग्लैंड के इतिहास से ही घटनायें चुनकर नही अनुप्राणित की, अपने 'क्वेन्टिन डरवर्ड' (१८२३) में तो फ्रास के राजदरबार को भी अपनी लेखनी का आधार बनाया। परन्तु इस प्रकार उसका इधर-उधर भटक जाना ही मात्र था क्योकि वह स्कॉटलैंड की स्थिति को वस्तुत न भूल सका। 'सेट रोमन्स वेल' (१८२४) और 'रैड गॉन्टलेट' (१८२४) की कथाओ के लिए वह फिर स्कॉटलैंड की ओर अभिमुख हुआ।

स्कॉट आज भी ऐतिहासिक उपन्यासो में रुचि रखने वाले पाठको का मनोरजन करता है। अपने परवर्ती ऐतिहासिक उपन्यासकारो को भी उसने कम प्रभावित न किया। बुलवर लिटन, थैकरे, रीड, जॉर्ज एलियट तक उसके ऋणी है। उसका प्रभाव कालान्तर में फ्रास से रूस तक और अटलाटिक सागर पार अमेरिका तक व्यापक बना।

उन्नीसवी सदी की उपन्यास-परपरा मे अन्त मे लव पीकॉक[1] का उल्लेख कर देना आवश्यक होगा। शैली मे भिन्न होकर भी पीकॉक 'रोमाटिक साहित्य' का शत्रु था। उसने रोमाटिक साहित्य का मखौल उडाने वाले व्यग्यात्मक उपन्यासो की एक परिपाटी ही खडी कर दी। उसके उपन्यासो मे मनोरजन की सामग्री प्रचुर है, जिसके प्रमाण है उसके 'मेड मेरियन' (१८२२), 'मिसफॉर्चुन्स आफ एल्फिन' (१८२९), और 'क्रोचेट कासल' (१८३१)। उसने भी अपने परवर्ती उपन्यासकारो पर अपना प्रभाव डाला। जॉर्ज मेरेडिथ और आल्डुस हक्स्ले दोनो को उपन्यास के क्षेत्र मे अपने प्रयोग करने में पीकॉक से प्रभूत प्रेरणा मिली।

---

१. Thomas Love Peacock (१७८५-१८६६)

: १८ :

डिकेन्ज़ से आज तक

चार्ल्स डिकेन्ज[1] उन्नीसवी सदी का सबसे बडा उपन्यासकार है। अनेक लोगो के विचार से तो वह अनेकार्थ में इग्लैंड का सबसे प्रधान उपन्यासकार है। इस पिछले मत को चाहे, कोई न माने, परन्तु इसे स्वीकार करने मे सभवत किसी को आपत्ति न होगी कि डिकेन्ज़ चोटी का उपन्यासकार है। अपनी विनोदात्मक उपन्यास-शैली मे तो नि सन्देह वह बेजोड है। उसका विनोद कभी साहित्य पर बोझ बनकर नही आता, उसमे घुलामिला प्राण बन कर आता है। स्वाभाविकता उसका प्राण है। डिकेन्ज़ को जीवन साध्य है, प्रिय, परन्तु वह अपने वातावरण से क्षुब्ध है, अपने समाज से घृणा करता है। उसकी प्रवृत्ति विद्रोहात्मक थी और उसके उपन्यासो मे भी उसका विद्रोह झलक आता है पर उसे परिस्थितियो से मजबूर होकर मध्यमवर्गीय आचार से समझौता कर लेना पडा। 'पिकविक पेपर्स' (१८३६-३७) इसका प्रमाण है। 'ऑलिवर ट्विस्ट' (१८३८) मे हास्य के ऊपर कारुणिकता की छाया स्पष्ट है। वह समसामयिक समाज की हृदयहीनता के विरुद्ध अपनी आवाज उठाता है। 'निकोलस निकल्वी' (१८३८-३९) मे प्लॉट महत्त्व धारण कर लेता है और चरित्र-चित्रण शक्तिम हो उठता है। बेन जॉनसन की भाँति 'दि ओल्ड क्युरियॉसिटी शॉप' (१८४१) में मध्यवर्ग के आचार पर प्रखर व्यग्य है। 'बार्नाबी रज़' (१८४१) डिकेन्ज़ का पहला ऐतिहासिक उपन्यास है। उसके 'मार्टिन चुज़लविट' (१८४४) में अमेरिका के दृश्य भरे है, क्योकि यह कृति उसकी अमेरिका-यात्रा के बाद सम्पन्न हुई। १८४३ और ४८ के बीच उसने 'क्रिस्मस बुक्स' लिखी। यह कृति जिसमें मानव-दया मे उसकी निष्ठा प्रदर्शित है, बडी लोकप्रिय हुई। करुण रस उसके 'डम्बे एण्ड सन' (१८४८) में जैसे फूट पडा है। 'डैविड कॉपरफील्ड' (१८५०) मे उसकी उपन्यास-कला आत्म कथानक का रूप धर लेती है। चरित्र-चित्रण भी इसमे गजब का हुआ है।

डिकेन्ज के प्रधान उपन्यास 'ब्लीक हाउस' (१८५३) के साथ उसके कृतित्व का दूसरा युग आरभ होता है। 'हार्ड टाइम्ज़' (१८५४) उसन कारलाइल को समर्पित किया है और 'लेसे फेयर' (अनिरुद्ध व्यापार) पर वह प्रखर प्रहार है। 'लिटिल डोरिट' (१८५७) में वह आफिसो की दीर्घ-सूत्रता पर चुटीला व्यग्य करता है। 'दि टेल ऑफ टू सिटीज़' (१८५९) फ्रेंच राज्य-क्राति सबधी सुन्दर उपन्यास है, जो उसकी प्रतिभा को नई दिशा की ओर ले जाता है, स्कॉट से सर्वथा भिन्न। 'ग्रेट ऐक्स्पैक्टेशन्ज' (१८६१) और 'आवर म्यूचुअल फ्रेंड' (१८६४) नामक दो उपन्यास उसने और लिखे। कभी जब

---

१. Charles Dickens (१८१२-७०)

वह 'दि मिस्ट्री आफ एडविन ड्रूड' लिख ही रहा था कि मृत्यु के क्रूर कर ने उसकी जीवन-गति बन्द कर दी।

डिकेन्ज़ निरन्तर लिखता रहा, साथ ही निरन्तर भ्रमण भी करता रहा। उसने अमेरिका के श्रोताओ को अपने उपन्यास, कविता की भाँति पढ-पढ कर सुनाये। इससे उसे लाभ प्रचुर हुआ पर जीवन शिथिल हो गया, यद्यपि श्रोताओ की उपस्थिति उसके लिये मादक शराब का काम करती थी। १८७० मे जब वह मरा, इग्लैंड के जीवन से जैसे प्रधान सार चला गया। वह अपने समाज के अगाग मे समा चुका था। शॉ के पहले फिर कोई ऐसा न हुआ जो डिकेन्ज़ की भाँति अग्रेज जनता को खिलखिलाकर हँसा सकता।

विलियम मेकपीस थैंकरे[1] डिकेन्ज़ का समकालीन था। पर दोनो दो स्तरो के व्यक्ति थे। डिकेन्ज़ को सही शिक्षा नही मिली थी। उसके पिता को ऋणी होकर अनेक बार जेल का मुँह देखना पडा था। स्वय उसे पहले कारखानो मे काम करना पडा। थैंकरे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अफसर का, कलकत्ते मे जन्मा बेटा था, चार्टर हाउस और कैम्ब्रिज की हवा खाया हुआ। थैंकरे जीवन भर जर्नलिस्ट रहा और लगातार 'पच' में लिखता था। उसने 'कॉर्नहिल' मैगेज़ीन का सम्पादन भी किया। 'वैनिटी फेयर' (१८४७-४८) उसकी पहली कृति थी, जिसने उसे उपन्यासकार के रूप मे अमर कर दिया। दस वर्ष बाद उसने 'दि वर्जीनियन्ज' (१८५७-५९) लिखा। इसी बीच उसने 'पेन्डैनिस' (१८४८-५०), 'हेनरी एस्मड' (१८५२) और 'दि न्यूकम्स' (१८५३-५५) भी लिखे। वह बावन साल की आयु में मरा, डिकेन्ज़ से भी छोटी उम्र मे। वह अच्छे प्रकार के रहन-सहन का आदी था, इससे अपनी आय बढाने के लिए उसने भी लन्दन और अमेरिका में अपनी कृतियाँ सुना कर धन कमाना शुरू किया। उसकी आय प्राय डेढ लाख रुपये प्रति वर्ष तक हो गई थी पर उसे उससे सतोप न होता था।

थैंकरे को अपना समाज प्रतिकूल न पडा और उसने उसकी खिल्ली भी नही उडाई। वह अपनी कृतियो में उसका प्रतिविम्ब मात्र उतारता गया। नि सदेह इसके लिये उसमें असाधारण प्रतिभा थी। कृतघ्नता के प्रति उसका आक्रोश तीव्र था। उसकी दृष्टि यथार्थ के प्रति गहरी थी और चरित्र-चित्रण उसका डिकेन्ज़ से कही सूक्ष्म होता था। 'वैनिटी फेयर' इस दिशा में बडा मार्मिक उपन्यास है।

लिटन[2] की प्रतिभा सर्वतोमुखी है। स्कॉट की भाँति ही उसने भी ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और 'दि लास्ट डेज़ आफ पॉम्पेयी' (१८३४) मे कला की दृष्टि से उससे ऊपर उठ गया। वह कला उसके 'रिएन्ज़ी' (१३८५) मे शायद और भी निखरी। 'ज़नोनी'

---

१ William Make Peac Thackeray (१८११-६३), २ Edward Lytton, Lord (१८०३-७३)

(१८४४) उसका लोमहर्षक उपन्यास है, जिसकी लोमहर्षकता में वह अपने 'पॉल विलफर्ड' (१८३०) मे सामाजिक आक्रोश का भी पुट देता है। लिटन ने कुछ और भी उपन्यास लिखे– 'युज़ीन अराम', 'दि कैक्स्टन्स', 'माई नॉवेल', 'पेल्हम', 'दि कमिंग रेस'। इनमें अन्तिम में उसने 'यूरोपियन' (काल्पनिक—भावी सामाजिक) उपन्यास की बुनियाद डाली।

चार्ल्स किंग्स्ले[१] ने पहले तो अपने उद्देश्यपरक उपन्यास 'यीस्ट' (१८४८) और 'आल्टन लॉक' (१८५०) लिखे, फिर ऐतिहासिक 'हाइपैटिया' (१८५३) और 'वेस्टवर्ड हो' (१८५५)। 'दि वाटर वेबीज़' नामक उसने एक फैन्टेसी भी लिखी। ए० डब्लू किंग-लेक[२] ने अपने 'इयोथेन' (१८४४) में पूर्वात्य पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। सर रिचर्ड बर्टन[३] ने 'अरेबियन नाइट्स' (अलिफ लैला) का अनुवाद प्रस्तुत किया, और जॉर्ज बोरो[४] ने अपनी भ्रामक प्रवृत्तियुक्त उपन्यास—'लोवेंग्रो' (१८५१) 'दि रोमानी राई' (१८५७) और 'वाइल्ड वेल्स' (१८६२) लिखे। हडसन[५] और रिचर्ड जेफ्रीज़[६] भी बोरो की परपरा के ही साहित्यिक थे।

चार्ल्स रीड[७] डिकेन्ज़ के सामाजिक आक्रोश की परपरा का उपन्यासकार था, जिसमे सामग्री की यथार्थता अधिक प्रामाणिक थी। 'इट इज़ नैवर टू लेट टु मैन्ड' (१८५६) कारागार के जीवन का भडाफोड करता है। मध्यकालीन पृष्ठभूमि पर 'दि क्लॉयस्टर एण्ड दि हार्थ' (१८६१) नाम का एक सजीव ऐतिहासिक उपन्यास भी रीड ने लिखा। बैन्जेमिन डिजरेली[८] का व्यक्तित्व राजनीति में बडा था और उसके उपन्यास 'कोनिग्सबी (१८४४), 'सिबिल' (१८४५) और 'टैंक्रेड' (१८४७) उसकी राजनीतिक आइडियालोजी (सिद्धान्त) प्रस्तुत करते है। डिजरेली उन्नीसवी सदी की राजनीति में सबसे महान् व्यक्ति (प्रधान मत्री) था। इससे अधिकतर उसका साहित्य उसके राजनीतिक व्यक्तित्व मे खो जाता है। पर है उसके उपन्यास सुन्दर, जिनमें वह टोरी नीति से सँवारे नये इग्लैंड का स्वप्न देखता है। मिसेज गैस्केल[९] ने अपने उपन्यासो 'मेरी बार्टन' (१८४८) और 'नॉर्थ एण्ड साउथ' (१८५५) में व्यावसायिक क्रूरता का भडाफोड किया। उसने 'क्रैफोर्ड' नामक एक और सामाजिक उपन्यास लिखा। विल्की कॉलिन्स[१०] ने 'दि वोमन इन ह्वाइट' (१८६०) और 'दि मूनस्टोन' (१८६८) लिखकर होरेस

---

१ Charles Kingsley (१८१९-७५), २ Alexander William Kinglake (१८०९-९१), ३ Sir Richard Burton (१८२१-९०), ४ George Henry Borrow (१८०३-८१), ५ William Henry Hudson (१८४१-१९२२), ६ Richard Jefferies (१८४८-८७), ७ Charles Reade (१८१५-८४), ८ Benjamine Disraeli (१८०४-८१), ९ Mrs Elizabeth Cleghorn Gaskell (१८१०-६६), १० William Collins (१८२४-८९)

वालपोल और मिसेज़ रैडक्लिफ की लोमहर्षक उपन्यास परपरा पुनरुज्जीवित की। उसकी कला उनसे कही प्रखर और प्रौढ थी।

मौलिक उपन्यासो के सृजन मे दो बहनो—एमिली ब्रोन्टे[१] और चारलोटे-ब्रोन्टे[२] को वडी सफलता मिली। इनमे से पहली ने अपने 'वुदरिंग हाइट्स' (१८४७) द्वारा प्रभूत ख्याति कमाई है, दूसरी के अनेक उपन्यास 'जेन आयर' (१८४७) 'शर्ले' (१८४९), 'विलेट' (१८५३), 'दि प्रौफेसर' (१८५७) है। उसके दृश्य घरेलू है, यथार्थवादी। जॉर्ज एलियट[३] का नाम भी इनके साथ ही लिया जाता है। सो केवल इसलिए नही कि वह भी नारी थी। उन्नीसवी सदी के नारी उपन्यासकारो मे वह सबसे अधिक विदुषी थी। वह नारी थी परन्तु उसने पुरुष के नाम से लिखा। वह दार्शनिक मेधा की नारी थी और उसकी उत्कट दार्शनिकता ही हर्बर्ट स्पैन्सर से विवाह मे घातक हुई। अपने पति विख्यात लेखक लेवेस के कहने से उसने उपन्यास लिखना शरू किया। 'सीन्ज़ ऑफ क्लारिकल लाइफ' (१८५७) को तत्काल सफलता मिली और 'ऐडम बीड' (१८५९) ने उसका यश प्रतिष्ठित कर दिया। 'दि मिल ऑन दि फ्लौस' (१८६०) भी उसकी एक ऊँची कृति है। जिसमे 'ऐडम बीड' की ही भाँति हृदय और मेधा का सघर्प है। 'सिलास मारनर' (१८६१) में वह सघर्ष प्राय एक समष्टि का रूप धर लेता है। 'रोमोला' (१८६३) इटैलियन पुनर्जागरण काल का ऐतिहासिक उपन्यास है और 'फैलिक्स होल्ट' (१८६६) रिफॉर्म विल का अनुवर्ती। उसका 'मिडिलमार्च' (१८७१-७२) उन्नीसवी सदी के प्रधान उपन्यासो मे गिना जाता है। ऐतिहासिक युगो और दार्शनिक चिन्तन से वह यथार्थ की चतुर्वर्ती भूमि पर इसमे उतर आती है और समाज सहसा इसमे प्रतिविम्बित हो आता है। वाल्ज़ाक जैसे उसकी इस कृति में उतर आया हो।

ऐन्थॅनी ट्रोलोप[४] एक दूसरी कोटि का उपन्यासकार है, सहज वर्णन-प्रवाह का। उसकी प्रखर कल्पना निरन्तर दृश्यो और चरित्रो का एकत्र सृजन करती जाती है। वह पुरुप रूप में जेन ऑस्टिन है, पर साथ ही अपनी सीमाओ को पूर्णत जानने वाला। इसी से वह अनधिकार चेष्टा नही करता। उसकी कृतियाँ 'दि वार्डेन' (१८५५) और 'बारचेस्टर टॉवर्स' (१८५७) सुघड है। ट्रोलोप से कही मौलिक जॉर्ज मेरेडिथ (१८२८-१९०९) है। इधर के सालो मे मैरेडिथ का यश घट गया है क्योकि उसके उपन्यासो की कठिनता आशुगम्य नही। परन्तु उसकी मेधा अस्वीकार नही की जा सकती। यह सत्य है कि अपने 'हीरो' की ही भाँति, जिस पर वह हँसता है, वह स्वय गर्वीला है। उसके लिए उपन्यास केवल कहानी का आधार नही है। उसके विचार में जीवन का आदर्श रूप उसकी सहज स्वाभा-

---

१ Emily Bronte (१८१८-४८), २ Charlotte Bronte (१९१६-५५), ३ George Eliot Marian Evans (१८१९-८०), ४ Anthony Trollope (१८१५-८२)

विकता मे है, जिसके मस्तिष्क , हृदय, शरीर, सभी नकारात्मक निर्देश हैं। इसी व्याख्या के लिए वह विशुद्ध और सूक्ष्म भावनाओ का विश्लेपण करता है। इसी मनोयोग से वह अपने दूसरे उपन्यासो 'रिचर्ड फेवरेल' 'ईवान हैरिंग्टन' और 'हैरी रिचमाड'— की सृष्टि करता हैं। भावो के विश्लेपण के अर्थ में ही वह अपने कथानको मे नारी को केन्द्रीय स्थान प्रदान करता है। 'रोडा फ्लेमिंग' (१८६५) 'विट्टोरिया' (१८६७) और 'डायना ऑफ दि क्रॉसवेज़' (१८८५) भी उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुए। उसकी सवसे प्रख्यात कृति 'दि इगोइस्ट' (१८७७) है। उसके डायलॉग बडे सजीव है। उसके 'वन ऑफ आवर काकरर्स' (१८९१) मे उसका दृष्टिकोण और भी जटिल हो गया है। जटिलता उसकी लोकप्रियता मे बाधक हुई है।

मैरेडिथ की ही सूक्ष्म चेतना हेनरी जेम्स[1] को भी मिली थी। जेम्स अमेरिका मे जनमा और शिक्षित हुआ था, परन्तु इग्लैंड मे वस गया था। उसे नागरिकता का अधिकार उसकी मृत्यु से केवल एक वर्ष पहले मिला। 'डेजी मिलर' (१८७९) मे उसने यूरोपियन जीवन के प्रति अमेरिकन प्रतिक्रिया का चित्रण किया और 'दि ट्रैजिक म्यूज़' (१८९०) तथा अन्य उपन्यासो मे अंग्रेज-जीवन का अध्ययन किया। जैसे-जैसे उसकी साहित्यिक सक्रियता बढती गई , वैसे ही वह शैली मे जटिल होता गया। उस जटिलता का दर्शन हमे 'दि विंग्स ऑफ दि डव' (१९०२) 'दि ऐम्बैसेडर' (१९०३) और विशेषत 'दि गोल्डन बोल' (१९०४) में होता है। जेम्स विशेषकर उसकी अभिजात कुलीनता के प्रति बडी कमजोरियाँ लेकर, यूरोप गया था। उसके जो आदर्श थे, वे उसे वहाँ न मिले, फिर भी उसने अपनी कल्पना को साहित्यमें सार्थक कर दिया है। यद्यपि चित्र अयथार्थ है फलत जटिल होते गए। उसकी शैली वडी सूक्ष्म हैं और अपनी कल्पना के प्रति उसकी निष्ठा इतनी प्रवल है कि अपने साहित्यिक विस्तार में वह चित्रण की एकरूपता के कारण यथार्थ लगने लगता है, मिथ्या भी निरन्तर के अकन से नित्य सिद्ध होने लगता है।

टॉमस हार्डी इग्लैड के सबसे महान् उपन्यासकारो मे से है। टॉमस हार्डी और हेनरी जेम्स समसामयिक है, पर दोनो की दुनिया अलग-अलग है। हार्डी का पहला उपन्यास १८७१ में 'डेस्परेट रैमेडीज़' निकला और तव और 'जूड दि ऑब्स्क्योर' के १८९५ मे प्रकाशन के बीच वह निरन्तर उपन्यास लिखता गया। उनमें सवसे महत्त्वपूर्ण निम्नलिखित हैं—'दि रिटर्न ऑफ दि नेटिव' (१८७८), 'दि ट्रम्पेट मेजर' (१८८०), 'दि मेयर ऑफ कैस्टर-ब्रिज' (१८८६), 'दि वुडलैंडर्स' (१८८७) और 'टैस ऑफ दि डुर्वविल्स' (१८९१)। हार्डी पेशे से शिल्पी था और अपनी कला को भी उसने शिल्प का महत्त्व दिया। इमारत की एक-एक ईंट उसने प्लान के मुताविक विठाई। परन्तु वह प्रारब्धवादी था।

---

१ Henry James (१८४२-१९१६)

प्रारब्ध मनुष्यो को निरन्तर उनके अन्त की ओर खीचता जाता है, सदा उनके सुख की सम्भावनाओ से दूर, दु ख की ओर। उसका जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण प्राय दर्शन का रूप धारण कर लेता है। उन्नीसवी सदी का भौतिक आशावाद और ईसाई धर्म की सान्त्वनाएँ, दोनो मे उसका अविश्वास था जो निरन्तर बढता गया और जीवन का अर्थ उसके लिए प्राय कुछ नही रहा। जीवन को उसने निरुद्देश्य माना। फिर भी प्रारब्ध के शिकार मानवो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है और उसकी यह सहानुभूति उन्ही तक सीमित नहीं, कीडे-मकोडो तक को छू लेती है। हार्डी कथानक का भी असाधारण शिल्पी है और घटना-चक्र निरन्तर सहज रीति से उसके उपन्यासो में घूमता है। देहात का जीवन उसके उपन्यासो मे मूर्त्तिमान हो उठता है। 'टैस' और 'जूड दि ऑब्स्क्योर' मे तो उसकी कला ग्रीक ट्रैजेडी का रूप धारण कर लेती है। वर्डस्वर्थ की सम्मोहक करुण प्रकृति उसके हाथ में नितात क्रूर बन जाती है। उसके सुन्दरतम चरित्र वे है जो नगर के जीवन से दूर गाँवो के अकृत्रिम वातावरण में रहते है और नगर की सत्ता स्वीकार नही करते। हार्डी को एक ओर तो 'दूसरे दर्जे का रोमाटिक', दूसरी ओर साहित्य के महानतम व्यक्तियो में से एक होने का श्रेय मिला है। इसमें सन्देह नही कि उसका स्थान अग्रेजी साहित्य में बहुत ऊँचा है, परन्तु उसका साहित्य आगे भी पाठको को आकृष्ट करेगा, इसमे सन्देह है।

डारविन के वानस्पतिक विज्ञान ने जिन अनेक अग्रेज साहित्यिको को प्रभावित किया था, सैमुएल बटलर[1] भी उन्ही में था। अपने उपन्यास 'दि वे ऑफ ऑल फ्लेश' (१९०३) में उसने स्विफ्ट की व्यग्यात्मक शैली का सहारा लिया और विक्टोरियाकालीन समाज के तयाकथित समन्वित दृष्टिकोण पर गहरा प्रहार किया। उसकी कृतियाँ 'अरवोन' (१८७२) और 'अरवोन रिविजिटेड' (१९०१) इस दिशा में और चुटीली सिद्ध हुई। समसामयिक मूल्यो पर उनकी व्यग्यात्मक चोटे दिलचस्प है। बटलर बौद्धिक क्रान्तिकारी है और उसकी कृतियाँ नितान्त मौलिक है।

१८७०-८० की दशाब्दी मे उपन्यासो के आकार मे विशेप परिवर्तन हुआ। भारी-भरकम उपन्यास लोगो की रुचि से गिर गए और प्रकाशको ने भी देखा कि छोटे उपन्यास छापने में ही अधिक लाभ है। रॉबर्ट लुई स्टिवेन्सन[2] इस परिवर्तनके स्रष्टाओ में प्रथम था। उसका 'ट्रैजर आइलैंड' प्रकाशित होते ही लोकप्रिय हो गया। छोटे उपन्यासो के साथ ही उन छोटी कहानियो का भी प्रादुर्भाव हुआ, जिनका आरम्भ एडगर एलेन पो ने अमेरिका मे पहले ही कर दिया था। स्टिवेन्सन की 'न्यू अरेवियन नाइट्स' (१८८२) के बाद उसके और भी रोमाटिक उपन्यास निकले—'किडनैप्ड' (१८८६), 'दि ब्लैक एरो' (१८८८) 'दि मास्टर ऑव वैलेन्ट्रे' (१८८९), 'दि राग बाक्स' (१८८९)। 'डाक्टर, जेकेल एण्ड

---

१ Samuel Butler (१८३५–१९०२); २ Robert Louis Stevenson (१८५०-९४)

मिस्टर हाइड' मे स्टिवेन्सन ने नेक-वद का एक रूपक प्रस्तुत किया जो आज भी काफी जनप्रिय है। स्टिवेन्सन कलाकार था और उसकी कला क्या उपन्यास, क्या कहानियाँ, क्या निवन्ध, क्या पत्र-लेखन सभी सहज और असामान्य है। उसके निवन्ध तो शैली के प्रतीक हैं—जैसे उसका पाठक सामने हो और उससे वह सीधा बात कर रहा हो। उसके भ्रमण-वृत्तान्त तो सर्वथा अनूठे है।

उसी काल कुछ ऐसे उपन्यासकारो का प्रादुर्भाव हुआ जो वडे सफल हुए, परन्तु जो कहानी कहने मात्र मे निपुण थे और जिन्होने पाठक जनता को देख कर लिखा और लोकप्रिय हो गए। सही उपन्यासकारो की श्रेणी में उन्हे नही रखा जा सकता, यद्यपि उनमें से कई उनके स्तर को छू लेते है। ये है—वीडा राइडर हैगर्ड[१], ए० कानन डॉयल,[२] मिसेज हम्फ्री वार्ड,[३] हॉल केन[४] मेरी कोरेली,[५] ग्राट एलेन,[६] एडगर वालेस[७] और पी० जी० वुडहाउस[८]। ये प्लॉट की खूवी और कथानक की रोचकता से पाठको का मन हर लेते है। इन्होने अपनी कृतियो से धन भी काफी कमाया। इनमे हॉल केन और वुडहाउस विशेष उल्लेखनीय है। वुडहाउस ने तो अग्रेजी साहित्य को अत्यन्त मुहावरेदार भापा भेंट की।

जॉर्ज गिसिग[९] और रुडयार्ड किपलिंग ने भी इसी काल लिखा। दोनो ऊपर लिखे उपन्यासकारो से अपनी कला और मर्यादा मे भिन्न थे। गिसिंग लोकप्रिय नही हो सका, यद्यपि उसमे मेधा अथवा साहस की कमी न थी। अपने 'वर्कर्स इन दि डॉन' (१८८०) 'डिमोस' (१८८६), 'दि नेदर वर्ल्ड' (१८८९), और 'न्यू ग्रब स्ट्रीट' (१८९१) में उसने अपने समाज के भ्रष्टाचार का भयानक भडाफोड किया। उसकी अवहेलना शायद उसकी अप्रिय सत्य के प्रति व्यग्रता और प्रहार के कारण हुई। उसकी कृतियो मे रजन का अभाव था। 'दि प्राइवेट पेपर्स ऑफ हेनरी राईक्राफट' (१९०३) में वह अपेक्षाकृत अधिक सफल हुआ। किपलिग (१८६५-१९३६) बडा लोकप्रिय हुआ। वह साम्राज्यवादी था और उसका दृष्टिकोण तब के इग्लैंड को अधिक प्रिय था। जव वह साहित्य के क्षेत्र में उतरा, स्टिवेन्सन की ही भाँति कहानी और छोटे उपन्यास लिखने में वह उस्ताद था। उसकी यह सक्षिप्त शैली भी उसकी लोकप्रियता मे सहायक हुई। उसकी सफलता का एक और कारण उसके कथानको की भारतीय पृष्ठभूमि भी था। उसकी कहानियो—'प्लेन टेल्स फ्रॉम दि हिल्ज' (१८८८)—और उपन्यासो—'दि लाइट दैट फेल्ड' (१८९१) और 'किम'

---

१ Sir Henry Rider Haggard (१८५६-१९२५), २ Sir Arthur Canon Doyle (१८६९-१९३०), ३ Mrs Mary Humphry Ward (१८५१-१९२०), ४ Sir Thomas Henry Hall Caine (१८५३-१९३१); ५ Marie Corelli (१८६४-१९२४); ६ Charles Grant Blairfindie Allen (१८४८-९९), ७ Edgar Wallace (१८७५-१९३२), ८ P G Woodhouse ९ George Robert Gissing (१८५०-१९०३)

(१९०१) से उसे प्रभूत ख्याति मिली। इनके अतिरिक्त उसकी और कृतियाँ—'स्टॉकी एण्ड को' (स्कूल जीवन की कहानियाँ) (१८९९), 'दि जगल बुक्स', (१८९४-१८९५) 'पक ऑफ पूक्स हिल' (१९०६) भी जानी हुई है। शैली मे किपलिग सरल है वाइविल की तरह और कल्पना मे चित्रमय, परन्तु विचारो मे सर्वथा प्रतिक्रियावादी है। 'कालो के प्रति गोरो के दायित्व' वाले सिद्धान्त का वह प्रवल पोषक है, यद्यपि उसकी कविता 'रेसेशनल' में इग्लैंड के खतरो की ओर सकेत है।

जॉन गॉल्जवर्दी इस दृष्टिकोण का विरोधी आत्मालोचन का उपन्यासकार है। 'दि आइलैंड फैरिसीज़' (१९०४) मे उसने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। उसका 'दि मैन आफ प्रॉपर्टी' और 'फोरसाईट सगा' मे उच्च मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण है। उसने अपने सिद्धान्त की परिभाषा 'सम्पत्ति के विरुद्ध सौन्दर्य का सघर्ष' दी है। उसकी लेखनी के स्पर्श से वर्णन मूर्त्ति धारण करता जाता है। उसने आधी सदी के इग्लैंड के उच्च मध्य-वर्गीय जीवन का जैसा यथार्थ और सफल चित्रण किया है, वैसा दूसरा कोई न कर सका। वह शीघ्र ही इग्लैंड और यूरोप के अन्य देशो में लोकप्रिय हो भी गया, यद्यपि आज उसकी लोकप्रियता उतनी नही जितनी कभी पहले थी। उसका अध्यवसाय उद्देश्यपरक है। ऑर्नल्ड वैनेट[1] ने 'दि कार्ड' मे व्यक्तिगत महत्वाकाक्षा की सफलता का अकन किया जो प्राय आत्म-परक था। उसकी 'दि ओल्ड वाइव्ज़ टेल' (१९०८) पर मोपासाँ का स्पष्ट प्रभाव है। उसकी तीन और कृतियाँ जानी हुई है—'क्लेहैंगर' (१९१०) 'हिल्डा लैसवेज़' (१९११) और 'दीज़ ट्वेन' (१९१६)।

एच० जी० वेल्ज़[2] ने इस काल उपन्यास और कहानी लेखन मे एक नया ससार रचा—वैज्ञानिक आधार पर निर्मित उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। चोटी का वैज्ञानिक तो वह था ही, साथ ही इतिहासकार, निवन्धकार और उपन्यासकार भी था। उसने अपने युग को अपनी प्रतिभा से अनेक प्रकार से विविध मात्रा में प्रभावित किया। उपन्यास के क्षेत्र मे वह 'दि टाइम मशीन' (१८९५) लेकर उतरा। फिर एक के वाद एक उसके 'दि इन्विजिवलमैन' (१८९७) 'दि वार ऑफ दि वर्ल्डस' (१८९८) 'व्हेन दि स्लीपर वेक्स' (१८९९), और 'दि फर्स्ट मैन इन दि मून' (१९०१) आते गए। इनमें केवल वैज्ञानिक स्थितियो का उपन्यासगत विवरण था, परन्तु शीघ्र ही ऐसे उपन्यासो की सृष्टि मे वेल्ज़ लगा जिनमे दृष्टिकोण और सिद्धान्त झलकने लगे। 'दि फूड ऑफ दि गॉड्स' (१९०४) और 'इन दि डेज़ ऑफ दि कॉमेट' (१९०६) इसी प्रकार की कृतियाँ है। वेल्ज़ विश्वासो से सोशलिस्ट था और उसने प्लैटो की ही भाँति १९०५ में एक काल्पनिक शब्द-ससार रचा—'ए मॉडर्न युटोपिया'। उसने कुछ विनोदी, हास्य प्रधान उपन्यास—'दि व्हील्स ऑफ चान्स'

---

१ Arnold Bennet (१८६७-१९३१), २ H G Wales

(१८९६) 'लव एण्ड मिस्टर लेविशम (१९००) और 'किप्स' (१९०६) भी लिखे। इनमें अन्तिम सुघड कृति है। वेल्ज़ कलाकार से अधिक विचार-प्रधान है और, यद्यपि अनेकत वह सुन्दर है, उसकी शैली 'जर्नलिस्टिक' है। 'एन वेरोनिका' (१९०९) और 'दि न्यू मेकियावेली' (१९११) फिर भी सुन्दर है। उसका 'टोनो वगे' (१९०९) असाधारण व्यग्यकृति है, प्रचुर टिकाऊ। 'दि हिस्ट्री ऑफ मिस्टर पोली' (१९१०) मे वह एक वार फिर 'किप्स' की परपरा की ओर मुडा और 'मिस्टर ब्रिटलिंग सीज़ इट थ्रू' (१९१६) मे उसने महासमर के प्रति अपनी प्रतिक्रिया मूर्त की। उसका दृष्टिकोण दिन-दिन विश्ववादी होता जा रहा था और वैज्ञानिक होने के कारण विशेषत वह मानव-जाति को एक इकाई के रूप मे देखने लगा। इसी विचार का परिणाम 'दि आउट लाइन ऑफ हिस्ट्री' (१९२०) नामक उसका इतिहास हुआ। 'दि वर्ल्ड ऑफ विलियम क्लिसोल्ड' (१९२६) और 'जोन एण्ड पीटर' (१९१८) मे उसकी विचार-सरणी और भी गद्यपरक हो गई। परन्तु निश्चय ही वेल्ज़ अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था और उसके 'किप्स' तथा 'टोनो वगे' वने रहेगे।

सामाजिक उपन्यासो की परपरा बीसवी सदी मे स्वाभाविक ही चल रही है, परन्तु अन्य प्रकार के उपन्यास भी बराबर लिखे जाते रहे है। टियोडोर जोज़फ कॉनरड कोरज़ें-नियोस्की नामक पोल ने भी कुछ दिलचस्प उपन्यास लिखे। वह जोज़फ कॉनरड[१] नाम से प्रसिद्ध है। उसके उपन्यासो में जहाजी-समुद्री जीवन का अच्छा खाका बन पडा है। उसकी प्रसिद्ध कृतियाँ है—'अलमेयर्स फॉली' (१८९५), 'दि निगर ऑफ दि नार्सिसस' (१८९८), 'यूथ' (१९०२) 'टाइफून' (१९०३) 'नौस्ट्रोमो '(१९०४), 'लार्ड जिम' (१९०६), 'दि ऐरो ऑफ गोल्ड' (१९१९)। कॉनरड अंग्रेजी के विदेशी निर्माताओ में से है। जॉर्ज मूर[२] ने फ्रैंच साहित्य से प्रभावित होकर कुछ उपन्यास और आत्म परिचायक ग्रथ रचे। इनमे मुख्य है 'कन्फेशन्स ऑफ ए यगमैन' (१८८८), 'हेल एण्ड फेयरवैल अवे' (१९११), 'सॉल्वे' (१९१२), 'वैल' (१९१४), 'ईस्थर वाटर्स' (१९८४), 'दि ब्रूक केरिथ' (१९१६), 'हेलाइज एण्ड अबेलार्ड' (१९२१)। इनमे अन्तिम धार्मिक उपन्यास है। सॉमरसेट मॉम[३] ने अपने उपन्यासो मे वडी सफलता पाई है और आज सतहत्तर वर्ष की आयु मे भी लिखता जा रहा है। 'लिज़ा ऑफ लैंवेथ' (१८९७) के लन्दन-जगत् को छोड अपने पिछले उपन्यासो मे उसने चीन, मलाया आदि पूर्वात्य देशो का जीवन व्यक्त किया है। उसकी 'दि ट्रैम्बलिंग ऑफ ए लीफ' (१९२१), 'दि पेन्टेड वेल' आदि सुघड कृतियाँ है। आलोचको ने उसकी उपेक्षा की है परन्तु यथार्थ के निरूपण में वह निपुण और साहसी है। यह सत्य है, उसके उपन्यास अत्यन्त लोकप्रिय है।

---

१ Joseph Conrad (१८५७-१९२४); २ George Moore (१८५२-१९३३), ३ Somerset Maughm (ज० १८७४)

(१९०१) से उसे प्रभूत ख्याति मिली। इनके अतिरिक्त उसकी और कृतियाँ—'स्टॉकी एण्ड को' (स्कूल जीवन की कहानियाँ) (१८९९), 'दि जगल बुक्स', (१८९४-१८९५) 'पक ऑफ पूक्स हिल' (१९०६) भी जानी हुई है। शैली में किपलिग सरल है बाइविल की तरह और कल्पना मे चित्रमय, परन्तु विचारो मे सर्वथा प्रतिक्रियावादी है। 'कालो के प्रति गोरो के दायित्व' वाले सिद्धान्त का वह प्रवल पोषक है, यद्यपि उसकी कविता 'रेसेशनल' में इग्लैंड के खतरो की ओर सकेत है।

जॉन गॉल्ज़वर्दी इस दृष्टिकोण का विरोधी आत्मालोचन का उपन्यासकार है। 'दि आइलैंड फैरिसीज़' (१९०४) मे उसने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया। उसका 'दि मैन आफ प्रॉपर्टी' और 'फोरसाईट सगा' में उच्च मध्यवर्ग के जीवन का चित्रण है। उसने अपने सिद्धान्त की परिभाषा 'सम्पत्ति के विरुद्ध सौन्दर्य का सघर्ष' दी है। उसकी लेखनी के स्पर्श से वर्णन मूर्त्ति धारण करता जाता है। उसने आधी सदी के इग्लैंड के उच्च मध्य-वर्गीय जीवन का जैसा यथार्थ और सफल चित्रण किया है, वैसा दूसरा कोई न कर सका। वह शीघ्र ही इग्लैंड और यूरोप के अन्य देशो में लोकप्रिय हो भी गया, यद्यपि आज उसकी लोकप्रियता उतनी नही जितनी कभी पहले थी। उसका अध्यवसाय उद्देश्यपरक है। ऑर्नल्ड वैनेट[1] ने 'दि कार्ड' मे व्यक्तिगत महत्वाकाक्षा की सफलता का अकन किया जो प्राय आत्म-परक था। उसकी 'दि ओल्ड वाइव्ज़ टेल' (१९०८) पर मोपासाँ का स्पष्ट प्रभाव है। उसकी तीन और कृतियाँ जानी हुई है—'क्लेहैंगर' (१९१०) 'हिल्डा लैसवेज़' (१९११) और 'दीज़ ट्वेन' (१९१६)।

एच० जी० वेल्ज़[2] ने इस काल उपन्यास और कहानी लेखन मे एक नया ससार रचा—वैज्ञानिक आधार पर निर्मित उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। चोटी का वैज्ञानिक तो वह था ही, साथ ही इतिहासकार, निवन्धकार और उपन्यासकार भी था। उसने अपने युग को अपनी प्रतिभा से अनेक प्रकार से विविध मात्रा में प्रभावित किया। उपन्यास के क्षेत्र में वह 'दि टाइम मशीन' (१८९५) लेकर उतरा। फिर एक के वाद एक उसके 'दि इन्विजिवलमैन' (१८९७) 'दि वार ऑफ दि वर्ल्डस' (१८९८) 'व्हेन दि स्लीपर वेक्स' (१८९९), और 'दि फर्स्ट मैन इन दि मून' (१९०१) आते गए। इनमें केवल वैज्ञानिक स्थितियो का उपन्यासगत विवरण था, परन्तु शीघ्र ही ऐसे उपन्यासो की सृष्टि मे वेल्ज़ लगा जिनमे दृष्टिकोण और सिद्धान्त झलकने लगे। 'दि फूड ऑफ दि गॉड्स' (१९०४) और 'इन दि डेज़ ऑफ दि कॉमेट' (१९०६) इसी प्रकार की कृतियाँ है। वेल्ज़ विश्वासो से सोशलिस्ट था और उसने प्लैटो की ही भाँति १९०५ में एक काल्पनिक शब्द-ससार रचा—'ए मॉडर्न युटोपिया'। उसने कुछ विनोदी, हास्य प्रधान उपन्यास—'दि व्हील्स ऑफ चान्स'

---

१ Arnold Bennet (१८६७-१९३१), २ H G Wales

तक लैटिन का वोलवाला था। जब उसका स्थान अग्रेजी ने लिया, तब भी उसकी परपरा जीवित रही। लोग लैटिन मे बोलते-लिखते थे और शिष्टता तथा शिक्षित की तो पहिचान ही उसके प्रयोग से होती थी। लैटिन का जब वोलबाला या साधारण प्रयोग उठ गया, तब भी उसकी परपरा बनी रही और इसी से उस काल अग्रेजी के दो रूप हो गए, एक तो लैटिन-बोझिल, दूसरी सहज अग्रेजी। लैटिन भाषा के रूप मे तो उठ गई, पर गद्य की कृत्रिमता में अपनापा छोडती गई। इसी बोझिल भाषा में ईल्फ्रिक ने लिखा। अल्फ्रेड का 'क्रॉनिकल' सरल शैली वाली अग्रेजी में लिखा गया। नॉर्मन-विजय (१०६६) के वाद लैटिन-शैली का अग्रेजी गद्य मिट गया, अल्फ्रेड (मृत्यु ९०१) प्राय १०० वर्ष वाद तक चलता रहा। इस प्रकार प्राजल सरल अग्रेजी अपनी स्वाभाविक धारा मे वह चली, यद्यपि नार्मनो के साथ आई फ्रेंच भाषा का दबदवा उस धारा पर कुछ काल के लिए हावी हो गया। उस प्राचीन गद्य की परपरा का आरम्भ विशेषत तेरहवी सदी में हुआ। सेन्ट मार्गरेट, सेन्ट कैथरीन, सेन्ट जुलियाना के चरित आदि उसके स्मारक है। १४७६ में इग्लैण्ड में विलियम कैक्सटन[१] का छापाखाना खुला। कैक्स्टन के प्रेस और स्वय उसके प्रयास ने इग्लैण्ड को स्टैन्डर्ड भाषा दी। टॉमस मेलॉरी[२] ने १४७० में 'मार्टी डी आर्थर' लिखी जो उसी प्रेस में छपी। लार्ड बेर्नर्स[३] ने फिर १५२० में 'क्रॉनिकल' प्रस्तुत किया जो अनुवाद मात्र था, परन्तु जो चौदहवी सदी का जीवित चित्र प्रतिबिंवित करता था। इसी अनुवाद के साथ कुछ लोगो के विचार से आधुनिक अग्रेजी गद्य का आरम्भ होता है। इसके वाद ही अग्रेजी बाइबिल प्रस्तुत हुई जो अग्रेजी गद्य का सहज अकृत्रिम अथच सशक्त रूप है ? विलियम टिन्डेल[४] और माइल्स कवरडेल[५] उसके विधायक थे। जॉन वाइक्लिफ की १४वी सदी वाली शैली में नया अनुवाद कल्पनातीत सुन्दर उतरा। टिन्डेल ने जो काम शुरू किया था, उसके प्राणदण्ड के वाद कॅवरडेल ने उसे पूरा किया। बाइबिल के अनुवाद के साथ ही तद्वर्ती धार्मिक साहित्य का भी उदय हुआ। उनमें जॉन फौक्स[६] का 'वुक आफ मार्टीयर्स' सबसे अधिक विख्यात है। उसमे प्रोटेस्टैंट शहीदो का बडा भावुक वर्णन है। इसका प्रोटेस्टैन्ट धर्म मे प्राय १०० वर्ष वाद तक वोलवाला वना रहा। रिचर्ड हुकर[७] ने १६वी सदी के अन्त मे अपनी 'लॉज़ ऑफ एकलेज़िएस्टिकल पॉलिसी' सुन्दर सहज भाषा मे लिखी, यद्यपि उसकी शैली अग्रेजी और लैटिन के वीच की थी, जिसमे स्पष्टत , शालीनता तथा देशीयता का समान पुट था।

---

१ William Caxton (१४२१-९१), २ Sir Thomas Malory (मृ. १४७१), ३ Lord Berners (१४६७-१५५३), ४ William Tindale (१४८४-१५३६); ५ Miles Coverdale (१४८८-१५६८), ६ John Foxe (१५१६-८७), ७ Richard Hooker (१५५४-१६००)

करना शुरू किया है। इनमे डोरोथी रिचार्डसन[१] पहली है। उसने अपने 'प्वाइंटेड रूफ्स' (१९१५) में अकेले एक चरित्र की चेतना का अध्ययन किया है। इस दिशा में मिसेज वर्जीनिया वुल्फ[२] को विशेष सफलता मिली। उसके उपन्यासो मे प्रधान हैं—'दि वॉएज़ आउट' (१९१५), 'नाइट एण्ड डे' (१९१९), 'जैकाब्स रूम' (१९२२), 'मिसेज़ डैलोवे' (१९२५) 'टु दि लाइटहाउस' (१९२७), 'आर्लेंडो' (१९२८), 'दि वेव' (१९३१) और 'दि इयर्स' (१९३७)। वर्जीनिया वुल्फ की उपन्यास कला मे चित्रकला का 'इम्प्रेशनिज्म' उतर आया है। इस प्रकार उसके उपन्यास एक प्रकार का आन्तरिक एकान्त चित्रण हो गये है। परन्तु उसके वर्णन में माधुर्य और प्रवाह है, विनोद है। विनोदनात्मरजन उसके 'ऑर्लेण्डो' का प्राण है।

इस अध्याय का अन्त जेम्स ज्वायस[३] की कृतियो के उल्लेख बिना नही किया जा सकता। जेम्स ज्वायस को नितान्त सराहा भी गया है, खुली गाली भी मिली है। अच्छा-वुरा वह जैसा भी हो, शताब्दी का वह शायद सवसे मौलिक उपन्यासकार है। लघु कहानियो के जगत् मे अपने सग्रह 'डब्लिनर्स' द्वारा नाम कमा वह उपन्यासो के क्षेत्र में उतरा। 'ए पोर्ट्रेट ऑफ दि आर्टिस्ट ऐज़ ए यगमैन' (१९१६) के आधार से उठ कर उसकी सर्वथा वैयक्तिक कला 'उलिसेज़' (१९२२) में प्रौढ हो गई। उसके वाद 'फिनेगन्स वेक' (१९३९) प्रकाशित हुआ। उसने सचेतक-अचेतक दोनो जीवनो का सर्वांगीण रूप मे चित्रण किया। उसके दर्शन मे देश और काल की सज्ञा कृत्रिम है, सव कुछ सापेक्ष्य है, कला उसी सापेक्ष्यता का निरूपण है। 'उलिसेज़' का जगत यौन-चित्रण का अनगीकृत निरावृत्त अतरग है। उसकी कला धर्म और चर्च के प्रति उसके विद्रोह मे निखरी। ज्वायस विश्लिष्ट जगत् में समष्टि ढूंढता है। उसकी कृतियाँ इसी 'एकायनता' (एकता) के अन्वेषण का परिणाम है। ज्वायस के उपन्यासो का प्रभाव युवा सृजको पर गहरा पडा।

: १९ :

अंग्रेजी गद्य-साहित्य

अट्ठारहवी सदी तक

यहाँ हम केवल उस गद्य का इतिहास लिखेंगे, जो अधिकतर निबन्धगत है, कहानी-उपन्यास और नाटक-सवधी गद्य से भिन्न।

अग्रेजी गद्य का आरम्भ दसवी सदी मे होना है। उनके पहले और काफी वाद

१ Dorothy Richardson, २ Virginia Woolf (ज. १८८२), ३ James Joyce (१८८२-१९४१)

तक लैटिन का बोलवाला था। जब उसका स्थान अग्रेजी ने लिया, तब भी उसकी परपरा जीवित रही। लोग लैटिन में बोलते-लिखते थे और शिष्टता तथा शिक्षित की तो पहिचान ही उसके प्रयोग से होती थी। लैटिन का जब बोलबाला या साधारण प्रयोग उठ गया, तब भी उसकी परपरा बनी रही और इसी से उस काल अग्रेजी के दो रूप हो गए, एक तो लैटिन-बोझिल, दूसरी सहज अग्रेजी। लैटिन भाषा के रूप में तो उठ गई, पर गद्य की कृत्रिमता में अपनापा छोडती गई। इसी बोझिल भाषा मे ईल्फ्रिक ने लिखा। अल्फ्रेड का 'क्रॉनिकल' सरल शैली वाली अग्रेजी मे लिखा गया। नॉर्मन-विजय (१०६६) के बाद लैटिन-शैली का अग्रेजी गद्य मिट गया, अल्फ्रेड (मृत्यु ९०१) प्राय १०० वर्ष वाद तक चलता रहा। इस प्रकार प्राजल सरल अग्रेजी अपनी स्वाभाविक धारा मे बह चली, यद्यपि नार्मनो के साथ आई फ्रेंच भाषा का दबदबा उस धारा पर कुछ काल के लिए हावी हो गया। उस प्राचीन गद्य की परपरा का आरम्भ विशेषत तेरहवी सदी में हुआ। सेन्ट मार्गरेट, सेन्ट कैथरीन, सेन्ट जुलियाना के चरित आदि उसके स्मारक हैं। १४७६ में इग्लैण्ड में विलियम कैक्सटन[१] का छापाखाना खुला। कैक्स्टन के प्रेस और स्वय उसके प्रयास ने इग्लैण्ड को स्टैन्डर्ड भाषा दी। टॉमस मेलॉरी[२] ने १४७० में 'मार्टी डी आर्थर' लिखी जो उसी प्रेस में छपी। लार्ड बेर्नर्स[३] ने फिर १५२० मे 'क्रॉनिकल' प्रस्तुत किया जो अनुवाद मात्र था, परन्तु जो चौदहवी सदी का जीवित चित्र प्रतिबिंवित करता था। इसी अनुवाद के साथ कुछ लोगो के विचार से आधुनिक अग्रेजी गद्य का आरम्भ होता है। इसके बाद ही अग्रेजी वाइबिल प्रस्तुत हुई जो अग्रेजी गद्य का सहज अकृत्रिम अथच सशक्त रूप है? विलियम टिन्डेल[४] और माइल्स कवरडेल[५] उसके विधायक थे। जॉन वाइक्लिफ की १४वी सदी वाली शैली में नया अनुवाद कल्पनातीत सुन्दर उतरा। टिन्डेल ने जो काम शुरू किया था, उसके प्राणदण्ड के बाद कॅवरडेल ने उसे पूरा किया। बाइबिल के अनुवाद के साथ ही तद्वर्ती धार्मिक साहित्य का भी उदय हुआ। उनमें जॉन फौक्स[६] का 'बुक आफ मार्टीयर्स' सबसे अधिक विख्यात है। उसमे प्रोटेस्टैंट शहीदो का बडा भावुक वर्णन है। इसका प्रोटेस्टैन्ट धर्म मे प्राय १०० वर्ष वाद तक वोलवाला वना रहा। रिचर्ड हुकर[७] ने १६वी सदी के अन्त मे अपनी 'लॉज ऑफ एकलेज़िएस्टिकल पॉलिसी' सुन्दर सहज भाषा मे लिखी, यद्यपि उसकी शैली अग्रेजी और लैटिन के बीच की थी, जिसमे स्पष्टत, शालीनता तथा देशीयता का समान पुट था।

---

१ William Caxton (१४२२-९१), २ Sir Thomas Malory (मृ. १४७१), ३ Lord Berners (१४६७-१५५३), ४ William Tindale (१४८४-१५३६); ५ Miles Coverdale (१४८८-१५६८), ६ John Foxe (१५१६-८७), ७ Richard Hooker (१५५४-१६००)

लेडी जेन ग्रे के शिक्षक रोजर ऐशम[1] ने 'टोक्सोफिलस' (१४५५) और 'दि स्कूल मास्टर' (१५७०) मे तत्कालीन गद्य शैली उद्‌घाटित की। १६वी सदी के तीसरे चरण के आरम्भ मे सर टॉमस नार्थ[2] ने प्लूटार्च के जीवन चरितो का अनुवाद किया जो शेक्सपियर आदि के तत्सबधी ऐतिहासिक नाटको का आधार बना। वैसे ही फिलेमन हॉलैण्ड द्वारा अनूदित प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' भी शेक्सपियर के बडे काम आई।

रैंफेल होलिन्शैड[3] ने 'क्रॉनिकल' के रूप में अंग्रेजी जीवन को प्रतिबिंबित किया था वह भी शेक्सपियर की लेखनी के जादू से १६वी सदी के अन्त मे मूर्तिमान् हुआ। उसी सदी के अन्त मे रिचर्ड हकलुइट[4] ने 'दि प्रिंसिपल वायजेज़' नामक यात्रा-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और १७वी सदी मे रॉबर्ट बर्टन[5] ने 'अनाटॅमी ऑफ मलेंकली' (१६२१) लिखकर मानव-मस्तिष्क की क्रियाओ पर प्रकाश डाला।

अंग्रेजी गद्य का पहला वास्तविक महान् व्यक्ति फ्रासिस बेकन[6] था। वस्तुत वह काल अंग्रेजी गद्य के विकास में बडा महत्व रखता है। उसी काल बाइबिल का 'सम्मत पाठ' भी प्रस्तुत हुआ। बेकन की विचारधारा ने तत्कालीन धार्मिकता को अपनी वैज्ञानिकता से चुनौती दी। बेकन स्वय तो रूढिवादी ही था परन्तु जिस मन स्थिति को उसने उत्साहित किया, वह धर्म-विरोधिनी सिद्ध हुई। बेकन की अधिकतर कृतियाँ लैटिन मे है और यह कुछ कम आश्चर्य की बात नही कि इग्लैंड का तत्कालीन महत्तम गद्यकार अंग्रेजी से उदासीन रहा हो। १५९७ मे उसके 'ऐसेज़' प्रकाशित हुए। इन निबन्धो की शैली अत्यन्त कसी हुई, सूत्रवत् है। एक शब्द का व्यवहार भी वह आवश्यकता से अधिक नही करता।

१७वी सदी का पूर्वार्द्ध गृहयुद्ध और प्युरिटन-विजय का था। उस काल का गद्य गभीर और शालीन है, जिसका प्रभाव आज के पाठको पर गहरा पडता है। सर टॉमस ब्राउन[7], जेरमी टेलर[8] और जॉन मिल्टन ने तब अपनी शक्तिम शैली से अंग्रेजी गद्य को सनाथ किया। ब्राउन पडित था, राजनीति से सर्वथा दूर। जादू और अमानुषिक घटनाओ मे उसका विश्वास था, यद्यपि वैद्य होने के कारण विज्ञान से उसका सीधा सम्बन्ध था। उसकी शैली मे दोनो का समावेश है और वह नितान्त सुन्दर बन पडी है। अपने 'हाड्रियोटेफिया' और 'अर्न बरियल' (१६५८) और 'रेलिजिओ मेडिसी' मे जिस शैली का ब्राउन ने उद्‌घाटन किया, वह आश्चर्यजनक है। जेरेमी टेलर ब्राउन का समकालीन था और उसकी कृतियाँ 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइग' (१६५१)—

---

१ Roger Ascham (१५१५-१५६८), २ Thomas North, ३ Raphael Holingshed, ४ Richard Hakluyt (१५५३-१६१६), ५ Robert Burton (१५७६-१६४०), ६ Francis Bacon (१५६१-१६२६), ७ Sir Thomas Browne (१६०५-'८२), ८ Jeremy Taylor (१६१३-'६७)

प्रवचन के क्षेत्र मे भाषा की शालीनता मे अपना जोड नही रखती। टेलर पादरी था। मिल्टन बाँए हाथ से लिखा करता था और अधिकतर उसने लिखा भी लैटिन मे ही। व्याख्यान और लेखन की स्वतन्त्रता के पक्ष मे १६४४ मे जो उसने अपनी 'एरियोपेजेटिका' लिखी, वह शक्ति तथा शालीनता मे लासानी है, यद्यपि उसके वाक्यो की पेचीदगी कुछ सरल नही अनेक बार तो उसने अग्रेजी और लैटिन की खिचडी तक कर दी है।

१७वी सदी के आइज़क वाल्टन[1] का 'कम्प्लीट ऐंगलर' (१६५३) सदियो पार आज भी पाठको को आकृष्ट करता है। उसने अनेक जीवन-चरित लिखे और यह 'ऐंगलर' तो गृह-युद्ध के समय ही लिखा गया, जिसमे मछली मारने के व्यसन के साथ ही अग्रेजी देहात का जीवन भी प्रतिविम्बित हुआ। १६६० के पुनरारोहण के साथ अग्रेजी गद्य का एक नया रूप शुरू हुआ। चार्ल्स द्वितीय लुई के फ्रासीसी दरबार मे प्रवासी के रूप मे एक जमाने तक रह चुका था। वह जव स्वदेश लौटा तो लुई के दरबार की अनेक विशेषताएँ साथ लेता आया। उनमे से एक विशेषता फ्रेंच भाषा की चपलता, सरलता और उसका सहज प्रवाह था। अग्रेजी पर फ्रेंच भाषा की इस रीति की छाया पडी। रॉयल सोसाइटी की नीव ने न केवल वैज्ञानिक विषयो की छानवीन शुरू की वरन् उसका प्रभाव साहित्य और दर्शन पर भी पडा। कवि और नाटककार जॉन ड्राइडन ने साहित्य-सबधी निवन्ध तभी लिखे। उनमे 'ऐसेज़ ऑफ ड्रामेटिक पोएज़ी' (१६६८) सबसे पहले प्रकाशित हुआ और 'प्रिफेस टु दि फेबुल्स' (१७००) सबसे पीछे। ड्राइडन की शैली बडी सहज और सरल थी।

इसी काल टॉमस होवेस[2] और जॉन लॉक[3] ने भी अपने राजनीतिक ग्रन्थ लिखे—होवेस ने 'लेवायथान' (१६५१) और लॉक ने 'सिविल गवर्नमेट'। लॉक का निबन्ध 'ऐन ऐसेज़ कनसर्निग ह्यूमन अन्डरस्टैंडिग' (१६९०) का प्रभाव सारे यूरोप पर पडा।

१७वी सदी का सबसे विख्यात गद्यकार सेमुएल पेपिज़[4] था। उसने साधारण जन की साधारण बातें अपनी कृति में लिखी, पहली बार और अपने जीवन की बातें सविस्तार। पेपिज़ रॉयल नेवी का विधाता और रॉयल सोसाइटी का प्रधान था। उसकी डायरी सादी और अद्भुत है, जिसका जोड अग्रेजी साहित्य मे नही। पेपिज़ के कुछ और समकालीन थे जिन्होंने उसी की भाँति अपने जीवन की भी अपने लेखो पर छाया डाली। जॉन एवेलिन[5] रॉयल सोसाइटी का सदस्य, राजदरबारी और पेपिज़ का मित्र था, जिसने उद्यानो, मैदानो,

---

१ Izaak Walton (१५९३-१६८३), २ Thomas Hobbes (१५८८-१६७८), ३ John Locke (१६३२-१७०४), ४ Samuel Pepys (१६३२-१७०४); ५ John Evelyn (१६२०-१७०६)

लेडी जेन ग्रे के शिक्षक रोजर ऐशम[१] ने 'टोक्सोफिलस' (१४५५) और 'दि स्कूल मास्टर' (१५७०) मे तत्कालीन गद्य शैली उद्घाटित की। १६वी सदी के तीसरे चरण के आरम्भ मे सर टॉमस नार्थ[२] ने प्लूटार्च के जीवन चरितो का अनुवाद किया जो शेक्सपियर आदि के तत्सबधी ऐतिहासिक नाटको का आधार बना। वैसे ही फिलेमन हॉलैण्ड द्वारा अनूदित प्लिनी की 'नेचुरल हिस्ट्री' भी शेक्सपियर के बडे काम आई।

रैफेल होलिन्शैड[३] ने 'क्रॉनिकल' के रूप में अग्रेजी जीवन को प्रतिबिंबित किया था वह भी शेक्सपियर की लेखनी के जादू से १६वी सदी के अन्त मे मूर्तिमान् हुआ। उसी सदी के अन्त में रिचर्ड हकलुइट[४] ने 'दि प्रिंसिपल वायजेज़' नामक यात्रा-ग्रन्थ प्रस्तुत किया और १७वी सदी मे रॉबर्ट बर्टन[५] ने 'अनाटॅमी ऑफ मलेंकली' (१६२१) लिखकर मानव-मस्तिष्क की क्रियाओ पर प्रकाश डाला।

अग्रेजी गद्य का पहला वास्तविक महान् व्यक्ति फ्रासिस बेकन[६] था। वस्तुत वह काल अग्रेजी गद्य के विकास में बडा महत्व रखता है। उसी काल बाइबिल का 'सम्मत पाठ' भी प्रस्तुत हुआ। बेकन की विचारधारा ने तत्कालीन धार्मिकता को अपनी वैज्ञानिकता से चुनौती दी। बेकन स्वय तो रूढिवादी ही था परन्तु जिस मन स्थिति को उसने उत्साहित किया, वह धर्म-विरोधिनी सिद्ध हुई। बेकन की अधिकतर कृतियाँ लैटिन मे है और यह कुछ कम आश्चर्य की बात नही कि इग्लैड का तत्कालीन महत्तम गद्यकार अग्रेजी से उदासीन रहा हो। १५९७ में उसके 'ऐसेज़' प्रकाशित हुए। इन निबन्धो की शैली अत्यन्त कसी हुई, सूत्रवत् है। एक शब्द का व्यवहार भी वह आवश्यकता से अधिक नही करता।

१७वी सदी का पूर्वार्द्ध गृहयुद्ध और प्युरिटन-विजय का था। उस काल का गद्य गभीर और शालीन है, जिसका प्रभाव आज के पाठको पर गहरा पडता है। सर टॉमस ब्राउन[७], जेरमी टेलर[८] और जॉन मिल्टन ने तब अपनी शक्तिम शैली से अग्रेजी गद्य को सनाथ किया। ब्राउन पडित था, राजनीति से सर्वथा दूर। जादू और अमानुषिक घटनाओ मे उसका विश्वास था, यद्यपि वैद्य होने के कारण विज्ञान से उसका सीधा सम्बन्ध था। उसकी शैली मे दोनो का समावेश है और वह नितान्त सुन्दर बन पडी है। अपने 'हाड्रियोटेफिया' और 'अर्न बरियल' (१६५८) और 'रेलिजिओ मेडिसी' मे जिस शैली का ब्राउन ने उद्घाटन किया, वह आश्चर्यजनक है। जेरेमी टेलर ब्राउन का समकालीन था और उसकी कृतियाँ 'होली लिविंग' (१६५०) तथा 'होली डाइग' (१६५१)—

---

१ Roger Ascham (१५१५-१५६८); २ Thomas North, ३ Raphael Holingshed, ४ Richard Hakluyt (१५५३-१६१६), ५ Robert Burton (१५७६-१६४०), ६ Francis Bacon (१५६१-१६२६), ७ Sir Thomas Browne (१६०५-'८२), ८ Jeremy Taylor (१६१३-'६७)

का सशक्त समर्थन किया । परन्तु दुनिया तेजी से बदलती जा रही थी और लोगो मे परपरा के प्रति सन्देह घर करता जा रहा था । ऐसो मे बर्नार्ड मैन्डेविल[1] असामान्य मौलिकता का व्यक्ति था । 'दि फेबल ऑफ दि बीज' (१७१४) मे उसने राज्य की वचकता पर गहरी चोट की । उसके निबन्ध आज के पत्रकारो की कुशल शैली मे लिखे गये है, सरकार की आलोचना मे ।

जॉर्ज बर्कले[2] आदर्शवादी था और जीवन के क्षेत्र मे उसने दार्शनिक समस्याओ को सरका दिया । उसने भौतिक ससार के अस्तित्व को न मानकर चेतना को ही मानव-ज्ञान का आधार स्वीकार किया । डेविड ह्यूम[3] ने भी ज्ञान-चिन्तन मे ही अपना गद्य माँजा और देकार्त को अपने अनुशीलन मे पुनर्जीवित किया । ह्यूम के 'ऐसेज़ कनसर्निग ह्यूमन अन्डर-स्टैंडिंग' (१७४८) का चिन्तन के क्षेत्र पर गहरा प्रभाव पडा ।

१८वी सदी में इतिहास का विशेष चिन्तन हुआ है और इतिहास के क्षेत्र मे विशेषत गद्य-भारती जागी । ह्यूम स्वय इतिहासज्ञ था, यद्यपि उस दिशा मे 'दि डिक्लाइन एण्ड फ़ाल ऑफ दि रोमन एम्पायर' (१७७६) लिखकर ऐडवर्ड गिबन[4] ने बडा नाम कमाया । उसकी 'ऑटोबायग्राफी' स्वय शैली का सुघड नमूना है । उसके इतिहास ने प्राचीन का उद्घाटन किया, जिससे नवीन का सापेक्ष्य मूल्याकन किया जा सका । गिबन की कृति का भी उस काल के ज्ञान पर बडा प्रभाव पडा । प्रसिद्ध डाक्टर सेमुएल जॉन्सन गिबन के मित्रो में से था । उसके व्यक्तित्व ने अग्रेजी साहित्य पर असाधारण प्रभाव डाला । उसका यश अधिकतर जेम्स बॉसवेल[5] का 'लाइफ ऑफ जॉन्सन' पर अवलम्बित है, जिसमे उस महाकाय साहित्यिक के प्रतिपल का जीवन प्रतिबिंबित है । जॉनसन का शेक्सपियर की कृतियो का सस्करण (१७६५) उस महाकवि के अध्ययन मे बडा सहायक सिद्ध हुआ । उसकी भूमिका ने अपने साहस-भरे दृष्टिकोण से एक प्रकार से उसकी रक्षा कर ली । जॉन्सन की महान कृति उसकी 'डिक्शनरी' (कोष) (१७४७-५५) है, जिस पर बाद के प्राय समस्त कोष अवलम्बित हुए । शब्दो का जितना ज्ञान उनके निर्माण और विकास के रूप मे जॉन्सन को था, उतना किसी को न था । जॉन्सन की बौद्धिक चर्चा प्रसिद्ध है । उसके क्लब में बर्क, रेनाल्ड्स (जिसके घर क्लब की बैठके हुआ करती थी), फॉक्स आदि सभी बैठते थे । उसकी वाक्यावली की छाप अग्रेजी साहित्य मे उतर गई । उसी चर्चा की गद्य-शैली में जॉन्सन ने कॉवले से ग्रे तक के कवियो का जीवन चरित' दि लाइव्ज ऑफ दि पोयट्स' (१७७९-८१) के नाम से प्रकाशित किया । 'दि रैम्बलर' और' दि आइडलर' मे उसने ऐडिसन से कही

---

१ Bernard Mendeville (१६७०-१७३३), २ George Berkeley (१६८५-१७५३); ३ David Hume (१७११-७६), ४ Edward Gibbon (१७३७-९४), ५. James Boswell (१७४०-९५)

यात्राओ आदि का वर्णन लिखा। वह वस्तुत चार्ल्स द्वितीय के सभासदो से रुचि में बडा भिन्न था। पेपिज़ और ऐवेलिन की ही भाँति क्लेयरेन्डन का अर्ल ऐडवर्ड हाइड[1] जब अपने विषय में लिखने चला तब राजनीति से घने रूप से सबधित होने के कारण उसे 'हिस्ट्री ऑफ दि रिबैलियन' लिख देना पडा। उसकी शैली जटिल है, फिर भी तत्कालीन घटनाओ का उससे भरपूर ज्ञान हो जाता है।

क्वीन एन का काल अग्रेजी साहित्य के समुन्नत युगो मे से है। उस काल के अधिकतर गद्य ने उपन्यास का रूप लिया। 'रॉबिन्सन-क्रूसो' के लेखक डि फो ने १८वी सदी मे फिर भी गद्य का रुख एक नयी दिशा में फेरा—पत्रकारिता की दिशा मे। 'दि रिव्यू' पत्र-शैली का ही नमूना है। रिचर्ड स्टील[2] और जोज़ेफ ऐडिसन[3] ने उस दिशा मे और सफल प्रयत्न किये और उनके पत्रो के कालमो में जो मध्यवर्ग के पाठको के लिए छपते थे, आचार, फैशन, साहित्य सभी कुछ रूपायित होता था। निबन्ध-लेखन भी उस काल एक नये स्तर पर उतरा। ऐडिसन ने अपने 'स्पेक्टेटर क्लब' में एक नयी दुनिया ही रच डाली। जोनाथन स्विफ्ट[4] ने बडी निर्भीकता से जानी हुई दुनिया के व्यग्यात्मक चित्र सिरजे। 'दि बैटल ऑफ दि बुक्स' और 'ए टेल ऑफ ए टब' (१७०४) से लेकर 'गुलिवर्स ट्रैवेल्स' (१७१६) तक की कृतियाँ एक के बाद एक साहस और शैली की दुनिया रचती गयी। उसके 'जर्नल टु स्टेला' से प्रमाणित है कि उसके व्यग्य ने शत्रु नही उत्पन्न किये। 'ड्रेपियर्स टेलर्स' (१७२४) में उसने राजनीतिक वचकता का घृणापूर्वक भडाफोड किया। शक्ति, सूझ और व्यग्यात्मक विनोद में स्विफ्ट अकेला है। उसने अग्रेजी गद्य को नयी शक्ति और दिशा दी।

: २० :

आधुनिक गद्य

१८वी सदी में इग्लैंड के सक्रिय सघर्षमय जीवन ने भाषा की मर्यादा इस मात्रा में स्थापित कर दी कि वह अभिव्यक्ति का असाधारण साधन बन गयी। राजनीति, विज्ञान, धर्म सभी क्षेत्रो में उसकी अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत हुई और सर्वत्र उसने समर्थ निर्माताओ का सक्रिय योग पाया। जिस प्रकार होबेस और लॉक ने अपने राजनीतिक सिद्धान्त दार्शनिक सुगम गद्य में व्यक्त किये थे, उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी जोजफ बटलर[5] सा विवेचक हुआ। 'दि अनालोजी ऑफ रिलीजन' (१७३६) द्वारा उसने धर्म की स्थापनाओ

१. Edward Hyde, Earl of Clarendon (१६०८-१६७४), २ Richard Steele (१६७२-१७२९), ३ Joseph Addison (१६७२-१७१९), ४ Jonathon Swift (१६६७-१७४५); ५ Joseph Butler (१६९२-१७५२)

उनका कलात्मक रूप चेस्टरफील्ड के अर्ल के पत्रो मे और भी निखर गया है। जेम्स मैक्फर्सन[1] अग्रेजी साहित्य का अति करुण व्यक्तित्व है। उसने एक नये किस्म के गतिमान गद्य की अभिसृष्टि की जिसमे उसने अनेक पुरानी कविताओ का रूपान्तर भी किया। बाद मे मालूम हुआ कि उनके मूल सिवा मैक्फर्सन के दिमाग के और कही न थे। जब उससे मूल कविताओ के सबध मे प्रश्न किया गया, तब वह अपने तथाकथित अनुवादो के आधार पर मूल की अभिसृष्टि करने बैठा। मैकफर्सन के वर्णनात्मक सग्रह का नाम 'दि वर्क्स ऑफ ओस्सियन' है।

१९वी सदी मे कोलरिज ने अग्रेजी गद्य को अपनी 'बायोग्रेफिया लिटरेरिया' (१८१७) मे जो एक नयी चेतना दी, वह थी साहित्यिक आलोचना की। कोलरिज के लेखो ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण से १९वी सदी के चिन्तन को बडा प्रभावित किया। आलोचना के क्षेत्र मे तो उसने सर्वथा नयी शब्दावली का सृजन किया। जॉन कीट्स की चिट्ठियो मे भी अद्भुत भावुक रचित है, जो उन पर उसकी स्वाभाविक काव्य प्रतिभा की छाया डालती है। परन्तु वास्तव मे बायरन के पत्रो और जर्नलो मे समसामयिक जीवन का जितना कल्पनातीत सुखद, सच्चा और क्रूर वर्णन है, उतना और कही उपलब्ध नही।

चार्ल्स लैम्ब[2] अग्रेजी साहित्य के प्रधान निबन्धकारो मे हो गया है। उसके 'ऐसेज ऑफ एलिया' (१८२३) और 'लास्ट ऐसेज़' (१८३३) अग्रेजी गद्य साहित्य की अमर कृतियाँ हो गई है। उसकी निबन्ध शैली का प्रारम्भ फ्रैंच निबन्धकार मोन्तेन ने किया था। उसका पहला अग्रेज समर्थक काउले था। पुराने निबन्धकारो की पृष्ठभूमि पर खडा लैम्ब अपने विनोद और नित्य के जीवन का योग देता है। उसका सृजनात्मक हृदय दुख बर्दाश्त नही कर सकता था। उसकी बहिन का विक्षेप उसके लिए दारुण विषाद बन जाता है। उसके निबन्धो मे साधारण और सामान्य का अटूट उपयोग हुआ है।

निबन्धकार के रूप मे लैम्ब का मित्र विलियम हैज्लिट[3] भी प्रभूत विख्यात हुआ। उसके निबन्धो मे आज भी असामान्य ताजगी है। वह शब्दो का शिल्पी है और शब्दो का चुनाव धीरता से करता है। अपनी आलोचना मे वह कही समझौता नही करता, प्रखर है। लैम्ब दयार्द्र है, हैज्लिट परुष। अपने 'लिबर अमोरिस' (१८२३) मे उसका व्यग्य अपने को भी नही छोड पाता। उसके निबन्ध-सग्रहो मे सबसे प्रखर 'दि स्पिरिट ऑफ दि एज'

---

१ James Macpherson (१७३६-९६), २ Charles Lamb (१७७५-१८३४), ३ William Hazlitt (१७७८-१८३०)

अधिक साहित्यिक पूँजी प्रस्तुत की। इन पत्रो के अतिरिक्त उसके ज्ञान का भडार 'ए जर्नी टू दि वैस्टर्न आइलैंड्स ऑफ स्कॉटलैंड' (१७७५) में भी खुल पडा है। उसके 'रैसेलस' का हवाला अन्यत्र दिया जा चुका है।

व्यक्तित्व मे जॉन्सन से नितान्त लघु होकर भी कर्तृत्व मे ऑलिवर गोल्डस्मिथ उससे महान् था। उसमे साहित्यिक प्रतिभा कही अधिक थी। जॉन्सन ने उसके विषय मे स्वय कहा है कि उसने साहित्य के सभी प्रकारो को अपनाया और जिस-जिस को उसने अपनाया, उस-उस प्रकार को अलकृत किया। नाटककार और उपन्यासकार तो वह था ही, निबन्धकार भी वह असामान्य था। उसके निबन्धो मे उसका व्यक्तित्व खुल पडा है। 'दि सिटिज़न ऑफ दि वर्ल्ड' (१७६२) नामक लेख-सग्रह मे उसने एक चीनी यात्री के बहाने जीवन पर कुछ चुटीले वक्तव्य किये है। गोल्डस्मिथ भी जॉन्सन की बैठक का महत्त्वपूर्ण व्यक्ति था। एडमण्ड बर्क[1] का नामोल्लेख पहले ही हो चुका है। बर्क असाधारण राजनीतिज्ञ था और अपने काल का प्रमुख वक्ता। उसने लिखा भी बहुत कुछ और जहाँ उसके व्याख्यान शब्दो का जादू प्रस्तुत करते है, उसके लेख चिन्तनशील व्याख्या का। 'इम्पीचमेंट ऑफ हेस्टिंग्स' जो उसके वारेन हेस्टिंग्स के विरुद्ध पार्लमेंट मे दिये व्याख्यानो का सग्रह है, आज भी भारतीयो के आकर्षण का विषय है। उसकी अधिकतर रचनाएँ व्याख्यान के ही रूप मे सगृहीत हुई परन्तु वे भावो की उदारता और भाषा के प्रवाह में अद्वितीय है। 'दि सबलाइम एण्ड दि ब्यूटिफुल, (१७५६) उसकी प्रारम्भिक कृति है। उसकी पिछली कृतियो मे प्रधान है—'ऑन अमेरिकन टैक्सेशन' (१७७४), 'ऑन कॉन्सलियेशन विद अमेरिका' (१७७५) और 'रिफ्लेक्शन्स ऑन दि फ्रैंच रेवोल्यूशन' (१७९०)। बर्क प्राचीनता और परपरा का बडा हिमायती था। उसकी गद्य शैली मे जॉन्सन और गिबन दोनो से अधिक प्रवाह है।

१८वी सदी के गद्य की शैली चिट्ठी-पत्रियो और पत्रिकाओ मे भी निर्मित हुई। व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्रियो मे तो उसकी आकृति अनेक बार बहुत सुन्दर बन पडी है। वास्तव मे १८वी सदी मे पत्र-लेखन को जितनी सुरुचि का आधार मिला शायद कभी नही। टॉमस ग्रे की चिट्ठियो मे उस सदी के साहित्य का एक प्राजल रूप सुरक्षित है और विलियम काउपर की चिट्ठियाँ तो उसकी कविताओ से कही अधिक सजीव हैं। उसके वर्णन जीवन का रस निचोड कर रख देते हैं। सुन्दर, भोडे सभी प्रकार के जीवन का। जॉन वेज़ले[2] ने जो मेथाडिस्ट सम्प्रदाय का प्रवर्त्तक था, अपनी डायरी मे अपने सघर्ष का गद्गद वर्णन किया है। हॉरेस वालपोल की चिट्ठियाँ १८वी सदी के जीवन का दर्पण हैं। यद्यपि

---

१ Edmund Burke (१७२९-९७), २ John Wesley (१७०३-९१)

जेरेमी बैन्थम[1] टी आर माल्थूस,[2] जेम्स मिल[3] और उसका पुत्र जॉन स्टुअर्ट मिल[4] इसी क्षेत्र के लेखक हैं। पर उनकी शैली मे चिन्तन तथा वाद-प्रतिवाद तो है, साहित्यिक आनन्द नही। हाँ, जॉन स्टुअर्ट मिल की 'ऑटोबायोग्रैफी' मे निश्चय ही कुछ आकर्षण है।

टॉमस बैबिंग्टन मैकॉले[5] का गद्य अत्यन्त समृद्ध था। सविस्तार ज्ञान रखता हुआ भी वह अपनी विवेचनाओ मे कठमुल्ला और एकागी था। उसकी भाषा मे गजब का प्रवाह था और शब्दावली का वह आचार्य था। कुवाच्यो के धन मे वह बेजोड था। उसकी 'हिस्ट्री ऑफ इग्लैण्ड' (१८४९-६१) साहित्य की कोटि की है। टॉमस कारलाइल[6] साहित्यकार था, परन्तु उसका आधार उसने इतिहास को बनाया। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ 'सार्टर रिसार्ट्स' (१८३३-३४), 'ऑन हिरोज ऐण्ड हिरोवर्शिप' (१८४१) और 'पास्ट ऐण्ड प्रैजेण्ट' (१८४३) हैं। उसकी ख्याति उसके 'फ्रैंच रेवोल्यूशन' से ही हो गई थी। उसके वाक्य लम्बे, कभी सामान्य, कभी पेचीदे और चिन्तनशील हैं। उसके शब्दो की परपरा अटूट है। उनका प्रवाह अविच्छिन्न। कारलाइल के आदर्शवाद के साथ ही धार्मिको का ऑक्सफोर्ड से एक आन्दोलन चला। उसमे अगणी जॉन हेनरी न्यूमेन[7] था, जिसने सुन्दर गद्य रचना की। अपनी 'अपोलोजिया प्रो विटा सुआ' (१८६४) मे उसने अपने ही आध्यात्मिक इतिहास को भावमयी वाणी में व्यक्त किया। जॉन रस्किन[8] उन्नीसवी सदी के साहित्यकारो में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। अपने 'मॉडर्न पेन्टर्स' मे उसने सौंदर्य के दर्शन को धर्म का स्थानापन्न बना दिया। वास्तु का उसने अपने 'सैवन लैम्प्स ऑफ आर्किटेक्चर' (१८४९) और 'दि स्टोन्स ऑफ वेनिस' (१८५१-५३) में दार्शनिक विवेचन किया। अपनी शताब्दी के घणित व्यवसायवाद का उच्छेद उसन अपने 'अण्टू दिस लास्ट' (१८६२) में किया। रस्किन के वाक्य नितान्त लम्बे ह और शैली पेचीदा है।

उस सदी के साहित्यकारो मे मैथ्यू आर्नल्ड का स्थान बहुत ऊँचा है। उसने कविता को जीवन का दर्पण कहा है और आलोचना के साहित्य में प्राय एक क्राति उपस्थित कर दी। उसने आलोचना के उन सिद्धातो का पहली बार निर्माण किया, जिनके आधार पर साहित्य का मूल्याकन हो सके। जहाँ रस्किन ने कला को धर्म का पद दिया था, वाल्टर पेटर[9] ने कला का अन्त कला ही में माना और 'कला कला के लिए' का आदर्श चलाया उसकी 'स्टडीज इन दि हिस्ट्री ऑफ रैनैसास' गद्य-साहित्य मे असामान्य सौंदर्य प्रस्तुत करती है। वाल्टर पेटर उन्नीसवी सदी के गद्य का अन्तिम शैलीकार था।

---

१ Jeremy Bentham (१७४८-१८३२), २ Thomas Robert Malthus (१७६६-१८३४), ३ James Mill, ४ John Stuart Mill (१८०६-७३), ५ Thomas Babington Macaulay (१८००-५९), ६ Thomas Carlyle (१७९५-१८८१), ७. John Henry Newman (१८०१-९०), ८. John Ruskin (१८१९-१९००), ९ Walter Pater (१७३९-९४),

(१८२५) है। इसमें उसने अपने समकालीनो का शब्द-चित्रण किया है, स्पष्ट और निष्ठुर।

डि क्विन्सी[१], कॉबेट[२], और लैण्डर[३] भी प्राय उसी काल के निबन्धकार है। टॉमस डि क्विन्सी ने तो अपने 'कन्फेशन्स ऑफ ऐन इगलिश ओपियम ईटर' (१८२१) द्वारा अग्रेजी गद्य मे एक नया प्रयोग किया। इसमे उसने अफीमची के रूप में अपनी अनुभूतियो और स्वप्नो का चित्रण किया है। विलियम कॉवेट वडे दम का निबन्धकार है, जो वडे जोशो-खरोश से लिखता है, 'रूरल राइड्स' (१८३०) में उसने इग्लैण्ड के देहातो का जीता-जागता चित्र खीचा है। यह यात्रा उसने घोडे पर की थी। उसका वर्णन वडा स्वाभाविक है, जो कभी वासी नही हो सकता। वॉल्टर सैवेज लैंण्डर इन सबसे भिन्न है, शैली, शब्दावली, अनुभूति, सब मे अपने 'इमेजिनरी कनवरसेशन्स' (१८२४-२९) में उसने शाब्दिक सौंदर्य का एक राज्य खडा कर दिया।

उन्नीसवी सदी के पत्र-पत्रिकाओ में भी साहित्य का रस काफी छलका। इनमें 'दि जैन्टिलमैन्स मैगेज़ीन' (१७३१-१८६८) पोप के जमाने से ब्राउनिंग के काल तक चली। उन्नीसवी सदी के पहले दशक में ही प्रसिद्ध 'एडिन्वरा रिव्यू' निकली। उसका सम्पादक फ्रैंसिस जैफ्रे[४] था, जिसने रोमाटिक कवियो की अच्छी खबर ली। सिडनी स्मिथ[५] भी उस पत्रिका मे लिखता था। उसकी पैनी लेखनी का तीखापन असह्य हो जाता था। एडिन्बरा रिव्यू के जवाब मे 'टोरियो' ने १८०९ में अपनी 'क्वार्टरली रिव्यू' निकाली। स्कॉट का जामाता और चरितकार लोखार्ट[६] अपनी सवल लेखनी का उपयोग ब्लैक वुड्स एडिन्वरा मैगेज़ीन' के कॉलमो में करता था। इस पत्रिका का नाम अक्सर कीट्स की समालोचना मे लिखे लेखो के सम्बन्ध मे लिया जाता है।

चार्ल्स डारविन[७] वैज्ञानिक था। परन्तु अपने विचारो की स्पष्टता के कारण उसकी गद्य-शैली की चर्चा भी की जाती है। अपने 'ओरिजिन ऑफ दि स्पिसीज़' और 'दि डिसेन्ट ऑफ मैन' मे उसने वैज्ञानिक जटिलता से अलग अकृत्रिम गद्य का प्रयोग किया। डारविन के समर्थन में टी एच हक्स्ले,[८] ने भी स्पष्ट गद्य का सहारा लिया। वैज्ञानिको के अतिरिक्त राजनीतिक दार्शनिको का हाथ भी उन्नीसवी सदी के गद्य-निर्माण मे काफी रहा है। उन्होने राजनीति मे व्यक्तिगत चेतना और व्यापार मे स्वतत्रता का विचार रखा।

---

१ Thomas de Quincy (१७८५-१८५९), २ William Cobbet (१७६२-१८३५), ३ Walter Savage Lander (१७७५-१८६४), ४ Francis Jeffrey; (१७७३-१८६८); ५ Sydney Smith (१७७१-१८४५), ६ J G Lokhart; ७ Charles Darwin (१८०९-८२), ८ Thomas Henry Huxley (१८२५-९५)

चिन्तको मे एक जोनाथान एडवर्ड्स[1] था। १८वी सदी के मध्य की धर्म-शास्त्रीय गवेषणाओ मे उसका स्थान बहुत ऊँचा है। वह उदारवादी और कैल्विनवाद का विशिष्ट अग्रणी था। उसकी प्रारम्भिक चेतना आदर्शवादी और रहस्यवादी थी। अमेरिका के उस काल के लिखने वालो मे वह असामान्य है। बेजामिन फ्रैंकलिन[2] के नाम का राजनीति के अतिरिक्त अमेरिका के पत्र-पत्रिकाओ और पुस्तको के प्रकाशन से भी घना सबध है। प्रकाशन के क्षेत्र मे तो बेंजामिन फ्रैंकलिन ने युगान्तर उपस्थित कर दिया। वस्तुत अमेरिका की अनेक प्रकाशन शृखलाओ का आरम्भकर्त्ता वही है। उसकी क्रियाशीलता से साहित्य का कितना उपकार उस देश मे हुआ, आज उसका अन्दाज लगा सकना कठिन है।

फिलिप फ्रेनू[3] अमेरिका का पहला विशिष्ट कवि था। वह उस देश की दो साहित्यिक धाराओ—नव-क्लासिकवाद और रोमाण्टिक परपरा—के सन्धि-स्थल पर खडा है। वह अमेरिकी नेशनलिस्ट था और उसने देश की आजादी और फ्रेंच राज्यक्राति के पक्ष मे लिखा। जैफर्सन के प्रजातान्त्रिक दल का वह प्रबल समर्थक था। वह बुद्धिवादी और व्यग्यकार भी है। वाशिगटन-इरविंग[4] पहला अमेरिकन लेखक था, जिसकी इग्लैण्ड मे मुक्त कठ से प्रशसा हुई। उसमे रोमास और उससे भी बढ कर विनोद और हास्य का पुट है। उसकी प्रसिद्ध कृतियाँ 'ब्रेसब्रिज हॉल' (१८२२), 'दि अलहम्ब्रा' (१८३२) और 'ओलिवर गोल्डस्मिथ' (१८४९) हैं। उसका लिखा जनरल वाशिगटन का जीवन-चरित भी काफी प्रसिद्ध है। इरविंग वैसे तो रोमाटिक है, परन्तु उसका व्यग्य भी बडा प्रखर है।

ब्रियाण्ट[5] ने अमेरिकन कविता को उसकी पुरानी रूढियो से मुक्त किया। वह रोमान्टिक कवि और प्रकृति का पुजारी ('ए फॉरेस्ट हिम') था। वह साथ ही प्राचीन 'क्लासिकल परपरा' और आदर्शों का भक्त भी ('दि फ्लड ऑफ ईयर्स') था। 'न्यूयार्क ईवनिंग पोस्ट' के सम्पादक के नाते उसने काव्य-शैली पर काफी लिखा। वह आजादी और राष्ट्रीयता का प्रबल समर्थक था, परन्तु रोमान्टिक उदारवादिता की दृष्टि से। जेम्स फेनिमोर कूपर[6] उपन्यासकार था। उसने कुछ समुद्री जीवन की कहानियाँ भी लिखी। उसे ख्याति 'लैदर स्टॉकिंग टेल्स' से मिली। उसकी अन्य सुन्दर कृतियाँ निम्नलिखित हैं—'दि स्पाई' (१८२१), 'दि पायोनियर्स' (१८२३), 'दि पाइलेट' (१८२४)। उसने यूरोपियन और अमेरिकन दृश्यो का अकन बडी खूबी से किया है।

---

१ Jonathan Edwards (१७०३-५८), २ Benjamin Franklin (१७०६-९०), ३ Philip Freneau (१७५२-१८३२), ४ Washington Irving (१७८३-१८५९), ५ William Cullen Bryant (१७९४-१८७८), ६ James Fenimore Cooper (१७८९-१८५१)

बीसवी सदी

बीसवी सदी का गद्य, नाटक और उपन्यासो से भिन्न, अमित है, और उसका मूल्याकन अथवा उल्लेख आसान नही। जी के चैस्टर्टन,[१] हिलेयर बैलेंक,[२] मैक्स वीरवोहम,[३] लाइड जार्ज[४] विन्स्टन चर्चिल[५] आदि इस काल के कुछ प्रसिद्ध गद्यकार है। इनमे पहला अपने विचारो की शक्ति के लिए स्मरणीय होगा, दूसरा अपनी साहित्यिक ताजगी के लिए, तीसरा शैली की बारीकी के लिए और पिछले दोनो अपने व्याख्यानो की शालीनता के लिए। यह शालीनता चर्चिल के सस्मरणो मे फूट पडी है। इस काल की शैली का चमत्कार लिटन स्ट्रेची[६] के अमूल्य इतिहासाकनो मे देखा जा सकता है। 'एमिनेन्ट विक्टोरियन्स' (१९१८), 'क्वीन विक्टोरिया' (१९२१) और 'एलिजाबेथ एण्ड ऐसेक्स' (१९२८) उसकी शालीन कृतियाँ है।

: २१ :

अमेरिका में अंग्रेजी साहित्य

अग्रेजी साहित्य का मूल विकास इग्लैण्ड मे हुआ, जिसका सक्षिप्त विवरण पीछे दिया जा चुका है। इग्लैण्ड के उपनिवेशो मे भी अग्रेजी साहित्य फूला-फला। सयुक्त-राष्ट्र अमेरिका, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, आदि में भी, जहाँ अग्रेज बसे, उस साहित्य की बेल लगी। यहाँ उन सब देशो के साहित्यिक इतिहास का यह विवरण दे सकना स्थानाभाव के कारण किसी मात्रा मे सम्भव नही। परन्तु अग्रेजी की उन बाह्य शाखाओ के सम्बन्ध में सर्वथा चुप रह जाना भी उचित नही होगा। इससे उनमे से कम से कम एक—सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के साहित्य की ओर सकेत कर देना अनिवार्य है।

इग्लैण्ड के बाहर अग्रेजी साहित्य का सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्र उत्तरी अमेरिका ही बना भी। उसका अपना साहित्य काफी स्वतत्र और विशद भी है। यद्यपि हम यहाँ उनका सविस्तार उल्लेख नही कर सकेंगे। केवल सक्षिप्त, प्राय साकेतिक, उल्लेख ही करेंगे, मात्र चोटी के साहित्यकारो का।

वैसे तो सत्रहवी सदी से ही अमेरिका मे साहित्य की चर्चा होने लगी थी, १८वीं सदी में सही-सही उसे वहाँ प्रतिष्ठा मिली। प्यूरिटनो मे अगणी और अमेरिका के महान्

१ Gilbert Keith Chesterton (१८७४-१९३६), २ Hilaire Belloc (१८७०-१९५३), ३ Sir Max Beerbohm (ज० १८७२), ४ Llyd George (१८६३-१९४५), ५ Sir Winston Churchill (ज० १८७४), ६ Lyton Strachey (१८८०-१९३२)

निखरी-सुथरी है। ये उपन्यास एक प्रकार के सामाजिक सम्वेदनशील रूपक है। पाप की समस्या को उसने अपनी कृतियो मे हल करने का प्रयत्न किया। उसका प्रसिद्ध उपन्यास 'दि स्कारलेट लैटर' और अनेक अन्य कृतियाँ उस दृष्टिकोण से प्रस्तुत हुई। 'दि हाउस ऑफ दि सैवन गेबल्स' (१८५१) उसकी विशिष्ट कृतियो मे है। हाथार्न ने बहुत लिखा और बहुतो को प्रभावित किया। प्रसिद्ध उपन्यासकार हरमन मैल्विल[1] उन्ही प्रभावितो में था। पहले उसने अपनी समुद्री यात्राओ से प्रभावित हो तत्सम्बन्धी कहानियाँ लिखी, फिर रूढिवाद से सर्वथा मुक्त आध्यात्मिक उपन्यास लिखे। उसने प्रतीक रूप से विश्व का सत्य खोजा और परिणाम हुआ तीन उपन्यास—'मार्दी' (१८४९), 'मोबी-डिक' (१८५१) और 'पियर' (१८५२)। 'मोबी-डिक' उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। उसकी कविताओ का भी एक सग्रह छपा। वह हाथार्न का मित्र था उसकी शैली में दृश्यो को व्यक्त करने की वडी शक्ति है। वह सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल का वर्णन अद्भुत क्षमता से कर सकता है। 'मोबी-डिक' व्हेल मछली के शिकार का अकन करता है, परन्तु वस्तुत वह जीवन की बर्बरता और मानवता के सघर्ष का चित्रण है।

कविता के क्षेत्र मे क्या घर क्या बाहर हेनरी वाड्स्वर्थ लागफैलो[2] (१८०७-८२) का नाम वडे आदर से लिया जाता है। उसने सुन्दर छन्दोबद्ध अनुवाद के रूप मे ससार के अनूठे साहित्य-रत्नो की भेट अपने देश को तो की है, स्वय प्रबन्ध-काव्य लिखने में वह अप्रतिम था। सुन्दर-सरल शैली में वह आध्यात्मिक सत्य अनायास कह जाता था, जो सहज रीति से पाठको की जबान पर चढ जाता था। उसकी कृतियाँ निम्नलिखित है—'ए सॉम ऑफ लाइफ', 'दि विलेज ब्लैकस्मिथ', 'दि वार्निंग', 'दि आर्सिनल एट स्प्रिग फील्ड', 'दि बिल्डिग ऑफ दि शिप', 'इवैंजेलीनी', 'दि गोल्डन लीजेन्ड', 'दि साग ऑफ हिमावाथा', 'टेल्स ऑफ ए वेसाइड इन', 'पॉल रीवियर्स राइड', 'किंग रॉबर्ट ऑफ सिसिली', 'दि सागा ऑफ किंग ओलफ', 'दि न्यू इग्लैंड ट्रैजेडीज़', 'माइकेल ऐंजेलो, आदि। जेम्स रस्सल लोवेल[3] भी लागफेलो की ही भाँति अमेरिकन साहित्य का विशिष्ट निर्माता था। वह बडी सूझ का आलोचक था। उसी काल का ऑलिवर वेन्डेल होम्स[4] भी सुन्दर निवन्धकार था। उसकी शैली वडी मधुर थी। उसने लिखा भी पर्याप्त। लोवेल और होम्स दोनो का अमेरिकन गद्य प्रभूत ऋणी है।

उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध के अमरीकी साहित्य मे वाल्ट व्हिटमैन[5] के आकार की प्रतिभाएँ इनी-गिनी ही है। वह रूढियो का शत्रु था और अपनी कविता

---

१ Herman Melville (१८१९-९१), २. Henry Wadsworth Longfellow (१८०७-८२), ३ James Russell Lowell (१८१९-९१), ४ Dr Oliver Wendell Holmes (१८०९-९४), ५ Walt Whitman (१८१९-९२)

एडगर एलेन पो[१] अमेरिका का प्रकाण्ड साहित्य निर्माता हो गया है। उसका प्रभाव सारे अग्रेजी साहित्य पर पडा है। वह अभिनेता पिता और अभिनेत्री माता का पुत्र था। शिक्षा उसकी इग्लैण्ड मे हुई थी और साहित्य-साधना उसने पत्रकार के रूप में शुरू की थी। उसने कविता की व्याख्या की और साहित्य के सिद्धात तथा प्रयोग दोनो क्षेत्रो में अप्रतिम हुआ। उसने फ्रैंच प्रतीकवादियो और अमेरिकन कल्पनावादियो का समर्थन किया। उसके रोमान्स और बुद्धिवाद के सामजस्य ने गद्य-पद्यात्मक कृति 'यूरेका' को जन्म दिया। वह सम्पादक और समालोचक भी था। उसकी गद्य और पद्य की कृतियो ने संसार के साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला।

रॉल्फ वाल्डो इमर्सन[२] उन अमेरिकन प्रतिभाओ में था जिनका ससार के इतिहास में साका चला। वह उच्च कोटि का चिन्तक और निबन्धकार था। वह अग्रेजी साहित्य के प्रधान निबन्धकारो मे गिना जाता है। उसकी कृतियाँ 'नेचर' (१८३६), 'दि अमेरिकन स्कॉलर' (१८३७), 'दि डिविनिटी स्कूल ऐड्रेस' (१८३८), विशेष प्रसिद्ध है। उसमे अपने विचारो द्वारा दूसरे के विचारो को उद्वेलित कर देने की अद्भुत क्षमता थी। अग्रेज और अन्य रहस्यवादी लेखको से वह प्रभावित था। भाषा को उसने द्विधा साधक माना—आध्यात्मिक सत्य के प्रतीक तथा मूर्त्त भावना के वाहक रूप में। भाषा की सार्थकता उसके विचार मे इन दोनो स्थितियो की पूर्ण एकता द्वारा सत्य-शिव-सुन्दर के सृजन मे है। उसकी शैली पुष्ट, सक्षिप्त और दार्शनिक है। उसके निबन्ध और कविताएँ 'क्लासिक' बन गई। कलात्मक स्रष्टा के रूप में हैनरी डैविड थॉरो[३] का स्थान इमर्सन के निकट ही है। वह प्रकृतिवादी था और वैयक्तिक आध्यात्मिक स्वतत्रता म विश्वास करता था। उस दिशा मे उसने 'सक्रिय अवज्ञा' (पैस्सिव रैजिस्टैन्स) का प्रचार किया। इस पद का प्रयोग उसी ने पहले-पहल किया। महात्मा गाधी उससे बडे प्रभावित थे और उसी के शब्दो—पैस्सिव रैजिस्टैन्स का उन्होने अपने सत्याग्रही दृष्टिकोण से प्रयोग और प्रचार किया। वह उच्च कोटि का निबन्धकार था। उसकी कृतियाँ 'लाइफ विदाउट प्रिंसिपल' (१८६२), 'दि मेन वुड्स्' (१८६४), 'केप काड' (१८६५), 'ए यैंकी इन कैनेडा' (१८६६) आदि जानी हुई है। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति 'वाल्डेन ऑर 'लाइफ इन दि वुड्स्' है। उसकी कविताओ के भी दो सग्रह प्रकाशित है। प्रकृति-सम्बन्धी उसकी कविताएँ प्रसिद्ध है।

नेथेनियल हाथार्न[४] प्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार था। उसने अपने उपन्यासो मे आध्यात्मिक आचार-सम्मत यथार्थवाद की साधना की। शैली उसकी बडी

१ Edgar Allanpoe (१८०९-४९), २ Ralph Waldo Emerson (१८०३-८२), ३ Henry David Thoreau (१८१०-६२); ४ Nathaniel Hathorne (१८०४-६४)

के जीवन को उसी प्रकार अपनी कृतियो मे प्रतिबिम्बित किया जैसे मार्क ट्वेन ने पूर्व को, परन्तु निस्सदेह वह मार्क ट्वेन की निष्ठा और ईमानदारी को नही पा सकता, मार्क ट्वेन असाधारण ऊँचाई का साहित्यकार है।

एमिली डिकिन्सन[1] उस काल की सबसे बडी अमेरिकन कवियित्री है। उसकी कविताओ मे गहरी मात्रा की मौलिकता है। उसके लिरिक निष्ठा और माधुर्य के सुन्दर उदाहरण है। अमेरिकन यथार्थवाद के साहित्यिक आन्दोलन मे विलियम डीन हॉवेल्स[2] का स्थान ऊँचा है। उसने सामाजिक न्याय का सबल चित्र अपनी कृतियो में खीचा। पहले उसने कविताएँ लिखी फिर उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध सब कुछ और यह समूचा साहित्य प्रायः ८० जिल्दो मे प्रकाशित हुआ। हॉवेल्स का दृष्टिकोण अभी तक टॉलसटॉय का है। उसके उपन्यासो मे सबसे सुन्दर 'दि लैंदरवुड गॉड' (१९१६) है। यथार्थवादी साहित्यकार की सही परपरा गार्लेन्ड के बाद फ्रैंक नोरिस[3] ने कायम की। उसकी सुन्दर कृति 'दि ऑक्टोपस' उसी परपरा का विस्तार करती है। हेनरी जेम्स[4] भी यथार्थवाद के क्षेत्र में शैलीकार के रूप में विख्यात हो गया है। वह आलोचक और कृतिकार था और उपन्यास तथा कहानी को व्यंजना का सबसे ऊँचा साधन मानता था। उसकी कुछ कृतियो, आलोचना की दिशा में 'क्रिटिकल प्रिफेसेज', 'दि आर्ट ऑफ दि नॉवल', 'दि आर्ट ऑफ फिक्शन' है, और उपन्यास की दिशा मे 'दि पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी', 'दि स्वाएल्स ऑफ दि पोइन्टन', 'दि विंग्स ऑफ दि डव', 'दि ऐम्बैसेडर्स' और 'दि गोल्डन बोल' है। एडिथ वार्टन[5] ने जो हेनरी जेम्स द्वारा प्रभावित थी, अपने उपन्यासो में व्यक्ति और समाज के सामजस्य पर विचार किया। उसकी कृतियाँ 'इथन फ्रोम', 'दि एज ऑव इनोसेंस' उसके उसी दृष्टिकोण की परिचायक है।

क्लासिकल परपरा का सबसे महत्वपूर्ण कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट[6] है। वह अत्यन्त सरल और यथार्थवादी है। १९१३ में उसने अपने लिरिक 'ए ब्वाएज़ विल' प्रकाशित किया और बाद में अन्य कविताओ का सग्रह। उसमें अनुभूति का पुट पर्याप्त है और करुण वातावरण उसे विशेष आकृष्ट करता है।

थियोडोर ड्रीज़र[7] जैकलण्डन के-से उन अनेक साहित्यकारो में है जो व्यक्तिवाद से समाजवाद की ओर प्रस्थित हो चुके है। वह भी प्रकृतिवादी दल का रचयिता है। पहले उसने मनुष्य को उद्देश्यहीन और रूढियो का शिकार चित्रित किया। 'सिस्टर कैरी' और

---

१ Emily Dickenson (१८३०-८६), २ William Dean Howells (१८३७-१९२०), ३ Frank Norris (१८७०-१९०२), ४ Henry James (१८४३-१९१६), ५. Edith Warton ६ Robert Frost (ज० १८७५), ७ Theodore Dreiser (१८७१-१९४५)

मे उसने तुक, छन्द, रूप, सकेत, शैली सभी दिशाओ मे युगान्तर कर दिया। साहस के साथ उसने जीवन के नए विषयो को अपनाया। भौतिक जीवन के यौन पहलू, जनतात्रिक बन्धुत्व का विकास, वैयक्तिक चेतना का सामाजिक प्रसार मे निलय—ये सब उसकी कविताओ के दृष्टिकोण हुए। उसने अपनी गद्य-कृति 'डैमोक्रेटिक विस्टाज'(१८७१) द्वारा यथार्थ-वादी दृष्टिकोण से अमेरिकन जनतात्रिक सदेश की विफलता पर गहरी चोट की। 'लीव्ज ऑफ ग्रास' नामक अपना कविता-सग्रह लेकर १८५५ मे वह साहित्य-क्षेत्र मे उतरा। उसने लिखा—'सावधानी से मेरी कविताएँ पढो क्योकि वे रक्त-मास के बने मनुष्य को छूती है।' उसकी इमर्सन ने बडी प्रसशा की, यद्यपि लोवेल और होम्स उसके दृष्टिकोण को स्वीकार न कर सके। व्हिटमैन अमेरिका से अधिक यूरोप मे प्रसिद्ध हुआ, उसने कवि को सत्य का सवाहक माना जो प्रगति का अग्रदूत है और जिसके दर्शन की नीव पर प्रगति का निर्माण होता है। व्हिटमैन की कृतियाँ अनेक है, एक से एक महान्।

जिन अमेरिकन कवियो ने गृह-युद्ध के बाद की कुण्ठा को स्वीकार न कर आगे आशा की लौ देखी, उन्ही मे सिडनी लेनियर[1] भी था। दक्षिण के कवियो में वह विशिष्ट था। उसने अपनी कविताओ में सामाजिक आलोचना को स्थान दिया। सगीतज्ञ होने के कारण उसने कविता को प्राय गेय बना दिया। उसकी अनेक कविताएँ सामाजिक है—'कौर्न', 'देयर इज़ मोर इन दि मैन दैन देयर इज़ इन दि लैण्ड', 'दि रिवेन्ज ऑफ हमिश'। कुछ मधुर लिरिक निम्नलिखित है—'दि स्टरप कप', 'ए बैलेड ऑफ ट्रीज एण्ड दि मास्टर', 'ईवनिंग साग', 'साग ऑफ दि चटाहूची'।

ससार के साहित्य मे मार्क ट्वेन[2] (सेमुएल क्लेमेन्स,) का अपना स्थान है। व्यग्य और विनोद के क्षेत्र में वह प्राय अप्रतिम है परन्तु उसके अतिरिक्त गभीर साहित्य के विवेचन मे भी वह कुछ पीछे नही। वह वाग्मी भी असाधारण था। वैसे तो उसने अनेक रचनाएँ की परन्तु सुधार और आदर्शवादी रचनाएँ उसकी विशेष महत्व की है। मिसिसिपी घाटी के जीवन का जो चित्र उसने खीचा है, वह साहित्य मे अमिट है। 'टॉम सॉअर' (१८७६), 'लाइफ ऑन दि मिसिसिपी' (१८९३) और 'हकलबेरी फिन' (१८९४) उसकी कुछ असामान्य कृतियाँ है। इनका हास्य हृदय पर गहरी छाप छोड जाता है। इनमे से अन्तिम कृति जीवन की यथार्थताएँ, आदर्श, वैयक्तिक चरित और वातावरण का अद्भुत विश्लेषण करती है। उसने मानवतावाद का बडी सहृदयता से चित्रण किया और झूठ तथा कपट का भडाफोड किया। मार्क ट्वेन न केवल अमेरिका मे वरन् सारे यूरोप मे अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। उसमे कही रोमाटिक ब्रेट हार्ट[3] था, जिसने पश्चिम

१ Sidney Lanier (१८४२-८१), २. Mark Twain, (Samuel Clemens १८३६-१९१०); ३ Bret Harte (१८३६-१९०२)

के जीवन को उसी प्रकार अपनी कृतियो मे प्रतिविम्बित किया जैसे मार्क ट्वेन ने पूर्व को, परन्तु निस्सदेह वह मार्क ट्वेन की निष्ठा और ईमानदारी को नही पा सकता, मार्क ट्वेन असाधारण ऊँचाई का साहित्यकार है।

एमिली डिकिन्सन[१] उस काल की सबसे बडी अमेरिकन कवियित्री है। उसकी कविताओ मे गहरी मात्रा की मौलिकता है। उसके लिरिक निष्ठा और माधुर्य के सुन्दर उदाहरण है। अमेरिकन यथार्थवाद के साहित्यिक आन्दोलन मे विलियम डीन हॉवैल्स[२] का स्थान ऊँचा है। उसने सामाजिक न्याय का सवल चित्र अपनी कृतियो मे खीचा। पहले उसने कविताएँ लिखी फिर उपन्यास, कहानियाँ, निवन्ध सब कुछ और यह समूचा साहित्य प्राय ८० जिल्दो में प्रकाशित हुआ। हॉवैल्स का दृष्टिकोण अभी तक टॉलसटॉय का है। उसके उपन्यासो मे सबसे सुन्दर 'दि लैदरवुड गॉड' (१९१६) है। यथार्थवादी साहित्यकार की सही परपरा गार्लेन्ड के वाद फ्रैंक नोरिस[३] ने कायम की। उसकी सुन्दर कृति 'दि ऑक्टोपस' उसी परपरा का विस्तार करती है। हेनरी जेम्स[४] भी यथार्थवाद के क्षेत्र में शैलीकार के रूप में विख्यात हो गया है। वह आलोचक और कृतिकार था और उपन्यास तथा कहानी को व्यजना का सबसे ऊँचा साधन मानता था। उसकी कुछ कृतियो, आलोचना की दिशा मे 'क्रिटिकल प्रिफेसेज', 'दि आर्ट ऑफ दि नॉवल', 'दि आर्ट ऑफ फिक्शन' है, और उपन्यास की दिशा में 'दि पोर्ट्रेट ऑफ ए लेडी', 'दि स्पाएल्स ऑफ दि पोइन्टन', 'दि विंग्स ऑफ दि डव', 'दि ऐम्वैसेडर्स' और 'दि गोल्डन वोल' है। एडिथ वार्टन[५] ने जो हेनरी जेम्स द्वारा प्रभावित थी, अपने उपन्यासो में व्यक्ति और समाज के सामजस्य पर विचार किया। उसकी कृतियाँ 'इथन फ्रोम', 'दि एज ऑव इनोसेंस' उसके उसी दृष्टिकोण की परिचायक है।

क्लासिकल परपरा का सबसे महत्वपूर्ण कवि रॉवर्ट फ्रॉस्ट[६] है। वह अत्यन्त सरल और यथार्थवादी है। १९१३ मे उसने अपने लिरिक 'ए व्वाएज विल' प्रकाशित किया और वाद में अन्य कविताओ का सग्रह। उसमे अनुभूति का पुट पर्याप्त है और करुण वातावरण उसे विशेष आकृष्ट करता है।

थियोडोर ड्रीजर[७] जैकलण्डन के-से उन अनेक साहित्यकारो में है जो व्यक्तिवाद से समाजवाद की ओर प्रस्थित हो चुके है। वह भी प्रकृतिवादी दल का रचयिता है। पहले उसने मनुष्य को उद्देश्यहीन और रूढियो का शिकार चित्रित किया। 'सिस्टर कैरी' और

---

१ Emily Dickenson (१८३०-८६); २. William Dean Howells (१८३७-१९२०); ३ Frank Norris (१८७०-१९०२); ४. Henry James (१८४३-१९१६), ५. Edith Warton ६ Robert Frost (ज० १८७५), ७ Theodore Dreiser (१८७१-१९४५)

'जेनी गरहार्ट' उसी के नमूने है। 'दि फिनेन्शियर' और 'दि टाइटन' मे उसने 'सुपरमैन' की शालीनता स्थापित की परन्तु 'ऐन अमेरिकन ट्रैजेडी' (१९२५) में ड्रीज़र समाजवाद की ओर स्पष्ट रूप से बढ गया। रॉबिन्सन जैफर्स[1] आधुनिक अमेरिकन काव्य-क्षेत्र का विशिष्ट कवि माना जाता है। उसकी कल्पना-शक्ति उतनी ही सबल है, भावनाओ की गति जितनी आकर्षक। जैफर्स नितान्त व्यक्तिवादी है। शेरवुड ऐन्डरसन[2] अभिव्यजनावादी कहानीकार है जो सामाजिक व्यवस्था का प्रबल विरोधी है। उसके उपन्यासो के पात्र अधिकतर आत्मकथात्मक हैं। उसकी कृतियो में यौन के प्रति अमात्रिक आकर्षण व्यक्त हुआ है। टॉमस वोल्फ[3] के हीरो भी प्राय उसी प्रकार के हैं जैसे ऐन्डरसन के पात्र, आत्म-चरितात्मक, जो अपने भीतर की दुर्बलताओ से निरन्तर सघर्ष करते है। ऐडविन आर्लिंगटन रॉबिन्सन[4] इस सदी का सबसे बडा अमेरिकन कवि माना जाता है। उसने अपनी कविताओ में मनुष्य के विश्व से सम्बन्ध को व्यक्त किया। इसी परपरा का यूजीन ओ'नील[5] भी है। वह पुरानी देव-भावना के मिट जाने और नई विज्ञान व्यवस्था की सामाजिक असफलता से उद्विग्न हो उठा है। उसने कविता के अतिरिक्त अनेक नाटक भी लिखे और उनमें उसने रोमान्टिक यथार्थवाद का प्रयोग किया। १९३६ में उसे नोवेल पुरस्कार मिला। इधर का वह सब से बडा अमेरिकन नाट्यकार है।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे[6] अमेरिका के सुन्दरतम उपन्यासकारो में है। शैली का तो वह असाधारण उस्ताद है और उसका प्रभाव आज के गद्यकारो पर गहरा पडा है। उसने युद्ध में गति और खतरे का विशेष अध्ययन किया है। उसके उपन्यासो में इनका विवेचन बडी खूबी से होता है। पिछले स्पेनी गृहयुद्ध सम्बन्धी उसका एक ड्रामा और अद्भुत कहानियाँ 'दि फिफ्थ कॉलम एण्ड दि फर्स्ट फॉटी फाइव स्टोरीज़' (१९३८) एकत्र छपे हैं। उनमे भी गति और खतरे का निर्वाह भरपूर हुआ है। उसका 'फेयर-वैल टु आर्म्स' अनेक लोगो के विचार में सुन्दरतम अमेरिकन युद्ध-उपन्यास है। उसका उसी महत्व का दूसरा उपन्यास 'फॉर हूम दि बैल टॉल्स' है। दोनो ससार के आधुनिक साहित्य में अपना स्थान रखते हैं।

अमेरिका मे भी प्रथम महासमर के बाद राजनीतिक और आर्थिक उपन्यास विशेष-रूप से लिखे जाने लगे, उपटन सिनक्लेयर[7] ने अद्भुत योग्यता और क्षमता से कारखानो और उद्योगो का जीवन चित्रित किया। 'दि जगल' से लेकर 'किंग कोल', 'दि गज स्टेप', 'ऑइल'

---

१ Robinson Jeffers (ज० १८८७), २. Sherwood Anderson (१८७६-१९४१), ३ Thomas Wolfe (१९००-३८), ४ Edwin Arlington Robinson (१८६९-१९३५); ५. Eugen o' Neill (ज० १८८८); ६ Ernest Hemingway (ज० १८९८), ७ Upton Sinclair (ज० १८७८)

'बोस्टन', 'दि फ्लियुर किंग' आदि में, विविध अमेरिकन जीवन की आलोचना हुई है। और इधर हाल मे तो प्रथम महासमर और दूसरे महासमर के अन्त के बीच के जीवन पर ६ उपन्यासो की सीरीज़ मे उपटन ने ससार के साहित्य को एक नई सम्पदा दी है। रूढिवादिता, मिथ्यावाद, मध्यवर्गीय गाँव के जीवन पर अपने उपन्यासो मे उत्कट् व्यग्य करने वाला समर्थ उपन्यासकार सिनक्लेयर लेविस[1] था जो इटली मे मरा। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ, 'बैबिट' के अतिरिक्त 'ऐरोस्मिथ' (१९२५) और 'डाडस्वर्थ' (१९२९) है। वह पहला अमेरिकन था जिसे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। व्यग्य के क्षेत्र मे रिंग लार्डनर[2] लेविस से भी बढ गया है। उसे इस सदी का सुन्दरतम व्यग्य शैलीकार माना जाता है। उसकी निम्नलिखित कृतियाँ निम्नवर्ग का जीवन प्राय उसी की जुबान में चित्रित करती है—'यू नो मी ऑल' (१९१६), 'दि लव नेस्ट एण्ड अदर स्टोरीज़' आदि।

जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो में जॉन स्टीनबैक[3] का स्थान बहुत ऊँचा है। वह उपन्यास क्षेत्र का सफल कलावन्त है। वर्तमान उपन्यासकारो मे यथार्थवादी प्रकृतिवाद की कला का वह अप्रतिम शैलीकार है। उसकी कुछ कृतियो को ससार के आलोचको से बडा आदर मिला है। वे ये है—'दि कप ऑफ गोल्ड' (१९२९), 'टु ए गॉड अननोन' (१९३३), 'टोरटिला फ्लैट' (१९३५), 'इन डयूवियस बैले' (१९३६), 'ऑन माइस एण्ड मेन' (१९३७), 'दि ग्रेप्स ऑफ राथ' (१९३९), 'दि मून इज़ डाउन' (१९४२)।

कार्ल सैण्डवर्ग[4] फास्ट के अतिरिक्त वर्तमान अमेरिकन कवियो में शायद सब से वृद्ध है। वह व्हिटमैन की परपरा में है। १९१४ में वह अति साधारण पुरुष, बर्बर, कल्पना और सौन्दर्य का अप्रतिम प्रतिनिधि बनकर अमेरिकन काव्य-क्षेत्र में उतरा। उद्योग और खेती सम्बधी काव्य-क्षेत्र का वह असामान्य विवेचक है। इस दिशा में उसकी 'शिकागो पोएम्स' (१९१६) कॉर्नहस्कर्स' (१९१८) और 'स्मोक एण्ड स्टील' (१९२०) प्रमाण है।

ऐलेन ग्लास्गो[5] दक्षिण की स्थानीयता का उपन्यासकार है। उसने गृह-युद्ध से आज तक के वर्जीनिया के बदलते जीवन का चित्रण किया है। उसके उपन्यास समस्या-उपन्यास है। पर्ल बक[6] जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो में बहुत ऊँचा स्थान रखती है। उसके अनेक उपन्यास ससार के श्रेष्ठतम आधुनिक उपन्यासो मे गिने जाते है। उनमें उसने अमेरिका का नही बल्कि चीन के साधारण वर्ग का जीवन व्यक्त किया है। पूर्वात्य जीवन

---

१ Sinclair Lewis (१८८५-१९५१), २. Ring Lardner ३. John Steinbeck (ज० १९०२), ४ Carl Sandburg (ज० १८७८); ५ Ellen w (१८७४-१९४५), ६ Pearl Sydenstricker Buck (ज० १८९२)

'जेनी गरहार्ट' उसी के नमूने है। 'दि फिनेन्शियर' और 'दि राइटन' में उसने 'सुपरमैन' की शालीनता स्थापित की परन्तु 'ऐन अमेरिकन ट्रैजेडी' (१९२५) में ड्रीज़र समाजवाद की ओर स्पष्ट रूप से बढ गया। रॉबिन्सन जैफर्स[1] आधुनिक अमेरिकन काव्य-क्षेत्र का विशिष्ट कवि माना जाता है। उसकी कल्पना-शक्ति उतनी ही सबल है, भावनाओ की गति जितनी आकर्षक। जैफर्स नितान्त व्यक्तिवादी है। शेरवुड ऐन्डरसन[2] अभिव्यजनावादी कहानीकार है जो सामाजिक व्यवस्था का प्रबल विरोधी है। उसके उपन्यासो के पात्र अधिकतर आत्मकथात्मक है। उसकी कृतियो में यौन के प्रति अमात्रिक आकर्षण व्यक्त हुआ है। टॉमस वोल्फ[3] के हीरो भी प्राय उसी प्रकार के है जैसे ऐन्डरसन के पात्र, आत्म-चरितात्मक, जो अपने भीतर की दुर्बलताओ से निरन्तर सघर्ष करते है। ऐडविन आरलिंगटन रॉबिन्सन[4] इस सदी का सबसे बडा अमेरिकन कवि माना जाता है। उसने अपनी कविताओ में मनुष्य के विश्व से सम्बन्ध को व्यक्त किया। इसी परपरा का यूजीन ओ'नील[5] भी है। वह पुरानी देव-भावना के मिट जाने और नई विज्ञान व्यवस्था की सामाजिक असफलता से उद्विग्न हो उठा है। उसने कविता के अतिरिक्त अनेक नाटक भी लिखे और उनमें उसने रोमान्टिक यथार्थवाद का प्रयोग किया। १९३६ में उसे नोबेल पुरस्कार मिला। इधर का वह सब से बडा अमेरिकन नाट्यकार है।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे[6] अमेरिका के सुन्दरतम उपन्यासकारो में है। शैली का तो वह असाधारण उस्ताद है और उसका प्रभाव आज के गद्यकारो पर गहरा पडा है। उसने युद्ध में गति और खतरे का विशेष अध्ययन किया है। उसके उपन्यासो में इनका विवेचन बडी खूबी से होता है। पिछले स्पेनी गृहयुद्ध सम्बन्धी उसका एक ड्रामा और अद्भुत कहानियाँ 'दि फिफ्थ कॉलम एण्ड दि फर्स्ट फॉर्टी फाइव स्टोरीज़' (१९३८) एकत्र छपे है। उनमे भी गति और खतरे का निर्वाह भरपूर हुआ है। उसका 'फेयर-वैल टु आर्म्स' अनेक लोगो के विचार में सुन्दरतम अमेरिकन युद्ध-उपन्यास है। उसका उसी महत्व का दूसरा उपन्यास 'फॉर ह्रूम दि वैल टॉल्स' है। दोनो ससार के आधुनिक साहित्य में अपना स्थान रखते है।

अमेरिका में भी प्रथम महासमर के बाद राजनीतिक और आर्थिक उपन्यास विशेष-रूप से लिखे जाने लगे, उपटन सिनक्लेयर[7] ने अद्भुत योग्यता और क्षमता से कारखानो और उद्योगो का जीवन चित्रित किया। 'दि जगल' से लेकर 'किंग कोल', 'दि गज स्टेप', 'ऑइल'

---

१ Robinson Jeffers (ज० १८८७), २. Sherwood Anderson (१८७६-१९४१), ३. Thomas Wolfe (१९००-३८), ४ Edwin Arlington Robinson (१८६९-१९३५), ५ Eugen o' Neill (ज० १८८८), ६ Ernest Hemingway (ज० १८९८), ७ Upton Sinclair (ज० १८७८)

'बोस्टन', 'दि फ्लिुयर किग' आदि में, विविध अमेरिकन जीवन की आलोचना हुई है। और इधर हाल मे तो प्रथम महासमर और दूसरे महासमर के अन्त के बीच के जीवन पर ६ उपन्यासो की सीरीज़ मे उपटन ने ससार के साहित्य को एक नई सम्पदा दी है। रूढिवादिता, मिथ्यावाद, मध्यवर्गीय गाँव के जीवन पर अपने उपन्यासो में उत्कट् व्यग्य करने वाला समर्थ उपन्यासकार सिनक्लेयर लेविस[१] था जो इटली में मरा। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ, 'वैबिट' के अतिरिक्त 'ऐरौस्मिथ' (१९२५) और 'डाडस्वर्थ' (१९२९) है। वह पहला अमेरिकन था जिसे साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार मिला था। व्यग्य के क्षेत्र मे रिंग लार्डनर[२] लेविस से भी बढ गया है। उसे इस सदी का सुन्दरतम व्यग्य शैलीकार माना जाता है। उसकी निम्नलिखित कृतियाँ निम्नवर्ग का जीवन प्राय उसी की जुबान में चित्रित करती है—'यू नो मी ऑल' (१९१६), 'दि लव नेस्ट एण्ड अदर स्टोरीज़' आदि।

जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो में जॉन स्टीनबैक[३] का स्थान बहुत ऊँचा है। वह उपन्यास क्षेत्र का सफल कलावन्त है। वर्तमान उपन्यासकारो मे यथार्थवादी प्रकृतिवाद की कला का वह अप्रतिम शैलीकार है। उसकी कुछ कृतियो को ससार के आलोचको से बडा आदर मिला है। वे ये है—'दि कप ऑफ गोल्ड' (१९२९), 'टु ए गॉड अननोन' (१९३३), 'टोरटिला फ्लैट' (१९३५), 'इन ड्यूवियस बैले' (१९३६), 'ऑन माइस एण्ड मेन' (१९३७), 'दि ग्रेप्स ऑफ राथ' (१९३९), 'दि मून इज़ डाउन' (१९४२)।

कार्ल सैण्डबर्ग[४] फास्ट के अतिरिक्त वर्तमान अमेरिकन कवियो में शायद सब से वृद्ध है। वह व्हिटमैन की परपरा में है। १९१४ में वह अति साधारण पुरुष, बर्बर, कल्पना और सौन्दर्य का अप्रतिम प्रतिनिधि वनकर अमेरिकन काव्य-क्षेत्र में उतरा। उद्योग और खेती सम्बधी काव्य-क्षेत्र का वह असामान्य विवेचक है। इस दिशा में उसकी 'शिकागो पोएम्स' (१९१६) कॉर्नहस्कर्स' (१९१८) और 'स्मोक एण्ड स्टील' (१९२०) प्रमाण हैं।

ऐलेन ग्लास्गो[५] दक्षिण की स्थानीयता का उपन्यासकार है। उसने गृह-युद्ध से आज तक के वर्जीनिया के वदलते जीवन का चित्रण किया है। उसके उपन्यास समस्या-उपन्यास है। पर्ल वक[६] जीवित अमेरिकन उपन्यासकारो में वहुत ऊँचा स्थान रखती है। उसके अनेक उपन्यास ससार के श्रेष्ठतम आधुनिक उपन्यासो में गिने जाते है। उनमें उसने अमेरिका का नही बल्कि चीन के साधारण वर्ग का जीवन व्यक्त किया है। पूर्वात्य जीवन

---

१ Sinclair Lewis (१८८५-१९५१), २ Ring Lardner ३ John Steinbeck (ज० १९०२); ४ Carl Sandburg (ज० १८७८); ५ Ellen w (१८७४-१९४५), ६ Pearl Sydenstricker Buck (ज० १८९२)

का इतना सच्चा अध्ययन शायद किसी पाश्चात्य उपन्यासकार ने नही किया है। चीनी जीवन और सघर्ष का जितना सही और सरस अकन उसने किया है अन्यत्र कही उपलब्ध नही। उसके अनेक प्रथम श्रेणी के उपन्यासो में महान् 'गुड अर्थ' और 'ड्रैगन सीड' हैं। उसने १९३८ में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

पद्य मे फास्ट, सैण्डवर्ग और स्टिफेन विन्सेन्ट बैनेट[1] तथा गद्य मे लार्डनर, हेमिग डॉस पैसस[2] और स्टिफेन विन्सेन्ट बैनेट अमेरिकन साहित्य के निकटतम 'क्लासिकल' (वर्तमान) युग के उत्तरोत्तर प्रतिनिधि हैं। बैनेट ने केवल वस्तुओ के कारण पर ही नही उनके महत्व पर भी जोर दिया। अपनी कहानियो, उपन्यासो और कविताओ में उसने सामाजिक दृष्टिकोण का मानवतावादी सहृदयता से अकन किया है।

१. Stephen Vincent Benet (१८९८ १९४३), २ Dos Passos

२. अरबी साहित्य

: १ :

इस्लाम से पूर्व

(६३२ तक)

अरबी भाषा, साहित्य और विज्ञान का विस्तार बडा है। आज भी पश्चिमी एशिया और मध्यपूर्व तथा उत्तरी अफ्रीका की अनेक जातियाँ अरबी ही बोलती है। अरबी साहित्य अधिकतर इस्लाम की उपज है। अरबी ने लिया सर्वत्र से, परन्तु स्वय वह सर्वथा सैमेटिक ही बनी रही।

अरब के प्राचीन अभिलेखो (सातवी सदी ई० पू० से चौथी सदी ईस्वी) से कुछ ऐसी जबानो का पता चलता है जो उत्तर की थी तथा दक्षिणी लिपि में लिखी जाती थी, और जो आज मर चुकी है। जिस अरबी भाषा और साहित्य का आज प्राधान्य है और जिसने सदियो ख्याति पाई है वह कुरैश जाति की बोली थी। वही सास्कृतिक विचारो, धार्मिक चिंतन और साहित्यिक व्यजना का वाहन बनी, परन्तु जो भाषा हजरत मुहम्मद का आदर्श बनी, वह एक मिली-जुली जवान थी जिसे इस्लाम-पूर्व के कवियो ने अपने विचारों और गायनो का वाहन बनाया था।

प्राचीन कविता

प्राचीनतम कवियो मे अनेक नाम गिने जाते है। कुछ ये हैं—इम्रू अ-ल कस[१], आबिद इब्न-अल-अब्रास[२], अल्कमा[३], अम्र इब्न-कमी-आह[४], अल-मुहाल्हिल[५], अम्र इब्न-कुल्सूम[६], अल-हारिस इब्न-हिल्लिजा[७], तरफा इब्न-अल'अब्द[८], अल-मुतलम्मिस[९], अल-अश'अस[१०] और कवियित्री जलीलाह[११], कुछ उत्तरी प्रागिस्लाम कवियो के नाम है—औस इब्नहजार[१२] जुहैर, इब्न अबी-सुल्मा[१३], अल-हुताया[१४], काव इब्न जुहैर[१५] और अल नाबिगाह[१६]। अरबी साहित्य का, जैसा कहा जा चुका है, विस्तार बडा है और यद्यपि उसमे

---

१ Imru' Al-Qays (ल० ५००), २ 'Abid Ibn-Al-Abras (ल० ५००), ३ Alqamah, ४ 'Amr Ibn-Qami 'Ah (ज० ४८०), ५ Al-Muhalhil ६ 'Amr Ibn-Qulthum, ७ Al-Harith Ibn-Hillizah, ८ Tarafah Ibn-Al 'Abd, ९ Al-Mutlammis, १० Al-Ash'th, ११ Jalilah, १२ Aws Ibn-Hajar; १३ Zuhayr Ibn-Abi-Sulma, १४ Al-Hutay 'Ah, १५ Ka'b Ibn-Zuhayr, १६ Al-Nabighah,

कुरान

'कुरान' एक साहित्यिक युग का अन्त और दूसरे का आरम्भ करता है। जीवित, साहित्यिक आवाज के रूप में इसका प्रागिस्लामी साहित्य से बडा सामजस्य है। इसमें वर्णित बहिश्त के चित्र सर्वथा पार्थिव आपानको के है, जिनके वर्णन मे प्राचीन काफिर (प्रागिस्लामी) शायरो ने कलम तोड दी थी। कुरान के आरम्भ के 'सूराओं' (अध्यायो) मे कयामत का वर्णन गजब की मार्मिकता, शक्ति और ओज से हुआ है। साहित्यिक शैली की दृष्टि से कुरान ने पूर्ण विकसित प्राचीन काव्य-शली को छोड कर समकालीन पेशेवर धार्मिक तुकबन्दी की गद्यात्मक तर्ज़ 'सर्ज' को अपनाया। वस्तुत प्राचीन और सम्प्रति के सम्मिलन के लिए कोई अन्य साहित्यिक कडी भी उपलब्ध न थी। उस अधकार के युग मे जब अरबो के पास यहूदियो और ईसाइयो की रचनाओ के मुकावले का कोई साहित्य न था, 'कुरान' एक महान् चुनौती बन कर आया। उस काल का वह प्रमुख साहित्य और साहित्यिक शैली प्रस्तुत करता है।

मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कुरान तत्कालीन अरबी जगत् का असाधारण दर्पण है। इस अर्थ में तब तक के अरबी साहित्य मे इस असामान्य रचना के सदृश कुछ भी न था।

उसमे सीरिया, ग्रीस, अबीसीनिया और ईरान के साथ कुरैशी व्यापार का जिक्र है, और वहाँ जाने वाले अरबी कारवाँनो का। दक्षिण अल यमन को जाडो और उत्तर सीरिया को गर्मियो मे जाने वाले कुरैश खान्दान के सार्थवाहो (कारवाँ) को घने बन्धु भाव से वह प्रेरित करता है। आर्थिक सम-सामयिक स्थिति का तो उसमे विस्तृत उद्घाटन हुआ है, विशेषकर सूदखोरी का। सूदखोरो पर मुहम्मद साहब[1] की चोट खासी पडी है। धर्म के क्षेत्र मे कुरान तत्कालीन अरब की मूर्त्तिपूजा, आचार, विश्वास आदि पर प्रभूत प्रकाश डालता है। वस्तुत वह प्रागिस्लामी साहित्य-शैलियो का भी आज हमारा प्रधान ज्ञान-स्रोत है। यदि कुरान न होता तो लैटिन से निकली अनेक रोमान्स भाषाओ की ही भाँति अरब की बोलियाँ भी भाषाओ का रूप धारण कर लेती। कुरान ने जहाँ अरबी जनता को एक बन्धुत्व की शृखला मे बाँधा, वही उसने वहाँ की विविध बोलियो को भी एक सूत्र मे नथ कर अरबी भाषा मे लय कर दिया। अरबो मे एक धर्म के साथ एक भाषा का भी प्राधान्य हुआ। मध्य युग मे उधर की दुनिया मे अरबी शिष्ट साहित्यिक व्यजना की भाषा थी। नवी और बारहवी सदियो के बीच अरबी मे रची वैज्ञानिक, दार्शनिक और धार्मिक कृतियो की उधर की कोई भाषा बराबरी नही कर सकती। मानव जाति की वर्णमालाओ मे अरबी से केवल लैटिन का विस्तार बडा है। वरन् जितनी भाषाओ की लिपि अरबी वर्णमाला ने प्रस्तुत की है, उतनी और मे नही।

१ Mohammad Prophet (५७०-६३२)

कुरान की मक्का सबधी पहली नब्बे 'सूराएँ' गजब का महत्त्व रखती है। लघु, तीव्र, गहरी चोट करने वाली इन सूराओ को नबी जैसे इलहामी प्रेरणा से अनुप्राणित करता है। इनमे गजब की गति है, गजब की रवानी। शब्द-शब्द मे ज्वाला है। पद-पद मे तूफान छिपा है। जो बोलने वाले की आवाज मे भडक उठता है। विद्रोह, मूर्त्ति पूजा, दंड, एकेश्वरवाद पर साहित्य की एक अनजानी शैली गढती सी उसकी वाणी गूंज उठती है। फिर धीरे-धीरे मदीना को हिजरत के बाद वाणी धीमी हो चलती है। ६२२ से ६३२ तक का काल, नई मदीना की, सूराओ का है। इनमे घोपणाएँ और अनुशासन हैं। इलहामी आवाज़ की लिरिक अर्धगेयता अब समाप्त हो जाती है और उसका स्थान प्रबन्ध-रूप, व्याख्यान और राजनीतिक सिद्धात ले लेते हैं।

धीरे-धीरे काव्य-जनीन बोली कुरान के पिछले स्तरो में एक साहित्यिक गद्यशैली का जन्म होता है। मुहम्मद साहब के तीसरे उत्तराधिकारी उसमान (६४४-५६) के खिलाफत काल में कुरान का एक पाठ प्रस्तुत किया गया, यद्यपि उसका आज का रूप ९३३ में प्रस्तुत हुआ। धर्म के क्षेत्र मे अरब मे तो कुरान ने एक क्राति मचा ही दी, अरबी व्याकरण, शब्दकोष, इतिहास, अनुवृत, धर्मशास्त्र आदि के निरूपण में भी उसका प्रभाव दूरगामी सिद्ध हुआ।

क़ुरान की शैली प्रागिस्लामी तुकान्त गद्य की थी और उसकी भाषा सातवी सदी की मक्का की। कुरान में उपमाओ की भरमार है। साथ ही अमसाल (कहावतो) का भी प्रभूत उपयोग हुआ है। ऐतिहासिक प्रसग का प्रयोग अल्लाह की ताकत जाहिर करने और मनुष्य तथा राष्ट्रो को सावधान करने के लिए हुआ है। अरबी और अन-रबी, मुस्लिम और गैर-मुस्लिम दोनो ने कुरान की हृदयस्पर्शी और प्रभावोत्पादक शैली की अमित शक्ति समान रूप से स्वीकार की है। इसी कारण कुरान की भाषा, शैली, व्याकरण और वक्तृत्त्व-शक्ति का अध्ययन प्रखरमति आलोचको का इष्ट हो गया। कुरान का इस्लाम के विस्तार और साधारण मुस्लिम के वैयक्तिक आचार-गठन में प्रभूत योग रहा है। कुरान के बिना हम इस्लाम की स्थिति को सोच नही सकते। इसके बिना इस्लाम निराधार हो जायेगा। क्योकि उसका आदि स्रोत यही है। यही उसका प्रमाण है, एकमात्र शब्द-प्रमाण। उन्नीसवी सदी मे यूरोपियन पडितो ने कुरान का अध्ययन शुरू किया और कुछ यूरोपियन अनुवाद प्रस्तुत हुए। परन्तु मूल का असर अनुवाद मे कहाँ तक आ सकता था, विशेष कर अरबी मूल का, जिसमे ध्वनि का इतना प्राधान्य है, जो शब्द-शब्द पर पुलक और आँसू उत्पन्न करता है।

ईराक़ मे हुआ जहाँ नये धर्म की जडें इतनी मजबूत न हो सकी थी। जब-जब धर्मशास्त्रियो ने इसे दबाना चाहा, तब-तब चारण और कवि दमिश्क और दूसरे राज-दरबारो में चले गये, जहाँ उनका खुला स्वागत हुआ। इन पनाह लेने वाले कवियो में प्राचीन अल-फरज़दाक जरीर और ईसाई अल-अख़तल थे। उन्होने अल-हीरा और गस्सानी दरबारो की यादें ताजी कर दी और दमिश्क पहुँच कर तो उन्होने प्राचीन ग़ैर-मुसलमान कवियो का अनुकरण करना शुरू कर दिया। विशेष कर अल-अख़तल ने, जो अब्बल मलिक (६८५-७०५) का राजकवि हो गया था। उसके और जरीर के बीच व्यग्य-स्पर्द्धा ('मुहाजाह') और साहित्यिक विवाद (नका'इद) हुए।

घुमक्कड-समाज की नई नागरिक व्यवस्था ने अरबी कसीदे की बनावट में खासा फर्क डाला। पुराने ढर्रे बदल गये। ईरानी और ग्रीक शिष्ट कुलो की भाँति मदीने के सभ्रांत कुलो मे भी गायक रखे जाने लगे। 'नसीब', जो कभी कसीदा का ही अग था, अब प्रणयपरक लिरिक बन गया। उसको यह रूप देने में सबसे अधिक हाथ 'उमर-इब्न अबी-रबीया'[१] का था। उसकी कविता मे गजब का लोच और नज़ाकत थी। उसकी सादगी और मृदुता ने सुनने वालो के मर्म को छू लिया। उसने करुण और आनन्द रस के स्रोत बहा दिये। उसके दीवान से प्रकट है कि उसका अधिकतर जीवन कामिनियो के पदानुसरण में बीता। वह मक्का के एक रईस अरब पिता और ईसाई माता का पुत्र था।

उससे कुछ ही पहले 'मजनू'[२] हुआ था। जिसका लैला के प्रति प्रेम अमर हो गया है। मजनू हाड-मास का आदमी था, सर्वथा काल्पनिक नही। उसका वास्तविक नाम कैस-अल-मुलव्वा था। स्वय ख़लीफा अल-वलीद द्वितीय अपने खाली वक्त को (और उसे खाली वक्त की कमी न थी) आपानकपरक कविताओ से भरा करता था। गोशे तनहाई को भरने वाली शायरी और उसकी बुनियाद शराब का पीना इतना बढ गया कि जमाने ने विप्लव से उसका प्रतिकार किया। वह विप्लव वास्तव में एक नये उदय होते युग की भूमिका था जिसने उमय्या खिलाफत को शीघ्र निगल लिया।

: ३ :

नया युग

(७५०—८३३)

उठ कर बगदाद आ गई (७६२)। सारा साहित्य, सारी कला, सारा चिन्तन तब उसी नई दिशा की ओर मुडा, इस्लाम और मुसलमानी सस्कृति की नयी राजधानी बगदाद की ओर। बगदाद अब प्रत्येक दिशा मे अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करने लगा। उठते हुए नये अरबी साहित्य को ग्रीक और ईसाई विचारो का, यहूदी और ईरानी चिन्तनो का, अरमई, भारतीय आदि धाराओ का योग मिला। साहित्य एक नई दिशा की ओर चला।

भारतीय प्रभाव

अब्बासी खलीफा अल-मन्सूर (मृ ७७५) ईसाई नेस्तोरी वैद्यो का प्रबल सरक्षक था। उसने उनको अपने धर्मोपदेश करने की अनुमति तो दे ही दी। ग्रीक, सीरियक और फारसी वैज्ञानिक कृतियो मे भी उसने अपना गहरा अनुराग प्रदर्शित किया। परन्तु खलीफा अल-मामून (मृ ८३३) तो इस दिशा में मन्सूर से भी बढ गया। ग्रीक प्रभाव अपनी अरबी मूर्धा पर भी तभी चढा। फिर भी कुछ काल बाद ग्रीक सौंदर्य-साधना से ऊब और हट कर अरब-मेधा फारस की ओर फिरी। कुछ ही काल बाद भारत ने भी अरब को अपनी प्राचीन और सम-सामयिक प्रतिभा से आकृष्ट किया और उसके दर्शन और विज्ञान अपनी रस-बहुल धाराओ से उस मरु की चिरकालिक प्यास बुझाने लगे। मज्दी और मनीची प्रभाव ने उसे फिर कुछ निस्तेज कर दिया। इसमे सदेह नही कि अनेक अरब विद्वानो ने भारतीय दर्शन का स्वाद लिया। उनके नाम आज उपलब्ध नही। भारतीय दर्शन का आस्वादन करने वाला पहला अरब-ईरानी शिया अबु अल-रैहा अल-बीरूनी[1] था, जिसकी प्रखर मेधा ने भारतीय गणित, ज्योतिष, इतिहास, पुराण और भाषा सस्कृत का गम्भीर अध्ययन किया। भौतिक विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अरबी साहित्य में वह सर्वथा बेजोड है। भारत सबधी उसका ग्रथ स्वय भारत के इतिहास-निर्माण मे आज एक मज़िल का काम करता है। अल-बीरूनी के बौद्ध धर्मावलम्बी बलख और सुग्ध (सोग्दियाना) से सपर्क ने इस्लाम और अरबी साहित्य दोनो को प्रभूत रूप से प्रभावित किया।

भारतीय पडित बगदाद मे

७७० ई मे भारत से एक 'हिन्दू' गणित और ज्योतिष का एक-एक ग्रन्थ लेकर बग़-दाद पहुँचा। ज्योतिष की वह पुस्तक सिद्धातो की थी। जिसका इब्राहीम अल-फज़ारी[2] ने तत्काल अरबी अनुवाद 'अल-सिन्द-हिन्द' प्रस्तुत कर दिया। इस अनूदित ग्रथ ने अरब ज्योतिष के अध्ययन मे विप्लव उपस्थित कर दिया। उसी में पहले-पहल भारतीय अको का उल्लेख हुआ। जिससे अरबी के अक-नाम 'हिन्दसा' की सज्ञा सार्थक हुई। उसी आधार से उठ वह अकमाला अल-ख्वारिज़मी के ग्रथो द्वारा पश्चिमी जगत्—यूरोप के देशो में प्रचलित हुई।

---

१ Abu-Al-Rayhan Al-Biruni (मृ० १०४८), २ Ibrahim Al-Fazari (मृ० ७७७)

भारतीय अकमाला

अरबी साहित्य की अनेक विज्ञानपरक दिशाओ मे इन भारतीय ग्रथो का गहरा प्रभाव पडा। परन्तु यदि केवल अकमाला के प्रचार तक ही यह प्रभाव सीमित रहता तो भी 'अल-सिन्द-हिन्द' का प्रकाशन ससार के सारे देशो के सार्वकालिक इतिहास में युग-प्रवर्त्तक माना जाता। ख्वारिज्मी की मृत्यु ८५० ई के लगभग हुई।

खलीफा अल-मामून ने 'बैत-अल-हिक्मा' (ज्ञान-सदन) की बगदाद मे प्रतिष्ठा कर (८३०) अरब जगत् में पहली शोध-सस्था और उन्नत अध्ययन-पीठ की नीव डाली। अध्ययन-पीठ तो यह सस्था थी ही, अपने ग्रथागार और वेधशाला के कारण भी यह जगत् का आकर्षण बन गई। इतनी बडी अनुवाद सस्था तो प्राचीन जगत् में कही न देखी गई थी। ज्योतिष के सम्बन्ध मे जितना कार्य पहले हो चुका था, उसकी वहाँ छानवीन की गई। इसके अतिरिक्त उस दिशा में वहाँ बडे असाधारण कार्य हुए। अल-मामून ने वहाँ और दमिश्क से बाहर पर्वत कासिऊन पर एक-एक वेधशाला स्थापित की। इस प्रकार की एक ही सस्था प्राचीन जगत् में तीसरी सदी ई पू में स्थापित हुई थी, सिकन्दरिया का 'म्यूज़ियम'।

पचतंत्र

बगदाद में और अन्यत्र अरबी-साहित्य के क्षेत्र में गैर अरबी भी प्रभूत सख्या में अध्ययन, खोज, अनुवाद और रचना करने लगे थे। अल-खलील इब्न-अहमद[१] ने पेचीदे अरबी छन्द शास्त्र को पूर्णत निश्चित कर दिया और उसके ईरानी शिष्य सीबा-वैह[२] ने व्याकरण के रूपो के सबध मे वही कार्य किया था जो उसके गुरु ने छद-रचना के क्षेत्र में किया था। भाषा-विज्ञान का मनन विशेषत अल-बसरा के केन्द्रो मे हुआ। इसी प्रकार का एक दूसरा पीठ अल-कूफा मे स्थापित हुआ। खुसरो के समय पहलवी में 'पचतन्त्र' की सस्कृत कथाओ का एक अनुवाद प्रस्तुत हुआ था। इब्न-अल-मुकफ्फा (शिया होने के कारण ७५७ ई के लगभग मार डाला गया) ने उसका अरबी अनुवाद 'कलील वा दिम्न' (विदपाई की कहानियाँ) के नाम से किया। मुकफ्फा का दूसरा नाम रूज्बी था।

इस काल वैय्याकरणो का नाम भी स्तुत्य हुआ। अबु-उबैदाह[3] विशिष्ट व्यग्यकार के अतिरिक्त महान् पडित था। उसने वहाँ ईरानियो का नेतृत्त्व कर अरब राष्ट्रीय दल से लोहा भी लिया। उसका प्रतिस्पर्द्धी अल-अस्मा'इ[४] सम्पादक, टीकाकार और अरबी-काव्य का आलोचक था। वह कभी हारूँ-अल-रशीद[५] का दरबारी भी

---

१ Al-Khalil Ibn-Ahmad (मृ० ७९१), २. Sibawayh (मृ० ७९३); ३ Abu'ubaydah (मृ० ८२४), ४ Al-Asma'i (मृ० ८३०); ५ Haron Al-Rashid (मृ० ७८६-८०९)

रह चुका था । जो कुछ भी अरबी साहित्यिक क्षेत्र मे पश्चात्काल मे लिखा गया उस सबकी बुनियाद अल-अस्मा'इ की ही प्रखर मेधा ने डाली ।

इस काल की विशिष्ट प्रगति काव्य की दिशा मे हुई । एक नई प्रकार की काव्य-रचना, नई उपमाओ से मडित शुरू हुई । इस नई चेतना का प्रारभ करने वाला एक अच्छा कवि था—बश्शार इब्न-बुर्द[1] । खलीफा अल-महदी (७७५-८५) ने उस ईरानी प्रज्ञा-चक्षु को उसके इस्लाम-विरोधी विचारो के कारण प्राण-दण्ड दे दिया । भावुकता, शैली की निखार और भावो की मृदुता में बश्शार लासानी था । इसी काल अरबी साहित्य के दो प्रमुख स्तम्भ हुए, अबु-नुवास[2] और अबु-अल-अताहियाह[3] । अबु-नुवास हारूँ अल-रशीद के विदूषक के रूप में प्रसिद्ध है, साथ ही वह अलफ लैला (अरेबियन नाईट्स) के अनेक विनोदो का भी स्मरणीय नायक है । अनेक आलोचक तो उसे अरबी साहित्य का सुन्दरतम कवि मानते है । जन्म से वह ईरानी था जिसने शिक्षा बसरा में पाई थी और जो बगदाद में बस गया था । वहाँ खलीफा के दरबार मे पहुँचते ही उसने वहाँ की सारी प्रतिभाओ को अपने तेज से मलिन कर दिया । उसकी कविताओ के विषय विविध है—प्रशस्ति (मदह), व्यग्य (हिज), आखेट के गीत (तरदियात), एलेजी (मरसिया) धर्म (ज़ोहदियात) । उसके मदिरा सम्बन्धी मदिर गीतो (खमरियात) ने तो सुनने वालो को विमुग्ध कर दिया। उसने मदिरा के आपानको का समर्थन करते हुए लिखा कि 'तोबा और परहेज की जरूरत नही, क्योकि खुदा की रहमत आदमी के गुनाह से बडी है ।' कामुकता और विलास-वासना का तो अबु-नुवास और उसके ईरानी बन्धुओ ने जो अरबो में प्रचार किया उससे उनकी आचार-रीढ टूट गई ।

अबु अल-अताइया[3] अबु-नुवास के विपरीत श्रीमानो के विलास का शत्रु था । वह अरब था, अल-कुफा मे जन्मा, जो मिट्टी के बर्तन बेचकर अपनी रोजी कमाता था । किंवदन्ती है कि प्रणय में असफल होने से वह तप शील हो गया । उसके शत्रुओ ने एलान कर दिया कि अपनी तर्क-बुद्धि (इस्लाम-विरोधी) को छिपाने के लिए उसने आचार-प्रधान दर्शन अगीकार कर लिया है, जो गलत था । अताइया जनकवि था, जिसने जन-भाषा का प्रयोग अपनी कविता में किया । अरबी में इस प्रकार का प्रयोग करने वाला वह पहला कवि था । उसने अपनी कविता की भाषा से प्रमाणित कर दिया कि महान् कवि का भाषा-सबधी साधारणी-करण किसी प्रकार कवि की मेधा या महानता को कम नही करता । उसकी कविताओ में धर्म को प्रचुर स्थान मिला है । इस दिशा में उसने युग-प्रवर्त्तक का काम किया, क्योकि कविता से उसके बाद धार्मिक भावना फिर बहिष्कृत न हुई । धार्मिक भावो का काव्य द्वारा

---

१. Basshar Ibn-Burd (मृ० ७८४); २ Abu-Nuwas (७५०-८१०), ३ Abu-Al-'Atahıyah (७४८-८२८)

प्रकाश औरो ने किया था। अन्धकवि बश्शार का जिक्र ऊपर किया जा चुका है। इसी प्रकार अबीसीनिया के भाँड कवि अबु-दुलामाह[1] ने भी इस्लाम के विरुद्ध बडी गहरी व्यंग्यात्मक फबतियाँ कसी थी। अताइया के पद्य मे इतिहास का गहरा धर्म-शास्त्रीय विवेचन है। अल्लाह की इच्छा उसने प्रत्येक कार्य में मानी थी और प्रार्थना मात्र को सर्वार्थ-साधक कहा। धर्म को ही सारी लौकिक बातो में उसने निर्णायक माना।

कानून-व्यवस्था

गद्य का साहित्य भी तब का बडा ही विस्तृत है। उसका क्षेत्र अधिकतर धर्म-शास्त्र और दर्शन था। रोमन्ज़ के 'जूरिस्प्रुडैन्स' (जूरिसप्रूडैन्शिया) के आधार पर उन्होने 'फिकह' नाम से मुस्लिम कानून-व्यवस्था की चार शाखाओ को जन्म दिया। इनमें सबसे प्राचीन और महत्त्वपूर्ण शाखा 'मज़हब' अबु हनीफाह[2] ने चलाई, जिससे उसका नाम 'हनीफा' पडा। हनीफा अल-कूफा और बगदाद में रहा। उसके सम्प्रदाय में बडी सहिष्णुता है। मलिक इब्न-अनस[3] के नाम पर 'अलमुवत्ता' नाम से उसने अपने निर्णयो को कानूनी व्यवस्था की। तीसरी व्यवस्था मुहम्मद इब्न-इद्रीस अल-शाफी'इ[4] के नाम से 'शाफी' कहलाई। चौथी कानून-व्यवस्था 'हन्बली' का नाम उसके व्यवस्थापक अहमद इब्न-हन्बल[5] के नाम पर पडा। इसकी रूढिवादिता बग़दादी कट्टर मुल्लाओ की शपथ बन गई।

इतिहास का भी तब स्वतन्त्र अध्ययन आरम्भ हुआ। इब्न-इसहाक[6] ने मुहम्मद साहब का जीवन-चरित लिखा जो इब्न-हिशाम[7] के सस्करण में आज भी सरक्षित है। पैगम्बर के आक्रमणो का विवरण अल-वाकीदी[8] ने 'अल-मग़ाज़ी' के नाम से लिखा।

: ४ :

विदेशों में अरबी साहित्य

(८३३-१५१७)

खलीफा अल-मामून (८१३-३३) के बाद अरबो के विस्तृत साम्राज्य की शक्ति टूटने लगी। बगदाद की केन्द्रीय सत्ता बहुत कुछ धूमिल हो गई। साम्राज्य के विविध प्रान्त स्वतत्र हो गये और वहाँ एक नये साहित्य की साधना होने लगी।

इस नये नष्टप्राय अरब-सत्ता के युग में जिन विशिष्ट देशो ने अरब साहित्य

---

१. Abu-Dulamah (मृ० ७८०); २ Abu-Hanifah (मृ० ७६७); ३. Malik Ibn-Anas (७१५-९५); ४ Muhammad Ibn-Idris-Al-Shafi'I (मृ० ८२०); ५. Ahmad Ibn Hanbal (मृ० ८५५); ६ Ibn-Ishaq (मृ० ७६६); ७ Ibn-Hisham (मृ० ८३४); ८. Al-Waqidi (मृ० ८२३)

साधना का विस्तार किया, स्पेन उनमे मुख्य था । कोर्दोवा मे उमैया खानदान की शाख लगी थी (७५६-१०३१) । वहाँ इब्न-'अब्द-रब्बिही[१], खलीफा अब्द-अल-रहमान तृतीय का राजकवि, अग्रणी साहित्यकार हुआ। पूर्वात्य अल-काली[२] खलीफा अल हकम-द्वितीय (९६१-७६) के शासन मे कोर्दोवा के विश्वविद्यालय मे लब्ध-प्रतिष्ठ हुआ । प्राचीन अरबी साहित्य पर उसने 'अल-अमाली' नामक बहुविषयक ग्रन्थ लिखा। मुसलमानी स्पेन का सबसे मौलिक विचारक और प्रधान मनीषी इब्न-हज़्म[३] हुआ जिसने तुलनात्मक धर्म पर 'अल-फस्ल फि अल-मिलाल' (सम्प्रदाय-विभाजन) नामक मौलिक ग्रन्थ लिखा। सेविल, तोलेदो और ग्रानादा मे नये मुस्लिम राज्य स्थापित हो जाने के कारण कोर्दोवा की सत्ता ग्रहग्रहीत हो गई परन्तु मोजारबो ने अरबी सस्कृति का विस्तार उत्तर के प्रदेशो मे भी करना शुरू किया। कास्तिल और लियोन के राजा अल्फोन्जो (१२५२-८२) के लिये पचतत्र की कहानियो का अनुवाद हुआ, जो अन्तत 'ला' फौन्तेन' का आधार बना । सेविल के कामुक कवि इब्न हानी (९३७-७३) पर ग्रीक रस-शास्त्र की छाप गहरी थी।

सरवैन्टीज के डॉनक्विक्ज़ोट का कथा-विस्तार ईरानी अल-हमज़ानी[४] की कृति 'मकामा' (सभा) पर अवलम्बित बताया जाता है । अल-हमज़ानी की कृति तुकान्त गद्य मे दार्शनिक और आचार-परक खोज का सगम है। उसका नायक अश्वासीन दार्शनिक है।

इब्न-ज़ैदून[५] कवि और पत्र-लेखक था । सुन्दरी अल-वल्लादाह[६] स्पेनी साहित्य की सेफो थी और इब्न-कुज़मान[७] कोर्दोवा का भ्रमणशील गायक था। स्पेन के अरबी साहित्यकारो ने स्पेनी साहित्य के निर्माण मे भी बडी सहायता दी। वहाँ के यूरोपियन साहित्य को प्रेरणा और रूप भी उसने दिये।

विज्ञान

अरबी-साहित्य मे अनुवाद-युग (७५०-९००) के बाद वैज्ञानिक सक्रियता का युग (९००-११००) आया। ज्योतिषी अबु-मा'शर[८] ने यूरोप को ज्वार-भाटे का सिद्धान्त सिखाया। लैटिन मे उसके चार ग्रन्थो के अनुवाद हुए। धीरे-धीरे अब यूरोप को अरब-विज्ञान-भडार को जानने की बेचैनी हुई। पर जानकारी का साधन अगाध था। केवल इस्तम्बूल (कॉन्सटैन्टीनोपल-कुस्तुन्तुनिया) की मस्जिदो मे दसो हजार हस्तलिपियाँ थी।

---

१ Ibn-'Abd-Rabbihi (८६०-९४०), २ Al-Qali (९०१-६७), ३ Ibn-Hazm (९९४-१०६४), ४ Al-Hamdhani (९६९-१००८), ५ Ibn Zaydun (१००३-७१), ६ Al-Walladah (मृ० १०८७), ७ Ibn Quzman, ८ Abu-Ma'Shar (मृ० ८८६)

इनके अतिरिक्त कैरो, दमिश्क, मोसुल, बगदाद, ईरान, भारत और उत्तरी अफ्रीका में बेशुमार साहित्यिक निधि राशिभूत थी। बगदाद मे ऊपर बताये ज्ञानपीठ के अतिरिक्त एक और कॉलेज निजामियम था। जिसे 'उमर-अल-खैयाम के सरक्षक और सल्जूक सुल्तान अलप अर्स्लान तथा मलिकशाह के वजीर ईरानी निज़ामुल्मुल्क ने १०६५-७ मे स्थापित किया था। १००५ मे फातिमी खलीफा, अल हाकिम ने कैरो मे विज्ञान-शाला कायम की। जहाँ ज्योतिष और चिकित्सा पढाई जाती थी। मिस्र का सबसे महान् ज्योतिषी अली इब्न यूनुस[1] था।

रोजर बेकन का 'ऑप्टिक्स' इब्न-अल-हैसाम[2] (अल-हज़ेन) के 'थेसारस ओप्टिको' पर अवलम्बित था। यह हैसाम कैरो के खलीफा अल-हाकिम के दरबार मे रहनेवाला चक्षु-विशारद और भिषग् था। अरबो के ज्योतिप-ज्ञान ने तो यूरोप को दास बना लिया। कोर्दोवा और तोलेदो (स्पेन) मे इसका आरम्भ हुआ। अल-ज़रकाली[3] (अर्ज़किल जिसे चॉसर आर्सेकीलेस कहता है) का तोलेदो में १०८० मे खीचा गया ज्योतिप-सबधी तोलेदो-चक्र उसी के नाम से विख्यात हुआ।

दर्शन

अनुवाद के युग में मेधावी मुस्लिम दार्शनिको का भी प्रादुर्भाव हुआ। अरिस्टॉटल के दार्शनिक परिवार के समुन्नत शीर्ष निम्नलिखित थे —

अल-किन्दी[4] अल-फारावी[5], इब्न सीना[6] (अविसेन्ना), इब्न बाज्जाह[7] (आवेन्पेसे) इब्न-तुफैल[8] और इब्न रशद[9] (आवेरोएस)। ये सभी वैज्ञानिक होने के कारण इस्लाम के वस्तुत विद्रोही थे। वे न तो इस्लाम मे पूर्णत घुलमिल सके, न अपने विचार उसमें प्रविष्ट करा सके, परन्तु उन्हे अन्यत्र उचित आदर मिला, जहाँ वे अमर हो गये।

कोष

दसवी सदी के गर्वस्वरूप बसरा और बगदाद के विश्वकोपकारो का पीठ 'इख्वाँ अल-सफा' (ईमानदारी के बन्धु, ल० ९००) था। उनके ५२ पत्र (रसाएल) समसामयिक समूचे ज्ञान और विचारो के परिचायक है। इनके बाद इस दिशा मे विश्वकोपकार, शब्द-कोपकार और जीवनचरितकार प्राय ५०० वर्ष काम करते रहे। दो मिस्री अल-नुवैरी[10] और अल-कल्कशन्दी[11] ने अपने-अपने विश्वकोप लिखे। दमिश्क की इब्न-अबी-उसैबियाह[12]

---

१. Ali Ibn-Yunus (मृ० १००९), २ Ibn-Al-Haytham ३ Al-Zar Qali; ४ Al-Kindi (मृ० ८५०), ५ Al-Farabi (मृ० ९५०), ६ Ibn-Sina (९८०—१०३७), ७ Ibn-Bajjah (मृ० ११३८), ८ Ibn Tufayl (मृ० ११८५); ९ Ibn-Rashad (११२६—९८), १०. Al-Nuwayri (मृ० १३३२), ११ Al Qalqashandi (मृ० १४१८), १२ Ibn-Abi-Usaybi'ah (१२०३—७०)

ने दार्शनिको और वैज्ञानिको के जीवनचरित लिखे। इस प्रकार के चरित अलेप्पो के मिस्री अल-किफती[१] ने भी लिखे।

अल-सफदी[२] ने २६ खडो मे वृहद् शब्दकोष प्रस्तुत किया। अल-अस्कलानी[३] का उद्योग भी इस दिशा मे सराहनीय था। तुर्क अबु-नसर अल-जौहरी[४] ने 'अलसिहा' (सच्चे जन) नामक एक कोष रचा जो पश्चात्कालीन कोपकारो के लिए प्रतीक बन गया। इसी प्रकार इब्न-मुक्करम[५] का 'लिसा अल-अरब' (अरवो की जवान) अल-फीरुज़ा-वादी[६] रचित 'कामूस' (महापर्व कोप) अरबी के प्रामाणिक लुगद है।

राजनीति

इसी प्रकार राजनीतिक साहित्य की भी रचना प्रभूत मात्रा मे हुई। हारूँ अल-रशीद का हनीफी प्रधान जज अबु-यूसुफ[७] था, जिसे खलीफा ने पहले-पहल 'काजी-अल-कज़ा' (प्रधान जज) का खिताव दिया। उसने 'किताब अल-खराज' लिखा। इब्न-अल-तिक-तका[८] ने जो शिया था 'किताव अल-फख्री' रचा। जिसका पहला भाग राजनीति पर था। दूसरा मुस्लिम राजकुलो पर। स्पेन मे इब्न-अबी-रन्दका अल- तुर्तूशी[९] कानून और अनुवृत्त साहित्य पर प्रमाण माना जाता था। उसका 'सिराज-अल-मुलूक' (सुल्तानो का चिराग) शासन और राजनीति पर ग्रन्थ हिन्दू-फारसी उद्धरणो और सदर्भों से भरा है। सल्जूक सुल्तानो के वजीर निज़ाम-अल-मुल्क (ल० १०२०-९२) का उल्लेख ऊपर हो चुका है। वह ईरानी राजनीतिज्ञ और राजनीति का प्रकाड पडित था। उसने मलिकशाह के लिये 'सियासत-नामा' लिखा।

सिद्धान्त

परन्तु इस्लाम का मनु वास्तव मे अल-मावर्दी[१०] था, जो वगदाद और वसरा के कॉलेजो में पढाता था। उसका प्रधान ग्रन्थ 'अल-अह्काम अल-सुल्तानियाँ' था।

सुन्नी इस्लाम के राजनीतिक सिद्धान्तो का इसमे वडा प्रामाणिक प्रतिपादन और व्याख्यान हुआ है। प्राय चार सौ साल बाद अरवी साहित्य का उच्चतम स्तम्भ दार्शनिक और इतिहासकार इब्न-खल्दून[११] हुआ। राजनीति-शास्त्र पर उसका विवेचन भी असाधारण है।

इसी वीच कुरान का अध्ययन भी होता रहा और उसकी व्याख्या में विद्वत्ता-पूर्ण

---

१ Al Qifti (मृ० १२४८), २ Al-Safadi (मृ० १३६३), ३ Al-Asqulani (मृ० १४४९), ४ Abu-Nasar Al-Jawhari (मृ० १००८), ५ Ibn-Mukarram (मृ० १३११), ६ Al-Firuzabadi (मृ० १४१४), ७ Abu-Yusuf (७३१–९८); ८ Ibn-Al-Tiqtaqah (ज० १२६२), ९ Al-Turtushi (१०५९–११२६); १०. Al-Mawardi (मृ० १०५८), ११ Ibn-Khaldun (मृ० १४०६)

ग्रन्थ लिखे जाते रहे। अल-बुखारी[1] और मुस्लिम[2] अनुवृत्तो और ख्यातो के शोधक और व्याख्याता थे। उन्होने अपने-अपने 'सहीह' (शुद्ध) अर्थात् मुहम्मद साहब और उनके साथियो के कलाम लिखे। अबु-अल-हसन-अल-अश'अरी[3] ने रूढिवादी कट्टरता का पोषण किया। विरोधियो के खडन आदि पर उसके अनेक ग्रथ है। उसी की भाँति अल-मातुरीदी[4] ने भी सुन्नी रूढिवादी धर्मशास्त्र का प्रवर्त्तन किया। उनके विचारो का सिद्धान्तीकरण 'उमर अल-नसफी'[5] ने किया। अत जमख्शरी[6] और अल-बैजावी[7] ने कुरान पर टीकाये की। अल-शहरस्तानी[8] ने अपने अद्भुत ग्रन्थ 'अल-मिलाल-व-वा-निहाल' (धर्म और सम्प्रदाय) मे ससार के धर्मो और सप्रदायो की इस्लाम के प्रकाश मे समीक्षा की।

सूफी-मत

धीरे-धीरे अब सूफी-मत का प्रचार होने लगा था। सुन्नी रहस्यवादी दार्शनिक अल-मुहासिबी[9] चरित्रवादी था। धर्म-दर्शन मे निष्णात, जिसने 'रिआयह लि-हकूक इलाह' लिखा। आरम्भ के सूफियो मे अन्तिम अबु-तालिब अल-मक्की[10] था। जिसका 'कूत अल-कुल्ब' (हृदयो का आहार) रहस्यवादी ग्रन्थ है जो आज भी जीवित है। इस क्षेत्र के अन्य उत्साही कार्यकर्त्ता थे—जुनैद[11], शहीद रहस्यवादी अल-हल्लाज[12] और अब्द अल-कादिरअल-जीलानी[13], जिसने पहला सूफीबन्धु-सघ कायम किया। परन्तु इस्लाम के रहस्यवादी सम्प्रदाय का सबसे महान् एकेश्वरवादी और वेदान्ती स्पेन का इब्न-'अरबी[14] था। उसने बहुत भ्रमण किया, बहुत व्याख्यान दिये, बहुत लिखा। दार्शनिक विवेचनो मे उसे बडी प्रधानता मिली परन्तु उसके ग्रन्थ अभी तक ठीक प्रकाशित नही हो सके। उनमे प्रधान सम्भवत 'अल-फुतूहात अल-मकीयाह' (पक्की घोषणाएँ) है।

जलाल-अल-दीन अल रूमी[15] प्रधान ईरानी सूफी और कवि ने भ्रमणशील दरवेशो का दल मौलवी नाम से कायम किया। सूफी धर्म का प्रभाव जितना ईरानियो पर पड़ा उतना अरबो पर न पड सका ? ईरान मे तो उस धर्म-चेतना ने चिन्तको को दीवाना बना

---

१ Al-Bukhari (मृ० ८७०), २ Muslim (मृ० ८७५), ३ Abu-Al-Hasan Al-Ash'ari (मृ० ९३५), ४ Al-Maturidi (मृ० ९४४), ५ 'Umar Al-Nasafi (मृ० ११४२), ६ Al-Zamakhshri (मृ० ११४३), ७ Al-Baydawi (मृ० १२८६), ८ Al-Shahrastani (१०७६–११५३), ९ Al-Muhasibi (मृ० ८५७), १० Abu-Talib Al-Makki (मृ० ९९६), ११ Junayd (मृ० ९१०), १२ Al-Hallaj (मृ० ९२२), १३ Abd-Al-Qadir Al-Jilani (१०७७-११६६), १४ Ibn-'Arabi (११६५-१२४०), १५ Jalal-Al-Din Al-Rumi (मृ० १२७३)

डाला। अरबो मे बस एक सूफी कवि इब्न-अल-फरीद[1] हुआ जो ईरानी आचार्यो के तबके का था। कोर्दोवा के इब्न-मसर्राह[2] ने इश्राकी (प्रकाशपूर्ण) शाखा कायम की। धीरे-धीरे उसके विचारो का प्रसार बढा और अलेग्ज़ेण्डर हेल्स, डुन्स स्कोट्स, रोज़र बेकन, रेमण्ड लल आदि विद्वान् उनसे प्रभावित हुए। दाते की 'डिवाईन कॉमेडी' पर भी उसका गहरा प्रभाव पडा।

अबू-अल-फतूह अल सुहरावर्दी[3] भी उसी वर्ग का सूफी कवि था। ट्यूनिस के अबू-अल-हसन अल-शाजीली[4] ने मोरक्को और ट्यूनिस के शाजीली (सूफियो का एक फिरका) फिरके का प्रचार किया। मिस्र के अबु-अल-मवाहिब-अल-शाजीली[5] की 'कवानीन' मे सूफी मत का सार दिया हुआ है।

मगोल आक्रमण ने १२५८ मे बगदाद को बरबाद कर दिया। सीरिया और मिस्र मे कुछ काल फिर भी साहित्य-निर्माण का कार्य हुआ। यद्यपि सीरिया को यूरोपियन क्रूसेडो ने दम न लेने दिया। क्रूसेड-युग के मनोरजक सस्मरण उसामाह (१०९५-११८८) ने आत्मचरित मे दिये हैं। अनेक साहित्यिको ने सलादीन के चरित लिखे। इन्ही मे उसका सेक्रेटरी इस्पहान का इमाद अल-दीन[6] था। बहा-अल-दीन अल-शद्दाद[7] और पश्चात्कालीन दमिश्की विद्वान् अबु-शामाह[8] ने भी सलादीन पर ही लिखा।

ईराक और ईरान मे अल-गज्जाली[9] इस्लाम का प्रकाड पडित हुआ। 'मकामात' (सभाएँ) लिखकर अल-हरीरी[10] ने ख्याति पाई। नवी और ग्यारहवी सदी के बीच सिसिली मे भी अरबी साहित्य फला-फूला। इब्न हम्दीस[11] वहाँ का सबसे बडा कवि था। नॉरमन आक्रमण के समय वह सेविल भागा। फिर अपने आका अल-मु तमिद[12] के साथ उसे वहाँ से भी मोरक्को भागना पडा। आगे सौ वर्ष सिसिली का ईसाई राजदरबार अरब साहित्यकारो का अखाडा रहा। नॉरमन राजदरबार के रत्न इब्न-जफर[13] और अल-इद्रीसी[14] थे।

मिस्र में ममलूक सुल्तानो (१२५०-१५१७) ने मगोलो के धावो को रोका और हुलागू और तैमूर दोनो उसी दिशा मे अकृतकार्य रहे। उस काल ऊँचे तबके का कवि केवल

---

१ Ibn-Al-Farid (११८१-१२३५), २ Ibn-Masarrah (८८७-९३१), ३ Abu-Al-Futuh Al-Suhrawardy (मृ० ११९१), ४ Abu-Al-Hasan Al-Shadhili (१२५८), ५ Abu-Al-Muwahib Al-Shadhili (१४०७-७८), ६ Imad-Al-Din (मृ०१२०१), ७ Baha'-Al-Din Al-Shaddad, ८ Abu-Shamah (मृ०१२६८), ९ Al-Ghazzali (मृ० ११११), १० Al-Hariri (१०५४-११२२), ११. Ibn-Hamdis (१०५५-११३२), १२ Al-Mu'Tamid (१०४०-९५), १३ Ibn-Zafar (मृ० ११६९), १४ Al-Idrisi (मृ० ११६६)

एक हुआ—अल-बूसीरी[1]। उसने पैगम्बर की जीवनी 'अल बर्ज़ा' लिखी। अल-मक्रीज़ी[2] ने इतिहास ग्रन्थ लिखे। इब्न अरबशाह[3] ने जिसे तैमूर समरकन्द उठा ले गया था, उसकी प्रसिद्ध जीवनी लिखी। जलाल-अल-दीन अल सुयूती[4] सल्जूक विजय से पहले की सदी का प्रधान व्यक्तित्व हुआ। उसने प्राचीन क्लासिकल, मुस्लिम अनुवृत्तो का सग्रह किया। फारसी 'हज़ार अफसाने' (अल-जहशियारी—मृ० ९४२) के आधार पर प्रसिद्ध ग्रन्थ 'अरेबियन नाईट्स' लिखा गया। पुस्तक को उसका वर्तमान रूप चौदहवी सदी मे मिला। अरब-ईरान और पौर्वात्य देशो के सबध से पूर्व से प्रभूत सामग्री आई जो पुस्तकाकार होती गई। 'अल्फ लैला व लैला (सहस्र और एक रजनी) उसी का परिणाम था। इसकी दो तहे हैं। एक बगदाद में प्रस्तुत हुई, जिसमे खलीफा हारूँ अल-रशीद के दरबार के चित्र हैं। दूसरी तह मिस्र मे जिसमे जिन्नो आदि का जिक्र है।

अल्फ लैला व लैला

कहानी शाह शहरयार और उसके अनुज शाहजमान की है। दोनो अपनी पत्नियो की वचकता से क्षुब्ध देश-विदेश घूमते रहे और अन्त मे एक जिन्न की सहायता से तै किया कि नारी का विश्वास नही करना चाहिए। लौटकर शहरयार अपने राज्य की तरुणियो मे से नित्य एक को रात मे भोगता है और सुबह मरवा डालता है। तब वजीर की कन्याएँ शहजाद और दीनज़ाद स्वय शहरयार को सही रास्ते पर लाने का प्रयत्न करती है। शहजाद रात मे, जब उसकी बारी आती है, शहरयार के पास जाती है, और एक किस्सा सुनाती है। किस्सा सुबह के वक्त अपने 'क्लाइमेक्स' पर पहुँचता है, और शाह की उत्कण्ठा इतनी प्रबल हो जाती है कि किस्सा पूरा सुनने के लिए वजीरजादी की जान वह उस रात बख्श देता है। पर नित्य वही स्थिति होती है और शाह को उत्सुक हो उसे नित्य मुक्त कर देना पडता है। इसी प्रकार एक हजार राते बीत जाती है और शहज़ाद से उसके तीन पुत्र होते है। अन्त में वज़ीर-कन्या शाह के क्रोध से छुट्टी पा जाती है। सुख और इज्जत मे रहने लगती है।

कहानी के अन्तराल से कहानी निकालते जाना वस्तुत भारतीय पद्धति थी। 'पच-तत्र' उसका असामान्य उदाहरण है। कहना न होगा कि अल्फ-लैला व लैला की अनेक कहानियाँ इसी और अन्य भारतीय आधार से उठी हैं। ग्रन्थ मे जहाँ-तहाँ कविताएँ भी दी हुई हैं, जो भावावेगो को मुखरित करती है। कुछ शायरी के उदाहरण उसमे शायरो के नाम

---

१ Al-Busiri (१२१२-९६), २ Al-Maqrizi (१३६४-१४४२), ३. Ibn Arabshah (१३९२-१४५०), ४ Jalal-Al-Din Al Suyuti (१४४५-१५०५)

देकर भी दिये गये है वे नाम है —अबु-नुवास, इब्न-अल-मु'ताज़े और इस्हाक अल-मवसिली (७६७-८५०)। गम्भीर अरबी साहित्यकारो ने इस ग्रथ को फूहड और निन्द्य कहा। इनमे प्रधान इतिहासकार अल-मसू'दी (मृ० ९५६), जिसने 'मुरूज़-अल जहब' (सोने के मैदान) लिखा और अल-नदीम (मृ० ९९५), जिसने 'अल-फिहरिस्त' लिखा, थे। अल-कुर्ती, जिसके विचार अल-मक्रीज़ी और अल-मक्करी (१५९१-१६३२) ने अपनी कृतियो में उद्धृत किये हैं, केवल एक ऐसा इतिहासकार था, जिसने अपने मिस्र के इतिहास मे फातिमी खलीफा अल-आमिर (११०१-३०) के प्रणय-वृत्तो की इन 'रातो' की कहानियो से उपमा दी। अल्फ-लैला को आज तक अरबी विद्वान् हिकारत की नजर से देखते हैं। कुछ भी हो, उन्हे छिपकर बैरूट, कादिर—बगदाद, मोरक्को से मध्य एशिया तक सर्वत्र साधु-असाधु, धनी-गरीब, चोरी से या खुले पढते ही हैं। अल्फ-लैला की कहानियो का यूरोपियन साहित्य पर भी खासा असर पडा। हारूँ अल-रशीद का नाम तो अधिकतर उन्ही के जरिये पहुँचा। यद्यपि वह शार्लेमान का मित्र होने के नाते यूरोप मे सर्वथा अनजाना न था। फिर चॉसर के 'स्क्वायर्स टेल' अल्फ-लैला की ही एक कहानी है। आन्टवाने गैलोड (१६४६-१७१५) के इसके फ्रेच अनुवाद ने यूरोप को प्राय सौ वर्ष के लिए साहित्य का मसाला दे दिया। सदी भर उसका उपयोग वहाँ होता रहा। हरमन जोहेन्वर्ग के १८३५ के मिस्री हस्तलिपि से प्रस्तुत अनुवाद से ही अधिकतर यूरोपियन भाषाओ के अनुवाद प्रस्तुत हुए। अलाद्दीन और अद्भुत चिराग, अलीबाबा और चालीस चोर, माँझी सिन्दबाद आदि की कहानियाँ यूरोप में बाल-साहित्य का अनिवार्य अश बनकर घर-घर की वस्तु बन गई है। कुछ अजब नही कि कासानोवा के सस्मरणो पर भी अल्फ-लैला की कहानियो का प्रभाव पडा हो।

स्पेन पर ईसाई शासन स्थापित होने के बाद अरबी-यहूदी गन्थो का अग्निकाड शुरू हुआ और उनके विरले ही ग्रन्थ इस आसुरी सहार से बच पाये। फर्डिनेन्ड की अग्नि-लिप्सा चगेज़ और तैमूर की बर्बरता से कही अधिक थी। उन दिनो के कुछ एक साहित्यिको का उल्लेख कर देना समीचीन होगा। इब्न अल-खतीब[१] शैली का जादूगर था। वह ऊँचे तबके का कवि था। मुवश्शहो का सुन्दर लिखने वाला, जो स्पेन मे मरा। उसके बाद 'हिस्पानो' (स्पेनी)—अरबी सस्कृति उत्तर-पश्चिम, अफ्रीका की ओर हिज्रत कर गई, जहाँ फैज और त्लेमसेन मे उसके केन्द्र कायम हुए। तेरहवी सदी मे पहले फैज़ फिर चौदहवी में ट्यूनिस उसके दुर्ग बने। तन्जियर प्रसिद्ध पर्यटक इब्न-बत्तूताह[२] का जन्मस्थान था। भारतीय इतिहास पर उसके भ्रमण-वृत्तान्तो से बडा प्रकाश पडा है। मोरोक्की इतिहासकार अब्द-अल-वाहिद कुछ काल स्पेन मे रहा था, जहाँ उनने १२२४ मे मुवाहिद

---

१ Ibn-Al-Khatib (१३१३-७४), २ Ibn-Battutah (१३०४-७७)

खान्दान का प्रामाणिक इतिहास लिखा। ट्यूनिस निवासी इब्न-खल्दून[१] ने इतिहास-विज्ञान की नव-पद्धति को जन्म देकर अपना नाम इतिहास-निर्माण के क्षेत्र मे अमर कर दिया।

इसी काल कुछ बडे प्रामाणिक इतिहासकारो ने अपने ग्रन्थ लिखे। दो अग्रणी अरवी इतिहासकार मिस्री इब्न-अब्द-अल-हाकम[२] और अल-बलाज़री[३] (ईरानी था पर अरवी मे लिखता था) थे। पहले का 'फतूह मिस्र' मिस्र, उत्तर अफ्रीका और स्पेन की अरव-विजय पर पहला प्रामाणिक ग्रन्थ है, इसी प्रकार दूसरे का 'फुतूह अल-बुल्दान' मुस्लिम राज्य के मूल का निरूपण पहली बार करता है। अल-तवरी[४] और अल-मस'ऊदी[५] के हाथो इतिहासकारिता चोटी पर पहुँच गई। फिर मिस्कवैह[६] के वाद उसका ह्रास होने लगा। राष्ट्रीय जीवनचरितो का एक कोष सीरिया के एक प्रधान जज इब्न-खल्लिकान[७] ने लिखा। उससे पहले पूर्वी भूगोलकारो मे सवसे महान् याकूत[८] ने साहित्यकारो का एक कोप 'म'अजम अल-उदबा' नाम से प्रस्तुत किया था। इसी प्रकार इब्न-असाकिर[९] ने ८० खडो मे दमिश्की प्रसिद्ध पुरुपो का चरित लिखा। मर्व के इब्न-कुतैवाह[१०] ने 'अल-शे'र व 'अल-शो'अरा' (कविता और कवि) लिखकर वडी ख्याति पाई और उसने गद्य की जो शैली प्रचलित की वह चिरकाल तक चली।

दसवी सदी मे साहित्यिक इतिहास के सिलसिले मे आलोचना-विज्ञान ने शैलियो का अध्ययन करते समय भापा-शास्त्र सम्बन्धी विवेचन भी किया। अल-आमिदी[११] ने कवि अवू-तम्माम[१२] और अल-वुहतुरी[१३] का इसी प्रकार का अध्ययन किया। कुदामाह इब्न-जा'फर[१४] के जरिये इस क्रम मे ग्रीक 'र्‌होटोरिक' मानदडो का उपयोग अरवी साहित्य के मूल्याकन मे भी किया गया। अब्बासी सुल्तान इब्न-अल-मु'ताज़[१५] ने इस दिशा मे अपनी किताव 'अल-वदी' लिखी। अभागा सुल्तान वस एक ही दिन सल्तनत का भोग कर सका। दूसरे ही दिन उसकी हत्या कर दी गई। काव्यालकार पर उसकी पुस्तक पहली कृति थी, जिसमे अरवी विचारो और आदर्शो के आधार पर अलकार के सिद्धान्त रखे गये।

---

१ Ibn-Khaldun (१३३२-१४०६), २ Ibn-'Abd-Al-Hakam (मृ० ८७०), ३. Al-Baladhuri (मृ० ८९२), ४ Al-Tabari (८३८-९२३), ५ Al-Mas'udi (मृ० ९५६), ६ Miskawayh (मृ० १०३०), ७ Ibn-Khallikan (मृ० १२८२), ८ Yaqut (११७९-१२२९), ९ Ibn-'Asakir (मृ० ११७७), १० Ibn-Qutaybah (मृ० ८८५), ११ Al-Amidi (मृ० ९८७), १२ Abu-Tammam (मृ० ८४६) १३ Al-Buhturi (मृ० ८९७), १४ Qudamah Ibn-Ja'far (मृ० ९२२), १५ Ibn-Al-Mu'tazz (मृ० ९०८)

अबु-हिलाल अल-अस्करी[१] ने अपनी 'किताब-अल-सिना'अतें' मे गद्य और पद्य दोनो की शैलियो, अलकार आदि पर विचार किया। इसी प्रकार उसने 'इ'जाज अल-कुरान' में अलकारो आदि पर भी लिखा, जिससे प्रेरणा पाकर अशरी धर्मशास्त्री अल-बाकिलानी[२] ने अलकार और आलोचना की समस्याओ पर विचार किया। इसका प्रधान विवेच्य तत्व रसात्मक आलोचना है। अरवी साहित्य के प्रबल स्तम्भ अल-मुतनब्बी[३] और अल-मा'अर्री[४] भी तभी हुए। इनमे से पहला अरबी पद्य का आचार्य माना जाता है। दूसरे ने भी अलकार आदि पर लिखा परन्तु उसकी ख्याति बौद्धिक, दार्शनिक सत्य की खोज के क्षेत्र मे अधिक है। अल-जाहिज़[५] ने साहित्य सबधी पुराने दृष्टिकोण का प्रतिवाद किया। उसी परपरा मे अबु-मन्सूर अल-सा'आलिबी[६] भी हुआ। जिसने समकालीन कवि-कृतियो का एक सग्रह 'यतीमात-अल-दहर' नाम से निकाला जो विद्वत्ता और साहित्यिक सुरुचि का असामान्य मॉडल है। इब्न राशीक[७] ने 'अल-उम्दाह' मे काव्य-कला के विषय मे लिखा कि यदि उसके समसामयिक पुरानी काव्य-रूढियो को छोड दे, तो सही कविता कर सकेगे। उसने प्रकृति और यथार्थ के प्रति जागरूक होने के लिए अपने कवियो को प्रेरित किया और पुराने रूपो और टैकनीक की अच्छी खिल्ली उडाई। अब्द-अल-कादिर-अल-जुरजानी[८] और ज़िया' अल-दीन-इब्न-अल 'असीर[९] ने भी उसी परपरा मे साहित्य का कल्याण किया।

: ५ :

अंधकार का युग

(१५१७—१८००)

आगे का युग अपेक्षाकृत अन्धकार का था। उसमानी तुर्कों ने बास्फॉरस पर १४५३ मे अधिकार और १५१७ मे ममलूक सुल्तानो की सत्ता का अन्त कर अरवी साहित्य की धारा कुठित कर दी। यूरोपियन व्यापारियो को तब अपनी राह दूसरी ओर पश्चिमी समुद्र से बनानी पडी और भूमध्यसागर का महत्व घट गया। परन्तु जिस मात्रा मे यूरोप जागरूक हुआ, उसी मात्रा मे अरबो की कर्मठता मूढ होती गई। फिर भी साहित्य चर्चा होती रही।

---

१ Abu-Hilal-Al-'Askari (मृ० १००५), २ Al-Baqillani (मृ० १०१२), ३ Al-Mutanabbi (मृ० ९६५), ४ Al-Ma'arri (९७३-१०५७), ५ Al-Jahiz (मृ० ८६९), ६ Abu-Mansur-Al-Tha'alibi (मृ० १०३८), ७ Ibn-Rashik (मृ० १०७०), ८ 'Abd-Al-Qadir Al-Jurjani (मृ १०७८), ९ Diya'-Al-Din Ibn-Al-Athir (मृ० १२३९)

स्पेनी-युग की अरबी सक्रियता का एक भरापूरा चित्र हमें अल्जियर के अहमद इब्न-मुहम्मद अल-मक्करी[1] के इतिहास-साहित्यपरक ग्रन्थ में मिलता है। पर वस्तुत सोलहवी से अठारहवी सदी का अरब-ससार निद्राग्रस्त है।

विदेशो मे

भारत मे जहाँ वस्तुत राजभापा होने से फारसी का वोलवाला था, अरवी ग्रन्थो की रचना भी प्रचुर मात्रा में हुई। उस काल दो ऐतिहासिक पुस्तकें प्रस्तुत हुई, जिनमें से पहली 'तुहफत-अल-मुजाहिदीन' मालाबार में इस्लाम के प्रवेश और पुर्तगालियो के साथ युद्धो का विवरण है, और दूसरी गुजरात का इतिहास है। इसी प्रकार कुछ साहित्य-सृजन मलाया मे भी हुआ। उस युग की विचारशील परपरा का उद्घाटन मिस्र के 'अब्द-अल-वहाब-अल-शा'रानी[2] ने अपनी आत्मकथा 'लताएफ अल-मिनन' मे किया।

अब्द-अल-वहाव इस्लाम का अन्तिम महान् रहस्यवादी था। उसका दूसरा ग्रन्थ 'लवाकीह-अल-अन्वार' (जिसका दूसरा लोकप्रिय नाम 'तवकात अल-कुब्रा' है) सूफी चरितो का प्रधान कोष है। वह धर्मशास्त्र को रहस्यवाद की पहली सीढी मानता था। और उसने कानूनी व्यवस्था की चारो शाखाओ का समन्वय किया। उसने उसमानी सुल्तानो के शासन-काल के किसानो की गरीवी की ममलूको के समय की समृद्धि से तुलना की है।

तुर्क

तुर्कों ने भी पीछे अरवी का अध्ययन शुरू किया। अरवी वोलने वाले प्रान्तो के साम्राज्य मे सम्मिलित हो जाने के वाद तो यह अध्ययन अनिवार्य हो गया। कुछ तुर्कों ने अरवी में ग्रन्थ भी लिखे। इनमे प्रधान हाजी खलफाह[3] का ग्रन्थ है, जिसमें अरवी, फारसी और तुर्की ग्रन्थो की तालिका है। वस्तुत यह ग्रन्थ कोष है। हाजी खलफाह उसमान-साम्राज्य के युद्ध-विभाग में कॉन्सटेन्टीनोपल में सेक्रेटरी था। मध्य-अफ्रीका मे भी इस्लाम का प्रवेश होने पर वहाँ अरवी मे ग्रन्थ रचना हुई। १५४० के लगभग सोमाली अरब अरवफकीह ने अवीसीनिया मे मुसलमानो और ईसाइयो के युद्धो का वर्णन किया। टिम्बाट् के निवासी अल-सा'दी ने सोंगै राज्य का इतिहास 'तारीख अल-सूडान' (सूडान का इतिहास) नाम से लिखा।

आन्दोलन

उस युग के वाद अरब मे एक धार्मिक राजनीतिक आन्दोलन चला। उनके

---

१ Ahmad Ibn-Muhammad Al-Maqqari (१५९१-१६३२), २ 'Abd-al-Wahhab Al-Sha'rani (मृ० १५६५), ३ Hajji Khalfah (मृ० [illegible])

इब्न-तैमीयाह[1] के उदाहरण से प्रभावित होकर नजद के मुहम्मद इब्न-अब्द-अल-वहाब[2] ने इस्लाम की समसामयिक स्थिति मे सुधार करने का प्रयत्न किया। उसकी कुरीतियो को हटाकर पैगम्बर-कालीन शालीनता प्रतिष्ठित करना उसका ध्येय था। धीरे-धीरे उसका प्रचार दूर-दूर तक हुआ। मध्य अरब की भूमि पर वह विशेष लोकप्रिय हुआ। बहुमुखी प्रतिभा वाला सुल्तान इब्न-सु'अद (जन्म) १८८० इस आन्दोलन का चतुर अग्रणी था। अपनी विशिष्ट स्थिति से वह वहाबी आन्दोलन की ओर ससार की दृष्टि आकर्षित करने मे सफल हुआ। इस मूलवादी इस्लामी आन्दोलन से वह रहस्यवादी 'सनूसी' बिरादरी निकली, जिसे कायम करने वाला मुहम्मद इब्न-अली-अल-सनूसी[3] था। वह अल्जियर्स मे जन्मा और लीबिया मे जागबूब मे मरा। अल-सनूसी के प्रोग्राम की एक योजना पैगम्बर और उसके शीघ्र पश्चात् काल की परपरा मे अरब मे धर्म-प्रधान राज्य स्थापित करने की भी थी। इटली की साम्राज्यनीति ने उसकी रीढ तोड दी, यद्यपि दूसरे महायुद्ध के अवसर पर ब्रिटिश सरकार ने फिर उसे आश्वस्त किया।

इस युग मे फिर भी भाषा-सबधी विचार होते रहे। दक्षिण अरब में अल-सैयद अल-मुर्तजा[4] ने 'ताज-अल-'अरूस' लिखकर प्राचीन कोषकारो की परपरा लौटा ली। वह वर्तमान शिया-युग का अन्तिम स्तम्भ था। अल-यमन की जैदी परपरा का। उसका प्रधान ग्रन्थ अल-गज़ाली की 'इह्या' पर लिखा भाष्य था। उसमें उसने पुराने मॉडलो को छोडकर नयो को आधार बनाया और एक नई जागृति उसने उस जरिये सारे अरब और मुस्लिम जगत् मे पैदा कर दी।

: ६ :

पुनरुत्कर्ष

(१८००-१९१४)

१८०० से १९१४ ई० तक का युग अरबी साहित्य मे पुनरुत्कर्ष का था। समूची उन्नीसवी सदी मे प्रथम महासमर तक टर्की का अधिकार अधिकतर अरब-जगत् पर बना रहा था। अब भी कॉन्स्टैन्टीनोपल एक विशाल साम्राज्य की राजधानी थी, जो साथ ही ससार के मुस्लिमो पर धार्मिक हुकूमत करने वाली खिलाफत का भी केन्द्र थी, (क्योकि सुल्तान ही खलीफा भी था)। नील नद की घाटी मे तब आजादी की पहली लहर बही,

---

१ Ibn-Taymiyah (१२६३-१३२८), २ Muhammad Ibn-'Abd-Al-Wahhab (ज० १७२०), ३ Muhammad Ibn-'Ali-Al-Sanusi (१७९१-१८५९), ४ Al-Sayyid Al-Murtda (१७३२-९१)

अरब आजादी की पहली लहर, उस काल का मिस्री साहित्य राजनीतिक विद्रोही अल-जबर्ती[१] की नींव पर खड़ा हुआ। अब्दुल्लाह फिक्री[२] अली अल-लैसी[३] और अब्दुल्ला अल-नदीम[४] ने गद्य-पद्य दोनो लिखे। फिर भी ये उसमानी परपरा के ही कवि थे क्योंकि सैद्धान्तिक रूप से तुर्की का सुल्तान अब भी मुसलमानी-जगत् का नियन्ता था।

उस युग के इस्लाम के अग्रणी जमाल-अल-दीन अल-अफगानी[५] और उसका मेधावी शिष्य मुहम्मद 'अब्दू[६] थे। इनमे से पहले ने उसमानी खलीफा के नेतृत्व मे मुस्लिम जगत् का सगठन शुरू किया, दूसरे ने धर्मशास्त्र को फिर से सँभाला। अन्य अनेक पडितो ने भी इस दिशा मे कार्य किया और सुल्तान-खलीफा द्वारा वे समादृत हुए। अली अबु-अल-नसर[७] इब्राहीम अल-मुवैलिही[८] और मुस्तफा कामिल[९] खलीफा के आदर के पात्र बने। अहमद शौकी[१०] हाफिज इब्राहीम[११] और इस्माइल साबरी[१२] भी इसी परपरा के लेखक थे। मुस्तफा कामिल ने खुले तौर पर लिखा कि मिस्र की सहानुभूति समूचे मुस्लिम-ससार की एकता के पक्ष मे है। उसी उसमानी पक्ष का सीरियक अहमद फारिस अल-शिदयाक[१३] ने भी समर्थन किया। दूर मोरौक्को के लेखक शिहाब अल-दीन अल-सलावी[१४] ने भी उसी विचार की पुष्टि की। सीरिया और ईराक मे, जहाँ टर्की की नीति भी अनेक बार साहित्यिक दृष्टिकोणो का कारण बन जाती थी, साहित्यिको के मत दोनो ओर बँट गये थे। सीरिया मे जन्मे, और प्रसिद्ध दैनिक 'अल-अहराम' (पिरैमिड) के प्रतिष्ठाता (१८७५) सलीम तकला[१५] ने उसमानी-सघ का पक्ष लिया। इसी प्रकार उस पक्ष का प्रसिद्ध सीरियक-मिस्री कवि खलील मत्रान[१६] ने भी समर्थन किया। परन्तु सीरियक जर्नलिस्ट और साहित्यिक इसके विरुद्ध थे। इन्ही मे 'अल-मुशीर के प्रतिष्ठाता सलीम सरकीस[१७] भी थे। फरह अन्तून[१८] ने मिस्र मे 'जामिया अल-उसमानिया' (उसमानी-सघ) नाम का जर्नल निकाला।

---

१ Al-Jabartı (१७५६-१८२५), २ Abdullah Fıkrı (१८३४-९०), ३ Alı-Al-Lavthi (१८३०-९६), ४ Abdullah Al-Nadım (१८४४-९६), ५ Jamal-Al-Dın Al-Afghanı (१८३९-९७), ६ Muhammad Abdu (१८४९-१९०५), ७ 'Alı-Abu Al-Nasar (मृ० १८८०), ८ Ibrahım Al-Muwaylıhı (१८४६-१९०६), ९ Mustafa Kamıl (मृ० १९०८), १० Ahmed Shawqı (१८६८-१९३२), ११ Hafiz Ibrahım (१८७१-१९३२), १२ Ismaıl Sabrı (१८६१-१९२३), १३ Ahmad Farıs Al-Shıdyaq (१८०४-८७), १४ Shıhab-Al-Dın Al-Salawı (१८३५-९७), १५ Salım Taqla (१८४९-९२), १६ Khalıl Matran (ज० १८७२), १७ Salım Sarkıs (१८६९-१९२६), १८ Farah Antun (१८७२-१९१४),

मुस्लिम धर्मशास्त्री और 'अल-मनार' के सम्पादक रशीद रिज़ा[1] ने इस मिस्र मे बसे सीरियक ईसाई अन्तून का उसमान-पक्षीय दृष्टिकोण सराहा । जुर्जी जैदान[2] और अदीब इसहाक[3] भी उसी विचार के प्रचारक वने। इसी काल प्रतिभाशाली कवि वली-अल दीन यकन[4] हुआ, जो जन्मा कॉन्स्टैन्टीनोपल मे था पर पूरा मिस्री हो गया था। उसकी कविता मे उसमानो के अनाचारो के विरुद्ध धिक्कार है और अपनी मातृभूमि के लिये मुग्ध उल्लास। वह भी सुधारवादी था।

परन्तु इस काल की अरबी कविता मे प्राय सर्वत्र सुल्तान-खलीफा के लिए अकारण अगाध भक्ति है। उनकी कवितायें मूलत और प्राय पूर्णत प्रशस्तिवादी है, जिनका केन्द्र खलीफा की शालीनता है। इस युग के प्रशस्त कवि और अग्रणी साहित्यकार सीरियक बुत्रुस करामाह[5], ईराकी कवि अब्द-अल-बाकी अल-उमरी[6], और लेबनानी कवि नासिफ अल-याज़िजी[7] की भी यही प्रशस्तिवादी सरणी है।

तुर्की सुधारो के बाद मिदहत पाशा के प्रान्तीय शासनकाल (१८२२-८४) मे सीरिया मे एक शक्तिमान साहित्यिक आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। कॉन्स्टैन्टीनोपल के निरकुश शासन के विरुद्ध जोशीले कसीदे लिखकर मस्जिदो और गिरजो के दरवाजो पर चिपका दिये गये। उन साहित्यकारो पर अब्द-अल-हमीद के सुल्तानी शासन मे बडे जुल्म हुए। साहित्यकार बिखर गये, परन्तु सुधारो के बाद लोग शाति की छाया मे लौटे और अब नये सिरे से टर्की राष्ट्र के पक्ष मे रचना शुरू हुई। रूसी-टर्की-युद्ध, ग्रीक-युद्ध, इटली-टर्की-युद्ध और बाल्कन-युद्धो के अवसरो पर प्रभूत साहित्य की रचना हुई, जो टर्की के समर्थन मे थी। खलील मत्रान ने बोअर युद्ध के अवसर पर दक्षिणी अफ्रीका वालो के पक्ष मे सुन्दर कसीदा लिखा। रूसी-जापानी-युद्ध (१९०४-५) के समय सहानुभूति जापानियो के पक्ष मे थी और अनेक कसीदो की रचना रूस के विरुद्ध हुई। इस काल का बहुत-सा साहित्य समसामयिक, निर्माण और प्रगतिशील है।

नैपोलियन के आक्रमण (१७९८-१८०१) से मिस्र मे आधुनिकता का भी साहित्य मे बोलबाला हुआ। इस काल जो मध्यपूर्व मे एक सास्कृतिक आन्दोलन हुआ, उसका नेता बुत्रुस अल-बुस्तानी[8] था। उसकी रचनायें अनेक है। इस काल पाश्चात्य विज्ञान से प्रभावित कुछ विज्ञानवादी—शिबली शुमाय्यिल[9] भी हुए। मुहम्मद अली[10] और उनके पौत्र

---

१ Rashid Rida (१८६५-१९३५), २ Jurji Zaydan (१८६१-१९१४), ३ Adib Ishaq (१८५६-८५), ४ Wali-Al-Din-Yakan (१८७३-१९२१), ५ Butrus Karamah (१७७४-१८५७), ६ 'Abd-Al-Baqi Al-'Umri (१७९०-१८६२), ७ Nasif Al-Yaziji (१८००-७१), ८ Butrus Al-Bustani (१८१९-१८८३), ९ Shibli Shumayyil (१८५०-१९१६), १० Muhammad 'Ali (१८०५-४८),

इस्माइल[1] ने मिस्र मे नये युग का आरम्भ किया। मुहम्मदअली द्वारा शिक्षा के लिये पेरिस भेजा रिफाआह् अल-तिहतावी[2] पहला मिस्री कवि था, जिसने काव्य मे फ्रैंच-रूप और टैक-नीक का उपयोग किया। खलील मत्रान ने काव्य के क्षेत्र मे प्राचीनतावादी होते हुए भी, नये युग की नीव डाली। उसके दृष्टिकोण का आधार अधिकतर पश्चिमी दर्शन था। अपने काव्य-सग्रह 'अल-खलील' (मित्र) (१९०८) मे उसने अपने इन विचारो को परिपुष्ट किया। सीरिया मे इस दृष्टिकोण का और भी पोषण हुआ। १९०४ तक अमेरिकन राज-नीतिक विचार और साहित्यिक अभिप्राय (मोटिफ) भी अरबी-साहित्य-क्षेत्र मे पनप चले। १९१३ की २४ अप्रैल को राष्ट्रीय मिस्री विश्वविद्यालय ने अनेक अरबी कवियो और साहित्यिको को एक दावत मे एकत्र कर एक नई एकता का सूत्रपात किया। इस दावत मे शरीक सभी अरबी साहित्यिक थे। (दावत खलील मत्रान को दी गई थी) अहमद शौकी, इस्माइल साबरी, जुर्जी जैदान, शकीब अस्र्लान,[3] अमीन रीहानी[4], जिब्रान खलील जिब्रान[5] हाफिज इब्राहीम[6], मेरी-जियादाह, अल्तून अल-जुमैयिल, मुहम्मद लुत्फी जुमा, अब्बास महमूद अल-अक्काद और मुहम्मद कुर्द अली। इस सम्मेलन से साहित्य मे नया उत्साह आया।

: ७ :

वर्तमान युग

(१९१४ से)

१९१४ के युद्ध ने उसमानी टर्की की शक्ति तोड दी। साथ ही टर्की के तत्वावधान में अरब सघ की योजनाये भी तीन-तेरह हो गई। उस युद्ध के बाद अरबी-साहित्य एक नई दिशा में चला, विशेषत स्थानीय और प्रान्तीय सीमाओ से परिमित होकर। इसके दो महत्वपूर्ण कारण थे, जो उन्नीसवी सदी मे ही उदित हो गये थे। एक तो १८६० के गृह-युद्ध के बाद लेबनान टर्की से स्वतन्त्र हो गया था। दूसरे मिस्र पर १८८२ में ब्रिटिश सरकार ने अधिकार कर लिया था। देश प्रेम और आजादी की लहर ने दोनो देशो को अपनी राज-नीतिक स्थिति को और निकट से देखने और उस दिशा में साहित्य-रचना करने को बाध्य किया था। और जब १९१८-१९ मे वह युद्ध टर्की का साम्राज्य सहारक सिद्ध हुआ तब तो अरबी एकता की बुनियाद ही बिगड गई। फिर उपन्यास, नाटक आदि का उदय पश्चिम

---

१ Isma'il (१८६३-८२), २ Rifa'ah Al-Tihtawi (१८०१-७३), ३ Shakib Arslan (ज० १८६९), ४ Amin Rihani (१८७६-१९४०); ५. Jibran Khalil Jibran (१८८३-१९३१), ६ Hafiz Ibrahim (१८७१-१९३२),

की ओर अरबो को आकृष्ट करने लगा। इन्ही दिनो याकूब सर्रूफी [१] ने अपने गद्य की अविरल प्राजल शैली मे एक नये गद्य-टैकनीक को जन्म देकर यह दिखा दिया कि किस प्रकार विज्ञान आदि का वाहन होकर भी गद्य सुन्दर साहित्यिक आकृति धारण कर सकता है।

उपन्यासो की दिशा मे पहला कदम सीरिया के साहित्यकारो ने उठाया—घर और बाहर दोनो जगह। सीरियक उपन्यासकारो का अनुसरण करते हुए मिस्री उसमान जलाल [२] ने १८९२ मे फ्रैंच ग्रन्थ 'पॉल एट विर्जीनी' का रूपान्तर प्रकाशित किया। यहाँ कहना न होगा कि सीरियक साहित्यकार अधिकतर फ्रैंच आदर्शों के कायल हो चले थे। जुर्जी जैदान की परपरा के कायल 'मिस्र का कवि' अहमद शौकी ने 'अजर्र अल-हिन्द' (हिन्द की कुमारी) नाम से एक आकर्षक काल्पनिक उपन्यास लिखा। मुहम्मद इब्राहीम अल-मुवैलिही ने 'हदीस ईसा, इब्न-हिशाम', हाफिज्र इब्राहीम ने 'लैले सतीह' और मुहम्मद लुत्फी जुमा ने 'लैले अल-रूह अल-हैर' लिखकर उपन्यासो के लिए मध्यकालीन 'मकामाह' की परपरा पुनर्जाग्रत की।

उपन्यास

हुसैन हैकल [३] ने पहला मिस्री उपन्यास 'जैनव' लिखकर नये उपन्यासो का श्रीगणेश किया। इस पर नि सन्देह फ्रैंच मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का प्रभाव है, फिर भी इसका सारा वातावरण मिस्री है। 'अब्द-अल-कादिर अल-माजिनी [४] और मुहम्मद अब्दुल्लाह इनान [५] ने साहित्य को जनता के और निकट लाकर रखा। मुहम्मद तैमूर [६] ने अपने अल्प-कालिक जीवन मे अपनी कहानियो मे 'अल-शैख जुमा' मे आम जवान का प्रयोग किया। फिर भी क्लासिकल अरबी का दबदबा अभी साहित्य से उठा नही। अभी उस पर उसका शिकजा कसा है। अल-माजिनी ने अपने 'इब्राहिम अल-कातिब' (१९३१) मे इस दृष्टि-कोण का विरोध करते हुए रोजमर्रा की जवान को 'फूहड', लचक मे कमजोर और साहित्यिक निखार के अनुपयुक्त माना।

नाटक

मध्य उन्नीसवी सदी के पहले अरबी साहित्य मे नाटक नही था। अनेकार्थ में नाटक का प्रदर्शन इस्लाम की 'स्पिरिट' के विपरीत पडता था। नैपोलियन के साथियो ने सेना के

---

१ Ya'gub Sarrufi (१८५२-१९२७), २. 'Uthman Jalal (१८२९-९८)
३ Husayn Haykal (ज० १८८८), ४ Abd-Al-Qadir Al-Mazini (ज० १८९०),
५ Muhammad 'Abdullah Inan (ज० १८९६), ६ Muhammad Taymur (१८९२-१९२१)

मनोरजन के लिए मिस्र मे एक थ्येटर कायम किया। उसके लौटने के बाद ही वह थ्येटर तो वहाँ की धरा से उठ गया, परन्तु उसका निशान मिटा नही, यद्यपि मिस्र के पास खेलने के लिये नाटक-जैसी कोई चीज न थी। पहला अरबी नाटक पचास वर्ष बाद लेबनान मे खेला गया। कासिम अमीन[1] ने अपने 'तहरीर अल-मरा'अह' (नारी का उत्थान) और 'अल-मरअह-अल-जदीद' द्वारा जनता को नाटक के स्वागत के लिये तैयार कर दिया था। मारून नक्काश[2] ने, (जो सिदन का था पर बैरुत मे रहने लगा था) मोलिए के नाटक 'ला अवारे' का अनुवाद 'अल-बुखैल' (कजूस) ईसाई समाज के बीच अपने घर में खेलने का प्रबन्ध किया। धीरे-धीरे प्राइवेट क्लबो और विद्यापीठो मे नाटक खेलने की प्रथा चल निकली। नजीब हद्दाद[3] के कोनले ह्यूगो और शेक्सपीयर के अनूदित नाटक काफी लोकप्रिय हुए। वैसे ही नजीब हुबैकाह[4] के नाटक भी खूब खेले गये। अगला कदम काव्य-नाटक ने उठाया। इस क्षेत्र के नेता खलील अल-याजिजी[5] और प्रसिद्ध कोषकार अब्दुल्लाह अल-बुस्तानी[6] थे। अरबी थ्येटर के क्षेत्र मे वास्तविक प्रगति अहमद शौकी ने की। 'मसरा' क्लिउबात्रा' (क्लियोपैट्रा की मृत्यु १९२९) 'मजनू-लैला' (१९३१) 'अली बे अल-कबीर' (१९३२) 'अन्तरह' (१९३२) और 'अमीरत अल-अन्दलुम' (अन्डलूसिया की शाहजादी, १९३२) नामक शौकी के नाटको ने अपनी सीमाओ के बावजूद थ्येटर का रग जमा दिया। खलील मत्रान (जिसे 'दो देशो का कवि' मिस्र और सीरिया का, कहते हैं) १९३४ मे ड्रमैटिट पेशे की उन्नति के लिए बने राष्ट्रीय मिस्री मघ का प्रधान चुना गया। उसने अपने मित्र मिस्र के महान् अभिनेता जॉर्ज अबयाज के परामर्श से शेक्सपीयर के 'ओथैलो', 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' और 'हैमलेट' का सुन्दर अनुवाद किया। यद्यपि विषय परदेशी था, परन्तु मिस्र थ्येटर के लिए काफी खेल के प्रसग मिल गये।

शौकी की भूमि राष्ट्रीय थी। उसने फैरोहो तक की मिस्री परपरा की रक्षा में अपनी रचनाये की थी। सुलेमान अल-बुस्तानी[7] ने होमर की 'ईलियड' का अनुवाद करके अरबी भाषा की प्रबन्ध काव्य के लिए योग्यता स्थापित कर दी। शौकी ने अरबी छन्दो को कुछ विस्तार दे दिया था। जिससे उनकी ग्रहण-शक्ति कुछ बढ जाय। उसने छन्द और तुक को केवल साधन माना और उनकी प्राचीन सीमाओ को उसने तोड दिया। गद्य की दिशा मे भी अपने 'अमीरत-अल अन्दलुस' की सरल भाषा, सहज डायलॉग आदि से अरबी गद्य को एक नया कलेवर दिया। बोझिल भाषा की कृत्रिमता उससे दूर हो गई। अपने प्राचीन

---

१ Qasim Amin (१८६५-१९०८), २ Marun Naqqash (१८१७-५५), ३ Najib Haddad (१८६७-९७), ४ Najib Hubayqah (मृ० १९०६); ५ Khalil Al-Yaziji (१८५६-८९), ६ Abdullah Al-Bustani (१८५०-१९३०), ७ Sulayman Al-Bustani (१८५६-१९२५)

पद्धति के निबन्धो 'अल-शौकीयात' और अगली रचनाओ के बीच एक प्रशस्त साहित्यिक ससार था। मध्यकालीन युग से चलकर उसने वर्तमान युग का द्वार खोल दिया।

सीरिया, मिस्र और ईराक में साहित्यिक विचार सकुचित सीमाओ को तोडकर सार्वभौम रूप लेने लगे। बाहर से आते हुए प्रकाश से वहाँ के अरब-साहित्यकारो ने मुँह नही छिपाया। आजादी, सामाजिक प्रगति, आर्थिक चेतना, सबने उन्हे अपनी ओर खीचा। सबकी ओर उनकी गति हुई। समसामयिक काव्यधारा अपनी प्राचीन विपन्नता की अर्गला को तोड सीमातीत मैदान में बाहर बह चली। कुछ ने उसका प्रतिरोध भी किया। कुछ ने सावधान करने का भी प्रयत्न किया। इन्ही में मिस्र का मुस्तफा लुत्फी, अल-मन्फलूती (मृ० १९२४) था, जिसने नई दुनिया की ओर आँख मीचकर चलने वालो को आगाह किया।

ईराक ने नयी धारा का स्वागत किया। जमील सिदकी अल-ज़हावी[1] ने अपनी अनूठी गति, रहस्य, हास्य और शालीन स्वर में उमर खैयाम की लौकिकता और अल-मा'अर्री की प्रश्नात्मकता एकत्र कर दी। उसका 'सौरह' फि अल-ज़हीम' (नरक में विद्रोह)४३० दोहो में प्रस्तुत, उसके भावों की रवानी और दिमागी आजादी प्रकट करता है। वह दाते और अल मा-अरी दोनो को जानता है, परन्तु अनुकरण एक का भी नही करता। बहिश्त का वर्णन करता हुआ वह लेबनानी बगीचो का वर्णन करने लगता है, उसके ग्रीष्मकालिक पर्वत-शिखरो का, उसकी नाज़नीनो-शराबो का, श्रीमानो-विलासियो का, यौन कामनाओ का। ईश्वर की बात करता-करता वह ऊपर उड जाता है, अल्लाह के अस्तित्व में सन्देह करने लगता है, फिर हिन्दुओ की भाँति सृष्टि का आदिकरण आकाश घोषित करता है, जिसमें सृष्टि फिर समा जायेगी। अल-जहावी के दोजख़ के अतिम दृश्य में लैला और उसका प्रणयी सामरी आ पहुचते हैं। फिर कवि, कवियो दार्शनिको, वैज्ञानिको आदि की समूची जमात उस नरक में ला बिठाता है, आखिर इनको खुदा पर एतकाद न था। इसी बीच उसके वैज्ञानिको में से एक आग बुझाने का इजन ईजाद कर देता है, फिर तो वहाँ वह उपद्रव मचता है कि नरक के शासक हैरान हो जाते हैं। दोजख की जब सबसे भयकर सजा का जरिया, आग ही बुझ जायेगी फिर क्या होगा ? अन्त में दैवी हस्ती के बीच-बचाव से उस नाजुक स्थिति की सँभाल होती है।

अल-रुसाफी[2] (किरकुक में जन्मा), कुर्दिश खान्दान का ईराकी है, जो बद्दू परपरा में पला है। उसकी अरबी में मरु का सम्मोहक स्वर है, अभिराम, मादक। निकट पूर्व में अल रुसाफ़ी खूब घूमा है और उसे अरब और तुर्की जीवन का अन्तरग-बहिरग

---

१ Jamıl Sıdqı Al-Zahawı (ज० १८६३), २ Al-Rusafi (१८७५-१९४५)

सब मालूम है। ब्रिटिश मैन्डेट का उसने विरोध किया था। ईराक के स्वतन्त्र होने पर वह उसकी लोकसभा का सदस्य चुना गया। वह काव्य की शक्ति के लिये पुसत्व की शक्ति अनिवार्य मानता है। उसने स्वय मुहम्मद साहब को न छोडा। उसका कहना है कि कुरान की आरम्भिक सूराओ मे गजब की ताकत है, क्योकि तब तक पैगम्बर एक पत्नी-व्रती है, पर जब उसका पौरुष अनेकधा नारियो मे (बहुविवाह द्वारा) बँट जाता है, तब उसकी सूराओ का ओज भी दुर्बल हो जाता है, स्वय अल-रुसाफी कोई पश्चिमी ज़बान नही जानता, पर उसकी अपनी भाषा पर पकड काफी मज़बूत है। धार्मिक विश्वासो की दिशा मे वह प्रौढ और स्वतत्र है। 'अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा नही' को बदलकर वह कहता है 'जीव के सिवा दूसरा खुदा नही।'

अल नज़फ का रहने वाला मुहम्मद रिज़ा अल-शबीबी[१] ईराक की सरकार में लम्बे अरसे तक मिनिस्टर रह चुका है। वह शिया है और अपने विश्वासो में काफी कट्टर है। उसकी कविता आचार-युक्त और भक्तिपरक है। अपने विश्वासो में वह आशावादी है।

१९३० के बाद सीरिया और लेबनान मे साहित्य-क्षेत्र मे एक नई फसल कटी। बिशारह अल-खूरी, बैरुत के पत्र 'अल-बर्क' (विद्युत) का सम्पादक, कवि के रूप में सारे अरब-ससार मे विख्यात हुआ। शिबली अल-मलात, अमीन तकी-अल-दीन और इल्यास फैयाज़ के कसीदो ने जनता और आलोचको को अपनी ओर खीचा। इस नई प्रगति में लेबनान का प्रकाशवाहक सलीम अन्हूरी (जन्म, १८५५) रहा था। उसका दीवान "अल-जौहर अल-फर्द' (अनूठा रत्न, १९०४) ने उसे बडी प्रतिष्ठा दी। इस्कन्दर अल-आज़ार, फेलिक्स फारिस दाऊद मजाइस के साथ अन्हूरी ने पुराना पन्थ छोडकर काव्य में नया मार्ग बनाया। उन्ही दिनो उमर-फाखूरी का साप्ताहिक पत्र 'अल-म'आरज़' प्रदर्शिका बैरुत से और शाकिर अल-कर्मी का 'अल-ज़मा' दमिश्क से निकला। इन्ही दिनो साहित्य के इतिहास पर भी कुछ काम हुआ और बुत्रुस अल-बुस्तानी ने 'अल-मराहिल' (मज़िलें) नाम से तीन खडो में अरब साहित्य का इतिहास छापा। मिखाइल नईमा[२] ने भी अपना इतिहास 'जिब्रान' तभी प्रकाशित किया। फुआद अफ्राम अल-बुस्तानी 'अल-रवा' (आश्चर्य) का लेखक वाचाल और रोमाटिक निकूला फैयाज़ विख्यात साहित्यिक और बैरुत की अमेरिकन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अनीस अल-मकदीसी और मिस्र के ताहा हुसैन[३] अरब-साहित्य में नई मज़िलो का निर्माण करते रहे है। इनमे ताहा हुसैन 'ज़ाईम अल-मुज़द्दिदीन'

---

१ Muhammad Rida Al-Shabibi (ज० १८९०), २ Mikha'il Na'imah (ज० १८९४) ३ Taha Husayn (ज० १८८९)

(आधुनिक विचारधारा के नेता) करके प्रसिद्ध है और निस्सदेह वर्तमान जाग्रति की सबसे ऊँची आवाज़ है।

लोक-साहित्य

ऊपर लिखे साहित्य के अतिरिक्त अरबी में अलिखित साहित्य का भी एक खासा भडार है। वह लोक-साहित्य है, मछुओ, कबीलो, खानाबदोशो और अपढ अरब जनता का रोज़मर्रा की ज़बान मे नित्य कही जाने वाली कहानियाँ 'हद्दूस' (कहानी) कहलाती है। 'रिवायह' रावी द्वारा सुनाया जाने वाला पहला प्रबन्धकाव्य था। अब वह कहानी का सामान्य नाम है। उसी से नाटक—कॉमेडी और ट्रैजेडी—दोनो का भी बोध होता है। रात की कहानियाँ 'अस्मार' और प्रहसन पुराण 'खुराफत' कहलाते है। अल-नदीम (मृ० ९५५) ('अल-फ़िह्रिस्त' का सकलनकर्ता) के समय से ही लोक-साहित्य का सग्रह शुरू हो गया था। बाद मे अज्ञात रचयिताओ की कहानियाँ लोकप्रिय हुईं। 'बत्तालून' 'अनुदात्त नायक की 'जीहा' (दुष्ट नायक) की कहानियाँ है। इन लोक-कहानियो का प्रचलन अरब ससार मे बहुत है। सदा से अरब कहानियो के कहने-सुनने वाले रहे है।

लोक-गीत

अरबो के लोक-गीत भी पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध है। अरब स्वभाव से ही गायक होता है। उसके गीतो में धार्मिक अनुवृत्तो की ओर भी सकेत होते है। सीरिया-फिलिस्तीन में भी 'अताब' (करुण गीत) बद्दू ऊँट-सवारो मे 'मव्वाल' देहातो मे विवाह के गीत 'लगूता' और 'जलवा' गाये जाते है। एक विशेष प्रकार की मौखिक सुनाई जाने वाली कविता 'मतलू' (बहुवचन 'मतालो'—मत्त कर देने वाली) कहलाती है। मरण और शोक प्रकट करने वाले गाने 'तनावीह' नाम से विख्यात है। 'गिना' और 'मीज़ाना' भी लोकगीतो की ही दो किस्में है।

ताज़िया के सिलसिले मे भी एक प्रकार के मौखिक अलिखित साहित्य का उपयोग होता है। 'ताज़िया' मरण-गायनो की ही सज्ञा है। शिया-मुस्लिम जगत् में मुहर्रम के अवसर पर इन मरसियो का वाचन होता है। उस काल अनेक मुस्लिम देशो मे 'आशूरा' नाम का एक प्रकार का नाटक खेला जाता है। खिलाफत की लडाई में जो गृह-युद्ध हुआ था, उसमें अली के पुत्र अल-हुसैन और अल-हसन करबला के मैदान मे मारे गये थे। यह लीला (या लोक नाटक) उसी घटना के स्मारक मे की जाती है, जिसमे मरसिया पढा जाता है और अनेक प्रकार से श्रद्धालु शोक प्रकट करते है। शोक प्रकट करते हुए ही कागज़ की ताज़िया उठाकर लोग जलूस में करबला के मैदान में (करबला ईराक़ मे है, इससे अन्य देशो में स्थान विशेष करबला मान लिया जाता है) पहुँचते है। राह में साथ ही साथ कृत्रिम लडाई भी होती चलती है।

अरबी साहित्य मे इधर बडी प्रगति हुई है और उसका भविष्य आशागर्भित है। सारा एशिया आज पश्चिम की शोषक नीति से विद्रोह कर उठा है। अरब देशों—ईराक, सीरिया, लेबनान, ट्रान्सजार्डन, अरब, यमन, अदन, मिस्र, मोरौक्को, लिबिया, सूडान—सर्वत्र एक नई आज़ादी की आवाज़ उठी है और उसका अनुवर्ती साहित्य उस वातावरण मे सतत जागरूक है।

३. अक्कादी साहित्य

: १ :

वीर महाकाव्य

अक्कादी साहित्य से तात्पर्य उन सारे नगरो के साहित्य से है जो अति प्राचीन काल मे (३०००-६०० ई० पू०) मध्य और दक्षिण ईराक तथा दक्षिण-पश्चिमी ईरान पर छाये हुए थे और जो सुमेरी-एलामी-बाबुली (अक्कादी) —आसुरी सभ्यता के केन्द्र माने जाते है।

वह साहित्य बहुत पुराना है, प्राय उतना जितनी सभ्यता पुरानी है, सुमेरी सभ्यता। सदियो-सहस्राब्दियो दजला-फरात के द्वाब के दक्षिणी भाग मे, फिर मध्य और उत्तर मे, पश्चिम और पूर्व में गीली ईंटो पर कीलनुमा अक्षरो में (जिससे लिपि का नाम 'क्यूनी-फॉर्म' पडा) साहित्य लिखा गया। उस अगाध भडार में सभी सुरक्षित भी न रह सका, अधिकाश नष्ट हो गया, फिर भी बहुत कुछ बच रहा विशेषत एक असुर सम्राट् अशुर-बनिपाल (असुर-अवनिपाल) के अध्यवसाय से।

ईसापूर्व तीसरी सहस्राब्दी में ही इस साहित्य का निर्माण शुरू हो गया था परन्तु समय-समय पर मौसम और मनुष्य दोनो उसे नष्ट कर देते थे। सातवी सदी ई० पू० के इस अशुर-बनिपाल (६६८-२६ ई० पू०) को इसकी रक्षा की ऐसी लगन लगी कि उसने अपने ग्रन्थागार मे हज़ारो लिखी ईंटे, खुदे पत्थर एकत्र कर लिये। यदि वे सारे एक ही जगह उस प्राचीनकाल में ही एक भावुक मानव की निष्ठा से सरक्षित न कर लिये गये होते तो सभवत हमें उस प्राचीन सभ्यता के साहित्य का बोध न होता।

इस सग्रहीत सामग्री मे काव्य, कानून, अनुवृत्त, धर्मशास्त्र, सूक्त सभी कुछ था। उस भडार के कुछ रत्नो का हम यहाँ विवरण देंगे।

सुमेरी साहित्य और इस अर्थ मे विश्व-साहित्य का प्राचीनतम ऐतिहासिक वीर-महाकाव्य (एपिक) 'गिल्गमेश' है। यह उस जल-प्लावन की कहानी है जिसका उल्लेख प्राय सारी सभ्यताओ के साहित्य मे मिलता है। उस जल-प्रलय से सृष्टि की रक्षा बाइबिल मे नूह करता है, शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति में मनु। वह जल-प्रलय सुमेर में ई० पू० ३५०० के लगभग हुआ। उसमें पुराविदो ने बाढ और वर्षा के जल से लाई पाँच फुट गहरी मिट्टी खोद डाली है। उस जल-प्रपात का पहला लोमहर्षक वर्णन सुमेरी मे १५०० ई० पू० के लगभग लिखा गया, शतपथ ब्राह्मण की कथा ने प्राय डेढ

हजार वर्ष पहले । उसी का महाकाव्य रूप कुछ काल बाद फिर 'गिल्गमेश' नाम से रचा गया जो १२ ईंटो पर खुदा हुआ अशुर-बनिपाल के ग्रन्थ-सग्रह में असुरो की राजधानी निनेवे से मिला ।

'गिल्गमेश' काव्य के भीतर काव्य है । काव्य का 'हीरो' गिल्गमेश है परन्तु उसके भीतर आये जल-प्लावन का वर्णन जलप्लावन के हीरो, गिल्गमेश, का पूर्वज जिउ-सुद्दू करता है । वह शुरुप्पक का रहने वाला है, सुमेरी-बाबुली कथाओ का मनु । 'गिल्गमेश' महाकाव्य मे वही जिउसुद्दू अपने वशधर और काव्य के नायक गिल्गमेश से जल-प्रलय की कथा इस प्रकार कहता है—

"मै तुझसे एक भेद की बात कहूँगा, और तुझसे देवताओ की रहस्य-मत्रणा तक कह दूंगा । मगर शुरुप्पक को तू जानता है, उसे, जो फरात (फरातू) के तट पर है—वह नगर पुराना हो गया था, और उसमे बसने वाले देवता—महान् देवता के चित्त में हुआ कि जल-प्रलय करे

"दिव्य स्वामिन्—नेक देवता एकी—उनके विरुद्ध था । उसने उनकी मत्रणा एक नरकट की झोपडी को सुनाकर कही—नरकट की झोपडी, नरकट की झोपडी ! दीवार, ओ दीवार ! सुन, हे नरकट की झोपडी ! समझ ओ दीवार !"

यह इस प्रकार झोपडी के बहाने इसलिए कहा गया कि जिउसुद्दू, जो उसी झोपडी मे सो रहा था, सुन ले । फिर देवता ने खुलकर उससे कहा—

"शुरुप्पक के मानव, उबर्दुद्दू के पुत्र, घर को गिरा डाल, एक नौका बना, माल-असबाब छोड दे, जान की फिक्र कर । जायदाद को तोबा कर और (अचानक मर नही) जिन्दगी बचा ले ! सारे जीवो के बीज चुन ले और नौका के बीच ला रख !"

जिउसुद्दू ने नौका बनाई और उसे जीव-बीजो से, भोजन आदि से भर लिया और नगरवासियो से वह बोला—"शक्तिमान् पवन देवता एन्लिल उससे घृणा करता है, इससे वह जिउसुद्दू अब उनके बीच नही रहेगा । जाते समय उसने झूठ कहा कि देवता उन पर कृपा करेंगे, रहमत बरसायेंगे । उसने अपने परिवार को फिर नाव मे चढा उसे सब ओर से बन्द कर लिया । और तब भयानक तूफान आया और काले विकराल मेघो के बीच स्वय देवताओ को समस्त नागरिको ने मशाल चमकाते देखा ।

"भाई-भाई को न पहचान पाता था । शून्य और आदमी में कोई फर्क नही था । (ये लोग दिखाई नही पडते थे) स्वय देवताओ को जल-प्लावन से भय हो चला । वे सरके । वे देवता उनके स्वर्ग में जा पहुँचे । देवता कुत्तो की भाँति भय से काँप रहे थे, स्वर्ग की देहली मे एक-दूसरे से चिमटे । देवी इनन्ना (सुमेरी मातृदेवी, शेमियो की इश्तर अथवा अस्तार्त-स्त्री) प्रसवपीडिता नारी की भाँति चीख उठी । वह मधुभापिणी देवपत्नी रो-रोकर देवताओ मे कहने लगी—'दिन मिट्टी हो जाये क्योकि मैने देवसभा

में अनुचित कहा ! भला क्यो देवताओ की सभा में मैंने कुवाच्य कहा ! क्यो अपनी ही प्रजा के लिए तूफान बरपा किया ? मैंने क्या अपनी प्रजा को इसीलिए जना कि उनसे मछलियो के अडो की तरह समुद्र भर जाये ?"

छह दिन और सात रात तूफान और जल की बाढ उमडती रही और जल की सतह पर वहता जिउसुद्दू अपने साथियो के लिये ज़ार-ज़ार रोता रहा। पर्वत-शृखला के ऊँचे शिखर मात्र जल के ऊपर थे। इन्ही में एक से नौका जा लगी और सप्ताह भर वही लगी रही। जिउसुद्दू कहता गया—

"सातवें दिन मैंने एक कबूतर निकाला और उडा दिया। कबूतर उड गया। वह चहुँ ओर उडता रहा पर कही उतरने को जगह न मिली और वह लौट आया। मैंने एक अबाबील निकाली और उडा दी। अबाबील उड गई। वह चहुँ ओर उडती रही पर कही उतरने को जगह न मिली और वह उडती हुई लौट आई। मैंने एक काग निकाला और उडा दिया। काग उड गया और उसने घटते हुए जल को देखा। उसने (दाना), चुगा, जल हेला, डुवकियाँ लगाई, लौटकर नही आया। मैंने (हविष) निकाला और कुर्बानी की (यज्ञ किया) चारो हवाओ के प्रति। पर्वत की उत्तुग शिला पर मैंने आपान (मदिरा) चढाया, और सात बोतल रख दिये, उनके नीचे बेंत, दारु और धूप-अगुरु बिखेरे। देवताओ ने सुरभि सूँघी, देवताओ ने प्रभूत गध ली, देवता यज्ञ के स्वामी के चारो ओर इकट्ठे हो गये। अन्त में देवी (इनन्ना) ने पहुँचकर वह ग्रैवेयक (हार) उठाकर, जो देव अन ने उसके कहने से बनाया था, कहा—'देवताओ, जैसे मै अपने गले की नीलमणियो को नही भूलती, उसी प्रकार मै इन दिनो को नही भूल सकती। इन्हें सदा याद रखूँगी। देवता यज्ञ में पधारें, परन्तु एन्लिल न आवे, इस यज्ञ का भाग वह न पावे, क्योकि उसने कहना न माना, क्योकि उसने जलप्रलय की सृष्टि की और नाश के लिए मेरी एक-एक प्रजा गिन ली।' तब देवता एन्लिल ने नाव देखी। एन्लिल क्रुद्ध हो उठा। उसने पूछा कि किस प्रकार कोई मर्त्य (उस प्रलय से) बचकर निकल गया। श्रीमान् और शिष्ट भूदेव एकी ने उससे तर्कपूर्वक कहा—

'देवताओ के देवता, वीर, क्यो, क्यो तूने कहना नही माना और बरबस प्रलय की ! पाप पापी के ऊपर डाल, सीमोल्लघन का अपराध सीमा लाँघने वाले पर। कृपा कर, जिससे वह सर्वथा उच्छिन्न (एकाकी) न हो जाये, नितान्त विभ्रान्त (मूढ) न हो जाये। तेरे जलप्रलय लाने से अच्छा है कि सिह भेजकर प्रजा की सख्या कम कर दे। तेरे जलप्रलय लाने से अच्छा है कि भेडिया भेजकर प्रजा की सख्या कम कर दे।'

"क्रुद देवता शान्त हो चला, एकी कुछ के किये पापो का दड बहुतो को देने वाले उस देव की भर्त्सना करता गया। अन्त में एन्लिल नौका के भीतर चला आया। उसने मेरा हाथ पकडा और मुझे बाहर लाया, स्वय मुझे। वह मेरी पत्नी को भी बाहर निकाल लाया

और मेरी बगल मे उससे घुटने झुकवाये (प्रणाम कराया)। उसने हमारे माथे का स्पर्श किया और हमारे बीच खडे होकर हमे आशीर्वाद दिया। "पहले जिउसुद्दू मनुष्य था। पर अब से जिउसुद्दू और उसकी पत्नी निश्चय ही हमारी तरह देवता होगे। जिउसुद्दू और उसकी पत्नी दूर नदियो के मुहाने मे वास करेंगे।"

परन्तु जैसा ऊपर कहा जा चुका है, यह कहानी में कहानी है। जलप्रलय की कथा। इस काव्य का अन्तरग तो है और इसी से वही प्रधान भी है, परन्तु काव्य स्वय गिल्गमेश के पराक्रमो पर आधारित है जो इस प्रकार है—

(पहली ईंट) *गिल्गमेश का पिता आधा अपार्थिव है आधा मानव*, और माता देवी निन्सुन (लुगालबन्दा की पत्नी) है। उसका उरुक राज्य का शासन इतना निरकुश और अत्याचारव्यजित है कि प्रजा देवताओ से रक्षा के लिए प्रार्थना करती है। देवताओ ने उसका अन्त करने के लिए एक विचित्र वनैला मानव सिरजा। उस एकिदू का सारा बदन बालो से भरा था (ऋग्वैदिक वृषाकपि) और वह वन के पशुओ के साथ रहता था।

मरु के शिकारियो ने गिल्गमेश से उसकी शिकायत की कि वह अचरज का जीव उन्हे डरा देता है। पशुओ को उनके पाश से छुडाकर स्वतन्त्र कर देता हैं। गिल्गमेश ने उसे रिझाने के लिए सुन्दर देवदासी (मन्दिर की कन्या) भेजी। जिससे एक बार पतन हो जाने पर पशु उससे मुँह फेर लें। वह अपने कार्य में सफल हुई और जब वह उसके आलिंगन से अलग हुआ तब—

"हरिणों ने उसे देखा, उस एकिदू को, और भाग चले।
खेत के पशु उससे दूर-दूर हो चले।
क्योंकि एंकिदू की पवित्रता नष्ट हो चुकी थी।"

अपने पशु-मित्रो को छोड देने पर वह उस नारी के साथ उरुक पहुँचा। नारी ने गिल्गमेश के पराक्रम और शक्ति का वर्णन कर उसकी ईर्ष्या उभाड दी थी।

"मुझे उसे ललकारने दो! मै गर्व से बोलूँगा;
उरुक के नगर में चिल्ला कर कहूँगा।
'शक्तिमान मै हूँ। मै, मै जो प्रारब्ध को बदल सकता हूँ।
निश्चय ही मुझे मरु में जन्मे की कुव्वत बड़ी है।'"

एकिदू के आने का पता गिल्गमेश को अपने सपने से चल गया था और उसकी माँ ने सपने का अर्थ यह लगाया था कि दोनो वीर मित्र हो जायेंगे।

(दूसरी ईंट) नारी ने एकिदू को नगर में लाकर उसे रोटी खाना, जौ की शराब पीना, तेल लगाना, नहाना, सभ्यता के सारे तरीके सिखा दिये थे। एकिदू गिल्गमेश से लडा। खूब द्वन्द्व-युद्ध हुआ। दोनो एक दूसरे की शक्ति से परिचित हो उसे सराह कर मित्र हो गये।

(तीसरी ईंट) फिर वे (सीरिया) के दारुवन की ओर चले जिसकी रक्षा हुवावा अथवा हुंबाबा (हव्वा दैत्य—सभवत जलहीन मरु का रूपक) करता था—

"हुवावा की गरज तूफान है,
उसका मुखगह्वर आग,
उसकी सांस मृत्यु।"

एंकिदू पहले कुछ घबडाया परन्तु गिल्गमेश की महत्वाकाक्षा उसे प्रेरित करती रही। यद्यपि उरुक के वृद्धो और सूर्य देवता तक ने उन्हे मना किया, दोनो दारुवन की ओर चल पडे। माता निन्सुन सूर्यदेव को मनाती रही। (चौथी ईंट टूट गई है पर जान पड़ता है) वे सकुशल दारुवन पहुँच गये। (पाँचवी ईंट) गिल्गमेश को भयानक स्वप्न आये जिनका अर्थ एकिदू ने हुवावा का सहार लगाया। दैत्य के मिलने पर गिल्गमेश ने सूर्य को याद किया और देवता ने जब आठ हवायें चला कर हुवावा को विक्षिप्त कर दिया तब गिल्गमेश ने उसका सिर काट लिया। (छठी ईंट) दोनो वीर विजयी होकर उरुक लौटे। अब देवी इनिन्ना, जिसके अनेक प्रिय पात्र थे, उस पर रीझ गई, परन्तु गिल्गमेश ने उसे यह कहकर विमुख कर दिया कि उसके सभी प्रणयियो का भीषण अन्त हुआ।

क्रोधाभिभूत देवी ने अपने पिता अन देवता से उसके सहार के लिए दिव्य वृषभ सिरजने को कहा। देवता ने उत्तर दिया कि इसका परिणाम पृथ्वी पर सात वर्ष तक अकाल होगा। परन्तु वनस्पतियो की स्वामिनी ने प्रत्युत्तर मे कहा—

दिव्य वृषभ सिरज दिया गया। पहले सौ आदमी, फिर दो सौ और तब तीन सौ उससे लड़ने भेजे गये। उसने सब को मार डाला। तब एकिदू ने उसकी सीगे पकडकर उसे पटक दिया और गिल्गमेश ने उसे मारकर इनिन्ना का घोरतर अपमान किया। वृषभ की सीगों से उन्हें साठ मन तेल मिला जिसे उन्होने महार्ह-रत्नो के दीप मे डाल लुगाल्बन्दा के मन्दिर मे जलाया। तब दोनो प्रीतिभोज मे बैठे और गिल्गमेश ने पहेली कही—

"वीरो में शालीन कौन है,
वीरों में अप्रतिम कौन है,
गिलगमेश वीरो में शालीन है,
एकिदू वीरो में अप्रतिम।"

उस रात एकिदू ने एक भयानक स्वप्न देखा (सातवी ईंट टूट गई है परन्तु एशिया माइनर के बोगजक्रोए से मिले महाकाव्य के एक हित्ती अनुवाद से स्पष्ट है कि) उसने देखा कि देवताओ ने अपनी सभा में निश्चित किया कि एकिदू वृषभ मारने के कारण मरे और गिल्गमेश जीवित रहे। उसने जागकर बुरी तरह उस नारी को कोसना शुरु किया जिसने उसे पशु-जीवन के निश्छल वातावरण से लाकर विपज्जनक मानव-जगत् में पटक दिया।

फिर एकिदू ने एक और स्वप्न देखा जिसमे यमलोक का वर्णन है—

"उस सदन की ओर जहाँ प्रवेश कर कोई लौटकर नहीं आता,
उस मार्ग से जो फिर लौटता नहीं,
उस सदन की ओर जिसमें बसने वाले प्रकाश नहीं पाते,
जहाँ धूल (खाने के लिए) मास है, मिट्टी रोटी है,
और जहाँ वे पक्षियो की भाँति परो के वस्त्र पहनते है,
और अन्धकार में रहते आलोक से वंचित रहते हैं।"

(आठवी ईंट) गिल्गमेश अपने मरणासन्न मित्र को धीरज बँधाता है, परन्तु वीर एकिदू की शक्ति निरन्तर क्षीण होती जाती है—

"कैसे हो, कैसी नींद है यह जिसने तुम्हें जकड लिया है ?
तू काला पड गया है, मेरी आवाज़ नहीं सुनता !
पर उसने अपनी आँखें नहीं खोलीं।
गिल्गमेश ने उसके हृदय पर हाथ रखा, गति बन्द थी,
उसने (अपने मृत) मित्र को वधू की भाँति ढँक दिया।"

गिल्गमेश उसके लिए कातर विलाप करने लगा, परन्तु तभी स्वय उसे एक दारुण विचार ने आ घेरा—क्या अपने मित्र की ही भाँति एक दिन वह भी इसी प्रकार मर जायगा, अकडकर गूँगा हो जायगा? सन्त्रस्त हो उसने दूर बसने वाले जिउसुद्दू को ढूँढ़ निकालने और उससे उस अमरता का भेद जानने का निश्चय किया जो जल-प्रलय के पश्चात् जिउसुद्दू को देवताओ से प्राप्त हुआ था। (नवी ईंट मे उसकी यात्रा का वर्णन है)। पहले वह भयानक पर्वतो पर चढता है जिनकी रक्षा भीषण वृश्चिक-मानव करते हैं, वृश्चिक-मानव जिनके सिर और धड मनुष्य के हैं, टाँगे पक्षियो की, और डक बिच्छू के। तब उसे मद्यकन्या मिलती है, जो समुद्र की गहराइयो में रहती है और जिससे (दसवी ईंट मे) वह अपनी पिछली साहसपूर्ण यात्रा का वर्णन करता हुआ अमरता प्राप्त करने की अपनी महत्वाकाक्षा घोषित करता है। मधुबाला (उमर खय्याम के स्वर में जैसे) कहती है—

"गिल्गमेश, तू दूर (विदेश) क्यों भाग रहा है ?
जो तू ढूँढ रहा है वह (अमर) जीवन तू नहीं पा सकता।
जब देवताओ ने मानव-जाति को सिरजा—
तब उसके लिये मृत्यु की व्यवस्था की।
स्वय उन्होंने दोनो हाथ जीवन को पकडा !
और देख, गिल्गमेश, तू तो अपना पेट भर।
दिन और रात ऐश कर,
यही, यही, आदमी की क़िस्मत है।"

गिल्गमेश उससे आश्वस्त नही होता, चलता चला जाता है जब तक जिउसुद्दू के 'मृत्यु के समुद्र' में नाव चलाने वाले माझी को नही ढूँढ निकालता। (यहाँ पाठ टूट गया है, पर टूटी लिपि से ध्वनि निकलती है कि) वह क्रुद्ध होकर नौका की पाल फाड देता है, मस्तूल उखाड देता है। तब माँझी भी उसे मधुबाला की ही भाँति मरण को जन्म-सिद्ध मान, लौट जाने को कहता है। परन्तु जब वह लौटने को राजी नही होता तब माँझी उसे इस शर्त पर ले जाने को उद्यत होता है कि नाव को बढाने के लिए वह बाँस काट लिया करे। 'मृत्यु का समुद्र' विपाक्त था। इससे नाव खेने के लिये प्रत्येक चोट के बाद बाँस को फेंक देना पडता था। बावन लग्गियो (चोटो) के बाद, अन्त मे वह मृत्यु का समुद्र पार कर विस्मित अमर जिउसुद्दू के सामने जा खडा हुआ।

गिल्गमेश ने मानव जाति को मरण-भय से मुक्त करने की अपनी उत्कट् महत्वाकाक्षा घोषित करते हुए जिउसुद्दू से पूछा कि वह किस प्रकार अपने स्वाभाविक मरण-भाग्य से मुक्त हो सका है? (ग्यारहवी ईंट) तब जिउसुद्दू उससे जल-प्रलय की कथा कहता है। यही जल-प्रलय की कथा 'गिल्गमेश' एपिक का अन्तरग है। फिर वह कहता है कि "यदि तुम अमर जीवन प्राप्त करना चाहते हो तो पहले सप्ताह भर बिना सोये रहो, जागो।" परन्तु यात्रा के श्रम से थका गिल्गमेश जागने की बजाय सप्ताह भर सोता है। तब जिउसुद्दू उसे माझी के साथ स्नान करके ताजा हो आने को भेजता है। और लौटने पर उसे बताता है कि अमरता समुद्र-तल में उगने वाली एक औषधि (पौधा) से प्राप्त होती है।

"उसके कांटे तेरे हाथ में गुलाब की भांति चुभेंगे।
फिर भी यदि तू उस औषधि को पा ले तो जीवन (अमरता) को पालेगा।
गिल्गमेश ने यह सुनकर कमरबन्द कसी—और पैरों में भारी पत्थर बांधे।
वे उसे गहरे तल में खींच ले गये और उसने वह औषधि देखी।
तब उसने पौधा उखाड लिया, और उसके कांटे उसके हाथ में चुभ गये।"

(मोती निकालने वाले पनडुब्बे आज भी फारस की खाडी मे इसी प्रकार अपने पैरो मे पत्थर बाँधते है।) अब गिल्गमेश अपने पत्थरो की रस्सी काट मुक्त हो गया। प्रसन्न वदन ऊपर पहुँचने पर माझी उसे मर्त्य जगत् की ओर लौटा ले चला। साठ घटे निरन्तर चलते रहने से गिल्गमेश थककर विश्राम और सरोवर में स्नान करने के लिए रुका।

"एक सर्प ने औषधि की गन्ध पा ली।
जल से वह सपद निकला और औषधि लेकर चम्पत हो गया।
(सरोवर) लौटकर सर्प ने अपनी त्वचा (केंचुल) छोड़ दी, पुनर्जन्मा हुआ।
तब गिलगमेश बैठकर रुदन करने लगा!

उसके गालों पर आँसू बह चले ......
'किसके लिये मैंने अपने हृदय का रक्त सुखाया है ?
मैंने अपने लिये कुछ (भला) नहीं किया;
केवल धूल के नृशंस जीव (सर्प) का भला किया।"

(प्राय सभी प्राचीन सभ्यताओं के विश्वास मे अमरता का रहस्य सर्प को ज्ञात है। समुद्र तल का पौधा सम्भवत प्रवाल (मूँगा) है जिसे सभी प्रारंभिक जातियाँ सजीवनी मानती थी।) काव्य का वस्तुत यहीं अन्त हो जाता है। उन्नत, उदात्त, श्रमशील मानव ने अपने साहस द्वारा देवताओं के अमृत-रहस्य को ले लेना चाहा परन्तु विफल-मनोरथ अन्तत मृत्यु का शिकार हो वह उनका हास्यास्पद बना। (बारहवीं ईंट सम्भवत बाद की है) गिल्गमेश, वृद्ध और व्याकुल, परलोक की व्यवस्था जानने के लिये अपने मित्र के प्रेत से साक्षात्कार के लिये उन सारे 'तपु'ओं (तपस्—विधानों) को तोड देता है जो मानव को प्रेत की छाया से रक्षा करते हैं। देव नेर्गल, जो यमलोक पहुँचकर निकल भागा था, भूमि में छेद कर देता है और—

"एकिदू का प्रेत वायु की भाँति पृथ्वी से निकल पडा।
दोनों सपद गले मिले,
क्रन्दन करते वे बात करने लगे।
'बता मेरे मित्र, बता मेरे मित्र,
बता कब्र के विधान, जो तूने देखे है!'
'नहीं बताऊँगा मित्र, तुझे नहीं बताऊँगा,
क्योंकि यदि अपने देखे कब्र के विधान तुझे बता दूँ,
तो तू बैठा रोया करेगा!'
तो (कुछ परवाह नहीं) मुझे बैठकर रोया करने दे।"

एकिदू के प्रेत ने तब बताया कि किस भयानक रीति से वस्त्र की भाँति शरीर को कीट चाट जाते है। केवल वही परलोक में शान्ति पाते है जिनकी समाधि पर जीवित निरन्तर आहार और पेय भेंट चढाते रहते है। अन्यथा प्रेत निरन्तर सडको पर घूमते, मल खाते और नालियो का जल पीते रहते हैं। यही 'गिल्गमेश' काव्य का नितान्त निराशा मे अन्त हो जाता है। हाल के मिले काव्य की एक दूसरी प्रति से ज्ञात होता है कि गिल्गमेश को भी अन्तत मरना पडा और मरकर उसने परलोक के दंडधरो (जजो) में स्थान पाया।

यह काव्य इतना लोकप्रिय हुआ कि इसके अनुवाद हित्ती, शुबरी आदि भाषाओ मे हुए और ग्रीक पुराणो पर भी इसका प्रभाव पडा। अनेक आर्य, अनार्य, चीन आदि के पुराणो में भी जलप्रलय की कथा गाई गई। भारतीय शतपथ ब्राह्मण और मनुस्मृति पर भी उसकी छाया पडी।

इर्रा-काव्य एनुमा-एलिश

अक्कादी का दूसरा काव्य 'इर्रा (इरा, इला-सस्कृत) का काव्य' कहलाता है। इसमे प्रधानत देवता इर्रा के मानवजाति के प्रति क्रोध का वर्णन है जिसके परिणाम-स्वरूप निकटपूर्व की सारी जातियो में दारुण युद्ध होता है। अन्त मे बाबुली (अक्कादी) उस महासमर मे विजयी होते हैं। परन्तु इस काव्य से बडा और विशिष्ट महत्व का 'एपिक' काव्य-सृष्टि-सम्बन्धी 'एनुमा एलिश' ('जब ऊपर', काव्य के दो आरम्भिक शब्दो के आधार पर उसका नाम रखा गया है) है। अशुर और बाबुल मे सृष्टि और देवतत्व के सम्बन्ध मे जो धारणाये प्रचलित थी, उन्ही का इस 'एपिक' से आभास मिलता है। काव्य मे १००० से ऊपर पक्तियाँ हैं और अब वे सब की सब मिल गई हैं। इस काव्य की पक्तियाँ सात पट्टिकाओ पर खुदी हैं। सम्भवत इस काव्य की रचना ई० पू० द्वितीय सहस्राब्दी के पूर्वार्द्ध में हुई यद्यपि उपलब्ध सारी सामग्री पहली सहस्राब्दी (ई० पू०) के लेखो से ही प्रस्तुत हुई है। इसमे उन घटनाओ का सविस्तार वर्णन है जिनसे मार्टुक अक्कादी देवलोक का प्रधान बन गया। आरम्भ में इसमें देवताओ की सृष्टि और उनके पारस्परिक युद्धो का वर्णन है जिनमें अन्ततोगत्वा अशाति की परिचायिका जलदेवी तियामत (अथर्ववेद 'तैमात') पर मार्दुक विजयी होता है। मध्य भाग में, मार्दुक के कार्यों का उल्लेख है—तियामत के शव से विश्व का निर्माण, विश्व की व्यवस्था और मनुष्य की अभिसृष्टि, और अन्त मे मार्दुक के पचास नामो की महिमा पर स्तोत्र का उपसहार है।

अन्य काव्य

इनके अतिरिक्त उस साहित्य मे कुछ और काव्य भी मिलते हैं। हाँ, इनके खडमात्र आज उपलब्ध हैं। एक में दैत्य लब्बू के सहार का वर्णन है। दूसरे मे महादेव एन्लिल की भाग्य-पट्टिकाओ के आहर्ता जु-बिर्द के नाश का। एक तीसरे काव्य-खण्ड मे दानवो की सेना से लडने वाले कुथाह् के राजा का वर्णन है।

पुराण

उस साहित्य मे अनेक पौराणिक आख्यानो का वर्णन मिलता है। 'एनुमा एलिश' और 'गिल्गमेश' की पौराणिक कथाओ का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। दो मानव-सहार की आख्यायिकाओ मे पौराणिक ऋषि उत्नपिश्तिम का उल्लेख हुआ है। दो ख्यातो में परलोक (पाताल-नरक) का उल्लेख है। इनमे पहले मे देवी इश्तर के नरक-अवतरण के कारण पृथ्वी पर सारे यौन कृत्यो के अन्त और परिणाम का विशद वर्णन है। दूसरे में उन घटनाओ का उल्लेख है जिनके फलस्वरूप अक्कादी यम (नरक देवता) नेर्गल की पाताल लोक के शासक के रूप मे नियुक्ति होती है।

इनके अतिरिक्त दो और खण्डित ख्याते मिली है जिनका नवध दो महत्वशाली

कथाओं—अदापा और एतना से हैं। अदापा वाले प्रसंग में मनुष्य के मरण के कारणों की व्याख्या है। एतना वाले में जन्म संबंधी ओषधि की खोज का जिक्र है। दूसरी कथा मनोरंजक है।

एक बार सर्प और गरुड़ ने परस्पर मित्रता की प्रतिज्ञा की, परन्तु गरुड़ ने सर्प के बच्चों को खा लिया। इस पर कातर और क्रुद्ध सर्प ने सूर्य देवता से शिकायत की। सूर्य ने राय दी कि मृत बैल का अस्थिपंजर उठा लाये और जब गरुड़ उसे खाने आये तब वह उसे पकड़ ले। सर्प ने ऐसा ही किया और जब गरुड़ आया तब उसने उसे पकड़कर उसके पंख काट लिये और उसे गड्ढे में डाल दिया जहाँ गरुड़ कष्ट से कराहता पड़ा रहा। अब सूर्य से प्रार्थना करने की बारी उसकी थी। परन्तु उचित बदले को भला देवता कैसे विफल कर सकता था और वह सर्प के विरुद्ध कुछ न कर सका यद्यपि गरुड़ पर कृपा वह करना चाहता था। तभी एक घटना घटी। कीश के राजा एतना की पत्नी गर्भवती थी और वह उसकी प्रसव-पीड़ा नाश करने के लिए जादू की 'जन्म-ओषधि' खोजने लगा। उसके लिये उसने सूर्य से पूछा। सूर्य जानता था कि वह ओषधि केवल स्वर्ग में है और उसने उसे गरुड़ की सेवा कर स्वस्थ कर देने को कहा। एतना ने गरुड़ को स्वस्थ कर दिया और कृतज्ञ पक्षिराज उसे स्वर्ग ले जाने को राजी हो गया। दोनों उड़ चले। दो घंटे बाद गरुड़ ने कहा—"देखो मित्र, पृथ्वी कैसी है। उसके चतुर्दिक् सागर देखो, गंभीर अबुधि। पृथ्वी कैसी पर्वत मात्र-सी दीखती है और समुद्र कुल्या-सा। पहले वह हर दो घंटे बाद इसी प्रकार एतना से पृथ्वी की घटती हुई आकृति का वर्णन करता था। वह अन, एन्लिल और एकी के स्वर्ग-द्वार लाँघ गया, पर यात्रा का अभी अन्त न हुआ। अभी उन्हें उस देवी के सिंहासन तक पहुँचना था जिसके पास वह 'जन्म-वृक्ष' था। एतना के लिये यह असह्य हो उठा और चीखकर वह दूर नीचे पृथ्वी पर गिर पड़ा।

देवस्तोत्र . सूक्त

अक्कादी साहित्य में, देवस्तोत्रों, सूक्तों और राजप्रशस्तियों का अभाव नहीं, विशेषत स्तोत्र तो उसमें भरे पड़े हैं। इनमें अधिकतर प्रधान देवता मार्दुक के प्रति कहे गये हैं। कुछ युद्ध और प्रेम की देवी इश्तर (सुमेरी इनन्ना) के लिये कहे गये हैं, कुछ सूर्य देवता, शमश (सुमेरी उत्तू) और कुछ ज्ञानदेव इआ (सुमेरी एकी) के लिये। कुछ गीत तो प्रायश्चित-रूप में पाप के स्वीकरण में गाये गये हैं जो अत्यन्त हृदयस्पर्शी हैं। एक उदाहरण इस प्रकार है—

"मैं तेरा स्मरण करता हूँ (इश्तर), मैं तेरा अभागा, व्यथित रुग्ण दास!
मेरी ओर देख, मेरी देवी, मेरी विनय स्वीकार कर,
मुझ पर दया की दृष्टि डाल, मेरी प्रार्थना सुन!
मुझे मुक्ति दे, मेरी रूह को राहत दे;

मेरे पतित शरीर की मुक्ति, अशान्त शरीर की,
मेरे रुग्ण हृदय की मुक्ति जो आँसुओ, उच्छ्वासो से भरा है,
मेरी अभागी अंतडियो की मुक्ति, अशान्त अतडियो की,
मेरे दु.खी गृह (परिवार) की मुक्ति, जो करुण विलाप कर रहा है,
मेरी आत्मा की मुक्ति जो आँसुओ-उच्छ्वासो से आर्द्र है।"

पाताल के देवता नेर्गल के प्रति एक सूक्त इस प्रकार है—

"स्वामिन्, आपानक में प्रवेश न करो, न मधु बेचती वृद्धा को ही मारो।
स्वामिन्, ससद में प्रवेश न करो, न वहाँ बैठे धीमान् जरठ को मारो ।
स्वामिन्, खेल के मैदान में न रुको, न मैदान में खेलते बच्चो को भगाओ ।
वहाँ प्रवेश न करो जहाँ तंत्रीनाद गूँजता है, न तरुण को भगाओ जो तत्रीनाद समझता है ।"

सम्राट् हम्मुराबी के सबध मे एक बडी ओजस्विनी कविता प्राप्त है । यशस्वी विजेता आक्रमण को उद्यत होकर भी आक्रमण मे जैसे देर कर रहा है और अक्कादी कवि ललकार उठता है—

"बाल (एन्लिल) ने तुझे प्रमुखता दी है.
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है ?
सिन ने तुझे महत्तम बनाया है :
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है ?
निर्नुता ने तुझे शक्तिम शस्त्र दिया है :
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है ?
इश्तर ने तुझे युद्ध और समरावसर दिया :
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है ?
शमश और अदाप तेरे सहायक मित्र है ;
फिर तू प्रतीक्षा किसकी कर रहा है ?
चारो दिशाओ में अपनी शक्ति प्रतिष्ठित कर दे !
तेरे नाम की पुकार ऊँची हो, गूँज उठे !
दूर-दूर के लोग तेरी पूजा करें,
तुझे वे अपना सिर झुकायें !

हम्मुराबी, सम्राट्, महावीर,
अग्निवात, समरझंझावात,
शत्रुजनपदसंहारक, विद्रोहों का आक्रान्ता
विप्लव का नाशक, सम्मुख समर में खड़े होने वाले को
मिट्टी के पुतले की भाँति चूर कर देने वाला,
अजेय पर्वतों को अंगुला तोड़ देने वाला (हम्मुराबी)।

यहाँ हम्मुराबी के शास्त्र (अनुशासन) का उल्लेख समीचीन होगा। जैसे मनु का 'धर्मशास्त्र' महत्त्व का है उससे प्रायः डेढ़ हजार वर्ष पूर्व (२००० ई० पू०) का हम्मुराबी का यह विधान वैसे ही प्राचीन है। संसार का यह प्राचीनतम विधान है। जिसमें वादप्रतिवाद, प्रमाण, दण्ड, वैयक्तिक सम्पत्ति, चौरकर्म, पट्टा-अराजी, कृषि, व्यापार, मदिरा का लाइसेंस, ऋण-उधार, ट्रस्ट, विवाह, दाय, नारी, पुरोहित, दत्तकपुत्र, फौजदारी, वैद्यचिकित्सक, राज, नदी की राह का उपयोग, नहर के जल का सिंचाई के लिये प्रयोग, मवेशी, कृषि, मजूर, दास आदि सभी के लिये अनुशासन है। हम्मूराबी के बाद का अनुशासन मूसा (१६वीं सदी ई० पू०) का है, फिर मनु का (पाँचवीं-दूसरी सदी ई० पू०)।

प्राचीनता को देखते हुए प्रकट है कि सुमेरी, विशेषतः अक्कादी (बाबुली-आसुरी) साहित्य में गजब की मार्मिकता है। बाबुल ने संसार को बहुत कुछ दिया, लिपि, ज्योतिष, गणना और इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण जलप्रलय की कथा 'गिल्गमेश' जो संसार का प्राचीनतम 'एपिक' काव्य है।

४. इटैलियन साहित्य

: १ :

मध्य युग

(१२००-१४५०)

रोमन साम्राज्य के पतन के बाद धीरे-धीरे इटली से लैटिन का बोलबाला उठ गया। उसके स्थान पर जन-भाषा इटैलियन प्रतिष्ठित हुई। रोमन सास्कृतिक परपरा तो निश्चय ही किसी-न-किसी रूप मे बनी रही परन्तु लैटिन का ह्रास स्वाभाविक ही शुरू हो गया। वैसे तो १२०० ई० के लगभग ही इटैलियन का आरम्भ माना जाता है, वस्तुत उस काल से पर्याप्त पूर्व से ही, परन्तु पहले के इटैलियन साहित्य के उदाहरण आज हमे उपलब्ध नही। दसवी-ग्यारहवी सदियो के कुछ धार्मिक प्रवचन अथवा गेय छन्द जब-तब मिल जाते है, परन्तु उनके आधार पर उस काल के साहित्य की प्रगति को प्रकाश में लाना कठिन है।

तेरहवी सदी के आरम्भ से ही दक्षिणी फ्रास की साहित्यिक परपरा का प्रभाव उत्तरी इटैलियन पर पडने लगा था। वस्तुत उससे भी अधिक सिसिली के दरबारी कवियो ने उस प्रगतिशील साहित्य के प्रति अपनी चेतना प्रकट की। वहाँ फ्रैडरिक द्वितीय (१२२५-५०) के दरबार मे दरबारी प्रणय और क्रूसेडो के सम्बन्ध में कविताएँ रची गई। उन पर लटिन का प्रभाव स्पष्ट था। उत्तरी इटली की अधिकतर कविताएँ उस काल स्थानीय बोलियो में लिखी गई। विषय वही प्रणय आदि थे। तेरहवी सदी में फ्रास के वीर-काव्य की शैली का उत्तरी इटली मे प्रादुर्भाव हुआ।

मध्य इटली मे प्राय तभी साहित्य में धार्मिक जागरण के नेतृत्व में एक साहित्यिक आन्दोलन चला। जागरण के उस आन्दोलन का नेतृत्व सेन्ट फ्रासिस ऑफ असीसी ने किया। भगवान् के सिरजे सारे प्राणियो के प्रति प्रेम की धारा कविता के माध्यम से अनायास वह चली।

वास्तविक साहित्यिक-आन्दोलन तेरहवी सदी के मध्य टसकनी में चला। यह प्रोवेन्कल के दरबारी प्रणयवाद और उत्तरी फ्रैंच रहस्यवाद की परस्पर समष्टि का परिणाम था। फ्रैंच रहस्यवाद आदर्श नारीत्व और 'मेरियोलेटरी' अर्थात् मरियम की पूजा लेकर चला था। प्रोवेन्कल का प्रणय एक नितान्त सबल भावधारा थी, जिसमें प्रणयी सर्वथा अकिंचन होकर प्रेमिका की कृपा का इच्छुक हो जाता था। प्रतीकत वह मानव-प्रणय भगवान् के

प्रति प्रेम-प्रदर्शन था। इस शैली की कविताओं में शब्द बड़ी सावधानी से चुने जाते थे और जिनसे संगीत में लैटिन तथा मुक्त प्रोवेन्साल के रहस्यवादी संकेतों का उपयोग होता था। इसकी मधुरता के कारण इस शैली का आरम्भ से ही 'डोल्चे स्टिल नुओवो' (मधुर नयी शैली) नाम पड़ गया था।

इस काल का पहला महत्त्वपूर्ण कवि गुइत्तोने द'अरेज्जो[1] हुआ। परन्तु वह इस 'मधुर नयी शैली' का अनुयायी न था, यद्यपि उसने प्रोवेन्साल की काव्यभाषा का अनुकरण किया। उस शैली का सही अनुयायी गुइडो गुइनीजेल्ली[2] बोलोन का रहने वाला था। भाव और शैली दोनों के सौंदर्य में वह गुइत्तोने तथा सिसिली की दरबारी परम्परा से बढ़ गया। सदी के अन्त में फ्लोरेन्स के अनेक तरुण कवियों ने उसका अनुकरण किया। इनमें प्रधान इटली का प्रसिद्ध कवि दांते आलीगियेरी[3] था। उसी परम्परा में गुइडो कावालकान्टी[4] दीनो फ्रेस्कोबाल्डी[5], चीनो दा पिस्टोइया[6] और लापो जियानी[7] हुए। इनमें प्रणय और धर्म की समष्टि और काव्य-शैली की प्रौढ़ता में सबसे महान् दाते हुआ।

१३वीं सदी के अन्त और १४वीं के आरम्भ में लिखी काव्यधारा उसी 'मधुर नयी शैली' से प्रभावित रही। उस काल लिरिक कविता की रचना काफी हुई, यद्यपि नीति और रूपकात्मक कविताओं का भी महत्त्व कुछ कम न था। उसका उदय विशेषतः फ्रांस और क्लासिकल साहित्य-चेतना के प्रभाव में हुआ। दाते के गुरु ब्रूनैटो लाटिनी[8] ने अपना वृहत् विश्वकोष तो फ्रैंच गद्य में लिखा, परन्तु नीतिपरक 'इल पेसोरेत्तो' (लघु निधि) नामक कविता इटैलियन में लिखी। फ्लोरेन्स के सेर दुरान्ते नामक कवि ने 'रोमन दे ला रोज' का इटैलियन अनुवाद 'इल फिओरे' (कुसुम, १२९०) नाम से किया। फ्रासेस्को दा वार्येरिनो[9] ने आचार-सबधी अनेक कविताएँ लिखीं, परन्तु दाते की कोमेडिया' (ल० १३००-२१, जो बाद में 'डिवाईन' विशेषण से युक्त हुई) इन सारी कृतियोमें असाधारण थी। दाते का यह प्रयास सर्वथा अनूठा था, उस लोक और काल में नितान्त अनजाना। इस कृति से वह अपने समकालीनो में असाधारण ऊँचा उठ गया। उसकी 'कोमेडिया' में विश्वकोष स्वप्न, भ्रमण, और रूपक—पहले की सारी साहित्य-प्रवृत्तियो का एकत्र समावेश हुआ।

गद्य की दिशा में लोक-कथाओं और ख्यातो के अनेक सग्रह प्रस्तुत हुए। साथ ही लैटिन और फ्रैंच ग्रन्थो के अनुवाद भी हुए। इतिहासकारिता तो अपनी दार्शनिक ऊँचाई को

---

१ Guittone d'Arezzo (१२२५-९३), २ Guido Guinizelli (१२४०-७६), ३ Dante Alighieri (१२६५-१३२१), ४ Guido Cavalcanti (१२६०-१३००), ५ Dino Frescobaldi (मृ० १३१७); ६ Cino da Pistoia (१२७०-१३३६); ७ Lapo Gianni; ८ Brunetto Latini (१२३०-९५), ९ Francesco da Barberino (१२६४-१३४८)

न छू सकी, परन्तु क्रानाका (क्रॉनिकल, तवारीख, १३१०-१२) में डीनो कोम्पाग्नी[१] ने अपने व्यक्तिगत वृत्तान्त को सुन्दर कलेवर दिया। भ्रमण के क्षेत्र में मार्कोपोलो[२] का अत्यन्त सुन्दर वृत्तान्त 'विआज्जी' (यात्राएँ, १२९८) है जिसमे उसकी लोमहर्षिणी यात्राओ का वर्णन हुआ है। उसका मूल उस महान पर्यटक ने फ्रेंच भापा मे लिखाया था, जिसका रुस्तिसियानो दा पीसा ने इटैलियन मे अनुवाद किया।

१४वी सदी मे साहित्य का केन्द्र फ्लोरेन्स हुआ और टस्कन भाषा इटली की अन्त -प्रान्तीय भाषा बनी। धीरे-धीरे स्थानीय बोलियो का विकास सुन्दर साहित्यिक शैली मे होने लगा। पहले उसमे लिरिक आये, फिर अन्य कविताएँ और अन्त मे गद्य। इसका कारण विशेपत आर्थिक था। १२५९ और १३४८ के बीच प्राय ९० वर्ष फ्लोरेन्स इटली की नयी आर्थिक नीति और औद्योगिक सक्रियता का केन्द्र बना रहा। उसके उस साहित्यिक गौरव का निर्माण तीन महाकाय साहित्यकारो ने किया—दाते, पैट्रार्क[३] और बोकाचो[४]।

दाते के युग ने पुरानी 'दोल्से स्तिट नुओवो' की शैली को हटाकर यथार्थ अनुभूति पर अवलम्बित सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को उसका स्थान दिया। इस नयी शैली का प्रधान प्रवर्तक पैट्रार्क था। उसने अपने लिरिको में अन्तर्निविष्ट दृष्टि के साथ ही बाह्य जगत् के उपमानो को भी चित्रित किया। साथ ही रूप की प्राजलता की ओर भी उसका ध्यान गया और उसके लिरिक उस दिशा मे सौंदर्य के प्रमाण बन गये। पैट्रार्क के बाद बोकाचो ने साहित्य का नेतृत्व किया।

मध्य १४वी सदी के काव्य-रूपक विशेषत दाते की 'कोमेडिया' से प्रभावित हुए। शुष्क विश्वकोष की परपरा में लिखे होने पर भी फाजिओ डेग्ली उबेर्टी[५] को 'दित्तामोन्दो' और फैडेरिगो फ्रेज़ी[६] का 'क्वाड्रे-रिज़ियो' चार राज्य—(१३९४-१४०३) उस शैली की ऊँची रचनाएँ हैं। विश्वकोष काव्य की परपरा मे ही दाते के प्रबल प्रति-द्वन्द्वी फ्रासिस्को स्टाबिली[७] की रचना 'ल' असेबि' प्रस्तुत हुई। गद्य की दिशा मे उस सदी का सबसे बडा लेखक बोकाचो था। आज के समीक्षको को उसका गद्य कुछ बोझिल लगता है परन्तु इटली मे उसके 'देकामेरान' की बडी ख्याति हुई और पिछली सदियो में विभिन्न भापाओ मे निरन्तर उसके अनुवाद होते रहे। इटैलियन गद्य मे उसकी वह कृति असाधारण महान् मानी जाती है। १४वी सदी की गद्य-रचनाएँ बहुत सरल होने से आज के पाठको को अधिकाधिक आकृष्ट करती जा रही है। उनकी सादगी और ताजगी रोजमर्रा

---

१ Dino Compagni (१२६०-१३२४), २ Marco Polo (१२४५-१३२४), ३ Francesco Petrarca Petrarch (१३०४-७४); ४ Giovanni Boccacio (१३१३-७५), ५ Fazio Degli Uberti (१३००-६७); ६ Federigo Frezzi (मृ० १४१६), ७ Francesco Stabili

के आधार लौकिक गीत ही थे। उनकी चेतना निश्चय ही अभिजातवर्गीय थी, परन्तु निचले सामाजिक स्तरों पर अपने गायन का आधार रखना उन्हें बुरा न लगा।

गायन के कार्यों और रोमांटिक गद्य सम्बन्धी दृष्टिकोण इटली की साहित्य-परम्परा में फ्रांस से कुछ काल पहले ही आ चुका था, इस ओर अन्यत्र संकेत किया जा चुका है। उसी परम्परा के अनुरूप लौकिक आधार पर गा कर लुइगी पुल्ची (१४३२-८४) ने अपना प्रबन्धकाव्य 'मोरगान्टे माजिओरे' रचा। पुल्ची का यह वीर-काव्य लोक-परम्परा का ही स्थानीय शौर्य के माध्यम से विकास करता है। उसमें हास्य और विनोद की भी पर्याप्त मात्रा है। पुल्ची लोकगायकों के प्रदर्शनों का अनुकरण कर अपनी रचना में स्थान-स्थान पर व्यंग्य और हास्य के स्थल उत्पन्न कर देता है। मैटियो मेरिया बोइआर्डो[1] का काव्य 'ओरलैन्डो इन्नामोरेटो' (प्रणयी रोलैंड) भी उसी परम्परा में है, यद्यपि उसकी टैकनीक पुल्ची की शैली से सर्वथा भिन्न है। साहित्य में एक दूसरी देशी शैली का प्रयोग फिओ बेलकारी,[2] लोरेन्जो, आदि ने किया। ये अपना विषय आरम्भ में ईसा के जीवन-मात्र से चुनते थे। फिर धीरे-धीरे अपने चयन का क्षेत्र और व्यापक बना इन्होंने पूरी बाइबिल से भी कथानक चुनना प्रारम्भ किया। पोलीजियानो ने तो अपने 'ओर्फिओ' (१४८०) के लिए प्लॉट सर्वथा लौकिक चुना।

दो धाराएँ

१५वीं सदी के अन्त में इटली की राजनीतिक और सामाजिक दशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ, जिससे स्वयं इटैलियन साहित्य वंचित न रह सका। फ्रैंच आक्रमण ने जिस युद्ध का इटली में सूत्रपात किया वह स्पेन और आस्ट्रिया के प्रादुर्भाव से और भी मारक सिद्ध हुआ। १४९४ से १५५९ तक युद्धों की परपरा किसी न किसी रूप में बनी रही और विदेशी सत्ता ने देश के आर्थिक जीवन को पगु कर सामाजिक समस्याओं की एक परपरा उपस्थित कर दी। अभिजात-कुलीय लेखकों का सम्पर्क निम्नवर्गीय स्तरों से सर्वथा टूट गया और दरबारों का जीवन घोर सिद्धान्तवादी वातावरण में कुण्ठित होने लगा। कला की टैकनीक सिद्धान्त रूप में दर्शन की गभीरता को पहुँच गई। परिणाम यह हुआ कि मानव अनुभूति की यथार्थवादी प्रेरणाएँ अब रचनाओं का आधार न बन सकीं। १६वीं सदी का दरबारी जीवन नितान्त कृत्रिम हो गया यद्यपि कुछ साहित्यकारों ने दरबारी होते हुए भी जनता की दिशा से अपना मुख सर्वथा न मोड़ा। इसी कारण इटैलियन साहित्य में अब दो धाराओं का प्रारम्भ हुआ, एक विचक्षण बौद्धिक अभिजात-कुलीय और दूसरी लौकिक परपरा की वाहिका। यह दूसरी निश्चय ही पहली की सत्ता से मुक्त न थी। उस पर उसका रोब गालिब था और गालिब रहा। फिर भी दूसरी परपरा के साहित्यिक

---

१ Matteo Maria Boiardo (१४४०-९४), २ Feo Belcari (१४१०-८०)

जन-बोलियो से अपनी प्रेरणा लेते हुए उनके माध्यम से अपना कृतीत्व सार्थक करते रहे। १६वी सदी के मानवतावाद के आन्दोलन की पृष्ठभूमि यही थी। लैटिन साहित्य के मॉडल इटैलियन साहित्य मे भी रखे जाने लगे और साहित्य को शुद्ध करने की प्रवृत्ति मे भाषा और शैली के क्षेत्र मे एक अत्यन्त सकीर्ण मनोवृत्ति का आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन के नेताओ मे प्रधान पिएट्रो बैम्बो[१] था, जिसने अपने व्यक्तित्व के प्रभाव के साथ ही लिरिक काव्य और अन्य क्षेत्रो मे अपनी रचनाओ के उदाहरण प्रस्तुत कर उस शुद्ध-शैलीवादी आन्दोलन को शक्ति और सकीर्णता प्रदान की। सरल और अनायास साहित्य-रचना पर यह बुद्धिवाद का फौलादी शिकजा था।

भाषा

वैम्बो के शुद्ध-शैलीवाद ने जब १४वी सदी की टस्कन भाषा-परपरा के अनुकरण पर जोर दिया तो भाषा के प्रश्न पर एक विवाद उठ खडा हुआ क्योकि इधर जो दरबारो के प्रोत्साहन से एक नयी भाषा-शैली का उदय हो गया था, उससे वैम्बो के आन्दोलन में सघर्ष अनिवार्य हो गया। उस काल जो भाषा-सबधी समस्या सामने आई उसको इटली के साहित्यिक 'क्वेस्टिओने डेला लिंगुआ' (भाषा का प्रश्न) कहते थे भापा-सबधी वह विवाद प्राय ३०० वर्ष तक चलता रहा। उसने स्टैन्डर्ड इटैलियन की सारी समस्याओ और प्रश्नो को खोलकर रख दिया। प्रधान समस्याएँ दो थी—(१) साहित्य की भाषा प्राचीन (१४वी सदी की) अथवा समसामयिक हो? (२) वह भाषा टस्कन हो, अथवा टस्कन से भिन्न हो? १६वी सदी मे एक और उदार विचार ने समसामयिक और प्राचीन दृष्टिकोणो के औचित्य को तो स्वीकार किया ही, स्टैन्डर्ड इटैलियन का मूल आधार भी टस्कन को माना। इस उदार-भाषा-सिद्धान्त के प्रवर्तको मे प्रधान प्रसिद्ध राजनीति-दार्शनिक निकोलो मेकिया-वेली[२] था। भाषा-सबधी इस विवाद मे अनेक मेधावी चिन्तको और साहित्यिको ने भाग लिया। परिणाम स्वरूप पर्याप्त साहित्य इटैलियन में भाषा के रूप के सम्बन्ध में ही प्रस्तुत हो गया। जिस दिशा मे पिएट्रो बैम्बो के शुद्ध शैलीवाद की विजय हुई वह लिरिक काव्य था। उसके अनेक अनुयायियो ने पैट्रार्क के अनुकरण मे नितान्त प्राजल भाषा में लिरिक लिखे यद्यपि उनमे मूल अथवा विषय सबधी ऊँचाई तनिक न थी। इस प्रकार के लिरिककारो के कुछ नाम यह है—फ्रासिस्को मेरिया मोल्ज़ा[३], एजलो दि कोस्टान्ज़ा[४], फ्रासिस्को कोपेटा दे वेकूटी[५], बेरार्डिनो रोटा[६], लुइज़ी टान्सिलो[७], गालेज़ो दि टार्सीआ[८] और कवियित्रियाँ—

---

१ Pietro Bembo, २ Niccolo Machiavelli, ३ Francesco Maria Molza (१४८९-१५४४), ४ Angelo di Constanza (१५०७-९१), ५ Francesco Coppetta dei Beccuti (१५०९-५३), ६ Berardino Rota (१५०९-७५), ७ Luigi Tansillo (१५१०-६८), ८ Galezzo di Tarsia (१५२०-५३)

वेरोनिका गाम्बारा[1] तथा विट्टोरिया कोलोना[2]। परन्तु १६वी सदी के वास्तविक प्रधान लिरिक कवि थे माइकेलैंजलो बुओनारोटी[3] और वेनिस की प्रसिद्ध वारागना गास्पारा स्टैम्पा (ल० १५२३-५४)। इनमे पहले ने अपनी कृतियो मे न्यो-प्लैटोनिक सिद्धान्तो का पोषण किया और विट्टोरिया कोलोना के प्रति अपने प्रणय के उद्गार मुखरित किये और दूसरी के लिरिको मे काउण्ट कोलालटिनो दि कोलाल्टो के प्रति प्रेम का उद्गीरण हुआ।

इतिहास

कहना न होगा कि शुद्ध-शैलीवादी दृष्टिकोण की रचनाएँ भार-बोझिल और कृत्रिम हुई, क्योकि उनमे प्राय प्राचीनो की नकल करने की प्रवृत्ति विशेष आदर पाती थी। इसी परपरा मे बैम्बो ने 'हिस्टोरिया वेनेटा' (वेनिस का इतिहास), जिआम्बु-लारी[4] ने 'स्टोरिया डेल योरपे' (यूरोप का इतिहास) एज्लो दि कोस्टान्जा ने 'इस्टोरिया डेल रेज्नो दि नापोली' (नेपल्स के राज्य का इतिहास) आदि लिखे। मेकियावेली की ऐतिसाहिक और राजनीतिक कृतियो मे भी क्लासिकल अनुसरण हुआ है परन्तु लेखक की वैयक्तिक शैली और दृष्टिकोण उनमे अनुकरण की प्रवृत्ति के ऊपर उठ गये है। यही वक्तव्य फ्रासेस्को गुइसियाडिनी[5] की रचनाओ 'रिकार्डो पोलिटिसी ए सिविलि' राजनीतिक और नागरिक सस्मरण (१५२७-३०) और स्टोरिया द' इटालिया' (१५३७-४०) के सबध में भी उपयुक्त है।

जीवन-चरित्र

१६वी सदी मे अनेक जीवन-चरित भी लिखे गये, जिनमें सबसे महत्व का ज्योंजियो वासारी[6] का चित्रकारो, मूर्तिकारो और वास्तुकारो के चरित (१५४३-५१) है। बेंवेनूटो सेलेनी[7] की 'वीटा' (आत्मकथा) १६वी सदी के गद्य की एक सुघड कृति है। उसमे जीवन की ताजगी शैली के चातुर्य से सर्वत्र लक्षित होती है। भाषा और शैली का सौदर्य विशेषत जेली[8] की कृतियो—'आई० काप्रिसी डेल बोटाइओ' और 'सिर्स'—में भरपूर है। जेली फ्लोरेंस का प्रसिद्ध कलावन्त था।

उपन्यास

१६वी सदी के उपन्यास अधिकतर बोकाचो की परपरा और शैली में लिखे गये।

---

१ Veronica Gambara (१४८५-१५५०), २ Vittoria Colonna (१४९२-१५४७), ३ Michaelangelo Buonarroti (१४७५-१५६४), ४ Giambullari, ५ Francesco Guicciadini , ६ Georgio Vasari (१५११-७४), ७ Benvenuto Cellini (१५००-७१), ८ G B Gelli (१४९८-१५६३)

उनका एक सग्रह मैटियो वाडेंगो[1] ने प्रस्तुत किया। इन उपन्यासो के कथानक नितान्त यौन है, अनेकार्थ मे घिनौने भी, परन्तु निस्सदेह वे १६वी सदी की इटली के अभिजात-कुलीय समाज और दरबारो का रहन-सहन, आचार-आदर्श प्रकट करते है। आन्टन फ्रासिस्को ग्राज़िनी[2] (इललास्का) ने अपनी कृति 'सेने' (१५४०-४७) में फ्लोरेंस के छिछले जीवन का एक चित्र खीचा। वह स्वय सुन्दर व्यग्यकार और कॉमेडियो का लेखक था। इनके अतिरिक्त कुछ और भी उपन्यास लिखे गये जो शैली और मौलिकता दोनो दृष्टि से नगण्य थे। वोकाचो की परपरा से भिन्न कुछ स्वतन्त्र उपन्यास भी तब लिखे गये, उनमें लुइज़ी दा पोर्टो[3] का 'रोमियो ए जूलिएटा' शेक्सपियर के 'रोमियो और जूलियट' के आधार पर वना। मेकियावेली ने भी इस प्रकार का एक स्वतत्र उपन्यास—'नोवेला दि वैल्फागोर आर्सिडियावोलो'—लिखा। जैसा ऊपर कहा जा चुका है, १६वी सदी के उपन्यास सर्वथा दुराचरण और यौन-दृश्यो से भरे थे। जिन थोडे उपन्यासकारो नें उस प्रवृत्ति से विद्रोह कर लिखने का प्रयत्न किया, उनके उपन्यास अरोचक सिद्ध हुए। इन उपन्यासकारो मे प्रधान सेबास्टिआनो एरिज़ो[4] था।

नाटक

१६वी सदी की नाटक रचना मे ट्रैजेडी और कॉमेडी का पुनरावर्तन हुआ। अरिस्ट्रॉटल की 'पोएटिक्स' और होरेस की 'आर्स पोएटिका' उस दिशा में पथ-प्रदर्शक बनी। इसी प्रकार क्लासिकल दृष्टिकोण के अनुसार नाटक सबधी काल, स्थानादि की एकाइयाँ भी स्वीकार कर ली गई। उस काल की ट्रैजेडी रचनाओ मे विशेष गणना ट्रिसीनो[5] की 'सोफोनिस्वा' (१५१५), जिओवानी रुसेलाई[6] की 'रोज़मुन्डा', 'ज़िराल्डी[7] के 'ओरबेके (१५४१), स्पेरोनी[8] के 'कानास' (१५४२) और पिएट्रो आरेटीनो[9] की 'ओराज़िया' (१५४६) की है यह रचनाएँ अपनी वोझिल शैली और बर्बर भाव निदर्शन चरित्र-विश्लेपण की कमी के अतिरिक्त भी १६वी सदी के तत्सवधी साहित्य मे सारे यूरोप के अनुसरण के लिए मॉडल बन गई। कॉमेडी रचनाएँ भी साधारणत क्लासिकल मॉडलो पर ही अवलबित हुई। कथानक तथा शैली की दृष्टि से तो ये ट्रैजेडी कृतियो से कही अधिक समसामयिक जीवन के निकट थी। इन्होने उनकी तरह क्लासिकल अनुसरण के उत्साह मे मौलिकता और आविष्कार का गला न घोटा। कॉमेडी के क्षेत्र मे दो कृतियाँ उस काल वडी प्रसिद्ध हुई, एक तो मेकियावेली की 'मान्ड्रागोला' (ल० १५१३), दूसरी जिओरडानो

---

१ Matteo Bandello (१४८५-१५६१), २ Anton Francesco Grazzini (१५०३-८४); ३ Luigi da Porto (१४८६-१५१९), ४. Sebastiano Erizzo, ५ Trissino, ६ Giovanni Recellai (१४७५-१५२५), ७ Giraldi, ८ Speroni, ९ Pietro Aretino (१४९२-१५६६)

अवलंबित हुआ। इटली की ही, प्राचीन साहित्यिक सिद्धान्तो की आलोचनात्मक व्याख्या फ्रास आदि के समीक्षा-शास्त्र का आधार बनी।

वैज्ञानिको पर अत्याचार

परन्तु इटली का यह गौरव दीर्घकाल तक अक्षुण्ण न बना रह सका। साहित्य और बौद्धिक दिशा मे वह अगली सदियो मे हीन हो गया। वैज्ञानिक प्रवृत्ति की बहुलता ने उसके साहित्यिको मे व्यक्तित्व की ऊँचाई न होने दी और आर्थिक ह्रास ने उस दिशा मे और भी कठिनाइयाँ उपस्थित कर दी। यथार्थ धीरे-धीरे उनकी दृष्टि से दूर होता गया और धर्म का दुराग्रह, सुधार-विरोधी आन्दोलन तथा उसके अत्याचारी एजेटो ने विचार-स्वातन्त्र्य पर गहरा आघात किया। बौद्धिक स्वतन्त्रता, मौलिक निर्भीकता और साहित्यिक अभिव्यजना में ईमानदारी तथा सादगी इटली से उठ गई। जिन थोडे कर्मठ और निर्भीक साहित्यकारो ने अपना दृष्टिकोण न बदला, उनको भयानक दण्ड भुगतने पडे। 'इल कान्डेलइओ' तथा अन्य अनेक दार्शनिक ग्रथो के रचयिता प्रसिद्ध चिन्तक ज्योरडानो ब्रूनो को काफिर कहकर रोम मे जला डाला गया और कालाब्रिआ के दार्शनिक सुधारवादी तथा 'ला चित्तादेल सोले' के रचयिता टोमासो काम्पानेला[1] को लम्बी कैद भुगतनी पडी। इसी प्रकार फ्लोरेस के प्रसिद्ध गणित ज्योतिषी गालीलिओ गालीलेई[2] को मजबूर होकर अपने ही सिद्धान्तो का प्रतिवाद करना पडा और वेनिस का फ्रा पाउलो सार्पी[3] अपने नगर राज्य के सरक्षण मे ही धार्मिक सत्ता के अत्याचार का शिकार होते-होते बचा। परिणाम प्रकट ही था। ललित साहित्य मे प्रगति की धारा तो रुक ही गई, १६०० ई० के बाद उसमे प्रगति भी होने लगी । मौलिकता की खोज ने इतना जोर पकडा और अलकरणन ने कवियो को इतना आकृष्ट किया कि शैली नितान्त अस्वाभाविक हो गई और भाषा का प्रवाह सर्वथा बोझिल हो गया । वस्तुत १७वी सदी की इस साहित्यिक कृत्रिमता का प्रभाव यू ोप के सारे देशो पर पडा। स्पेन मे वह कृत्रिम शैली गो गोरिज्म कहलायी, इग्लैंड मे यूफूइज्म, फ्रास मे प्रेसिओसीटे और जर्मनी मे बारोक। इटली में मारिनो के नाम पर उसका नाम मारिनिज्म पडा। मारिनो के अनुयायियो में क्लाउडिओ आकीलीनी[4], जिरोलामो प्रेटी[5] और मान्सो[6] भी थे। मान्सो ने तो उस मारिनी, बोरोक कृत्रिमता को पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया।

---

१ Tommaso Campanella (१५६८-१६३०), २ Galileo Galilei (१५६४-१६४२), ३ Fra Paolo Sarpi (१५५३-१६३३), ४ Claudio Achilini (१५७४-१६४०), ५ Girolamo Preti (१५८२-१८२६), ६ G B Manso (१५६१-१६५४)

: ३ :

सत्रहवीं-अट्ठारहवीं सदी

१७वी सदी की ऐपिक काव्य-साधना में १६वी सदी की परपरा ही जाग्रत रही। अनुकरण और नीरस प्रयोग चलते रहे। आरिओस्टो और टैस्सो की कृतियो के विशेष अनुकरण हुए। फ्रान्सेस्को ब्रासियोलीनी[१] ने 'क्रोसे राकिस्टाटा' और जिरोलामा ग्राज़ियानी[२] ने 'काकिस्टो दि ग्रानाटा' टैस्सो के ही अनुकरण में लिखे। व्यग्य काव्यो का उदय निश्चय ही तत्कालीन मौलिक सूझ का परिणाम था, यद्यपि फोलेगो ने उस परपरा का भी १६वी सदी में ही प्रारम्भ कर दिया था। उसका विकास ब्रासियोलीनी ने अपने 'शेरनो डेग्ली देई' और आलेसाड्रो टासोनी[३] ने अपनी 'सेकिया-रापिटा' (१६२२) में किया।

गद्य की दिशा में भी मारिनी दृष्टिकोण ने अपना प्रभाव डाला। जियान्फ्रासिस्को लोरेडानो[४] की 'ला डियानी' (१६२७) और जिओवानी आम्ब्रेजियो मारिनी[५] का 'इल कालोआन्ड्रोफडेले' उसके प्रमाण है। बोकाचो के भी तब कुछ अनुकरण हुए, जिनमें प्रधान जिओवानी साग्रेद्रो[६] का 'ल' आरकाडिया इन ब्रेन्टा' (१६६७) था। उस काल का दूसरा उल्लेखनीय उपन्यासकार जियाम्बाटिस्टा वासीले[७] था, जिसने 'इल पेन्टामेरोने' लिखा। उसने नेपल्स की बोली में लोक-कथाओ की प्रभूत सामग्री का उपयोग किया, परन्तु उस काल सुन्दरतम गद्य का प्रयोग ललित साहित्य में नही, राजनीतिक आदि चिन्तनशील अथवा आलोचना-साहित्य मे हुआ। गालीलियो और सार्पी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। अन्य प्रधान लेखक ट्रायानो वोकालीनी[८] और पाओलो सेग्नेरी[९] थे। इनमे पहला बडा निर्भीक और शक्तिशाली साहित्यिक तथा राजनीतिक आलोचक था। उसकी 'रागुआग्ली दि पारनासो' और 'पिएट्रा डेल पारागोने पोलीटिको' इस दिशा में प्रमाण है। वोकालीनी विशेषत स्पेनी अत्याचारो पर अपने निर्भीक प्रहार से प्रसिद्ध हुआ। सेग्नेरी धार्मिक उपदेशक था। उसके प्रवचनो और धार्मिक कृतियो मे गजब की शक्ति है। एक अज्ञातनामा लेखक ने 'फिलीपिके' नामक ग्रन्थ लिख कर स्पेनी शासको पर गहरी चोट की। अनेक पर्यटको के सुन्दर विवरण भी तब प्रकाशित हुए। सस्मरणो के रूप में वे विशेष प्रसिद्ध हुए।

---

१ Francesco Bracciolini (१५६०-१६४५), २ Girolama Graziani (१६०४-७५), ३ Alessandro Tassoni (१५६५-१६३५), ४. Gian Francesco Loredano (१६०७-६१), ५ Giovanni Ambrogio Marini (१५९४-१६५०), ६ Giovanni Sagredo (१६१७-८२), ७ Giam Battista Basile (१५७५-१६३२), ८ Traino Boccalini (१५५६-१६१३), ९ Paolo Segneri (१६२४-९४)

उनमें प्रधान पिएट्रो डेला वाले[1] एनरिको काटेरीनो डाविला[2] और गुइडो बेन्टिओ-ग्लिओ[3] थे।

१७वी सदी मे भी पहले की ही भांति नाटक क्लासिकल नाटको के अनुकरण में लिखे गये। कहने की आवश्यकता नही कि रस का परिपाक उनमे न हो सका। कार्लो डोटोरी[4] का 'अरिस्टोडेमो' (१६५७) इसका प्रमाण है। माइकेल एन्जलो बुओना-रोटी[5] का 'ला फिएरा' निश्चय ही पांच एक्टो मे फ्लोरेंस के दृश्यो का यथार्थवादी वर्णन हुआ है। स्पेनी कॉमेडी का प्रभाव भी इस सदी मे धीरे-धीरे इटली के रगमच पर होने लगा और अनेक कृतियां उस प्रभाव के अनुकूल भी प्रस्तुत हुई। जिआसिन्टो आन्ड्रिया सिको-ग्नीनी[6] की 'कोन्वीटाटो दि पिएट्रा' इसी अनुकरण मे लिखी गई। डॉन जुआन सम्बन्धी कथानको का प्रारम्भ भी इटेलियन मे इसी काल हुआ। उस काल की नीरस रचनाओ मे एकमात्र अपवाद गुइडूबाल्डो बोनारेल्ली[7] का 'फिली दि सीरो' है जो पशुचारण परपरा मे प्रस्तुत हुआ। सदी के अन्त मे पशुचारण सम्बन्धी शैली 'मैलोड्रामा' अथवा सगीत-प्रधान 'ओप्रा' में घुलमिल गई। मैलोड्रामा का आविष्कार वस्तुत १७वी सदी मे ही हुआ। १६वी सदी के अन्त मे ही फ्लोरेंस के सगीतकारो के एक गिरोह 'कामेराटा' ने ग्रीक ड्रामा के गायनो के कुछ प्रयोग किये थे। उस दिशा में 'डाफ्ने' (१५९९) और 'यूरीडाइस' (१६००) की रचना में कवि ओटेवियो रिनुसिनी[8] ने गीतकार इयाकोपो पेरी[9] की सहायता की, ओप्रा बडी शीघ्रता से लोकप्रिय हो चला। इटली मे उस कला के अद्भुत प्रचार का श्रेय विशेषत प्रतिभाशाली गायक क्लाउडिओ मोन्टेवेर्डी[10] को है। इटेलियन ओप्रा अपने आवश्यक परिवर्तनो के साथ १७०० ई० तक सारे यूरोप मे फैल गया। १७वी सदी की एक और रगमचीय शैली, जो बडी लोकप्रिय हुई, 'कॉमेडिया डेल आर्टे' कहलाती थी। दृश्यो की एक विशेष 'सैटिंग' की वह कॉमेडी होती थी, जिसे कम्पनियां खेला करती थी। उसका प्रत्येक दृश्य अभिनेताओ की प्रत्युत्पन्न-बुद्धि पर निर्भर करता था। ये खेल भारत के गांवो की भणैती और नकल से मिलते थे। इनका प्रदर्शन सर्वथा आचारहीन और कुरुचिपूर्ण होता था, परन्तु था यह अत्यन्त लोकप्रिय। 'ओप्रा' की ही भाँति इसका प्रचार भी यूरोप मे इटली की कम्पनियो ने किया। ये कम्पनियां अपना ठाठ-बाट लिए यूरोप के सारे देशो मे प्राय सर्वत्र घूमा करती थी।

---

१ Pietro Della Valle (१५८६-१६५२), २ Enrico Caterino Davila (१५७६-१६३१), ३ Guido Bentivoglio (१५७९-१६४४), ४ Carlo Dottori (१६१८-८६), ५ Michelangelo Buonarroti (१५६८-१६४०), ६ Giacinto Andrea Cicognini (१६०६-६०), ७ Guidu Baldo Bonarelli (१५६३-१६०८), ८ Ottavio Rinuccini (१५६४-१६२१), ९ Iacopo Peri (१५६१-१६३३), १० Claudio Monteverdi (१५६७-१६४३)

लिरिक

सत्रहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे मारिनी शैली का ह्रास हो चला और उत्तरकालीन लिरिक कवियो ने अपनी कुछ सीमाएँ और मर्यादाएँ बाँध ली। आरेज़ो के फ्रांसिस्को रैडी[1] ने, जो डाक्टर, वैज्ञानिक और आरेटाइन वोली का खोजी था, वीस वर्ष मे 'वैको इन टोस्काना' (वैकस टसकनी मे) समाप्त किया। उसमे आपान के देवता वैकस के अमित पान का वर्णन है। उसकी शैलो सजीव है। फ्लोरेस के विन्सेन्जो दा फिलिकाइया[2] और पाविया के आलेसाड्रो गुइडी[3] ने मारिनिज्म के बाहुल्य से तो अपनी कविता स्वतत्र कर ली, पर वे उसे कृत्रिम अलकार से मुक्त न रख सके। कार्लो मेरिया माज्जी[4] ने इटैलियन मे सुन्दर देश-प्रेम से सनी कविताएँ और मिलानी बोली मे कॉमेडी लिखी। सदी के प्राय अन्त मे (१६९०) रोम मे एक अकैडेमी—आर्काडिया—की प्रतिष्ठा हुई। इसका प्रधान उद्देश्य इटैलियन कविता को आडम्बर और कुरुचि से मुक्त कर शुद्ध मर्यादा मे प्रतिष्ठित करना था। इसके सदस्यो मे प्रसिद्ध आलोचक जियान विन्सेन्जो ग्राविना[5] और जियोव न मेरियो क्रेसिम्बेनी[6] भी थे। इस अकैडेमी की बैठको में भद्र नर और नारी गडरियो (पशु-पालको और पशु-पालिकाओ) के वेश मे कविताएँ सुनाते थे। इस विधि से थियोक्रीटस, वर्जिल और सानाज़ारो की प्राचीन परपरा का पुनर्नवीकरण हुआ। अगली सदी में तो इसकी शाखाएँ समूचे इटली मे स्थापित हो गई। मधुर लिरिको मे दैनिक जीवन प्रतिबिबित हुआ। यद्यपि उनकी साहित्यिक ऊँचाई का दावा नही किया जा सकता, फिर भी जेनोआ का कवि और अकैडेमी का सदस्य कार्लो इनोसेन्ज़ो फ्रूगोनी[7] अपने सुन्दर लिरिको के लिए विख्यात हुआ।

अकैडेमी की क्रियाशीलता का प्रभाव और क्षेत्रो पर भी पडा। ओप्रा की हेय दशा को सुधारने का भी प्रयत्न हुआ और कविता तथा गायन में परस्पर निकटतम सामजस्य स्थापित करने का आयोजन हुआ। वेनिस के एक विद्वान् आलोचक आपोस्टोलो ज़ेनो[8] ने उस दिशा मे कुछ अच्छे प्रयोग किये, यद्यपि उसकी कृतियो मे कुछ दम न था। प्रसिद्ध ओप्रा कवि पिएट्रो मेटास्टासियो[9] ने भी भावुकता और वीर कृत्यादि के योग से नई शैली को प्रोत्साहन दिया।

---

१ Francesco Redı (१६२८-९८), २ Vıncenzo da Fılıcaıa (१६४२-१७०७); ३ Allesandro Guıdı (१६५०-१७१२), ४ Carlo Marıa Maggı (१६३०-९९), ५ Gıan Vıncenzo Gravına (१६६४-१७१८), ६ Gıovan Marıo Crescımbeni (१६६३-१७२८), ७ Carlo Innocenzo Frugonı (१६९२-१७६८), ८ Apostolo Zeno (१६६८-१७५०), ९ Pıetro Metastasıo (१६९८-१७८२)

गद्य

गद्य के क्षेत्र मे सुन्दरतम कृतियाँ शुद्ध साहित्य से इतर थी। रेडी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। भौतिक विज्ञान के पण्डित लोरेंजो मागालोट्टी[1] ने अपने ('प्राकृतिक विज्ञानो में प्रयोग') मे सुन्दर गद्य रचना की। विज्ञान के क्षेत्र मे मार्सेलो माल्पीघी[2] और आन्टोनियो वालिस्नियेरी[3] की रचनाएँ भी प्राजल थी। जेसुइट पादरी डानिएलो बर्टोली[4] ने धार्मिक ग्रन्थो के अतिरिक्त नितान्त सुन्दर गद्य मे साहित्य सबधी आलोचनात्मक रचनाएँ की। सामग्री की खोज से सम्पन्न इतिहास सम्बन्धी रचनाएँ भी अनेक हुई। इनके प्रणेताओ मे प्रधान लुडोविको आन्टोनियो मुराटोरी[5] क्रेसिम्बेनी, पिएट्रो जियानोने[6] और विको थे। मुराटोरी ने मध्यकालीन इटली के इतिहास पर असाधारण प्रकाश डाला। क्रेसिम्बेनो ने साहित्य का बृहद् इतिहास प्रस्तुत किया। जियान ने धार्मिक विश्वास के विपरीत जो वैज्ञानिक पद्धति से नेपल्स के कानून, रहन-सहन, सस्कृति आदि का निर्भीक इतिहास लिखा, उसके बदले उसे ग्यारह वर्ष स्वदेश मे निर्वासित रहना पडा और जीवन के अन्तिम बारह वर्ष कैद भुगतनी पडी। विको ने उससे भी अधिक क्रान्तिकारी विचारो से इतिहास-दर्शन की व्याख्या की, परन्तु कानून का शिकजा उसे न छू सका।

साहित्यिक विद्रोह

अट्ठारहवी सदी के मध्य और उत्तर काल मे इटली के सास्कृतिक और राजनीतिक जीवन में क्रान्तिकारी जागरण हुआ। अनेक राजनीतिक सन्धियो के कारण स्पेन का शिकजा इटली से हट गया और इटली पर्याप्त मात्रा मे स्वतत्र हो गया। इटली का जीवन अभिजात-कुलीय यातनाओ से आक्रान्त था। साथ ही उस पर पादरियो की सत्ता का राहु भी सवार था। दोनो मरणोन्मुख होते हुए भी नागरिक और ग्राम्य-जीवन पर काफी हावी थे। अब दोनो के विरुद्ध इटली मे विद्रोह की लहर उठी। फ्रास और इग्लैण्ड की उदारवादी साहित्यिक राजनीतिक-दार्शनिक चेतना से इस विद्रोह को बडी शक्ति मिली। फ्रास की अनेक राजनीतिक-सास्कृतिक क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो ने इटली को अपना गढ बनाया। फिर १७५८-७८ में प्रसिद्ध विश्वकोष के इटैलियन सस्करण ने तो उसको विशेष प्रोत्साहित किया। फ्रासिस्को अल्गारोट्टी[7] ने विज्ञान आदि की खोजो को लोकप्रिय बनाने में बडी सहायता की। वह वोल्टेयर और फ्रेडरिक द्वितीय का मित्र था। वह महान् यात्री भी था और महिलाओ के लिए न्यूटनवाद सम्बन्धी उसका ग्रन्थ (१७३७) गुरुत्वाकर्षण पर

१ Lorenzo Magalotti (१६३७-१७१२), २ Marcello Malpighi (१६२८-९४); ३ Antonio Vallisnieri (१६६१-१७३०), ४ Daniello Bartoli (१६०८-८५), ५ Lodovico Antonio Muratori (१६७२-१७५०), ६ Pietro Giannone (१६६८-१७४३), ७ Francesco Algarotti (१७१२-६४)

एक नितान्त सरल और आशुगम्य रचना थी। निर्भीक उदार चेतना के कुछ अन्य अग्रणी नेपल्स मे थे। अर्थशास्त्री आटोनियो जेनोवेसी[१] अर्थशास्त्री, साहित्यिक और कोषकार फर्डीनान्डो गालियानी[२] कानून के पण्डित फ्रासिस्को मेरियो पेगानो[३] तथा गीटानो फिलाजेरी[४] के नाम उस दिशा मे विख्यात है। मिलान मे भी तब काफी ज्ञान-विज्ञान की साधना हुई। पिएट्रो वेरी[५] और सेजारे बेकारिया[६] वहाँ उस दल के सदस्य थे, जिनका पत्र 'इल काफे' (१७६४-६६) आर्थिक, सामाजिक और साहित्यिक सुधार का प्रबल पोषक बना। बेकारिया ने अपराध और दण्ड सम्बन्धी अपने ग्रथ मे यातना और प्राण-दण्ड का घोर विरोध किया।

साहित्यिक क्षेत्र में क्लासिक-शैली का प्रबल विरोध हुआ, वैयक्तिक चेतना का विशेष विकास हुआ। सावेरियो बेटिनेली[७] ने वर्जिल सम्बन्धी पत्र (१७५७) और अग्रेजी पत्र (१७६६) तर्क, रुचि और स्पष्टता के नाम पर दाते और बाद के साहित्य पर प्रबल आघात किया। जिउसेपे बारेट्टी[८] ने अपने साहित्यिक पत्र 'ला फ्रूस्टा लेटेरारिया' (साहित्यिक कोडा—१७६३-६४) मे क्लासिक परपरा का विरोध करते हुए विदेशी साहित्यकारो तथा यथार्थ जीवन से अधिकाधिक परिचय का आन्दोलन शुरू किया। निस्सन्देह पुराण-पन्थी साहित्यिक परपरावादियो ने इस प्रवृत्ति का सबल प्रतिवाद किया। गास्परे गोज़ी[९] ने अपने 'वेनिसियन गजट' और 'वेनिसियन ऑब्जर्वर' में प्राचीनतावाद का समर्थन किया।

सोलहवी सदी से ही भाषा-सम्बन्धी वाद-विवाद चल रहे थे, सत्रहवी-अट्ठारहवी सदियो में भी वे इटली के साहित्यागन मे गूँजते रहे। अब एक और भी समस्या आ प्रस्तुत हुई—विदेशी शब्दो की। अनेक भाषाओ—विशेषत फ्रेंच—के शब्द इटैलियन मे प्रभूत मात्रा मे प्रयुक्त होने लगे थे, जिनके पक्ष-विपक्ष दोनो मे प्रबल प्रक्रिया हुई। मेल्कयोरे सेजारोट्टी[१०] के से प्रगतिशील विचारको ने उनके उचित मात्रा में अपनी भाषा मे प्रवेश का तो स्वागत किया, परन्तु वर्तमान इटैलियन का आधार टसकन ज़बान को ही माना (सेज़ारोट्टी का—'भाषा का दर्शन'—१७८५)। उस दिशा मे भी शुद्धिवादी आलोचको ने अपने गहरे रूढिवादी दृष्टिकोण का विकास किया। जियान फ्रासेस्को गालीनी नापियोने[११] ने इटैलियन भाषा के गुण और प्रयोग सम्बन्धी ग्रन्थ (१७९१) लिखे, जो इस दृष्टिकोण को विशेषत प्रकट करते है।

---

१ Antonio Genovesi (१७१२-६९), २ Ferdinando Galiani (१७२८-८७), ३ Mario Pagano (१७४८-९९), ४. Gaetano Filangeri (१७५२-८८); ५ Pietro Verri (१७२८-९७), ६ Cesare Beccaria (१७३८-९४); ७ Saverio Bettinelli (१७१८-१८०८), ८ Giuseppe Baretti (१७१९-८९), ९ Gaspare Gozzi (१७१३-८६) १० Melchiorre Cesarotti (१७३०-१८०८) ११ Gian Francesco Galeani Napione (१८वी सदी)

शुद्ध साहित्य के सुधार में तीन लेखक विशेष प्रयत्नशील थे—कार्लो गोल्डोनी,[1] जिउसेपे पारीनी[2] और विटोरियो आल्फियेरी[3]। इनमें कोई असाधारण प्रतिभा का व्यक्ति न था, परन्तु उनकी कृतियों की आचार-चेतना और यथार्थ निरूपण निश्चय ही तब का अनजाना था। पिछले दोनों रचयिताओं की ट्रैजेडी और पहले की कामेडी ने तत्कालीन गिरी और निरन्तर गिरती जाती इटली की साहित्यगत सामाजिक आचार-व्यवस्था को प्राय सँभाल लिया। उनकी यह प्रवृत्ति राजनीतिक-चेतना के अनुकूल ही थी। वरन् साहित्यिकों की आचार-शिला निरन्तर धसती जा रही थी। उसमें अपवाद केवल सुन्दर हास्यकर कविताओं और लोक-नाटकों के रचयिता कार्लो गोज़ी[4] तथा 'बोलने वाले पशु' के व्यंग्यकार जी० बी० कास्टी[5] थे।

काव्य

फ्रांसीसी राज्य-क्रान्ति से स्वतंत्रता और एकता की आशा हुई, परन्तु नैपोलियन की विजयों और स्वार्थ-नीति ने इटली को निराश कर दिया। अट्ठारहवीं सदी में उसके साहित्य पर विदेशी साहित्यों का प्रभूत प्रभाव पड़ा। उसमें अनेक अनुवाद भी प्रस्तुत हुए। बेर्टोला ने जैस्नर का अनुवाद किया, सेजारोट्टी ने ओसियन की कविताओं का और आलेसान्ड्रो वेरी[6] ने शेक्सपीयर के 'हैम्लेट' और 'ऑथेलो' के। वेरी ने अपनी रोमन रातें सम्बन्धी ग्रंथ में यंग के 'नाइट थॉट्स' का अनुकरण किया। इपोलिटो पिन्डेमोन्टे[7] ने 'ओडिसी' का अनुवाद समाप्त कर टामस ग्रे की 'एलेजी' का अनुकरण अपनी अपूर्व कृति 'सेमैट्रीज' (१८०६) में किया। भग्न मनोरथ अनेक देश-प्रेमी लेखकों ने अपनी चेतना तत्कालीन कृतियों में व्यक्त की। इनमें निरन्तर बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों ने अव्यवस्था उत्पन्न कर दी। इनमें प्रधान 'ला बास्विलियाना', 'प्रोमेटियो', 'ला माशेरोनियाना' और 'इल बार्डो डेला सेल्वा नेरा' का रचयिता विन्सेन्जो मोन्टी[8] था, जिसका दृष्टिकोण सत्ता के अनुकूल कभी फ्रेंचानुगत, कभी फ्रैंच-विरोधी, और कभी आस्ट्रिया-साम्राज्यवादी हो जाता था। सम्भवत उसकी सुन्दरतम रचना 'इलियड' का अनुवाद थी। ऊगो फोस्कोलो[9] का कवित्व निर्भीक और देश-प्रेमपरक था, यद्यपि इसी कारण उसे अनेक बलिदान करने पड़े। उसका निजी जीवन अत्यन्त संघर्षमय हो गया और उसे निर्वासित भी होना पड़ा।

जन-बोली-साहित्य इस काल पर्याप्त फूला-फला। उस क्षेत्र में अनेक समर्थ कृती

---

१ Carlo Goldoni (१७०७-९३) २ Giuseppe Parini (१७२९-९९) ३ Vittorio Alfieri (१७४९-१८०३) ४ Carlo Gozzi (१७२०-१८०६) ५ G B Casti (१७२४-१८०३) ६ Alessandro Verri (१७४१-१८१६) ७ Ippolito Pindemonte (१७५३-१८२८) ८ Vincenzo Monti (१७५४-१८२८) ९ Ugo Foscolo (१७७८-१८२८)

हुए। उनमें प्रधान जियोवानी मेली[1], कार्लो पोर्टा[2] और पिएट्रो बुराट्टी[3] थे। इनमे पहला सिसीलियन मे लिखता था। पहले उसने अरकाडिया की परपरा मे रचनाएँ की, फिर वह व्यग्यकार हो गया। उसकी रचनाएँ 'डोन किस्योटी' (डॉन क्विक्जोट) ससार का आरम्भ सम्बन्धी ग्रथ और लोक-जीवन का प्रतीक 'सारुडा' विख्यात हुई। मिलान का पोर्टा सबसे महान् यथार्थवादी कवियो मे है। जीवन से सीधा सम्बन्ध रखने वाली उसकी 'जियोवानिन बोगी' (१८१८), 'दि नेमिंग ऑफ दि चैप्लेन' (१८१९) आदि कविताएँ बेजोड है। बुराटी ने वेनिस की बोली मे रूमानी कविताएँ लिखी। उनमे विशेष प्रसिद्ध 'ल' ओमो' (मानव) हुई।

: ४ :

उन्नीसवीं सदी

उन्नीसवी सदी में काफी नवीनता आई, यद्यपि उसका आरम्भ अट्ठारहवी सदी के ही साहित्यिको ने किया। वस्तुत उनमे से अनेक साहित्यिको के दृष्टिकोण मे तेजी से वदलती राजनीतिक सामाजिक परिस्थितियो ने प्रभूत अन्तर डाल दिया था। उनमे से कुछ की कृतियो का उल्लेख अभी कर चुके है।

फ्रैंच राज्य-क्रान्ति ने जो 'प्राचीन पद्धति' का राजनीति से लोप कर दिया, तो इटली के इतिहास और विज्ञान सम्बन्धी विचारो में भी मूलभूत परिवर्तन हुए बिना न रह सका। वह काल विद्वानो की गम्भीर विपुल कृतियो से भरा है। पैडमौंट के कार्लो बोटा[4] के अनेक इतिहास-ग्रथ तब प्रकाशित हुए। नेपल्स के दो इतिहासकारो—पिएट्रो कोलेटा[5] और विन्सेन्जो कुओको[6] ने नेपल्स के इतिहास पर अपनी कृतियो द्वारा प्रकाश डाला। कुओको ने तो 'प्लैटो इन इटली' नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा।

रोमाटिक—साहित्य

नैपोलियन के पतन और विएना की काग्रेस ने इटली को फिर आस्ट्रिया का गुलाम बना दिया और इटली मे फिर आधी सदी तक स्वतन्त्रता का सघर्ष चला। नैपोलियन के युद्धो ने जो यूरोप भर मे एक कुण्ठा उत्पन्न कर दी थी, उसको साहित्यिको की प्रतिक्रिया ने रोमाटिक भावसत्ता में व्यक्त किया। रोमाटिक साहित्य-धारा यूरोप व्यापी थी। इटली को भी उसने आप्लावित किया। पलायनवाद उसकी रचनाओ में भी विशद रूप से लक्षित हुआ। यथार्थ के ससार पर नितान्त मिथ्या कल्पना-मरीचिका की छाया पडी। क्लासिकल मर्यादा से वेष्टित साहित्यिक रचनाओ का स्थान स्वतन्त्र साहित्यिक रचनाओ ने लिया।

---

१ Giovanni Meli (१७४०-१८१५) २ Carlo Porta (१७७५-१८२१)
३ Pietro Buratti (१७७२-१८३२) ४. Carlo Botta (१७६६-१८३७)
५. Pietro Colletta (१७७५-१८३१) ६ Vincenzo Cuoco (१७७०-१८२३)

अठारहवी सदी के सन्देहवादी बुद्धिवाद के स्थान पर मुक्त भाव-व्यजना प्रतिष्ठित हुई। परन्तु इटली का तत्कालीन साहित्य नकारात्मक नही हुआ। फास, इग्लैंड और जर्मनी में रोमाटिक कृतिकारो और जनता मे एक खाई पड गई थी। इटली का रोमाटिक साहित्य जीवन से इतना निर्वासित न था। वस्तुत राजनीतिक स्वतन्त्रता और देश की एकता इटली के लेखको के उपास्य विषय बन गए, यद्यपि कुण्ठा और पलायन उनके गले भी अन्य यूरोपियन लेखको की ही भाति पडे।

रोमाटिक दृष्टिकोण की पहली चुनौती १८१६ में जियोवानी बेरकेट[1] ने दी। उसने 'क्रिसोस्टोम को अर्ध गभीर पत्र' विषयक ग्रन्थ मे कला सबधी स्वतन्त्रता और लोक-साहित्य तथा राष्ट्रीयता की प्रेरणा सबधी रोमाटिक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया। बेरकेट भी अन्य समकालीन साहित्यिको की ही भाति राजनीतिक क्षेत्र मे भी उदारवादी था। उसने अपने निर्वासन काल मे ही पार्गा के शरणार्थी के सबध मे एक प्रसिद्ध कविता लिखी। इटली के रोमाटिक आन्दोलन का केन्द्र मिलान था। बेरकेट भी मिलान का ही था। उसके अतिरिक्त आलेसान्ड्रो मान्ज़ोनी[2], फेडेरिको कान्फालोनिएरी[3], जियोवानी टोर्टी[4] सिल्विओ पेलिको[5] आदि थे। पेलिको प्रसिद्ध रोमाटिक जर्नल 'इल कोन्सिलियाटोरे' का सम्पादक और अत्यन्त लोकप्रिय ट्रैजेडी 'फ्रासिस्का दा रीमिनी' (१८१५) का रचयिता था। उसकी एक कृति—'ले' मी प्रिज्योनी'—ससार-व्यापी ख्याति प्राप्त कर चुकी है। उसमे उसने अपने अनवरत सघर्ष और यातनाओ का वर्णन किया है, जो उसे आस्ट्रियन साम्राज्यवाद के विरोध के कारण १८२० और १८३० के बीच के युगान्त कैद मे भुगतनी पडी थी। कार्लोपोर्टा और टोमासो ग्रोसी[6] भी उसी रोमाटिक चेतना के मिलानी कवि थे।

उपन्यास

रोमाटिक साहित्यकार ऐतिहासिक उपन्यास के क्षेत्र मे विशेष सफल हुए। मान्ज़ोनी की 'आई प्रोमेस्सी स्पोसी, (वाग्दत्ता) उस परपरा की पहली और उत्तम कृति है। फ्रासिस्को डोमेनिको गुएराज़्ज़ी[7] का 'ला बटेलिया दि बेनेवैन्टो' ग्रोसी का 'मार्को विस्कोन्टी' मासिमो द' अज़ेलिओ[8] का 'एटोरे फिएरामोस्का', गेराज़ी का 'ल' अस्सेडियो दि फिरेंजे (फ्लोरेंस का घेरा) सिजारेकान्टू[9] का 'मार्घेरिता पुस्टेरला' और ड'अजेलिओका

१, Giovanni Berchet (१७८३-१८५१), २ Alessandro Manzoni ३ Federico Confalonieri (१७८५-१८४६); ४. Giovanni Torti (१७७४-१८५२), ५ Silvio Pellico (१७८९-१८५४), ६ Tomasso Grossi (१७९१-१८५३), ७ Francesco Domenico Guerrazzi (१८०४-७३), ८ Massimo d'Azeglio (१७९८-१८६६), ९ Cesare Cantu (१८०४-९५)

'निकोलो दि'लापी' आदि उस दिशा के सुन्दर उपन्यास है। इन उपन्यासो ने राष्ट्रीय भावना का इटली मे पर्याप्त प्रचार किया।

ड्रामा · लिरिक

रोमाटिक ड्रामा उतना सफल न हो सका, जितना रोमाटिक उपन्यास। उस क्षेत्र के कृतिकारो ने अपनी सामग्री इटली के इतिहास और टैकनीक शेक्सपीयर, गेटे, शीलर आदि से ली। रोमाटिक नाटको मे प्रधान निम्नलिखित थे—मान्जोनी के 'इल कौन्टे दि कारमाग्नोला' और 'आडेल्की' और निकोलिनी[1] के 'आन्टोनिओ फोस्कारीनी', 'जियोवानी दा प्रोसिडा,' 'लोडोविको स्फोर्जा', तथा 'आरनाल्डो दा ब्रेसिया'। लिरिक के क्षेत्र मे बडे तबके का कवि मान्जोनी हुआ। उसका उल्लेख उपन्यास तथा नाटक के सबध में किया जा चुका है। उसके लिरिक—'इन्नी साकरी' काफी प्रसिद्ध हो गये है। उस काल का दूसरा महान् लिरिक-कवि जियाकोमो लियोपार्डी[2] था। वह रोमाटिक सिद्धान्तो का विरोधी था, परन्तु शक्तिम भावावेगो से भरा उसका काव्य रोमाटिक चेतना मे ही अनुप्राणित हुआ।

भाषा सबधी जो विवाद सदियो से चल रहा था, वह १९वी सदी मे भी चलता रहा और अनेक भाषाशास्त्र के आचार्यो ने उसमें अपना योग दिया। इटैलियन स्टैंडर्ड भाषा को उस विचार-विमर्ष से पर्याप्त लाभ भी हुआ। इटली की राजनीतिक एकता के भी पूर्व इस भाषा-सबधी एकता का वहाँ प्रचार हुआ। साहित्यिक इटैलियन मे टसकन बोली का प्रभुत्व साधारणत स्थापित हो गया। स्वय मान्जोनी का उसे पढने फ्लोरेंस जाना इस दिशा मे बडे महत्त्व का कार्य हुआ। जिन लोगो ने टसकन बोली का प्राधान्य अस्वीकार किया था, अब वे भी धीरे-धीरे उस स्थिति को अगीकार कर चले।

काव्य

१९वी सदी के मध्य राजनीतिक आन्दोलन की देश मे व्यापक सत्ता हुई। साहित्य में भी देश के पुनर्जागरण (रिर्जोगीमेन्टो) का आन्दोलन चला। जिउस्टी[3] की कविताएँ प्रधानत राजनीतिक चेतना से ही अनुप्राणित थी। उसकी मानवतावादी जनमत्ता के आदर्शो से भरी कविता देश-प्रेम की प्रेरणा देकर देश के लडाको को जगाती रही। उसकी कविताओ मे व्यग्य का प्रचुर पुट था। उस काल का दूसरा महान् व्यग्यकार जिउसेपे जियोकीनो बेली[4] था, जिसने प्राय दो हजार सॉनेट लिखे। उसका व्यग्य जिउस्टी से भी अपनी चुस्ती और नुकीलेपन मे बढ गया। १९वी सदी के रोम का भ्रष्टाचार उसने अपनी कविताओ में

१ G B Niccolini (१७८२-१८६१), २ Giacomo Leopardi (१७९८-१८३७), ३ Giuseppe Giusti (१८०९-५०); ४ Giuseppe Gio Chino

खोल कर रख दिया। अन्य राष्ट्रीय कवियो में प्रधान ग्राब्रिएले रोसेट्टी[1], पिएट्रो जिआनोने[2], एन्जलो ब्रोफेरियो[3], आलेसान्द्रो पोएरिओ[4], लुइजी मर्कान्टीनी[5] और गोफ्रेडो मामेली[6] थे। इनमें से अनेक ने कैद, निर्वासन और मृत्यु को स्वतन्त्रता के अर्थ गले लगाया।

उस काल की सैद्धान्तिक रचनाओं में अत्यन्त प्रभावशाली कृतियाँ कैथोलिक दार्शनिक विन्सेन्जो जिओबर्टी[7] की थी। उसने पोप के तत्वावधान में व्यापक राष्ट्रीयता का स्वप्न देखा। जिओबर्टी की रचनाएँ उस विचारधारा की प्रारम्भिक प्रतीक थी, जिनकी पराकाष्ठा फासिज्म में हुई। सिजारे बाल्बो ने भी अपनी ऐतिहासिक कृतियो में आस्ट्रिया के साम्राज्यवाद का विरोध किया। तत्कालीन राजनीति की प्रेरणा से युक्त व्यापक राष्ट्रीयता-भरी रचनाएँ जिउसेपे माज़िनी[8] और मासिमो द'अज़ेलिओ की थी। समसामयिक कार्यों का साहित्यिक प्रक्षेपण अधिकतर 'सस्मरणों' में हुआ। द'अज़ेलिओ के 'सस्मरण' उसी दिशा मे प्रस्तुत हुए। उस काल का सबसे सुन्दर उपन्यास इपोलिटो निएवो[9] ने लिखा—'कोनफेसीओनी दे'उन ओट्टूआजेन्नेरिओ' (१८५७-५८)। उपन्यास मनोवैज्ञानिक और सामाजिक था और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर खडा किया गया था।

रोमान्टिक क्लासिकल

१८६० और ७० के बीच देश का राष्ट्रीय स्वप्न जो चरितार्थ हो गया, तो साहित्य की तत्कालीन सोद्देश्यता कुछ काल के लिए पूरी हो गई। उस क्रान्तिवादी युग की साहित्य-सम्बन्धी सैद्धातिक एकता अब अनावश्यक होने के कारण लुप्त हो गई। रोमाटिक और क्लासिकल की ओर फिर एक बार प्रत्यागमन हुआ। परन्तु हाँ, यूरोपियन साहित्य की यथार्थवादी धारा से भी इटली तब वचित न रह सका। रोमाटिक परपरा में ही एमीलिओ प्रागा[10] था। उसी परपरा मे जिउसेपे रोवानी[11] ने अपना ऐतिहासिक उपन्यास 'आई सैन्टो अन्नी' (सौ वर्ष) और आरिगो बोईटो[12] ने अपने सुन्दरतम ओप्रा 'मेफिस्टफेले' और 'नेरोने' (१९०१) लिखे। तब के रोमाटिक कवि आलीर्डो आलीर्डी[13], जियोवानी प्राटी[14] और जियाकोमो ज़ानेला[15] थे। १८७० के बाद के साहित्यिको ने रोमाटिक

---

१ Gabriele Rossetti (१७८३-१८५९), २ Pietro Gianonone (१७९२-१८७२), ३ Angelo Brofferio (१८०२-६६), ४ Allessandro Poerio (१८०२-४८), ५ Luigi Mercantini (१८२१-७२), ६ Goffredo Mameli (१८२७-४९), ७ Vincenzo Gioberti (१८०१-५२), ८ Giuseppe Mazzini (१८०३-७२) ९ Ippolito Nievo (१८३२-६१), १० Emilio Praga (१८३९-७५), ११ Giuseppe Rovani (१८२८-७४), १२ Arrigo Boito (१८४२-१९१८), १३ Aleardo Aleardi (१८१२-७८), १४ Giovanni Prati (१८१४-८४), १५ Giocomo Zanella (१८२०-८८)

परपरा का विरोध करना शुरू किया। एक नये क्लासिकवाद की प्रेरणा ने कुछ लोगो को प्रोत्साहित किया और वे प्राचीन रोमन मॉडलो और आदर्शों से प्रभावित हुए। इनमे प्रधान जिओसुए कार्डूसी[१] था। उसने अपने मधुर काव्य मे रोमन कथानको और लैटिन छन्दो तक का प्रयोग किया। जियोवानी पास्कोली[२] प्राय सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से मुक्त था, यद्यपि जीवन के अन्तिमकाल में वह भी कार्डूसी और उसके समानधर्मा माराडी[३], फरारी[४] आदि की चेतना से सजग हुआ।

यथार्थवाद

यथार्थवादी आदोलन का सिद्धातकार और प्रवर्त्तक लुइजी कापुआना[५] था, यद्यपि उसके उपन्यास नीरस तथा प्राणहीन थे। सबसे समर्थ यथार्थवादी उपन्यासकार सभवत आल्फ्रेडो ओरियानी[६] था। उसका उपन्यास 'जैलेसी' (१८९४) उस दिशा मे प्रतीक हो गया है। स्थानीय यथार्थवादी निरूपण मे जिन उपन्यासकारो ने नाम कमाया, उनमें प्रधान सिसिली का जियोवानी वेरगा[७] था। उस क्षेत्र के अन्य उपन्यासकार रेनाटो फूसीनी, माटिल्डे सेराओ और ग्राजिआ डेलेडा थे। डेलेडा के सबल उपन्यास अधिकतर सार्डीनिया से सम्बन्ध रखते हैं। १९वी सदी के अन्त का प्रधान उपन्यासकार आनटोनिओ फोगाज़ारो था, जिसकी टैकनीक बडी व्यापक थी और जिसने विनोदात्मक वर्णन के साथ मानव सहानुभूति को अपनी प्रेरणा बनाया। चरित्र-चित्रण में भी वह असामान्य कलाकार सिद्ध हुआ।

१९वी सदी के ड्रामा साहित्य मे रोमाटिक परपरा का विकास पिएट्रो कोसा[८] और जिरोलामो रोवेट्टा[९] ने किया। परन्तु शीघ्र ही फ्रास नार्वे की यथार्थवादी चेतना सामाजिक और समस्या-सम्बन्धी नाटक के रूप में इटैलियन रगमच पर उतरी। पाओलो फेरारी[१०], जिसनेपहले लोक-कॉमेडी और ऐतिहासिक सुखान्त नाटक लिखे, बाद मे अपने 'इल डुएलो' और 'टू लेडीज़' लिए उसी रगमच पर उतरा। ज्यूसेपे जियाकोजे[११] ने अन्त में इब्सन की परपरा में सामाजिक और मनोवैज्ञानिक नाटक 'एेज़ फॉल दि लीव्ज' आदि लिखे। रोबर्टो ब्राको[१२] ने यथार्थवादी नाटक भी लिखे और इब्सन तथा हाउप्टमन की

---

१ Giosue Carducci (१८३५-१९०७); २ Giovanni Pascoli (१८५५-१९१२), ३ Giovanni Marradi (१८५२-१९२०); ४ Severino Ferrari (१८५६-१९०५); ५ Luigi Capuana (१८३९-१९१५), ६. Alfredo Oriani (१८५२-१९०९), ७ Giovanni Verga (१८४०-१९२२), ८ Pietro Cossa (१८३०-९१); ९ Girolamo Rovetta (१८५४-१९१०), १०. Paolo Ferrari (१८२२-८९), ११ Giuseppe Giacose (१८४७-१९०६); १२. Roberto Bracco (ज० १८६२).

भाँति मनोवैज्ञानिक नाटक भी। पिछली प्रेरणाओं में लिखा, 'इल पिकोलोसाटो' उसी का परिचायक है।

: ५ :

बीसवीं सदी

बीसवीं सदी का आरंभ गाब्रिएले दानुन्जिओ द्वारा प्रभावित रहा। यौन और क्रूर की घोर यथार्थवादी टेकनीक के साथ उसने नीत्शे की आपज्जनक प्रवृत्ति जोडी। अनेक उपन्यासकारो ने उसके नेतृत्व को मान उसके उपन्यासो का अनुकरण किया। वह फासिस्ट दर्शन की प्रेरणा की पृष्ठभूमि बन गया। जो उसके प्रभाव से वंचित रह गये, उनमें प्रधान इटालो स्वेवो[1] (साहित्य नाम—एटोरे शिमट्स), ऊगो ओजेट्टी[2] ब्रूनो चीकोग्नानी[3] जिउसेपो आन्टोनिओ बोर्जेसे[4] और फडेरिको तोज़ी[5] थे। आलफ्रेडो पान्जीनी[6] ने अपने उपन्यासो और निबन्धो में विनोद का पर्याप्त पुट दिया।

ड्रामा के क्षेत्र मे डारियो निकोडेमी[7] और सेम बेनेली[8] ने क्रमश भावुक और ऐतिहासिक कृतियाँ प्रस्तुत की।

शीघ्र ही शक्तिवादी साहित्यिक सिद्धान्तो का भी इटली मे आरंभ हुआ। एक नया दल इटली की शक्ति का स्वप्न देखने वाला मारिनेटी[9] की अध्यक्षता मे कला और साहित्य में प्रतिष्ठित हुआ। आंदोलन के रूप मे वह सिद्धान्त इटली मे व्यापक हो चला। उसी परपरा के लेखक आर्डेंगो सोफिसी[10] आल्डो बालाज़ेशी[11] और जियोवानी पापीनी[12] थे। इनमें अन्तिम ने इटली मे बडी ख्याति कमाई और साहित्य में स्ट्रविन्स्की तथा पिकासो के यश से विभूषित हुआ। उसकी आत्मकथा, 'उन उओमो फिनिटो' काफी प्रसिद्ध हो गयी है। प्राय उसी काल सेर्जिओ कोराज़ीनी[13] तथा गुइडो गोज़ानो के नेतृत्व में क्रेपूस्कोलारी (गोधूली के कवि) अथवा 'इन्टीमिस्टी' नामक आन्दोलन शुरू हुआ। उसमे कल्पना और व्यग्य विशेष चरितार्थ हुए। साधारण से साधारण स्थिति को लेकर उसे वैयक्तिक

---

१ Italo Svevo (१८६१-१९२८), २ Ugo Ojetti (ज० १८७१),
३. Bruno Cicognani (ज० १८७९), ४ Giuseppe Antonio Borgese (ज० १८८२)
५ Fredrico Tozzi (१८८३-१९२०), ६ Alfredo Panzini (१८६३-१९३९),
७ Dario Niccodemi (१८७७-१९३४), ८ Sem Benelli (ज० १८७७),
९ F. T Marinetti (ज० १८८१), १० Ardengo Soffici (ज० १८७९);
११ Aldo Balazzeschi (ज० १८८५), १२ Giovanni Papini (ज० १८८१),
१३ Sergio Corazzini (१८८७-१९०७)

विशेषता से अनोखा बना देना, उसकी शैली का मूर्त्त रूप हुआ। उसमें विनोद और व्यग्य को विशेष प्रश्रय मिला। उसी परपरा मे लुइजी कियारेली[१] ने अपना 'ला मास्केरा इ इल विसो' (नकाब और चेहरा) (१९१६) और रोसो दि सान सेकोन्डो[२] ने 'मारिओनेत के पैशियानें' प्रस्तुत किया। पहला नाटक कॉमेडी था, दूसरा ट्रैजेडी। लुइजी पिरान्डेलो[३] ने व्यक्तित्व और वैयक्तिकता का विशेष दार्शनिक प्रतिनिधि अपने उपन्यासो और नाटको में डाला।

१९२२ के फासिस्ट आदोलन ने दो परस्पर विरोधी साहित्यिक भावधाराओ का सृजन किया। एक तो उसके अनुकूल था और दूसरा उसके प्रतिकूल। पहले ने मुसोलिनी, बाल्वो आदि के सम्बन्ध मे प्रशसात्मक साहित्य रचा, यद्यपि उसमे साहित्यिक गुरुता न आ सकी। उस दृष्टिकोण के आदर्शवादियो में सभवत आल्बर्टो मोराविया[४] ही केवल अपवाद था। फासिज्म के विरोध मे भी सबल साहित्य रचा गया। ट्रिलूसा[५] की कविताएँ उस दिशा में विशेष प्रसिद्ध हुईं। फासिज्म विरोधी निर्वासितो मे सबसे महान् उपन्यासकार इग्नाजिओ सिलोने[६] हैं। उसका उपनाम 'सेकोन्डो ट्राक्वीली' है। उसके दो उपन्यास—'फोन्टामारा' (१९३३) और 'पेने इ विनो' (रोटी और शराब) (१९३७)—विशेष प्रसिद्ध हैं। 'फोन्टामारा' का एकाध भारतीय भाषा मे अनुवाद भी हो गया है। द्वितीय महासमर के वाद की साहित्यिक चेतना शाति और सघर्ष की है, जिसम नए हाथो द्वारा सर्वहारा सहानुभूति मे पगा साहित्य निरन्तर प्रस्तुत होता जा रहा है।

---

१ Luigi Chiarelli (ज० १८८६), २ R M Rosso di Sen Secondo (ज० १८८७); ३ Luigi Pirandello, ४ Alberto Pincherle (Moravia) (ज० १९०७), ५ Carlo Alberto Sallustri, (Trilussa) (ज० १८७३); ६ Ignazio Silone (Secondo Tranquilli) (ज० [illegible])

५. इब्रानी (हिब्रू) साहित्य

: १ :

आरम्भ

इब्रानी, अथवा जिसे यूरोपियन 'हिब्रू' कहते हैं, आज केवल यहूदियो की भाषा रह गई है, परन्तु ई० पू० दसवी-नवी सदियो के अभिलेखो मे पता चलता है कि पहले उसे मध्य-पूर्व की अनेक सैमेटिक जातियाँ बोलती थी।

इब्रानी साहित्य का आरभ भी अन्य प्राचीन साहित्यो की ही भाँति पहले पद्यात्मक था, फिर गद्य लिखा गया और उन्ही की भाँति जो कुछ रचा गया, वह लिखा न जा सका, वरन् मौखिक रूप से ही पिता-पुत्र और गुरु-शिष्य की परपरा से सास्कृतिक अथवा धार्मिक दाय के रूप मे उत्तरोत्तर प्रवाहित होता रहा। उस प्राचीन काल की अनेक कृतियो के सकेत और उद्धरण 'बाइबिल' के 'ओल्ड टैस्टेमैण्ट' मे मिलते है। उन प्रारभिक रचनाओ मे गज़ब की ताज़गी है। ये रचनाएँ अधिकतर युद्ध, सृष्टि अथवा जल-सम्बन्धी है। उस दुनिया मे पानी का बडा अभाव था, जिससे कुएँ, नहर आदि द्वारा उसका प्रादुर्भाव बडे महत्त्व का माना जाता था।

बाइबिल मे जो सर्प और ज्ञान-फल, कैन, एबल, नूह की नौका, बाबुल की मीनार, आइज़ेक का बलिदान, लाल सागर का सतरण आदि की कथाएँ दी हुई है, वस्तुत वे उसी प्राचीन इब्रानी लोक-साहित्य के उदाहरण है। प्रभु की युद्ध-गाथा वाले डेबोराह के गीत तो अपनी सादगी, ताज़गी, भावुकता, और शब्द-शालीनता में प्राचीन साहित्य में असाधारण है।

बाइबिल का 'पैन्टाट्यूक' (पाँच पोथियो का भाग) इब्रानी साहित्य का प्राचीनतम अग माना जाता है। इनको हज़रत मोज़िज़ (मूसा) की रचना बताया जाता है। सम्भव है इसका अधिकतर भाग उसी आधार से उठा हो, परन्तु नि सदेह इसके कुछ भाग औरो ने भी रचे।

सम्भवत ४४० ई० पू० मे एज़रा और नेहेमिया आदि ने 'पैन्टाट्यूक' की पाँच पोथियो की सहिता बनाई और उन्हे लिख डाला। मूसा का काल सोलहवी सदी ई० पू० के आस-पास माना जाता है। उनके और अन्य नबियो के कलाम इन पोथियो में सग्रहीत है। नबियो ने यहूदी कुलो को अपने निर्भीक उपदेशो से शक्तिमान् बनाने का प्रयत्न किया

उनके कवीलो को उन्होने एक राष्ट्र के रूप मे सगठित किया। इन नवियो की आवाज वुलद और जोशीली है, जिनका असर सुनने वालो पर तत्काल पडता होगा। उन्होने पहले-पहल मनुष्य की जन्मजात स्वतन्त्रता, सार्वभौम शाति और शुद्ध न्याय के नारे वुलद किये, पहली वार मनुष्य को अनेक देवताओ की गुलामी से आजाद कर एक खुदा की आराधना की बुनियाद डाली। पीढी-दर-पीढी उनकी आवाज़ उनके जनो मे गूँजती रही जो वाद में 'पैन्टाट्यूक' में एकत्र कर ली गई। यही पैन्टाट्यूक यहूदियो का शास्त्र, शासन अथवा कानून बना। मूसा का शासन ससार की दूसरी नियम-परपरा है, पहली परपरा वावुली सम्राट हम्मुरावी की है, जो ईसा से प्राय दो हजार वर्ष पहले उद्घोषित हुई। यही मूसा आदि के नियम-उपदेशो से भरा पैन्टाट्यूक वाइविल का आधार वना और वाइविल में उस काल के गीत, कहावते, नैतिक कहानियाँ, पहेलियाँ, सभी कुछ सग्रहीत हुआ। नवियो की भाषा सरल थी, उनका जोर विचारो पर था, क्रान्तिकारी विचारो पर, साहित्य की दृष्टि से भी उनकी उपमाओ मे शक्ति थी।

तुम्हारे पाप लाल है तो क्या हुआ वे नि.सन्देह हिमश्वेत हो उठेंगे,
वे कितने भी रक्तिम हो, वे ऊन के समान सफेद होकर रहेंगे।

इसाइयाह १, १८।

ई० पू० ११०० के लगभग इब्रानियो का कनानियो और फिलिस्तीनो से सघर्ष हुआ, जिससे उनकी सस्कृति को आघात पहुँचा। हज़रत एलिज़ाह और उसके शिष्य एलिशा ने तत्काल ललकारा—तुम इस्राइल के प्रभु 'यहोवा' को छोड मूर्त्तियो के उपासक हो चले! अपनी आचार-पद्धति की रक्षा के लिए वे अपनी जनता को धिक्कार उठे। इसके कुछ ही काल वाद, ८५० ई० पू० के लगभग जजो और सैमुएल प्रथम तथा द्वितीय और पैन्टाट्यूक के कुछ भाग प्रस्तुत हुए। डैविड के गान (साग्ज़) अपने लिरिक सौन्दर्य, सुकुमारता और भावो की शालीनता मे अनुपम माने जाते है। उनका रचनाकाल वस्तुत नौ सौ वर्षों का काल-प्रसार है, जिसमें अनेक रचयिताओ ने भाग लिया। इनमें से कुछ नवियो द्वारा 'वेवीलोनिया की कैद' (छठी सदी ई० पू०) मे रचे गये।

'साग्ज़ ऑफ साग्ज़' ग्रीक-काल (दूसरी सदी ईस्वी के लगभग) में रचे गये। ये विवाह-सम्वन्धी गीत हैं और इन पर ग्रीक-शृगारिकता का प्रभाव स्पष्ट है।

ईसा पूर्व आठवी सदी का वाइविल-साहित्य साहित्यिक दृष्टिकोण से भी महत्त्व का है। ओजस्विनी भाव-शृखला के अनुरूप ही वाणी सशक्त हो पुकार उठी, वाक्यावली परागयुक्त पुष्पित हुई। पद क्या थे, फौलादी चोट थे। शब्द-योजना सुनने वालो पर हथौडे की शक्ति-सी टूटी। वाचालता कम्पित, कठोर, करुण, शालीन प्रसगानुकूल होती गई।

'फिलिस्तीनी तालमुद' भी उपलब्ध है, पर उसका महत्व 'वेबीलोनियन तालमुद' की अपेक्षा कुछ नही है। गमरा की भाषा प्राय जन-बोली है, अरमई और इब्रानी का सम्मिश्रण, जिसमे ग्रीक, रोमन और फारसी शब्द भी जहाँ-तहाँ व्यवहृत हुए है। इसकी कोई विशेष शैली नही और न व्याकरण ही इसका विशेष शुद्ध है। तालमुद यहूदियो के लोक-साहित्य-इतिहास, रीति-रिवाज और ज्ञान का भडार है। उसने भी वाइबिल की ही भाँति उनकी सस्कृति के निर्माण मे बडी सहायता की है।

'सेफेर येज़िरा' की रचना भी इसी काल हुई। यह दार्शनिक विवेचन की एक कृति है और अब्राहम द्वारा रचित मानी जाती है। पिछले यहूदी तर्क-विन्यास की नीव इसी रचना पर खडी है।

पाँचवी सदी ईस्वी मे सन्हेड्रिन की सभा का अन्त कर दिया गया। यहूदी ज्ञान और समाज की बागडोर अब वेबीलोनियन महात्माओ के हाथ में आई, परन्तु, जिस अत्याचार से बाध्य होकर यहूदी नेताओ को फिलस्तीन से भागना पडा था, उसका सामना उन्हें वेबीलोनिया में भी करना पडा। सुरा, नहाड्रिया और पुम्पेडिटा के पीठ टूट गए। नेता और यहूदी जनता भूमध्य सागर के तटवर्ती देशो की ओर भागी। वैसे १०वी सदी तक उन पीठो में कुछ न कुछ काम होता रहा, पर उनकी किस्म बडी घटिया थी। अगली तीन शताब्दियो मे भी मौलिक साहित्य का सृजन विशेष नही हुआ।

नया युग सरक्षा का था। बाइबिल की अनेक प्रतियाँ ढूंढ निकाली गईं। जिससे मूल पाठ शुद्ध किया जा सके। अरमई-इब्रानी की खिचडी भाषा के स्थान पर शुद्ध इब्रानी की प्रतिष्ठा हुई, इब्रानी के पहले वैयाकरण और कोषकार प्रादुर्भूत हुए। महान् 'रेस्पोन्स'-साहित्य का निर्माण प्रारम्भ हुआ। यह युग उन सारे दर्शनो और विचारो के सघर्ष का था, जो यहूदी-आचार से उठे, ईसाई और इस्लाम धर्मो ने वितरित किये। आठवी सदी में अनानबेन डैविड[1] ने 'करायट' सम्प्रदाय की नीव डाली। इसके अनुयायी तालमुद को प्रमाण न मानकर वाइविल-मात्र को प्रमाण मानते थे और उसी के अनुशासन पर अक्षरश चलते थे। उन्होने अपना साहित्य भी प्रचुर मात्रा में रचा और वाइविल तथा इब्रानी भाषा के प्रति अपनी निष्ठा से प्राचीन यहूदी-परपरा के नेताओ को करायटो ने अपनी समान प्रतिष्ठा करने को वाध्य किया।

'पैटनिम' (गीतकार) का उदय इस काल वडे महत्त्व का हुआ। इनने यहूदी कवियो की परपरा की वुनियाद डाल दी। जोज़े वेन जोज़े[2] ने सातवी सदी में अनेक कविताएँ लिखी, पर इब्रानी भाषा का पहला कवि जानाई[3] था। फिलस्तीन में ६४० ई० में जन्मा,

---

१ Anan Ben David (८वी सदी), २ Jose Ben Jose (७वी सदी) ३ Janai (ज० ६४०),

इस काल के वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी में ही लिखे गये। जैसे मध्य-युगीय यूरोप की भापा विविध राष्ट्रीयताओ के बावजूद लैटिन थी, वैसे ही इस युग में सर्वत्र वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी मे ही लिखे गये। इसका एक कारण अरबो की राजसत्ता भी था। इब्रानी विद्वान् भी अपनी काव्य-रचना तो इब्रानी मे ही करते थे, पर वैज्ञानिक ग्रन्थ अरबी मे लिखते थे। उनमे से अनेक नष्ट हो गये या सग्रहालयो मे आज भी दबे पडे है। कुछ अनूदित भी हुए और काफी ख्याति पाई। इन्ही मे जूडाह हलेवी[१] का 'कुसारी', ममोनाईड्ज[२] का विमूढ-पथ-प्रदर्शक विषयक ग्रन्थ और बह्या इब्न पकूडाह[३] का हृदय के कर्त्तव्य विषयक ग्रन्थ भी थे, जिनके आज तक अनेक भाषाओ में अनुवाद हो चुके है। इनमे अन्तिम बडा लोकप्रिय हुआ। वह जज था और स्पेन मे ग्यारहवी या बारहवी सदी मे हुआ था। बह्या का दृष्टिकोण न्यो-प्लैटोनिक दर्शन से प्रभावित था। उसने बुद्धि-श्रुति और अनुवृत्त के आधार पर आचारपरक नैतिक दर्शन प्रस्तुत किया। सभाष्य इब्रानी में अनूदित यह ग्रन्थ 'हृदय के कर्त्तव्य' सैकडो सस्करणो मे प्रकाशित हुआ। उसका अनुवाद अनेक भापाओ मे हुआ। यहूदी तत्वेक्षण और दार्शनिक विचारो पर इस ग्रथ ने गहरा प्रभाव डाला।

कवि गेओन की मृत्यु के बाद जब बेबीलोनिया के यहूदी ज्ञान-पीठ वन्द कर दिये गए, तब अनेक इब्रानी और यहूदी पडित अफ्रीका, दक्षिणी यूरोप, फ्रास, जर्मनी आदि में जा बसे और वही वे साहित्य, दर्शन आदि का मनन करते रहे। वह यूरोप का अन्धयुग था और क्रूसेडी ईसाइयो ने उन पर बडे जुल्म ढाये। फिर तो वे चुपचाप तालमुद और बाइबिल के अध्ययन में जुट गए। उन्होने 'किनोथ' (मरसिया) और 'सेलिकोथ' (प्रायश्चित्ती प्रार्थना) किस्म की कविताएँ प्रभूत मात्रा में रची। रबेनू जेरशोम[४] (दसवी सदी) फ्रास मे जन्मा। उसने धार्मिक कविताएँ बहुत लिखी और वह बहु-विवाह के विरुद्ध अपनी व्यवस्था के लिये विशेष प्रसिद्ध हुआ। रब्बी शेलोमो यिजहाकी[५] भी फ्रास (ट्रोये) मे ही १०४० मे जन्मा था और 'राशी' नाम से साधारणत विख्यात हुआ। उसका प्रधान ग्रन्थ तालमुद का भाष्य है, जिससे वह सहिता भावी विद्यार्थियो को प्राप्त हुई। उसकी बाइबिल पर सुन्दर सरल टीका तो प्रत्येक यहूदी-गृह की आवश्यकता और शृगार बन गई। बाइबिल के यूरोपियन अनुवादो मे भी ईसाई विद्वानो ने उससे सहायता ली। इटली के यहूदियो ने भी अपने साहित्य के निर्माण में काफी योग दिया। वहाँ नवी सदी के शेफाथिया बर अमिटाई के जमाने से आज तक इब्रानी-साहित्य के निर्माण की वह धारा अविरल रूप से बहती रही है।

---

१ Judah Halevi (१०८०-११४०), २ Maimonides (Moses Ben Maimon) (११३५-१२०४), ३ Bahya Ibn Pakudah (११वी, १२वी सदी), ४ Rabenu Gershom , ५ Rabbi Shelomo Yishaki (Rashi) (ज० १०४०)

वह भाषा और शैली का जादूगर था। उसने सभी विषयो पर कविता लिखी। प्रेम, शादी, मृत्यु, जन्म, प्रार्थना सभी पर उसकी अनेक कविताओ का उपयोग यहूदी पूजा में होने लगा। उसे अपने प्राचीन देश से बडा प्रेम था। वह उसके राग में मस्त होकर लिखता और गाता था। यहूदियो के पवित्र पर्वत ज़ायन पर तो उसकी अनेक करुण कविताएँ है। इसी से वह 'ज़ायन का गायक' भी कहलाने लगा। उसने अरबी मे एक दार्शनिक ग्रन्थ भी लिखा, पर उसमें भी काव्य अधिक और दर्शन कम है। उसका इब्रानी अनुवाद बडा लोकप्रिय हुआ।

अब्राहाम इब्न एज्रा[१] इब्रानी भाषा का बडा गहरा विद्वान् हो गया है। उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी। वह ज्योतिष, विज्ञान, व्याकरण, दर्शन सभी का प्रकाण्ड पण्डित था। परन्तु इसके साथ ही वह कवि भी था, यद्यपि वह न तो हालेवी की भाँति मधुर था, न इब्न गाबिरोल-सा गम्भीर। उसे भी जीवन मे बडा सघर्ष करना पडा पर वह गाबिरोल की भाँति न निराश हुआ, न उसने अपने भाग्य को कोसा ही। हाँ, उसका मज़ाक उसने जरूर उडाया। इब्रानी भाषा पर उसका इतना अधिकार था कि शैली जैसी चाहता लिख लेता। उसकी भाषा में इसी से जब तब कृत्रिमता भी आ जाती थी। उसने अनेक विषयो पर लिखा। गणित, दर्शन, विज्ञान, व्याकरण आदि। बाइबिल का वह पहला वैज्ञानिक आलोचक था। उसका बाइबिल और पैन्टाट्यूक पर भाष्य बडा लोकप्रिय हुआ। उसने ईसाई-यूरोप का भ्रमण किया और चूंकि वहाँ लोग अरबी नही समझते थे, उसने अनेक ग्रन्थ इब्रानी मे ही लिखे। स्पेनकाल का ऐसा करने वाला वह पहला ग्रन्थकार था।

परन्तु इस युग की मेधा का चूडामणि मोजिज बेन मैमोन मैमोनाइड्ज था। उसका प्रताप उस युग के बडे से बडे कृतिकार पर भी हावी हुआ। वह बडा गहरा विद्वान था, और उसका मस्तिष्क तर्क-सिद्ध था। सर्वथा वैज्ञानिक विश्लेषण में वह असाधारण चतुर था। युवावस्था मे ही बडे-बडे पण्डित कठिन दार्शनिक विवेचन मे उसके मत की अपेक्षा करने लगे थे। 'मिश्ने टोरा' लिखकर उसने तालमुद की अव्यवस्था को व्यवस्था दी। मिदरश, गमेरा आदि से सामग्री एकत्र कर उसने कानून की पद्धति दुरुस्त की। उसका प्रधान दार्शनिक ग्रन्थ विमूढो का पथ-प्रदर्शक था, जिसमें उसने अरिस्टॉटल के मत का पोषण कर उसे यहूदी दर्शन से अभिन्न सिद्ध किया था। इससे वह ईसाइयो में भी लोकप्रिय हो गया। इन दोनो ग्रन्थो के कारण यहूदियो में बडा मतभेद हुआ और सैद्धान्तिक वादविवाद पीढियो चलता रहा। उसके 'पथ-प्रदर्शक' के उसके जीवन-काल में ही तीन-तीन इब्रानी अनुवाद हुए। उस पर तीस-तीस टीकाएँ प्रस्तुत हुई। मोज़िज़ की भाषा चुस्त और सरल थी।

---

१ Abraham Ibn Ezra (१०९२-११६७)

मोजिज के अनेक विद्वान अनुयायी हुए। उनमें एक लेवी बेन जेरसन[1] था। उसने धर्म और दर्शन के उन प्रश्नों पर प्रकाश डाला, जिन्हे मोजिज ने अपूर्ण छोड दिया था। जुदाहबेन सालोमॉन अल-हरीजी[2] उस स्वर्ण-युग का अन्तिम महान कवि था। उसका प्रधान काव्य 'मकबरत-तहकीमोनी' व्यग्य है, जिसमे अनेक अभिराम कविताओ का सकलन है। हरीजी बडा सुन्दर और मधुर कवि था। उसे मोजिज ने अपना 'पथ-प्रदर्शक' अनुवाद करने को आमन्त्रित किया। अनुवाद सुन्दर हुआ है। हरीजी इब्रानी भाषा के साहित्य की आय पर ही जीवित रहने वाला पहला कवि था।

गद्य की दिशा मे भी इस काल कुछ कार्य हुआ। तुडेला के बेनजामिन ने यात्रा और भूगोल पर एक पुस्तक लिखी और जोसेफ इब्न जबरा[3] ने 'सेफेर शआशुइम' (आनन्द-ग्रन्थ) लिखा।

इटली मे इब्रानी-साहित्य

इटली का इब्रानी-साहित्य स्पेनी साहित्यिको से प्रभावित था, यद्यपि उसके कवि और लेखक उतने ऊँचे न उठ सके। यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि जहाँ स्पेनियो की भाषा कृत्रिम थी, वहाँ इनकी सरल और स्वाभाविक थी। इटली के कुछ प्रतिभाशाली कवियो और साहित्यिको के नाम निम्नलिखित है—अमिथाई, सेबाथाई दोनोलो[4] मैशूलूम बेन कालोनिमस,[5] कालोनिमस बेन मैशूलूम[6], अहीमाज बेन पालटील[7] बेन्जामिन डेली मन्सी,[8] सालोमन देल रोस्सी और उसका पुत्र इमानुएल।

इनमे सबसे महान इमानुएल बैन सोलोमॉन, हा-रोमी[9] था। उसकी शैली बहुत-कुछ स्पेनियो के समान थी।

सम्भवत वह इटली के प्रसिद्ध महाकवि दाते का मित्र था। उसका एक काव्य 'हा-थोफेट वे-हा-एडेन' (नरक और स्वर्ग) दाते की अमर कृति 'डिवाईन कॉमेडी' से बहुत मिलता है। इमानुएल की कविता अधिकतर लौकिक है और उसमें विनोद की मात्रा प्रचुर है। कामिनी और मदिरा-सम्बन्धी उसकी कविताएँ युग के अनुकूल ही अश्लील है। वृद्धावस्था मे उसने अपनी सारी कविताओ, व्यग्यो और कहानियो का एकत्र सग्रह किया। इस सग्रह का नाम था 'माहबरोथ इमानुएल'। वह कहा करता था कि काव्य-सौन्दर्य मे वह

---

१ Levi Ben Gerson (Gersonides) (१२८८-१३४४), २ Judah Ben Solomon Al-Harizi (११६५-१२२५), ३ Joseph Ibn Zabara (ज ११५०), ४ Sabathai Donolo (९१३-८२), ५ Meshulam Ben Kalonymus (११वी सदी), ६ Kalonymus Ben Meshulam, ७ Ahimas Ben Paltiel (१०१७-६०), ८ Benjamin Delli Mansi (१३वी सदी); ९ Immanuel Ben Solomon Ha-Romi (१२६५-१३३०)

अल-हरीजी को लाँघ गया। उसका यह वक्तव्य बेजा न था। उसने बाइबिल पर एक टीका भी लिखी और एक इब्रानी-व्याकरण भी।

तेरहवी सदी में मोजिज दि लियोन[1] ने 'जोहार' (ज्वल्यमान) नाम की एक रहस्य-वादी पुस्तक लिखी। इसकी भाषा अरमई-इब्रानी थी और पहले इसे रब्बी सीमोन बर योहाई की कृति कहा गया, परन्तु शीघ्र ही पता चल गया कि इसका रचयिता कौन है। इसका रहस्यवाद 'सेफेर येजीरा' और 'बाहीर' पर अवलम्बित था। 'बाहीर' का लेखक बारहवी सदी का जन्मान्ध आइजेक था। 'जोहार' का कुछ अश मिथ्या मसीहा अब्राहम अबुलाफिया (बारहवी सदी), विद्वान रहस्यवादी कवि, के सिद्धान्तो पर आधारित था। ईसाई दुनिया मे इस काल यहूदियो पर भयानक अत्याचार हो रहे थे और यह रहस्यवादी दृष्टिकोण उन्हे बडा मुआफिक पडा। कबालो का जो नया आन्दोलन चला वह जोहार से ही अनुप्राणित था। 'जोहार' इस नये सम्प्रदाय की बाइबिल बन गया। इस आन्दोलन मे गैर-यहूदी भी शामिल थे और इसने प्रभूत साहित्य प्रस्तुत किया। अनेक पीढियो तक इसका बोलबाला रहा और इस आन्दोलन ने अनेक भावी सम्प्रदायो की नीव डाली। पर हाँ, उसने स्पेन के उस स्वर्ण-युग का अन्त भी कर दिया। 'जोहार' शब्द का भारतीय रूपान्तर 'जौहर' है। 'जौहर' राज-पूतनियो के युद्ध-काल में अग्नि-प्रवेश के रूप में एक धर्मानुशासन बन गया।

धर्म के ढोंगियो ने ईसाई शासन का स्पेन पर अधिकार होते ही वहाँ भी मारकाट मचाई और यहूदी विद्वानो को वहाँ से भी भाग कर अन्यत्र शरण लेनी पडी। प्रोवेन्स मे यहूदियो की एक शाखा कुछ काल से प्रतिष्ठित थी, परन्तु उसका साहित्य कुछ विशिष्ट नही था। इसी प्रकार उत्तर जर्मनी की यहूदी शाखा ने भी विशेष प्रतिभा का साहित्य मे प्रदर्शन नही किया। वहाँ एक अच्छा कवि हुआ—येडाइया बेडेरसी[2] जिसने पुष्पित शैली मे कविता लिखी। इसी से वह येडाइया ह-पेनीनी (मुक्तावत) भी कहलाता था। अपने दार्शनिक ग्रन्थ 'बेहिनाथ ओलम' से वह अधिक प्रसिद्ध हुआ। स्पेन मे मेशूलम दा पियरा[3] और विशेषत उसके पुत्र सोलोमन[4] ने मदिरा पर अच्छी कविता की। र्यूबेन बोनफेड[5] उस काल का प्रतिभाशाली कवि था। स्पेन मे ही इस गिरी दशा में भी कुछ साहित्यिक कार्य हुआ। वही बार्सिलोना में सबसे मौलिक यहूदी दार्शनिक हस्दई बेन अब्राहाम क्रेस्कास[6] का जन्म हुआ। वह अरिस्टॅटल सम्बन्धी मोजिज के दृष्टिकोण का विरोधी था। दोनो के दर्शन में उसे कमजोरी दिखाई पडी और अरिस्टॅटल के प्रकृति के शाश्वतवाद का खण्डन कर उसने ईश्वर की अनन्तता का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। उसके ग्रन्थ का नाम था 'ऑर

---

१ Moses de Leon (१२५०-१३०५); २ Yedaiah Bedersi (१२८०-१३४०); ३ Meshulam da Piera, ४ Solomon da Piera (१३४०-१४१७), ५ Reuben Bonfed (१३८०-१४५०), ६ Hasdai Ben Abraham Crescas (१३४०-१४१०)

अडोनाइ'। उसका उत्तर-कालीन दार्शनिकों पर गहरा प्रभाव पडा। स्पिनोजा ने अपने दर्शन में अब्राहम के 'स्वतन्त्र चेतना' वाले सिद्धान्त का पोपण किया। अब्राहम का ग्रन्थ 'ऑर अडोनाइ' (खुदा का नूर) अनेक भाषाओं में अनूदित हुआ।

जोजेफ अल्बो[1] ने 'सेफेर इक्कारिम' लिखकर काफी नाम कमाया। उसका ग्रन्थ बडा-लोकप्रिय हुआ। इसमें मैमोनाइड्ज, जेरसोनाइड्ज, क्रेस्कास आदि के उद्धरण देकर यहूदियो को अपने धर्म और सस्कृति में जमे रहने का प्रोत्साहन था। इसकी भाषा, इब्रानी बडी सरल थी। १४९२ मे यहूदी स्पेन से अन्तत निकाल दिये गये। यह फर्डिनेन्ड और इजाबेला के व्याह और कैस्टिल तथा आरगो के योग से बने नए ईसाई-स्पेन का परिणाम था। इन्हीं निष्कासित यहूदियो मे डॉन आइजेक अब्रवानेल[2] और उसका पुत्र जूडाह[3] भी थे। पिता की ख्याति उसके दार्शनिक ग्रन्थ प्रणय सम्बन्धी डायलॉग (इटैलियन में लिखा) पर अवलम्बित है। उसने इब्रानी में सुन्दर कविता भी की। पुत्र जूडा आइजेक बाइबिल का निष्णात पण्डित था। उसने उस धर्म-ग्रन्थ पर अनेक टीकाएँ लिखी। उसके कई दार्शनिक ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं, परन्तु उनकी विशेप ख्याति नही।

आपत्ति-काल

अगला युग, प्राय ढाई-तीन सौ वर्षों का, यहूदियो के लिये नितान्त भयानक सिद्ध हुआ। ईसाई मिशनरियो और राजकुलो ने उन पर सत्यानाशी प्रहार किए। एक देश से दूसरे देश मे वे अपने ग्रन्थ लिये सदियो मारे-मारे फिरते रहे। उन्हें कही आश्रय नही मिला। अनेक ने तो सभ्य जगत का आसरा छोड अपनी धार्मिक और साहित्यिक पूंजी ले वनो और प्राकृतिक कन्दराओ मे पनाह ली। सभ्य मानव से वर्वर वातावरण उन्हे कही मुआफिक पडा और कम से कम उन्होने अपनी सास्कृतिक निधि की रक्षा कर ली। सदियो बाइबिल और तालमुद पर जो इन एकान्त पनाहो में विचार किया गया तो प्रभूत मात्रा मे साहित्य प्रस्तुत हो गया, परन्तु नि सन्देह उसमे न चिन्तन की गहराई थी न साहित्य का माधुर्य।

हाँ, इटली में निश्चय ही कुछ साहित्यिक प्रेरणा रूपायित हुई क्योकि वहाँ, पोप की सल्तनत के बावजूद, यहूदियो पर जुल्म इतने न हुए जितने अन्यत्र। वहाँ भी उन्हे विशेप अधिकार तो प्राप्त न थे, परन्तु जिया जा सकता था और जीवन की दयनीय स्थिति में भी आखिर वेदना के चीत्कार में भी साहित्य का स्वर बसता ही है। कुछ प्रतिभाशाली कवियो और ग्रन्थकारो के नाम यहाँ दिये जाते हैं—वेन्जामिन वेन अब्राहाम अनवी (मन्सी) (इमानुएल का समकालीन), मोजिज रिएटी[4] जैकब और उसका भाई, इमानुएल फ्रासिस

१ Joseph Albo (१३८०-१४४०), २ Don Isaac Abrvanel, ३ Judah Abrvanel, ४ Moses Rieti (१३९३-१४६०)

(दार्शनिक और कवि—ऐतिहासिक काव्य 'जेवी मुदाह' मृगयायित मृग) ; इमानुएल[1] दोनो मे अधिक प्रतिभावान था, मोजिज ज़ाकूटो[2] जन्मा एम्स्टर्डम में, पर रहता इटली में था, उसमे अद्‌भुत कवित्व शक्ति थी। उसी ने इब्रानी में पहले-पहल ड्रामा लिखा। लियो मॉडेना[3] की प्रतिभा भी बहुमुखी थी। इटली मे इब्रानी का भी पुनरुत्कर्ष हुआ।

: ४ :

वर्तमान-युग

इब्रानी साहित्य का वर्तमान युग मोजिज हायिम लुज्ज़ाटो[4] से शुरू होता है। लुज्ज़ाटो ने इब्रानी काव्य को स्पेनी युग की पुष्पित शैली से मुक्त कर दिया। १७ वर्ष की आयु में उसने अलकार पर ग्रन्थ लिखकर सहज शैली का गुणगान किया और अपने ही उद्धरणो द्वारा काव्य में 'सत्य और सुन्दर' की प्रतिष्ठा की। चालीस वर्ष के अपने छोटे जीवन में उसने तर्क, आचार, अलकार आदि पर तीस पुस्तके लिखी जिनमे प्रत्येक की शैली सरल और प्राजल थी।

लुज्ज़ाटो प्रधानत कवि था। बाइबिल के गीतो के आधार पर उसने गीतो का एक सग्रह लिखा। इब्रानी मे उसके तीन सुन्दर नाटक उपलब्ध है—'मआसे शिमशोन' (सैमसन और डेलीलाह), 'मिगडाल ओज' (बात्तिटास्टा गुआरीनी के 'पास्टोर फीदो' के आधार पर) और रूपक 'ल-येशरिम थेहिल्लाह' (धार्मिको की प्रशसा)। इन सब काव्य और नाटच कृतियो मे गजब की ताजगी थी। भावुकता और प्रेम की तरल धारा इनमें लुज्ज़ाटो ने बहा दी। उसका प्रकृति-वर्णन भी बडा आकर्षक था। उसके शिष्य डैविड फ्राको मेन्डिज ने भी एक रूपक 'जेमुल अथालियाह' लिखा।

बौद्धिक धाराओ ने सर्वत्र अपना प्रभाव डाला। 'हस्कला' (प्रकाश) नाम का एक आन्दोलन चला। इसका केन्द्र 'मिअस्फिम' नाम का जर्नल था, जिसका आरम्भ प्रगति-चेता यहूदी युवको ने किया था। इसके आरम्भ करने वालो में ख्याति-लब्ध दार्शनिक मोजिज मेन्डेलस्सोन[5] भी था। उसने स्वय तो इब्रानी में बहुत कम लिखा, परन्तु उसकी सरक्षा से आन्दोलन को बडा लाभ हुआ।

मेन्डेलस्सोन ने बाइबिल का जर्मन में अनुवाद किया, जिसके साथ इब्रानी में एक अर्थयुक्त टिप्पणी भी थी। यह इसी दल का कार्य था। मिअस्फिम ने प्राय २७ वर्ष

---

१ Immanuel (१६१८-१७०३), २ Moses Zacuto (१६२५-९७); ३ Leo Modena, ४ Moses Hayım Luzatto (१७०७-४७); ५ Moses Mendelssohn (१७२९-८६)

यहूदी लौकिक-सास्कृतिक दृष्टिकोण का प्रचार किया। यहूदियो में उसने इब्रानी का विशेष शौक भी पैदा किया। इस जर्नल में अधिकतर लिखने वाले थे—फ्राको मेन्डीज, आइज़ेक साटोनोव[1], जे एल बेन्जेव[2], जोजेफ एफ्राटी[3]। उसका नाटक 'मेलुकाट सौल' विख्यात है, इटली का सेमुएल रोमानेली[4], एफ्राएम लुज्जाटो[5] और मेन्डेलस्सोन के शिष्यो मे सबसे प्रभावशाली नेफटाली हार्टविग वेस्सेली[6] जिसके पैम्फलेट 'डिब्रइ शालोम वो-एमेथ' (शाति और सत्य के शब्द) ने यहूदियो में पार्थिव सस्कृति-प्रचार मे बडा योग दिया। वेस्सेली का यश उसके प्रसिद्ध वीर-काव्य 'शिरेई टिफेरेथ' पर अवलम्बित है। उसने अनेक कवियो को प्रभावित किया।

आस्ट्रिया और गैलीशिया मे भी हस्काला-आन्दोलन वढ चला। गैलीशिया और रूस मे तब हस्सीडी प्रगतिशील यहूदी आन्दोलन चल रहा था। इसका उद्देश्य यहूदियो को एकातवासी यहूदियो की वताई हुई विधियो से मुक्त करना था। हस्सीडियो ने सीधी प्रभु की अर्चना स्वीकार की। इस आन्दोलन मे कवियो का प्रचुर योग था। इससे प्रभूत लोक-गीत, सगीत, कहानियाँ आदि रचे गए। परन्तु इस आन्दोलन मे भी धीरे-धीरे कावाल की ही भाँति अधविश्वास आदि घुस गए। लेखको ने उसे शुद्ध करने का प्रचुर प्रयास किया।

आइजेक पर्ल[7] ने अपने 'मेगालेह् ट्मिरिन' (भेद खोलने वाला) मे उस आन्दोलन पर गहरा व्यग्य किया। उसने खेती का विशेष गुण गाया। हस्सीजिज्म पर गहरी व्यग्य-चोट करने वाला आइजेक एरटर[8] था। गैलीशिया में ही यहूदी-इतिहास लिखने के भी प्रयत्न हुए। सालोमान जुडा रापापोर्ट[9] के इस दिशा मे प्रयत्न सराहनीय थे। उसके दिखाए मार्ग से ग्रीट्ज और जुज ने अनुसधान किए। इसी प्रकार यहूदी-इतिहास के क्षेत्र मे नहमान क्रोकमाल[10] और उसके पुत्र अब्राहाम[11] ने भी प्रयत्न किए। जकारिया फ्राकेल[12] और अब्राहाम जीजर[13] ने नए मार्गों का अनुसन्धान किया, परन्तु उन्होने अपने ग्रन्थ जर्मन में लिखे। इन सब विद्वानो मे प्रधान इटैलियन सैमुएल डैविड लुज्जाटो[14] था, जिसने विज्ञान और धर्म की एकता की असम्भवता

---

१ Isaac Satonov (१७३२-१८०४), २ J L Ben-Zeb (१७६४-१८११), ३ Joseph Ephrati (१७७०-१८०४), ४ Samuel Romanelli (१७५७-१८१४), ५ Ephraim Luzzatto (१७२९-९२), ६ Naphtali Hartwig Wessely (१७२५-१८०५), ७ Isaac Perl (१७७३-१८३९), ८ Isaac Erter (१७९१-१८५१), ९ Salomon Judah Rappaport (१७९०-१८६७); १० Nahman Krochmal (१७८५-१८४०), ११ Abraham Krochmal (१८१७-८८), १२ Zechariah Frankel (१८०१-७५), १३ Abraham Geiger (१८१०-७४) १४ Samuel David Luzzatto (१८००-६५)

प्रतिष्ठित करते हुए मैमोनाइड्ज और स्पिनोजा का खण्डन किया। उसने पुरातत्व, भाषाशास्त्र, दर्शन, इतिहास सभी दिशाओ में गम्भीर कार्य किए और ग्रन्थ लिखे। उसने कविताओ का भी एक सग्रह छापा, परन्तु इस दिशा मे इसी के कुल के राकेल मोरपुरगो[१] की प्रतिभा कही अधिक सम्पन्न थी। इस काल के अधिकतर लेखक 'बिकुरेइ ह-इत्तिम' और 'केरेम हेमेड' मे लिखा करते थे। दोनो पत्रिकाएँ 'मिआसेफ' का ही प्रसार थी। सॉलोमॉन लेविसोन[२] ने इसी काल अपनी कविताएँ लिखी और मीएर लिटेरिस[३] ने अनेक बैलेडो और महाकाव्यो का अनुवाद किया। 'योनाह होमाइयाह' नामक उसका प्रसिद्ध गीत जेरूसेलेम के पवित्र यहूदी पर्वत जायन के सम्बन्ध में है।

रूस मे भी अट्ठारहवी सदी मे कुछ यहूदी प्रगतिशील लेखक पैदा हो गये थे। मेनाहेन लेपिन[४] 'एलिजाह[५]', आइजेक बेयर लेविन्सान[६] इन्ही में थे। इनमें से पिछले ने हस्कला-आन्दोलन का रूस में अच्छा प्रचार किया। अब्राहाम डोव लेबेन्सोन[७] प्रतिभाशाली कवि था, जिसके पुत्र मिका जोजेफ लेबेन्सोन[८] ने पिता की अन्तर्मुखी प्रवृति से ऊपर उठ वर्तमान को पकडा। उसकी कविताओ मे बडा राग, बडी भावुकता थी। उसकी कविताएँ इब्रानी-साहित्य में चोटी की मानी जाती है। उसने शिलर का अनुवाद किया, छह ऐतिहासिक काव्य लिखे और लिरिक कविताएँ लिखी, मधुर और अभिराम।

इस काल का सबसे प्रभावशाली कवि जूडाह लोएब गॉर्डन[९] था। उसने अपनी कविताओ मे एकातवासी यहूदियो पर गहरा व्यग्य किया। उसकी व्यग्य-कृति 'बे-मेजूलोथ याम' (समुद्र की गहराइयो में) गजब की रचना है। इसमें स्पेन के मारे यहूदियो का जिक्र है। सुन्दरी जहाज के कप्तान से प्रण करती है कि यदि वह यहूदियो को सही सलामत तट पर उतार दे तो वह उसे आत्म-समर्पण कर देगी। फिर उनके तट पर आ जाने पर वह अपनी मा के साथ समुद्र में डूब मरती है। गॉर्डन की प्रवान रचना 'कोजोह शेल यूड' है, जिसमे उस तरुणी की कथा है, जो सभी नैतिक उसूलो के खिलाफ तालमुद के एक विद्यार्थी से विवाहित है और इसी कारण सारे अभाग्य झेलती है।

अब्राहाम मापू[१०] ने इब्रानी उपन्यास का आरम्भ किया। उसका उपन्याम 'अहावाथ

---

१ Rachel Morpurgo (१७९०-१८७१), २ Solomon Levisohn (१७८९-१८२१), ३ Meir Litteris (१८००-७१), ४ Menahen Lepin (१७४९-१८२६), ५ Elijah, Gaon of Wilna (१७२०-९७); ६ Isaac Bear Levinsohn (१७८८-१८६०), ७ Abraham-Dov Lebensohn (१७९४-१८७८), ८ Micah oseph Lebenesohn (१८२८-५२), ९ Judah Loeb Gordon (१८३०-९२); १० Abraham Mapu (१८०८-६७)

जायन' (जायन से प्रेम) प्राचीन इतिहास के पृष्ठ खोलता है। उसी वाइविल-युग को उसका उपन्यास 'अश्माथ शोमरोन' भी अंकित करता है। इस उपन्यास का अर्थ है, 'समरिया का पाप'। अपने 'आयित जावुआ' में उसने लिथूनिया के एक छोटे नगर का शुष्क जीवन अंकित करते हुए एकातवासियो के रूढिगत आचरणो पर आघात किया।

उन्नीसवी सदी के इब्रानी साहित्य मे एक नई रवानी आई। १८५७ में एलिजेर सिल्वर-मान[१] ने 'ह-मगीद' का प्रकाशन आरम्भ किया और तीन वर्ष वाद इतिहासकार फिन ने 'ह-कारमेल' निकाला। इसी प्रकार 'मेलिट्ज और 'ह-जेफीरा' का प्रकाशन भी शुरू हुआ।

कलमन शुलमन[२] ने अनेक ग्रन्थ लिखे, जिनमे ससार का इतिहास उल्लेखनीय है। अब्राहाम ए कोवनेर[३] और जैकव पपेर्ना[४] ने समालोचना-शास्त्र की नीव डाली। मध्य उन्नीसवी सदी का विशप प्रयास दुनियावी ज्ञान के प्रचार में हुआ। ब्राडस्टाडटर[५] ने अपनी कहानियो में हस्सीदियो का मजाक उडाया। रयूबेन अशर ब्रोडेस[६] ने 'हा डाथ वेडा हायिम' (धर्म और जीवन) नामक अपना उपन्यास लिखा और अब्रामोविट्स[७] ने सुन्दर कहानियाँ लिखी, जो इब्रानी मे अपनी शैली के लिये विख्यात हुई। १८६६ मे विलना के यहूदी समाज का अकन करने वाला उसका उपन्यास 'हा अव्वोथ वे हा वानिम' (पिता और पुत्र) निकला। पेरेज स्मोलेन्स्किन[८] ने साहित्य की धारा तब एक दूसरी दिशा की ओर फेर दी, सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ, समवेदनायुक्त यहूदी-सस्कृति की आलोचना की ओर। उसने विएना में 'हा-शाहार' नामक मासिक पत्र निकाला, जिसमे सालो नए विचार छपते रहे। उसने बहुत लिखा और सर्वत्र यहूदी प्राचीन सस्कृति की रक्षा का प्रचार किया। उसके छह उपन्यास उपलब्ध हैं। उसका सुन्दरतम उपन्यास 'केबूराट हामोर' है, जिसमें व्यक्ति अपनी परिस्थितियो से सघर्ष करता है। उसके 'जीवन पथ का पथिक' जार के जेल से भागकर लन्दन में शरण लेता है। स्मोलेन्स्किन ने अनेक साहित्यकारो का उत्साह-वर्द्धन किया। उनमें से कुछ थे—पहला समाजवादी पत्र 'हा-एमेथ' निकालने वाला फ्रीमन-लीबरमन[९] लेविन[१०] सोलोमान मान्डेल्कर्न[११] एलिजेर शुलमन[१२] जिसने हेइन और बर्ने के जीवन

---

१. Eliezer Silberman, २ Kalman Shulman (१८१९-९९), ३. Abraham A Kovner (१८४२-१९०९), ४ Jacob Paperna (१८४०-१९१९), ५ M D Brandstadter (१८४४-१९२८), ६. Reuben Asher Brodes; ७ S J Abramowitz (१८३६-१९१८), ८ Perez Smolenskin (१८४०-८५), ९ Freiman Lieberman (१८४५-८०), १० J L Levin (१८४५-१९२५), ११ Solomon Mandelkern (१८५५-१९०२), १२ Eliezer Shulman (१८३७-१९०२)

चरित लिखे, मोरडेकाई बेन हिलेर हाकोहेन[1], डा० सोलोमन रुबिन[2] डेविड कह्ना[3] और इलियाजर बेन यहूदा[4] जिसने फिलिस्तीन मे प्रचार कार्य किया और इब्रानी कोष प्रस्तुत किया। यहूदी-फिलिस्तीनी-राष्ट्रीयता को डेविड गॉर्डन[5] और पाइन्स[6] ने भी सहारा दिया। यह वह जमाना था जब रूस में भी यहूदियो पर अत्याचार होने लगे थे और उनका फिलिस्तीन—अपने मूल देश—लौटने का आन्दोलन सर्वत्र जोर पकड चला। जायनिस्ट आन्दोलन की नई आशाओ से यहूदियो का हृदय भर चला।

इस काल इस राष्ट्रीय भावना और आशा से प्रेरित अनेक कवियो ने रचनाएँ की। इनमे से कुछ निम्नलिखित थे—

मधुर भावुक कवि शपिरो[7] रूस का डोलिट्सकी[8], यहूदी राष्ट्रीय गान, 'हतिक्वा' का लेखक गैलीशिया का इम्बेर[9]। दोनो न्यूयार्क में रहते थे, वही मरे, और अभिराम कवि मानेह[10]। १८९६ मे कान्तोर ने पहला यहूदी दैनिक पत्र 'हा-योम' स्थापित किया। प्रसिद्ध डैविड फ्रिशमन[11] उसका सहकारी था जिसने इब्रानी-साहित्य मे यूरोपियन साहित्य की आत्मा का प्रवेश कराया। वह जायनिस्ट आन्दोलन के विरुद्ध था, ससार-वादी था और डरता था कि यहूदियो की यह राष्ट्रवादिता कही जातीय अहमन्यता का रूप धारण न कर ले। उसने काफी लिखा। भाषा-शैली पर उसका अधिकार था और उसकी रचनाओ मे सुरुचि अमित मात्रा मे थी।

फ्रिशमान की ही परपरा में इब्रानी का अद्भुत कहानीकार और कवि आइजेक लोएव पेरेज[12] हुआ। वह यिद्दिश उपन्यासो का जनक था। उसने हस्सीदी साहित्यसे काफी सामग्री ली और अपने लघु उपन्यासो मे इस योग्यता से जन-साधारण और बौद्धिक प्रयासियो का अकन किया कि उसके पाठक स्तब्ध रह गए, मुग्ध हो गये। कवि तो वह असाधारण था ही, उसके गद्य में भी सम्मोहक शैली का जादू उतर आया। उसकी रचनाएँ सौन्दर्य, सत्य, भावुकता, प्रेरणा, सुरुचि और अनुभूति की खान हैं। उसने यहूदियो के सघर्ष का मार्मिक और लोमहर्षक चित्र खीचा है।

इस युग में प्राचीन और अर्वाचीन, यूरोपियन और यहूदी सस्कृतियो के बीच जो जग छिडा, उसमें अनेक साहित्यिको और चिन्तको ने भाग लिया। उनमे थे—

---

१ Mordecai ben Hiller ha Kohen; २ Dr Solomon Rubin (१८२३-१९१०), ३. David Kahana (१८३८-१९१५); ४. Eliazar ben Yahuda (१८५७-१९२२), ५ David Gordon (१८२६-८६); ६ I M Pines (१८४३-१९१३), ७. K A Shapiro (१८४१-१९००); ८. M. Dolitzki (१८५६-१९३१), ९ N H Imber (१८५६-१९१०); १० M.Z Manch (१८००-८७); ११. David Frishman (१८६०-१९२२), १२ Isaac Loeb Perez (१८५१-१९१५)

लिलिएन्व्लूम[१], हुरविट्स[२], और जीव यावेज[३]। इसी काल आइजेक हिर्शवीस[४], रॉबिनोविट्स[५] हायिम ब्रोडी[६], इस्राइल डेविडसन[७] और सिमियन बैरेन्फेल्ड[८] आदि ने भी लिखा। इसके प्राचीन और नवीन के समन्वय की वात भी उठी और ब्रोड्स ने उसी दृष्टिकोण से अपना उपन्यास 'श्टेई हाक्जोवोय' (दो छोर) लिखा। रुब्रेन ब्रेनिन[९] समालोचक और सुन्दर कहानीकार था तथा वेन अविग्डोर[१०] ने प्राचीन और नवीन में एक प्रकार का समझौता करा ही दिया। अविग्डोर प्रसिद्ध प्रकाशक था जिसने अनेक प्रधान साहित्यिको की कृतियाँ छापी। १९ वी सदी के अन्त तक इब्रानी में अनेक प्रवल साहित्यकार तथा मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्र के प्रकाशक हो गये थे।

१८९७ मे हेर्जल[११] ने जायनिस्ट काग्रेस वुलाई, जिसमे अनेक विद्वान और साहित्यकार शामिल हुए थे। हेर्जल का प्रधान प्रतिद्वन्द्वी अहद हाआम[१२] (अशर गिन्सवर्ग,) चिन्तक और पण्डित था। उसने फिलिस्तीन को यहूदी सास्कृतिक केन्द्र मात्र माना। उसके दृष्टिकोण के समर्थक अनेक विख्यात साहित्यकार थे। रॉबिनोविट्स, जिसने अपने यिद्दिश उपन्यासो के सुन्दर इब्रानी रूपान्तर किये, इन्ही मे था। हालेवी के वाद के कवियो मे सवसे महान हायिम नहमन वियालिक[१३] हुआ, जो राष्ट्रीय लिरिक कवि था। अपनी शरत् कविताएँ विपयक ग्रन्थ में उसने वातावरण-चित्रण की पराकाष्ठा कर दी। उसकी कविताओ मे उसकी जाति के सघर्प का मार्मिक और हृदयस्पर्शी अकन है। अपने 'ज्वालाओ के लेख' मे उसने ऐसी अद्भुत कविता लिखी कि वह वाइविल का अग लगने लगी। जेरूसेलेम के मन्दिर के विध्वस पर लिखते हुए उसने माँगा—

जाओ वीराने की गहराई से गीत वरवादी का ला दो मझको
हो सियाह फाम तुम्हारी रगेदिल की मानिन्द

अत्यन्त लोमहर्षक हृदय को छू लेने वाली, वह मन्दिर-विध्वस पर उसकी कविता है। रूस के यहूदियो पर अत्याचार के वाद उसने 'हत्याकाड के नगर मे' विषयक कविता लिखकर यहूदियो को अपनी रक्षा न कर सकने के कारण धिक्कारा, हत्याकाड का लोमहर्षक चित्रण कर उसने एक क्रान्ति पैदा कर दी। उसकी भाषा ओजस्विनी थी, शैली शक्तिमती, कल्पना स्वस्थ, अभिराम।

---

१ M L Lilhenblum; २ S I Hurwitz (१८६२-१९२२); ३ Zeeb Yabez (१८४८-१९२४), ४ Isaac Hirsh Weiss (१८१५-१९०५), ५ S P Robinowitz (१८४५-१९१०), ६ Hayim Brody, ७ Israel Davidsohn, ८ Simeon Berenfeld (१८६०-१९४०), ९ Ruben Brainin (१८६२-१९३९), १० A Ben Avigdor, ११ Herzl, १२ Ahad Ha-Am (१८५६-१९२७), १३ Hayim Nahman Bialik (१८७३-१९३४)

अहद-हा-आम ने १८९७ मे जिस पत्र 'ह-शिलोआ' का आरम्भ किया, उसमे अनेक प्रतिभाशाली साहित्यिको ने लिखा। प्रतिभावान लेविन्स्की[१] और फीन्वर्ग[२] ने भी। अहद हा-आम का प्रधान शिष्य जोजेफ क्लाउज्नेर[३] है, जो आज भी जेरूसेलेम की हिब्रू यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है। क्लाउज्नेर लिथुआनिया में जन्मा था, पर फिलिस्तीन मे १९२६ मे बस गया। वह सुन्दर आलोचक और इतिहासकार है। दर्शन, भाषाशास्त्र आदि मे भी उसकी अद्भुत गति है। उसकी प्रधान रचनाएँ है—'ईसा से पाल तक', 'नजरथका ईसा', 'इब्रानी-साहित्य का इतिहास'। अहद हा-आम के वाद क्लाउज्नेर ने ही 'ह-शिलोआ' का सम्पादन भी किया। उसी पत्र में जोशुआ थॉन[४], मोर्देकाई एह्रेन्प्रीस[५] और तीव्रमेधा बर्डिचेव्स्की[६] ने भी लिखा। तीनो पत्र की नीति के प्रवल विरोधी थे, विशेषकर बर्डिचेव्स्की जिसने कहानियो के अतिरिक्त कुछ उपन्यास भी लिखे।

बर्डिचेव्स्की का अनुयायी साउल चेरनिहोव्स्की[७] असाधारण कवि था, भावुक, सुकुमार, मधुर। वनो, पर्वतो, ऋतुओ का उसने अभिराम अकन किया। उसने भी अपनी जाति के सघर्ष का चित्र खीचा और अन्याय पर रोष प्रकट किया। परन्तु मधुराकन द्वारा। वह सार्वभौम कवि था। उसके विचार से प्राचीन सस्कृति कुण्ठित हो चुकी थी और अब नई सस्कृति, नए विचारो, नए देवताओ की यहूदियो को आवश्यकता थी। परन्तु वह बियालिक की लोकप्रियता न प्राप्त कर सका। जलमान श्निओर[८] साहित्य मे वागी है। उसने अपने यिद्दिश और इब्रानी उपन्यासो में देवताओ और पुरानी परपराओ को चुनौती दी। उनका लोप ही उसने मानव उदय का जरिया वताया। चेरनिहोव्स्की और बियालिक के प्रभाव ने अनेक सुघड कवि उत्पन्न किए। इनमें जेकव कोहन[९] लिरिक और उच्च विचारो का सुन्दर कवि हुआ। उसी की भाँति फिलिस्तीन में डेविड शिमोनोविट्स[१०], जेकव फिकमन[११], जेकब स्टीन्वर्ग[१२], आइजेक काटजेनेलेन्सन[१३], सभी रचनाशील है।

डेविड न्यूमार्क[१४] ने इस्राइली दर्शन का इतिहास लिखा। परन्तु दो खण्ड निकालकर ही मर गया। जेकव क्लाटिज्कन मौलिक गम्भीर दार्शनिक है। व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारो मे प्रधान शोफमन[१५] और बेरकोविट्स[१६] है। घैटो जीवन के रहस्यभेदी

---

१ E L Levinski (१८५३-१९०९), २ M Z- Feinberg (१८७४-९९), ३ Joseph Klausner (ज १८७४), ४ Joshua Thon, ५ Mordecai Ehrenpreis, ६ M J Berdichewski (१८६५-१९२१), ७ Saul Tchernihowski (१८७३-१९४४); ८ Zalman Shneor (ज १८८७); ९ Jacob Cohen (ज १८८१); १० David Shimonowitz, ११ Jacob Fichman, १२ Jacob Steinberg, १३ Isaac Katzenelenson; १४ David Neumark (१८६६-१९२४), १५ G Shofman, १६ I D Berkowitz

उपन्यासकार ब्रेनेर[1] और वेन जॉयन[2] थे। वेरशाडस्की[3] ने अपने दो उपन्यासो में निम्नमध्यवर्ग का चित्र खीचा। कवक[4] उपन्यासो और अनेक नाटको का रचयिता हो गया है। ग्नेसिन[5] ने दुरूह छायावादी रचना की। उसकी प्रेरणा सर्वथा अन्तर्मुखी थी।

: ५ :

फ़िलिस्तीनी साहित्य

पिछले पचास वर्षों से फिलिस्तीन की भाषा इब्रानी रही है। इससे नई शब्दावली, लाक्षणिक-पारिभाषिक भाषा आदि की आवश्यकता पडी और शीघ्र वेन यहूदा[6], येलिन[7], ग्राजॉउस्की[8], ट्रोक्जिनर[9] आदि ने भाषाशास्त्र पर अपने अध्ययन प्रकाशित किए। पिछले महासमर के बीच भी वहाँ दो पुस्तके प्रतिदिन के हिसाब से निकलती रही। आज चिकित्सा, स्वास्थ्य, इजीनियरिंग, शिक्षा, कृषि आदि विषयो पर भी सैकडो पुस्तके है। इधर पूर्वात्य यहूदियो के जीवन का भी अध्ययन हुआ है। यहूदा वर्लो[10] ने फिलिस्तीन में शरण लेने वाले येमन के यहूदियो के जीवन का अपनी कृतियो में वडा सफल चित्र खीचा है और इजेक शमी[11] ने उनकी समस्याओ पर अपनी कहानियो में विचार किया है। इसी प्रकार स्मिलान्स्की[12] (हौजा मूसा) ने अरवी दुनिया की कहानियो से इब्रानी-साहित्य को समृद्ध किया है। कवि और आलोचक जेकव फिकमन ने भी अपनी रचनाओ से फिलिस्तीन के नए साहित्य को सनाथ किया है।

आविग्डोर हामिइरी[13] कवि और उपन्यासकार है। उसने सम्प्रति जीवन का सुन्दर अकन किया है। उसकी कहानियाँ प्रथम महासमर की क्रूर घटनाओ से भरी है। जूडाह कार्नी[14] भी समर्थ कवि है। जिसने फिलिस्तीन को अपना घर वना लिया है। वहाँ के अन्य प्रधान कवि है, अब्राहाम श्लोम्स्की[15], ग्रीनवर्ग[16], आइजेक लम्डन[17], रूसी ईसाई एलिशेवा[18], जो यहूदी आदर्शों से प्रभावित होकर फिलिस्तीन में बस गया और आशावादी अन्डा पिंकरफेल्ड[19]। कवि राकेल[20] इकतालीस वर्ष की आयु में ही मर गया।

---

१ J. H Brenner (१८८१-१९२१), २ S Ben-Zion (१८७०-१९३०); ३ I Bershadski (१८७०-१९०८); ४ A A Kabak (१८८३-१९४५), ५. A N Gnessin (१८८०-१९१३), ६ Ben Yahuda, ७ Yellin, ८ Grazowski, ९ Troczyner, १० Yehuda Burlo, ११ Isaac Shami, १२. M Smilianski (Hawaja Musah), १३ Abigdor Ha-Meiri, १४ Judah Carni, १५. Abraham Shlomsky, १६ U Z Greenberg, १७ Isaac Lamdan, १८ Elisheba, १९ Anda Pinkerfeld, २० Rachel (१८९०-१९३१)

हजाज[1] ने रूसी क्रान्ति पर अनेक उपन्यास लिखे। स्टाइनमन[2] फ्रायड का अनुयायी मनोवैज्ञानिक है।

फिलिस्तीन के नए साहित्यकारो में प्रधान है—डोव किम्ही[3], एबर हडनी[4], जूडायारी[5]। 'आधुनिक इब्रानी साहित्य का इतिहास' लेखक फिशेल लाकोवर[6] विद्वान समालोचक और निबन्धकार है। फिलिस्तीन ने इधर के दिनो मे गोर्डन[7] सा दार्शनिक भी उत्पन्न किया, जिसने श्रम को धर्म घोषित किया। एम० एच० एमिशी[8] ने १९४० में अपना चिन्तन ग्रन्थ 'विचार और सत्य' प्रकाशित कर दर्शन के क्षेत्र में नया कदम रखा। इस काल फिलिस्तीन के उस नए इस्राइली राज्य मे सर्वत्र नव-निर्माण की धूम है। साहित्य, राजनीति, समाज, सर्वत्र। नित्य दूर देशो के यहूदी अपने पूर्वजो के देश को लौट रहे है, रातो-रात बियावाँ में गाँव उठ खडे होते है। इसी प्रकार साहित्य में भी मौलिक कृतियो के अतिरिक्त अन्य भाषाओ से अनुवाद की दिशा मे वहाँ प्रभूत काम हो रहा है।

: ६ :

अमेरिकन-इब्रानी-साहित्य

उन्नीसवी सदी के चौथे चरण में ही अमेरिका में इब्रानी पुस्तको का प्रकाशन शुरू हो गया था। अनेक पत्रिकाओ का प्रकाशन भी उसी सदी मे प्रारम्भ हुआ। रोजेनवर्ग[9] ने 'ओजर ह-शेमोथ' नाम का बाइबिल पर अपना विश्वकोष प्रकाशित किया। आइजेन्स्टाइन[10] ने भी अनेक कोष और काव्य-सग्रह छापे। गेरशेन रोजनवाइग[11] ने कहावतें और कविताएँ प्रकाशित की। जब रूस में यहूदियो का 'पोग्रम' (हत्याकाण्ड) शुरू हुआ तो अमेरिका मे विशेष रूप से इब्रानी-साहित्य का प्रकाशन होने लगा।

१९१० तक इब्रानी भाषा और साहित्य के प्रचार के लिये अनेक सस्थाएँ चल निकली। इनके प्रधान विद्वान दार्शनिक इस्राइल एफ्रॉस[12] और पण्डित दार्शनिक मेयर वैक्समन[13] थे। १९२० मे जब जर्नलिस्ट और आलोचक कर्मठ मेनहेम रिवालो[14] अमेरिका पहुँचा तब इब्रानी-साहित्य का प्रचार वहाँ और जोर पकड गया। न्यूयार्क में १९२२ मे स्थापित उसका साप्ताहिक 'ह-दोआर' आज भी चल रहा है। उसके सहकारी कालम्निस्ट (पत्रकार)

---

१ Hazaz, २ E Stienman, ३ Dov Kimhi, ४ Eber Hadani; ५. Juda Yaari, ६ Fishel Lachower, ७ A D Gordon (१८५६-१९२२), ८ M H Hamshi, ९ A H Rosenberg (१८३८-१९२३), १०. J D. Eisenstein (जन्म १८५४), ११. Gershan Rosenzweig (१८६१-१९१४), १२. Israel Efros, १३ Meyer Waxman, १४ Menahem Ribalow (ज. १८९९)

डैनिएल पर्स्की[1] ने भी इस दिशा में बड़ा काम किया। वहाँ के कवियो में प्रधान है—सिल्किनेर,[2] दार्शनिक निबन्धकार मैक्सिमन[3], एफ्रैम लिसिटस्की[4], शालीन कवि हिलेल वाब्ली[5], मधुर कवि फाइन्स्टाइन[6], हाल्कीन[7] (उपन्यासकार भी) और रिजेल्सन[8] (उपन्यासकार भी)। ब्लैंक[9] और टवेर्स्की[10] उपन्यासकार है। सैकलर[11] उपन्यासकार और नाटककार दोनो है। वैक्समैन, मलाकी[12], और कदूशिन[13] दार्शनिक और निबन्धकार है। उदीयमान कवियो मे गेब्रिएल प्राइल[14] है।

हिटलरी प्रलय से भागे हुए विद्वानो और साहित्यिको मे प्रधान है—'वित्जारो' के सम्पादक कैम, चेरनोविट्स[15], तालमुदके पडित ऐस के मिर्स्की[16], कवि श्निओर[17], दार्शनिक क्लिआल्स्किन[18], अर्थशास्त्री सिमिअन फेदेरबुश[19], प्राच्यविद्या विशारद ए. ऐस येहुडा[20], मनोवैज्ञानिक टुरोव[21], निबन्धकार और लेखक जटजर[22] और हिलेल्स[23]।

---

१. Daniel Persky, २. B N Silkiner (१८८८-१९३४), ३ S Maximan (१८८२-१९३३), ४ Ephraim Lisitzki, ५ Hillel Babli, ६ M Feinstein, ७ S Halkin, ८ A Regelson, ९ S L Blank, १०. Y Twersky, ११ H Sackler, १२ A L Malachi, १३ M Kadushin, १४ Gabriel Preil, १५ Chaim Tchernowitz, १६ S-K Mirsky, १७ Shneor, १८ Khalzkin, १९ Simeon Federbush, २० A S Yehuda, २१ N Turov, २२ S Z Zetzer, २३ S Hillels

६. ग्रीक-साहित्य

क्लासिकल-युग

(९००-३२३ ई० पू०)

: १ :

वीरकाव्य

यूरोप के विविध साहित्यो पर जितना प्रभाव ग्रीस के प्राचीन साहित्य का पडा उतना और किसी का नही। ग्रीक-साहित्य ने ससार को बहुत कुछ दिया—होमर, सौक्रेटीज (सुकरात) एस्चिलस, सोफोक्लीज, युरिपीडीज, एरिस्टोफेनीज, प्लेटो (अफलातून) अरिस्टॉटल (अरस्तू) सोफिस्ट-स्टोइक-एपिक्यूरी दर्शन। यूरोप के ऊपर तो निश्चय ही इनका बडा असर पडा, उसके दर्शन पर, साहित्य और आलोचना पर, कला और विज्ञान पर।

उस ग्रीक-साहित्य को हम तीन भागो में विभक्त कर सकते है। ये तीन भाग ग्रीको के तीन राजनीतिक काल-प्रसारो पर अवलम्बित है। इनमें से पहले को लाक्षणिक रूप में 'क्लासिकल' कहते हैं, जिसे हम सर्वथा वीर-गाथाकाल तो नही कह सकते परन्तु निश्चय ही वह उसके बहुत समीप हैं। यह काल-प्रसार ईसा से पूर्व ९०० से ३२३ वर्ष तक है। इस बीच ग्रीको ने अपने प्रख्यात नगर-राज्यो का विकास किया। यह ग्रीक-इतिहास का प्राचीनतम युग था। इस युग का अन्त पूर्व और मध्यपूर्व मे ग्रीको के साम्राज्य-निर्माण के साथ हुआ।

दूसरा काल-प्रसार चौथी सदी ई० पू० से शुरू होकर ईसा पूर्व दूसरी-पहली सदी तक है, जब व्यक्ति का नगर-राज्यो से सम्बन्ध कमजोर पड गया और ग्रीको की आवादी नये विजित देशों में फैल चली। उस काल साहित्य का एक नया रूप विकसित हुआ, ऐसा रूप जिसमें विश्व-साहित्य के बीज थे, यद्यपि जिसकी साधना एक अत्यन्त छोटे वर्ग को शिक्षित करने के लिए हुई। उसमें निस्सन्देह 'क्लासिकल-युग' की कृतियो की ताजगी नही है। वस्तुत इस काल का आरम्भ ईसा पूर्व ४थी सदी से ही हो जाता है। दूसरी-पहली ईसा पूर्व की सदियाँ उस काल-शृखला की पिछली कडियाँ है जब रोम के विजेताओ ने ग्रीस को विजय कर उसे विस्तृत-रोमन साम्राज्य का प्रान्त बना लिया। तब मे ग्रीक-साहित्य के तीसरे और अन्तिम युग का प्रारम्भ होता है जिसे 'ग्रेसो-रोमन'-युग कहते है। इस काल प्राचीन क्लासिकल विभूतियो की ओर ग्रीक और रोमन लेखको की दृष्टि लौटी। एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ। फिर भी ईसाई-साहित्य धीरे-धीरे उसके ऊपर हावी होता

गया और प्राचीन ग्रीक—देव-बहुल—धर्म साहित्य का आधार अब न रहा। ५२९ ईस्वी में तो ग्रीक-दर्शन के पीठो को रोमन ईसाई सम्राट् जस्टीनियन ने अपनी घोषणा द्वारा सर्वथा बन्द ही कर दिया। इस तीसरे युग का अन्त तब हुआ। इन तीनो को हम क्रमश क्लासिकल, हैलेनिक और रोमन-युग ही कहेंगे।

यहाँ हमें यह नही भूलना चाहिए कि भारत की ही भाँति काठ और कठमुल्ले मानव के स्वभाव से ग्रीक-साहित्य को भी गहरी क्षति पहुँची है। काल और मनुष्य दोनो ने उस पर गहरी विध्वसक चोटे की और उसका बडा भाग विनष्ट कर दिया। अधिकतर यह विध्वस कार्य धार्मिक उत्साह का परिणाम था, जिसने सदियो की साहित्य-साधना अपनी बर्बरता से मिटा दी। उस लम्बे रचनाकाल की सैकडो-हजारो कृतियो मे आज केवल कुछ ही बच रही है, थोडो-सी लिरिक (गेय कविताएँ) और कुल ४३ नाटक तथा उनके खण्ड। इस साहित्य-विध्वस का जितना श्रेय दीर्घकाल तक विद्वानो की उदासीनता और काल की प्रगति को है, उससे कही बढकर क्रूसेडो और तुर्कों के धार्मिक उत्साह को है। अस्तु।

ग्रीक-साहित्य के उदय और आधार को हृदयगम करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि समझ ली जाय। ग्रीक-साहित्य के निर्माता प्राचीन ग्रीस के मूल निवासी न थे। उनके पहले वहाँ 'मिनोअन' और 'मिकीनी' सभ्यता के निर्माता निवास करते थे। 'मिनोअन' सभ्यता ग्रीस के दक्षिण, क्रीट के द्वीप मे, जन्मी। उसका नाम क्रीट के उस राजा मिनॉस के नाम पर 'मिनोअन' पडा जिसकी राजधानी क्नोसस थी और जिसके चित्रित महलो को सर आर्थर ईवान्स ने अब खोद निकाला है। उसकी लिपि अब तक पढी न जा सकी, परन्तु यह सही है कि प्राय ढाई हजार वर्ष ईसा पूर्व से लेकर डेढ हजार वर्ष ईसा पूर्व तक उस सभ्यता का क्रीट तथा ग्रीस और एशिया माइनर के नगरो पर विस्तार रहा। १५०० ईस्वी पूर्व के लगभग हिन्दी-यूरोपीय आर्यों की एक शाखा जब ग्रीस की ओर चली तब मिकीनी आदि नगरो की उस प्राचीन सभ्यता से उस का सघर्ष हुआ। नए आगन्तुक आर्य बर्बर लडाके थे और, यद्यपि उन्हे पीतल और ताँबे के चमकते भालो के विरुद्ध अधिकतर पत्थर के हथियारो से लडना पडा, उनका आतक एशिया माइनर के हत्ती राजाओ और मिस्र के फैरोहो पर जम गया। उन नवागन्तुक बर्बरो ने मिकीनी सभ्यता को तोड डाला। उनकी अन्तिम धारा डोरियन ग्रीको की थी जो १२०० ईस्वी पूर्व के कुछ पहले-पीछे ग्रीस पहुँची। इन्हीं का ट्रॉय के निवासियो से वह प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसकी महिमा महाकवि होमर ने अपने अमर काव्य 'ईलियड' मे गाई है। अब वे प्राचीन बर्बर डोरियन ग्रीक, जो आर्यों की पहली धाराओ से पहले लड-झगड कर फिर उसमे घुलमिल गये, अपने नागरिक प्रतिद्वन्द्वियो से नगर-जीवन का भेद सीख अपने नगर बना ग्रीस में बस गये। उनके पास लिपि न होने से कोई लिखित साहित्य भी न था। हाँ, उनके चारण अपनी जाति के प्राचीन पराक्रमो के गीत शब्दबद्ध रूप में बस्ती-बस्ती घूमकर गाया करते

थे, उसी प्रकार जैसे महाभारत, रामायण के पहले भारत में भी प्राचीन गाथाएँ गायी जाती थी। आठवी सदी ईस्वी पूर्व के आसपास ग्रीको ने अपने पडौसी फिनिशियनो से इब्रानी लिपि सीखी और उसके बाद साहित्य लिखा भी जाने लगा, परन्तु लिखी हुई प्राचीनतम कृति भी ५०० ईस्वी पूर्व के पहले की नही है। वस्तुत तभी से 'क्लासिकल' साहित्य-काल का ग्रीस में आरम्भ होता है।

वीर-काव्य-युग या क्लासिकल साहित्य का आरम्भ होमर[1] की रचनाओ—'ईलियड' और 'ओडिसी'—से होता है। इसमें सन्देह नही कि उनकी रचना उनके लिपि-बद्ध होने से बहुत पूर्व हो चुकी थी और वे चारणो द्वारा बराबर गा-गाकर बचा रखी गयी थी। इनमें 'ईलियड' का स्थान बहुत ऊँचा है। ईलियड में ट्रॉय के नगर के साथ ग्रीको का दश-वर्षीय युद्ध वर्णित है, यद्यपि इस काव्य में केवल अन्तिम दसवें वर्ष का समर प्रतिबिम्बित है। ट्रॉय का घेरा और युद्ध दोनो का ईलियड में अनुपम चित्रण हुआ है। वह चित्रण आज के अकनो से सर्वथा भिन्न है। ग्रीक-स्कन्धावरो और शिविरो में घटने वाले प्रसगो का वर्णन बडा सजीव और लोमहर्षक है। युद्ध अधिकतर द्वन्द्व-युद्ध है, जिनमे योद्धाओ के जोडे लडते और विनष्ट होते है। ईलियड का कथानक बस इतना है कि एकिलिज, जो ग्रीको का अनुपम और आदर्श वीर है, क्रुद्ध होता है और उस क्रोध का बर्बर बदला लेता है। पहले तो वह ग्रीको के प्रधान सेनापति अगामेम्नन से बन्दी तरुणियो के बाँट के सम्बन्ध में (अगामेम्नन उसकी वाछित तरुणी को स्वय ले लेता है) क्षुब्ध होकर युद्ध से हाथ खीच लेता है और ग्रीको के अनुनय तथा अगामेम्नन की क्षमा-प्रार्थना पर भी कुछ ध्यान नही देता। फिर जब उसकी अनुमति और उसका अच्छा कवच लेकर उसका मित्र पाट्रोप्लस युद्ध में शामिल होकर प्रियम के पुत्र हेक्टर द्वारा मारा जाता है तब एकिलिज नितान्त दु खी और क्रुद्ध हो कर रण-क्षेत्र मे झपट पडता है। अभिमन्यु-वध से युद्ध में सूर्यास्त तक जयद्रथ के वध का प्रण किये अर्जुन का जो रूप समर-भूमि में महाभारत में मिलता है वही एकिलिज का ईलियड में है। मैदान में उसके सामने लाशें बिछ जाती है, जो सामने आता है नष्ट हो जाता है। प्रियम के सभी बेटे बारी-बारी निधन को प्राप्त होते है। सम्भ्रान्त नागरिक सत्रस्त हो कर प्रियम के बेटे पैरिस से युद्ध की कारण हेलेन को ग्रीको को लौटा देने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु वह नही डिगता और अद्भुत पराक्रम दिखा कर रण में स्वय मारा जाता है। एकिलिज अन्त में ट्रॉय के शालीन पराक्रमी हेक्टर को मार डालता है। हेक्टर ने उसके मित्र का वध किया था इससे वह उसका निजी शत्रु है। उसे मार कर वह उसकी लाश रथ के चक्रो में बाँध ट्रॉय की दीवारो के चारो ओर दौडता है और अन्त में उस कुचली लाश के भी टुकडे-टुकडे कर डालना चाहता है। 'ईलियड' पढते समय एकिलिज की यह बर्बरता उस

---

१ Homer (९वीं सदी ई० पू०)

भीम की बर्बरता की याद दिलाती है जो दु शासन को मार कर ही तृप्त न हो सका था, उसकी छाती फाड उसने उसका अजलियो से रक्त भी पी लिया था। ठीक तभी जब एकिलिज हैक्टर के शव का अग-विच्छेद करने को उद्यत है, हैक्टर का पिता वृद्ध प्रियम पहुँच कर उस से बेटे की लाश माँगता है और उसके हाथ चूम लेता है। परिस्थिति की करुणा तब साकार हो एकिलिज का हृदय छू लेती है, उसे अपने पिता का स्मरण हो आता है और वह हैक्टर की लाश उसके पिता को लौटा देता है। फिर ट्रॉय का विध्वस होता है और उसका राजा स्वय वृद्ध प्रियम तक ग्रीको की सहार-क्रिया से नही बच पाता। यही ईलियड का कथानक है।

युद्ध उसी परपरा मे था जो अक्सर नवागन्तुक ग्रीक्स और ग्रीस के पुरान निवासियो के बीच हुआ करता था। मिकीनी मिट चुका था, ट्रॉय अभी शेष था, दर्रा दानियाल के पास एशिया माइनर (लघु एशिया) मे अपने पूर्ववर्ती भग्नावशेषो के ऊपर खडा। ग्रीक ट्रॉय को वैसे भी ऐतिहासिक कारणो से नष्ट करना चाहते थे, अब उनकी बर्बर कृति के लिए उन्हें अवसर भी मिल गया। पैरिस प्रियम का पुत्र था, पराक्रम और सौन्दर्य दोनो में अनुपम। सुन्दर तो वह इतना था कि ग्रीक पुराण कथाएँ कहती है, देवियाँ तक उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गयी और उन्होंने अपने-रूप की होड में पैरिस से निर्णय माँगा। पैरिस ने वह निर्णय प्रेम और काम की देवी अफ्रोडाइटी के पक्ष में दिया। कृतज्ञ अफ्रोडाइटी ने उसे ग्रीको की सब से सुन्दर नारी हेलेन के प्रणय का वरदान दिया। हेलेन भी पैरिस को देख उसके रूप पर रीझ गई और एक दिन स्पार्टा के राजा मेनेलास की अनुपस्थिति मे उसके दरबार में पहुँच पैरिस उसकी पत्नी हेलेन को ट्रॉय ले भागा। उसी हेलेन की प्राप्ति के लिए सम्मिलित ग्रीक सेनाओ ने ट्रॉय पर घेरा डाला। ट्रॉय का विध्वस कर हेलेन को ले अगामेम्नन का भाई मेनेलास स्पार्टा लौट गया।

ईलियड का कथा-निर्वाह कुछ जटिल है परन्तु उसके अकन बडे सजीव, उदात्त और लोमहर्षक हैं। कवि प्राचीन बर्बर युद्धो का जिक्र समसामयिक ग्रीक बर्बरो मे करता है जो युद्ध के दाँवपेच भली भाँति समझते हैं और स्वय वीर-दर्प से ऊर्जस्वित नित्य लडाइयाँ लडते रहते हैं। ईलियड के पात्रो का होमर ने बडा तेजस्वी और खुला रूप खींचा है। उसके वर्णन में रेखाएँ नही तत्क्षण की उभरी आकृतियाँ है, स्पष्ट, सबल, कर्मठ। परन्तु उसके चरित्रों में अन्तर है। ग्रीकपक्ष के अनेक चरित्र लोकोत्तर है, देव-तुल्य, अर्धदेव। किसी की माता देवी है, किसी का पिता देवता। परन्तु हैक्टर आदि का वर्णन अद्भुत मानवीय है। एकिलिज देवोपम है, हैक्टर सर्वथा मनुष्य। हैक्टर मानव होकर भी देवोत्तर एकिलिज से कही अधिक हमारी सहानुभूति का पात्र हो उठता है और वह अपनी मृत्यु के कारण नही अपनी लोक-चेतना, स्वदेश-प्रेम तथा पराक्रम से। एकिलिज स्वय कम पराक्रमी नहीं है परन्तु वह अर्धदेव है और देवता का पराक्रम जन्म-सिद्ध होने मे महत्व नही रखता। खतरे

मे साहस के साथ जान को डाल देना मनुष्य की ही अकृत्रिम विशेपता है और हैक्टर उसी का प्रतीक है। होमर के देवता भी प्राचीन कृतियो की तरह मानवीय आचरण करते है, मानव-आवेशो से भरे है, क्रोध, ईर्ष्या, राग आदि के शिकार है। ईलियड अदभुत कृति है वीर-काव्य जगत् की यह पहली रचना, आठवी-नवी ईस्वी पूर्व के लगभग रची गई।

होमर का दूसरा काव्य 'ओडिसी' है, ग्रीस की प्राचीन लोक-कथाओ पर आधारित। ट्रॉय-युद्ध के वीरो मे सबसे चतुर इलिसिज युद्ध के बाद जहाज पर द्वीप-द्वीप फिरता रहता है और दस वर्ष उसकी साध्वी पत्नी पेनिलोप उसके आसरे बैठी रहती है। उस बीच उससे विवाह करने के इच्छुक अनेक श्रीमान उसी के यहाँ पडे रहते और खाते-पीते है। उसे विवाह करने के लिए परेशान करते हैं। इलिसिज का पुत्र पिता की खोज में द्वीप-द्वीप जहाज लिए फिरता है जो साहस का काम है और जिसे सहज साहस से महाकवि होमर ने उस वीर-काव्य में अकित किया है। इलिसिज़ लौटता है और पत्नी के प्रणय-पीडको का वध कर डालता है।

होमर की भाषा इओलिक और आयोनिक वोलियो का सम्मिश्रण है, जो वीर-काव्य के लिए बडी सशक्त है। इन काव्यो मे ताम्र और लौह-युग की दोनो भिन्न सस्कृतियो का वर्णन हुआ है। वे सस्कृतियाँ अपने ऐतिहासिक रूप में पुराविदो को अपनी सच्चाई से कम से कम ईलियड के स्तर से, उसके कथानक के ट्रॉय सम्वन्धी ऐतिह्य से, प्रभावित पहले न कर पाई थी पर जब श्लीमान ने ट्रॉय नगर के एक पर एक खडे ९ भग्नावशेषो को एशिया माइनर में दर्रा दानियाल के पास खोद निकाला तव उन्हे ट्रॉय युद्ध पर विश्वास हुआ। ट्रॉय के भग्नावशेषो की परपरा में ईलियड वाला नगर छठा है। ट्रॉय युद्ध की तिथि साधारणत ११८४ ई० पू० मानी जाती है। नवी सदी ईस्वी पूर्व के लगभग होमर ने गाथाओ को एकत्र किया और उनको एक मे घुला-मिला कर अपनी मेवा से नयी अद्भुत काया प्रदान की। उसने उनको अपनी काव्य धारा में उदरस्थ करके भी प्राचीन गाथाओ की अनेक भाषा सम्बन्धी विशेपताएँ, विशेषण आदि वैसे के वैसे प्रयुक्त किये।

होमर कौन था, या कहाँ का था यह कुछ सही-सही ज्ञात नही सिवा इसके कि वह, किम्वदन्तियो के अनुसार, जन्माध था और यह कि ग्रीक-साहित्य का वह पहला वीर-काव्य-कार था। ऊपर कहा जा चुका है कि गाथाएँ पहले से प्रस्तुत थी जिनका होमर ने उपयोग किया। फिर तो होमर के पूर्ववर्ती गायको और कवियो का होना भी आवश्यक है और हमें ग्रीक-साहित्य मे इस प्रकार के होमर-पूर्व के गडरिया-गीतो के कवियो का निर्देश मिलता है। उन्ही में से आरफियस और मूसियस थे पर उनकी कविता का हमें कोई ज्ञान नही।

होमर के काव्यो की सफलता इससे प्रकट है कि उनकी कविताओ के गायको की एक श्रेणी (समुदाय) ही वन गई जिसे 'होमरीडी' कहते थे जिनका काम इजियन सागर

के द्वीपो और ग्रीस की यूरोपियन भूमि पर उन्हे गाते फिरना था। इस प्रकार इन काव्यो का प्रचार पहले गा-गाकर ही हुआ । बाद मे, लगभग छठी सदी ईस्वी पूर्व के या सम्भवत उसके भी बाद, पहली बार वे लिखे गये। ईलियड और ओडिसी के अनेक अनुकरण भी हुए, यद्यपि वे आज उपलब्ध नही, उनका केवल सकेत हमे साहित्य में मिलता है।

आठवी सदी ईस्वी पूर्व तक वीर-काव्यो का लिखना तो जैसे समाप्त हो गया, परतु उनकी छन्द-परंपरा बनी रही। कुछ सूक्त जो उस शैली मे लिखे गए 'होमरीय सूक्त' कहलाते हैं। वे डेमेटेर, अपोलो, पान की प्रार्थना मे प्रयुक्त होते थे। वीर छन्द का प्रयोग इसी प्रकार नीति-कविताओ के लिए हेसियऑड[1] ने भी किया। हेसियऑड के कुछ अनुकर्ताओ ने भी इस छन्द का उपयोग किया। दार्शनिक और वैज्ञानिक खोजो के सम्बन्ध में भी इसका व्यवहार हुआ।

धर्म सम्बन्धी विषयो पर दार्शनिक आक्षेप भी इस काल हुए, विशेषत आठवी सदी ईस्वी पूर्व में। वस्तुत अदार्शनिक रूढिवादी धर्मान्धता के विरुद्ध लोगो में जिज्ञासा जग गई थी। उस जिज्ञासा और विरोधात्मक चिन्तन का समावेश, हेसियऑड ने अपनी कविता में किया। पहले की कविताओ की भाषा, भाव-विचार सभी कुछ सम्भ्रान्त और उच्चवर्ग के थे, परन्तु हेसियऑड ने अपनी कविताओ द्वारा निम्नवर्ग के पक्ष में विद्रोह किया। वह किसान की ओर से बोला। काम और दिन विषयक ग्रथ मे उसने किसान के भाव प्रकट किये। वह स्वय भी बोइओटिया का किसान था, किसान था जिसकी भूमि साजिश द्वारा भाई और जजो ने छीन ली थी। इस कविता में उसने बोइओटिया के किसानो के कठिन जीवन का चित्र खीच कर रख दिया और सार्वभौम न्याय के पक्ष में आवाज उठाई। अपनी 'थियोगोनी' में पहली बार उसने ग्रीक पौराणिक विश्वासो का अध्ययन किया। हेसियऑड की कविताओ के भी अनेक अनुकरण हुए जिससे उनकी लोकप्रियता का अन्दाजा लगाया जा सकता है। उसकी कविताओ की ध्वनि भिन्न थी, परन्तु रूप वही वीर छन्द का पुराना ही था।

ई० पू० छठी सदी मे वीर छन्द का उपयोग दार्शनिक क्षेत्र मे पूर्णत होने लगा। यवन (आयोनियन) दार्शनिक अपने ससार का जो मनन करने और बौद्धिक व्याख्या ढूढ़ने लगे तो उन्हे इसी छन्द का उपयोग सुकर जान पडा। इसका मुख्य कारण यह था कि गद्य का अभी जन्म नही हुआ था। जैसे भारत में वैसे ही ग्रीस मे भी साहित्य की पहली कृतियाँ पद्य में ही हुई। इसके अतिरिक्त ईस्वी पूर्व छठी सदी में ऑर्फिक सम्प्रदाय का भी जन्म हुआ जिसने पहली बार आतमा के आवागमन और आदि पाप का सिद्धान्त निरूपित किया। दोनो विचार वीर-काव्यो के ओलिम्पियन धर्म-परपरा की परिधि के बाहर थे।

---

१ Hesiod (८वी सदी ई० पू०)

इस सम्प्रदाय के दार्शनिको ने अपने विचारो का वाहन वीर छन्द को ही बनाया। इस प्रकार उस सदी तक पहुँचते-पहुँचते होमर के छन्द का व्यवहार साहित्य में सर्वत्र होने लगा।

: २ :

लिरिक काव्य

ई० पू० सातवी सदी तक कबीला और देहाती जीवन का ग्रीस में अन्त हो गया था। उसका स्थान अब इतिहास में सर्वथा नए नगर-राज्य ले चले थे। इस क्रान्ति ने एक नए मध्य-वर्ग को जन्म दिया, जिसकी आर्थिक सत्ता कुछ भूमि पर विशेषत वाणिज्य पर, अवलबित हुई। राजनीति में कही तो सम्भ्रान्तकुलीय गण-शासन स्थापित हुआ, कही व्यक्ति 'टाएरैन्ट' की नि सीम सत्ता और अन्त में जनतन्त्र (डेमोक्रेसी)। इस प्रकार धीरे-धीरे व्यक्ति का महत्व बढा। इस बदली स्थिति में 'लिरिक' काव्य का जन्म हुआ। आज 'लिरिक' की परिभापा अधिक व्यापक और उसकी परिधि विस्तृत है। ग्रीस में उसका मूल उदय तन्त्री (लीर-लायर) स्वर में हुआ, इससे गेयता उसकी पहली पहचान हुई और यह गायन दोनो प्रकार का था, वैयक्तिक और कोरस रूप में समवेत। शोक विरहादि में भी उस शैली का उपयोग होने लगा और तब उसकी स्वर-सयुक्त गेयता सीमित हो गई, क्योकि काव्य-वाचन भी अव उसका एक रूप हुआ। शोक-सम्वेदक कविताओ का उदय अधिकतर यवन (आयोनियन) नगरो में हुआ, यद्यपि आज वे प्राप्य नही है। आज इस प्रकार की जो कविताएँ उपलब्ध हैं वे स्पार्टा, एथेंस, मेगरा के नागरिको की हैं—टिरटियस[१], सोलोन[२], थियोग्निस[३] की। इन कविताओ की आवाज राजनैतिक है जो उस काल की राजनीतिक और जिज्ञासु चेतना की परिचायक है। टिरटियस ने अपने गीतो में मेसेनिया जीतने में अपने स्पार्टावासियो का उत्साहवर्धन किया, लिकर्गस के नए विधानो की सराहना की। सोलोन ने एथेन्स में किए अनेक राजनीतिक परिवर्तनो को अपने गीतो से लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न किया। उधर थियोग्निस ने अपने मेगारा की जनसत्ता का विरोध किया। इस प्रकार इन लिरिक कविताओ के विपय दु ख-प्रकाशन, प्रणय-निवेदन, मरनिया, सभी हो गए। आरभिक गेय कविताएँ राजनीति-परक थी।

पासोस के आर्किलोकस[४] ने 'आइएम्बिक' छन्दो में अपनी कविताएँ लिखी और इस प्रकार की कविताओ का आदर्श उसी की (७वी सदी ईस्वी पूर्व की) कविताएँ बनी जो उसने अपने अपमान करने वाली नारी और उसके पिता के विरुद्ध लिखी। ख्यातो मे प्रसिद्ध है कि परिणामत दोनो ने आत्महत्या कर ली। आर्किलोकस की कविताओ में चाहे वे राजनीतिक हो या प्रेमविषयक उनकी ध्वनि अपनी थी, वैयक्तिक।

---

१ Tyrtaeus, २. Solon, ३ Theognis; ४ Archilochus (७वीं सदी ई०पू०)

लिरिक-कविता ने ग्रीस में बराबर अपना गेयस्वरूप कायम रखा। उसकी भाषा सरल और सुगम थी, आम लोगो की। उसका छन्द और उसकी शब्द-योजना, सभी सहज थे और उनमे साधारण जनो के हर्ष-विषाद, सयोग-वियोग, प्रणय-क्रोध आदि वर्णित होते थे, सर्वथा निजी रूप से और गेयता उनका आवश्यक गुण था। जिन लिरिको को अकेले गाया जाता था उन्हें 'सोलो' लिरिक कहते थे। उनके प्रारभिक महत्त्व के कवि अल्किउस[1] और सैफो[2] थे। दोनो ही सम्भ्रान्तकुलीय थे, दोनो में शब्दलालित्य और भावुकता थी। दोनो लेस्बास द्वीप के रहने वाले थे, ईस्वी पूर्व सातवी सदी के मध्य के। सैफो तो लिरिक की अद्भुत प्रचारिका थी। अफ्रोडाइटी की पूजा के लिए वह नारियो का एक दल साथ ले लेती। उनके सम्पर्क मे उसे एक प्रकार का आध्यात्मिक सुख और प्रेरणा मिलती थी। उसके नाम के साथ अनेक कहानियाँ और अनुश्रुतियो का सबध हो गया है। उसकी बस थोडी ही रचनाएँ बच रही है, परन्तु उनसे उत्कट नारी-भावुकता का परिचय मिलता है। उसकी सरल, परिमार्जित, स्पष्ट शैली हृदय को छू लेती है। उसकी कविताओ का भाव-प्रवाह सहज है। उसका अनुकरण भी प्राचीन काल में काफी हुआ। मिस्र से कुछ 'पेपिरस' पर लिखी सामग्री मिली है, जिससे पता चलता है कि सातवी सदी ईस्वी तक उसका यश मलिन नही हुआ था। उसके अनुकर्ताओ में प्रधान अनाक्रियन[3] और काटुलस[4] थे। इनमें से पहले ने प्रणय और आपानविषयक अनेक अभिराम कविताएँ लिखी। आयोनिया से वह एथेन्स आया पर वहाँ के राजनीतिबहुल सामाजिक जीवन से उसे विशेष सहानुभूति न मिली। पाँचवी सदी ई० पू० में तो 'सोलो' लिरिक का लोप हो ही गया।

डोरियन नगरो में कोरस लिरिको का प्रचलन हुआ और वही डोरियन बोली की ग्रीक भाषा और साहित्य को देन है। इसका मूल आरम्भ भी सम्भवत आयोनिया में ही हुआ था, पर विकास डोरियन नगरो में हुआ। इसमें वैयक्तिक उद्गार का इतना महत्त्व न था जितना सामूहिक रूप से धर्म-चेतना का। इनका उपयोग देवपूजा, मरसिया, विवाह, नृत्य आदि के अवसर पर होता था, परन्तु इनका मूल उद्देश्य धर्म से ही अनुप्राणित था। इनकी रचनाएँ पेचीदी थी, क्योकि इनका गायन नृत्य-वाद्य के साथ होता था। कोरस लिरिक का पहला जाना हुआ रचयिता अल्कमन[5] है। उसकी लिरिक का खडमात्र प्राप्य है। यह लडकियो के लिए कोरस का गान है। छठी सदी ईस्वी पूर्व में इनका प्रयोग विजय-सबधी रचनाओ मे होने लगा। इबिकस[6] और विशेषत पिण्डार[7] ने इनका विकास किया। इस प्रकार की कवितायें लिखने में पिण्डार बडा पारगत था। खेलो के अवसर पर उसकी कविताएँ गायी जाती थी। उसकी उपमाएँ, कल्पनाओ की परपरा असाधारण है। उसकी

---

१. Alcaeus, २ Sapho (६५० ई० पू०), ३ Anacreon (६ठी ई० पू०); ४ Catullus, ५ Alcman, ६ Ibycus, ७ Pindar (५१८-४२२ ई० पू०)

भाषा भी उसी प्रकार असामान्य शालीन है। कोरस लिरिको का व्यवहार इतना बढा कि पिन्डार 'आर्डर' पर रचना करने वाला पेशेवर बन गया। इस प्रकार के पेशेवर कवियो मे सिमोनिडीज[1] और बैक्किलिडीज[2] भी थे। पिण्डार का रचनाकाल ५१८-४४२ ई० पू० था। इस प्रकार की लिरिक का स्थान ई० पू० पाँचवी सदी मे 'ट्रैजेडी' ने ले लिया।

: ३ :

नाटक

वीरकाव्य और लिरिक का विकास तो इयोलिक, डोरिक और आयोनिक बोलियो में हुआ परन्तु ईसा पूर्व पाँचवी और चौथी शताब्दियो में साहित्य-निर्माण विशेषत एथेन्स में हुआ। एथेन्स छठी सदी से ही राजनीतिक नेतृत्व धारण कर चला था। जितनी राजनीतिक उथल-पुथल वहाँ हुई उतनी और कही नही हुई। पहले वहाँ व्यक्ति-प्रधान निरकुश शासन हुआ फिर जनसत्ताक राजनीति की प्रतिष्ठा हुई। ईरानियो के एशिया माइनर की विजय से भी कुछ लेखक और कलाकार भागकर वहाँ पहुँचे और उन्होने साहित्य में एक क्राति उपस्थित कर दी, फिर ईरानियो की पराजय ने ग्रीक्स को साहित्य-निर्माण के लिए बडी सामग्री दी।

ई० पू० पाँचवी सदी का सबसे महत्त्वपूर्ण साहित्यिक विकास ड्रामा (नाटक) था। उसके आरम्भ का कुछ पता नही चलता। पहले ग्रीस के देहातो में देव-सबधी कोरस गाये जाते थे, शायद उन्ही से ग्रीक 'ट्रैजेडी' का विकास हुआ। कोरस के गायन के साथ ही थेस्पिस[3] ने एक अभिनेता का उपयोग करना शुरू किया जिससे एक प्रकार का 'डायलॉग' व्यवहृत होने लगा और नाटक का प्रारभिक रूप खडा हो गया। इसी से थेस्पिस ट्रैजेडी का निर्माता कहलाता है। डायलॉग ने नाटकीय परिस्थितियाँ उपस्थित कर दी। ई० पू० ५३५ के लगभग पेइसिस्ट्रेटस[4] ने डायोनिसस के राजकीय व्यवहार पर ट्रैजेडी के कुछ तत्व निर्दशित किये। फिर तो एथेन्स के धार्मिक और सार्वजनिक अवसरो पर नाटकीय प्रदर्शन अनिवार्य हो गए। राज्य स्वय उन प्रदर्शनो का सगठन करता था और स्वय उनका खर्च भी देता था। ई० पू० पाँचवी सदी तक जब इस्किलस[5] ने लिखना आरम्भ किया, नाटक अपने आवश्यक लक्षण धारण कर चुका था। इस्किलस ही नाटक, ट्रैजेडी, का प्रवर्तक था। उसी ने अपनी सूक्ष्म और साहित्यिक सामर्थ्य से ग्रीक-साहित्य को ट्रैजेडी का अनुपम रत्न दिया। उसने प्राचीन पौराणिक आख्यानो को विश्व के सार्वभौम न्याय से समन्वित कर नाटको की अभिसृष्टि की। उसने पौराणिक आख्यानो के अतिरिक्त

---

१ Simonides, २ Bacchylides, ३ Thespis, ४ Peisistratus, ५ Aeschylus (५२५-४५५ ई० पू०)

वीर-काव्यो से भी सामग्री ली। उसने शायद ही कभी समसामयिक घटनाओ को अपने नाटको का आधार बनाया। एक 'पर्शियन' (ईरानी) मात्र उसका अपवाद है। इसमें उसने निःसन्देह ईरानी सम्राट् कसेरेक्स की पराजय को प्लाट बनाया। पहले कोरस का प्राधान्य था और नाटकीय परिस्थितियाँ बहुत न्यून होती थी, पर इस्किलस ने अपने पिछले नाटको मे यह कमी पूरी कर दी, नाटकीय प्रसगो का विशेष विकास कर दिया। नाटक तीन-तीन प्लाटो का एकत्र उपयोग करते थे '(इन्हें 'ट्रिलोजी' कहते थे) जिनके अन्त में एक प्रहसन जोड दिया जाता था। 'ट्रिलोजी' बाद में एक ही प्लॉट का प्रयोग करने लगी। इस्किलस ने अपने पात्रो को वीरकाव्यो की सरलता दी। उनके कार्य अधिकतर एक ही शक्तिम मनोयोग अथवा एक ही भावावेग से प्रचलित होते है। उनमे सम्मिलित उद्देश्यो का अभाव होता है।

ट्रैजेडी का अभिराम रूप सोफोक्लीज[1] ने प्रस्तुत किया। उसने कोरस और नाटकीय स्थितियो मे उचित सतुलन रखा। दोनो की मात्राओ की उचित मर्यादा थी। नाटक भी अब ट्रिलोजी के अग न होकर स्वतन्त्र और सम्पूर्ण रचना बन गए। उसके पात्रो की अनेकता ने विविध भावावेगो का समवेत निदर्शन सभव किया और उसने इस्किलस से सर्वथा भिन्न मानव-प्रकृति और स्थिति-विशेष में उसकी प्रतिक्रिया पर जोर दिया, जहाँ इस्किलस ने सार्वदेशिक नैतिक सिद्धान्त को अपना आदर्श बनाया था। इसी से सोफोक्लीज को उस दिशा में आशातीत सफलता मिली। सोफोक्लीज क्लासिकल ग्रीक ट्रैजेडी का सबसे सच्चा प्रतिनिधि था। उसका समय अधिकतर नाटक लिखने में बीतता रहा होगा, फिर भी वह उस काल के एथेन्स का सही नागरिक था। औरो की भाँति ही वहाँ के राजनीतिक जीवन में वह खुलकर भाग लेता था। बौद्धिक क्षेत्र में अग्रणी था, और उस काल के विलासी जीवन में भी कुछ पीछे न था। उसने नाटक मे तीसरे पात्र के अभिनय का आरम्भ किया और 'ट्रिलोजी' की परपरा को तोडकर नाटक में विविध भागो की एकता स्थापित की। परन्तु नाटक के क्षेत्र में जो उसका उस काल से आज तक विशेष महत्व माना जाता है, उसके कारण और हैं। भाषा की सूक्ष्मता, प्लॉट की एकता और असाधारण ग्रथन, और नाटकीय कला के स्वरूप पर उसका पूर्ण अधिकार—उसके पाँचवी सदी ईस्वी पूर्व के ग्रथ 'क्लासिकल' निरूपण को अभिव्यक्त करते हैं।

इस्किलस और सोफोक्लीज दोनो के नाटक उस ग्रीक परपरा में लिखे गये जिसमें ट्रैजेडी का उपयोग धार्मिक उत्सवो पर हुआ करता था। जनता आशा करती थी कि ट्रैजेडी का उद्देश्य गम्भीर, नैतिक शिक्षा हो। इसी कारण इस्किलस और सोफोक्लीज के प्रभाव से नाटक के स्वरूप में कुछ पारपरिक परुषता आ गई। जब यूरिपिडीज[2] ने

---

१ Sophocles (४९७-४०५ ई पू), २ Euripides (४८५-४०६ ई पू)

अपने नाटक लिखने शुरू किये तब उसे भी उसी परपरा का पहले अवलम्बन करना पडा जो उसके लिए बडी झल्लाहट की चोज हो गई और नतीजा यह हुआ कि चूकि वह सर्वथा नये रूप के नाटक न लिख सका, पुराने नाटको की पद्धति भी पूर्णत कायम न रख सका और दोनो का सन्तुलन बिगड गया। यूरिपिडीज ग्रीक ट्रैजेडीकारो में सबसे अधिक प्रभाव-शाली था। उसकी अभिरुचि मानव-विकारो और आवेगो में थी। इसी कारण उसके नाटको में एक ऐसी ध्वनि उठी जो इस्किलस और सोफोक्लीज की पुरानी पद्धति से भिन्न थी। उसके नाटक वर्तमान काल के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण और समस्या नाटको के अनुकूल थे। उसके प्रधान नाटक शक्तिमान, भावावेगो से प्रेरित सशक्त व्यक्तित्वो के पारस्परिक सघर्ष को केन्द्रित करते हैं। 'मीडिया' घृणा से प्रेरित है, 'फीड्रा' प्रणय से और 'आगावे' धार्मिक कट्टरता से। मानव-स्वभाव के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति ने यूरिपिडीज को नयी 'कॉमेडी' का जनक बना दिया और इसी कारण उसकी कॉमेडी प्राचीनो के बीच सोफोक्लीज की कला की असाधारण कुशलता के बावजूद अधिक लोकप्रिय हो गई। यूरिपिडीज ने १७ ट्रैजेडी (दु खान्त नाटक) और एक व्यग नाटक लिखा। वह ग्रीस की पाँचवी सदी ईस्वी पूर्व के महान् तीन नाटककारो में से है। कोरस-गायनो का चलन अब उठने लग गया और उनको वस्तुत विष्कम्भक बना दिया गया। यूरिपिडीज को भी नाटक को धार्मिक शिक्षण का वाहन बनाने मे कुछ विशेष अभिरुचि न थी, यद्यपि उसका उप-योग पारस्परिक धर्म की कमजोरियाँ प्रदर्शित करने में वह न चूका। उसकी विशेष अभि-रुचि वस्तुत, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, पात्रो की पारस्परिक मनोवृत्तिक प्रतिक्रिया के प्रदर्शन में थी। नये प्रसग, विनोदपरक डायलॉग, करुण, यथार्थ वस्तुतत्व—यूरिपिडीज की भावशृखला की कडियाँ थे। वह नाटक अपनी अनुभूति और समसामयिक जीवन की आलोचना के रूप में लिखना चाहता था जो परपरागत ट्रैजेडी की शैली द्वारा सम्पन्न करना सम्भव न था। उसकी इस प्रवृत्ति की उसके समकालीनो ने कटु आलोचना भी की और एरिस्टोफेनीज[1] ने तो उस पर गहरी चोट की, परन्तु यूरिपिडीज ने नाटक के आने वाले रूप का आरम्भ कर ही दिया। चौथी सदी ई पू मे भी ट्रैजेडी लिखी गई, परन्तु वह कमजोर थी और केवल दार्शनिक विचारो अथवा व्याख्यानो का वाहन बन कर ही प्रस्तुत हुई।

पाँचवी और चौथी सदी ई पूर्व के प्रारम्भ की पुरानी कॉमेडी ग्रीक ट्रैजेडी की ही भाँति पुरानी परपरा की एक विशिष्ट साहित्यिक शैली थी। उसके विकास का हमें सही अन्दाज नही लग पाता क्योकि इस प्रकार के केवल एक ही नाटककार, एरि-स्टोफेनीज, के ग्यारह नाटक हमे आज उपलब्ध हैं। कॉमेडी भी ट्रैजेडी की ही भाँति दियोनिसस की पूजा में ग्राम्य त्यौहार के प्रदर्शनो के आधार से उठी जान पडती है।

१ Aristophanes (४५०-३८५ ई पू)

एरिस्टोफेनीज एथेन्स की पुरानी कॉमेडी का सबसे प्रधान लेखक था। उसका रचना काल पेलोपोनेसियन युद्ध काल था और उसने अपने अनेक नाटको में उस एथेस स्पार्टा के विध्वसक युद्ध का अन्त कर शाति की स्थापना के पक्ष में आवाज उठाई। इन नाटको मे युद्धवादी राजनीतिज्ञो और जगवाजो तथा एथेंस की नीति की खिल्ली उडाई गई है। उसने अपने नाटक 'मेघ' तथा साहित्यिक आलोचनाओ और प्रहसनो मे सॉक्रेटीज के सोफिस्ट दर्शन पर भी प्रहार किया। पुरानी कॉमेडी को आधार बना कर अरिस्टोफेनीज ने बडी ईमानदारी के साथ भँडैती के माध्यम मे ही, सही, लिखा और एथेन्स के सामान्य नागरिक की साधुता मे अपनी आस्था प्रकट की।

इस पुरानी 'कॉमेडी शैली' का ग्रथन 'ट्रैजेडी' से सर्वथा भिन्न था। इसमें उसकी 'यूनिटी' (एकता) न थी। अद्‌भुत और अजब से आरम्भ कर 'कॉमेडी' उत्तरोत्तर भँडैती के स्वतत्र प्रसग—एक के बाद एक फार्स—अपने सूत मे पिरोती जाती थी। इनमें देव-प्रहसन पौराणिक कथानक सभी स्थान पाते थे। धर्म की तो इसमें बडी भद्द की जाती थी। सार्वजनिक नेता, सस्थायें, राजनीति सभी कुछ नितान्त बेरहमी से इसकी पैरोडी और व्यग्य के प्रसग और शिकार बनते। कहना न होगा कि इस पुरानी कॉमेडी के प्रसग-प्रहसन अनेक बार काफी भद्दे, भोडे, फूहर होते। उनका उदय ही देहाती, सर्वथा ग्राम्य आधारों से हुआ था और चौथी सदी ई पू का शिष्ट एथेन्स अब उसे अगीकार नही कर सकता था धीरे-धीरे भँडैती का स्थान समूचे समाज की प्रदर्शित आलोचना ने ले लिया और इस समाज का निदर्शन 'स्टॉक' पात्रो के माध्यम से होने लगा। इस नयी साधना के समूचे मॉडल हमें आज उपलब्ध नही, उनके खडमात्र मिले है।

इस 'नई कॉमेडी' का रूप यूरिपिडीज की ट्रैजेडी से प्रभावित करुणा, यथार्थ, रागात्मकता आदि के सम्मिश्रण से हुआ। इसका प्रमुख विधायक मिनैण्डर[1] था। उसने अपने आचारवादी नाटको का सृजन एथेन्स के सामाजिक उपकरणो से किया। उसके नाटको से समकालीन समाज के अनिश्चय और आध्यात्मिक अशाति का परिचय मिलता है। इनके साथ उसके चरित्र चित्रण और डॉयलाग, करुण व्यजनाओ तथा वास्तविकता की पकड मिल कर जादू का असर पैदा करते है। कुछ अजब नही कि उस प्राचीन काल मे वह साहित्य में स्तुत्य हो गया हो। उसके कुछ नाटक खड हमे उपलब्ध है, इनके विषय है 'सामोस की लडकी', 'कटे बालो वाली लडकी' 'मध्यस्थ'।

मिनैण्डर ने जिस 'नई कॉमेडी' का प्रारम्भ किया, वह वस्तुत हमारे वर्तमान ड्रामा का आरम्भ था। उसके घटनास्थल ग्रीक जगत के नगर है और पात्र काल्पनिक परन्तु समसामयिक समाज के स्पष्ट नागरिक। परिस्थितियाँ तात्कालिक सामाजिक समस्या-प्रश्नो से बनती हैं—प्रणय, सपत्ति, सामाजिक पद सबधी, जिनके प्रति पात्रो

१ Menander, (३४२-२९१ ई पू)

की प्रतिक्रिया कथानक क विशिष्ट प्रसगो का रूप धारण कर लेती है। देव-समाज का अन्त होकर सहज प्रकृत मानव-समाज का उदय होता है। समाज की खामियाँ, उसके गुण-दोष, उपकार-अपकार इन नाटको में प्रतिबिम्बित होने लगते है। सही उनका स्तर, टैकनीक की दृष्टि से, अनेक आलोचको की राय में पाचवी सदी ई पू के नाटको से नीचे है, पर निस्सदेह सावधि समाज और पिछले काल में इनकी लोकप्रियता अक्षुण्ण हुई।

: ४ :

गद्य

वक्तृता

अन्य साहित्यो की ही भाँति ग्रीक-साहित्य मे भी गद्य का उदय अपेक्षाकृत पीछे हुआ, पद्य से बहुत पीछे, प्राय चौथी सदी ई पू में, जब तक वीर काव्यो, लिरिको, और ड्रामा की प्रतिभा वृद्ध हो चली थी। गद्य निवन्ध का प्रारम्भ छठी सदी ई पू में आयोनिया में हुआ। इसी आयोनिया नाम से भारतीय ग्रीको को 'यवन' रूप मे जानते थे। उस सदी तक, अथवा उसके प्रसार काल में भी, अधिकतर दार्शनिक विचार, पद्य में ही प्रकट किये जाते थे। परन्तु शीघ्र ही लोगो की समझ में आ गया कि तर्क-युक्त दार्शनिक विवेचन पद्य की भाषा में नही हो सकता और उसका समुचित माध्यम गद्य ही होगा। अब तक गद्य का उपयोग कहानियो और सरकारी लेखो मे ही होता था, अब दर्शन के क्षेत्र में भी होने लगा। आयोनिया के नगरो के ईरानियो द्वारा विध्वस हो जाने पर वह परपरा एथेन्स में सोफिस्टो और वक्ताओ ने विशेपत विकसित की। उनके प्रतिमान थे अफलातूँ (प्लैटो)[1] इसोक्रेटीज[2] और डैमस्यनीज[3]। और यह पाँचवी शती ई पू के उत्तरार्द्ध में ही सम्भव हो सका। दार्शनिक विवेचन और ऐतिहासिक साहित्य का निर्माण रैहटॉरिक (वक्तृताओ) के ग्रथन से पूर्व हुआ परन्तु वक्तृताओ की शैली ने साहित्य पर उनसे कही गहरी अपनी छाप डाली। वक्तृताओ का प्राचीन ग्रीस में सदा से मान रहा है, होमर के समय से ही। परन्तु पाँचवी शती ई पू से पहले साहित्यिक शैली अथवा कला के रूप में कभी उसका प्रयोग नही हुआ था। प्राचीनतम वाचालो की कृतियाँ तो आज प्राप्त नही परन्तु उनके कुछ नाम पुरानी परपरा में आज भी अनजाने नही है। जिन प्राचीनतम वक्ताओ के नाम जाने हुए है, उनमे प्रधान सिसिली के कोरक्स[4] और टीमियस[5] के है। ४६५ ई में निरकुश शासन का अन्त कर जब जनसत्ता

---

१. Plato (४२७-३४७ ई पू), २ Isocrates (४३६-३३८ ई पू), ३ Demosthenes (३८४-३२२ ई पू), ४ Corax, ५ Teisias

राज्य की वहाँ स्थापना हुई, तब स्वाभाविक ही वाक्साधना का उदय हुआ। पेरिक्लियन-युग पर तो उनका प्रभाव नही पडा क्योकि असाधारण वक्ता स्वय पेरिक्लीज[1] का गद्य काव्य की प्रवह शैली से अभिराम वन जाता था और पेलोपोनेसियन युद्ध-काल की उसकी वक्तृतायें अपना आदर्श आप है। परन्तु सोफिस्ट दार्शनिको ने जो सिसिली के वक्ताओ को अपने प्रतिमान वना कर गद्य की एक सम्यगधीत वाक्शैली की नीव डाली वह सिसिली की वाक्सत्ता का ही प्रसार था। इन सोफिस्टो मे इस दिशा में प्रधान था ल्योन्तिनी का गोर्गियस[2] जिसने परस्पर विरोधी पदो और विचारो की शृखला-शैली का प्रारम्भ किया। साधु और अविकल ग्रीक गद्य सरणी का विकास थ्रैसीमकस[3] ने किया। इनके अतिरिक्त अनेक सोफिस्टो ने व्याकरण और भाषा का अध्ययन कर न्यायालयो और जनसत्ताक समितियो में व्यवहृत होने वाली वाक्शक्ति को सपन्न किया।

एथेन्स की 'ऑरेटरी' ग्रीक साहित्य और वक्तृता-साहित्य में अमर हो गई है। तीन प्रकार की वक्तृताओ का उल्लेख हुआ है—न्यायालय-सबधी, राजनीतिक और श्राद्ध-सम्वन्वी। न्यायालयो में तो अभियुक्त सम्वद्ध सशक्त-भाषा में अपना पक्ष आप प्रस्तुत करते थे। इसीलिये अनेक वार उन्हे समर्थ शैली के लिए दूसरो का मुह ताकना पडता था। इसी कारण अनेक ऐसे वक्तृता लेखक भी एथेंस में थे जो वक्तृता-लेखन का पेशा ही करने लगे थे। अपने इस कार्य से उन्होने ग्रीक-गद्य की शैली पर बडा प्रभाव डाला। न्यायालय में स्वरक्षा में दिये अन्टिफोन[4] का भाषण उस काल की वक्तृताओ में प्रसिद्ध हो गया है। पर अभाग्यवश वह आज हमें उपलब्व नही। उसने अपनी वह वक्तृता ४११ ई पू में दी थी। पेशेवर भाषण-लेखको मे पाँचवी सदी ई पू के अन्त काल का लिसियस[5] प्रसिद्ध हो गया है। उसका गद्य सरल और सहज है परन्तु भाषण शैली के विकास से पेचीदी वाक्चातुरी की भी आवश्यकता हुई और फलत. उस दिशा में विशेष कृत्रिम परन्तु सफल अतिरिक्त सरणी का विकास हुआ और कुछ लोगो ने अलग-अलग विषयो को अपना विशेष क्षेत्र वना लिया। डैमस्थनीज का गुरु ईसियस[6] दाय सबधी वाद-प्रतिवादो के लिए ही भाषण लिखा करता था। राजनीतिक वक्तृताओ के क्षेत्र में डैमस्थनीज विशेष स्मरणीय है। मैसेडोन के फिलिप (सिकन्दर के पिता) की ग्रीक-नगर-राज्यो पर चोटो ने उसे बडा प्रभावित किया और उसने राष्ट्रीयोज्जागरण में जिस भाषण परपरा को जन्म दिया वह ससार के वक्तृता क्षेत्र में वेजोड है। वह अपने भाषण लिख कर वडी योग्यता से तैयार

---

१ Periclese, २ Gorgias, ३ Thrasymachus, ४ Antiphon, ५ Lysias, ६. Isaeus

करता था । डैमस्थनीज भी पहले अभियोगो के सबध मे ही भाषण लिखा करता था। उसकी शैली समसामयिक ग्रीक भाषा में प्रस्तुत असाधारण शक्तिशाली है।

परन्तु चौथी सदी ई पू का प्रमुख साहित्यिक ईसॉक्रटीज़ है। उसने एथेंस में वक्तृता का एक विद्यापीठ ही खोल लिया। उस पीठ के अपने विद्यार्थी और पैम्फ्लेटो द्वारा उसने सम सामयिक ग्रीक गद्य और साहित्य को बडा प्रभावित किया। उसके लेखो ने ग्रीक शैली को उसका प्राजल रूप दिया और राजनीतिक पैम्फ्लेटो ने भावी हैलेनिक सस्कृति की एकता के लिए उचित पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर दी। उसी की शैली सिसेरो के गद्य में बोली जिसने कालान्तर में यूरोपियन साहित्य पर प्रभूत प्रभाव डाला। नगर-राज्यो के विध्वस के बाद एथेंस की वाक्प्रणाली का भी अन्त हो गया, यद्यपि उसकी विशेषताओ को वर्ग बद्ध कर अरिस्टॉटल ने अपने 'रहैटॉरिक' मे स्थान दिया जिससे वे विधिवत् सरक्षित हुई।

इतिहास

इतिहास-लेखन का भी प्राचीन ग्रीक-साहित्य पर प्रचुर प्रभाव पडा। पहली बार आयोनिया में ख्यातो और पौराणिक परपराओ को क्रमबद्ध करने की प्रेरणा उठी। सरल भाषा में स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत छठी शती ई पू के एक इतिहास खड का पता चला है। उस काल में समुद्र-सतरण-सबधी भौगोलिक विचारो का भी कुछ निदर्शन तत्सामयिक (पाँचवी सदी ई पू) साहित्य से होता है। हैरोडोटस[१] ने वैज्ञानिक दृष्टि से इतिहास लिखने का पहला प्रयत्न किया। वह पाँचवी शती ई पू के तीसरे चरण में हुआ। वह एशिया माइनर का ग्रीक था और उसने दूर-दूर तक यात्रा की। जहाँ-जहाँ वह गया, वहाँ-वहाँ से उसने ऐतिहासिक सामग्री एकत्र कर लिपिबद्ध की। वह ईरानी दरबार में कुछ काल तक ग्रीक दूत के रूप में भी रहा था। यद्यपि पहली बार उसने इतिहास की घटनाओ को कार्य-कारण के रूप मे रखा, उसके सकलन में अधिकतर सुनी कहानियो की ही प्रधानता थी। उदाहरणत उसने भारत के दो पुछे सिंहो और सोना निकालने वाली लोमडी के बराबर ऊँची दीमको का उल्लेख किया है।

पाँचवी सदी ई पू के अन्त तक एथेंस के गद्य में विश्लेषणात्मक सरणी का आरम्भ हो चला था। इस शैली का प्रधान इतिहासकार थ्यूसी डाइड्ज[२] था। ग्रीक इतिहासकारो में वह सर्वाधिक वैज्ञानिक और गभीर है। पेलोपोनिसियन युद्ध ने ग्रीक-सस्कृति को झकझोर दिया था। उसी काल होने वाले इस इतिहासकार ने उस सस्कृति की मान्यताओ

१ Herodotus (४८५-४२५ ई पू), २. Thucydides (४६०-४०० ई. पू)

को समझने के लिए ग्रीक समाज का इतिहास लिख डाला। उसका विश्लेषण, निष्पक्ष मूल्यांकन, न्याय, सगति और घटनोल्लेख का असाधारण क्रम उस काल की इतिहास-रचना में अद्भुत है। उसका इतिहास निरूपण हैरोडोटस की पद्धति से सर्वथा भिन्न था। उसने उसमें युद्ध नायकों की वक्तृताओ का भी काल्पनिक सकलन किया। फिर भी सूत्र शैली से लिखने वाले उस इतिहासकार की सरणी अनेक बार दुरूह हो गई। उसका महत्त्व वस्तुत उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और कार्य-कारण रूप में घटनाओं के आनुक्रमिक विकास पर अवलम्बित है।

इतिहास परपरा के ही लेखक क्सैनोफोन[१] और इसॉक्रेटीज़ के शिष्य इफोरस[२] और थ्योपॉम्पस[३] भी थे। क्सैनोफोन ने स्पष्ट और सरल भाषा का निश्चय ही उपयोग किया परन्तु विश्लेषक अथवा समष्टिवादी लेखक के रूप में वह सफल न हो सका। ईसॉक्रेटीज के शिष्यो ने आदर्शवादी नैतिक दृष्टिकोण का इतिहास में सहारा लिया परन्तु प्रतिपाद्य का उचित विश्लेषण और मूल्यांकन उनसे न हो सका। इफोरस ने ग्रीस का एक इतिहास निस्सदेह प्रस्तुत किया।

दर्शन

इतिहास की ही भाँति दार्शनिक गद्य का प्रारम्भ भी छठी सदी ई० पू० के अन्त और पाँचवी सदी ई० पू० के आरम्भ में आयोनिया में ही हुआ। इसकी भाषा भी साधारणत नीरस थी। इसी दार्शनिक गद्य की परपरा में हिपोक्रेटीज[४] की चिकित्सा-सबधी लेख-शैली भी है। उसने पाँचवी सदी ई० पू० के तृतीय चरण में लिखा। दार्शनिक विवेचन की गद्य-प्रसूति सौक्रेटीज[५] से हुई। सुकरात ने स्वय कुछ लिखा नही, परन्तु उसके डायलॉग उसके शिष्य प्लैटो ने उसके नाम से पीछे प्रस्तुत किए। प्रश्नोत्तर-रूप मे दार्शनिक विवेचन का सुकरात ने जो आरम्भ किया वह पिछले काल में परिपाटी ही बन गया। प्लैटो (अफला-तून) सुकरात का शिष्य था, ग्रीक गद्य के महान निर्माताओ में से एक और ग्रीक दार्श-निको में सबसे गभीर। उसके विचार उसके डायलॉगो में सुरक्षित हैं। उसकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'रिपब्लिक' है, एक काल्पनिक जगत् (युटोपिया), जिसमें उसने सामाजिक न्याय पर विचार किया है। 'लाज' उसकी अपेक्षाकृत पार्थिव कृति है। उसकी शैली बडी शक्तिम है और इसी कारण उसके सारे ग्रन्थ आज सदियो पार भी सुरक्षित और प्राप्य है। प्लैटो की ही भाँति अरिस्टॉटल (अरस्तू[६]) के ग्रन्थ भी व्याख्या-परक ही है। अरिस्टॉटल ने सारे ज्ञान को अपना कार्य क्षेत्र बनाया—राजनीति, विज्ञान, दर्शन, वक्तृता-साहित्य, आलोचना। पाश्चात्य यूरोपियन दार्शनिको पर जितना उसका प्रभाव पडा उतना और किसी का

१ Xenophon, २ Ephorus, ३ Theopompus, ४ Hyppocrates, ५ Socrates, ६ Aristotle (३८४-३२२ ई० पू०)

नही। सभी दिशाओ में वह गुरु माना गया। साहित्य के क्षत्र मे उसकी 'पोएटिक्स' ने प्रभूत प्रभाव डाला। ड्रामा का वह ग्रीक साहित्य में पहला अध्ययन था। यूरोपियन आलोचना-शास्त्र का आरम्भ इसी ग्रन्थ से होता है। उसने 'रहैटोरिक' वक्तृता-शैली का निरूपण किया। उसने लिखा वहुत, परन्तु वह सारा साहित्य-क्षेत्र के अन्तर्गत नही रखा जा सकता।

: ५ :

हैल्लेनिक-युग

क्लासिकल-युग के साहित्य का निर्माण नगर-राज्यो की वदलती परिस्थितियो का अनुवर्ती है। हैल्लेनिक-युग का साहित्य राजसत्ताक नगरो की अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुकूल विकसित हुआ। यह पिछला साहित्य अपने समाज का प्रतिविम्व न वनकर सार्वभौम परपरा का जनक हुआ। दूर-दूर के देशो में सिकन्दर की विजयो के परिणामस्वरूप ग्रीक-केन्द्र प्रतिष्ठित हो गए थे, जो इस काल साहित्य के भी केन्द्र वने। इनमें प्रधान थे—मिस्र का सिकन्दरिया (अलैग्जैन्ड्रिया), सीरिया का अन्टियोक, एशिया माइनर का परेगामम। इन नगरो के राजकुलो ने विद्वानो और साहित्यिको का सम्मान और सरक्षा कर ज्ञान की खोज मे हाथ बटाया। इनमें प्रमुख सिकन्दरिया का टॉलेमी राजकुल था जिसने वहाँ प्राचीन जगत् का प्रख्यात पुस्तकालय और सग्रहालय स्थापित किया। भोज की ही भाँति इस कुल के राजाओ ने भी साहित्य-पण्डितो और ज्ञान-पिपासुओ की वृत्ति बाँध दी। एथेन्स की परपरा अपनी प्राचीनता के कारण अक्षुण्ण वनी रही और प्लैटो और अरिस्टॉटल द्वारा स्थापित वहाँ का दार्शनिक पीठ भी चलता रहा। दूर के स्वतत्र प्रान्तीय ग्रीक नगरो में क्लासिकल का ही अनेकार्थ मे अनुकरण हुआ, यद्यपि विज्ञान के क्षेत्र में 'वर्बर' जगत् की कृतियाँ भी सर्वथा उपेक्षित न हो सकी।

काव्य

चौथी सदी ई० पू० में जीवन से सम्पर्क छूटते ही ग्रीक काव्यधारा मे शिथिलता आने लगी। कुछ कवियो ने जहाँ-तहाँ वीरकाव्य की रूपरेखा वनाए रखी परन्तु लिरिक काव्य की सीमा तो कुछ वैयक्तिक रचनाओ तक ही परिमित हो गई। इनका उपयोग कोरसो मे होता था, जहाँ अर्थ-गौरव से कही वढकर मर्यादा ध्वनि-गौरव की थी। ड्रामा का सम्वन्ध भी जीवित धार्मिक विश्वासो से टूट गया था और अव उनका स्वरूप कृत्रिम हो गया था।

उस काल के कवियो का अखाडा सिकन्दरिया था। वे अधिकतर वहाँ के ग्रन्थागार या सग्रहालय के अफसर थे, या टॉलेमी राजकुल के दरवारी। जीवन से सम्पर्क टूट जाने से वे प्राचीन को साध्य मान काव्य-साधना करते थे जिससे उनकी कृतियाँ अस्वाभाविक

और पूर्वपरक हो गई। जो कमी उन्हे समकालीन वर्तमान की अवज्ञा से होती थी उसकी पूर्ति वे अपनी रचना की निखार आदि से करते थे। उनकी रचनाएँ भी साधारणत इतनी विद्वत्तापूर्ण होती कि मजबूर होकर अपने श्रोतावर्ग के लिए उन्हें अपने-से ही लोगो पर निर्भर करना होता था।

इस काल काव्य-क्षेत्र मे दो दल हो गए। एक का नेता कालीमेकस[1] था, दूसरे का अपोलोनियस[2]। कालीमेकस सिकन्दरिया-काव्य-प्रकार (स्फुट कविताओ) का प्रवर्तक था और होमर आदि की प्राचीन वीर काव्यधारा का विरोधी। उसका रोड्स के अपोलोनियस से काव्यादर्श के सम्बन्ध में भारी मतभेद रहा। अपोलोनियस वीर काव्यो का हिमायती था। स्वय अपने काव्य 'आर्गोनौटिका' में उसने प्राचीन देवोत्तर प्रसगो को काव्याधार बनाया। कालीमेकस का ही दल इस विवाद में विजयी हुआ और तात्कालिक रोमाटिक स्फुट कविताओ का बोलबाला हुआ। उसका अनुगमन अनेक रोमन कवियो ने किया। कालान्तर मे उसी माध्यम से इस काव्य-परपरा का प्रभाव पाश्चात्य यूरोपियन साहित्य पर भी पडा। इस परपरा के सिकन्दरिया के कवियो मे विख्यात थियोफ्रास्टस[3] था, जिसने गडरिया-गानो से ओतप्रोत स्फुट कविताओ का विकास किया। उसकी कविताओ का अनुकरण उसके समय में और पश्चात्काल में काफी हुआ।

इस काल वैज्ञानिक प्रसगो का भी छन्दोबद्ध निरूपण हुआ। जैसे भारत में भी प्राचीन काल मे वैद्यकादि के ग्रन्थ पद्य मे लिखे गए। सिकन्दरिया के कवियो ने भी अनेक लोकप्रिय वैज्ञानिक और चिकित्सा-ग्रन्थो को पद्य-रूप दे दिया। पर सारी इस प्रकार की कविताएँ जन-रुचि से दूर थी, परे।

नकल और अश्लील के प्रति लोगो का आकर्षण अधिक था और जब हैराडास ने समसामयिक जीवन से खीचकर कुछ नाटकीय स्केच चलती भाषा मे लिखे तो वह बडा लोकप्रिय हो उठा। हैल्लेनिक-युग की सुन्दरतम कविताएँ तीसरी सदी ई० पू० में लिखी गईं जो सग्रहो मे सग्रहीत हुईं। इस प्रकार के एक सग्रह का नाम जिसमें बिजेन्टाइन काल तक की कविताएँ सग्रहीत है 'ग्रीक ऐन्थॉलोजी' है।

गद्य

वस्तुत इस काल का प्रधान साहित्य गद्य में प्रस्तुत हुआ। दार्शनिक व्याख्याओ के इस युग में ऐसा होना स्वाभाविक था। 'स्टोइक', 'सिनिक' और 'एपिक्यूरियन' दर्शनो का आविर्भाव अधिकतर इसी काल हुआ। इनमें से पहले दोनो विचारक प्लैटो के अनुवर्ती ही थे। एपिक्यूरियन लेखको ने साहित्यिक शैली को विशेष प्रश्रय नही दिया। जो

१ Callimachus (३१०-२४० ई० पू०), २ Apolonius (२९५-२१५ ई० पू०),
३ Theophrastus (ज० ३०० ई० पू०)

भी हो, इन दार्शनिक व्याख्याओ का प्रतिपाद्य विषय अधिकतर व्यावहारिक आचार था। इस काल के गद्य-लेखको में प्रधान थियोफ्रास्टस हुआ। इसी काल जीवन-चरितो का लिखना भी प्रचलित हुआ। जीवन-चरित के लेखको ने इस वर्ग को 'पेरिपैटेटिक्स' कहते थे। इनके चरित मे गप्पो का पुट काफी होता था।

हैल्लेनिक-युग की प्रधान रचनाएँ इतिहास और विज्ञान के क्षेत्र मे हुई। छोटी-छोटी ग्रीक सेनाओ के बल पर सुदूरपूर्व के विस्तृत प्रदेशो पर शासन करने वाले दुर्द्धर्ष सामरिको की कमी न थी और वे सहज ही इस काल की कृतियो के नायक बन गए। इन देशो में बस जाने वाले ग्रीको ने इन्ही देशो का इतिहास लिखा और इसी कारण स्थानीय रीति-रिवाजो का विस्तार भी उनमे प्रचुर हुआ। भारतीय विषयो पर भी अनेक ग्रन्थ तब रचे गए। भारत के पश्चिमी भाग पर अनेक ग्रीक राजाओ ने तब प्राय दो सदियो तक राज किया। इसी इतिहास परपरा में मिस्र का इतिहास लिखने वाला मानेथो[1] भी है, और बेबीलोनिया का इतिहास लिखने वाला बेरोसस[2] भी। पर, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, इन इतिहासो मे अधिकतर मिश्रण दन्तकथाओ और काल्पनिक गद्यो का ही था। सही इतिहासकार पोलीबियस[3] हुआ जिसने चौथी सदी ई० पू० के वक्तृता-प्रधान इतिहास-शैली को छोड वैज्ञानिक परपरा में इतिहास लिखा। रोमन्ज ने दूसरी शती ई० पू० में भूमध्य सागर के पूर्ववर्ती प्रदेश जीतकर ग्रीस आदि पर एक नया साम्राज्य स्थापित किया। पोलीबियस, जो स्वय सैनिक और राजनीतिज्ञ था, पकडकर रोम ले जाया गया, जहाँ वह महान् रोमन्ज के सपर्क में आया। वहाँ उसने रोमन साम्राज्य की सभावनाओ पर विचार किया और भूमध्य सागरवर्ती जगत् का २६६ ई० पू० से १४४ ई० पू० तक का इतिहास लिखा।

यहाँ वैज्ञानिक ग्रन्थो का उल्लेख निरर्थक होगा, चूकि साहित्य के विकास पर उनका विशेष प्रभाव नही पडा। पर इसी दिशा मे भाषाशास्त्र और व्याकरण, तिथिक्रम आदि पर भी काफी कार्य हुआ। यह विशेषत भाष्यो और टीकाओ का युग था। प्राचीन हस्तलिपियो को मिलाकर पुराने साहित्यकारो की रचनाओ के पाठ शुद्ध किये गए, भाषा को एक नया रूप दिया गया, लेखको की परिभाषा कर उनको अनेक वर्गो मे बांट दिया गया। होमर से लेकर अरिस्टॉटल तक के लेखको को हम आज जो 'क्लासिकल' कहते है वह नामकरण इसी काल हुआ।

: ६ :

रोमन–साम्राज्य–कालीन साहित्य

दूसरी पहली सदी ई० पू० में निकट पूर्व के ग्रीक राज्य रोमन शक्ति के शिकार हो

१. Manetho २. Berosus ३. Polybius (२०१-१२० ई० पू०)

गए, जिन्हे २७ ई० पू० मे अन्तत सम्राट ऑगस्टस ने रोमन प्रान्त वना लिये। फिर भी पूर्व की ग्रीक सस्कृति मरी नही, नया साहित्य नित्य रचा जाता रहा, यद्यपि परापेक्षी होने के कारण उसमे मुटाई तो रही पर ताजगी न आ सकी। पहली सदी ईस्वी मे ग्रीक साहित्य मे एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ। तभी उस काल के दो प्रधान ग्रीक साहित्यकार हुए—प्ल्यूटार्क[1] और लूसियन[2]। परन्तु शीघ्र ही वह पहली सदी की समृद्धि भी विलुप्त हो गई जब तीसरी सदी ईस्वी मे साम्राज्य मे गृहयुद्धो का ताँता बँध गया। सम्राट् डायोक्लेशियन और कॉन्स्टैन्टाइन के सुधारो से कुछ सहारा निश्चय ही मिला परन्तु कॉन्स्टैन्टाइन जब ईसाई हो गया तो वहुदेववादी ग्रीक-साहित्य-परपरा को वडी ठेस लगी। यद्यपि इससे इन्कार नही किया जा सकता कि ग्रीक साहित्य के ह्रास के वावजूद ग्रीक भाषा का दवदवा बना रहा और ईसाई ग्रन्थकार उस भाषा और दार्शनिक परपरा का उपयोग करते रहे।

रोमन साम्राज्य-काल मे भी कविताएँ कम लिखी गई (उस युग की कविताएँ जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, 'ग्रीक ऐन्थॉलोजी' मे सग्रहीत है) अधिकतर रचनाएँ गद्य में ही हुई। पहली ईस्वी पूर्व के उत्तरार्द्ध मे जो एक अनुकूल प्रतिक्रिया हुई तो साहित्य पर भी उसका अच्छा प्रभाव पडा और साहित्यालोचना पर कुछ ग्रन्थ लिखे गए। इन लेखको में हैलीकर्नासस का डायोनीसियस[3] और लॉन्जाइनस[4] प्रधान हुए। डायोनीसियस ने भाषा, शैली आदि के सम्बन्ध में अच्छा विचार किया। साथ ही उसने डैमस्थेनीज की प्रशसा और थ्यूसीडाइड्ज की खरी आलोचना भी की यद्यपि उसका अपना स्वय का 'रोमन एण्टिक्विटीज' नामक इतिहास कुछ स्तुत्य नही उतरा। हाँ, लान्जॉइनस के लिए निस्सदेह वही वात नही कही जा सकती क्योकि उसने ग्रीक साहित्य मे मनोवैज्ञानिक आलोचना की सर्वोत्तम कृति प्रस्तुत की।

---

१ Plutarch (४६-१२७) २ Lucian (१२०-१८०) ३ Dionysius
४ Longinus

७. चीनी साहित्य

: १ :

आरम्भ

चीनी आज ससार की जनता के चौथाई भाग की भाषा है। करोडो-करोडो चीनी उसे बोलते है और प्राय उसी प्रकार बोलते आते है जैसे सहस्राब्दियो पहले उनके पूर्वज बोलते आये थे। इसका अर्थ यह नही कि उस भाषा मे परिवर्तन नही हुए। परिवर्तन हुए और पर्याप्त, जैसा ऐसी भाषा के लिए स्वाभाविक है, जो सहस्राब्दियो से, लाखो वर्ग मील मे फैले विस्तृत देश के निवासियो द्वारा बोली जाती रही हो। चीनी भाषा स्वय चीन में तो बोली ही जाती है, उसका औपनिवेशिक भाषा-साम्राज्य उसके चतुर्दिक् बसने वाले परवर्ती जनसमूहो पर भी फैला हुआ है। वे जनसमूह अपनी भाषा और साहित्य के लिए चीन के किस मात्रा मे ऋणी है, कहने की आवश्यकता नही, उसका अटकल लगाया जा सकता है।

चीन का साहित्य विपुल और विशद है, जिसका विस्तार ताम्रयुग से आज तक है। आज ४,००० वर्षो से पीढी-दर-पीढी उस पीली भूमि की सतति ने निरतर अपना जीवन शब्दो मे उतारा है। आरम्भ मे ही चीनी जाति अपने हृदगत भावो को गायन का रूप देने लगी थी—

सुबह होती है तो मै काम में खो जाता हूँ
सांझ होती है तो आराम से सो जाता हूँ
खोदता हूँ मै कुआं प्यास बुझाने के लिए
खेत मै जोतता हूँ भूख मिटाने के लिए
राजसत्ता को भला मुझसे सरोकार है क्या ?

इस गीत का शब्द-शब्द चीनी जीवन का रहस्य खोलता है, जो आज भी उतना ही सत्य है, जितना वह तब था, जब रचा गया था। आज भी चीनी अपनी जमीन का मालिक है और शोषण के अनवरत प्रयत्नो को लाँघ आज फिर उसने अपना यह गान सार्थक किया है। अन्तर बस इतना ही है कि आज उसे उस राजसत्ता को चुनौती नही देनी पड़ती, जिसका सकेत इस गीत मे है क्योकि आज चीनी किसान स्वय एक राजसत्ता है।

जैसे-जैसे जीवन मे प्रगति होती गई, चीनी जाति की आत्मा 'ओडो' और 'बैलेडों' में प्रकट होती गई। उन्हे उन्होने मुरली और तन्त्री के स्वर से साधा और ध्वनित किया।

उनकी आवाज कभी दबाई नही जा सकी और उस आवाज की झकृति अन्तर की प्रेरणा बनकर चीनी आकाश पर छा गई। चाऊ वंश के दसवें राजा लिनवाग (८७८-८४२ ई० पू०) से शाऊ के अमीर ने कहा था—"नदियो की बाढ रोकने से कही अधिक खतरनाक जनता का मुँह बन्द करना है। नदियो की बाढ रोकने का अर्थ है उन्हे फैलने को मजबूर करना और उसका परिणाम होता है उसके स्वाभाविक प्रवाह की अपेक्षा कही अधिक हानि। आकाश के पुत्र (राजा) को ज्ञात है कि तब शासन किस प्रकार किया जाता है, जब अफसर और पडित आजादी से कविता करते है, अधगायक अपने बैलेड गाते है, इतिहासकार अपने इतिवृत्त लिखते है, जब सगीत के दीवाने सुर और ताल का विस्तार करते है और सैकडो-सैकडो कलावन्त और अन्य जन यथाकाम कथनीय व्यक्त करते है।"

काश, शाऊ का यह मन्त्र आज की राजसत्ताओ की बुद्धि को छू पाता!

चाऊ-काल से चली आई वक्तव्य की स्वाधीनता चीनी-इतिहास की बहुमूल्य प्रेरणा है। इसी कारण गद्य और पद्य में, इतिहास, दर्शन और राजनीति में, उपन्यास और नाटक मे चीनी साहित्य इस ऊँचाई को पहुँच सका। अस्थियो और अभी हाल के मिले शाग वंश के ताम्रभाण्डो पर खुदे अभिलेखो से प्रकट है कि प्राय आज से साढे तीन हजार वर्ष पहले ही चीनियो ने अपनी लिखित भाषा का साहित्यिक विकास कर लिया था।

चीनी लिपि का प्राचीनतम आविष्कार हुआँग टी (लगभग २६९७-२५९६ ई० पू०) के शासनकाल में हुआ। उसकी राजसभा का विचक्षण लेखक चिएह[1] उस लिपि का अनुसन्धाता माना जाता है। वह लिपि अनेक प्रकार की चित्राकृतियो से युक्त है। और 'टजू' (अक्षर) कहलाती है। क्रमश अक्षरो की सख्या बढती गई और कालान्तर में उनका एक जगल-सा खडा हो गया। यहाँ चीनी लिपि अथवा भाषा के शास्त्रीय निर्माण के सम्बन्ध मे लिखना अभीष्ट नही। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि चित्र-वत् होने के कारण चीनी अक्षर भी पहले बाँस और लकडी की तख्तियो और रेशमी कपडो पर एक प्रकार के फाउन्टेनपेन द्वारा लिखे जाते थे। बाद में प्राय तीसरी शती ई० पू० में जनरल मेग ट'ईन ने लेखनी के स्थान पर ऊँट के बालो के बने ब्रुश से लिखने की प्रथा चलाई और १०५ ई० मे ट्साईलुन ने कागज का निर्माण कर लेखन-विज्ञान में क्राति कर दी। चीनी लिखावट ऊपर से नीचे को होती है, यद्यपि आज चीन मे भी लिखने का तरीका पडी लकीरो में बाएँ से दाहिने को हो गया है।

चीनी साहित्य अपने विकास के कालक्रम के अनुसार अनेक भागो मे बाँटा जा सकता है, प्राय नौ भागो मे, जो इस प्रकार है—(१) क्लासिकल युग (२) कन्फ्यूशस युग, (३) टाओ और बौद्ध युग, (४) स्वर्णयुग, (५) समृद्धि-युग, (६) उप-

---

१. Ts' Ang Chieh

न्यास और नाटक-युग, (७) पुनर्जागरण-युग, (८) आधुनिक युग, (९) समाजवादी वर्तमान युग। नीचे हम इन विविध काल-प्रसारो मे विकसित होने वाले विशद चीनी साहित्य पर प्रकाश डालेंगे।

: २ :

क्लासिकल-युग

(२०००-२०२ ई० पू०)

चीनी सभ्यता का जन्म पीली नदी की घाटी में हुआ। वही प्राथमिक ऐतिहासिक राज-वशो का जन्म हुआ और वही चीनी लिपि की कला का भी प्रादुर्भाव हुआ। वहाँ ई० पू० दूसरी सहस्राब्दि मे हसीया राजकुल ने पहले शासन किया फिर शाग राजकुल ने। पहले शासन-काल में नदियो की बाढ रोकने के प्रयत्न हुए और उस दिशा में प्रयत्नशील सम्राट् यू के प्रयत्न प्रशस्ति के रूप में लिख डाले गए। हाल के पुरातात्विक प्रयासो ने प्राचीन चीनी नगरो के भग्नावशेष खोद डाले है, जिनसे चीनी सस्कृति पर प्रभूत प्रकाश पडा है। उस काल की कुछ कविताओ का उल्लेख 'शिह चिंग' (गीतो की पुस्तक) और 'शू चिंग' (इतिहास के ग्रन्थ) मे मिलता है।

शाग वश के पतन के बाद चाऊ चीन के स्वामी हुए। वैन और वू ने शासन को एक नया रुख दिया और देश के तरुणो को शिक्षित करने के लिए स्थान-स्थान पर स्कूल बने। स्वय युवराज का शिक्षण इन्ही स्कूलो मे से एक में हुआ। स्कूलो की वह परपरा ससार की सभ्यताओ में सभवत सबसे प्राचीन है। चाऊ राजवश से पूर्वकालीन चीनी साहित्य का ज्ञान, 'शिह चिंग', 'शू चिंग' और 'यी चिंग' आदि जिन सग्रहो से होता है, उनका सपादन इसी काल हुआ था। ७७१ ई० पू० से चाऊ राजकुल का ह्रास आरम्भ हुआ, यद्यपि तीसरी शती ई० पू० तक किसी न किसी रूप मे वह बना रहा।

इस पिछले काल मे मध्यदेश का राज्य कई सामन्ती टुकडो मे बँट गया और जनता की स्थिति निरन्तर खराब होती गई। फिर भी सामन्तो ने दार्शनिको और साहित्यिक सस्कृति को सरक्षण दिया। कम से कम वाणी की स्वतन्त्रता विद्वानो को पूरी तौर से उन दिनो प्राप्त थी। परिणाम यह हुआ कि वह काल साहित्यिक और दार्शनिक क्रियात्मकता का युग बन गया। उस काल के प्रसिद्ध दार्शनिक लाओ-ट्जू[1], कन्फ्यूशस[2], मो-ट्जू[3], मेंग-ट्जू (मैन्सियस[4]) और हसुन-ट्जू (हसन च'इग[5]) हुए। लाओ-ट्जू ने अपने गद्यकाव्य

१. Lao Tzu २ Confucius (५५१-४७८ ई० पू०), ३ Mo Tzu (५००-४२० ई० पू०), ४ Meng Tzu, (Mencius) (३७२-२८९ ई० पू०), ५ Hsun Tzu, (Hsun Ch'ing) (२८९-२३८ ई० पू०)

आश्चर्य की वात नही कि मुहम्मद का अनुयायी न होने पर भी, आज सम्भवत उसी के काल मे वनी मस्जिद इस्लाम की सवसे प्राचीन मस्जिद है।

ट'आग सरक्षण मे जिस सम्यता का विकास हुआ वह उस काल की सम्यताओ में सबसे मजिलो आगे थी। चीनी जाति ने तव अनेक दिशाओ मे अद्भुत सक्रिय क्षमता और क्रियात्मक तत्परता का परिचय दिया। ठप्पो से छपाई का काम, आतशी अस्त्रो के लिए बारूद, 'एयर कण्डीशनिंग' के अनेक उपाय और औद्योगिक तथा ललित कलाओ मे अनेक नई टैकनीको का आविष्कार तव की चीनी मेधा के अद्भुत प्रमाण थे। शिक्षा का तो प्राय सर्वत्र प्रचार था। चीनियो के लिए यह कुछ कम गौरव की वात नही कि ससार को उन्होंने ही पहला समाचारपत्र दिया। चीनी सम्यता कोरिया और जापान तक फैल गई। पूर्व मे उसकी साहित्यिक सुरुचि और सामाजिक आचार ने वही पद प्राप्त किया जो पिछले काल के यूरोप मे फ्रास ने किया। अन्तर फिर भी एक महत्त्व का था, और वह यह कि जहाँ फ्रास और समकालीन यूरोप का ज्ञान दसो सदियो वाद पुरुष-परक था, चीन मे अनेक विचक्षणवुद्धि नारी-मेधाओ का उदय हो चुका था। ज्ञान और साहित्य के अनेक क्षेत्रो मे महिलाएँ अग्रणी वन गई थी।

ट'आग-युग का सवसे अधिक विस्मयजनक साहित्यिक विकास काव्य के क्षेत्र में हुआ। उस युग के पहले ही सैकडो उत्कृष्ट कवियो का प्रादुर्भाव हो चुका था। उनके अध्ययन से ट'आग कवियो ने अपनी विशिष्ट और स्वतन्त्र शैली का आरम्भ किया। उनकी गाई आनन्द और विषाद की कविताएँ नवीन ध्वनि से नादवती हुईं, मेधा और अनुभूति, ओज और शक्ति से समृद्ध हो सुकुमार व्यजना से मुखरित हो उठी। तव की साहित्य-चेतना मे चीनियो ने जो साका चलाया, कालिदास के वाद सदियो वह जातियो के साहित्य के इतिहास मे चलता रहा। अपनी कल्पना, व्यजना, शब्द-लालित्य और अर्थभावना के कारण वह काल चीनी साहित्य का सत्य ही स्वर्ण-युग कहलाता है। उस काल के कवियो मे न केवल साहित्यिक शैलियो के विभिन्न टैकनीक उभर पडे वरन् उनकी मानववादी क्षितिजगामी पुकार मे सहवेदना सचेत हुई। परिणामत लिरिक काव्य अनेक रूप मे मुखरित हुआ।

लिरिक काव्य के अनेक प्रकार तब के चीन में सिरजे गये। इनमें एक में चार पक्तियाँ होती थी, पक्ति में पाँच शब्द होते थे, दूसरे में पाँच शब्दो की पक्ति और आठ पक्तियाँ होती थी, तीसरे मे सात शब्द और चार पक्तियाँ और चौथे मे सात शब्द और आठ पक्तियाँ।

स्वर्ण-युग के उन छोटे-बडे कवियो की सख्या, जिन्होंने उस काल के अद्भुत काव्य का सृजन किया, दो हजार से ऊपर है, और उनकी कविताओ की सख्या प्राय ४८ हजार है। १८वी सदी में उनकी कृतियाँ सग्रहीत कर प्रकाशित कर दी गईं। उस सग्रह से सुन्दरतम ७७ कवियो की ३११ कवितायें एकत्र कर बालको की पुस्तक में

प्रकाशित हुई। यह पुस्तक आज तक चीन मे अद्भुत प्रेरणा की आधार बनी हुई है। 'रामचरितमानस' की भाँति विद्वान् और अपढ, दोनो की जबान पर इसकी पक्तियाँ रहती है। वाग वेई[१], ली पो[२], टू फू[३] और पो चू यी[४] जो उस साहित्य के महारथी हो गये है, चीन की जनता की आज सपदा बन गये है और उनका यहाँ कुछ विस्तार से उल्लेख अनुचित न होगा।

वाग वेई धार्मिक और चिन्तनशील था। शिष्ट और भावुक। उसमे कन्फ्यूशस, टाओ और बौद्ध तीनो सपदाएँ सूक्ष्म रूप से प्रवेश पा चुकी थी, यद्यपि इस अर्थ में अपने काल में वह अकेला न था। वस्तुत वह उस युग का समुचित प्रतिनिधि था। तरुणाई मे उसे दर-दर की ठोकर खानी पडी थी और दरिद्रता उसकी सहचरी थी। वह सरकारी नौकर था परन्तु अपने कार्यभार को ईमानदारी से निभाता हुआ भी कविता करने और चित्र लिखने से न चूकता था। उसकी कविताएँ और चित्र प्रकृति के अकनो से मुखरित होते। दोनो मे भौतिक और आध्यात्मिक, स्थूल और सूक्ष्म का अद्भुत समन्वय होता।

ली पो रोमाण्टिक कवि था। सौदर्य और प्रकृति के प्रसग उसके पदो में अनायास अभिराम उतर आते थे। वह जन्मसिद्ध कवि था। उसका जीवन लेखक का जीवन था, वह किसी का नौकर न था और कन्फ्यूशियन सिद्धातो का पडित होते हुए भी उसके भावो का उद्गम टाओवाद था। प्राचीन टैकनीक का आचार्य होते हुए भी उसने अपने को उनके बन्धन में न रखा। उसके लिरिक भाव और व्यजना के लिए प्रसिद्ध है। उनके रूप की रमणीयता और ध्वनि का माधुर्य बेजोड है। ली पो पर्यटक था और उसकी अनेक काव्य-कृतियाँ रात्रि के एकाकी पर्यटन के आनन्द को उद्-बुद्ध करती है। वह चीन का महान् गायक था।

टू फू यथार्थवादी था। उसने विषाद की धारा अपने काव्य स्रोत से बहाई। समाज टूक-टूक हो रहा था, किसान कगाल हो चुके थे, देश सहारक युद्ध की चोटो से बेदम पडा था—टू फू का काव्य-स्वर इनके विषाद से मुखरित हुआ। साहस और निर्भीकतापूर्वक उसने अपने देश की स्थिति पर अपनी कविताओ में प्रकाश डाला और आज जब हम उसकी कविताएँ पढते है, तब तत्कालीन चीनी जगत् का विषादबोझिल चित्र आँखो के सामने घूम जाता है। गिरे, व्यापक कष्ट ने जर्जर, नगे-भूखो के प्रति उसकी एकान्त सवेदना उसकी कविताओ के शब्द-शब्द से पुकार उठती है। उसकी सहानुभूतिभरी कविताओ ने चीनियो का हृदय छू लिया और उन्होंने अपनी

---

१ Wang Wei (६९९-७५९); २ Li Po (७०१-६२), ३ Tu Fu (७१२-७०); ४ Po Chu-yi (७७२-८४८)

कृतज्ञता मे उसे 'मनीषी कवि' कह कर पुकारा। स्वय टू फू स्वभावत असाधारण भावुक था। उसे अपनी कविता की शक्ति पर इतना भरोसा था कि उसने उसे ज्वर की औषधि तक बना डाला। न उसने टाओ धर्म की ओर देखा न बौद्ध धर्म की ओर। वह कन्फ्यूशियन विचार का कवि था और अपने चारो ओर घटने वाली घटनाओ से विमुख न हो पाता था। आत्मावलबन, आत्मसयम, और आत्मानुभूति पर वह निर्भर करता था। शाति उसकी शाश्वत चेतना थी।

पो च-यी राजनीतिज्ञ था, परन्तु उसकी राजनीतिज्ञता उसे लोकप्रिय बनने से न रोक सकी। उसकी ख्याति उसके जीवन-काल मे ही चीन की सीमाओ को पार कर कोरिया और जापान तक जा पहुँची और उसकी कविताएँ जितनी ही राजकुमारो तथा महिलाओ की जबान पर थी, उतनी ही किसानो और सईसो की जबान पर, उतनी ही बूढो और बच्चो की जिह्वा पर। उसकी कविता में प्रसाद का सौरभ था और भावो की सूक्ष्मता मे गजब की ताजगी थी। परन्तु इन दोनो से बढ कर उनके प्रति लोगो के आकर्षण का कारण था कवि के विषयो का साधारणीकरण। उसके काव्यो के विषय घर के, गाँव के, नगर के थे, जो बरबस अपनी व्यावहारिक नित्यता द्वारा पढने और सुनने वालो को अपनी ओर खीच लेते थे। उसकी वर्णनात्मक शैली असामान्य थी और उसकी रूमानी कविताओ के शब्द-चित्र लोगो के अतर मे पैठ जाते थे। इन्ही द्वारा वह नित्य की सासारिक मूर्खताओ और रोजमर्रा के पाप-पुण्य, काव्य की अभिराम आकृति में सिरज कर रख देता है। उसके अपने ही सम्पादन से पता चलता है कि उसने ७० खडो मे प्राय तीन हजार विषयो का चित्रण किया।

यह बात बराबर याद रखने की है कि इन ट'आग कवियो की अद्भुत रचनाओ का आधार तत्कालीन और प्राचीन लोकगीत थे। चाऊ-शासन काल से ही ग्रामीण और गाँव के प्रेमी, अपने हर्ष-विषाद, प्रणय-विरह, आदि का गान करने लगे थे। यद्यपि उनकी कृतियो मे सस्कृत काव्य की शिष्टता न होती थी, निस्सदेह जीवन उनमें अँगड़ाता था और उनकी सादगी अपनी अकृत्रिम सुघराई में हृदय पर चोट करती थी। उस सम्पदा की कवि अवहेलना न कर सकता था और हन कुल के गायको ने 'योफ़ू' नाम से उस लोक-सगीत-सपत्ति का सग्रह और चयन कर लिया था। उन लोकगीतो के ऊपर वे पिछले लोकगीत बने, जिन पर ट'आग कवियो ने अपने-अपने काव्य का निर्माण किया।

ट'आग काल के काव्य के अनुकूल ही उस काल का गद्य और अन्य गद्यात्मक साहित्य भी था। तब प'इन टी शैली का गद्य प्रचलित था जो गानमधुर था और जिसकी इबारत कानो और नेत्रो दोनो को सुख देती थी। परन्तु नि सदेह उसमे शैली की शक्ति नही आ सकती थी, उसके लिए दूसरे टैकनीक की आवश्यकता थी। उस टैकनीक का

गठन आठवी और नवी सदियो में हुआ। नई शैली के प्रवर्तक हान-यू[1] और ल्यू-ट्सूग-युआन[2] थे। दोनो कवि निबन्धकार, और दार्शनिक थे, जो विशेषतया दार्शनिक विषयो पर भी लिखते थे। हान-यू तो बौद्ध सप्रदाय की पश्चातकालीन नीचता का प्रहर्त्ता भी हो गया है। ल्यू-युआन उसका मित्र और सुन्दर लिपिकार था। दोनो की गद्य-शैली शक्तिमती, स्पष्ट और व्यग्यात्मक थी। उनकी कृतियो मे रूप की सादगी और भावो की सपदा अक्षुण्ण है। हान-यू ने लाओ ट्जू और बुद्ध के सप्रदायो के अन्ध-विश्वासो पर प्रहार किया और ल्यू-ट्सूग ने बौद्ध धर्म के मूल तथा अविकृत सिद्धातो का प्रकाश किया। ट'आग काल के गद्य के एक रूप में दार्शनिक टीकाओ और भाष्यो का विकास हुआ और दूसरे मे इतिहासो का प्रकाशन। उस काल का सबसे महान् इतिहासकार ल्यू-चिह्-ची[3] था, जो अपनी ऐतिहासिक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध हुआ। अपने 'इतिहास की समझ' मे उसने प्राचीन इतिहासकारो को कमजोरी और राजनीतिक पक्षपात के लिए धिक्कारते हुए इतिहास-दर्शन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। साथ ही उसने ज्योतिष, गणित, चिकित्सा-शास्त्र आदि पर भी ग्रन्थ लिखे। परन्तु उस काल का सवसे महान् ज्योतिषी और गणितज्ञ ली-चुन-फेंग[4] है। ली-चुन-फेंग जिसने गणित पर अनेक ग्रथ लिखने के अतिरिक्त नक्षत्रो और ग्रहो को पहचानने का यन्त्र बनाया। तब का प्रसिद्ध चिकित्सक सुन-स्सु-माओ[5] था। उसके सहस्र-स्वर्ण-निदान आज भी चीन में प्राचीन पद्धति के चिकित्सको द्वारा काम मे लाये जाते है। उसी काल लू यू[6] ने चाय पीने की कला और उसमे प्रयुक्त होने वाली विविध प्यालियो का सविस्तार उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'च'आ-चिग' में किया। प्राय तभी कहानी का नया साहित्य भी उस देश में लिखा गया। इनमें से कुछ गद्य में है, कुछ पद्य मे और कुछ दोनो की मिली-जुली शैली मे। भारत मे उस काल के बहुत पहले ही कहानी-शैली का विकास हो चुका था। जातको, अवदानो और पचतत्र आदि की सैकडो कहानियाँ तब तक पहलवी और अरबी में अनूदित हो चुकी थी। कुछ आश्चर्य नही कि चीनी कहानियो का अध्ययन, जो अब तक नही हुआ है, भारत और चीन के तत्सबधी कहानी साहित्य के आदान-प्रदान पर प्रकाश डाले।

: ६ :

समृद्धि-युग

(९६०-११८० ई०)

८०६ ई० में ट'आग शासन का अन्त हो गया। अगली आधी शती मे पाँच

१. Han Yu (७६८-८२४), २ Liu Tsung-yuan (७७३-८१९), ३ Liu-chih-chi (६६१-७१२), ४ Li Chun-feng (६०२-६७०), ५ Sun Ssu-mao (मृ ६८२); ६ Lu Yu (मृ० ८०४)

कृतज्ञता में उसे 'मनीषी कवि' कह कर पुकारा। स्वय टू फू स्वभावत असाधारण भावुक था। उसे अपनी कविता की शक्ति पर इतना भरोसा था कि उसने उसे ज्वर की औषधि तक बना डाला। न उसने टाओ धर्म की ओर देखा न बौद्ध धर्म की ओर। वह कन्फ्यूशियन विचार का कवि था और अपने चारो ओर घटने वाली घटनाओ से विमुख न हो पाता था। आत्मावलवन, आत्मसयम, और आत्मानुभूति पर वह निर्भर करता था। शाति उसकी शाश्वत चेतना थी।

पो च-यी राजनीतिज्ञ था, परन्तु उसकी राजनीतिज्ञता उसे लोकप्रिय बनने से न रोक सकी। उसकी ख्याति उसके जीवन-काल मे ही चीन की सीमाओ को पार कर कोरिया और जापान तक जा पहुँची और उसकी कविताएँ जितनी ही राजकुमारो तथा महिलाओ की जबान पर थी, उतनी ही किसानो और सईसो की जबान पर, उतनी ही बूढो और बच्चो की जिह्वा पर। उसकी कविता में प्रसाद का सौरभ था और भावो की सूक्ष्मता में गजब की ताजगी थी। परन्तु इन दोनो से बढ कर उनके प्रति लोगो के आकर्षण का कारण था कवि के विषयो का साधारणीकरण। उसके काव्यो के विषय घर के, गाँव के, नगर के थे, जो बरबस अपनी व्यावहारिक नित्यता द्वारा पढने और सुनने वालो को अपनी ओर खीच लेते थे। उसकी वर्णनात्मक शैली असामान्य थी और उसकी रूमानी कविताओ के शब्द-चित्र लोगो के अतर में पैठ जाते थे। इन्ही द्वारा वह नित्य की सासारिक मूर्खताओ और रोजमर्रा के पाप-पुण्य, काव्य की अभिराम आकृति में सिरज कर रख देता है। उसके अपने ही सम्पादन से पता चलता है कि उसने ७० खडो में प्राय तीन हजार विषयो का चित्रण किया।

यह बात बराबर याद रखने की है कि इन ट'आग कवियो की अद्भुत रचनाओ का आधार तत्कालीन और प्राचीन लोकगीत थे। चाऊ-शासन काल से ही ग्रामीण और गाँव के प्रेमी, अपने हर्ष-विषाद, प्रणय-विरह, आदि का गान करने लगे थे। यद्यपि उनकी कृतियो में सस्कृत काव्य की शिष्टता न होती थी, निस्सदेह जीवन उनमें अँगडाता था और उनकी सादगी अपनी अकृत्रिम सुघराई मे हृदय पर चोट करती थी। उस सम्पदा की कवि अवहेलना न कर सकता था और हन कुल के गायको ने 'योफ़ू' नाम से उस लोक-सगीत-सपत्ति का सग्रह और चयन कर लिया था। उन लोकगीतो के ऊपर वे पिछले लोकगीत बने, जिन पर ट'आग कवियो ने अपने-अपने काव्य का निर्माण किया।

ट'आग काल के काव्य के अनुकूल ही उस काल का गद्य और अन्य गद्यात्मक साहित्य भी था। तब प'इन टी शैली का गद्य प्रचलित था जो गानमधुर था और जिसकी इबारत कानो और नेत्रो दोनो को सुख देती थी। परन्तु नि सदेह उसमे शैली की शक्ति नही आ सकती थी, उसके लिए दूसरे टैकनीक की आवश्यकता थी। उस टैकनीक का

गठन आठवी और नवी सदियो में हुआ। नई शैली के प्रवर्तक हान-यू[1] और ल्यू-ट्सूग-युआन[2] थे। दोनो कवि निबन्धकार, और दार्शनिक थे, जो विशेषतया दार्शनिक विषयो पर भी लिखते थे। हान-यू तो बौद्ध सप्रदाय की पश्चातकालीन नीचता का प्रहर्त्ता भी हो गया है। ल्यू-युआन उसका मित्र और सुन्दर लिपिकार था। दोनो की गद्य-शैली शक्तिमती, स्पष्ट और व्यग्यात्मक थी। उनकी कृतियो में रूप की सादगी और भावो की सपदा अक्षुण्ण है। हान-यू ने लाओ ट्ज़ू और बुद्ध के सप्रदायो के अन्ध-विश्वासो पर प्रहार किया और ल्यू-ट्सूग ने बौद्ध धर्म के मूल तथा अविकृत सिद्धातो का प्रकाश किया। ट'आग काल के गद्य के एक रूप में दार्शनिक टीकाओ और भाष्यो का विकास हुआ और दूसरे मे इतिहासो का प्रकाशन। उस काल का सबसे महान् इतिहासकार ल्यू-चिह्-ची[3] था, जो अपनी ऐतिहासिक समीक्षा के लिए प्रसिद्ध हुआ। अपने 'इतिहास की समझ' मे उसने प्राचीन इतिहासकारो की कमजोरी और राजनीतिक पक्षपात के लिए धिक्कारते हुए इतिहास-दर्शन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। साथ ही उसने ज्योतिष, गणित, चिकित्सा-शास्त्र आदि पर भी ग्रन्थ लिखे। परन्तु उस काल का सबसे महान् ज्योतिषी और गणितज्ञ ली-चुन-फेग[4] है। ली-चुन-फेग जिसने गणित पर अनेक ग्रथ लिखने के अतिरिक्त नक्षत्रो और ग्रहो को पहचानने का यन्त्र बनाया। तब का प्रसिद्ध चिकित्सक सुन-स्सु-माओ[5] था। उसके सहस्र-स्वर्ण-निदान आज भी चीन में प्राचीन पद्धति के चिकित्सको द्वारा काम में लाये जाते है। उसी काल लू यू[6] ने चाय पीने की कला और उसमें प्रयुक्त होने वाली विविध प्यालियो का सविस्तार उल्लेख अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'च'आ-चिग' में किया। प्राय तभी कहानी का नया साहित्य भी उस देश में लिखा गया। इनमें से कुछ गद्य में है, कुछ पद्य मे और कुछ दोनो की मिली-जुली शैली मे। भारत में उस काल के बहुत पहले ही कहानी-शैली का विकास हो चुका था। जातको, अवदानो और पचतत्र आदि की सैकडो कहानियाँ तब तक पहलवी और अरबी में अनूदित हो चुकी थी। कुछ आश्चर्य नही कि चीनी कहानियो का अध्ययन, जो अब तक नही हुआ है, भारत और चीन के तत्सबधी कहानी साहित्य के आदान-प्रदान पर प्रकाश डाले।

: ६ :

समृद्धि-युग

(९६०-११८० ई०)

८०६ ई० मे ट'आग शासन का अन्त हो गया। अगली आधी शती में पीली

---

१ Han Yu (७६८-८२४), २ Liu Tsung-yuan (७७३-८१९), ३ Liu-chih-chi (६६१-७१२), ४ Li Chun-feng (६०२-६७०), ५ Sun Ssu-mao (मृ ६८२), ६ Lu Yu (मृ० ८०४)

नदी की घाटी में अनेक राजकुलो ने राज्य किया। ९६० मे सुग राजकुल न एक नये साम्राज्य की बुनियाद डाली, जिसकी राजधानी आज के होनान प्रात की राजधानी काइफेग थी। प्रचुर शक्तिमान् न होता हुआ भी सुगकुल लोकप्रिय था। तातार आदि जातियो ने अपने आक्रमणो से चीन को भू-लुण्ठित कर दिया, परन्तु चीनी सस्कृति धीरे-धीरे उन्हें निगल गई और वे पीपिग (पेकिग) मे बस गये। सुग शासको ने कुछ काल बाद अपनी राजधानी हागचोव में स्थापित की, परन्तु वे तातारो को परास्त न कर सके।

राज्यशक्ति मे क्षीण होता हुआ भी सुग-काल सास्कृतिक और साहित्यिक क्षेत्र में शक्तिमान प्रमाणित हुआ। तब अनेक विशाल विश्व-कोषो और ऐतिहासिक ग्रथो की रचना हुई। अनेक पाडित्यपूर्ण गद्य ग्रथ लिखे गये और अनेक असाधारण काव्य कृतियाँ प्रसूत हुई। तभी 'क्लासिकल' ज्ञान के अध्ययन के लिए अध्ययन-पीठ स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त चित्रकला की एक राष्ट्रीय सस्था स्थापित हुई और स्थापत्य पर एक विशाल ग्रथ लिखा गया। इसी काल विविध विषयो पर हजारो पुस्तको की रचना हुई और इसी काल ठप्पो से छापने का भी श्रीगणेश हुआ। मुद्रण के निर्माण के अतिरिक्त उस काल ही कम्पास का भी आविष्कार हुआ और तभी सख्या जोड़ने वाली एक मशीन भी चीनी मेधा द्वारा आविष्कृत हुई। सुगो का काल वाग आन शिह[1] के राजकीय समाजवाद, चूह् सी[2] के नये-कन्फ्यूशियन दर्शन और ल्यू च्यू युआन[3] के चित्रो के लिए भी बडा प्रसिद्ध हुआ और साथ ही अत्यन्त सुकुमार और सुन्दर चीनी भाण्डो के लिए भी। वाग अपने समय का प्रख्यात राजनीतिज्ञ, निबन्धकार और कवि भी था। कला, दर्शन और साहित्य, मेधावियो की प्रतिभा से प्रभूत मात्रा में सेवित हुए। साहित्य के तत्कालीन दिग्गजो में अग्रणी कवि, निबधकार, इतिहासकार और राजनीतिज्ञ आऊ-याग हि सऊ[4] था। उसने ट्'आग राजवश का एक नया इतिहास लिखा। सु-मा कुआग[5] प्रख्यात इतिहासकार ने चाऊ राज वश से

हुआ। वह राजनीतिज्ञ भी था और कवि तथा कलाकार के रूप मे उसने टाओइज्म और बौद्ध धर्म से प्रेरणा पाई। उन दोनो के साथ कन्फ्यूशियन सिद्धातो की समष्टि कर उसने एक प्रख्यात ग्रथ लिखा। बारहवी सदी का सबसे महान कवि लू यौ[1] हुआ। वह असाधारण देशभक्त था। तातारो की चोट से कराहती पीली नदी की घाटी उसके तरल स्वरो में उतर पडी। उसने उनको धिक्कारा जिन्होने तातारो के प्रति आत्म-समर्पण कर दिया था, पर जो देश के शासक थे। ली-यी-आन[2] (ली चिंग-चाऊ) वह चीनी महिला थी जो प्रख्यात कवियित्री और विदुषी के रूप मे चीनी साहित्य में अमर होगई। काव्य क्षेत्र मे उसकी प्रतिभा प्रथम श्रेणी की मानी जाती है। अपने पति चाओ-मिग-चेग की उसने चीनी पुरातत्व पर ग्रथ लिखने मे सहायता की और उस ग्रथ की भूमिका भी स्वय उसी ने लिखी। ट्ज़ू छद मे उसने अनेक कवितायें लिखी, परन्तु आज उसकी कविताओ का केवल एक खड उपलब्ध है।

: ७ .

उपन्यास और नाटक-युग

(१२८०-१३६८)

सुग शासन का अन्त मगोलो ने किया, जब १२७७ मे कुबले खाँ ने अपने को चीन का सम्राट् घोषित कर अपनी राजधानी पीकिंग में स्थापित की और युआन नाम के नये राजकुल का आरम्भ किया। चीनी ज्ञान और सस्थाओ मे उसकी अतीव श्रद्धा थी और उसकी उदारता की छाया मे अनेक यूरोपियन पर्यटको ने भ्रमण किया। वेनिस का मार्कोपोलो भी उन्ही मे था।

परन्तु अनेक आत्माभिमानी चीनी पण्डित एकान्तवास करने लगे और अपने उस एकान्तवास मे उन्होने उपन्यास लिखना आरम्भ किया। उपन्यास लेखन का आरम्भ ट'आग काल में ही हो गया था, जब पो चू-यी के अभिन्न मित्र यू आन चिग ने 'सूई पिग यिंग की कहानी' और पो चू यी के अनुज पो हि सग चिएन ने 'सुन्दर तरुणी की कहानी' लिखी। ट'आग काल के बाद सुग युग मे भी कहानियाँ लिखी जाती रही परन्तु युआन काल की कहानियो का एक उद्देश्य था—अपना सुख और मित्रो का मनोरजन। उन क्षेत्र में भी काव्य की ही भाँति लोक साहित्य ही आधार बना। लोक कथाओ को कुशल साहित्यिक माँज कर अपनी प्रतिभा से साहित्य के ज्वलत रत्न बना देते। उन काल के प्रधान उपन्यासो में 'सान कुओ ची' (तीन राज्यो की कहानी) और शुई हु चुआन (मनुष्य मात्र परस्पर भाई हैं),

---

१. Lu you (११२५-१२१०), २ Li Yi-an (Li Ching-chao) (ज १०८?)

प्रधान थे। उपन्यासो की भाषा सरल थी और उनका उद्देश्य लोककल्याण था। प्रत्येक अध्याय छद से आरम्भ होकर छद ही से समाप्त होता था और अनेक वार उसका वर्णन भी छन्दप्राय होता। भारतीय साहित्यकारो की भाँति चीन की अधिकतर उपन्यासकृतियाँ अज्ञातनामा है। उनके रचयिताओ का पता नही। उपन्यासो और कहानियो को चीन के साहित्य में हेय समझा भी जाता था।

मगोल शासनकाल में नाट्य-लेखन का भी प्रचलन हुआ। सुग काल से ही चीन में कठपुतलियो के खेल का प्रचलन था। परन्तु खानो को उससे सतोष न हुआ और उनकी सरक्षा मे ५० वर्ष के भीतर ५०० से ऊपर नाटक लिखे गये। इनमे प्राय १०० की गणना अव्वल दर्जे की साहित्यिक कृतियो मे है। वोल्तेयर ने इनमें से एक पर अपनी एक रचना अवलम्बित की। वाग शिह फू का 'हू सियाग ची' (पश्चिमी कक्ष का रोमान्स) विशेष विख्यात है। इसमें एक तरुण विद्वान और सुन्दर तरुणी का प्रणय निरूपित है। इसमें सदेह नही कि उस काल के चीनी नाटको में आज की शैली प्रस्फुटित न हुई, परन्तु भाषा की दृष्टि से वे फिर भी वेजोड है।

युआन के काल के वाद प्राय ४ सदियो मे उपन्यास और नाट्य साहित्य ने अपेक्षाकृत आधुनिक रूप धारण किया। तव के उपन्यासो को हम पाँच निम्न प्रकारो मे वाँट सकते है—(१) ऐतिहासिक उपन्यास, (२) धार्मिक और दार्शनिक उपन्यास, (३) शिष्टता सवधी उपन्यास, (४) प्रणय सवधी उपन्यास और वीरता सबधी उपन्यास।

इसी प्रकार ११वी और १८वी सदी के बीच लिखे नाटक भी दो भागो में विभक्त हो सकते है—उत्तरी और दक्षिणी। उत्तरी नाटको के विषय ऐतिहासिक और अलौकिक है और दक्षिणी नाटको के रोमाण्टिक। दोनो में लिरिक कविता का बाहुल्य है। कुछ समीक्षको का विश्वास है कि अपनी लिरिक शक्ति और सौदर्य में यह ट'आग काल के लिरिको से कही बढ कर है।

: ८ :

पुनर्जीवन काल

(१३६८-१८८०)

मिंग ने १३६८ मे मगोलो को भगा कर चीन मे मिग साम्राज्य (१३६८–१६४४) का आरम्भ किया। बीच मे राजधानी नानकिंग चली गई थी, १४०९ में वह फिर पेकिंग आई। यह काल उत्तर व दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व के देशो के साथ चीन के समृद्ध व्यापार का था। पाश्चात्य नाविक भी यूरोप से चीन पहुँचे और उस दिशा से

ज्योतिष, गणित, भूगोल तथा यन्त्राविष्कार के ज्ञान पर काफी प्रकाश पडा। देश में धातु और चीनी मिट्टी के सुन्दर भाण्डे बने और कसीदे तथा जडाई का काम मिंग काल के अभिमान बन गये। साहित्य की दिशा मे निस्सदेह नव-निर्माण की प्रेरणा न हुई, यद्यपि पुराने 'क्लासिक्स' को फिर से मनन करने मे उस काल की चीनी मेधा निश्चय ही प्रवीण सिद्ध हुई। १४०३ ई० मे दो हजार विद्वानो ने विश्वकोष प्रस्तुत किया, जिस मे चीन का समस्त क्लासिकल, ऐतिहासिक और दार्शनिक साहित्य सग्रहीत हुआ। पाँच वर्ष के निरन्तर साहित्यिक श्रम के परिणाम स्वरूप 'युग लो ट टिएन' प्रस्तुत हुआ, जो ससार का आज भी प्राचीनता सबधी सबसे बडा विश्वकोष है। इसमे २२,८०० चीनी ग्रथो का सग्रह है। द्रव्याभाव के कारण इतना बडा ग्रथ उस काल प्रकाशित न हो सका और बाद की शताब्दियो में उसके अधिकतर खड अग्नि मे नष्ट हो गये अथवा काल की क्रूरता से लुप्त।

उस काल के दो महापुरुष वाग-याग-मिग[1] (वाग-शाऊ-जेन) और हु् सु क्वाग चि[2] थे। इनमें से पहला सैनिक, राजनीतिज्ञ, मनीषी, दार्शनिक और कवि था, जिसका जापान के साहित्य पर बडा गहरा प्रभाव पडा। उसने मानव-चित्त को सर्वोपरि माना, विश्व से भिन्न और स्वतत्र, इसी से उसने उसे अपने मूल रूप मे सर्वथा निर्दोष स्वीकार किया। हु सू क्वाग-ची १६०३ ई मे ईसाई हो गया और उसके धर्म, भूगोल, ज्योतिष तथा गणित सबधी विचारो की सहायता से प्रसिद्ध जेसुइट पादरी माटिओ रिकी[3] ने अपने तत्सबधी ग्रथ लिखे। क्वाग-ची का ६० खडो मे प्रस्तुत कृषि सबधी ग्रथ विख्यात है। यह पहले-पहल १६४० में अनेक अद्भुत उत्कट उदाहरणो के साथ प्रकाशित हुआ।

माचूरिया के माचुओ ने चार वर्ष बाद मिग वशका अन्तकर चिग (ट्सिंग) राजकुल का चीन मे आरम्भ किया। चीनियो ने अपने नये शासको के विरुद्ध १५ वर्ष तक निरन्तर सघर्ष किया, परन्तु अन्त मे इन्हे उनकी सत्ता स्वीकार करनी पडी। धीरे-धीरे माचुओ की शक्ति माचुरिया से तिब्बत तथा मगोलिया से फारमोमा और हेनान द्वीप तक प्रतिष्ठित हुई। अनाम, स्याम, वर्मा, नेपाल, भूटान और सिक्कम तक उस सत्ता की गहरी छाया पडी और यूरोप तक चीन की सभ्यता का प्रभाव पहुँचा। जेसुइट पादरियो ने चीन के साहित्य का जो यूरोपियन भाषाओ मे अनुवाद किया तो वहाँ के साहित्यिको ने उनका सहृदय स्वागत किया। लीबनिज, वोल्तेयर, गेटे और क्वेजने ने उस चीनी साहित्य की प्रेरणा को माना। साथ ही चीनी पोर्सलेन, और अन्य कलाकृतियो ने १७वी-१८वी सदी के यूरोपियन 'रोकोको' को क्षति पहुँचाई।

---

१ Wang Yang-Ming (१४७२-१८२८), २ Hsu-Kuang-Chi (१५६२-१६३३), ३. Mateo Ricci

क'आग ह्‌सी और चियेन लुङ्ग सम्राटो के शासन-काल में चीनी विद्वानो ने शब्द-शास्त्र, इतिहास और साहित्य के क्षेत्र मे प्रभूत श्रम कर प्राचीन कृतियो को नष्ट होने से वचाया और उनके पाठो को सही किया। क्लासिकल साहित्य के ऊपर अनेक विशद ग्रन्थ लिखे गये, अनेक विपुल सग्रह प्रस्तुत हुए। इन ग्रन्थो मे सवसे महत्त्वपूर्ण 'टू शू ट्सी चेङ्ग' नामक सचित्र विश्वकोप था, जिसके १६२८ खड थे और प्रत्येक खड २०० पृष्ठो का था। 'चुआन ट'आङ्ग शिह' इसी प्रकार २२०० ट'आग कालीन कवियो की कविताओ का सग्रह था, उस पर भी भाष्य वना। १८०० पृष्ठो में समूचे साहित्य की अनुक्रमणिका 'पेई वेन यून फू' पर भी तभी अनेक ग्रन्थ लिखे गये और साथ ही चीनी भापा के प्रसिद्ध कोप 'क'आग' ह्‌सी टज़ू टिएन' पर भी। इसी प्रकार ७७१ खडो में १७४० में प्रकाशित चीन के २४ राजवशो का इतिहास 'एर्ह शिह श्जे शिह' भी विशद ग्रन्थो का आधार वना। १०२२३ खडो मे तीन सौ विद्वानो ने चीनी साहित्य का सबसे वडा सग्रह 'श्जे कु चुआन शू' नाम से १७७३-१७८२ के वीच प्रस्तुत किया था, उसे भी अब नये सिरे से संभाला गया और उसकी सामग्री को क्लासिक साहित्य, इतिहास, दर्शन और अन्य साहित्य में बाँट लिया गया।

सम्राट वाङ्ग ह्‌सी के शासन काल के कुछ महान् लेखको का उल्लेख यहाँ समीचीन होगा—हुआग ट्सुग ह्‌सी[1] इतिहासकार और दार्शनिक था। उसने अपने एक ग्रथ में मिङ्ग काल की दर्शन शाखाओ का ऐतिहासिक विवरण लिखा। कु-येन-वू[2] की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी और प्राचीन साहित्य इतिहास, भूगोल, पुरातत्त्व, शब्दशास्त्र, अर्थशास्त्र और कविता सवमें उसकी गति समान थी। उसके ग्रन्थ अनेक विषयो पर हैं और सर्वथा प्रथम कोटि के। वाङ्ग-फु-चिह (१६१९-९२) गम्भीर दार्शनिक और उच्चकोटि का कवि था। उसने निर्भीकता के साथ अपने ग्रथो में यह प्रतिपादित किया कि वही शासन सबसे सुन्दर होगा जो जनता की अधिक से अधिक सेवा कर सके।

जिन विद्वानो ने सर्वथा वैज्ञानिक दृष्टि से सत्य का विवेचन किया, और परपरा के सम्बन्ध में सन्देह प्रकट किया, वे अधिकतर चिएन-लुग काल में हुए। इनमे अग्रणी पाँच थे—(१) यूआन मेई[3] (२) टाई चेन, (३) च्याग-शिह-चुआन, (४) टसाओ-सुएह-चिन और (५) लीहु-चेन, इनमे मेई १८वी सदी के चीन का सबसे वडा कवि था। साथ ही वह समीक्षक और निवन्धकार भी पहले तवके का था। उसने काव्य के रूप से कही अधिक महत्व कवि के ज्ञान, उसकी प्रतिभा और उसके व्यक्तित्व को दिया। नारियो की साहित्यिक प्रतिभा पर उसे वडा विश्वास था और उसने अनेक नारी

१ Huang-Tsung-Hsi (१६१०-९५), २ Ku-Yen-Wu (१६१३-९५), ३ Yuan-Mei (१७१६-९८)

शिष्याएँ बनाईं, जिनमें से १८ प्रसिद्ध कवियित्रियाँ हुईं। उसकी कविताओ के साथ ही उसके भाई और शिष्याओ की कवितायें भी 'सुई-युआन-सान शिह चुग' नाम से सग्रहीत हुई। टाई चेन[१] १८वी सदी का सबसे बडा दार्शनिक था। च्याग महान्[२] नाटककार और तीन प्रमुख कवियो में से था। उसने अनेक नाटक लिखे जिनमें से ९ सर्वोत्कृष्ट मान कर विविध शीर्षको से छापे गये। उसकी कवितायें ३१ खडो में प्रकाशित हुईं। ट'साओ[३] १८वी सदी का प्रख्यात चीनी उपन्यासकार था जिसका उच्चकोटि का प्रसिद्ध 'हुग लाऊ मेंग' नाम का उपन्यास अनेक भाषाओ में अनूदित हुआ। इसकी भाषा सरल हैं और घटना रोजमर्रा की हैं। बीच-बीच में छोटी-छोटी कवितायें भी गुँथी हुई हैं। ली हु-चेन[४] ने १०० अध्यायो में समाप्त 'चिन हुआ युआन' (दर्पण का कुसुम) नाम का अद्भुत उपन्यास लिखा। उसने भी मेई की भाँति नारी के प्रति बडी समवेदना प्रकट की और अपने उपन्यास मे बडी कर्मठता और प्रतिभा का बखान किया।

१८०० और १८९० के बीच का चीन प्राय निष्क्रिय रहा। कम से कम जगत विख्यात चीनी साहित्यकार प्रसव करने का श्रेय तब के चीन को नही है। हाँ, दो कवियो के नाम निश्चय ही फिर भी लिये जा सकते हैं, जिनमें एक तो चिन हू ओ[५] था और दूसरा हुआग टसुन ह्सीयेन।[६] १९वी सदी मे लिखे चीनी उपन्यासो मे सबसे अधिक लोकप्रिय वेन काग[७] का वीर बालक विषयक उपन्यास था। तभी का लिखा ली पो युआन[८] का चीनी अफसर विषयक उपन्यास भी काफी ख्याति पा चुका है।

: ९ :

आधुनिक युग

१९वी सदी के अन्त मे चीन मे एक नई क्राति की लहर उठी। वह क्राति जितनी ही राजनीतिक थी, उतनी ही सामाजिक भी थी। विविध पश्चिमी राजशक्तियो ने एशिया के अन्य देशो के साथ ही चीन पर भी साम्राज्यवादी छापा मारा था। १९वीं सदी के अन्तिम दशक में चीन मे एक सुधारवादी आन्दोलन चल पडा। इसने साहित्य पर भी स्वाभाविक ही गहरा प्रभाव डाला। सुधारवादी आन्दोलन के विशिष्ट निर्माताओ में

---

१ Tai Chen (१७२४–७७), २ Chiang Shih-Chuan (१७२५–८५), ३ Tsao Hsuen-Chin (१७१९–६६), ४. Li Hu-Chen (१७६३-१८३०), ५ Chin Huo (१८१८-८५), ६. Huang Tsun Hsien (१८४१-१९०५), ७. Wan Kang, ८ Li Po Yuan

क'आग यू-वेई[१] और लिआग ची-चाओ[२] थे। दोनो ही प्रकाण्ड पडित और धुरन्धर लेखक थे। दोनो ने राजनीति, दर्शन और साहित्य पर लिखा और समकालीन विचारधारा को प्रवल रूप से झकझोर दिया। इस सुधारवादी आन्दोलन के पहले ही डाक्टर सुन याट सेन सुनवेन[३] का चलाया राजनीतिक क्रांति का आन्दोलन देश में जड पकड चुका था। डाक्टर सुनयाट सेन ने विदेशी सत्ता का राजनीति से लोप कर चीनी प्रजातत्र का आरम्भ किया और स्वय राजनैतिक चीनी साहित्य को अपनी लेखनी द्वारा कुछ अमूल्य भेंट दी।

१९१७ मे डा. हू शिह[४] और प्रोफेसर चेन तू ह् सीऊ[५] ने एक व्यापक साहित्यिक आन्दोलन चलाया। जिसका प्रधान उद्देश्य 'पाई हुआ' अर्थात् जन-बोलीको साहित्य में प्रतिष्ठा देकर उसी को शिक्षा और साहित्यिक कृतियो का आधार बनाना था। यह आन्दोलन खूब फूला फला और साहित्यिक धारा में इसने गहरे परिवर्तन किये। इसके उपयोग से साहित्य से प्राचीन क्लासिकल सदर्भों की सत्ता उठ गई और अब शैली इतनी बोझिल न रही। साथ ही उसमे एक वैयक्तिक अपनत्त्व का स्वर गूंज उठा। पश्चिमी लाक्षणिक शब्दो, 'विराम चिन्हो और शैली का भी इस आन्दोलन के परिणाम स्वरूप चीनी भाषा में उपयोग होने लगा।

१९१७ और १९३७ के मध्य चीनी साहित्य के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण युग का आरम्भ हुआ। पूर्व में उन दिनो चीन नये राष्ट्र के रूप में उदित हुआ और एशिया स्वाभाविक ही उसकी ओर बडी आशा से देखने लगा। परन्तु शीघ्र ही उसके नेता अमरीकी डालर के शिकार हो गये और डाक्टर सुन याट सेन की मृत्यु के बाद तो राष्ट्रीय चेतना भी जाती रही। धीरे धीरे समाजवादी चेतना भी वहाँ जगी और शुद्ध समाजवादी चेतना का तथाकथित राष्ट्रीय तानाशाही से सघर्ष अनिवार्य हो गया। इसी बीच इस काल के अन्त में जापान की साम्राज्यवादी सत्ता चीन को निगल जाने के लिए उसकी ओर बढी। दोनो सघर्षशील चीनी दलो ने एक होकर समान शत्रु से लोहा लेने का निश्चय किया और सफल लोहा लिया भी। जापानी साम्राज्यवादी आक्रमण के पहले-दशक का साहित्य फिर भी ओजस्वी था। नयी राष्ट्रीय भावना ने नये लेखको के भीतर नयी चेतना जगा दी थी। नये उपन्यास, नये काव्य, नया गद्य, नये नाटक, नये इतिहास राष्ट्र की साहित्य-निधि को भरने लगे। तीन प्रमुख विचारधाराओ ने उस साहित्य को अनुप्राणित किया—उदारचेता, राष्ट्रीय, समाजवादी (कम्यूनिस्त)। जिन लेखको की सक्रियता ने साहित्य पर अपनी गहरी छाप डाली

---

१ K'ang Yu-Wei (१८५२-१९२७), २ Liang chi-Chao (१८७३-१९२९), ३ Sun Yat-Sen (१८६६-१९२५), ४. Dr Hu Shih, ५. Prof Chen Tu Hsiu

उनमे चाऊ श-जेन[१] कुओ मो-जो[२] हू शिह[३], लिन युताग[४], और लाओ शेह[५], अग्रणी थे। चाऊ श-जेन का दूसरा नाम लू हुसुन[६] (लूसिन) था। वह चीन का मैक्सिम गोर्की और बर्नार्ड शॉ दोनो कहा जाता है। उसमे गोर्की की समवेदनशील मानववादिता और शॉ के जीवन के प्रति व्यग्य, समान रूप से विद्यमान है। उसके प्रधान ग्रथ 'आह-कू की आत्मकथा' और 'चीनी उपन्यासो का एक सक्षिप्त इतिहास' है। मो-जो ने दस सुन्दर उपन्यास, प्राय एक दर्जन अद्भुत नाटक, पाँच खड कविता और छह खड निबन्ध लिखे है। इनके अतिरिक्त जर्मन और रूसी साहित्य की अनेक कृतियो के चीनी अनुवाद भी उसने किये है। मो-जो वर्तमान चीन के महान् ग्रथकारो मे है जिसकी रचनाओ का विस्तार बडा व्यापक है, हू शिह दार्शनिक निबन्धकार, कवि और पडित है, जिसने चीनी और अग्रेजी दोनो मे लिखा है। उसकी साहित्यिक ईमानदारी की विशेष प्रशसा की गई है। लिन-युताग ने विदेशो में भी बडा नाम कमाया है। इस देश में भी उसका प्रसिद्ध ग्रथ 'चीन और भारत का ज्ञान' पर्याप्त प्रसिद्धि पा चुका है। पाश्चात्य देशो मे उसकी जिन कृतियो ने उसके लिए ख्याति अर्जित की उनमें विशिष्ट 'मेरा देश मेरे लोग' और 'जीवन का महत्त्व' है। चीनी मे उसकी महत्त्व की रचना 'वो ती हुआ' (मेरे वचन) है। लिन युताग समर्थ कृतिकार होता हुआ भी आज के क्रातिकारी निर्माता अभिनव चीन से अभाग्यवश दूर है, फ्रास मे। लाओ शेह (लाओ शा) की प्रतिभा भी बहुमुखी है और उसने अनेक व्यग्य नाटक लिखे है। उपन्यास और कविताओ मे प्रयुक्त उसकी बुद्धि चातुरी की तुलना मार्क ट्वेन से और साफ सुथरी भाषा की अर्नेस्ट हेमिंग्वे से की जाती है।

१९३७ से चीनियो का जापानियो के विरुद्ध जीवन-मरण का सघर्ष शुरू हुआ और उसके बाद का साहित्य कम से कम युद्धकालीन उपन्यास, नाटक, कवितायें, निबन्ध और लेख सभी उस सघर्ष को ही रूपायित करते रहे। उनमें सबसे महत्त्व का उपन्यास चेन शाऊ-चू[७] का 'वसन्त की गरज' है जिसमे आक्राताओ के विरुद्ध किसानो के सगठन और सघर्ष का अद्भुत चित्रण किया गया है। इसी प्रकार याओ ह् सुएहयिग[८] का 'लाल शलजम' भी किसानो की निर्भीकता और उनकी निरीह स्थिति से सघर्षशील सैनिक बन जाना निरूपित करता है। उस काल जो कवितायें लिखी गई उनमें त्साग केह् चिआ[९] की 'प्राचीन वृक्ष की कलियाँ' पाँच हजार पक्तियो मे सपन्न हुई और काव्योचित उपकरणो द्वारा शानतुग के गोरिल्ला युद्ध और वहाँ के एक नगर की रक्षा का वर्णन करती है। उसी काल लाओ-

---

१ Chou Shu-jen (१८८१-१९३६); २ Kuo Mo-jo (जन्म १८९२), ३ Hu Shih (जन्म १८९१), ४ Lin Yutang (जन्म १८९५), ५ Lao Sheh ६ Lu Hsun, ७. Chen Shou-Chu, ८ Yao Hsueh-Ying, ९. Tsang Keh-Chia

यू[1] ने 'शुवलवसना महिला' नामक नाटक लिख कर उस नारी डाक्टर का अभिराम चित्रण किया जो अनुपम लगन से घायल सैनिको की सेवा करती रही थी।

: १० :

समाजवादी (कम्यूनिस्त) वर्तमान काल

१९१९ मे 'चौथी मई का आन्दोलन' चला था। तव से आज ३२ वर्ष हुए, चीनी प्रगतिशील लेखक 'कला के लिए कला' का दृष्टिकोण छोड 'जीवन के लिए कला' अपनाकर निरन्तर सृजन करते रहे हैं। इस साहित्यिक क्राति का अग्रदूत महान् कृतिकार लू ह्सुन था[2]। उस आन्दोलन के बाद से साहित्यकार वहाँ साम्राज्यवादी, सामन्तवादी और थैलीशाही शक्तियो और प्रवृत्तियो से लडते रहे हैं। जापानी युद्धकाल (१९३७-४५) और मुक्ति-युग मे उन्होने प्रचार और शिक्षण आदि मे प्रभूत योग दिया है। उनमे से अनेक बारी-बारी कलम और हथियार धारण करते रहे हैं। अनेक उस सघर्ष में शाति लाभ कर चुके है। उस दिशा मे विशेष प्रयत्नशील कुओ मो-जो[3] (विख्यात लेखक और इतिहासकार) माओ तुन[4] (प्रसिद्ध उपन्यासकार) और चाऊ याग[5] (मतिमान साहित्य-समीक्षक) रहे हैं। आज भी चीन के प्रगतिशील साहित्य की बागडोर इन्ही के हाथ है।

१९४२ की येनान साहित्यिक कान्फ्रेन्स के बाद साहित्य के रूप और विषय के दृष्टिकोण मे विशेष परिवर्तन हुआ। साहित्य जन-प्रसार की पृष्ठभूमि पर खडा हुआ। उसका कर्त्तव्य किसान, मजदूर और सैनिक का हित चिन्तन मानागया। साहित्य इसी दृष्टिसे प्रस्तुत होने लगा। उस दिशा में निम्न लिखित कृतियाँ उल्लेखनीय हैं —माफेंग[6] और ह्सी जुग[7] का 'लु लियाग के वीरो के वृत्तात' चाओ शूली[8] का 'ली चिया गाँव में परिवर्तन', युआन चिग[9] और कुग चुएह[10] का 'नये वीरो के वृत्तात', शाओ त्जून्नान[11] का 'बारूदी खेत' (उपन्यास), हु तान-फू[12] का 'अपनी दृष्टि को उदार करो' (ड्रामा), मा चिएन-लिंग[13] के 'प्रतिशोध के रक्ताश्रु' और 'कगाल की घृणा' (नया शेंसी ड्रामा), के चुग-

---

१. Tsao Yu, २ Lu Hsun, ३ Kuo Mo Jo, ४ Mao Tun; ५. Chou Yang, ६ Mafeng, ७ Hsi Jung, ८ Chao Shuli, ९ Yuan Ching, १० Kung Chuch, ११ Shao Tjunnan, १२ Hu Tan Fu; १३. Machien Ling

पिंग[१] का 'अनुपम सेना' (सगीत नाट्य), 'हिरोइन लिउ हु-लान' (सगीत नाट्य) आदि। ये सभी सेना, किसानो अथवा लेखको का सघर्ष चित्रित करते हैं।

इसी प्रकार लिउ पाइ-यू[२] का 'तीन बाँके सिपाही' और 'राजनीति-कमिसर' हुआ-शान[३] का 'वीर अक्तूबर', ली-वेन-पो[४] का 'आस्तीन पर लहू', हान ह्सी-लियाग[५] का 'यिमेग पहाडो का उडाकू बेडा' (उपन्यास और रिपोर्ताज) आदि भी सेना के वीर कृत्यो को साहित्य मे प्रतिबिम्बित करते हैं। किसानो के सघर्ष को व्यक्त करने वाली कुछ कृतियाँ ये हैं —चाओ-शू लो[६] का 'ली यु-त्साई की पक्तियाँ', वागली[७] का 'उज्ज्वल दिवस', वाग ह्सी-चिएन[८] की 'विपत्ति', तिंग लिंग[९] का 'सागकाग नद पर सूरज चमकता है', ली-पो[१०] का 'तूफान', मा चिया[११] का 'चियाग शान गाँव में दस दिन' (उपन्यास), और ली चिह्-हुआ[१२] का 'प्रतिक्रियावादी सघर्ष का प्रति सघर्ष' (नाटक)।

उस काल के लिखे सगीत नाट्य 'शुक्ल केशा नारी' की बडी ख्याति हुई। युवान चाग-चिंग[१३] का 'जाल', चाओ शू-लो[१४] का 'हिसआओ एर-हेइ का विवाह', हान त्सू[१५] का 'घवडाहट', कुग चु-एह[१६] का 'नारी के मोक्ष की कहानी', हुग लिन[१७] का 'लीह्सऊ लान', और काग चाओ[१८] का 'मेरे दो मालिक' (उपन्यास) नारी का सघर्ष व्यक्त करते हैं।

श्रमिको के जीवन को व्यक्त करने में सगीत नाट्य 'भाई वहन', 'वाग हिसउ लुआन' सफल हुए। काओ कान-ता[१९] 'वावग की कहानी', 'प्रेरक शक्ति' आदि उपन्यास भी उसी क्षेत्र के हैं। 'लाल झडे का गान' भी शक्तिम् नाट्य कृति है। ऐतिहासिक विषयो की कृतियाँ 'वागक्वेइ और ली हिसयाग-हिसयाग' (काव्य) और 'चाऊ त्जू शान' हैं जो उत्तरी शेंसी के भू-सुधार आन्दोलन को प्रतिविम्वित करते हैं।

चीनी साहित्य की वर्तमान प्रेरक शक्ति वहाँ की निर्माण योजनाएँ हैं। जनता और जनाध्यवसाय वहाँ के साहित्य और कला के आराध्य वन गए हैं। साहित्य का योग मानव को उसके उत्कर्ष-प्रयास मे वहाँ मिला है। प्रमादजन्य शृगारिक घिनौनी चेतना चीन के साहित्यकारो की कल्पना को अव दूषित नही करती।

---

१. Chung Ping, २ Liu PaiYu, ३ Hung Sheng, ४. LieWan Po, ५ Han hisLiang, ६. Chao Shu Lie, ७ Wang Li, ८ Wang Hsi Chien; ९ Ting Ling, १०. Li Po, ११ Ma Chia, १२ Li Chih Hua; १३ Juan Chang Ching, १४ Chao Shuli, १५ Han Tsu, १६ Kung Chu-Eah, १७ Hung Lin, १८ Kang Cho, १९ Kao Kan'a

८. चेक साहित्य

चेक और स्लावो का देश चैकोस्लोवेकिया बडा अभागा रहा है। सदियो उस पर विदेशी हुकूमत रही है और बराबर उसे अपनी आजादी के लिए सघर्ष करना पडा है। परन्तु जब-जब उसने आजादी हासिल की है और उसे शातिपूर्ण अवकाश मिला है, तव-तब उसने साहित्य में प्रगति की है। चेक साहित्य का इतिहास यहाँ दिया जा रहा है। स्लाव साहित्य वहाँ उतना विकसित नही हुआ जितना अन्यत्र। रूस, पोलैण्ड, यूगोस्लाविया, वल्गेरिया, रूमानिया, सर्वत्र उसकी बेलें अनश्वर रूप धारण कर चुकी हैं। इससे स्लाव साहित्य का जहाँ सर्वोत्कृष्ट रूप निखरा है, वही उस पर विचार समीचीन होगा।

११वी सदी के पहले का चेक साहित्य नही के बराबर है। एक-आध गीत के सिवा और कुछ वहाँ नही मिलता। हाँ, लैटिन मे निश्चय ही कुछ धार्मिक साहित्य प्रस्तुत हुआ। चेक भाषा का विकास १४वी सदी मे शुरू हुआ। कुछ वीर चरित्र वर्णन (Epics) कुछ लोक साहित्य तब लिख डाले गये। उस सदी के सारे साहित्य का कुछ अनुमान दालिमिल का इतिहास[१] जो चेक पद्य मे हैं, लगाया जा सकता है। उस काल रोजमवर्क के पीटर[२] की 'रोजमवर्क की पुस्तक' लिखी गई जिसमे तत्कालीन बोहेमिया की सामाजिक दशा और कानूनो पर प्रकाश डाला गया है। उस काल के एक-आध नाटकीय दृश्यो का भी पता चलता है।

१३४८ मे प्राग में चार्ल्स यूनीवर्सिटी की स्थापना के बाद पद्य से अधिक गद्य मे रचनाये होने लगी और उसी माध्यम से समसामयिक समाज तथा राजनीति की आलोचना शुरू हुई। बाइबिल के चेक अनुवाद हुए और तोमास[३] ने ईसाई विषयो पर अपनी पुस्तक लिखी, जिसमें ईसाइयो के दुराचरण की शिकायत की।

यूनीवर्सिटी के 'रेक्टर' मिस्टर जान हस[४] ने एक प्रबल राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ प्राग मे किया। उसने चेक भाषा को बहुत कुछ सुधार कर साहित्यिक बनाया। हस का प्रधान शिष्य पीटर चेचिकी[५] था, जिसने चेक मे कई धार्मिक निबन्ध लिखे। अनेक बार तो उसने टॉल्स्टॉय[६] के विचार उसके जन्म से सदियो पहले अपने निबन्धो में उतार कर रख दिये। उसने चर्च के सगठन की कडी आलोचना की।

---

१ Chronicle of Dalimil, २ Petr of Rozmberk (१३१२-४६), ३ Tomás of Stitné (१३३१-१४०१), ४ Mistr Jan Hus (१३६९-१४१५); ५ Petr Chelcicky (१३९०-१४६०), ६ Leo Tolstoy

चेक साहित्य में इसके बाद भी दो धार्मिक रचनाओं का युग उपस्थित करते हैं। ब्लाहोस्लाव[1] चेक भाइयों में प्रसिद्ध व्याकरणकार था, जिसने शिक्षा पर विशेष जोर दिया। उसने बाइबिल[2] की नई पोथी से न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद किया जो [illegible] चेक प्रोटेस्टेंटो का स्टैण्डर्ड धर्म-ग्रन्थ बन गया। मार्टिन काबातनिक[2] ने अपनी यात्राओं का विवरण भी चेक में उसी काल प्रकाशित किया। वाक्लाव हायेक[3] का इतिहास और दानियल आदम (१५४५-९९) का ऐतिहासिक [illegible] उस काल की रचनाओं में उल्लेखनीय है।

तीस वर्षीय युद्ध चेक साहित्य के लिए नितान्त घातक सिद्ध हुआ। कैथोलिकों ने चेक साहित्य की बहुत सी पुस्तकें जला कर भस्म कर डाली। चेक-चिन्तक देश से निर्वासित कर दिये गये। प्रसिद्ध चेक-शिक्षक जान आमोस कोमेन्स्की[4] (कोमेनियस) को अपना जीवन पोलैण्ड, हालैण्ड, और स्वीडन के प्रवास में बिताना पड़ा। उसने अनेक पाठ्य-पुस्तकें लिखी और पहली सचित्र 'टेक्स्ट बुक' प्रस्तुत की। वह उस काल का सबसे बड़ा शिक्षा शास्त्री था और उसने उस सम्बन्ध में लिखा भी काफी। इसके बाद चेक साहित्य पर जैसे पाला पड़ गया। १८वी सदी तक कोई महत्त्वपूर्ण कार्य उस देश में साहित्य की दिशा में नहीं किया जा सका। प्राग की युनिवर्सिटी जेसुइट एकेडेमी में बदल दी गई। ऑस्ट्रिया नरेशों ने चेक का तो अपकार किया ही, लैटिन को भी हटा कर वहाँ जर्मन भाषा प्रतिष्ठित की।

जोसेफ दोब्रोव्स्की[5] स्लाव भाषाशास्त्र का प्रवर्तक था। उसने एक नये आन्दोलन का आरम्भ किया, जिसके परिणामस्वरूप चेक भाषा अपने वर्तमान-भविष्य के मार्ग पर जा खड़ी हुई। दोब्रोव्स्की का काम रोमाण्टिक तरुणो ने अपने हाथ में ले लिया। अगली पीढी का नेता जोसेफ जेकाब जुगमान[6] रोमाण्टिक प्रवृत्ति से सराबोर था और उसने उस धारा को चेक साहित्य मे बहाया। मिल्टन और अन्य विदेशी साहित्यरथियो की रचनाओ का उसने चेक में अनुवाद किया। उसने अपनी भाषा के व्याकरण और कोष भी प्रस्तुत किये। चेक भाषा अब सर्वथा साहित्यिक हो चली। जुगमान के उत्साह ने अनेक साहित्यकारो को उत्साहित किया। वाक्लाव हाका[7] ने शीघ्र ही दो प्राचीन हस्तलिपियो—'क्र लूव द्वर' और 'जेलेना होरा'—को शुद्ध कर प्रकाशित किया। रोमाण्टिको ने उन्हे प्राचीन चेक काव्य-धारा का शुद्ध नमूना माना। कुछ लोगो ने उनकी वास्तविकता मे शका भी की। स्वय टामस मजारिक[8] ने १९वी सदी के अन्त मे उन पर शका प्रकट की।

---

१ Jan Blahoslav (१५२३-७१), २ Mártin Kabatník, ३. Václav Hájek of Libocane (मृत्यु १५५८), ४ Jan Amos Komensky (१५९२-१६७०), ५. Josef Dobrovsky (१७५५-१८२९), ६ Josef Jakob Jungmann (१७७५-१८४७), ७ Václav Hanka (१७९१-१८६१), ८ Thomas G Masaryk

चेक भाषा का पहला विशिष्ट कवि जान कोलार[1], था। जना की यूनीवर्सिटी में पढते समय ही रोमाण्टिक आन्दोलन से प्रभावित होकर उसने उसी प्रकार का आन्दोलन स्लावो मे भी शुरू किया। अपने सॉनेटो—'स्लाव कन्या'—में स्लावो का प्राचीन गौरव प्रकट किया। उसने अपनी कविताओ मे स्लावो की पुरानी परपराओ को फिर से रूपायित किया। उसकी शैली आज भी उस देश मे जीती है। पावेल जोसेफ सफरिक[2] ने भी उसी पथ का अनुसरण किया। उसके विशिष्ट ग्रथ विज्ञान-सबधी थे और अधिकतर जर्मन में लिखे गये, परन्तु 'स्लाव पुरातत्त्व' उसने चेक मे लिखा। उसका मित्र फ्रातिसेक पालाकी[3] चेक इतिहास का पण्डित था। उसने अपनी जनता का प्राय आधी सदी तक नेतृत्त्व किया। दोनो का प्रभाव देश की जनता और साहित्य दोनो पर पडा।

लोकगीतो के सग्रह फ्रान्तिसेक लादिस्लाव चेलाकोव्स्की[4] और कारेल जारोमीर एरबेन[5] ने किया।

रोमान्टिक स्कूल का विशिष्ट कवि कारेल हीनेक माचा[6] था। वह बडी कम आयु मे मरा परन्तु उसने साहित्य पर अपनी कविताओ से गहरा प्रभाव डाला। उसने काव्य-क्षेत्र मे एक नया पथ खोज निकाला, जिसका महत्त्व लोगो ने तब पूरा-पूरा न समझा। उसकी कविता 'मई' मानवीय प्रारब्ध और पाप से सम्बन्ध रखती है। उसमे प्रकृति का वर्णन अद्भुत हुआ है बोजेना निम्कोवा[7] ने लोक-कथाओ के अतिरिक्त चेक-किसान जीवन पर अपना सुन्दर उपन्यास 'बाबिच्का' लिखा। उसी पीढी का व्यग्यकार जर्नलिस्ट कारेल हेवलीचेक बोरोव्स्की[8] भी था जिसने डेढ साल रूस मे बिताया था और जिसे वहाँ की निरकुश व्यवस्था असह्य हो गयी थी। गोगोल का उस पर गहरा प्रभाव पडा था और स्वदेश लौट कर उसने नितान्त निर्भीकता से अपने विचार प्रकाशित करना शुरू किया। वह शीघ्र निर्वासित कर दिया गया परन्तु उसकी कविताओ ने उसका नाम देश मे अमर कर दिया।

अगली पीढी के साहित्य का नेतृत्त्व जान नेरुदा[9] के हाथ मे आया। उसने चेक साहित्य को भली प्रकार सगठित किया। अपनी कविताओ और कहानियो मे प्राग के पुराने मुहल्लो का जीवन खोल कर उसने रख दिया। उसकी कृतियाँ अपनी सादगी और स्पष्टता के कारण विशेष लोकप्रिय हुई। वितेज्स्लाव हालेक[10] ने 'साध्य-गीत' और एडोल्फ हेदुक[11]

---

१ Slovak Jan Kollar (१७९३-१८५२), २ Pavel Josef Safarik (१७९५-१८६१), ३ Frantisek Palack'y (१७९८-१८७६), ४. Frantisek Ladislav Celakovsky (१७९९-१८५२), ५. Karel Jaromir Erben (१८११-७०), ६ Karel Hynek Mácha (१८१०-३६), ७. Bozena Nemcov'a (१८२०-६४), ८. Karel Havlicek Borovsky (१८२१-५६), ९ Jan Neruda (१८३४-९१), १०. Vitezslav Halek (१८३५-७४), ११ Adolf Heyduk (१८३५-१९२३)

ने निबन्ध तथा रूपक लिखे। करोलिना स्वेत्ला का जन्म नाम जोहाना मुजाकोवा[1] था। उसने भी चेक साहित्य में अच्छी रचनायें कीं।

१८७० के बाद चेक साहित्य में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दो परस्पर विरोधी चेतनाओं का विकास हुआ। दूसरी चेतना का माना हुआ नेता जारोस्लाव व्रचलिकी (एमिल फीडा)[2] था। जारोस्लाव ससार के विशिष्ट लेखकों मे गिना जाता है। उसने अनेक भाषाओं की प्रधान कृतियों का चेक मे अनुवाद किया और काव्य के क्षेत्र मे अनेक मौलिक रचनायें कीं। जूलियस जेयर[3] भी अधिकतर उसी के विचारों का था। वह जीवन और रचना दोनों में अन्तर्राष्ट्रीय नीति का पालन करता था। जोसेफ वी स्लादेक[4] भी उसी दल का था। वह अमेरिका में कुछ काल रहा और उसने शेक्सपियर के नाटकों के चेक-रूपान्तर किये।

राष्ट्रीय दल की सहानुभूति अपने स्लाव देशों मे थी, विशेषकर रूस मे। स्वातोप्लुक चेक[5] ने चेक और स्लाव विषयों को अपनी कृतियों का आधार बनाया। उसने अपने 'गुलाम के गीत' मे जर्मनों का विरोध किया। उसकी अनेक कवितायें, व्यग्य, कहानियाँ बड़ी लोकप्रिय हुईं। उसी दल मे चेकों की प्रधान कवयित्री एलिस्का क्रास्नोहोर्स्का (एलिस्का पेचोवा)[6] भी थी और फ्रान्तिसेक प्रोचाजका[7] भी। उसी दल के कुछ साहित्यकारों ने ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे। इनमे प्रधान वाक्लाव वेनिस त्रेबिज्स्की[8] और जिकमुन्द विन्टर[9] थे। उस दल का सबसे बड़ा नेता आलोइस जिरासेक[10] था जिसकी रचनाओं ने सारे चेक इतिहास का स्पर्श किया। उसके उपन्यासो ने चेक राष्ट्रीय भावना को पहले महासमर के समय बहुत जाग्रत किया और वे बड़े लोकप्रिय हुए। किसान जनता का चित्रण उस दल के कारेल रईस[11], कारेल क्लोस्टरमान[12], जान हर्बेन[13] और जोसेफ होलचेक[14] ने किये। इग्नात हर्मान[15] ने प्राग जीवन सबधी अपनी कहानियो द्वारा नरूदा की परपरा कायम रखी। १८८० के बाद चेकोस्लोवक प्रजातत्र के प्रथम राष्ट्रपति टामस मजारिक[16]

---

१. Karolina Svétla Johanna Muzáková (१८३०-९९), २ Jaroslav Vrchlicky' (Emil Frida १८५३-१९१२), ३ Julius Zeyer (१८४१-१९०१); ४ Josef V Sládek (१८४५-१९१२), ५ Svatopluk Cech (१८४६-१९०८); ६. Eliska Kr'asnohorsk'a (Eliska Pechov'á) (जन्म १८४७), ७ Frantisek S Procházká (जन्म १८६१), ८ Vaclav Benes Trebizsky (१८४९-८४), ९ Zikmund Winter (१८४६-१९१२), १० Alois Jirásek (१८५१-१९३०), ११ Karel V Rais (जन्म १८५९), १२ Karel Klostermann (१८४८-१९२३), १३ Jan Herben (१८५७-१९३६), १४ Josef Holecek (१८५३-१९२९), १५ Ignát Herrmann (जन्म १८५४), १६ Thomas G Masaryk (१८५०-१९३७)

का प्रभाव साहित्य पर वेग से पडने लगा। उसने नई जनसत्ता की प्रवृत्तियो का त
प्रचार किया। फ्रान्तिसेक जेवियर साल्दा[1] आलोचक था और उसने स्वतत्र् आलो
द्वारा कला सम्बन्धी चेतना जगायी। रूसी और फ्रेंच प्रकृतिवादियो और यथार्थवादि
देश मे अध्ययन शुरू हुआ। रूजेना स्वोवोदोवा[2] ने नारियो और तरुणियो का प्रभा
चित्रण किया। मातेज अनास्तासिया सिमाचेक[3] ने कारखानो पर अपनी कृतियो मे
डाला और कारेल चापेक चोड[4] ने प्राग के मध्यवर्गियो का ह्रासोन्मुख चित्र र
फ्राना स्रामेक[5] ने भावनाओ के सघर्ष का विश्लेषण किया और अपने 'रजत पख
'तीलो' (शरीर) में प्रभाववादी प्रकृति को रूपायित किया। अन्ना मेरी तिल्शोव
अच्छे सामाजिक उपन्यास लिखे।

जोसेफ स्वातोप्लुक माचर[7] पिछली १९वी और २०वी सदी के विशिष्ट
जिक कवियो और लेखको मे से है। उसने अपने 'युगो की प्रेरणा' मे धर्म और पर
की कडी आलोचना की। इस 'एपिक' के अतिरिक्त भी उसने अनेक र
की। पीटर बैजरुच[8] ने साइलेशिया के चेको का उनके सघर्ष मे अपनी कृतियो
योग दिया। अन्तोनिन सोवा[9] भी उसी काल का साहित्यकार था। ओताकार ब्रेजि
विशिष्ट रहस्यवादी कवि था। और उसने सारे जगत को मानवीयता के दृष्टिकोण से
माना।

उस काल के लिरिक कवियो में प्रधान ओतोकर[11] थीर और कारेल तोमान[1
जिरी कारासेक[13] नव-रोमान्टिक प्रवृत्तियो से प्रभावित था। विक्टर डीक[14] व्यग
राष्ट्रीयतावादी था। उस प्रवृत्ति के अन्य लेखक स्तानीस्लाव न्यूमान[15] और फ्रा
गेलनर[16] है।

वर्तमान चेक साहित्य का सबसे महान् व्यक्ति कारेल चापेक[17] था। उसने
सवधी अपने स्केचो मे सुन्दर व्यग्य चित्र उपस्थित किये हैं। उसने मशीनो के विरोध में

---

१ Frantısek Xavıer Salda (१८६७-१९३६), २ Ruzena Svobo
(१८६८-१९२०), ३ Matej Anastasia Sım'ıcek (१८६०-१९१
४ Karel Capek-Chod (१८६०-१९२७), ५. Frana Sramek (जन्म १८७
६ Anna Marie Tılschov'a (ज० १८७३), ७ Josef Svatopluk Machar (१८
१९४२), ८ Petr Bezruc (जन्म १८६७), ९ Antonın Sova (१८६४-१९२
१० Otakar Brezina (१८६८-१९२९), ११ Otokar Theer (१८८०-१९१
१२. Karel Toman (जन्म १८७७), १३. Jırı Karasekze Lvovic (
१८७१), १४ Viktor Dyk (१८७७-१९३१); १५ Stanislav K. Neumann (
१८७५), १६ Frantısek Gellner (१८८०-१९१४), १७ Karel Capek (१८
१९३८),

अपने नाटकों और उपन्यासों से विदेशों में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। उसकी कृतियों में प्रसिद्ध निम्नलिखित हैं—'[illegible]', 'गालापुरोग ग्रन्थ', 'सर्वशक्तिमान का कारखाना', 'सफेद महामारी'। अपने भाई जोसेफ के सहयोग से उसने 'कीटों का जीवन' लिखा। आधुनिक में उसकी 'आत्मगीत' [illegible] के [illegible] में गोल्ड [illegible] देती है।

इस काल का एक और महत्त्वपूर्ण नाटककार फ्रान्तिसेक लांगर[1] है। उसने 'मुर्दे के गुलाम में'—लिखा। प्रथम महासमर के बाद के साहित्यिकों में प्रधान रुडोल्फ मादेक[2], जोसेफ कोप्टा[3] और फ्रान्तिसेक कुबका[4] हैं। इस काल की सुन्दरतम कृति 'नेक सैनिक स्वेजक' है, जिसे यारोस्लाव हाशेक[5] ने रचा। इस उपन्यास का, उसकी खामियों के बावजूद वर्तमान चेक साहित्य में अपना स्थान है। इस युद्ध के बाद सामाजिक और आचार सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने का भी साहित्य में प्रयत्न हुआ। जोसेफ होरा[6] और जीरी वोल्कर[7] ने इस दिशा में प्रयत्न किये। वितेस्लाव नेज़वल[8] ने काव्य में अमूर्त शैली का विकास किया। नये उपन्यासकारों में व्लादिस्लाव वान्चुरा[9] हैं, जिसने नई शैली का प्रयोग किया है। इधर के तरुण लेखकों में प्रधान जान वाइस[10] एगोन होस्तोव्स्की[11] और वाल्दिमीर नेफ[12] हैं।

१९३९ में दूसरा महासमर शुरू हुआ और नात्सी साम्राज्यवादी क्रूरता का पहला शिकार चेकोस्लोवाकिया हुआ। कारेल चापेक का निधन म्यूनिख सुलहनामे के समय ही हो गया था और अब शत्रु के घर पर सर्वथा अधिकार कर लेने पर साहित्य की धारा रुक गई। अधिकतर राष्ट्रवादी, मार्क्सवादी, प्रगतिशील साहित्यकार तलवार के घाट उतार दिये गये, अथवा आक्रमण की अन्य क्रूरताओं के परिणाम-स्वरूप विनष्ट हो गये। कुछ जो स्वदेश से भाग कर विदेशों में पहुँचे, उन्होंने अपने साहित्य का अध्ययन और विकास जारी रखा। युद्धोत्तर की नई सरकार ने चेक और स्लोवक साहित्यकारों को नया जीवन प्रदान किया है और उस सरक्षा से चेक-भारती एक बार फिर चमक उठी है। अभी हाल मे अनेक भारतीय कृतियो के अनुवाद चेक में प्रस्तुत हुए है। कई हिन्दी रचनायें भी चेक में अनूदित हुई है। वस्तुत भारतीय कृतियो के जितने अनुवाद चेक भाषा में हुए है, उतने रूसी को छोड और किसी विदेशी भाषा में नही हुए।

---

१. Frantiser Langer (जन्म १८८७), २ Rudolf Medek (१८९०-१९३८), ३ Josef Kopta (जन्म १८९४), ४ Frantisek Kubka (जन्म १८९४), ५. Jaroslav Hásek (१८८४-१९२३), ६ Josef Hora (जन्म १८९१), ७. Jiri Wolker (१९००-२४), ८ Vitezslav Nezval (जन्म १९००), ९ Vladislav Vancura (१८९१-१९४३), १० Jan Weiss, ११ Egon Hostovsky, १२ Vladimir Neff,

६. जर्मन साहित्य

जर्मन-साहित्य ससार के प्रौढतम साहित्यो में गिना जाता है। उसकी वैज्ञानिकता तो सिद्ध है ही, विज्ञान सवधी चर्चा भी उस साहित्य में काफी हुई है। वस्तुत विज्ञान-साहित्य जितना जर्मन भाषा मे है, उतना ससार की किसी अन्य भाषा में नही।

जर्मन-साहित्य के अध्ययन के लिए हमें उसे अनेक काल स्तरो मे बॉटना होगा। इनमें पहला प्राचीन काल ८०० ई के लगभग प्रौढता को प्राप्त हुआ, दूसरा मध्यकाल प्राय १२०० के लगभग। तीसरा, वर्तमान युग, गेटे के जीवन काल में १८०० के लगभग शुरू हुआ, जो अपनी विविव साहित्यिक चेतनाओ द्वारा स्वय अनेक स्कधो मे वँट गया है।

: १ :

प्राचीन-युग

प्राचीन जर्मन-साहित्य निस्सदेह अग्रेजी समसामयिक साहित्य की अपेक्षा कम और नि सत्त्व है। वीर बैलेडो का अभाव तो उस काल जर्मन में नही था परन्तु निश्चय आगल सैक्सन 'बोवुल्फ' की सी कोई कृति तव नही रची गई। 'डास हिल्डेब्रान्डस्लिड' निश्चय ही उस महान् अग्रेजी कृति की समता नही कर सकता। फिर भी यह जर्मन कृति उस काल के बैलेड-साहित्य की एक मजिल प्रस्तुत करती है। उसकी कहानी पिता-पुत्र के बीच मरणान्तक युद्ध की है। उपलब्ध खण्ड कहानी को अपूर्ण प्रस्तुत करता है, जिसमें युद्ध मात्र प्रदर्शित है, यद्यपि उसके प्रमाणो से सिद्ध है कि पिता विजयी हुआ और उसे अपने मान की रक्षा के लिए पुत्र का वघ करना पडा। सोहराव और रुस्तम की कहानी जैसे जर्मन आधार से फिर उठ खडी हुई है।

जर्मनी में वीर-वैलेडो का जनता में उस काल पर्याप्त प्रचार था। फ्रेंच 'त्रूवेदूरो' की तरह वहाँ भी पेशेवर गायक वीर-कृत्यो से मुखरित वैलेड नगर-नगर, गाँव-गाँव जाकर गाया करते थे। जर्मन कवीलो का निरन्तर इधर-उधर भटकते फिरना, राज्यो का उत्थान-पतन, राजाओ के परस्पर सघर्ष, निस्सदेह अत्यन्त शक्तिम वैलेड रचनाओ के आधार वन सकते थे और वने। आस्त्रोगोथ जाति के राजा थियोडोरिक (डीत्रीच फान वेर्न)[१] हूणो के राजा अत्तिला (एतजेल)[२] और वरगडी के राजा गुन्थर[३] के वीर कृत्यो पर अनेक वैलेड रचे गये, जिनका प्रभाव उस काल के जर्मन साहित्य पर

१. Dietrich Von Bern—Theodoric; २. Etzel (Attila), ३ Gunther

भय था और कष्टमय सघर्ष के बाद वह स्वय मारा जाता है यद्यपि वह क्रीमहिल्ड के सामने सिर नही झुकाता ।

दरबारी वीर-काव्य

इस प्रकार के काव्य वस्तुत लोक-काव्य थे जिनके रचयिताओ का सही पता नही चलता यद्यपि यह सदेह रहित है कि इनकी रचना चारणो ने ही की। भारत मे भी चारण-साहित्य की कमी नही, राजस्थानीय डिंगल उससे भरा पडा है। जगनिक का 'आल्हा' उसी प्रकार का एक चारण काव्य है, यद्यपि उसके साथ एक दरबारी कवि का नाम जुडा हुआ है। अति प्राचीन काल में भारत मे भी सस्कृत महाकाव्यो के उदय के पहले चारण ही रामायण-महाभारत आदि की कथाएँ सर्वत्र फिर-फिर कर सस्वर गाया करते थे। पश्चात्, वाल्मीकि, व्यास आदि से समर्थ कवियो ने रामायण-महाभारत के से वीर-काव्यो की रचना की। यद्यपि वाल्मीकि और व्यास को दरवार विशेष से सम्बन्वित करना आसान न होगा, उनकी कृतियो को दरवारी वीर-काव्य की सज्ञा देना शायद अनुचित न होगा। उसी परपरा मे पिछले काल कवि चन्द ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की। जर्मनी में भी मध्यकाल के अज्ञातनामा शिथिलवन्ध लोक-वीर-काव्यो की रचना के बाद दरवारी वीर-काव्यो की रचना हुई।

१२वी सदी के प्राय अन्त में दरबारी चारणो ने लोकप्रिय वीर-गाथाओ के आधार पर फ्रेंच त्रूबेदूर परपरा से प्रभावित 'एपिक-काव्यो' की रचना प्रारम्भ की। इनमें जर्मन कुलो के पारस्परिक सघर्ष, खूनी वदलो और शौर्य-कृत्यो का अभिनिवेश हुआ। इस प्रकार के जर्मन काव्यो की रचना मध्यकाल मे होहेन्स्टाफेन[1] सम्राटो के शासनकाल में हुई। उस काल के तीन विशिष्ट कवि हार्तमान फॉन ओई[2] वुलफ्राम फॉन एशेनवाख[3] और गॉटफ्रीड फॉन स्ट्रासवुर्ग[4] थे। हार्तमान आर्थर सम्वन्धी अपनी कथाओ से काफी विख्यात हो गया है परन्तु उसकी उस काल की विशिष्ट रचना 'डेर आर्म हीनरिख' (अभागा हेनरी) थी। उसमे एक पवित्र हृदया कुमारी के त्यागशील प्रणय के प्रभाव से महाकाय वीर का कुष्ठ दूर हो जाता है। मध्यकालीन जर्मनी की सवसे महान् काव्य-कृति 'पार्जीवाल' वुलफ्राम ने प्रस्तुत की। 'पार्जीवाल' धार्मिक वीर है, आर्थर के वीरो मे से एक, और सर्वथा सरल होने के कारण उसे निरन्तर अनृत से सघर्ष कर बार-बार पराजित होना पडता है। परन्तु अन्त मे वह विजयी होकर शाति लाभ करता है। गॉटफ्रीड 'त्रिस्तान उन्ड इसोल्ड' का रचयिता है। इस काव्य में

---

१ Hohenstaufen, २. Hartmann Von Aue, ३ Wolfram Von Eschenbach, ४ Gottfried Von Strassburg

वीर नायक और नायिका एक दूसरे के प्रति प्रणय से प्रेरित अपने जीवन की प्रेम पर आहुति चढा देते हैं।

प्रणय-काव्य

वीर-काव्यो के अतिरिक्त उस मध्यकाल में वीरो और उनकी नायिकाओ के परस्पर प्रणय पर भी एक प्रकार की पृथक् काव्य-रचना हुई, जिसे जर्मन मे 'मिनेसागर'[१] साहित्य की सज्ञा मिली। इस पद्धति का आरम्भ वस्तुत प्रोवास में हुआ था परन्तु उसकी सीमा का प्रसार जर्मन साहित्यिक प्रवृत्तियो को भी प्रभावित किये बिना न रहा। वस्तुत उसकी प्रेरणा सारे मध्य-यूरोपीय साहित्य के मधुर रूपायन का आधार बनी। उस प्रणय की सामग्री पर जर्मनी के देहातो में असख्य लिरिक लिखे गये और इन्ही लिरिको के रचयिताओ का नाम 'मिनेसागर' पडा। उनका प्रधान प्रतिनिधि वाल्थर फॉन डेर फोगलवाइड[२] था। इस महान् गायक ने वियना के दरबार में राइनमार से अपनी कला सीखी। राइनमार फॉन हागेनो[३] तब के गायको का नेता था। वाल्थर अन्य चारणो की ही भाँति दरबार-दरबार घूमा करता था। जिन दरबारो को उसने अपनी उपस्थिति से सनाथ किया, उनमें प्रधान थुरिंगिया के लैंडग्रेव हरमान[४] और होहेनस्टाफेन राजकुल के सम्राट् फ्रेडरिक द्वितीय के थे। वाल्थर ने होहेनस्टाफेन सम्राट् के पक्ष का पोप के विरुद्ध समर्थन किया और उस निमित्त हृदयग्राही उद्देश्य-परक कविताएँ रची। उसके 'मिनेसाग' अत्यन्त सरल और शालीन हैं। उसने भी त्रूबेदूर परपरा में लिरिक लिखे परन्तु उनकी ताजगी आज भी पूर्ववत् बनी है। जिस प्रकार विद्यापति की वाग्धारा अपने सरक्षक राजा शिवसिंह की रानी लखिमादेई सम्बन्धी अभिराम पदो मे फूट पडी थी, उसी प्रकार प्राय उन्ही दिनो जर्मनी के उस प्रधान गायक के गीत गढ की रानी के प्रति वह चले यद्यपि वाल्थर विद्यापति के समान प्रणय में कृतार्थ न हो सका। तब उसकी स्वर-लहरी भोली ग्रामीण कुमारियो के लावण्य के बखान मे गूंज उठी। उसने दरबारी लिरिक को चरम प्रौढता प्रदान की।

मध्कालीन दरबारी कवियो मे एक प्रसिद्ध गायक तानहाउसेर[५] हो गया है। उसके सम्बन्ध में यह पुराण-प्रसिद्ध हो गया था कि वह प्रणय की देवी वीनस के दरबार मे भी रह चुका था। १५वी सदी के एक लोकगीत का कथन है कि साल भर वीनस के साथ विलास कर लेने के बाद एक दिन तानहाउसेर की ज्ञान-चेतना सहसा जाग्रत हो उठी और वह अनुशोचना का शिकार हुआ। अपनी आत्मा को नरक से

---

१ Minnesanger, २ Walther Von der Vogelweide, ३ Reinmar Von Hagenau, ४ Landgrave Hermann, ५ Tannhauser

रक्षा के लिए तब वह पोप के पास रोम भागा। परन्तु जब वहाँ उसे निराशा के सिवा कुछ हाथ न लगा, तब वह फिर वीनस के दरबार को लौट गया। भगवान् के चमत्कार से उसे सद्गति की भी सूचना दी गई परन्तु प्रायश्चित के बदले उसने अब तक वीनस के साथ विलास ही स्वीकार कर लिया था। तानहाउसेर को अपने गायनो की प्रेरणा वाल्थर से मिली थी और उसके लिरिको मे ग्रामीण किसान तरुणियो का अधिकाधिक चित्रण मिलता है। अधिकतर उन्ही के प्रति नाडडहार्ट की ही भाँति उसका स्वर भी ध्वनित हुआ है।

लोक-गीत

१५वी सदी को तानहाउसेर ने अपनी कृतियो से सनाथ किया। उसके अतिरिक्त भी लोक-गीतो का प्राबल्य रहा। असख्य लोक-गीत उस काल मे रचे गये। उनकी गेयता और माधुर्य इतने आकर्षक है कि आज भी वे बासी न पड सके और उसी प्राचीन उत्साह से गाये जाते है। मानव-जाति के हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, मैत्री-वैर आदि उन गीतो के आधार बने। साहस के कार्य, सयोग-वियोग की अनुभूतियाँ, ऋतुओ के विविध व्यापार उन गीतो के स्वर में मूर्त्त हुए। भाषा वस्तुत जनबोली थी परन्तु उसके गीतो का स्वर व्यापक सिद्ध हुआ। दो राजसन्तानो का प्रणय एक प्रसिद्ध गीत मे अभिराम मुखरित हुआ है। दूसरे मे प्रेमी अपनी समाधि से, रात मे उठ कर प्रेयसी को खोजने निकल पड़ता है। इसी गीत ने गॉटफ्रीड ओगुस्ट बीरगर[1] को उसके सुन्दरतम बैलेड 'लेनोरे' (१७७४) लिखने को प्रेरित किया। स्कॉट[2] और रोसेट्टी[3] दोनो ने 'लेनोरे' का अनुवाद अग्रेजी में किया। अज्ञातनामा अनेक कवियो के अनेक अन्य गीत माँझियो, पहाड के निवासियो और छात्रो के सबध में लिखे गये, अनेक निम्नवर्गीय शठो के सम्बन्ध में भी।

मिनेसागेर का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उस परपरा के गीत लोक-गीत थे, चारणो द्वारा गाये और लिखे गये। गीतो की एक और परपरा १५वी १६वी सदी में जगी, जिसका नाम उसके गीतो और कविताओ की अलकृत तथा पेचीदी शैली के कारण 'माइस्तेरसिंगेर' साहित्य पडा। माइस्तेरसिंगेर उन गीतो का नाम नही, उनके गायको और रचयिताओ की सज्ञा है। नगरो के उदय ने शिल्पाचार्यो और सौदागरो में प्राचीन लोक-गीतो की परपरा को बचा रखने और जीवित रखने की प्रेरणा हुई। नूर्नबर्ग, मेन्त्स और स्ट्रासबुर्ग में काव्यकला के शिक्षण के लिए अनेक पीठ स्थापित हो गये। कवि बनने की इच्छा करने वाला व्यक्ति अपरेन्टिस के रूप मे वहाँ पहले भर्ती होता था। यदि उसने छन्दो की रचना में कुछ प्रतिभा दिखाई तो

१ Gottfried August Berger, २ Scott, ३ Dante Gabriel Rossetti

उसकी सज्ञा 'काव्यपथिक' (जर्नीमैन) होती थी और यदि उसने एक नया स्वर, ध्वनि अथवा छन्द गढ डाला तब वह गायनाचार्य अथवा 'माइस्तेर्रसिगेर' कहलाता था। १५वी-१६वी सदियो मे नगरो मे श्रेणीबद्ध सौदागरो का प्राधान्य था। श्रेणी अथवा 'गिल्ड' जीवन मे सर्वत्र प्राधान्य धारण कर चुके थे। यहाँ तक कि छात्रो और आचार्यो तक के अपने-अपने गिल्ड बन गये थे। स्वय वहाँ की यूनीवर्सिटियो का आरम्भ भी 'यूनीवर्सिटास' के जरिये उसी 'गिल्ड' के आधार पर हुआ। नूर्नबर्ग में माइस्तेर्रसिगेर अर्थात् मास्टर गायको की एक श्रेणी ही बन गयी। उस दल का मुख्य, पेशे से मोची, कवि हान्स साख्स[1] था। साख्स ने चार हजार से ऊपर पूर्ण-गीत लिखे। स्वय उसे अपने इन गीतो पर बडा अभिमान था परन्तु उत्तरकालीन पीढियो ने उसे बहुत महत्त्व न दिया। हाँ, अपने गीतो के अतिरिक्त उसने जो प्रहसन और नाटक लिखे, उनका आदर निश्चय ही पीछे भी काफी हुआ। उसके हास्यमय नाटक साकेतिक रूप से 'फास्तनाक्तस्पीले'[2] कहलाते है। हान्स प्रसिद्ध प्रोटेस्टेंट धार्मिक नेता मार्टिन लूथर[3] का समकालीन था और सुधारवादी आन्दोलन मे भाग लेने वाले पहले कवियो में से था।

यहाँ पर उस महान् सुधारवादी नेता मार्टिन लूथर का भी उल्लेख कर देना समीचीन होगा। लूथर स्वय कोई विशिष्ट साहित्यिक न था परन्तु 'बाइबिल' के उसके अद्भुत अनुवाद ने निश्चय ही जर्मन-साहित्य के इतिहास मे एक मजिल स्थापित कर दी। उस साहित्य के लिए यह अनुवाद अत्यन्त महत्त्व का था। इस अनुवाद से जर्मन भाषा को अपनी सीमाओ मे व्यापक बनने मे बडी सहायता मिली। कारण यह था कि उसे वृद्ध और तरुण, पुरुप और नारी, धनी और कगाल सभी पढते थे। आगे की अनेक पीढियो मे लेखको ने अपनी शब्द-योजना उसी अनुवाद के आधार पर प्रस्तुत की। सुधारवादी आन्दोलन ने जर्मन इतिहास के मध्ययुग का अन्त कर दिया और वर्तमान युग का वह अग्रदूत बन कर आया। उस आन्दोलन के परिणामस्वरूप जो सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल हुई, उसने अगली दो सदियो के साहित्य को गति, चेतना और दिशा दी।

२

पुनर्जागरण और सुधार-आन्दोलन

जर्मन इतिहास में पुनर्जागरण और धार्मिक सुधार के आन्दोलन बडी महत्व-पूर्ण और दूरगामी प्रेरणाएँ सिद्ध हुए। १६वी सदी में इन दोनो प्रेरणाओ ने जर्मन

१ Hans Sachs (१४९४-१५७६), २. Fastnachtspiele, ३ Martin Luther

इतिहास और साहित्य मे विशेष प्रगति पाई। कैथोलिक चर्च की प्रभुता के विरुद्ध सघर्ष और प्राचीन क्लासिकल ग्रीक और लैटिन साहित्य तथा ज्ञान का पुनरुज्जीवन जर्मन साहित्य के ऊपर अपनी अमिट छाप छोडे बिना न रह सके। रेनेसा और सुधारवादी आन्दोलन को कुछ लोगो ने दो विरोधी विचारधाराये माना है। इनमें पहली वैयक्तिक स्वाधीनता और स्वतत्र चिन्तन तथा निर्बाध जीवन की प्रेरक है और दूसरी प्राय प्रतिक्रियावादी है जिसने व्यक्ति को पोप की सत्ता से हटा कर बाइबिल की शृखला मे बाँधा और जो इस प्रकार चर्च सबधी उन धार्मिक प्रेरणाओ से व्यक्ति को स्वतन्त्र न कर सकी। मूलत वास्तव मे वह रूढिवादी ही थी। फिर भी दोनो का जर्मन इतिहास और साहित्य के निर्माण मे जोरदार हाथ रहा है। जहाँ एक ने जर्मनी के मानव को एक नया दृष्टिकोण तथा जीवन और साहित्य के मूल्याकन के लिए एक नया मानदण्ड दिया, दूसरी ने एक प्राचीन रूढिवादी अप्रगतिशील तथा प्रतिगामी सस्था के विरुद्ध विद्रोह कर एक नई चेतना को जन्म दिया। लोगो को ऐसा लगा कि उनको प्रतिगामी असमाजवादी सत्ता के विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार है। और यह प्रवृत्ति तव केवल धर्म के क्षेत्र तक ही सीमित न रह सकी, ऐसा सभव भी न था। नई चेतना पुराने मूल्यो को पुराने रूप और परिमाण मे अगीकार करने को प्रस्तुत न थी। विद्रोह की भावना ने जो भित्ति के सहारे नीव तक पहुँच कर रूढियो की अट्टालिका को हिला दिया तो उसने अपनी शक्ति पहचानी और वह सर्वत्र सामाजिक औचित्य के नाम पर सघर्ष करने लगी। इस दिशा मे समाज और साहित्य की दृष्टि से अग्रगामी जर्मन मानवतावादियो का एक दल था।

मानवतावादी

जर्मन मानवतावादी—जोहान्स रूखलिन[१], डेसिडेरियस इरेस्मस[२] और उलरिख फॉन हुट्टेन[३] —यद्यपि जर्मनी मे उत्पन्न जर्मन थे, परन्तु उनके ज्ञान का विस्तार यूरोपव्यापी था। उन्होने शीघ्र यूरोप की प्रगतिशील विचारधारा का नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। इरैस्मस ऑक्सफोर्ड में ग्रीक का प्रोफेसर था। उसकी प्रतिभा का वडा गहरा प्रभाव इग्लैण्ड की तत्कालीन चेतना पर पडा। मानवतावादी नेताओ के आन्दोलन की पद्धति पुरानी रूढिगत सस्थाओ पर लेखनी से प्रवल प्रहार थी। पादरियो, मठो, चर्च और उसके विशेषाधिकारो पर उन्होने प्रवल आघात किया और चर्च के अधिकारियो तथा उनके हथकडो की शिकार जनता दोनो को उन्होने 'मूर्ख' कह कर पुकारा। मूर्खो और मूर्खता के ऊपर उन्होने जो विशद साहित्य रचा, उसकी मात्रा और शैली दोनो असाधारण थे। सुधारवादी आन्दोलन के प्रवर्तक लूथर को अधिकतर उन दिशा

---

१. Johannes Reuchlin, २ Desiderius Erasmus, ३ Ulrich von Hutten

में प्रगति का नेता कहा जाता है, परन्तु वस्तुत और मूलत लूथर प्रतिगामी ही था। उसने पोप की सत्ता पर कुछ आघात तो किया, परन्तु किसी मात्रा मे उसका उच्छेद उसे सह्य न था। हमारा मन्तव्य यहाँ लूथर के आन्दोलन को नगण्य करार देना नही, केवल इतना कहना अभीष्ट है कि स्वतत्र और आलोचक—चेतना मे प्राण फूँकने वाले दूसरे थे—वे प्राचीन क्लासिक पण्डित जो पुनर्जागरण के पुजारी थे और जिनके पास तर्क की शक्ति तथा मानवता की प्रेरणा थी—इरैस्मस, आदि।

स्वय लूथर ने मानवतावादियो के प्रयास का विरोध नही किया। उसने रोमन कॅमेडियो का अध्ययन और रगमच पर अभिनय सराहा भी यद्यपि उसकी व्यक्तिगत अभिरुचि धार्मिक क्षेत्र मे थी। लूथर के आन्दोलन के प्राय साथ ही जर्मनी मे राजनीतिक उथल-पुथल भी मच गई और उसने देश को, उसके नगर-नगर, गाँव-गाँव को बरबाद कर दिया। जर्मन जनसख्या का एक बडा अश नष्ट हो गया। परिणाम यह हुआ कि वहाँ साहित्य और कला के क्षेत्र में पुनर्जागरण का आन्दोलन उस मात्रा में सफल न हो सका जिस मात्रा में वह यूरोप के अन्य देशो—इटली, फ्रास, स्पेन, हालैण्ड और इग्लैण्ड—में हुआ था।

जर्मन मानवतावादियो ने सिद्धातो द्वारा आन्दोलन के रूप में तो निश्चय ही काफी प्रगति की और उस दिशा मे विपुल मात्रा में साहित्य रचा। परन्तु जर्मन साहित्य और भाषा का कल्याण वे तत्काल न कर सके क्योकि उस साहित्य और भाषा को उन्होने अपनी लेखनी से सनाथ न किया। वे अपने विचार लैटिन (लातिनी) मे ही प्रकट करते रहे। उनका लिखना-पढना तो लैटिन में होता ही था, उनके व्याख्यान भी सदा उसी जबान में होते थे। हाँ, उलरिख फॉन हुट्टन और टॉमस मूरनेर[1] के-से कुछ मानवतावादी पण्डित इसके अपवाद भी थे। उन्होने यूनीवर्सिटियो का आरम्भ किया, और वहाँ क्लासिकल ज्ञान का गढ कायम कर दिया परन्तु उनकी धारा बराबर ग्रीक और लैटिन मे ही बहती रही। एकाध ग्रन्थ जो आम जनता के लिए जर्मन में लिखे भी गये उनका भी प्रचार के अर्थ शीघ्र लैटिन में अनुवाद कर लिया गया क्योकि तभी उनमे प्रकटित विचारो का प्रचार हो सकता था और हो सका। उदाहरणत सेबैस्टियन ब्रैन्ट[2] की पुस्तक 'नारेन्शिफ'[3] (मूर्खो की नौका, १४९४) जो इस दिशा मे जर्मन भाषा की पहली पुस्तक थी, यूरोप-व्यापी ख्याति तभी प्राप्त कर सकी जब उसका लैटिन सस्करण प्रकाशित हुआ। यह जर्मन काव्य १५वी सदी के अन्तिम चरण के साहित्य पर एक रत्न है, जिसमें तात्कालिक जीवन व्यग्य के रूप मे चित्रित हुआ है। अनेक मूर्ख एक साथ नौका-विहार करते है, प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र में पार-

१ Thomas Murner, २ Sebastian Brant, ३ Narrenschiff

गत है और उस दिशा में अपनी विशेष मूर्खता का प्रदर्शन करता है। इस व्यग्य काव्य का अनुकरण, इरैस्मस, मूरनेर तथा अन्य मानवतावादियो ने किया। काव्य अनेक बार अग्रेजी और फ्रेच मे अनूदित हुआ।

१६वी सदी जर्मन साहित्य के लिए कुछ अच्छी न सिद्ध हुई क्योकि जहाँ लैटिन ड्रामा, गद्य और पद्य का एक नये सिरे से विकास हुआ, वहाँ जर्मन साहित्य उन पण्डितो की मेधा से सर्वथा अछूता रहा। कुछ काल पहले, १९वी सदी के अन्त और बीसवी सदी के आरम्भ में, जैसे हिन्दुस्तान मे भी विद्वानो और साहित्यकारो को अपनी भाषा के प्रति उदासीनता थी, वैसे ही जर्मनी मे भी तब जन साधारण, साहित्यिक और पण्डित सभी अपनी भाषा से उदासीन थे और निरन्तर लैटिन का उपयोग करते थे। यह स्थिति वस्तुत इतनी भयानक हो उठी कि जो लोग जर्मन के सिवा और कोई भाषा नही जानते थे, वे तक विदेशी शब्द और मुहावरे सीख अपनी भाषा उनके योग से सुधारने और बढाने का प्रयास करने लगे थे। १७वी सदी के आरम्भ में तो जर्मन भाषा के प्रति यह घृणा इतनी बढी और सारे देश में इस कदर व्यापक हो गई कि जब साइलेशिया के कवि और विद्वान मार्टिन ओपित्स[१] ने १६१७ में मातृभाषा के पक्ष मे आन्दोलन आरम्भ किया, तब उसे अपना सारा प्रचार-साहित्य लैटिन में ही प्रस्तुत करना पडा, व्याख्यान तक। इस प्रकार जर्मन भाषा के पक्ष में एक पृष्ठभूमि प्रस्तुत कर चुकने पर उसने उसमे अपनी कविताओ का सग्रह प्रकाशित किया। उसके भी सात वर्ष बाद उस सदी की आलोचना सबकी सर्वोत्तम पुस्तक 'बुख फॉन डेर डैत्शेन पोएतरी'[२] (जर्मन कविता का ग्रथ) उसने प्रकाशित की। यद्यपि वह ग्रथ सर्वथा मौलिक न था परन्तु जर्मन भाषा में साहित्य प्रस्तुत करने की प्रेरणा देने और उस भाषा को शुद्ध करने की आवाज उठाने के कारण उस ग्रथ का महत्त्व कल्पनातीत हुआ। उसकी प्रधान पुकार भाषा को विदेशी शब्दो के भार और यातना से मुक्त करने की थी। परन्तु खेद कि निरन्तर होते रहने वाले धार्मिक सघर्षो ने उस दिशा मे विशेष प्रगति न होने दी और ३० वर्षीय युद्ध (१६१८-४८) ने तो देश को सर्वथा वीरान ही बना दिया। १७वी सदी के पूरे दौरान मे बस एक ही साहित्यिक 'मास्टर पीस' प्रस्तुत हो सकी—ग्रीमेल्सहाउसेन[३] का युद्ध-उपन्यास 'सिम्पलीसिस्सिमस'।[४]

'सिम्प्लीसिसिमस' के रचयिता ग्रिमेल्सहाउसेन का चरित्र स्वय एक रोचक रोमास है। वह भी साधारण जर्मन जनता की ही भाँति जमाने के तूफान का निरन्तर शिकार होता रहा। १३-१४ साल की आयु मे ही हस्सी लुटेरे उसे पकड ले गये थे।

---

१ Martin Opitz, २ Buch Von der deutschen Poeterey, ३. Grimmelshausen, ४. Simplicissimus

सैनिक के रूप में फिर वह गांव-गाँव, नगर-नगर फिरता और लोगो के भयकर अभाग्य को अपनी आँखो सालो देखता रहा। शाति स्थापित होने पर 'श्यामवन' में जाकर एक छोटे कस्बे मे रहने लगा। वहाँ उसने अपने झेले सस्मरणो को ही कहानियो के रूप में लिखना शुरू किया। १६६८ मे उसकी प्रसिद्ध कृति 'सिम्पलीसिसिमस' जो उसकी अपनी ही अनुभूतियो की परिचायक थी, प्रस्तुत हुई। स्पेन से एक प्रकार के रोमास उपन्यासो का जर्मनी में अवतरण हुआ था। 'सिम्पलीसिसिमस' उन्ही की परपरा मे लिखा उपन्यास था जिसमे चरित्रो का विकास पुण्य से पाप की ओर और पाप से पुण्य की ओर हुआ। उस क्रम मे समसामयिक समाज अपने विविध चित्रो के साथ उपन्यास मे उतर पडा। ३० वर्षीय युद्ध के भयकर रक्तपात, बरबादी और अमानुषिकता का जितना सच्चा और विस्तृत विवरण ग्रिमेल्स हाउसेन की इस कृति में मिलता है, उतना किसी अन्य रचना में नही। समाज की अयथार्थ, अनुचित वर्ग-सम्मत व्यवस्था से भाग किसी दूर के द्वीप में अपने मनचीते वर्गहीन और पुण्य-प्राण समाज की प्रतिष्ठा उस काल अपनी काल्पनिक चेतना में प्राय 'युटोपिया' के रूप मे उपन्यासो मे कलेवर धारण कर चली थी। ग्रिमेल्सहाउसेन की प्रेरणा उससे भिन्न न थी, यद्यपि उसका विशेष रूप प्राय आधी सदी बाद जर्मन साहित्य में प्रकट हुआ। डिफो[१] के 'रोबिन्सन क्रूसो' के आधार पर जर्मन में 'रोबिन्सोनोडेन' नामधारी अनेक तदनुकूल रचनाये हुई जिन्हे जनता ने अपने चतुर्दिक घटने वाली असह्य परिस्थितियो से पलायन की चेष्टा मे, अत्यन्त उत्साह से स्वीकार किया। वेस्टफालिया की सन्धि ने जर्मनी को खड-खड कर दिया और स्वय पवित्र रोमन साम्राज्य की सत्ता प्राय नही के बराबर थी। उधर फ्रास में चौदहवें लुई का सूर्य प्रखर तेज से तप रहा था। जर्मनो के लिए स्वभावत ही फ्रेंच आचार, वेषभूषा और साहित्य मॉडल बन गये, उसी मात्रा में जिस मात्रा में यूरोप के छोटे-बडे राज्यो मे अनुकूल दरबारो की अभिसृष्टि हो चली थी। वर्साई सब प्रकार से यूरोप का आलोक-केन्द्र बन गया था और यह सम्भव न था कि जर्मनी पर उसका प्रकाश न पडे। जर्मन शिष्ट समुदाय पर तो फ्रेंच साहित्य ने ही नही, भाषा तक ने अपना जादू फेंका। जर्मन शासक, प्रशा का फ्रेडरिक महान् तक, फ्रेंच बोलते थे। १८वी सदी में जो लाइजिग जर्मन साहित्य का सबसे बडा केन्द्र बना, वह तब छोटा-बडा पेरिस ही था, और वह अपनी उस निष्ठा पर कुछ कम अभिमान भी न करता था।

---

१ Defoe

: ४ :

अठारहवीं सदी

१८वी सदी का आरम्भ जर्मन साहित्य में गॉटशेड के आविर्भाव से होता है। जोहान क्रिस्टोफ गॉटशेड[१] सदी के प्रारम्भिक वर्ष १७०० में ही पैदा हुआ था और एक जमाने तक वह लाइजिग मे साहित्य के क्षेत्र में सर्वसत्ता का अग्रणी बना रहा। उसने फ्रेंच लेखको के अनुकरण करने की अपने साहित्यिको को सम्मति दी। उसका कहना था कि उसके साहित्य मे न तो मोलिए[२] के-से कॉमेडीकार हैं और न कारनेल[३] अथवा रसीन[४] के-से ट्रेजेडीकार। फिर वह व्वालो[५] का भी अनुयायी था और जर्मन साहित्य क्षेत्र में फ्रेंच क्लासिक धारा का उसी की भाँति प्रवाह पसद करता था। व्वालो के अनुकरण को ही उसने अपने समकालीनो में प्रवृति भरी। गॉटशेड ने साहित्य-साधना में मर्यादा को बहुत महत्त्व दिया और रचना के प्रयोगो में कुछ नियमो को नितान्त अनुल्लघनीय माना। साथ ही उसने जर्मन रगमच और नाट्यलेखन में भी अनेक आवश्यक परिवर्तन किये। पहले ट्रैजेडी-नाटको में भी बीच-बीच में प्रहसन और भणैती के प्रसग गुँथे रहते थे, उनको उसने सर्वथा गम्भीर ट्रैजेडी नाटको से अलग कर दिया। उसने काव्य की कला में तर्कपूर्ण बौद्धिकता का उपयोग आवश्यक समझा और इस दिशा में लाइबनित्स[६] तथा क्रिश्चियन वुल्फ[७] के सिद्धातो को अपना आदर्श बनाया। ओपित्स[८] के बाद जर्मन साहित्य पर किसी ने इतना गहरा प्रभाव न डाला। था जितना गॉटशेड ने डाला। उसके समालोचनात्मक सिद्धातो ने जर्मन साहित्यिक कृतियो का स्तर तो निश्चय ही पर्याप्त ऊँचा उठा दिया, परन्तु अपने स्वाभाविक दोष से भी वे उस साहित्य को मुक्त न रख सके। इस प्रकार के सिद्धातो का साहित्य में उपयोग एक प्रकार की यान्त्रिक चेतना अथवा टेकनीक उत्पन्न करता है जो प्रतिभा को ग्रस लेती है। जर्मनी में भी उसका परिणाम वही हुआ और सदी के मध्य तक पहुँचते-पहुँचते साहित्य के आलोचना क्षेत्र में गॉटशेड के सिद्धातो के विरुद्ध देशव्यापी विद्रोह शुरु हो गया। प्रधान विद्रोही क्लापस्टॉक[९] था।

फ्रीड्रिख गॉटलिब क्लापस्टॉक[९] ने गॉटशेड के काव्य-सिद्धातो की आवश्यकता न समझी और अपना एपिक 'मेसिया'[१०] (मसीहा) उन सिद्धातो की अवहेलना करते हुए रचा। अपन आवेगो और भावनाओ के अविरल प्रवाह तथा शालीन 'ओडों'

---

१ Johann Christoph Gottsched (१७००-६६), २ Moliere, ३ Corneille, ४ Racine, ५ Boileau, ६ Leibnitz, ७ Christian Wolff, ८ Opitz, ९ Friedrich Gottlieb Klopstock; (१७२४-१८०३), १०. 'Messias' (Messiah)

की निरर्गल कल्पनाओ से उसने अपने पाठको को चकित कर दिया। जन-साधारण उसके उन्मादक काव्य-रस से उन्मत्त हो उठा। आज भी उसकी कृति बडे सम्मान और स्नेह से जर्मनी मे पढी जाती है। परन्तु गॉटशेड के सिद्धातो का सबसे प्रबल प्रतिवादी लेसिंग हुआ।

गॉटहोल्ड एफ्रैम लेसिंग[१] ने जर्मन साहित्यिक रगमच पर उतरते ही देखा कि वह फ्रेंच सस्कारो से सर्वथा बोझिल हो गया है और उसे उनसे मुक्त करना आवश्यक ही नही, उसका पहला काम होगा। उसने तत्काल शेक्सपियर और ग्रीको की ओर सकेत कर जर्मन नाट्यकारो को फ्रेंच प्रेरणा से मुक्त हो उनको अपना आदर्श बनाने के लिए उत्साहित किया। अपने 'हाम्बुर्गिशे ड्रामाटुर्गी'[२] मे उसने जर्मन साहित्य के आलोचन-सिद्धात के वास्तविक पाये खडे किये। १७६७ और '६९ के बीच उसने अपना ग्रथ रचा था। उससे भी पहले १७६६ में ही उसने 'लाओकून' में उन सिद्धान्तो का विवेचन किया था, जो गेटे[३] और शिलर[४] के जर्मनी के साहित्यिक सिद्धातो का मूल आधार बने। जार्ज लिलो[५] के 'दि लडन मर्चेण्ट' के आधार पर उसने 'मिस सारा सैम्पसन' नाम की पहली जर्मन घरेलू ट्रैजेडी लिखी (१७५५)। बारह वर्ष बाद १८वी सदी की सबसे महान् कॉमेडी 'मिना फॉन बार्नहेल्म' (१७६७) प्रस्तुत हुई। १७७२ में लेसिंग ने अपनी प्रसिद्ध सामाजिक ट्रैजेडी 'एमीलिया गालोटी' और १७७९ में पहला आध्यात्मिक ड्रामा 'नाथान डेर वाइज' लिखा। यह ड्रामा धार्मिक सहिष्णुता और विश्वबन्धुत्व के समर्थन में लिखा गया था। यह एक प्रकार का रूपक है, जिसे सुल्तान सालादीन को यहूदी नाथान सुनाता है—किसी आदमी के पास एक अमूल्य अँगूठी थी। अँगूठी जादू की थी जिसे पहनने वाला भगवान् और मनुष्य दोनो का प्रिय बन जाता था। मरने के समय अँगूठी का स्वामी अपने सबसे प्यारे बेटे को जब वह अँगूठी देता तब बेटा परिवार का प्रधान बन जाता। पीढी दर पीढी इसी तरह फिरती हुई अँगूठी एक बार ऐसे पिता के पास पहुँची जिसके तीन बेटे थे और तीनो जिसे अत्यन्त तथा समान रूप से प्यारे थे। एक दिन उसने सुनार को बुला कर उसी की भाँति की दो अँगूठियाँ और बनवा ली और प्रत्येक पुत्र को एक-एक अँगूठी दे दी। पिता के मरने पर परिवार की प्रधानता के लिए बेटो में लडाई हुई और मामला न्यायालय में पहुँचा। जज ने मामले की बात अलग कर उनको सलाह देते हुए कहा कि तुममें से प्रत्येक अपने को अँगूठी का स्वामी माने और उसकी परपरा के अनुकूल आचरण करता हुआ भगवान् और मनुष्य का प्रिय पात्र बनने का प्रयत्न करे। फिर

---

१ Gotthold Ephraim Lessing' , २ 'Hamburgische Dramaturgie,
३ Goethe, ४. Schiller, ५ George Lillo

लाख वर्ष बाद एक महान् जज पृथ्वी पर अवतार लेगा, जो अँगूठी के स्वामित्व का निर्णय करेगा। भावार्थ यह है कि धर्म अँगूठियो की ही भाँति विविध है और प्रत्येक मनुष्य को अपने धर्म के अनुकूल सुन्दर आचरण करना चाहिए। लेसिंग का यह दृष्टिकोण उस काल का महान् उदारवादी दृष्टिकोण था और जर्मन सास्कृतिक आन्दोलनो पर उसका प्रभाव पडे बिना न रहा। जिन उदारवादी यूरोपीय चेतनाओ ने मध्यकालीन रूढियो का अन्त किया, उन्ही में लेसिंग का यह जर्मन दृष्टिकोण भी था। आधुनिक युग की प्रवर्त्तक प्रवृत्तियो मे वह भी एक है।

: ५ :

आधुनिक युग

१८वी सदी के ही तीसरे चरण से जर्मन-साहित्य में आधुनिक युग का आरम्भ होता है। चारो ओर जो तर्क की प्रतिष्ठा हो गई थी, उसने साहित्य की सुकुमार प्रेरणाओ पर गहरा आघात किया। भावुकता, कल्पना, मानव व्यक्तित्व सबके ऊपर उसने साहित्य की दृष्टि से घातक प्रभाव डाला था। अब उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया ने एक नया रूप धारण किया, तर्क रहित भावुकता का। इस तर्क-विरोधी प्रतिक्रिया का विद्रोह १८वी सदी के सातवे-आठवें दशको में विशेषत दृष्टिगोचर हुआ। एक प्रबल साहित्यिक आन्दोलन ही तब चल पडा, जो 'स्तूर्म उण्ड ड्राग'[१] (तूफान और आग्रह) कहलाया। उस आन्दोलन का प्रधान प्रेरक जोहान गॉटफ्रीड हर्डर[२] था। तरुण गेटे और तरुणतर शिलर उसके मुख्य स्तम्भ बने।

हर्डर ने बुद्धिवादी यात्रिक दृष्टिकोण पर प्रबल आघात किया। उसका कहना था कि विश्व सर्वदा विकसित होता रहा है और उसके विकास के साथ ही उसमें सहार की भी आग छिपी रही है। बुद्धिवादी विश्व को स्थिर मान कर उसे एक बौद्धिक चेतना तथा व्यवस्था के अधीन मानते है जो गलत है। निरन्तर परिवर्तनशील विश्व की इस प्रेरणा से सचेत हर्डर जर्मनी का रूसो[३] बन गया और डार्विन के विकासवादी सिद्धात तथा रोमाण्टिक दृष्टिकोण दोनो का वह अग्रदूत बना। उसने राष्ट्रो के अपने-अपने लोक-गीतो के खरे सौंदर्य की ओर साहित्यिको का ध्यान आकृष्ट किया। साथ ही उसने विदेशी साहित्य के अनेक रत्नो का जर्मन में अनुवाद और व्याख्या भी की। उसका प्रभाव जर्मनी के साहित्य पर अत्यन्त दूरगामी सिद्ध हुआ। जर्मन साहित्य की अप्रतिम प्रतिभा गेटे स्वय उसका असाधारण ऋणी था।

जर्मनी के साहित्याकाश में सबसे देदीप्यमान नक्षत्र गेटे[४] है—जोहान वोल्गेंग

---

१ 'Sturm Und Drang, २ Johann Gottfried Herder, ३. Rousseau; ४ Goethe

गेटे[१]। १७४९ मे उसका जन्म हुआ। १८३२ में वह मरा। कानून के विद्यार्थी के रूप में लाइजिग में वह हर्डर से मिला। हर्डर था तो उससे केवल पाँच वर्ष बडा परन्तु उसकी मेधा जर्मनी के आकाश पर घनी छा गई थी और साहित्य के क्षेत्र में वह एकाधिराट् माना जाने लगा था। हर्डर के सपर्क मे आकर गेटे ने 'तूफान और आग्रह' के साहित्यिक नारे सीखे और उसी आन्दोलन की दिशा में डग भरे। सारे परपरागत साहित्यिक बन्धनो को तोड उसने अपने आन्तरिक भावुक वेदनाजन्य काव्य-स्रोत को खोल दिया। कविता की अविरल मधुर धारा वह चली, जैसी जर्मन जनता ने कभी न सुनी थी। एक ओर तो उसने लोक-गीतो की परपरा में, परन्तु एकाकी भावोद्गम से ऋद्ध, अपना प्रसिद्ध लिरिक 'हाइडेन रोस्लाइन' लिखा जो आज भी प्राय प्रत्येक जर्मन की जबान पर है, और दूसरी ओर 'प्रोमेथियस' द्वारा अपने उद्गार को वाणी दी। इनमें पहला १७७१ में प्रकाशित हुआ, दूसरा तीन वर्ष बाद, १७७४ में। 'प्रोमेथियस' वैयक्तिक चेतना का, ग्रीक प्रोमेथियस की ही भाँति, प्रतीक था और उसी की भाँति गेटे भी, अपने विचारो अथवा व्यक्तित्व के प्रसार में किसी का अनुशासन नही मानता था। शृखला की कडियाँ उसने साहित्य की दिशा में तोड दी जैसे प्रोमेथियस ने अपने ऊपर कोई सीमा स्वीकृत न की थी, गेटे ने भी किसी प्रकार का बन्धन स्वीकार न किया। होमर[२], शेक्सपियर[३], ओसियन[४] अब उसके आदर्श बने। वस्तुत यह आदर्श-सम्पदा हर्डर की ही देन थी। होमर और ओसियन का प्रभाव १७७४ के उसके उपन्यास 'तरुण वर्दर के विषाद' (डी लाइडेन डेस जुंगैन वर्दर्स) पर पडा और शेक्सपियर का उसके प्रारम्भिक ड्रामा 'गोन्स फॉन बर्लिखिगेन' (१७७३) पर। उपन्यास के माध्यम से उसने अपनी वैयक्तिक विच्छृखलता प्रकट की। नायक वर्दर अपनी एकान्त भावुकता के कारण अपने को यथार्थ की दुनिया में घुला-मिला नही पाता। जीवन को वह यथार्थ रूप में देख ही नही पाता। उसमें सतोष की सर्वथा कमी है। ससार को या तो वह नितान्त भय से भरा हुआ देखता है अथवा स्वर्ग का पृथ्वी पर अवतरण के रूप में। उसे मध्यम मार्ग अथवा व्यावहारिक जगत् से उदासीनता है। उसे निरकुश स्वतत्रता और उन्माद चाहिए। ऋतुओ के साथ उसके मन को भावनायें बदलती रहती है। वसन्त में उसके आनन्दाश्रु निकल पडते हैं और होमर की मधुर्सिचित पक्तियाँ वह गुनगुना उठता है। बच्चो के साथ तब वह खेलता है, साधारण जनो से मैत्री करता है। फिर नृत्य के समय जब वह लोट्टी से मिलता है, तब उसकी भावधारा का बाँध टूट जाता है। और वह उसके प्रति सर्वथा विजित हो जाता है। वह कुमारी दूसरे की वाग्दत्ता हो चुकी है

१ Johann Wolegang Goethe; २ Homer, ३ Shakespeare; ४ Ossian

परन्तु उपन्यास का तरुण नायक उसकी परवाह न कर निरन्तर उससे मिलता रहता है। फिर उसके प्रणयी अल्बर्ट से मिलने पर धीरे-धीरे जब यथार्थ की भयावह स्थिति उसके सामने स्पष्ट हो उठती है, वह सर्वथा उद्विग्न हो उठता है और भाग चलता है। फिर विविध स्थितियो मे मानसिक सघर्ष के बाद लोट्टी की ओर लौट पडता है। पर अल्बर्ट और लोट्टी का तब तक विवाह हो चुका होता है। अल्बर्ट व्यावहारिक जगत् की यथार्थता से अभिज्ञ है और वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियो को समझता है। है भी वह व्यवहार चतुर, शात और यथार्थवादी। लोट्टी उसमें वर्दर की आत्मा की ऊँचाई तो नही पाती, परन्तु उसके प्रति सच्ची बनी रहती है। वर्दर की मन स्थिति ऋतुओ के परिवर्तन के अनुकूल बदल चलती है। पतझड के बाद जाडा आता है और होमर उसका चित्त हल्का नही कर पाता, हाँ, ओसियन निश्चय उसके घाव पर कुछ मरहम करता है। दिल निरन्तर बैठता जाता है और एक दिन कुछ ऐसा लगता है कि उसके मर्ज़ की एकमात्र दवा आत्महत्या है। आत्महत्या वह कर भी लेता है। गेटे का यह उपन्यास स्वय उसके एक असफल प्रणय का परिणाम था। साहित्य के क्षेत्र में उसकी यह कृति अनोखी थी और उसने अनेक हृदयो को अभितृप्ति प्रदान की। उसके अनेक अनुवाद और अनुकरण विविध साहित्यो में शीघ्र प्रकाशित हुए। तूफान और आग्रह के आन्दोलन को एक और अस्त्र मिला, उसकी प्रगति में एक और मजिल तय हुई। इस कृति ने गेटे को उसकी प्रौढ़ साहित्यिकता के राजमार्ग पर ला खडा किया।

१७७५ में वह तरुण ड्यूक कार्ले ऑगस्ट[1] का वाइमर में मेहमान बना। प्राय आधी सदी बाद वह अपने व्यक्तित्व से वहाँ की राजनीतिक, साहित्यिक और सास्कृतिक चेतना की प्रतिमा बना रहा। कुछ काल बाद इटली का भ्रमण कर उसने प्राचीन क्लासिकल कला के प्रतिमानो से साक्षात्कार किया और १७८७ में अपने काव्यपरक नाटक 'टारिस में इफीजेनी' और 'एग्माट' लिखे। एक साल बाद उसका 'तारक्वातो तास्सो' प्रकाशित हुआ। इटली से लौटने के दो वर्ष बाद उसने अपने उस विश्वविश्रुत नाटक 'फॉस्ट'[2] को पूरा किया जिसका आरम्भ वह युवावस्था मे ही कर चुका था। ऐतिहासिक फास्ट १६वी सदी का भाण और रासायनिक था। उसके समसामयिक उसे नट और शैतान को इष्ट किया हुआ जादूगर मानते थे। कुछ काल बाद उसके सम्बन्ध में अनेक जादूभरी कहानियाँ प्रचलित हो गई। १५८९ में उन्ही कहानियो के ऊपर क्रिस्टोफर मार्लो[3] ने अग्रेजी में अपना प्रसिद्ध नाटक 'डाक्टर फॉस्टस' लिखा। यह नाटक जर्मनी में भी अनेक बार खेला गया। गेटे पर उसका प्रभाव पडे बिना न रहा और उसने फॉस्ट को अपने ही असतोष के प्रतीक के रूप में देखा। फॉस्ट ज्ञान और

---

१ Duke Karl August, २. Faust, ३. Christopher Marlowe

अनुभव के अतृप्त पिपासु के रूप मे दानव का व्यक्तित्व लिये उसके मानसचक्षु के सम्मुख उतरा। पहले उसने उसे उस प्रोमेथियस के रूप मे सिरजा जो व्यवस्था और विधान का विरोधी था, अपराध और पाप करने मे हिचकता न था। नितान्त सघर्ष का भी वह शिकार था, फिर भी वह गेटे की दृष्टि मे मोक्ष का अधिकारी था। १७९० में गेटे ने 'फॉस्ट' के केवल कुछ दृश्य प्रकाशित किये। उसके बाद कुछ काल वह उस कृति के प्रति निश्चेष्ट रहा, फिर १७९७ मे उसने 'फॉस्ट' को पूरा करना शुरू किया। अब तक जीवन में काफी परिवर्तन हो जाने के कारण नायक के प्रति उसके दृष्टिकोण में भी सापेक्ष्य परिवर्तन हो चुका था। अब उसका फॉस्ट ज्ञान से निराश होकर पाप को गले लगाने वाला फॉस्ट न था, वरन् श्रद्धालु फॉस्ट था, जो अपने साधारण काम से सतोष करता हुआ जन-साधारण का हितू हो गया था। इस फॉस्ट' के आध्यात्मिक दृष्टिकोण का जर्मन जनता पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि वह अपने को फॉस्ट की जनता मानने लगी। 'फॉस्ट' पर, गेटे ने स्वयं स्वीकार किया है, कालिदास की 'शकुन्तला' का गहरा प्रभाव पडा था। कुछ ही साल पहले सर विलियम जोन्स ने 'शकुन्तला' का एक अग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था, जिसने यूरोप के साहित्यिको में उथल-पुथल मचा दी थी। गेटे की जागरूकता उस अद्भुत भारतीय कृति के प्रभाव से वचित न रह सकी।

गेटे का प्रसिद्ध उपन्यास 'विलहेम मेइस्तर' १७९७ और १८२९ के बीच लिखा गया, जिसमे उसने एक भावुक रसज्ञ को यथार्थवादी, व्यावहारिक, सक्रिय व्यक्तित्व में बदला। उपन्यास के क्षेत्र में 'विलहेम मेइस्तर' का वही स्थान है जो ड्रामा के क्षेत्र में 'फॉस्ट' का। १८३२ के पहले के ५० वर्ष गेटे के नेतृत्व, प्रेरणाओ, कृतियो से इतने प्रभावित रहे कि उन्हे उचित ही गेटे का काल कहा जाता है। परन्तु निश्चय ही जर्मनी मे उसकी यह सत्ता केवल उस देश की सीमाओ तक ही परिमित न रह सकी और शीघ्र ही उसने विश्व के समर्थ कृतिकारो दाते और शेक्सपियर की पक्ति मे स्थान पाया।

कार्ल ऑगस्ट का वह नगर वाइमर तब के जर्मनी का एथेन्स था। कला और सस्कृति अपने प्रतीको के साथ वही उदय और विकसित होती रही। हर्डर, गेटे, शिलर ने वही अपने साहित्यिक प्रयोग किये; वही उनकी कृतियो ने प्रौढता पायी। क्रिस्टोफ मार्टिन व्हीलैण्ड[1] उस काल का बडा प्रतिभाशील साहित्यिक था। वह ड्यूक का शिक्षक भी रह चुका था और स्वय हर्डर पर उसकी मेधा का प्रभाव पडा था। उसकी सुनहरी धूप में स्वय गेटे का साहित्य भी सिका था। वह स्वय उच्च कोटि का उपन्यासकार

---

१. Christoph Martin Wieland

और कवि था। उसका उपन्यास 'आगाथान' १७६७ और रोमाटिक कविता 'ओवेरान' (१७८०) जानी हुई कृतियाँ है।

वाइमर के उसी नगर में, प्रगतिशील और तरुण उसी ड्यूक कार्ल ऑगस्ट की सरक्षा में, हर्डर और गेटे की प्रेरणा की छाया में जर्मनी की एक और असाधारण मेधा, जिसने ससार के साहित्य पर अपना प्रभाव डाला, धीरे-धीरे उभरती आ रही थी। वह मेधा शिलर की थी। हर्डर और गेटे की ही भाँति फ्रीड्रिख शिलर[1] 'तूफान और आग्रह' की मान्यताओ का कायल था। गेटे का 'तूफान और आग्रह' अब कुछ नरम पडने लगा था, जब क्षितिज पर उस दिशा मे नये तेज के साथ शिलर रूपी नक्षत्र का उदय हुआ। अनेको ने उस दिशा मे साभिमान दृष्टि-विक्षेप किया। स्वय गेटे ने बरबस उधर अपनी दृष्टि डाली। परन्तु शीघ्र ही उस नक्षत्र का प्रताप प्रखर किरणो से फूट पडा और अब वह आंखो के लिए असह्य हो चला।

१७८० में शिलर ने अपना पहला प्रसिद्ध ड्रामा 'डी राउबर' (डाकू) लिखा। कृति पर रूसो का प्रभाव स्पष्ट था, विशेषत उसकी सभ्यता के ऊपर चोट में शिलर भी रूसो की ही भाँति प्रकृतिवादिता का कायल था। उसकी इस रचना का नायक कार्लमूर अपने आचारभ्रष्ट समाज को चुनौती देकर बोहेमिया के जगलो में चला जाता है और वहाँ डाकुओ का सरदार बन निरकुश जमीदारो और समृद्ध घृणित पादरियो-मठाधीशो का भय बन जाता है। धीरे-धीरे उसे लगता है कि आखिर पाप का प्रतिशोध पाप द्वारा नही होना चाहिए और वह आत्मबलिदान के लिए प्रस्तुत हो जाता है। १७८३ में शिलर का दूसरा नाटक 'फिएस्को' प्रकाशित हुआ जो ट्रैजेडी था। वह भी 'डी राउबर' की ही भाँति अत्याचार के विरुद्ध सघर्ष का परिचायक था। 'कावाले उण्ड लीवे' (षड्यन्त्र और प्रणय) (१७८४) में उसने वैयक्तिक स्वाधीनता का नारा बुलन्द किया। इसमें उसने उस बुर्जुआ परपरा का निर्वाह किया था, जिसकी चेतना १८वी सदी में लिलो[2] ने इग्लैण्ड में, दिदरो[3] ने फ्रास में और लेसिग[4] ने स्वयं जर्मनी में स्थापित की थी। हाँ, उस दिशा मे यह ट्रैजेडी और आगे बढ जाती है। उनमें अभिजात और मध्य वर्ग के बीच की गहरी खाई स्पष्ट की गई है। प्रेसिडेण्ट जालसाजी, झूठ आदि से अपना पद प्राप्त करता है और धोखे तथा षड्यन्त्र से अपनी सत्ता कायम रखता है। वह शासक वर्ग का प्रतिनिधि है। गायक शिलर की वाग्धारा में 'पॉलिश' नही परन्तु उसकी ईमानदारी कभी शकित नही होती। वह जनता का प्रतिनिधि है जो शासित होती है। दोनो की सन्तानें उस खाई को पाटना चाहती हैं, परन्तु स्वेच्छाचारिता और स्वार्थ का वातावरण उन्हे सफल नही होने देता। प्रणय

---

१. Friedrich Schiller (१७५९-१८०५); २ Lillo; ३ Diderot, ४ Lessing

और बलिदान ही उस दिशा म विजय प्राप्त कर सकते है। १७८७ तक शिलर गेटे की ही भाँति 'तूफान और आग्रह' की दिशा से हट कर शुद्ध साहित्यिक प्रौढ़ता की ओर वढ गया था। 'डान कार्ल्स' उसकी इसी प्रवृत्ति का परिचायक है, जिसमें उसकी आस्था चित्त-शक्ति मे हो आती है। यह रचना स्पेन के फिलिप द्वितीय और उसके पुत्र डॉन कार्लूस के परस्पर संघर्ष के रूप मे वस्तुत दो युगो के सघर्ष को रूपायित करती है। दो युग—राजनीतिक स्वेच्छाचारिता और धार्मिक असहिष्णुता का परिचायक एक युग, राजनैतिक उदारता और धार्मिक स्वतत्रता का दूसरा। नायक मार्क्विस पोजा, डॉन कार्ल्स का मित्र, उस आरमाडा के युग में मानवता का मित्र सिद्ध होता है। अपने मित्र के लिए जीवन को उत्सर्ग कर वह जर्मन तरुणो का आदर्श बन जाता है। जिस फ्रासीसी राज्यक्राति ने स्वाधीनता, भ्रातृभाव और समता के पायो पर श्रृखलाओ को तोड मानवशालीनता को आरूढ किया, उसके दो वर्ष ही पहले शिलर की यह अद्भुत कृति प्रकाशित हुई थी।

शिलर केवल नाट्यकार ही न था, वह इतिहासकार भी था। १७८८ में जेना यूनीवर्सिटी मे वह इतिहास का प्राध्यापक नियुक्त हुआ। गेटे तूफानी और क्रातिकारी जीवन से अलग अभिजात राजनीतिज्ञ का रूप धारण कर चुका था। पर शिलर उस तूफानी आन्दोलन का केन्द्र बना। अपनी रचनाओ और व्याख्यानो से तरुणो में वह उत्साह भर रहा था। गेटे ने स्वय अपना तारुण्य शिलर मे पुनर्जाग्रत होते देखा और उधर से मुँह फेर लिया। परन्तु शिलर की वेगवान चेतना तव उसकी प्रतिभा का सचालन कर रही थी और शीघ्र ही वह फ्रासीसी राज्यक्राति का मित्र तथा अग्रदूत घोषित हुआ। जो आन्दोलन फ्रास मे राजा की सत्ता पर आघात कर रहा था, उसका अग्ररूप तरुण शिलर के हृदय में भी उठकर उसकी रचनाओ का आकाश विस्तृत कर सहारक चोट का रूप धारण करता जा रहा था। गेटे ने उसे भली प्रकार देखा और अपने स्वामी ड्यूक के मूलाधिकारो का उसे प्रहर्त्ता समझ उसकी रक्षा के लिए सन्नद्ध हो गया। ऐसी स्थिति में यह सम्भव न था कि दोनो प्रतिभाओ में किसी प्रकार का एका हो सके। यही कारण था कि एक जमाने तक नितान्त निकट रहते हुए भी गेटे और शिलर १७९४ में एक दूसरे से घने परिचित हुए। तब तक स्वय शिलर का तरुण आग्रह नरम पड गया था और दोनो एक दूसरे की ओर खिचे यद्यपि अन्त तक उन्होंने जीवन की समस्याओ के सम्बन्ध में अपनी परस्पर विरोधी मान्यताओ को न छोडा। गेटे और शिलर का यह परस्पर मित्रभाव जर्मन-साहित्य के लिए निस्सदेह बडे काम का सिद्ध हुआ। शिलर की प्रेरणा से गेटे ने 'फॉस्ट' को पूरा किया और गेटे की प्रेरणा से तीस वर्षीय युद्ध सम्बन्धी 'वालेन्स्टाइन' नामक नाटक शिलर ने १७९९ में प्रस्तुत किया। १८०० ई में उसने 'मार्या स्टूअर्ट' लिखा और साल भर बाद

आर्क की जोन पर 'डि जुगफ्राउ फॉन आरलीन्स'। १८०३ मे 'डि ब्राऊट फॉन मेसिना' (मेसिना की वधू) लिखकर उसने ग्रीक परपरा के कोरस का विकास किया और साल भर बाद 'विलहेम टेल' नामक ड्रामा की रचना कर ऑस्ट्रिया के शासन से स्विट्ज़रलैण्ड की स्वाधीनता के सघर्ष के परिचायक साहित्य का अग्रदूत बना।

: ६ :

रोमांटिक युग

१९वी सदी में 'रोमाटिक' और'यथार्थवादी' दो परस्परविरोधी चेतनाओ का जर्मन-साहित्य में विकास हुआ। रोमाटिक चेतना भावावेगो और कल्पना के पक्ष में अधिक प्रयत्नशील थी। मानव व्यक्तित्व उस प्रेरणा मे बौद्धिक यथार्थता से मुक्त भावुकता और भाव-सपदा को अपना आधार बनाता था। कालक्रम में वह रोमान्टिक चेतना, धार्मिक रहस्यमय और उन्मादी भावनाओ का भी गढ बन गई। फिर धीरे-धीरे उस चेतना ने सर्वथा रूमानी प्रेरणा को अपना आदर्श बना डाला। यथार्थ से अपनी इन्द्रियो को खीच वह अन्तर्निविष्ट हुई। सर्वथा काल्पनिक, स्वप्निल, मायाविनी, आभासगर्भित परिस्थितियाँ विगत अतीत अथवा सुदूर भविष्य के धूमिल वातावरण निर्मित करने लगी। अलौकिक में उसकी आस्था जगी, अप्रत्याशित निर्जन एकान्त और वैयक्तिक कुण्ठा, अभिराम अनस्तित्व भी उसके आधार बने। उस प्रेरणा का एक कारण और था। जर्मनी में फ्रासीसी राज्यक्राति को रूप देने की शक्ति न थी और यथार्थ उस प्रकार के आन्दोलन के लिए चीख रहा था। जब चतुर्दिक् का बर्बर सत्य बर्दाश्त के बाहर हो उठा और निष्क्रियता सघर्ष से विमुख होकर बौद्धिक प्रतिभाओ को कुण्ठा से भरने लगी, तब कुण्ठित मेधा अलौकिक और असत्य को महाकाय कर उसका भीतर ही भीतर एक स्वप्निल ससार रचने लगी। वह कुण्ठा स्वाभाविक ही पहले दर्शन के क्षेत्र में उतरी। जोहान गोटलिब फिख्ते[1], शेलिंग[2] और विलहेम श्लेगेल[3] तथा फ्रीड्रिख श्लेगेल[4] उसके अग्रणी हुए। उस रोमाण्टिक आन्दोलन ने फ्रीड्रिख श्लाइएरमार खर[5] और कवि विलहेम वाकेन रोडर[6] लुडविक टीक[7] तथा नोवालिस[8] को आकृष्ट किया। यह उस दिशा के प्रारम्भिक रोमाण्टिक कृतिकार थे। आन्दोलन के आरम्भ होने के पहले जर्मनी में दो साहित्यिको का प्रादुर्भाव हुआ—जीन पॉल फ्रीड्रिख रीख्तर[9] और फ्रीड्रिख होल्डरलिन[10] का। इनमें पहले ने जीन पॉल के नाम मे

---

१ Johann Gottlieb Fichte, २. F W J Schelling, ३ August Wilhelm Schlegel, ४ Friedrich Schlegel, ५ Friedrich Schleiermacher, ६ Wilhelm Wackenroder, ७ Ludwig Tieck, ८ Novalis, ९ Jean Paul Friedrich Richter, १०. Friedrich Holderlin

लिखा। 'हिस्पेरस' (१७९४) और 'तीतन' (१८००) उसके प्रसिद्ध उपन्यास थे, जिनमें उसने रूसो की भावुकता और व्यग्य का अनुकरण किया। परन्तु वह सर्वथा रोमाण्टिक नही था। जनसाधारण की कष्ट-चेतना भी काफी मात्रा में उसकी कृतियो में उतरी, जिससे उसको यथार्थवादियो का भी आदर मिला, होल्डरलिन नितान्त निर्धनता में जन्मा था और वह उसकी सारी चोटो और साथ ही निराशा का भी शिकार हुआ था। चालीस वर्ष तक वह अज्ञात पागल के रूप में सभ्यता से अलग पडा रहा परन्तु उसी बीच उसने कुछ ऐसे 'ओड' लिखे, जो उनके आचार्य क्लापस्टॉक की कृतियो को भी लाँघ गये। लिरिक के क्षेत्र मे स्वय गेटे की सर्वोत्तम रचनाओ से होल्डर लिन के लिरिको ने लोहा लिया। उसने अपने 'हाइपीरियन' नामक नाटक में भावो की गहरी व्यजना की और 'इम्पेडोक्लीज' (१७९९) में प्राचीन ग्रीको को पुकारा। यह पुकार वस्तुत १८वी सदी की आवाज थी।

विलहेम श्लेगेल और फ्रीड्रिख श्लेगेल भाई-भाई थे। उन्होने रोमान्टिक आन्दोलन का मुख्य तत्त्व 'आथेनाउम' १७९८ में निकाला। उस नये आन्दोलन की प्रेरणाएँ उसी पत्र के कॉलमों में रूप धारण करने लगी। ऑगस्ट विलहेम श्लेगेल आज अपने शेक्सपियर के अनुवादो के लिए विशेष विख्यात है। उसका उपन्यास 'लुकिन्दे' (१७९९) प्रणय, कला, बौद्धिक निष्क्रियता से पूर्ण कृति है जिसमें एकाग्रता का सर्वथा अभाव है। परन्तु उसने जो उच्छृखलता, स्वतत्र प्रेम, प्रमाद आदि का गुण गाया तो अपने से साहित्यिको का वह वन्द्य हो गया। नोवालिस, फ्रीड्रिख फॉन हार्डेन-बर्ग[1] का साहित्यनाम था। नोवालिस सभ्रातकुलीय था और जर्मन रोमाटिक आन्दोलन का शुद्ध प्रतिनिधि माना जाता है। २९ वर्ष की उम्र मे ही वह मर गया। इसी बीच उसका तेरह वर्ष की एक कुमारी के साथ प्रेम हो गया पर उस कुमारी को उसने नारी के सारे आदर्शों का प्रतीक माना। लडकी भी जल्दी ही मर गई और उसके मरने पर विषाद ने जो नोवालिस को सर्वथा आक्रात कर लिया, तो उसने अन्धकार और मृत्यु की प्रशसा में अपना शालीन गद्य-काव्य 'हिम्नेन आन डी नाख्त' (रात्रि के प्रति सूक्त) रचा। भगवान् में शान्ति खोजता हुआ नोवालिस अब धार्मिक गीत रचने लगा जिसमें रूमानी रहस्य और आन्तरिक भक्ति पक्ति-पक्ति में उतरी। उन गीतो ने १९वी सदी के जर्मन धार्मिक लिरिको को बडा प्रभावित किया। उसका अपूर्ण उपन्यास 'हाइन्रिख फॉन ओफ्टरडिंगेन (१७९९-१८००) गेटे के 'विलहेम मेइस्तर' का विरोधाभास माना जाता है। वह उपन्यास रूमानी कविता की प्रशसा में लिखा गया है। उसका हीरो काल्पनिक 'मिनेसिंगर' था, जो रूमानी आदर्श के गुह्य प्रतीक नील कुसुम की खोज में निकल पड़ता

---

१. Friedrich Von Hardenberg

है। लुडविग टीक प्रारम्भिक रोमान्टिको में असाधारण था। उसकी रचना का विस्तार बडा था। उसने लिरिक, उपन्यास, ड्रामा आदि सभी लिखे और विदेशी भाषाओ से अनुवाद भी अनेक किये। उसकी विख्यात लघुकथा 'डेर ब्लोन्द एकबर्ट' (१७९७) थी जिसमें असत्य और अर्द्ध-काल्पनिक ससार की एक अद्भुत गोधूलि सिरजी गई। उसमें भय, अन्धकार, रहस्य, जादू, नीरवता, स्वप्न और अनोखी ध्वनियो का वातावरण प्रतुस्त हैं। रोमान्टिक व्यग्य का एक असामान्य उदाहरण उसकी कॉमेडी 'डेर गेस्टिफेल्टे काटर' (१७९७) है।

रूमानी व्यग्य और उच्छृखलता अपने अशेष रूप में हाफमान की कृतियो में फूटी। अर्नस्ट थिओडोर अमाडियस हॉफमान[1] गायक, गीतकार, कलाकार और इन सबसे वढकर कहानीकार था। उसकी कहानियो की एडगर एलन पो[2] की कहानियो से अक्सर तुलना की जाती है। हॉफमान का उपन्यास 'डी एलेग्जीर डेस तुफेल्स' (१८१५-१६) में भयानक आकृतियो, छायाओ, भीषण स्वप्नो और समान शक्लवाले व्यक्तियो की भरमार है। उसकी दूसरी कहानी 'सुनहरा वर्तन' (डरे गोल्डने तोफ—१८१३) पहले उपन्यास से कम भीषण है। हॉफमान का रोमान्टिक कवियो ने काफी अनुकरण किया है। मानव-योनियो का जो उसने अपनी कृतियो में विकास किया उनका अनेक कवियो ने अपनी रचनाओ में काफी उपयोग किया। अनेक अप्सराओ, भूत-प्रेतो, आदि के जो नाम उसने रखे वे अपूर्व थे। उससे नाटकीय वैलेड में हॉफमान के अपार्थिव चरित्रो का विकास हुआ। स्वय हाइन्रिरिख हाइने[3] को अपने लिरिको में उससे प्रेरणा मिली। हाइने का वह लिरिक जिसमें उसने लोरेली नामक हॉफमान द्वारा प्रयुक्त यक्षिणी को अमर किया वह आज लाखो जर्मनो की जवान पर है। जेकव ग्रिम[4] और विलहेम ग्रिम[5] दोनो भाइयो की कहानियो में वह अलौकिक और अपार्थिव जगत् विशेष विकसित हुआ। १८१२ का उनका कहानी-सग्रह 'किन्डर-उन्ड हाउस-मार्खेन' (घरेलू कहानियाँ) शीघ्र ही जर्मन बच्चो का उपास्य बन गया।

इस प्रकार की रूमानी रचनाओ के लिए लोक-गीत और कहानियाँ स्वाभाविक ही शुद्ध आकर सिद्ध हुई। जर्मनी के लोक-गीतो का सुन्दरतम सग्रह तरुण रोमान्टिक आखिम फॉन आर्निम[6] और क्लेमेन्स ब्रेन्टानो[7] ने दिया। सग्रह का नाम था 'वालको का जादू-विगुल'। कहानियाँ छन्दोवद्ध थी और एक अद्भुत सम्मोहक जादूभरे ससार का निर्माण करती थीं। उस दिशा के लिरिककारो में प्रधान जोजेफ फॉन आइखेनडोर्फ[8] और लुडविग

१ Ernst Theodor Amadeus Hoffmann; २. Edgar Allan Poe, ३. Heinrich Heine, ४. Jakob Grimm, ५ Wilhelm Grimm, ६ Achim Von Arnim, ७ Klemens Brentano; ८ Josef Von Eichendorff

ओहलाड[1] थे। पहले ने जर्मन वन-प्रान्तर, ग्राम, नदियो आदि के सम्बन्ध के लिरिक लिखे, दूसरे ने ऐतिहासिक बैलेड। इस प्राचीन की पुनरावृत्ति ने जर्मन-चेतना को भी कुछ कम उद्‌बुद्ध किया। अर्नस्ट मोरिट्‌स आर्न्ट[2] तथा थियोडोर कोरनेर[3] ने अपनी कविताओ द्वारा नेपोलियन-विरोधी जर्मन सघर्ष को प्रचुर शक्ति दी। परन्तु धीरे-धीरे अतीत की पूजा रोमान्टिक कवियो की चेतना का आधार बन गई जो उनकी प्रतिगामिता का कारण बनी। शीघ्र ही नेपोलियन के पतन के बाद गृह-सघर्ष से जब एक दिशा में निष्क्रियता और पलायन का विकास हुआ तब नितान्त निराशावादी धारा साहित्य मे फूट पडी। उस निराशावादी वातावरण की सज्ञा 'वेल्शमेर्त्स' पडी। ग्राफ फॉन प्लातेन[4], निकोलॉस लेनो[5] और अदाल्बर्ट फान चामिस्सो[6] उसी रोमान्टिक प्रवृत्ति के लिरिककार थे। हाँ, उन्होने एक उदारवादी दृष्टिकोण का जो अपने सम्भ्रान्त वर्ग के विरुद्ध विकास किया तो मेटरनिक विरोधी सघर्ष को उससे पर्याप्त बल भी मिला। शीघ्र ही मध्यवर्गीय क्रान्तिकारियो ने उस सघर्ष की बागडोर अपने हाथ में ले ली और साहित्य को समाज तथा राजनीति सम्बन्धी विचारो का प्रकाशन-आधार बनाया। यह एक नये जर्मनी का आरम्भ था। जो जितना मेटरनिक का विरोधी था उतना ही अपने विकास के अन्त मे रोमान्टिक परपरा का भी विरोधी था। यथार्थवाद उसका आधार बना, भविष्य और वर्तमान को बदल देने की आशा उसकी प्रेरणा बनी और कालान्तर मे मार्क्स उसका पथप्रदर्शक हुआ। जर्मनी के क्षुद्र वातावरण मे मार्क्स के आने के पहले ही वहाँ 'तरुण जर्मन' आन्दोलन आरम्भ हो गया था। १८३० को दूसरी फ्रासीसी राज्य-क्राति से प्रेरणा पाकर जर्मनी के लेखको के एक दल ने मध्य यूरोप को जनतन्त्र बनाने का बीडा उठाया। उस दल का नाम 'तरुण जर्मन' पडा। अभी वह अपने आदर्श की ओर बढ ही रहा था कि जर्मन फैडरल डीट (पार्लमेन्ट) ने उस दल के सदस्यो की भूत, वर्तमान और भविष्य की सारी रचनाओ को जब्त कर लिया (१८३५)। मेटरनिक का शासन चल रहा था। ऐलान कर दिया गया कि लेखको का वह दल समाज और धर्म विरोधी साहित्य प्रस्तुत कर रहा है। हाइनृख हाइने[7], कार्ल गुत्सको[8], हाइनृख लाउबे[9], लुडोल्फ विन्वार्ज[10] और थ्योडोर मुन्ट[11] की सारी रचनाएँ जब्त कर पुलिस ने उनका प्रकाशन और प्रचार बन्द कर दिया। जनतान्त्रिक शासन, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक समता, नारी के अधिकारो आदि उदारवादी उसूलो के लिए साहित्य के माध्यम से लडने वाले इन साहित्य-सेवियो की

---

१. Ludwig Uhland; २. Ernst Moritz Arndt; ३ Theodor Korner, ४ Graf Von Platen; ५. Nikolaus Lenau; ६ Adalbert Von Chamisso, ७. Heinrich Heine; ८ Carl Gutzkow; ९ Heinrich Laube; १०. Ludolf Wienbarg; ११ Theodor Mundt.

मे उसने स्वर्ग को पृथ्वी पर उतारने का स्वप्न देखा। उसका वह गीत एक प्रकार का 'युटोपिया' था, जिसमें अनुकूल भावी समाज का रेखाचित्र था। १८४८ की क्रान्ति से उसके विचारो को बडा धक्का लगा। उसने समाजवादी क्रान्तियो विश्वप्रभुता, के लिए जर्मन प्रयास और देश-देश में साम्यवादी प्रयोगो की भविष्यवाणी की, जिससे वह परस्पर विरोधी आलोचको का आलोच्य बन गया। स्वय वह अपने को मानवता के पक्ष मे सघर्ष करने वाला सैनिक मानता था।

राजनीतिक कविताएँ

हाइने ने कवियो की उस शृखला का आरम्भ किया, जिसके कवि केवल अपनी गय भावुकता के लिए ही नही विशेषत अपने राजनीतिक दृष्टिकोण और सघर्षात्मक साहित्य के लिए विख्यात हुए। कवि की वाणी अब राजस्थान के चारणो की भांति सघर्षशील समाज की शक्ति-सम्पदा बनी। पैंफ्लेटो अथवा एकाकी पत्रो पर कविताओ के माध्यम से कवि नए युग के सन्देश भेजता और जनता उसे शीघ्र ही पी जाती। उस काल के कवियो में प्रधान जार्ज हर्वे[1], फर्डिनेन्ड फ्रालीग्राथ[2] (वाल्ट ह्विटमान का पहला जर्मनी अनुवादक) और होफमान फॉन फालेर्स्लेबेन[3] थे। होफमान की कविता 'ड्वायत्स्लैंड, ड्वायत्स्लैंड ऊबेर अलेस' तब के जर्मनी में देशद्रोही समझी गई पर एक ही पीढी बाद राष्ट्रीय गान बन गई। ग्राव और बुखनेर[4] ने उसी परपरा का नाटक द्वारा विकास किया। क्रिश्चियन दीत्रिख ग्रावे[5] ने अपनी ट्रैजेडी नेपोलियन, (१८३१) द्वारा सर्वहारा जनता की शक्ति का निदर्शन किया। वह नाटक नेपोलियन के एल्बा से लौटने के बाद के सौ दिनो का चित्र, जिसमें निम्नतम स्तर की जनता का स्रोत बार-बार फूट पडता है, खीचा है। उसका कथानक सर्वथा समसामयिक है। बुखनेर ने अपने 'दातोज तोद' (दातो की मृत्यु, १८३५) में पहली राज्यक्रान्ति की एक घटना को अपना कथानक बनाया जिसमें जनता की शीघ्र परिवर्तनशील प्रवृत्ति व्यक्त हुई है। दोनो के दृष्टिकोण में अन्तर है। जहाँ ग्रावे निम्नवर्गीय जनता पर निम्न व्यग्य करते नही चूकता, बुखनेर उसके प्रति सहृदय है।

हेनुरख फॉन क्लाइस्त[6] क्लाकिसल परपरा का एकान्त विरोधी था। उसने गेटे की स्पर्धा में अपनी ट्रैजेडी 'रॉबर्ट गिस्कार्ड' लिखी, परन्तु अफसल होने के कारण ही उसने अपनी यह रचना जला डाली। उसका प्रारम्भिक अश ही केवल बच रहा। उससे पता चलता है कि क्लाइस्त ने ग्रीक और शेक्सपियर दोनो की नाटकीय पद्धति

---

१ Georg Herwegh, २ Ferdinand Freiligrath; ३. Hoffmann Von Fallersleben, ४ Büchner, ५ Christian Dietrich Grabbe, ६. Heinrich Von Kleist

रॉबे[1] ने अपने गद्य-काव्यो के जरिये उस दिशा मे नये सिद्धान्त प्रतिपादित किये। उनकी कृतियो में सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्तरोत्तर स्पष्ट होती गईं।

पिछली शताब्दी के मध्य उपन्यासकारो में सबसे मेधावी स्विस लेखक गॉटफ्रीड केलर[2] हुआ। अपने सुन्दरतम कहानी-सग्रह 'डि ल्यूते फॉन सेल्डवीला' (१८५६) में उसने एक छोटे नगर के निवासियो के द्वारा प्रगतिशील चेतना का निरन्तर समर्थन करना चित्रित किया है। केलर का दृष्टिकोण जीवन के प्रति मध्यवर्गीय जनता का है। केलर को लुडविग फ़ूअरबाख[3] के परलोक विरोधी इहलौकिक आनन्द के खोजी दार्शनिक सिद्धान्त से बडी प्रेरणा मिली। उस प्रेरणा को उसने विशेषत अपने शिक्षा-सम्बन्धी उपन्यास 'डेर ग्रीन हेनरिख' (हरा हेनरी—१८७९) में अकन किया। उसमें चित्रकार के अयथार्थ-वादी दृष्टिकोण का उपहास था। व्यक्ति का समसामयिक समाज से सम्बन्ध केलर को अधिकाधिक अपनी ओर खीचने लगा और उसने अपनी कृतियो मे अधिकतर समाज के प्रति व्यक्ति के कर्त्तव्य का निरूपण किया। उसका हृदय विनोदी और सम्वेदनशील था। अपने विनोद की लपेट में वह सन्तो और शहीदो तक को नही छोडता जैसा कि उसके 'सीबेन लिगेंडेन' (सात ख्याते, १८७२) से प्रमाणित है।

यथार्थवादी उपन्यासकारो में थ्योडोर फोन्ता[4] का स्थान काफी ऊँचा है। उपन्यास-लेखन उसने अपने जीवन के पिछले काल में शुरू किया। अपनी कृतियो में उसने प्रशा के उच्चवर्गीय समाज के चित्र अकित किये। उसके चरित्र अनोखे न होकर समाज के ही चलते-फिरते व्यक्ति हैं। उसकी रचनाओ में बडी सादगी है और वे विवाहित जीवन की समस्याओ को सुलझाने का प्रयत्न करते हैं।

लिरिक काव्य

लिरिक के क्षेत्र में १८४८ की क्रान्ति ने अद्भुत प्रगतिशील मान्यताओं को जन्म दिया था। कुछ काल सामाजिक परिवर्तन के स्वप्न देखने वाले कवियो ने क्रान्ति के गीत भी गाये परन्तु शीघ्र उस दिशा मे एक अप्रत्याशित उदासीनता दृष्टिगोचर हुई। यथार्थ जीवन और धुएँ भरे कारखाने वाले नगरो से भागने का नारा बुलन्द किया गया। हाइने आदि ने कहाँ तो कर्मशील मानवता के पक्ष में उनको जीतकर उन पर अधिकार कर लेने की पुकार की थी और कहाँ ये उत्तरकालीन कवि उन नये नगरो और उनके मिलो के विरोध में उनकी ओर पीठ कर निष्क्रिय हो चले। म्यूनिख के लिरिककारो ने काव्य के रूप पर अधिक जोर दिया, 'कला कला के लिए' की आवाज़ उठाई। एमानुएल गीबेल[5] उस दल का नेता था और

---

१ Wilhelm Raabe; २. Gottfried Keller; ३ Ludwig Feuerbach; ४ Theodor Fontane; ५ Emanuel Geibel

चली थी। रिचार्ड वागनर[१] ने निश्चयपूर्वक इस यथार्थवादी प्रगति का विरोध किया क्योकि उसने साहित्य को मानव-आचार तथा शालीनता का निर्माता माना। वागनर ने अपने नाटकों और ओपेरो (गायनो मे नाटक) मे प्राचीन जर्मनी का गौरव बखान राष्ट्रीयता का प्रचार किया। इस दिशा में उसका 'डर फ्लिगेन्डे हालैण्डर' (उडाकू डचमैन—१८४१) प्रमाण है। अपने रोमान्टिक ओपेरा 'तानहाउसेर' (१८४५) में उसने अपने उस मिनेसिंगर का वीनस के दरबार में आचरण प्रदर्शित करते हुए प्राचीन कवियो के दगलो के भी दृश्य उपस्थित किये। 'लोहैग्रिन' (१८४७) मे एक मध्यकालीन ख्यात-कथानक नाट्यांकित हुआ। 'त्रीस्तन उण्ड इसोल्डे' (१८५९) गॉटफ्रीड[२] के १३ वी सदी के एपिक 'डी मेइस्तर सिंगेर फॉन नूरेम्बर्ग' पर अवलम्बित था। उसने १६वी सदी के कवियो पर प्रकाश डाला। १८७७ में वागनर ने 'पार्सीफाल' लिखा। उसे उसने वोल्फ्राम[३] के एपिक के आधार पर रचा था। उसने अपना डेररिंग डेस निबेलुगेन' (निबेलुग की अँगूठी) १८५३ और १८७६ के बीच प्राय. २३ वर्षों मे समाप्त किया। उसमें उसने उत्तरी देवताओ और जननायको—सीगफ्रिड,[४] गुन्थर[५] और हागेन[६]— को अमर कर दिया। वागनर नाटक को समाज को बेहतर बनाने का एक जरिया समझता था। शोपेनहावर[७] के दार्शनिक विचारो का अनुयायी होने के कारण उसने ससार की विपत्तियो से छुटकारे के लिए कला के क्षेत्र में शरण लेना आवश्यक समझा। कला की दिशा में वह नोवालिस[८] और श्लेगेल[९] का समर्थक था। १९वी सदी के मध्य वागनर रोमान्टिक आन्दोलन का सबसे बडा समर्थक था परन्तु परिस्थिति बदल चुकी थी और यथार्थवादी साहित्य की ओर उसकी प्रगति निरन्तर होती जा रही थी। उस प्रगति को स्वय वागनर का विशाल व्यक्तित्व भी न रोक सका।

यथार्थवादी उपन्यास

जब साहित्य-क्षेत्र में परिवर्तन होता है तब उसकी सीमाएँ उसके अग विशेषो तक ही परिमित न रहकर सारे क्षेत्र मे फैल जाती हैं। नाटक के क्षेत्र में रोमान्टिक चेतना से यथार्थवादी दृष्टिकोण की ओर जो प्रगति हुई तो वह उपन्यास, लिरिक आदि की दिशा में भी समान चेतना की पोषिका हुई। कार्ल इमरमान[१०] और गुस्ताफ फ्रेताग[११] ने अपने उपन्यासो से, जरेमिया गॉटहेल्फ[१२] और बर्थोल्ड आवरबाख[१३] ने अपनी ग्रामीण कहानियो द्वारा, तथा फ्रीड्रिख स्पीलहॉगेन[१४] ओटो लुडविग[१५] और विलेहम-

---

१. Richard Wagner; २ Gottfried Von Strassburg, ३ Wolfram Von Eschenbach; ४. Siegfried; ५ Gunther; ६. Hagen; ७ Schopenhauer; ८. Novalis; ९. Schlegal; १० Karl Immermann; ११ Gustav Freytag; १२. Jeremias Gotthelf, १३ Berthold Auerbach; १४ Friedrich Spielhagen; १५ Otto Ludwig

उसमे उसने मजदूर की आत्मा को समझने का अच्छा प्रयत्न किया, जिससे जर्मनी के समाजवादियो ने उसे अपने पक्ष का गायक माना।

प्रकृतिवादी साहित्य

कला और साहित्य के क्षेत्र में १९ वी सदी के अन्तिम चरण मे एक प्रकृतिवादी आन्दोलन का आरम्भ हुआ। इसका अभिप्राय इस सिद्धान्त का प्रचार करना था कि कला और साहित्य का उद्देश्य केवल प्रकृति का पुनर्जनन है। उनकी सीमाएँ प्राकृतिक वस्तुओ के यथातथ्य निरूपण तक ही परिमित रहेगी। आर्नोहोल्त्स[1] उस विचारधारा का अग्रणी था। होल्त्स ने स्वय अपनी एक कविता मे वर्षाजल की बूँदो का एक पत्ती से दूसरी पर गिरना प्रदर्शित किया। 'पापा हामलेत' (१८८९) और 'डी फामिली सेलिके' (१८९०) में उसने बर्लिन के झोपडो की ध्वनियो और श्रमिको के चेहरो के भावो तक को प्रतिबिम्बित किया। जोहान्स श्लाफ[2] और गेरहार्ट हाउप्तमान[3] उसके अनुयायी बने।

हाउप्तमान उस काल मानवता का सबसे बडा समर्थक हुआ। उसने अपनी सुन्दरतम प्रकृतिवादी ट्रैजेडी 'डि वेवर' (जुलाहे, १८९२) में साइलेशिया के जुलाहो का सघर्ष अमर कर दिया। वह स्वय एक श्रमिक का पोता था। बचपन से ही मजदूरो की कठिनाइयो और सघर्षों की कहानियाँ वह सुनता आया था और स्वय उसने अपने चारो ओर पिचके गालो वाले कमजोर श्रमिको को देखा था। उनकी शहादत उसके लिए असह्य हो उठी और उसने अपनी कृतियो को उनके जीवन पर साधना शुरू किया। उसकी ट्रैजेडी में एकान्त हीरो का प्रदर्शन नही है, अनेक स्वर एक साथ प्राय एक ही ऊँचाई मे हीरो का स्थान ग्रहण करते है और वे स्वर जुलाहो के हैं। व्यक्तियो की एक बड़ी परपरा, समाज का एक बडा स्तर, सामाजिक अन्याय का शिकार है और उसका परिणाम स्वय असामाजिक रूप धारण कर लेता है। हाउप्तमान अक्सर अपने चरित्रो को कठिन परिस्थितियो में डालकर नियति का शिकार बना देता है। उसके 'आइन्सामे मेन्शेन' (एकाकी जीवन—१८९१) में हीरो पत्नी के प्रेम और एक अन्य कुमारी की कृपा के बीच घुटता जाता है क्योकि वह एक को स्वीकार कर दूसरी का परित्याग नही कर पाता। इसी प्रकार उसके 'डी वर्संकेन ग्लोके' (पिचकी घण्टी—१८९६) मे हीरो विरोधी कर्त्तव्यो के बीच कुचला जा रहा है। 'फुह्लमान हेन्शेल' (१८९८) मे ईमानदार व्यक्ति निराशा से प्रेरित होकर अपने ही अध विश्वासो के कारण आत्महत्या को प्रस्तुत होता है। हाउप्तमान की सहृदयता चोरो पर भी समान रूप से मुस्कराती है, जैसा उसकी सुन्दरतम कॉमेडी 'डेर बीबेरपेल्त्स' (१८९३)

---

१ Arno Holz, २ Johannes Schlaf, ३ Gerhart Hauptmann

उसने उद्देश्यपरक साहित्य के सिद्धान्त पर आघात किया। उसके लिये ग्रीक पेरिक्लीज का युग रसात्मक आदर्श की चरम परिणति थी। बवेरिया की राजधानी में राजा मैक्समीलियन द्वितीय का दरबार गीबेल के विचारो का गढ बन गया। वर्णनात्मक शैली, लिरिक और ड्रामा के टेकनीक का आचार्य पॉल हीसे[1] भी उसी दल का एक प्रधान सदस्य था। उसकी गद्य-कहानियो मे 'लारबिआता' (१८५३) उसकी सबसे अधिक जानी हुई कृति है। उसके लघु लिरिक सुन्दर और मधुर हैं।

एडुअर्ड मोरिके[2] और थ्योडोर स्टोर्म[3] जीवन के हर्ष-विषाद के मधुर गायक थे। मोरिके अपने लिरिको मे देश के झरनो और नदियो, जगलो और पहाडो, फूलो और पक्षियो, गोधूलि और प्रभात के गीत गाता है। स्टॉर्म उसके विपरीत प्रकृति के अनुदार दृश्य का चित्रण करता है। स्विस लिरिककारो में सबसे महान कोनराड-फर्डिनेंड मेयर[4] हुआ। उसने कविताओ के रूप को भाषा और शैली की दृष्टि से नितान्त प्राजल बना डाला। एक शब्द, एक मात्रा तक, कही उसकी कविताओ में अधिक न हो सकती थी। उसने अनेक कविताओ की प्रेरणा रेनेसा से ली। इतिहास के असम कथानक उसके हाथ मे पडकर मूर्तिकार की कृति की भाँति सर्वथा कमनीय बन गये है।

यथार्थवादी कविता

परन्तु इसका यह मतलब नही कि काव्य के क्षेत्र में प्रगति की प्रेरणा सर्वथा नगण्य थी। जैसा ऊपर कहा जा चुका है ऐसा होना था भी असभव। जीवन अपनी जटिल समस्याओ के साथ मानव चेतना पर हावी होता जा रहा था और यह सम्भव न था कि साहित्यकार में उसके प्रति प्रतिक्रिया न हो। यह सही है कि उस क्षेत्र में प्रगति ड्रामा और उपन्यास के मुकाबले में कम हुई परन्तु हुई निस्सन्देह। देत्लेफ फॉन लिलिनक्रॉन[5] और रिचार्ड देहमेल[6] ने अपनी कृतियो में यथार्थवादी ध्वनि भरी। लिलिनक्रान होल्स्टाइन का सभ्रान्तकुलीय सैनिक था और विलहेम प्रथम तथा द्वितीय के शासनकाल मे जर्मनी का प्राय एकान्त कवि हुआ। उसकी शक्तिम पक्तियो में प्रशा की शालीन विजयो की छाया पडी। उसने अपनी कृतियो द्वारा मोटर आदि की सवारियो का स्वागत किया। वह रोमान्टिक भावुकता और निष्क्रिय कल्पना का प्रबल विरोधी था और उसने प्रकृतिवादी युवको को प्रोत्साहित किया। देहमेल ने सेक्स विरोधी रूढियो का प्रतिवाद किया और अपने कविता-चक्र 'ज्वाई मेन्शेन' (दो जीवन—१९०३) में उसने परिवार के पुनस्सगठन की सम्मति दी। उसकी सामाजिक कविताओ में सबसे प्रसिद्ध 'डेर आर्बाइत्समान' (श्रमिक) हैं।

---

१ Paul Heyse; २ Eduard Morike, ३ Theodor Storm, ४ Conrad Ferdinand Meyer; ५ Detlev Von Liliencron; ६ Richard Dehmel

दशको म ही विकसित हुआ। इस सिद्धान्त के प्रवर्तको ने अपने वातावरण के प्रभाव का अकन करने से इन्कार कर दिया। उनके विचारानुसार कवि का कार्य, अन्त सत्य को प्रकाशित करना था, सत्य जो उसकी अन्तश्चेतना और अन्तर की प्रेरणा का प्रतीक था। उसे अपने वातावरण को भी बदल कर अन्तर की रहस्य दृष्टि के अनुकूल बना लेना था। उसे काव्य के रूप पर भी अधिक ध्यान नही देना था क्योकि सत्य का सरल पक्तियो, विद्रूप अथवा अरूप शब्दावली में भी उतर पडना स्वाभाविक है। बाह्य वस्तुओ के निरीक्षण और सविस्तार वर्णन को त्याग कवि उस मूल सत्य का उद्घाटन करे जो सामग्री की बहुलता से विकृत और आच्छन्न हो जाता है। यह विचार-धारा स्वाभाविक ही पर्याप्त विपज्जनक थी। खूनखराबी के उन दिनो मे इसका सहारा प्रतिभाशील मनीषियो ने भी लिया और भाडो ने भी। अनेक प्रकार के स्वप्निल 'युटोपिया' ससार फिर से सिरज दिए गए। यद्यपि अभि-व्यजनावाद के समर्थन मे अनेक घोषणाएँ हुई वस्तुत स्थायी मूल्य की साहित्य रचना स्वल्प ही हुई। इन स्वल्प रचनाओ मे ही फ्रात्स वेर्फेल[१] के लिरिक, फ्राक वेडेकिंड[२], जॉर्ज कैसर[३] और अर्नस्ट टॉलर[४] के नाटक तथा हाइन्रिख मान[५], जाकोव वासरमान[६] और आल्फ्रेड दोब्लिन[७] के उपन्यास थे।

वासरमान जर्मन साहित्य का दोस्त्वाएव्स्की[८] था। उसने पतनोन्मुख जगत् और उदीयमान मानव आत्मा दोनो का द्रष्टा होना चाहा। उसने गद्य-एपिको की एक परपरा ही सिरज दी। इनमें सब से सुन्दर उसका 'क्रिश्चियन वानशाफे' (जगत् की माया, १९१९) था। इसके सभी चरित्र जीवन मे आधार खोए हुए थे। ऐसे मानव, नर, नारी, बालक, जो भीषण परिस्थितियो और मनोवैज्ञानिक भय से त्रस्त भगवान् को खोजते और अविराम गति से चलते रहने के कारण शिथिल होकर ही उसे पाते है। वेडेकिंड का इस दिशा मे बडा नाम हुआ, नाम दोनो प्रकार का, घृणा से तिरस्कृत और साथ ही अभि-राम सृष्टा के रूप मे। आलोचको के एक दल ने उसे भाँड और अतृप्त कामुक कहा, दूसरे ने उसे स्वतन्त्र जगत का निर्माता जिसमे रूढियो और परपराओ के आघात से सौन्दर्य विकृत नही हो जाता, जहाँ शरीर और आत्मा की सर्जनशील सक्रियता सामाजिक आचरण के व्याघात से कुण्ठित नही हो जाती। वेडेकिंड ने गतिमान भाषा में जीवन के तूफानी आवेगो और अदम्य भूखो की अभिव्यक्ति की। उसके चरित्र जैसे ज्वालामुखी गर्त की टाल पर खडे हैं, स्वय जैसे ज्वालामुखी है और आन्तरिक प्रेरणा के वशीभूत बाह्य की तात्विक शक्ति के स्पर्शमात्र से फट पडते हैं। इस प्रकार के विस्फोट परिस्थिति के अनुकूल सर्वत्र और सर्वदा होते हैं। उसके 'इर्दगाइस्त' (पृथ्वी—१८९५) तथा 'डी बिस्से डेर पडोरा' (१९०१) की

---

१. Franz Werfel, २ Frank Wedekind, ३ Georg Kaiser, ४ Ernst Toller, ५ Heinrich Mann, ६ Jakob Wassermann, ७ Alfred Doblin, ८. Dostoevsky.

में उसने अपने ही वणिक् परिवार के अधोपतन का चित्र खीचा। मान स्वय अपने को पतन के युग का इतिहासकार कहता है । अपने 'डर जौवबेंर्ग' (जादू का पहाड—१९२४) मे उसने युद्ध और पतन की ओर उन्मुख यूरोपीय समाज का अकन किया। यह कृति एक प्रकार का रूपक है जिसमें आल्प्स पहाड के एक सेनेटोरियम में यूरोप के सारे देशो से आने वाले रोगियो का रोग अकित हुआ है। स्पष्टत सकेत यूरोप के देशो के पतनोन्मुख युद्धवादी प्रवृत्ति की ओर है। मान शोपेनहॉवर, नीत्शे और वागनर के विचारो से बडा प्रभावित हुआ। मृत्यु के प्रति उसका आकर्षण शोपेन हॉवर से मिला। नीत्शे ने उसे पतन सम्बन्धी मनोवृत्ति की गहरी चेतना दी। वागनर की शैली ने उसे साहित्यिक टेकनीक दी जिसमें यथार्थ के विषाद से भागकर सगीत के स्वरो मे शरण देने की प्रवृत्ति थी। 'जोजेफ और उसके भाई' (१९३३-४४) नाम से कई खण्डो मे मान ने एक उपन्यास लिखा जिसमें शोक की छाया कम है प्रसन्नता की अधिक। उसमे बाइबिल की पुरानी पोथी का परिवार फिर से मनोवैज्ञानिक रीति से रूप धारण करता है ।

: ७ :

वर्तमान युग

जर्मन-साहित्य के वर्तमान युग का आरम्भ, जैसा पिछले प्रसगो से प्रकट है सदी के आरम्भ के काफी पहले से हो जाता है। प्रथम महायुद्ध के काफी पूर्व ही साहित्य की आधुनिक प्रवृत्तियो का प्रारम्भ हो चुका था। इससे अनेक साहित्यकार जो पिछली सदी से ही उन प्रवृत्तियो से प्रभावित रचनाएँ करते रहे है वर्तमान काल के ही निर्माता है। टॉमस मान स्वय वर्तमान युग की प्रेरक शक्तियो में था। इस कारण यदि कुछ साहित्यिको का उल्लेख पहले हो जाने के कारण इस प्रसग में नही हुआ तो उन्हें अनाधुनिक नही मानना चाहिए। स्वय प्रभाववादी (इम्प्रेशनिस्ट) प्रवृत्ति आधुनिक साहित्य-चेतना की ही एक मजिल है जैसे अभिव्यजनावाद उससे कुछ पीछे की। प्रभाववाद प्रथम महासमर के पहले साहित्य में पूजा गया और अभिव्यजनावाद (एक्सप्रेशनिज्म) उसके बाद के दशको में।

अभिव्यजनावाद

वस्तुत अभिव्यजनावाद का आरम्भ साहित्यिक सिद्धान्त और टेकनीक के रूप में प्रथम महासमर के पहले ही हो चुका था। हाउप्तमान[1], श्नित्सलर[2] और टॉमस मान[3] के प्रकृतिवाद और नवरोमान्टिकवाद उसी परपरा की कडियाँ निर्मित करते है। परन्तु शुद्ध साहित्यिक सिद्धान्त और शैली के रूप में अभिव्यजनावाद उस महासमर के बाद के

१ Hauptmann, २ Schnitzler, ३ Thomas Mann

दशको म ही विकसित हुआ। इस सिद्धान्त के प्रवर्तको ने अपने वातावरण के प्रभाव का अकन करने से इन्कार कर दिया। उनके विचारानुसार कवि का कार्य, अन्त सत्य को प्रकाशित करना था, सत्य जो उसकी अन्तश्चेतना और अन्तर की प्रेरणा का प्रतीक था। उसे अपने वातावरण को भी बदल कर अन्तर की रहस्य दृष्टि के अनुकूल बना लेना था। उसे काव्य के रूप पर भी अधिक ध्यान नही देना था क्योकि सत्य का सरल पक्तियो, विद्रूप अथवा अरूप शब्दावली में भी उतर पडना स्वाभाविक है। बाह्य वस्तुओ के निरीक्षण और सविस्तार वर्णन को त्याग कवि उस मूल सत्य का उद्घाटन करे जो सामग्री की बहुलता से विकृत और आच्छन्न हो जाता है। यह विचार-धारा स्वाभाविक ही पर्याप्त विपज्जनक थी। खूनखराबी के उन दिनो मे इसका सहारा प्रतिभाशील मनीषियो ने भी लिया और भाडो ने भी। अनेक प्रकार के स्वप्निल 'युटोपिया' ससार फिर से सिरज दिए गए। यद्यपि अभिव्यजनावाद के समर्थन मे अनेक घोषणाएँ हुईं वस्तुत स्थायी मूल्य की साहित्य रचना स्वल्प ही हुई। इन स्वल्प रचनाओ मे ही फ्रात्स वेर्फेल[१] के लिरिक, फ्राक वेडेकिंड[२], जॉर्ज कैसर[३] और अर्नस्ट टॉलर[४] के नाटक तथा हाइन्रिख मान[५], जाकोव वासरमान[६] और आल्फ्रेड दोब्लिन[७] के उपन्यास थे।

वासरमान जर्मन साहित्य का दोस्त्वाएव्स्की[८] था। उसने पतनोन्मुख जगत् और उदीयमान मानव आत्मा दोनो का द्रष्टा होना चाहा। उसने गद्य-एपिको की एक परपरा ही सिरज दी। इनमें सब से सुन्दर उसका 'क्रिश्चियन वानशाफे' (जगत् की माया, १९१९) था। इसके सभी चरित्र जीवन मे आधार खोए हुए थे। ऐसे मानव, नर, नारी, बालक, जो भीषण परिस्थितियो और मनोवैज्ञानिक भय से त्रस्त भगवान् को खोजते और अविराम गति से चलते रहने के कारण शिथिल होकर ही उसे पाते है। वेडेकिंड का इस दिशा मे बडा नाम हुआ, नाम दोनो प्रकार का, घृणा से तिरस्कृत और साथ ही अभिराम सृष्टा के रूप में। आलोचको के एक दल ने उसे भाँड और अतृप्त कामुक कहा, दूसरे ने उसे स्वतन्त्र जगत का निर्माता जिसमे रूढियो और परपराओ के आघात से सौन्दर्य विकृत नही हो जाता, जहाँ शरीर और आत्मा की सर्जनशील सक्रियता सामाजिक आचरण के व्याघात से कुण्ठित नही हो जाती। वेडेकिंड ने गतिमान भाषा में जीवन के तूफानी आवेगो और अदम्य भूखो की अभिव्यक्ति की। उसके चरित्र जैसे ज्वालामुखी गर्त की ढाल पर खडे हैं, स्वय जैसे ज्वालामुखी है और आन्तरिक प्रेरणा के वशीभूत बाह्य की तात्विक शक्ति के स्पर्शमात्र से फट पडते है। इस प्रकार के विस्फोट परिस्थिति के अनुकूल सर्वत्र और सर्वदा होते हैं। उसके 'इर्दगाइस्त' (पृथ्वी—१८९५) तथा 'डी बिस्से डेर पडोरा' (१९०१) की

---

१. Franz Werfel, २. Frank Wedekind, ३ Georg Kaiser, ४ Ernst Toller, ५ Heinrich Mann, ६ Jakob Wassermann, ७ Alfred Doblin, ८ Dostoevsky.

'लूलू' कन्या विशेष नही वरन् नारी जाति की प्रतीक ह। स्वय सेक्स की भूख जो अभितृप्ति मॉगती है, उसकी अभिव्यक्ति की बस वही एक मात्र प्रेरणा है। अभिव्यजनावाद की टेकनीक और समस्या का रूप उसने १८९१ मे ही अपने नाटक 'फ्रूहलिग्स एरवाखेन' (वसत का जागरण) में रख दिया था। उस नाटक में उन किशोर-किशोरियो के आनन्द-विषाद का अकन है जिनको प्रौढो के आचार-बन्ध से मजबूर होकर जीवन की पुकार को तृप्त करने के लिए प्राकृतिक राहो को छोड बाध्यत अस्वाभाविक उपायो का सहारा लेना पडता है।

प्रेम, बलिदान और व्यापक भ्रातृभाव द्वारा यूरोप को पुन सज्जीवित करने का प्रयास फ्रान्त्स वेर्फेल[1] ने अपनी कला कृतियो द्वारा किया। उसने बौद्धिक सत्ता से आत्मा को मुक्त करने का नारा उठाया। १९१४ के पहले के ही उसके लिरिको में तर्क और दर्शन को फेंक चैतन्यवत् धार्मिक उन्माद ग्रस्त हो जाने की भावना थी। १९१४ के बाद के उसके लिरिको मे व्यापक वेदान्त की प्रेरणा पुकार उठी है। मृत्यु, और पुनर्जन्म, प्रलय और मोक्ष उसकी वाणी की सतत प्रेरणा बन जाते है। चराचर जगन् में ब्रह्म (गॉड) का निवास मान उसके कण-कण से मैत्री भाव स्थापित करने को वह कहता है। उसके 'बर्नादित्ते का गीत' (१९४३) में भगवान् की ओर लौट चलने की प्रेरणा उपन्यास-कला में उभर पडी है। अपनी प्रौढतर कृतियो में वेर्फेल अभिव्यजनावादी शैली से विरत हो जाता है जिससे उसकी दृष्टि अम्लान हो जाती है और अभिव्यक्ति में यथार्थ रूप धारण कर लेता है। फिर वह अपने कथानको के लिए इतिहास की ओर देखता है । वहाँ विजेता और सभ्रान्तकुलीय उसे आकृष्ट नही करते, उसके आकर्षण का केन्द्र सर्वहारा और नि सत्व बनते हैं। 'वर्दी' (१९२४) उसका इसी प्रकार का उपन्यास है। इसी प्रकार 'मूसा दाग के चालीस 'दिन' (डी वीरत्सिग तागे डेस मूसा दाग, १९३३) में तुर्की सत्ता से सघर्ष करते आर्मेनियनो के लिए उसका हृदय रो पडता है।

नव-यथार्थवाद

यह सर्वथा अमूर्त दर्शन स्वाभाविक ही साहित्य मे चिरकाल तक नही चल सकता था। अभिव्यजनावाद के अग्रणी आखिर अहकार की सत्ता से भी विरत हो गए, थक गए। बाह्य-दर्शन साहित्य को आलम्बन और टिकाव देता है। अन्त की प्रेरणा साधक को थकाती मात्र है। अभिव्यजनावाद के अग्रदूत और पेशवा भी उस परा-कल्पना से थक गए। वेर्फेल की उससे विरक्ति की बात ऊपर लिखी जा चुकी है। जो उसकी दशा हुई वही उसके अन्य अनुयायियो की भी हुई। इस शती के दूसरे दशक के अन्त में एक नई यथार्थ प्रेरणा साहि-त्यिको में मूर्तिमही हुई। उनकी गति अब सूक्ष्म से स्थूल की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर, अव्यक्त से व्यक्त की ओर हुई। इस नव-यथार्थवाद का नाम जर्मनी में 'निवे-साल्लिख्काइत'

---

१. Franz Werfel

पड़ा और नात्सी जर्मनी की सास्कृतिक तानाशाही के आरम्भ काल मे यही जर्मन-साहित्य का आलोक बिन्दु बना। इस दिशा के लेखको ने भारी-भरकम शब्दो को त्याग दिया। शात उत्पादन, सक्रिय उद्योग, उत्तरदायित्व का चुपचाप निर्वाह उनके आलोक शब्द बने। क्रान्ति और पुनरुज्जीवन के नारे अब निरस्त हो गए। सामान्य मानव पर उनकी दृष्टि, केन्द्रित हुई। कुछ अकारण न था कि १९३२ में हान्स फलादा[१] ने अपना 'क्लाइनेर मान, वास नुन ?' (लघु मानव, आगे क्या ?) लिखा। इसी प्रकार हान्स कारोसा[२] ने अपने उपन्यास मे जन साधारण, पशु आदि का सविस्तार चित्रण किया। आर्नाल्ड ज्वाइग[३] के उपन्यास 'डेर स्ट्राइट उम डेन सेरग्यान्टेन ग्रीशा' (१९२८) मे कथानक का केन्द्र वह अकेला रूसी सैनिक है जिसका नगण्य जीवन प्रशा की सारी शासन तथा न्याय-सत्ता को चुनौती देता है। एरिख मारिया रैमार्क[४] अपने उपन्यास 'इम वेस्टेन निक्ट्स निवेस' (पश्चिमी मोर्चे की शान्ति–१९२९) में प्रथम महासमर के भीषण परिणाम का यथार्थ रूप से आकलन करता है। परन्तु यह साहित्यिक प्रवृत्ति भी जर्मनी मे दीर्घकाल तक न चल सकी। उसका स्थान नात्सी रोमान्टिकवाद ने लिया।

नात्सी-रोमान्टिकवाद

जर्मनी म १९३३ मे राष्ट्रीय-समाजवाद की विजय हुई और वहा तत्काल नात्सी नादिरशाही का बोलबाला हुआ। साहित्य के प्रोपेगैण्डा का साधन बनते ही नव-यथार्थवादी दृष्टिकोण का स्थान नात्सी-रोमान्टिकवाद ने लिया। नीत्शे[५] और स्तेफान जॉर्ज[६] के अनुयायी इस नई साहित्य चेतना के नेता बने। नीत्शे को नात्सी जर्मनी ने जर्मन सत्ता और सस्कृति का प्रतिनिधि माना। नीत्शे अभिजातीय व्यक्तिवाद का प्रवर्त्तक था। तृतीय राइख उसे अपना पैगम्बर मानने लगा। जर्मनी की दृष्टि मे वह एक नई राजनीतिक और सामाजिक सत्ता का प्रचेतक था जिसकी बागडोर सेठो-साहूकारो के हाथ मे न होकर अतिमानवो के हाथ मे होगी। उदात्त 'सुपरमैन' राज्य सस्था का सचालन करेगा। नीत्शे मानव जाति मे भी महान् से महत्तर के विकास में विश्वास रखता था। जीवन कष्टप्रद है पर उसे स्वीकार कर सक्रिय बने रहना आवश्यक है। उसने ईसाई धर्म का विरोध इसलिए किया कि उसमे कमजोर और निराश की सराहना है, सबल और विजयी की नही, क्योकि वह शरीर की आवश्यकताओ को हटा कर एक काल्पनिक मरीचिका का विधान करता है। नीत्शे के विचार से पाप, अन्तर-प्रेरणा और विनय गुलामो और अकिंचनो की पतनोन्मुख आचार सम्पदा है। उसका आदर्श वह महामानव है जो पाप-पुण्य से परे है और जिसके कार्यो की प्रेरणा आचारावस्था से नही शक्ति-सचार के आग्रह से होती है। इन विचारो को नीत्शे ने अपने निबधो

---

१ Hans Fallada, २ Hans Carossa, ३ Arnold Zweig, ४ Erich Maria Remarque, ५ Nietzsche, ६ Stefan George

में प्रकट किया। 'जेन्साइत्स फान गुत उण्ड बोस' (पुण्य और पाप से परे–१८८५), 'डेर विले-जुर माख्त' (शक्ति के लिए आग्रह–१८८६), और 'आल्सो सप्नाख जरथुस्त्र (जरथुश्त ने ऐसा कहा–१८८३-९१) मे नीत्शे के वे उद्गार भरे है जिनसे नात्सी जर्मनी ने अपनी प्रेरणा पाई। स्टेफान जॉर्ज आदि ने नीत्शे के दार्शनिक आदर्शों को साहित्य के क्षेत्र मे भी घसीट लिया। इनका कहना है कि भगवान् असाधारण शक्तिम महापुरुषो मे साकार होता है। वे पूजनीय है और वे ही मानव जाति को मानवता का सही मूल्य प्रदान करते है। उन्हे शका या शोच नही होता, न उन्हें मोक्ष की आवश्यकता होती है। उनमें बस एक भावना होती है, अपने अनुरूप ससार के पुनर्निर्माण की। वे शब्द और कर्म दोनो रूप से श्रेष्ठ होते है। दाते और शेक्सपियर, गेटे और होल्डरलिन, सीजर और नेपोलियन उन्ही की परपरा में है। उसी महान् को जीवन में खोजना है। नीत्शे ने उसके आगमन की घोषणा भी कर दी थी। स्टेफान जॉर्ज आदि के विचारो ने एक धार्मिक सम्प्रदाय को जन्म दिया। भारत मे भी इस चेतना का अभाव नही है। अरविन्द के 'सुपरमाइण्ड' (महापुरुष) की स्थापना बहुत कुछ ऐसी ही है। स्टेफान के सम्प्रदाय मे काव्यकारिता सर्वोत्तम प्रकार की आध्यात्मिक सक्रियता है और कवि आत्मा को स्थूल रूप देता है। जार्ज की कविताओ के सग्रह १८९० से ही प्रकाशित होते रहे है। लिरिक सुन्दर हैं पर उनमें समझी-बूझी अस्पष्टता सिरजी गई है। 'डेर सिवेन्ते रिग' (१९०७) और 'डास निवे राइख' (१९२८) में भी नीत्शे का वही दृष्टिकोण व्यवस्थित है। जार्ज ने उस साम्राज्य के गीत गाए हैं जहाँ 'फीरर' (नेता) का शब्द अनुल्लघनीय शासन (कानून) होगा और जहाँ उसके निर्देश का असयत पालन होगा। यह सममानवो की सत्ता का परिचायक या बौद्धिको के तर्क का प्रतीक न होकर उन तरुणो का गढ होगा—चुने असामान्य तरुणो का—जो अपनी प्रेरणा उस महानेता से पाएँगे। और वह महानेता भाग्य के विधान से प्रतिष्ठित होगा। उसके अनुशासन के प्रति उसके सभी अनुयायी सानन्द नत शिर होगे। वे उससे प्रेम करेगे इससे उसकी आज्ञा का जूआ वहन करने में न हिचकेंगे। जर्ॅज के विचार से यह फीरर साधारण राजनीतिज्ञ न होकर विराट और प्रेरित महाकवि होगा। फिर स्वय जॉर्ज ने अपने को वह फीरर एक बार घोषित किया जिससे उसके अनुयायी उसे शासक, मास्टर, पैगम्बर आदि नामो से पुकारने लगे। उसके इन अनुयायियो में लिरिककार कार्ल उल्फस्केल[1] चरितकार फ्रीड्रिख वोल्टर्स[2] साहित्य इतिहासकार अर्नस्ट बर्ट्राम[3] और इन सबसे प्रभावशाली, फ्रीड्रिख गुन्डोल्फ[4] थे। गुन्डोल्फ हिटलर-कालीन जर्मनी के प्रख्यात प्रचार मन्त्री जोजेफ गोबेल्स[5] का गुरु था।

इस फीररवाद का सबसे वडा सास्कृतिक पुजारी सम्भवत गोवेल्स था। सारे साहित्य

---

१ Karl Wolfskehl, २ Friedrich Wolters, ३ Ernst Bertram, ४ Friedrich Gundolf, ५ Josef Goebbels

को इस दृष्टिकोण के अनुकूल राष्ट्र की तानाशाही वृत्ति का एकान्त उपासक होना चाहिए। नात्सी जर्मनी में शीघ्र ही ऐसे साहित्यिको की कृतियाँ जला दी गई जिन्होने उस भावधारा के विरुद्ध कलम उठाई। नात्सीवाद के समर्थक साहित्यिको मे प्रधान थे। पाल अर्न्स्ट[1], हान्स ग्रिम[2], अर्विन गीदो कोल्बेन्हेयर[3], हरमान स्तेह्र[4], विल वेस्पर[5], हान्स फ्रीड्रिख ब्लुक[6], जोजेफ पोन्तेन[7] और हान्स जोस्त[8]। १९३३ और ४५ के बीच जर्मन-साहित्य इसी दृष्टिकोण का पोषक रहा। शक्ति और युद्धवाद ने साहित्य का गला घोट दिया। फिर भी जर्मन सीमाओ के बाहर नात्सी विरोधी विचारो का आकलन जर्मन साहित्यकार करते रहे। पेरिस, एम्स्टर्डम, स्टाक होल्म और प्राग नात्सी विरोधी साहित्य के केन्द्र बन गए, फिर इन स्थानो के नात्सी सेनाओ द्वारा आक्रान्त हो जाने पर लन्दन और न्यूयार्क निर्वासित जर्मन-साहित्य के केन्द्र बने। स्वय जर्मनी में चुपके-चुपके नात्सी विरोधी साहित्य बनता रहा और सन् ४५ में उसके स्वतत्र होने पर तो एक बार फिर जर्मन साहित्यिक मेधा जगी, विशेष कर पूर्वी भाग में जहाँ जन-सत्ता का दृष्टिकोण उसकी प्रेरणा बना।

---

१ Paul Ernst, २ Hans Grimm, ३. Erwin Guido Kolbenheyer, ४. Hermann Stehr, ५ Will Vesper, ६ Hans Friedrich Blunck, ७ Josef Ponten; ८ Hans Johst

१० जापानी-साहित्य

जापानी-साहित्य का काल प्रसार काफी बडा है, प्राय १५०० वर्षों का। उसक आरम्भ पाँचवी सदी ईस्वी के पहले से ही हो जाता है। उस साहित्य का अध्ययन युगत करना होगा। प्राय सात युगो के क्रम में उस साहित्य की प्रगति अद्यावधि हुई है। उन्ह युगो के अनुकूल जापानी-साहित्य का अध्ययन समीचीन होगा। उनका साधारणत नाम करण निम्न प्रकार से किया जा सकता है

१ आरम्भ युग (७०० ई० पू०)
२ नारा युग (७०० -७९४)
३ हेइयन युग (७९४-११९२)
४ कामाकुरा युग (११९२-१३३२)
५ नान्बोकुचो और मुरोमाची युग (१३३२-१६०३)
६ इदो युग (१६०३-१८६८)
७ वर्तमान युग (१८६८-१९४१)

: १ :

आरम्भ युग (७०० ई० के पूर्व)

प्राचीनकालीन विनोदप्रिय भावुक और सरल जापानियो का प्रारभिक साहित्य उनके सृष्टि सम्वन्वी पौराणिक आख्यानो से होता है। जापान प्रकृति का क्रीडा-स्थल रह है। वहाँ उसके सृजन और सहार दोनो रूपो का खुलकर प्रकाश हुआ है। प्रकृति के सम्पर्क से ही जापानियो ने अपने "शिन्तो" वर्म का प्रारम्भ किया। पाँचवी सदी मे चीनियो ने जापान मे लिपि का प्रचार किया। उसके पहले जापानी साहित्य, कहानी, गीतो और धार्मिक मन्त्रो के रूप में केवल अलिखित था जो कानो-कान प्रवाहित होता रहता था। उस साहित्य के प्रवक्ता को "कातारिवे" कहते थे। वे वहुत कुछ भारतीय पुराण कथावाचक "सूतों" से मिलते है।

उस प्रारम्भिक काल के जापानी साहित्य के तीन अगो की ओर ऊपर सकेत किया गया है। वे अग थे, कथाएँ, गीत और नोरितो (मत्र)। पाँचवी सदी के आरम्भ (४०५ ई०) मे चीनी लिपि का प्रचार पहले-पहल एक चीनी राजकुमार के कोरियन शिक्षक वांगिन[1]

१ Wangin ,

(जापानी मे वानी) ने किया। उसका स्वभाविक ही साहित्य के समुदय पर बडा प्रभाव पडा। ५५२ ई० में जो जापान में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, उससे भी वहाँ के साहित्य को बडा वल मिला। इन दो घटनाओ ने जापानी-साहित्य में दूरगामी परिवर्तन किये।

: २ :

नारा-युग (७००-७९४)

इस काल का सम्बन्ध नारा मे जापानी राजधानी की स्थापना से है। यह सारा काल-प्रसार वस्तुत नारा की राजकीय स्थिति से सम्पर्क रखता है। नारा ७१० ई० मे राजधानी बनी और ७९४ में वर्तमान क्योटो को हटा दी गई। क्योटो का प्राचीन नाम हेइयन-क्यो था। ७०० ई० के आसपास काकिनोमोतो नो हितोमारो[1] की काव्य-कृतियाँ रूपायित हुई। साथ ही जापानी चिन्तको ने चीनी भाषा और साहित्य का अध्ययन आरम्भ किया। चीन में बौद्ध-धर्म का प्रचार पहले ही हो चुका था और उस दिशा से साहित्य और कला का भी प्रादुर्भाव हुआ जिसने जापानी विचारो तथा कला आदि में आधारभूत परिवर्तन किये। चीनी लिपि जापानियो के अनुकूल तो न पडी किन्तु लिपि के अभाव में उन्हे उसी को स्वीकार करना पडा। परन्तु अपनी भाषा चीनी लिपि मे लिखने में बडी कठिनाई पडती थी। धीरे-धीरे "काना" नाम की एक व्यवस्था हुई जिससे जापानी शब्दो का उस लिपि मे उल्लेख होने लगा। "काना" पद्धति का प्रयोग वस्तुत अगले युग मे हुआ।

नारा-युग की साहित्यिक अभिव्यक्ति विशेषत कविता में हुई। प्राचीनतम काल से प्रान्जल शैली में काव्य-रचना होती आई थी। नारा-युग का काव्य अनेक अधिकारी समीक्षको के मतानुसार अप्रतिम है। विशेषत ताका (वाका) शैली (छोटी कविता) का प्रयोग उस काल की कविता मे हुआ। उसमें १२ से २० तक के शब्दो का प्रयोग होता था। उस कविता में तुको की आवश्यकता नही होती थी। कारण यह है कि प्रत्येक जापानी शब्द स्वरान्त होता है। इससे पिंगल की टेकनीको के प्रयोग विना ही काव्य में गेय ध्वनियो का विस्तार हो जाता है। ताका शैली की कविताएँ सक्षिप्त होती थी। कवि का काम शब्दो द्वारा दृश्य को प्रस्तुत मात्र कर देना था, अलिखित को मूर्तिमान कर लेना पाठको की कल्पना पर निर्भर करता था। तव की कविताएँ प्राय सभी लिरिक हैं जो भावो की अभिव्यक्ति करती हैं। मनुष्य, प्रकृति, मरण, जीवन, दर्शन उसके विपय हैं।

जापानी भाषा में लिपि का प्रयोग होने के वाद ही अलिखित कविताओ का सग्रह आरम्भ हो गया था। प्राचीनतम सग्रह ८वी सदी के प्राय अन्त में प्रस्तुत हुआ। उसमे लगभग ४५० कवियो की रचनाएँ सग्रहीत हुई। कवियों में प्रधान काकिनोमोतो

१ Kakinomoto No Hitomaro

नो हितोमारो और यामाबे नो अकाहितो[१] थे। इस सग्रह की लिपि चीनी थी, 'काना' लिपि व्यवस्था अभी भविष्य के गर्भ मे थी अथवा कम से कम अभी विकसित हो रही थी। कहना न होगा कि यह सग्रह चीन के साहित्यिक स्वर्ण-युग, तागकाल (६१८-९०६) की समान कृतियो का परिणाम था। यद्यपि उस सग्रह की नब्बे प्रतिशत कविताएँ ताका शैली में हैं, अनेक 'चोका' (लम्बी कविताएँ) शैली मे भी लिखी गई हैं। उस काल के बाद 'चोका' प्रकार की कविताएँ देश में अप्रिय हो गईं और फिर वे जापानी काव्य क्षेत्र में न लौट सकी। 'मान्यो' पद्धति में कविताओ के लिखे होने के कारण वह सग्रह 'मान्योशू' कहलाया।

नारा-युग का साहित्य यद्यपि साधारणत काव्य में है, कुछ कृतियाँ गद्य में भी रची गईं। 'कोजिकी' (प्राचीन विषयो का रेकॅर्ड) पहला जापानी इतिहास है जो ७१२ ई० में प्राय तभी समाप्त हुआ जब अरबो ने सिन्ध और स्पेन में अपनी शक्ति के नये पाये खडे किये। जापान के इतिहास 'निहोन्शोकी' की रचना ७२० मे समाप्त हुई। इसे जिन अनेक लेखको ने रचा उनमें राजकुमार तोनेरी[२] और यासुमारो[३] भी थे। सग्रह चीनी में लिखे अनेक इतिहासो का है। उसमें पुराणो, ख्यातो, कविताओ और सातवी सदी तक के इतिहास का सग्रह हुआ है। उस कृति का साहित्यिक मूल्य तो अधिक नही है परन्तु जापानी जीवन और धार्मिक विश्वास ख्यातो और भाषा आदि के अध्ययन के लिए निश्चय ही वह अनुपम ग्रन्थ है। ७३३ में मियाके नो ओमी कानातारी[४] और इजुमो नोओमी हिरोशिमा[५]-द्वारा सगृहीत जापान का सबसे पहला भौगोलिक ग्रन्थ 'इजुमोफूदोकी' है।

: ३ :

हेइयन-युग (७९४-११९२)

हेइयन-युग हेइयन-क्यो में ७९४ में राजधानी स्थापित होने से लेकर ११९२ में कामाकुरा सैनिक सरकार कायम होने तक है। इस बीच यह राजधानी जापानी अभिजातीय सस्कृति का केन्द्र थी।

हेइयन-युग जापानी साहित्य का 'क्लासिकल' युग है। आरम्भ मे तो जापानी साहित्य की प्रगति चीनी परपरा के अनुसार हुई फिर देशी रचनाओ का आरम्भ हुआ। चीनी भाषा के बोझिल होते हुए भी जापानियो ने उसे सीखा और पढा। ८९४ में विद्वान राजनीतिज्ञ सुगावारा नो मिचिज़ाने[६] ने सरकार से कहकर जापानी-दूत-मण्डलो का चीन

---

१ Yamabe no Akahito, २ Toneri, ३. Yasumaro, ४ Miyake no Omi Kanatari, ५ Izumo no Omi Hiroshima, ६ Sugawara no Michizane.

जाना रोक दिया जिससे चीन से विमुख होकर जापानी अपनी भाषा और साहित्य का स्वतत्र विकास करने लगे ।

नारा-युग से शक्तिमान फुजिवारा कुल के हाथ मे धीरे-धीरे सारी राजशक्ति केन्द्रित होती आई थी । सम्राट् बरायनाम जापान का स्वामी था । इसी फुजिवारा कुल ने हेइयन-काल का प्राय सारा साहित्य प्रस्तुत किया । आश्चर्य की बात तो यह है कि उस प्राचीन काल में भी जापानी नारी का साहित्य निर्माण असाधारण था । दरबारियो का एक नारी दल उस दिशा में विशेष सयत्न था । उसमें एक का नाम मुरासाकी शिकिबू[१] था । उसने 'गेंजी की कथा' नाम की एक कहानी लिखी जिसे अनेक समालोचक जापानी-साहित्य की एक अनुपम कृति मानते हैं । सम्भवत किसी देशी की नारी को इतने अधिकार इतने प्राचीन काल मे नही मिले जितने जापानी नारी को उपलब्ध थे । वह शिक्षा और आजादी की अधिकारिणी तो थी ही, साहित्य-सृजन की भी उसमे योग्यता थी और अक्सर उसने शासन के कार्य मे योग भी दिया ।

जापानी जनता स्वभाव से ही कलाप्रिय है । जीवन के प्रति उसका आकर्षण ही उसी माध्यम से होता है । रसप्रिय होने के कारण उनके सामाजिक जीवन मे भी कुछ आचरण का ढीलापन है । जो भी हो जापानी जाति सदा कला की उपासिका रही है । यह उसके इतिहास की प्रगति से प्रकट है । इसी कारण उसने अपनी लिपि अत्यन्त सुन्दर बना ली । लिखावट तो एक धार्मिक क्रिया बन गई । स्वय पद्य ने वह शक्ति धारण कर ली कि उसका उपयोग किसी स्थिति अथवा भाव के प्रकाशन मे हो सकता था ।

मुरासाकी शिकिबू ने अपना 'गेंजी मोनोगातारी' ग्यारहवी सदी मे कभी लिखा । यह कृति उपन्यास है जिसमें राजकुमार गेंजी, उसके पुत्र और पौत्र का जीवन चित्रित हुआ है । काना शैली मे लिखी यह रचना जापानी भाषा का पहला उपन्यास है । साथ ही यह ससार का पहला मनोवैज्ञानिक उपन्यास भी है जो यूरोपीय तत्सम उपन्यासो के सदियो पहले लिखा गया । उसकी शैली कुछ अलकार बोझिल जरूर है परन्तु मुरासाकी अपने भावो को बडी खूबी और सरलता से व्यक्त करती है । उसकी शैली में प्रवाह है और उसका वर्णन हृदयग्राही है । हेइयन-युग के जापानी दरबार का चित्र उसने इस सच्चाई से खीचा है कि विगत भूत एक बार फिर सजीव हो उठा है । मुरासाकी ने जमाने की यौन आजादी तक को नही छिपाया है । इस कृति ने स्वय प्राचीन कृतियो की विशेषताएँ अगीकृत की और अपना प्रभाव उत्तरकालीन रचनाओ पर गहरा डाला ।

उस काल की अनेक अन्य रचनाओ में प्रधान 'ताकेतोरी मोनोगातारी' (बसफोड की कहानी) थी । उसे भी कुछ लोगो ने जापान का पहला उपन्यास कहा है । इसी प्रकार की

१ Murasaki Shikibu

एक दूसरी कृति ईसे की कहानी (ईसे मोनोगातारी) है। परन्तु वस्तुत ये अप्सरालोक की कहानियाँ-मात्र हैं।

मुरासाकी की समकालीना एक और प्रतिभाशालिनी नारी थी सेई शोनागोन[१] जिसने दसवी सदी के उत्तरार्द्ध मे अपना 'माकरा नो सोशी' (तकिया-स्केच) लिखा। इस प्रकार के स्केच को जापानी 'जुइहित्सु' कहते थे। उसमे शोनागोन ने दरबारी जीवन का प्रत्यक्ष चित्र खीचा। 'तकिया-स्केच' उसकी इस कृति को इसलिए कहते थे कि लेखिका अपनी हस्तलिपि तकिए के नीचे रखती थी और विचार सोने के पहले या बाद में लिख लिया करती थी।

प्राचीन और समकालीन (अर्वाचीन) कविताओ का सग्रह 'कोकिंशू' ९२२ के लगभग प्रस्तुत हुआ। उसे तत्कालीन चार महान् कवियो—कि नो त्सुरायुकी,[२] कि नो तोमोनारी,[३] ओचीकोची नो मित्सूने[४] और मीबू नो तादामीने[५]—ने सगृहीत किया। सगहकर्ताओ मे प्रधान कि नो त्सुरायुकी था। 'मान्योशू' के बाद उस प्रकार के सग्रहो में यह सबसे उत्तम था। उसमे बाका (छोटी कविताएँ) शैली की प्राय १००० कविताएँ है। लम्बी कविताएँ उसमें कुल पाँच हैं। उममे पिछली दो सदियो की कविताएँ सगृहीत हुई।

त्सुरायुकी ही "तोसा-निक्की" (तोसा-डायरी) ९३५ का भी रचयिता था, वह तोसा का शासक था और यह रचना उसने क्योटो लौटते समय राह में की थी। उस काल के पर्यटको का जीवन उस कृति में सरल विनोदप्रिय शैली मे अकित हुआ है। सम्राट् के दरबार में स्वाभाविक ही विविध रस्म-रिवाजो का प्रचलन था। उसकी एक अपनी आचार-व्यवस्था थी, अपने कानून-कायदे थे। वे एकत्र कर "ऐनिशिया" (एगी की व्यवस्था, ९०५-२७) नाम से सगृहीत हुए। उसमें दरबार, शासन उसके विविध विभागो के नियमो-उपनियमो का सग्रह हुआ। ग्रन्थ चीनी मे था।

: ४ :

कामाकुरा-युग (११९२-१३३२)

गृहयुद्ध मे मीनामोतो विजयी हुए। उनके नेता मीनामोतो नो योरितोमो[६] ने अपनी राजधानी क्योटो से प्राय ३०० मील पूरब कामाकुरा मे स्थापित की। अगले डेढ सौ वर्ष उसी के नाम पर कामाकुरा-युग कहलाए। उसी युगदेश में सैनिको आदि के रूप मे मध्यवर्ग का उदय हुआ। साथ ही सामन्तवादी परपरा का जो विकास हुआ तो सम्राट

---

१ Sei Shonagon, २ Ki no Tsurayuki, ३ Ki no Tomonari, ४ OchiLochi no Mitsune, ५ Mibu no Tadamine, ६ Minamoto no Yoritomo

का वैभव और दरबार के अमीरो का दबदबा कम हो चला। सैनिक-सत्ता की अब प्रतिष्ठा हुई। साम्राज्य का दरबार अब भी क्योटो में लगता था। परन्तु स्थिति निरन्तर नाजुक होती जा रही थी, शक्ति के साथ ही उत्साह क्षीण होता जा रहा था और मन का विषाद बढता जा रहा था। दरबारी कृतियो पर उस विषाद की छाया पडी और काव्यधारा मे करुणा उमड पडी।

परन्तु कामाकुरा में वैभव लहरें ले रहा था, मन्दिर बन रहे थे, धार्मिक सम्प्रदाय खडे हो रहे थे, धार्मिक व्याख्यान और रचनाएँ प्रस्तुत होने लगी। चीनी बौद्ध सम्प्रदाय "जैन दर्शन" के रूप में जापानी सेनानायको और उनके अनुयायियो को बहुत प्रिय हो चला। फिर धीरे-धीरे यही सम्प्रदाय जापान मे सास्कृतिक-शक्ति बन गया और साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला सभी क्षेत्रो में मूलभूत प्रेरणा बना। अभिव्यक्ति के सारे साधन उसी आधार से मुखरित हुए।

अब तक सस्कृत समाज का जीवन स्वच्छन्द रोमाटिक और दार्शनिक था। फिर वही आन्तर्निविष्ट, यथार्थवादी और सीमाबद्ध हो गया। कामाकुरा युग मे कई प्रकार की रचनाएँ हुई—प्रबन्ध काव्य, ताका-कविताएँ, जुनहित्सु, बौद्ध निबन्ध, सूक्त। देशी विदेशी समन्वय से उसी काल एक राष्ट्रीय लिपिबद्ध भाषा का भी उदय हुआ जिससे साहित्य के विकास में आसानी हुई। प्राचीन कृतियो और "क्लासिक" पढने की भी लोगो में प्रवृत्ति हुई। काव्य-सग्रहो की अनेक नकल प्रस्तुत हुई। उत्तरकालीन विद्वानो को अपनी खोज मे इनसे बडी सहायता मिली। "क्लासिक" में लोगो की रुचि ने "शिन्तो" धर्म के प्रति आसक्ति उत्पन्न की, फिर राष्ट्रीय राज्य की चेतना हुई। कामाकुरा साहित्य मूलत अनुकरणशील और नीतिपरक था, व्यक्तित्वहीन मौलिकता रहित। वातावरण विषादपूर्ण था। विषाद का कारण अन्य घटनाओ के अतिरिक्त बौद्ध-धर्म की करुण पुकार थी। उसके अनुसार यह युग भी विषाद का था।

कामाकुरा युग की दो प्रसिद्ध कृतियाँ "हेइके मोनोगातारी" और "गेनपेई सेइ-सुइकी" (गेंजी और हेइके का उत्थान-पतन) हैं। दोनो सभवत समान आधार से उठी। पहले के निर्माण काल अथवा रचयिता का पता नही। रचना युद्ध सबधी है, जापानी साहित्य में असाधारण। इसका गायन 'बीवा' के तारो के स्वर के साथ होता था। उस काल की अन्य कृतियो में बौद्ध नैराश्य की धारा प्रवाहित है। उस युग की अन्य महत्वपूर्ण कहानियाँ निम्नलिखित थी—हामुरो तोकीनागा[1] की 'हेइजी मोनोगातारी' और 'होगेन मोनोगातारी" तथा अज्ञातनामा रचयिता की "मीजू कागामी" (जल-दर्पण)। ताका कविताओ की रचना क्योटो में जारी रही यद्यपि उनमे मौलिकना का अभाव पर्याप्त मात्रा

१ Hamuro Tokinaga

मे था। "ह्यकुनिन इस्शू" (सौ कवियो की एक-एक कविताओ का सग्रह) क्योटो का प्रतिनिधि सग्रह है। इसे फूजीवारा नो सदाइए[१] नामा एक पडित कवि ने १२३५ के लगभग प्रस्तुत किया।

उस काल की करुण चेतना का नैराश्यपूर्ण चित्र "होजोकी" (दस वर्ग फुट झोपडी के नोट) मे मिलता है। उसे कामो नो चोमेई[२] ने १२१२ मे लिखा था। यह भी वैयक्तिक अनुभूति का निबन्ध स्केच है जिसमे उस युद्धकालीन जगत में बौद्धधर्म का आकर्षण निरूपित हुआ है। कामो की अन्य रचनाएँ 'मुक्योशो' (अज्ञात चयन) और शीकी मोनोगातारी (चार ऋतुओ की कहानी)। "तन्नीशो" सम्भवत यूइन-बो[३] की कृति है। यह बौद्धधर्म के शिन सम्प्रदाय के प्रवर्तक शिनरन शोनिन[४] का शिष्य था। इस ग्रन्थ में दार्शनिक विवेचन और शका-समाधान है। १२६० में बौद्ध निचिरेन सम्प्रदाय के प्रतिष्ठाता निचिरेन शोनिन[५] ने "रिस्शो अकोक रोन" (राष्ट्रीय रक्षा) की रचना की। उसमे होजनो सरकार की आलोचना और धार्मिक अनुराग की प्रशसा है।

: ५ :

नाम्बोकुचो और मुरोमाचीयुग (१३३२-१६०३)

१३३२ से १३९२ तक का काल नान्बोकुचो-युग कहलाता था। इस बीच दो साम्राज्य कुलो ने जापान पर शासन किया। साठ वर्ष बाद फिर क्योटो में एकान्त साम्राज्य की स्थापना हुई और अगला युग मुरोमाची कहलाया। गृहयुद्धो का अभाग्य काफी अरसे तक देश को घेरे रहा। किसानो की स्थिति दिन-ब-दिन खराब होती गई, उनके विद्रोह भी चलते रहे। मुरोमाची युग तो इसी कारण जापान का अन्धकार-युग कहलाता है।

नाम्बोकुचो युग की प्राय आधी सदी कला और साहित्य की दृष्टि से काफी सम्पन्न हुई। चित्रकला तो अपने चरम विकास को पहुँच गई। लिरिक ड्रामा (नो) अपनी पूर्णता को प्राप्त हुआ। देश की अराजक दशा का प्रतिबिम्ब समसामयिक साहित्य पर पडा। अन्धकारयुग होते हुए भी जिस सामन्त परपरा का जापान में विकास हुआ, उससे सास्कृतिक चेतना केवल साम्राज्य दरबार मे केन्द्रित न रह कर देश के अनेक स्थानो में फैली, अनेक केन्द्र उठ खडे हुए। वस्तुत उसी सघर्ष का परिणाम था, पुराने रेकॅर्ड, ख्यातें आदि पढे जाने लगे और उन पर भाष्य लिखे जाने लगे।

---

१ Fujiwara no Sadaie, २ Kamo no Chomei, (११५४-१२१६)
३ Yuien-Bo; ४ Shinran Shonin (११७३-१२६२), ५ Nichiren Shonin

कितावाता के चिकाफुसा[1] ने "जिन्नो शोता-की" (दैवी राजाओ के सही उत्तराधिकार का इतिहास) गो-मुराकामी[2] के शासन-काल में लिखा। उसने दक्षिणी साम्राज्य के पक्ष का समर्थन किया। साथ ही उसने आरम्भ से लेकर १२८८ तक जापानी इतिहास पर राजनीतिक विचार प्रकट किये। यह मूलत राष्ट्रीय ग्रथ है, जिसमें ग्रथकार ने सारे विदेशी प्रभावो से जापान की सास्कृतिक चेतना को अपने मूल्याकन से पृथक् रखने का प्रयत्न किया है। स्वाभाविक ही इसका साहित्यिक महत्त्व इतना नही, जितना ऐतिहासिक है। अक्षरकालीन लेखको को इस ग्रथ ने बडा प्रभावित किया।

"ताइहेइकी" (शाति का रेकॅर्ड) ल १३६९ कोजिमा[3] एक पुरोहित की रचना बताई जाती है। उसमे ११९२ और १३६८ के बीच की देश की अराजक स्थिति और सामन्ती सरकारो के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। इसकी भाषा बडी सरल और चीनी मिश्रित है। वस्तुत इसी से आधुनिक साहित्यिक शैली का जापान में आरम्भ होता है। पुरोहित केंको[4] ने नाम्बोकुचो-युग में "त्सरेजरे-गुस्सा" की रचना की। इसमें जीवन के विविध २४० विषयो पर विचार एकत्र किये गये हैं। विचार एक ही व्यक्ति के हैं। यह भी जुईहित्सू परपरा की ही कृति है, इसे अप्रयास पढा जा सकता है।

लिरिकल ड्रामा को जापानी में "नो" कहते थे। उसका विशेष विकास १४वी सदी मे हुआ। प्राचीन ड्रामा का धर्म से अविच्छिन्न सबध था। उसमे अधिकतर नृत्यो का सगम होता था। कागुरा, बुगाक, देंगाक् और सारूगाकू नाम के नृत्य उस ड्रामा के विशिष्ट अग थे। 'नो' किस्म का ड्रामा उनके समन्वय से प्रस्तुत हुआ। उसमें अब आत्मगत भाव प्रकाशन और डायलॅगो का भी समावेश हुआ। पहले यह शिन्तो त्योहारो पर ही खेला जाता था, परन्तु धीरे-धीरे उसने लौकिक रूप भी धारण किया। कानामी[5] और सियामी[6] पिता-पुत्र ने उसे पूर्ण बनाया। ड्रामा के चार मूल सिद्धात कान्जे, कोन्याकू, कोगो और होशो थे। ये नो ड्रामा सबधी विरोधी विचार प्रस्तुत करते है। विशेषत उसके साहित्यिक मूल्याकन पर।

नो के गीतो को 'यौक्योकू' कहते थे। वे गद्य मिश्रित पद्य है। गद्य भाग में कामाकुरा की दरबारी भाषा में प्रशस्तिवादी शब्दावली का जो उपयोग हुआ है, उससे शैली बोझिल हो गई है। पद्य भाग में प्राचीन सुभाषित-सग्रहो की ताका कवितायें अगीकृत कर ली गई है। नो प्रकार के नाटको को खेलते समय चेहरो का इस्तेमाल किया जाता था। १३ प्राय १८ विविध प्रकार के चेहरे रगमच पर प्रदर्शित होते थे। ये विभिन्न भावो के प्रतीक माने जाते

---

१ Kitabatake Chikafusa (१२९३-१३५४), २ Go-Murakami (१३२८-६८), ३ Kojima, ४ Priest Kenko; ५ Kan'ami (१३३३-८४), ६ Seam (१३६३-१४४३)

थे। इस प्रकार के नाटको के कुछ नाम ये हैं —

ताकासागो, ओइमात्सू, नानिवा, दोजोजी और तोसेन।

"नो" ड्रामा खेलते समय बीच-बीच में विनोद के लिए फार्स होता था। उसे "क्योगेन" कहते थे। हलके-फुलके वजन पर बोलचाल की भाषा अथवा सर्वथा जन-बोली में ये प्रस्तुत किये जाते थे। इनमें कोरस आदि की व्यवस्था नही थी। पिछले जापानी ड्रामा का विकास "नो" और "क्योगेन" के समन्वय से हुआ।

: ६ :

इदो-युग

(१६०३-१८६८)

सोलहवी सदी के अन्त मे गृह-युद्धो का अन्त हुआ और शोगुल राजकुल इदो (टोकियो) मे प्रतिष्ठित हुआ। यद्यपि क्योटो में सम्राट् का दरबार किसी-न-किसी रूप मे बना रहा। १६वी सदी के मध्य जापान का सबध पश्चिम से हुआ। पुर्तगाली, डच और अग्रेज सौदागर पादरियो के साथ-साथ वहाँ जा पहुँचे। ईसाई धर्म का प्रचार हो चला। परन्तु सत्रहवी सदी के मध्य तक फिर जापान का सबध उधर से टूट गया क्योकि नई नीति ने विदेशियो को देश से सर्वथा बाहर किया था। ईसाई धर्म पर भी गहरे आघात हुए। तोकूगावा सामन्तवादिता १९वी सदी के मध्य त— देश को अपने फौलादी शिकजे से जकडे रही। उसी बीच सौदागरो का एक नया वर्ग उठ खडा हुआ—जिसने राष्ट्र का बाजार अपने हाथ मे कर लिया। अपेक्षाकृत शाति के कारण इदो-काल में सस्कृति का विकास हुआ और इदो साहित्य का केन्द्र बन गया।

इदो-काल मे शिक्षा का पर्याप्त प्रचार हुआ। पुरोहित चीनी और जापानी ग्रन्थो की नकल के लिए नियुक्त हुए और शिक्षा के धनी प्रेमियो ने बहुत से स्कूल खोले। अब जापानी इतिहास में पहली बार सैनिक के गुणो में साहित्यिक ज्ञान भी गिना जाने लगा। मुद्रण का आरम्भ नारा-काल में ही हो चुका था, परन्तु उसका भी विशेष व्यवहार इसी काल में हुआ जिससे साहित्य के प्रचार में विशेष सहायता मिली। इदो साहित्यिक विषयो की विविधता में पिछले युगो की अपेक्षा अधिक समृद्ध हो गया। जापानी भाषा में फिर एक बार मूलभूत परिवर्तन हुआ। अनेक सास्कृतिक प्रवृत्तियो की आवश्यकता के लिए चीनी शब्द बडी सख्या में ले लिये गये, जिससे जापानी भाषा की लाक्षणिक निधि बढी। व्याकरण की व्यवस्था और सरल कर ली गई और साहित्यिक शैलियो का अभूतपूर्व गठन हुआ।

इदो-काल में चीनी ज्ञान के प्रति भी लोगो का विशेष आकर्षण हुआ। उसने धीरे-धीरे आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। उस आन्दोलन का प्रारम्भ करनेवाला

फूजीवारा सेईका[1] था जिसने कन्फ्यूशस सबधी नई चेतना का देश में प्रचार किया। उसके ग्रथो ने इदो के साहित्यिक और राजनीतिक आदर्श निश्चित कर दिये। कामाकुरा काल से ही जनता के ऊपर एक कठोर आचार-व्यवस्था लग चली थी। उसकी परपरा इदो-काल तक अपनी चरम पूर्णता को प्राप्त हो गई और स्वाभाविक तथा कृत्रिम जीवन के पारस्परिक सघर्ष शुरू हो गये। इसी सघर्ष ने अनेक करुण नाटक, यौन उपन्यास और अन्य विविध साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत की, जो इतिहास, कल्पना, हास्य और भावकता का अद्भुत मिश्रण थी। इदो-काल का सबसे महान् चीनी ज्ञान का विद्वान आराई हाकुसेकी[2] था। उसने १७वी सदी के सामन्तो पर एक वृहद् ग्रन्थ "हाकान्यू" (१७०१) रचा। उसमे उसने उस सामन्ती युग का खासा भण्डाफोड किया। सेईका के शिष्य हयाशी राजान[3] ने अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रथ लिखे और चीनी कविताये रची। नाकाइ तोजू[4] भी उस काल में अच्छा पडित हुआ। तब का एक प्रकाण्ड पडित कैबारा एक्किन[5] था। जिसने प्राय १०० ग्रन्थ लिखे। किनोशिता जुनान[6] उस काल के 'चू हसी' परपरा के विद्वानो में सबसे महान् था और उसके पास सबसे अधिक सख्या मे विद्यार्थी थे। उस काल के अन्य चीनी ज्ञान के पडित कुमाजावा बान्जान,[7] यामागा सोका,[8] इतो जिन्साई[9] और ओग्यू सोराई[10] थे। चीनी ज्ञान का आदोलन निश्चय ही दीर्घकालीन नही हो सकता था और शीघ्र ही उसके विरुद्ध एक आदोलन उठ खडा हुआ। उस आन्दोलन का प्रधान उद्देश्य जापानी-साहित्य का अध्ययन था।

इस नये जापानी दृष्टिकोण का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ जापान का इतिहास 'दाई-निहोन-शी' था जिसे तोकूगावा मित्सुकुनी[11] ने शुरू किया था। १६५७ मे प्रारम्भ होकर यह ग्रथ उसके जीवन-काल मे ही प्राय समाप्त हो गया था। परन्तु उसके अतिम भाग मेइजी-काल (१८६८-१९१२) में लिखे गये। ग्रन्थ प्राचीनतम काल्पनिक जिन्मू के शासनकाल से १४१३ मे सम्राट गो-कोमात्सू के राज्यकाल तक है। भाषा उसकी चीनी है। इधर के जापानी इतिहास में इतिहासकार, कवि और भाषा शास्त्री मोतूरी नोरिनागा[12] एक महान् व्यक्ति हो गया है। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ 'कोजिकी देन' (कोजिकी का भाष्य) है जो ४९ खडो में १७९८ मे समाप्त हुआ। उसमें चीनी आचार और दर्शन के विपरीत प्रतिक्रिया स्पष्टत प्रकट की गई है। उस परम्परा के अन्य विद्वानो में कामो नो माबूची[13]

---

१ Fujiwara Seika (१५६१-१६१९), २ Arai Hakuseki (१६५७-१७२५), ३ Hayashi Razan (१५८३-१६५७), ४ Nakae Toju (१६०८-१६४८); ५ Kaibara Ekken (१६३०-१७१४); ६ Kinoshita Jun'an (१६२२-९८), ७. Kumazawa Banzan, ८ Yamaga Soko, ९ Ito Jinsai; १०. Ogyu Sorai, ११ Tokugawa Mitsukuni (१६२८-१७००), १२ Motoori Norinaga (१७३०-१८०१), १३. Kamo No Mabuchi (१६९७-१७६९)

हिराता आत्सूताने[१] और 'निहोन गाइशी' का रचयिता राय सान्यो[२]।

चीनी पाण्डित्य और विचारधारा के विपरीत इस प्रतिक्रिया ने एक बडे राष्ट्रीय सास्कृतिक आन्दोलन का रूप धारण किया, जिसका एक परिणाम १८६८ में मेइजी कुल की प्रतिष्ठा हुई। उस काल की साहित्यिक रचनाओ में विशेष विकास 'कावुकी' ऐतिहासिक ड्रामा का हुआ। उसने अपना रूप केइचो-युग (१५९६-१६१४)में पाया। वह जापान का लोकप्रिय ड्रामा था। मजे की बात तो उस सम्बन्ध मे यह है कि यद्यपि उसके सारे पात्र पुरुष होते है, उस प्रकार के नाटको का आरम्भ एक नारी ने किया। वह शिन्तो मन्दिर की नर्तकी ओकूनी[३] थी जिसने १५९६ मे क्योटो मे उसका पहला अभिनय किया। उस ड्रामा का विकास तीन ऐतिहासिक कालो मे हुआ (१) ओन्ना कावुकी (नारी रगमच), (२) वाकाशू कावुकी (तरुण रगमच) और (३) यारो-काबुकी (पुरुष रगमच)। नारी रगमच काल मे, जैसा नाम से ही प्रकट है, केवल नारियाँ ही अभिनय करती थी। रगमंच का प्रवन्ध तव नितान्त साधारण था। उसके सगीत, अभिनय आदि सभी कुछ साधारण थे। शोगुनी शासन ने 'अभिनेत्रियो का भावुक जीवन सार्वजनिक सदाचार के विपरीत समझ एक घोषणा द्वारा नारी रगमच का १६२९ में अन्त कर दिया। इसका परिणाम एक तो यह हुआ कि अभिनेत्रियाँ रगमच से प्राय सर्वथा अलग कर दी गईं, और दूसरा यह कि नारी पात्र का पार्ट अल्पायु तरुण करने लगे। इस नई योजना को 'अन्नागाता' कहते थे। तरुण रगमच जो १६१७ से ही चला आ रहा था, अब पृष्ठभूमि से सामने आ गया और जनता का प्रिय पात्र वना। सुन्दर अल्पायु युवक उसमें नारी का पार्ट अदा करते थे। १६५२ मे एक दूसरी शोगुनी घोपणा से यह रगमच भी बन्द कर दिया गया। कारण यह वताया गया कि उसके अभिनेताओ का नारी दर्शको और सरक्षिकाओ से अनुचित सवध होने लगा है। इसके वाद पुरुष रगमच का आरम्भ हुआ। जिसमें नारी पार्ट का ही लोप कर दिया गया। धीरे-धीरे इस पिछले रगमच की परिस्थितियो में काफी परिवर्तन हुए और यद्यपि तोकुगावा शासन के वाद नाटकीय रगमच का जापान में पर्याप्त ह्रास हो चला।

साहित्य की शुद्धवादी दृष्टि से काबुकी ड्रामा को विशेप महत्त्व नही दिया जा सकता यद्यपि उसमें कुछ अपवाद भी थे। साहित्यिक गुणो की इस कमी के प्रभाव का कारण यह था कि उन नाटको मे प्रदर्शन को जितना महत्त्व दिया जाता था, उतना विपय तथा प्लाट को नही। धीरे-धीरे जव उस परपरा का और विकास हुआ तो यथार्थवाद के स्थान पर प्रतीकवाद प्रतिष्ठित हो गया जिसमे मुद्राओ का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा। इस प्रकार के नाटको की उत्तरोत्तर रचना हुई।

---

१ Hirata Atsutane (१७७६-१८४३), २ Rai Sanyo (१७८०-१८३२),
३. Okuni

फूजीवारा सेईका[१] था जिसने कन्फ्यूशस सबधी नई चेतना का देश में प्रचार किया। उसके ग्रथो ने इदो के साहित्यिक और राजनीतिक आदर्श निश्चित कर दिये। कामाकुरा काल से ही जनता के ऊपर एक कठोर आचार-व्यवस्था लग चली थी। उसकी परपरा इदो-काल तक अपनी चरम पूर्णता को प्राप्त हो गई और स्वाभाविक तथा कृत्रिम जीवन के पारस्परिक सघर्ष शुरू हो गये। इसी सघर्ष ने अनेक करुण नाटक, यौन उपन्यास और अन्य विविध साहित्यिक रचनाएँ प्रस्तुत की, जो इतिहास, कल्पना, हास्य और भावकता का अद्भुत मिश्रण थी। इदो-काल का सबसे महान् चीनी ज्ञान का विद्वान आराई हाकुसेकी[२] था। उसने १७वी सदी के सामन्तो पर एक वृहद् ग्रन्थ "हाकान्यू" (१७०१) रचा। उसमे उसने उस सामन्ती युग का खासा भण्डाफोड किया। सेईका के शिष्य हयाशी राजान[३] ने अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रथ लिखे और चीनी कवितायें रची। नाकाइ तोजू[४] भी उस काल में अच्छा पडित हुआ। तब का एक प्रकाण्ड पडित कैबारा एक्किन[५] था। जिसने प्राय १०० ग्रन्थ लिखे। किनोशिता जुनान[६] उस काल के 'चू ह्सी' परपरा के विद्वानो में सबसे महान् था और उसके पास सबसे अधिक सख्या में विद्यार्थी थे। उस काल के अन्य चीनी ज्ञान के पडित कुमाजावा बान्जान,[७] यामागा सोका,[८] इतो जिन्साई[९] और ओग्यू सोराई[१०] थे। चीनी ज्ञान का आदोलन निश्चय ही दीर्घकालीन नही हो सकता था और शीघ्र ही उसके विरुद्ध एक आदोलन उठ खडा हुआ। उस आन्दोलन का प्रधान उद्देश्य जापानी-साहित्य का अध्ययन था।

इस नये जापानी दृष्टिकोण का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ जापान का इतिहास 'दाई-निहोन-शी' था जिसे तोकूगावा मित्सुकुनी[११] ने शुरू किया था। १६५७ मे प्रारम्भ होकर यह ग्रथ उसके जीवन-काल में ही प्राय समाप्त हो गया था। परन्तु उसके अतिम भाग मेइजी-काल (१८६८-१९१२) में लिखे गये। ग्रन्थ प्राचीनतम काल्पनिक जिन्मू के शासनकाल से १४१३ मे सम्राट गो-कोमात्सू के राज्यकाल तक है। भाषा उसकी चीनी है। इधर के जापानी इतिहास मे इतिहासकार, कवि और भाषा शास्त्री मोतूरी नोरिनागा[१२] एक महान् व्यवित हो गया है। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रथ 'कोजिकी देन' (कोजिकी का भाष्य) है जो ४९ खडो मे १७९८ में समाप्त हुआ। उसमे चीनी आचार और दर्शन के विपरीत प्रतिक्रिया स्पष्टत प्रकट की गई है। उस परम्परा के अन्य विद्वानो में कामो नो माबूची[१३]

---

१ Fujiwara Seika (१५६१-१६१९), २ Arai Hakuseki (१६५७-१७२५), ३ Hayashi Razan (१५८३-१६५७), ४ Nakae Toju (१६०८-१६४८), ५. Kaibara Ekken (१६३०-१७१४), ६ Kinoshita Jun'an (१६२२-९८), ७. Kumazawa Banzan; ८ Yamaga Soko, ९ Ito Jinsai; १०. Ogyu Sorai, ११ Tokugawa Mitsukuni (१६२८-१७००), १२ Motoori Norinaga (१७३०-१८०१); १३. Kamo No Mabuchi (१६९७-१७६९)

हिराता आत्सूताने[१] और 'निहोन गाइशी' का रचयिता राय सान्यो[२]।

चीनी पाण्डित्य और विचारधारा के विपरीत इस प्रतिक्रिया ने एक बडे राष्ट्रीय सास्कृतिक आन्दोलन का रूप धारण किया, जिसका एक परिणाम १८६८ में मेइजी कुल की प्रतिष्ठा हुई। उस काल की साहित्यिक रचनाओ मे विशेष विकास 'काबुकी' ऐतिहासिक ड्रामा का हुआ। उसने अपना रूप केइचो-युग (१५९६-१६१४)मे पाया। वह जापान का लोकप्रिय ड्रामा था। मजे की बात तो उस सम्बन्ध मे यह है कि यद्यपि उसके सारे पात्र पुरुष होते है, उस प्रकार के नाटको का आरम्भ एक नारी ने किया। वह शिन्तो मन्दिर की नर्तकी ओकूनी[३] थी जिसने १५९६ मे क्योटो मे उसका पहला अभिनय किया। उस ड्रामा का विकास तीन ऐतिहासिक कालो में हुआ (१) ओन्ना काबुकी (नारी रगमच), (२) वाकाशू काबुकी (तरुण रगमच) और (३) यारो-काबुकी (पुरुष रगमच)। नारी रगमच काल मे, जैसा नाम से ही प्रकट है, केवल नारियाँ ही अभिनय करती थी। रगमंच का प्रवन्ध तब नितान्त साधारण था। उसके सगीत, अभिनय आदि सभी कुछ साधारण थे। शोगुनी शासन ने 'अभिनेत्रियो का भावुक जीवन सार्वजनिक सदाचार के विपरीत समझ एक घोषणा द्वारा नारी रगमच का १६२९ में अन्त कर दिया। इसका परिणाम एक तो यह हुआ कि अभिनेत्रियाँ रगमच से प्राय सर्वथा अलग कर दी गईं, और दूसरा यह कि नारी पात्र का पार्ट अल्पायु तरुण करने लगे। इस नई योजना को 'अन्नागाता' कहते थे। तरुण रगमच जो १६१७ से ही चला आ रहा था, अब पृष्ठभूमि से सामने आ गया और जनता का प्रिय पात्र बना। सुन्दर अल्पायु युवक उसमे नारी का पार्ट अदा करते थे। १६५२ में एक दूसरी शोगुनी घोपणा से यह रगमच भी बन्द कर दिया गया। कारण यह वताया गया कि उसके अभिनेताओ का नारी दर्शको और सरक्षिकाओ से अनुचित सबध होने लगा है। इसके बाद पुरुष रगमच का आरम्भ हुआ। जिसमे नारी पार्ट का ही लोप कर दिया गया। धीरे-धीरे इस पिछले रगमच की परिस्थितियो में काफी परिवर्तन हुए और यद्यपि तोकुगावा शासन के बाद नाटकीय रगमच का जापान में पर्याप्त ह्रास हो चला।

साहित्य की शुद्धवादी दृष्टि से काबुकी ड्रामा को विशेप महत्त्व नही दिया जा सकता यद्यपि उसमें कुछ अपवाद भी थे। साहित्यिक गुणो की इस कमी के प्रभाव का कारण यह था कि उन नाटको मे प्रदर्शन को जितना महत्त्व दिया जाता था, उतना विपय तथा प्लाट को नही। धीरे-धीरे जब उस परपरा का और विकास हुआ तो यथार्थवाद के स्थान पर प्रतीकवाद प्रतिष्ठित हो गया जिसमे मुद्राओ का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा। इस प्रकार के नाटको की उत्तरोत्तर रचना हुई।

---

१. Hirata Atsutane (१७७६-१८४३), २ Rai Sanyo (१७८०-१८३२);
३ Okuni

इदो-काल का सबसे बडा नाटककार चिकामात्सू मोन्जाएमोन था।[1] उसने ऐतिहासिक और गार्हस्थ्य दो प्रकार के पाँच-पाँच अको वाले बडे-बडे नाटक लिखे। मनोरजन को उसने नाटकीयता की रीढ मानी। उसके नाटको में प्रधान थे—'कोक्कुसेन्या कास्सेन, (कोकुसेन्या के युद्ध), 'सोनेजाकी शिन्जू' (सोनेजाकी का दोहरा आत्मघात), 'मेइदो नो हिक्याकू' और 'हाकाता कोजोरो नामोमाकूरा'। तब के अन्य जाने हुए नाटककार ताकेदा एजुमो[2] नामिकी शोजो[3] और कावाताके मोकुआमी[4] थे।

इदो-युग की काव्यधारा में ताका से भी छोटी कविताओ का विकास हुआ। उनका नाम 'हाइकू' अथवा 'होक्कू' था। पिछले ही काल में उस काव्य-रूप का प्रारम्भ हो गया था और धीरे-धीरे उसका विकास होने लगा था। इनमें ऋतु की ओर कवि का सकेत करना आवश्यक था। वर्णन वस्तुवादी था परन्तु कवि से आशा की जाती थी कि वह अपने चित्रो द्वारा पाठको के मन में आत्मानुभूति के समानान्तर चित्र उत्पन्न कर दे। अन्य बातो मे ये अधिकतर 'ताका' के अनुरूप थी। इन कविताओ मे प्रकृति का वर्णन खासा रहता था। इनमें और ताका कविताओ में जापानी-साहित्य का सौंदर्य निखर आया। हाइकू कविताओ को विशेपकर मात्सूओ-बाशो[5] और उसके शिष्यो ने अपने प्रचार द्वारा लोकप्रिय बनाया। उस परपरा के अन्य कवि एनीमोतो कीकाकू[6] कागा नो चिओ,[7] तानीगुची बुसोन[8], कोबायाशी इस्सा[9] थे।

इदो-युग में पहली बार जनता का दृष्टिकोण उपस्थित करने वाले उपन्यासकार हुए। ईवारा सैकाकू[10] ने समकालिक जीवन सबधी उपन्यासो का आरम्भ किया। उसके उपन्यासो में यौन आनन्द का चित्रण नितान्त अमर्यादित मात्रा में हुआ। इसी से उसकी कई रचनायें सेसर के क्रोध का भी शिकार हुईं, यद्यपि उसके यथार्थवाद मे इधर फिर बडी रुचि दिखाई जाने लगी है। उसकी कुछ कृतियो के नाम हैं 'फूदोकोरो ना सुजूरो', 'कोशोकू इचिदाई ओतोको' (एक कामुक का जीवन), 'कोशोकू इचिदाई ओन्ना' (एक कामुकी का जीवन), 'कोशोकू गोनिन ओन्ना' (कामुकी नारियो की पाँच कहानियाँ)।

जिपेन्शा इक्कू[11] ने पर्यटन सबधी हास्यपरक उपन्यास 'हिजा कुरीगे' लिखा जो जापानी-साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान रखता है। जन-जीवन का यथार्थवादी चित्रण शिकितेई सान्बा[12] की कृतियो में हुआ है। 'उकियो बूरो' (ससार का स्नान गृह) 'उकियोदेको' (ससार

---

१ Chikamatsu Monzaemon (१६५३-१७२४), २ Takeda Izumo (१६९१-१७५६), ३ Namiki Shozo (१६३०-९३), ४ Kawatake Mokuami (१८१६-९३), ५ Matsuo Basho (१६४४-१६९४), ६ Enomoto Kikaku (१६६१-१७०७), ७ Kaga no Chiyo (१७०३-७५), ८ Taniguchi Buson (१७१६-८३), ९ Kobayashi Issa (१७६३-१८२८), १० Ibara Saikaku (१६४२-९३), ११ Jippensha Ikku (१७६६-१८३१), १२ Shikitei Sanba (१७७६-१८२२)

की नाई की दूकान), 'शिजहानी कसे' (४८ आदतें), और 'कोकोन हियाकुनिन वाका' (प्राचीन और अर्वाचीन १०० मूर्ख) इसी प्रकार की उसकी यथार्थवादी कृतियाँ हैं। उस काल का एक प्रकाण्ड लेखक क्योकुतेई बाकिन [1] था जिसने चीनी परपरा के रोमाण्टिक उपन्यास लिखे। उनमे से कुछ निम्नलिखित है —

'यूमीबारा जुकी' (नया चाँद), 'सेइयू की' (पश्चिम की यात्रा) 'सातोमी हाकेन्देन' (आठ कुत्तो की कहानी) और 'सुइको देन'। अन्तिम कृति चीनी 'शुई हू चुआन' का अनुवाद था।

: ७ :

वर्तमान-युग

(१८६८-१९४१)

वर्तमान काल के वस्तुत दो भाग हैं, एक १८६८ से १९१२ तक मेइजी युग और दूसरा १९१२ से १९४१ तक का ताइशो-शोवा युग।

१८६८ में तोकुगावा शोगुन काल के वाद देश की राजनीतिक व्यवस्था फिर से हुई। जब राजधानी क्योटो से हटाकर इदो मे स्थापित की गई। वाद में इदो का नाम टोकियो पडा। सम्राट् फिर से अभिषिक्त हुआ। व्यवसाय और शिक्षा के क्षेत्र मे एक नया प्रगतिशील युग आया। विज्ञान, राष्ट्रीयता और मानवतावादी सिद्धान्तो का प्रचार हुआ। पश्चिम ने इस बार जापान पर गहरा प्रभाव डाला। साहित्यिक दृष्टिकोण से इदोकाल की परपरा कुछ हद तक बनी रही। उसी परपरा मे कानाजावा रोबुन [2] ने १५ खडो मे अपना ग्रन्थ 'सेइयो हिजाकुरीगे' लिखा।

इन दिनो पश्चिमी भाषाओ का अध्ययन शुरू हुआ और उनके ग्रन्थो के अनुवाद प्रभूत मात्रा में प्रस्तुत हुए। राजनीति के क्षेत्र मे इस दृष्टिकोण का और अधिक विकास हुआ और पश्चिमी 'आइडियोलॉजी' के अनुकूल ही शासन की नई व्यवस्था सोची जाने लगी। रूसो [3], वोल्तेयर [4], मोन्तेस्क [5] और मिल [6] की रचनाओ ने जापानी पाठको पर गहरा प्रभाव डाला। जनसाधारण के लिए फिर राजनीतिक उपन्यासो की रचना शुरू हुई। यानो फूमिओ [7] ने १८८३ मे अपना राजनीतिक उपन्यास 'केइकोकू बिदान' लिखा। फुकुजावा युकीची [8] ने भी स्वतन्त्र रचनाओ और विदेशी ग्रन्थ रत्नो के अनुवाद मे जापानी भाषा का भडार भरा।

---

१. Kyokutei Bakin (१७६७-१८४८), २ Kanazawa Robun (१८२९-९४), ३ Rousseau ; ४ Voltaire, ५. Montesquieu, ६ Mill, ७ Yano Fumio (१८५०-१९३१), ८ Fukuzawa Yukichi (१८३४-१९०१)

१८८५ से राष्ट्रीय चेतना ने जोर पकडा और पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध जोरदार प्रतिक्रिया हुई। प्राचीन साहित्य और कला विशेष आदर के पात्र बने। समीक्षा-शास्त्र का भी उदय हुआ। त्सूबूची शोयो[1] ने 'शोसेत्सू शिन्जुई' लिखकर उपन्यास के तत्व पर प्रकाश डाला। १८८६ का यह प्रकाशन मेइजी-साहित्य के इतिहास में बडे महत्व का था। उसने साहित्य और कला को अपने ही स्तर पर अपने ही लिए विशिष्ट माना। उसने कला को आचार के बन्धन से नितान्त मुक्त कर दिया। उस दिशा मे यह दृष्टिकोण जापान के लिए नया था और उसका जापानी संस्कृति पर गहरा प्रभाव पडा। त्सूबूची ने उपन्यास और नाटक दोनो लिखे। नाटक उसके काफी प्रसिद्ध हुए। उनमें प्रधान 'किरीहितोहा, 'होनोतोगीसू कोजो राकूगेत्सू, (उषाकाल का अधकार) और 'माकिनोकाता' (महिला माकी) है। उसने काबूकी को सर्वथा काल्पनिक और नये युग के अनुपयुक्त कह उस पर कठोर आघात किया और उसके स्थान पर ऐतिहासिक नाटको को प्रतिष्ठित किया। उसने चरित्र को विशेष महत्व दिया। शेक्सपियर का उस पर काफी प्रभाव पडा था। जापानी रंगमंच उसके सहयोग से बदल चला।

अन्य यथार्थवादी साहित्यकारो मे अग्रणी फूताबातेई शिमेई[2], यामादा बिम्यो[3] थे और ओजाकी कोयो[4] थे। इनकी कृतियो ने बोलचाल की भाषा को साहित्य में विशेष महत्व दिया।

मेइजी-युग की सबसे महान् लेखिका हिगूची इचियो[5] थी। उसका उपन्यास "ताकेकुराबे" काफी प्रसिद्ध हो गया है। तोकुतोमी रोका[6] ने आत्मकथा परक ग्रन्थ लिखे। उस दिशा में 'शिजेन तो जिन्सेई' (प्रकृति और मानव) उसकी सुघड कृति थी। उसके उपन्यासों में सर्वोत्तम "हृतोतोगीसू" है। यथार्थवादी आन्दोलन के विरुद्ध तभी एक आदर्शवादी तथा रोमांटिक प्रतिक्रिया भी हुई। कोदा रोहान[7], आदर्शवाद का प्रमुख व्याख्याता था। उसने "गोजू नो तो" की रचना की। रोमांटिक कृतिकारों में उल्लेखनीय मोरी ओगाई[8], किताम्रा तोकोकू[9] और इजुमी क्योका[10] हैं।

मेइजी-युग में प्रायः अन्त में प्रकृतिवाद पराकाष्ठा को पहुँच गया और शीघ्र ही उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई। इसका एक कारण तो (१८९४-९५) का चीन-जापानी युद्ध था

---

१ Tsubouchi Shoyo (१८५९-१९३५); २ Futabatei Shimei (१८६४-१९०८), ३ Yamada Bimyo (१८६८-१९१०) ४ Ozaki [illegible] (१८६७-१९०३), ५ Higuchi [illegible] (१८७२-९६), ६ [illegible] (१८६८-१९२७), ७ Koda Rohan (जन्म १८६७), ८ Mori Ogai (१[illegible] १९२२), ९ Kitamura Tokoku (१८६८-९४), १० [illegible] (जन्म १८७३)

जिसके परिणामस्वरूप जापानियो न अपनी परपरागत सामाजिक व्यवस्था और रहने के तरीको में क्रातिकारी परिवर्तन आवश्यक समझा। दूसरा कारण स्वय यूरोपीय प्रकृतिवाद का प्रभाव था। टॉल्सटॉय[1], इब्सन[2], जोला[3], मोपसा[4] और अन्य प्रकृतिवादी बडी रुचि से पढे जाने लगे और देश मे उनकी सी कृतियो की माँग हुई। यथार्थवादी उपन्यासो की आलोचना काफी सख्त होने लगी। तीसरा कारण नीत्शे[5] के प्रभाव से व्यक्तिवाद का उदय था। प्रकृतिवादियो ने रोमाटिको की "कला के लिए कला" का आदर्श छोड दिया और वे जीवन की ओर झुके। उनके लिए नर-नारी का पारस्परिक प्रेम सेक्स प्रवृत्ति की अभिव्यजना-मात्र था। उनकी कृतियो मे यौन-जीवन खुले रूप से चित्रित हुआ। प्रकृतिवादी क्षेत्र में शिमामुरा होगेत्सु[6] और हासेगावा तिनकेई[7] का योग खूब मिला। दोनो उच्च कोटि के समीक्षक थे। जापान के अन्य प्रकृतिवादी निम्नलिखित थे—कोसुगी तेंगाई[8], कुनिकीता दोप्पो[9] शीमाजाकी तोसोन[10] तायामा काताई[11]। इनमे शीमाजाकी का स्थान अत्यन्त ऊँचा है। इस युग मे साहित्य के क्षेत्र में जितना काम उसने किया उतना किसी और ने नही। उसके प्रधान प्रकृतिवादी उपन्यास "हाकाई" (धर्मद्रोहिता) 'हारू' (वसन्त) और "इए" है। "हाकाई" में उसने जापान की वर्ग-व्यवस्था पर गहरी चोट की। 'हारू' का तरुणो पर गहरा प्रभाव पडा। शीमाजाकी ने डेढ हजार पृष्ठ के दो खडो मे अपना महान् उपन्यास "योआके माए" (प्रभात के पूर्व—१९३५) लिखा जो जापानी साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान रखता है। वह कृति निश्चय ही बडी प्रौढ है। उसमें लेखक का व्यक्तित्व और उसकी कला बहुत ऊँचे उठ गये हैं। साधारण सजीव शैली में जनता के जीवन का चित्रण हुआ है। यह कृति वस्तुत तत्कालीन जापानी समाज का प्रतिविम्ब है।

नात्सूमे सोसेकी[12] ने प्रकृतिवाद के विरुद्ध पहली आवाज उठाई। उसने अपने नये आन्दोलन (अवकाश-आन्दोलन) द्वारा लोगो को बताया कि यदि अवकाश का आनन्द वे ले सकें तो उनका जीवन सुखी और उज्ज्वल हो सकता है। रुचि और आचार उसके दर्शन के मूल आधार थे। उन्हें उसने अपनी अनेक कृतियो में प्रदर्शित किया। "मैं विल्ली हूँ" और 'बोटचान' उसकी दो कृतियाँ है जिनका जापान में बडा आदर हुआ है। आज के अनेक जापानी साहित्यकार नात्सूमे के ऋणी हैं। प्रथम महासमर के लगभग जापान में धार्मिक

---

१ Tolstoy, २ Ibsen, ३. Zola ४ Maupassant; ५ Nietzsche; ६ Shimamura Hogetsu (१८७१-१९१९); ७ Hasegawa Tenkei (जन्म १८७६), ८ Kosugi Tengai (जन्म १८६५), ९ Kunikita Doppo (१८७१-१९०८); १०. Shimazaki Toson (जन्म १८७२), ११ Tayama Katai (१८७१-१९३०), १२. Natsume Soseki (१८६७-१९१६)

साहित्य सहसा लोकप्रिय हो उठा। कागावा तोयोहीको[1] के दो उपन्यास 'मृत्यु के बाद' और 'सूर्य का निशानाबाज'—काफी पढे गये। वे धार्मिक दृष्टिकोण से ही लिखे गये थे। कुराता मोमोजा[2] उस क्षेत्र का सबसे बडा नाटककार है। "पुरोहित और उसके चेले" (१९१७) उसकी सुन्दरतम कृति है।

नव-रोमाटिक तानिजाकी जुनिचिरो[3] और नागाई काफू[4] ने भी प्रकृतिवाद पर बडी चोटें की और सौदर्यवाद का एक नया रूप अपनी रचनाओ में रखा। उस दिशा के अन्य लेखक योशी ईसामू[5] नागाता मिकिहीको[6] और तामूरा तोशीको[7] है। नव रोमाटिको से कही अधिक प्रकृतिवाद को व्याघात नव-आदर्शवादियो से पहुँचा। इनमे प्रधान मुशाकोजी सानेआत्सू[8] आरिशीमा ताकेओ[9] और सातोमी तोन[10] है। मानवतावाद के विशेष निरूपण का भी उदय हुआ। इसके प्रवर्तको ने प्रकृतिवादी यथार्थवाद पर विशेष जोर दिया। किकुची कान[11] आकुतागावा राइनोसूके[12] और कूमे मासाओ[13] इस दृष्टिकोण के है।

किकुची कान ताइशो-युग के प्रधान साहित्यिको मे है। उसने लोकप्रियता को साहित्यिक रचनात्मक सफलता का प्रमाण माना है। पहले तो उसने एकाकी लिखे, पीछे उपन्यास। वर्तमान लोकप्रिय शैली के उपन्यासो की नीव वस्तुत उसी ने डाली। वह जापान के सर्वोत्तम साहित्यिक मासिक पत्र 'बुगेई शुजू' का प्रकाशक और सम्पादक है। उसके प्रधान उपन्यास 'शिन्जू फूजिन', 'मान कातेई' और 'शोहाई' है। आकुतागावा ने वर्तमान जापान की सभवत सर्वोत्तम कहानियाँ लिखी है। 'राशोमोन और हाना' उसकी इस दिशा की सुन्दरतम कृतियाँ है।

ताइशो-युग के उत्तरार्द्ध मे जनवादी-साहित्य का उदय हुआ। जनवादी साहित्य से तात्पर्य सर्वहारा साहित्य से है। इस क्षेत्र के साहित्यिको को अपने सिद्धान्त के प्रचार के कारण जिस अत्याचार और अप्रतिष्ठा का सर्वत्र शिकार होना पडा है, [illegible] भी उसके शिकार है। सर्वहारा साहित्य के कुछ नमूने निम्नलिखित है 'कानीकोसेन' ([illegible], कोबायाशी तािकजी[14]) 'तैय्यो नो हाना' और 'तोराई [illegible]' ([illegible])

---

१ Kagawa Toyohiko (जन्म १८८८), २ [illegible] (जन्म १८९१), ३ Tanizaki Junichiro (जन्म १८८६), ४ [illegible] (जन्म १८७९), ५ Yoshii Isamu (जन्म १८८६), ६ [illegible] (जन्म १८९०), ७ Tamura Toshiko (जन्म १८८४), ८ [illegible] ९ Arishima Takeo १० [illegible], ११ [illegible] १२ Akutagawa [illegible], १३ [illegible] १४ [illegible] (१९०३-३३)

फ़ूसाओ[१]) और 'दोशीभाई' (ले० किशी सान्जी[२])। इस क्षत्र के कुछ और अग्रणी ताकेदा रिन्तारो[३] तोकुनागा नाओशी[४] हायामा योशिकी[५] और माएदाको कोई-चीरो[६] हैं।

उसी काल 'अल्ट्रा' प्रभाववादी प्रवृत्ति का भी विकास हुआ। उसका जापानी नाम 'शिव-काकाकू-हा' है। उसमें टेकनीक अनोखे प्रकार से प्रभाव का विकास करती है। उस दिशा की एक कृति योकोमित्सू रिईची[७] की "काकई" (यन्त्र) है। मेइजी-युग मे ताका परपरा के कवि निम्नलिखित हुए—सम्राट मेइजी[८], सासाकी[९], योसानो[१०], वाकायामा[११], इशिकावा[१२], कीताहारा[१३] और कूजोताकेको[१४]। हाइकू परपरा के कवि थे—मासाओका[१५], नात्सूमे[१६], ताकाहामा[१७], ओगिवारा[१८], मूराकामी[१९], ओनो[२०] और शिमादा[२१]। यूरोपीय परपरा की कविताएँ "शिन्ताईशी" कहलाती है। इस दृष्टिकोण के कवि निम्नलिखित है—

कुनीकीता[२२], मासाओका[२३], शिमाजाकी[२४], दोई[२५], मिकी[२६], किताहारा[२७], साइजो[२८] और नोगूची[२९]।

नाटको के क्षेत्र मे प्रधान कावाताके[३०], फुकूची[३१], त्सुबूची[३२], ओकामातो[३३], यामामोतो[३४] और कुराता[३५] हुए। "नो" के अतिरिक्त तीन और प्रकार के नाटक भी

---

१ Hayashı Fusao (जन्म १९०६), २ Kıshı Sanjı (जन्म १८९९), ३ Takeda Rıntaro (जन्म १९०४), ४ Tokunaga Naoshı (जन्म १८९९), ५ Hayama Yoshıkı (जन्म १८९४), ६ Maedako Koıchıro (जन्म १८८८), ७ Yokomıtsu Rıichı (जन्म १९९८), ८ Emperor Meıjı (१८५२-१९१२), ९ Sasakı Nobutsuna (जन्म १८७२), १० Yosano Hıroshı (१८७३-१९३५), ११ Wakayama Bokushı (१८८५-१९२८), १२ Ishıkawa Takuboku (१८८६-१९१४), १३ Kıtahara Hakushu (जन्म १८८६), १४ Kujo Takeko (१८८७-१९२८), १५ Masaoka Shıkı (१८६६—१९०२), १६ Natsume Sosekı (१८६७-१९१६), १७ Takahama Kyoshı (जन्म १८७४), १८ Ogıwara Seısensuı (जन्म १८८४), १९ Murakamı Kıjo (जन्म १८७०), २० Ono Bushı (जन्म १८८८), २१ Shımada Seıho (जन्म १८८२), २२ Kunıkıta Doppo (१८७१-१९०८), २३ Masaoka Shıkı (१८६६-१९०२), २४ Shımazakı Toson (जन्म १८७२), २५ Doı Bansuı (जन्म १८७१), २६ Mıkı Rofu (जन्म १८८९), २७ Kıtahara Hakushu (जन्म १८८६), २८ Saıjo Yaso (जन्म १८९२), २९ Noguchı Yonejıro (जन्म १८७५), ३० Kawatake Mokuamı (१८१६-१८९३), ३१ Fukuchı Ochı (१८४१-१९०६), ३२ Tsubouchı Shoyo (१८५९-१९३५), ३३ Okamoto Kıdo (जन्म १८७३), ३४ Yamamoto Yuzo (जन्म १८८७), ३५ Kurata Momozo (जन्म १८९१)

जापान में प्रचलित हैं—'शिन्पा, जिसका आरम्भ मेइजा-युग मे हुआ, सामाजिक जीवन प्रस्तुत करता है। उमी युग के अन्त में 'शिगेकी' नाट्य-आन्दोलन उठ खडा हुआ जिसने पश्चिमी ढग के नाटको का जापानी रगमच पर प्रादुर्भाव किया। "कावुकी" प्रकार के नाटको का उल्लेख पहले किया ही जा चुका है। वह भी आज अपने भाव व आकार मे काफी बदला जा चुका है। फिर भी जापान मे जीवित है और राष्ट्रीयता के योग ने जीवित रहेगा।

१९३७ में चीन के माथ युद्ध छिडने के वाद युद्ध सवधी साहित्य का प्रकाशन अमित मात्रा में हुआ और युद्धवादी उपन्यास, नाटक तथा कविताएँ लिखी जाने लगी। दूसरे महा-समर के मध्य तक निरन्तर उस साहित्य की आकृति और शक्ति बढती रही। शीघ्र ही जापान की पराजय ने सिद्ध कर दिया कि साम्राज्यवादी साहित्य, जनवाद का विरोधी है। आज के जापानी माहित्यकारो में काफी कुण्ठा है यद्यपि आशावादी जनहितैषी साहित्य का निर्माण भी सतत गति से वहाँ, अमरीकी सत्ता के बावजूद भी होता जा रहा है।

११. डच-साहित्य

डच संस्कृति की परपरा डच साहित्य का आरम्भ अन्धकवि बर्नलेफ[1] से मानती है। परन्तु लिखित अथवा अलिखित किसी प्रकार का उससे सम्पर्क रखने वाला साहित्य आज उपलब्ध नही। इससे डच साहित्य का इतिहास लिखते समय उस आकर्षक प्रसग को हमें छोड ही देना पडता है।

डच-साहित्य का पहला ऐतिहासिक कवि हेनरिक वॉन वेल्देके[2] था जो बारहवी सदी के अन्त में हुआ। उसने उस मध्यकाल (गोथिक) का आरम्भ किया जो नेदरलैण्ड्स के साहित्यिक इतिहास में समृद्धतम युग है। मध्यकाल का साहित्य एपिक, लिरिक, नीतिपरक, वर्णनात्मक, नाटकीय सभी प्रकार की कृतियो से सम्पन्न है।

'वान डेन वोस राइनार्डे' नेदरलैण्ड्स में गोथिक साहित्य की चोटी का काव्य माना जाता है। उस काल की कुछ और कृतियाँ लिरिक 'वटिस' नाटकीय काव्य 'लान्सेलाट वान डेनेमार्कन' और नाट्य रूपक 'एल्कलिक' है। उस काल की लिरिक सम्पदा असीम और विशेष ऋद्ध है। उसमें अलकारो का भी इतना उपयोग होने लगता है कि अगली 'वारोक' परपरा की प्राय तभी बुनियाद पड जाती है। पन्द्रहवी सदी मे डच साहित्य में एक प्रकार की अस्पष्टता दिखाई पडने लगी परन्तु अलकार-शास्त्रियो के साथ ही उन सुन्दर कवियो का भी प्रादुर्भाव हुआ जो स्वर्णयुग के अग्रदूत बने। १६वी सदी के अन्त में नेदरलैण्ड्स पृथक हो गया जिससे उसके साहित्य पर भी राजनीति की ही भाँति गहरा प्रभाव पडा। उत्तर और दक्षिण का विभाजन भी उस दिशा में गहरा अर्थ रखता था। दक्षिण मे 'गोथिक' परपरा का विकास हुआ और उत्तर में 'बारोक' का और अन्त मे दोनो का सामजस्य और समन्वय रोमाटिक आधार से हुआ। रोमाटिकवाद ने उत्तर और दक्षिण दोनो की 'वारोक' और 'गोथिक' परपराओ को एकत्र कर दिया। पहले तो इसमें कठिनाइयाँ हुई परन्तु धीरे-धीरे भाषा और साहित्य दोनो की एक प्रकार से एकता स्थापित हो गई। नेदरलैण्ड्स 'नीचे की भूमि' का नाम है। नीचे की भूमि से तात्पर्य समुद्र के धरातल के नीचे से है। उस भूमि के दो भाग थे, उत्तर और दक्षिण और दोनो का एकत्र नाम नेदरलैंड्स पडा।

गोथिक परपरा में चार विशिष्ट डच कवि हुए—हूफ्ट[3] गरब्रान्ड एड्रियान्सून ब्रेदेरो[4],

---

१. Bernlef, २. Henric Von Veldeke; ३ P C Hooft (१५८१-१६४७), ४. Gerbrand Adriaanszoon Bredero (१५८५-१६१८)

जुस्टवान डेन वोन्डेल[1] और कान्स्टेन्टिन हुइगन्स[2] चारो प्राय समकालीन थे। उनमें सबसे महान् वोन्डेल था। यद्यपि उसमे न तो हूफ्ट की सी लिरिक-प्रतिभा थी और न हुइगेन्स की सी मेधा। परन्तु उसमे एक बौद्धिक तत्परता थी और निस्सीम आविष्कार प्रेरणा, और इन दोनो से बढकर असीम कल्पना। उसकी कला नितान्त स्वाभाविक, सर्वथा अकृत्रिम, बिल्कुल सरल और सीधी थी। वह अपने विचारो के लिए देश की बडी से बडी शक्ति से लोहा लेने को तत्पर रहता था। इस रूप मे वह केवल विशिष्ट कवि ही न था बल्कि एक बहुमुखी सबल व्यक्तित्व था जिसकी निर्भीकता और साहस सन्देह के परे थे। लगता है उसमें 'गोथिक' और 'बारोक' दोनो एकत्र हो उठे थे। वह अपने सिद्धान्तो और विचारो का इतना कायल था कि आदर्शो के सबध मे कभी समझौता नही कर सकता था। हूफ्ट और हुइगेन्स, इसके विपरीत, दुनियादार थे और साथ ही असाधारण आकर्षण के केन्द्र थे। वोन्डेल के लिरिक नेदरलैंड्स के साहित्य के सुन्दरतम लिरिको में है। उनका रूप तो सुन्दर है ही, सत्य और मानवीय भावनाओ की गहरायी भी उनमें खासी है। चाहे जितना भी पुराना उसका लिरिक-साहित्य होता जाय वह कभी उपेक्षित नही हो सकता। साथ ही वह डच-साहित्य का पहला गद्य कलाकार भी है। हुइगेन्स और हूफ्ट दोनो शासकवर्ग के थे और इनमे पहला तो प्रतिभाशाली कवि और असाधारण बुद्धि का व्यक्ति था।

ब्रेदेरो, वोन्डेल के निकट औरो से अधिक था। उसकी शैली स्वाभाविक सद्योजात और सीधी है। वह किसी प्रकार की परपरा को स्वीकार नही करता था और आचारो तक के प्रतिबन्ध उसने न माने यद्यपि जब-तब वह अनुशोचना का शिकार नि सदेह हो जाया करता था। यही कारण है कि उसके गीतो मे दोनो छोर मिलते है—प्रेम-प्रजनित आनन्द के और साथ ही अत्यन्त भावुक धर्म-प्रेरणा के। इन चारो कवियो के अतिरिक्त अन्य भी अनेक छोटे-बडे कवि नेदरलैंड्स मे उस काल हुए जिनका उल्लेख यहाँ समीचीन न होगा। केवल एक जैकब कैट्स[3] की ओर सकेत कर देना काफी होगा। कैट्स जनता का कवि था और वह उसमें इतना लोकप्रिय हुआ कि लोग उसे 'पिता कैट्स' कहने लगे थे। १९वी सदी तक 'बाइबल' के साथ-साथ उसकी कविताओ के सग्रह भी लोग पास रखते थे।

जान लुइकेन[4] पिछले युग और १८वी सदी की सधि पर खडा है। वह उच्चकोटि का कवि था। पार्थिव प्रेम की प्रशसा में उसने तरुणावस्था में अपने 'जर्मन लिरिक' लिखे। जर्मन रहस्यवादियो के प्रभाव से वह बाद मे विशेष धार्मिक भी हो गया। परिणामस्वरूप उसने डच-साहित्य की उच्चतम और सुन्दरतम कविताएँ लिखी। उसने अपनी कविताओं के सग्रहो को अपनी ही कला से चित्रित भी किया। उस काल के तीन और कवि उल्लेखनीय

---

१ Joost Van den Vondel (१५८७-१६७९), २ Constantijn Huygens (१५९६-१६८७), ३ Jacob Cats, ४. Jan Luiken (१६४९-१७१२);

है—जान वॉन ब्रोइखुइजन[1], जान बैप्टिस्टा वेलेकेन्स[2] और हूबर्ट कार्नोलिस पूट[3]। १८वी सदी के विशिष्ट साहित्यकार नाटक और गद्य के क्षेत्र में हुए। पीटर लागेन्डिक[4] ने आचार सबधी नाटक और कॉमेडियाँ लिखी जो आज भी खली जाती है। उसके प्रधान नाटक निम्नलिखित थे—'पारस्परिक वैवाहिक कपट' 'राष्ट्रीय साहित्य का दर्पण' 'कामाचो के विवाह में डॉन क्विकजोट' और 'क्रेलिस लाउरेन'।

१८वीं सदी का पहला डच निबधकार जुस्टस वान एफेन[5] था। उसने कुछ अत्यत सुन्दर वर्णनात्मक और नैतिक निबन्ध लिखे। उसकी मृत्यु के क्रमश तीन और छह वर्ष वाद साहित्य के पहले उपन्यासकार बेत्जे उल्फ[6] और आग्ये डेकेन[7] हुए। उन्होने दो अलकृत उपन्यास पत्रो के रूप में लिखे—'सारा बरगेरहार्ट' और 'लेम लीवेन्ड'।

उस काल के अन्य गद्यकारो में कुछ दार्शनिक भी थे, जैसे हिरोनिमस वान आल्फेन[8] जिसने 'ईस्थेटिका' लिखी और फ्रास हेमस्टरहिस[9] जिसने दर्शन और कला पर फ्रैंच भाषा मे लिखा। इनके अतिरिक्त पॉलस वॉन हेमर्ट[10] और जोहानिज किकर[11] भी गद्य के क्षेत्र में काफी प्रसिद्ध हुए।

लिरिक-कविता का उदय एक वार फिर विलेम बिल्डरडिक[12] के हाथो हुआ। रोमाटिक परपरा ने नेदरलैंड्स के बौद्धिक जीवन को एक नयी शक्ति दी। जर्मन फ्रेंच और अग्रेजी रोमाटिक परपरा उस देश पर भी हावी हुई, फिर १८३० के वाद वाइरन[13] का वहाँ प्रभाव पडा। विलेम विल्डरडिक की कविताओ में, कुछ आलोचको का विचार है, वहुत कुछ ऐसा है जो हमें सन्तुष्ट करता है, परन्तु शायद कुछ भी ऐसा नही जो हमें हिला सके। कुछ थोडे लिरिक जो निश्चय ही छोटे और हल्के हैं परन्तु अधिकतर अलकार से वोझिल होकर हास्यास्पद हो गये हैं। फिर भी उन कविताओ का महत्त्व दूसरी दिशा मे है। उसकी कविताएँ तत्कालीन घटनाओ का दर्पण है। १७९५ के फ्रेंच आक्रमण के वाद वह देश छोडकर बाहर चला गया और १८०६ मे लदन आदि घूमकर स्वदेश लौटा। विजेताओ के प्रति आत्मसमर्पण करने से उसकी कमजोरी का पता चलता है। स्वदेश लौटने पर उसे स्वतन्त्रता के वाद नये शासन ने पेंशन दी जिसे स्वीकार करते उसे तनिक भी आपत्ति नही हुई। तव वह लाइडेन में रहकर अपने चतुर्दिक एकत्र हुए तरुणो के हृदय

---

१ Jan von Broekhuizen, २ Jan Baptista Wellekens, ३ Hubert Cornelis Poot, ४ Pieter Langendijk (१६८३-१७५६), ५ Justus von Effen (१६८४-१७३५), ६ Betje Wolff (१७३८-१८०४), ७ Aagje Deken (१७४१-१८०४), ८ Hieronymus von Alphen (१७४६-१८०३), ९ Frans Hemsterhuis (१७२१-९०), १० Paulus von Hemert, ११ Johannes Kinker, १२ Willem Bilderdijk (१७५६-१८३१), १३ Byron

मे प्रतिक्रियावादी ईसाई विचारो को भरने लगा। नेदरलैंडस की राजनीति मे क्रातिविरोधी दल का बीज उसी की अध्यक्षता मे लाइडेन में ही वृक्षाकार हुआ। बिल्डरडिक कवि से अधिक नैतिक-व्यक्तित्व था। उससे सुन्दर लिरिक कविताएँ शुद्ध काव्य शैली मे उसके समकालीन स्टारिग[1] ने लिखी।

रोमाटिक उपन्यास उस काल जेकब वान लेनेप[2] और गीरट्रीडा बोस्बूम-टू सेन्ट[3] ने लिखे। पहला स्कॉट से प्रभावित था और यद्यपि उसमे भाषा का सौदर्य अथवा चरित्र-चित्रण विशेष न था फिर भी अपनी वर्णनात्मक शक्ति के कारण वह काफी लोकप्रिय हुआ। गीरट्रीडा की शैली बहुत अच्छी मानी जाती है। फिर भी उसमे विचारो की परपरा घटना के क्रम को बोझिल और अस्पष्ट कर देती है, यद्यपि वह मानव प्रकृति और ऐतिहासिक घटनाओ की अच्छी अध्येता है। रोमाटिक परपरा का नेदरलैड्स में विकास विशेषत मासिक पत्र 'डि गिड्स्' के १८३७ में प्रकाशन से हुआ। वह पत्र आज भी जीवित है। उसे तीन तरुणो—ईनीउट ड्रोस्ट,[4] राईनीर बाखीजन वॉन डेन ब्रिक[5] और ई० जे० पोटगीटर[6] ने निकाला था। पोटगीटर डच-साहित्य का पहला विशिष्ट आलोचक था। उसने कुछ कहानियाँ और दार्शनिक तथा ऐतिहासिक कविताएँ भी लिखी परन्तु इनसे ऊपर वह उस काल का बौद्धिक नेता था। प्राय १९वी सदी के समूचे बौद्धिक जीवन पर पोटगीटर छाया रहा। वह पेशे से सौदागर था और कला और जीवन के प्रति अपने ऊँचे विचारो द्वारा उसने उस साहित्य में अपने लिए ऊँचा स्थान बना लिया। उसमें कल्पना और उत्साह की कमी थी परन्तु सन्तुलन सौर मर्यादा का उसे गहरा बोध था तथा पुराने और नये साहित्यो का उसे असामान्य ज्ञान था। उसके बाद आलोचना के क्षेत्र में विशिष्ट कोनराड बुरकेन हुएट[7] हुआ। वह पादरी था और जावा आदि की यात्रा करने के बाद लेखक के रूप में पेरिस मे प्रतिष्ठित हुआ। उसने अनेक निबन्ध और आलोचनात्मक लेख लिखे और साथ ही कई सास्कृतिक इतिहास सबधी बडे ग्रन्थ भी, जिनमें 'हेट लाड वान रेम्ब्रान्ट' अधिक महत्वपूर्ण है। उस काल का तीसरा प्रसिद्ध समीक्षक जैकब गील[8] था जिसने डच गद्य को रोमाटिक अलकृत लफ्फाजी से मुक्त कर प्रसाद गुण से विभूषित किया।

निकोलस बीट्स[9] लाइडेन में धर्मशास्त्र का अध्यापक था। पता चलता है कि उसने हजारो कविताएँ लिखी यद्यपि उसकी केवल एक कविता सुभाषितो मे सग्रहीत है। कवि मे

---

१ A C W Staring, २. Jacob von Lennep (१८०२-६८), ३. Geertruida Bosboom-Toussaint (१८१२-८६), ४. Aernout Drost, ५. Reinier Bakhuizen van den Brink, ६ E J Potgieter (१८०८-७५), ७ Conrad Busken Huet (१८२६-८६); ८. Jacob Geel (१७८९-१८६२), ९ Nicolaas Beets (१८१४-१९०३)

रूप मे तो इस प्रकार बीट्स उपेक्षणीय हो गया परन्तु मध्यवर्गीय जीवन पर स्केच-लेखक के रूप मे वह काफी प्रसिद्ध है। उस दिशा में उसका 'कामेरा ऑब्सक्यूरा' आज भी लोकप्रिय है जो यथार्थवादी साहित्य का पहला डच नमूना माना जाता है। पोटगीटर ने अपनी रोमाटिक प्रवृत्तियो के वशीभूत उन स्केचो के प्रति 'रोजमर्रा जीवन की नकल की तृष्णा' कह कर घृणा प्रगट की थी, परन्तु बीट्स के स्केच इतने यथार्थवादी हास्यपरक शैली पर अवलबित है कि उनकी उपेक्षा नही की जा सकती। हाँ, उस यथार्थवाद का विस्तार प्रतिभा की दृष्टि से उस काल विशेष न हो सका और उसे शक्तिम कृतिकारिता का योग १९०० के बाद ही मिला।

१९वी सदी का न केवल डच साहित्य का वरन् सारे यूरोप का एक महान् साहित्यकार एडूअर्ड डूवेस डेक्कर[1] था जो अधिकतर अपने उपनाम 'मुल्तातूली' से जाना जाता है। उसके जीवनकाल में और बाद मे भी उस पर विचार होते रहे और उसकी कृतियो को गहरी चोटें सहनी पडी। १९३० और ४० के बीच नात्सी आक्रमण के पहले तो उसके विचार डच तरुणो का बौद्धिक केन्द्र ही बन गये थे। उसके दो प्रधान अनुयायी मेनो टेर ब्राक[2] और ई० डू० पेरोन[3] थे। डेकर पहले १८३८ मे सिविल सर्विस का अफसर होकर "इण्डीज" (इण्डोनेशिया) गया। परन्तु कुछ काल बाद शासन से उसका विरोध हो जाने के कारण वह बर्खास्त कर दिया गया। फिर वह ब्रसेल्स मे रहकर उपन्यास लिखने लगा। उसकी पहली कृति 'मैक्स हावेलार' डच साहित्य और गद्य की चोटी की रचना मानी जाती है। उसमे मानव-आवेगो का बडा ऋद्ध चित्रण हुआ है। उसका दूसरा उपन्यास 'वूतरत्जे पीटर्स' बाल-मनोविज्ञान का असामान्य परिचायक है। मुल्तातूली का प्रभाव कई दिशाओ में बडा गहरा पडा। उसने डच गद्य शैली का बोझिलपन हटाकर उसे सजीवता और प्रवाह से मुक्त किया। उसने साधारण से साधारण शब्दो का स्वाभाविक रूप मे प्रयोग किया। साथ ही उसने सत्य और स्वाधीनता के पक्ष में सर्वत्र लडाई ठान ली। उसके समकालीन उसे उदारता और सहिष्णुता का मूर्तिमान आदर्श मानते थे। यह मुल्तातूली के ही विचारो का प्रभाव था कि इण्डोनेशियनो की शिक्षा उनकी अपनी सास्कृतिक परपरा मे होने लगी और वे शासन के क्षेत्र मे नियुक्त किये जाने लगे। डेक्कर बीच-बीच मे स्वदेश लौटकर व्याख्यान दिया करता था। उसमें गजब की वाग्मिता थी और वह डच जीवन में महान् प्रेरणाओ के साथ प्रादुर्भूत हुआ। १९वी सदी के चौथे चरण में जिस आन्दोलन का आरम्भ हुआ वह '८० वर्षों का आन्दोलन' कहलाता है। उसका प्रवर्तक तरुणो का एक दल था। जिसका मुख पत्र 'ढि नूवे गिड्स' (१८८५) था। यह बौद्धिक

---

१ Eduard Douwes Dekker (Multatuli) (१८२०-८७); २. Menno ter Braak; ३. E du Perron

जीवन, चित्रकला, वास्तुकला, सगीत और राजनीति में एक प्रकार का पुनर्जागरण-आन्दोलन था। उसी काल समाजवाद का भी उस देश में विशेष प्रचार हुआ। साहित्य में उस विचार के अग्रणी विशेषत विलेम क्लूस[1] वास्तुकला मे बर्लाज,[2] चित्रकला मे ब्राइट्नर[3] सगीत मे अल्फोन्ज डिपेनब्रॉक[4] दर्शन मे बोलान्ड[5] और राजनीति में डोमेला निवेनहिस[6] थे।

नेदरलैण्डस के इतिहास के १८७० और १९०० के बीच के ३० साल साहित्य आदि सभी क्षेत्रो में विशेष महत्त्व के थे। उस बीच उस देश के विविध क्षेत्रो में कल्पनातीत उन्नति हुई। जिन लोगो ने 'डि नूवे गिड्स' की क्रियाशीलता को सफल बनाया, अथवा उसके लिए पृष्ठभमि प्रस्तुत कर दी, उनमे प्रधान थे—विलेम वार्नर वान लेनेप[7] कारेल वोज्मीर[8] सीमन गोर्टर[9] जैकब विंक्लर प्रिन्स[10] पेनिंग[11] मार्सेलस इमान्ट्स[12] जैक्स पर्क[13]। इनमें से जैक पर्क का प्रभाव बडे काम का हुआ। मरा तो वह केवल २२ वर्ष की अल्पायु मे परन्तु इसी बीच कुछ असाधारण कवितायें छोड गया, जिनकी उस काल के समीक्षको ने बहुत सराहना की। इमान्ट्स ने दो एपिक-दार्शनिक कविताओ के सग्रह—'लिलिथ' और 'देवताओ की गोधूलि' प्रकाशित किये। उसकी विचार-पद्धति, कवित्व शक्ति और रूप ने साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। उसने उपन्यास, नाटक और यात्रा वृत्तान्त भी लिखे। मुल्तातूली को छोड उस समय के सारे साहित्यिक व्यक्तियो से वह ऊँचा था। उसकी समाज और मनुष्य की आलोचना ने वस्तुत प्रकृतिवाद को सफल बनाया।

पेनिंग[14] बडा मौलिक है। उसने उच्चकोटि के प्रबन्ध और लिरिक काव्य लिखे। उसकी बडी कवितायें 'बेंजामिन वर्टेलिंगेन' और छोटी 'कामेरमुजीक' और 'लेवेन्सावोन्द' है। पिछले काल की उसकी कविताओ मे बडी गहराई है। वह काफी कम आयु में ही अन्धा हो गया था। उस काल विलेमक्लूज तो ऊँचा साहित्यकार था ही, अल्बर्ट वर्वी[15] भी उससे कुछ कम न था। पर दोनो स्तरो पर थे। एक ज्वालामुखी था तो दूसरा जीवन गर्भित प्रशान्त झील, एक योगी था तो दूसरा सासारिक। दोनो समसामयिक तो थे ही, प्राय एक ही बौद्धिक और सामाजिक वृत्त से उठे थे। इन दोनो के अतिरिक्त उस काल एक और विशिष्ट

---

१ Willem Kloos (१८५९-१९३०), २ H. P Berlage, ३ W Breitner, ४ Alphons Diepenbrock, ५ G T P J Bolland, ६ Domela Nieuwenhuis, ७ Willem Warner Van Lennep, ८ Carel Vosmaer, ९ Simon Gorter, १० Jacob Winkler Prins, ११ W L. Penning, १२ Marcellus Emants (१८४८-१९२३), १३ Jacques Perk (१८५९-८१), १४ W L Penning (१८४०-१९२४), १५ Albert Verwey (१८६५-१९३६)

साहित्यकार भी था जिसकी प्रेरणा साम्यवादी थी। हरमान गोर्टर[१] इन्हीं की भाँति साहित्य में स्तम्भाकार यद्यपि दृष्टिकोण मे इनसे सर्वथा भिन्न कम्युनिज्म का पुजारी था। इसी प्रकार गद्यकार लोडविक वान दीसेल[२] और जैकोवस वान लुई भी एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न हैं।

"अस्सी का आन्दोलन" साहित्य मे मिथ्या अलकरण, आचार तथा रस के सिद्धातो के अस्पष्ट उलझनो आदि के विरुद्ध लडा और अनुभूति की ईमानदारी, भावो की गहराई, विचारो की स्पष्टता और रूप तथा उद्देश्य की एकता की माग की। क्लूज उस आन्दोलन के प्रबल प्रवर्त्तको मे था, वर्वी उसका सबसे ऊँचा साहित्यकार। परन्तु उस दल का सबसे महान लिरिककार और समूचे डच साहित्य के चोटी के कवियो में एक गोर्टर था। उसका लिरिक 'माई' प्रतीक काव्य है और डच साहित्य की उच्चतम चोटियो में है। जैकोवस वान लूई[३] उस काल का सबसे महत्वपूर्ण गद्य-लेखक है। वह शब्दो का अद्‌भुत चित्रकार है। अन्त में उसने यथार्थवादी दृष्टिकोण छोड व्यग्यात्मक कल्पना को अपनी रचनाओ का प्रेरक आधार बनाया। फ्रेडरिकवान ईडेन[४] वैद्य, सुधारक, कवि, नाट्‌यकार, उपन्यासकार, आलोचक और जर्नलिस्ट था। नीवे गिड्‌स के किसी सदस्य ने इतना कथोपकथन नही किया, और न इतने विवादास्पद विषयो को उठाया। स्वय उसके पुराने साहित्यिक मित्र उसके विरुद्ध हो गये। तरुण और प्रौढ सभी उसके दुश्मन हो गये। फिर भी ईडेन साधारण कोटि का साहित्यकार न था। उसकी अनेक कृतियो का डच साहित्य में चिरकालिक स्थान रहेगा। उनमें प्रधान हैं—लिरिक—दार्शनिक नाटक 'डि ब्रीडर्स' मनोवैज्ञानिक उपन्यास 'वान ड केले मीरेन डे डूड्‌स' गद्य-रूपक 'ड क्लाइने जोहानिज्ञ।'

यथार्थवाद की चरम परिणति प्रकृतिवाद में होती है। वस्तुत दोनो का एकत्र विकास नेदरलैण्ड्स के कृतिकारो में हुआ है। डच-साहित्यकार रोजमर्रा के जीवन के अद्‌भुत चित्रकार रहे हैं। नीवे गिड्‌स के समकालीन और शीघ्र बाद के उस दृष्टिकोण के उपन्यासकार फ्रास कोनेन[५] हरमान रावर्स[६] जेराडवान इकेरेन[७] और तीन प्रतिभाशालिनी महिलायें—टापनीफ[८] मार्गोट शार्तेन अन्टिक[९] और कारीवान ब्रुगेन[१०]—थी। युग का विशिष्टतम उपन्यासकार लुइस काउपेरस[११] प्राय स्वतत्र कृतिकार था। उसके कुछ उपन्यास यथार्थवादी भी हैं, जैसे 'एलिने वेरे'। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'वान ऊडे मेन्शेन'

---

१. Herman Gorter (१८६४-१९२७); २ Lodewijk Van Deyssel, ३. Jacobus Van Looy (१८५५-१९३०); ४ Frederik Van Eeden (१८६०-१९३२), ५ Frans Coenen, ६. Herman Robbers, ७ Gerard Van Eckeren, ८ Top Naeff, ९ Margot Scharten-Antink; १० Carry Van Bruggen, ११. Louis Couperus (१८६३-१९२३),

है। अनेक में 'दूर मिलन' है। जिसमें कहानियों का विकास हुआ है और जो यथार्थवादी नहीं कही जा सकती। फान ऐडन ने अनेक ऐतिहासिक और घोर काल्पनिक उपन्यास लिखे। उसकी कहानियों और नाटकों की संख्या भी कुछ कम नहीं।

१९०० में जब कि आन्दोलन का महत्त्व कम हो गया था, अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियों का भी नीदरलैंड्स में प्रभाव हुआ, तभी तीन महान कवि और एक विशिष्ट गद्यकार हुए। उनके नाम हैं—हेनरिएट रोलान्ड होल्स्ट[1] पी० सी० बाउटेन्स[2] टी० एच० लियोपोल्ड[3] और उपन्यासकार आर्थर वान शेन्डेल[4]। मार्क्स के प्रभाव में होल्स्ट प्रारम्भ में ही समाजवादी हो गई थी और उसने अनेक पत्र समाज-सुधार पर लिखे। परन्तु उनसे कहीं बढ़कर उसकी कविताएँ थी। सुन्दर और उद्दाम काव्य-धारा से उसने जनवादी आन्दोलन का हित किया। मजदूरों की संवेदनाओं और आशाओं को उसने अपनी कविताओं में स्थापित किया। उसकी प्रत्येक रचना के पीछे मानव-हित और सुख की कामना छिपी है। सारे डच साहित्य में कहीं इतनी भावुकता से विश्वबन्धुत्व के आदर्शों का आकलन नहीं हुआ है। उसके संग्रह—'द प्राउ इन हेट वुड' में साम्यवाद का समुन्दर लहराता है, "वर्जकिन ग्रेन्जेन" में भी उसी प्रकार मानवीय चेतनाओं का विकास हुआ है, यद्यपि इस पिछली कृति में उसकी कमजोर आत्मा भगवान की ओर भी हाथ उठा देती है। उसकी कविताएँ—राजनीतिक और धार्मिक दोनों—प्रणय-लिरिक हैं। बाउटेन्स उसके सामने अभिजात रूपवादी लगता है। परन्तु गहरे अध्ययन से उसकी गहराइयों की थाह मिलती है। जहाँ हेनरिएट समाज को अपना इष्ट मानती है, बाउटेन्स आशिक रहस्यवाद को। उसकी कविताओं का संग्रह 'स्टेमेन' सम्भवत उसकी रचनाओं में विशिष्ट है। इन कविताओं में 'वर्गटेन लीड्येस' सर्वोत्तम है। नात्सी-शासनकाल में वह मरा। लियोपोल्ड का पहला कविता-संग्रह १९१३ में निकला। उसकी अन्य कविताएँ उसकी मृत्यु के बाद वानआइक ने छपवाई।

आर्थरवान शेन्डेल केवल उसी युग का नहीं सम्भवत समूचे डच साहित्य का सर्वोत्तम गद्यकार है। उसने प्रभाववाद और प्रकृतिवाद दोनो प्रवृत्तियों के विरुद्ध लिखा। १९०० और १९३० तक की कृतियों के लिए तो उसने काल्पनिक इटालियन रेनेसाँ से सामग्री चुनी। प्रारब्ध और एकान्त उसकी दो प्रधान समस्याएँ थी। उसकी मुख्य रचना 'ईन ज्वर्वर' (दो खण्डो मे) है। बाद की रचनाओं के लिए उसने नेदरलैंडस के जीवन और इतिहास से अपने कथानक और विषय चुने। उसका उत्कृष्ट उपन्यास— ट्रिलोजी 'ईन हालैण्ड्श ड्रामा' डि रिजकेमान 'ग्रावे फोगेल्स' है। उसने प्राय तीस उपन्यास लिखे जिनमें से एक भी साधारण कोटि का नहीं है। उसने अनेक कहानियाँ भी लिखी।

१ Henriette Roland Holst (जन्म १८६९), २ P C Boutens (१८७०-१९४३), ३ T H Leopold (१८६५-१९२५), ४. Arthur Van Schendel (जन्म १८७२)

उसकी दो कृतियाँ अत्यन्त लोकप्रिय हुईं। एक तो "ईन ज्वर्वर" और दूसरी "ड वाटर-मान।" यह दूसरी डच-गद्य में अनुपम रचना है।

१९०५ और १९०८ के बीच एक नई पीढी के लिरिक कवियो का उदय हुआ जिनमे प्रधान निम्न तीन हैं —ए रोलाण्ड हॉल्स्ट[१] जे सी ब्लोम[२] और पी एन वान आइक[३]। होल्स्ट की कविताएँ पहले-पहल १९११ में प्रकाशित हुई, जिनसे शीघ्र पता चल गया कि उनका रचयिता साधारण ऊँचाई का व्यक्ति नही। वह समुद्र, वायु, स्वप्न दीपो और वायवीय भावो का कवि है। परन्तु उनमें भी मानवता के प्रति आग्रह छिपा है। ब्लोम की कविताओ की सख्या अत्यन्त न्यून है परन्तु उसकी एक-एक कविता सुथरी-निखरी सर्वथा दोषरहित है। उसकी कविताओ मे करुणा और निराशा है। पराजय की अनुशोचना है। उसके चार सग्रह हैं—'हेट वेर्लांगेन' 'मेडिया वीटा' 'ड निडरलाग' 'सिन्टेल्स'। मानवीय कमजोरियो की ये कविताएँ प्रतिविम्ब हैं। आइक लाइडन मे वर्वी के स्थान पर अध्यापक नियुक्त हो चुका था। उसने नात्सी आक्रमण के कुछ ही पूर्व कुछ अत्यन्त विचार-प्रधान निवन्ध लिखे। उसकी कविताओ का सग्रह कर्मठ जीवन और हृदय तथा मेधा का एकत्र प्रकाश करता है। कविताएँ दार्शनिक काव्य-कला और बौद्धिक भावनाओ की प्रतीक हैं।

उत्कृष्ट गद्यकार जे० ग्रोन्लोह[४] और राइनीर वान गेन्डेरेन स्टोर्ट[५] हैं। पहले ने तीन उपन्यास लिखे जिनमे दो ऊँची कोटि के है। दूसरे ने भी 'क्लाइने ईनेज' नाम का एक सुन्दर उपन्यास लिखा, फिर वह प्रतीको मे फँस गया।

वर्तमानवादी और अभिव्यजनावादी साहित्यकारो के शीघ्र पूर्व के कवियो में प्रमुख है—वेरुमियस वूनिग[६] विक्टरवान व्रीसलेन्ड[७] हरमान वान डेन बर्ग[८] और एम० निझोफ[९]। इनमें निझोफ विशिष्ट है। उसने डच लिरिको में एक नये स्वर, नयी भावना का योग दिया, आनन्दपरक वस्तुवाद का। उसके तरुण समसामयिको पर उसका गहरा प्रभाव पडा और आज भी वह नेदरलैंड्स के युद्धोत्तर साहित्य में एक हस्ती है।

दोनो महायुद्धो के वीच का युग ऋद्ध बौद्धिक जीवन का है। उसकी पहली दशाब्दी लिरिक कवि एच० मार्समान[१०] द्वारा अभिभूत रही और दूसरी समीक्षक मेनो तेर ब्राक[११] द्वारा। उसके बाद सुरियलिज्म (कल्पनात्मक स्वप्निल सत्य) का महत्व वढा। यह

---

१ A Roland Holst (जन्म १८८८); २. J C Bloem (जन्म १८८७), ३ P N Von Eych (जन्म १८८७), ४. J Gronloh; ५ Reinier Van Genderen Stort, ६ J W F Werumeus Buning (जन्म १८९१), ७ Victor Van Vriesland (जन्म १८९२), ८ Herman Van den Bergh (जन्म १८९७), ९ M. Nijhoff (जन्म १८९९), १० H Mars-man (१८९९-१९४०); ११ Menno Ter Braal (१९०२-४०)

कला और साहित्य दोनों में सन् ४० के बाद की प्रवृत्ति रही है। उससे भी नवीन प्रवृत्ति यथार्थवाद की है पर समाजवादी (साम्यवादी) यथार्थवाद की। इस बीच के युग को अपनी साहित्यिक चेतना और कृतियों से भरने वाले प्रधान व्यक्ति थे—जे० जे० स्लावरहोफ[1] एम० मार्समान, हेन्ड्रिक द व्राइज[2], मेनोनेर ब्राक, ई० दु पेरो[3] और एस० वेस्दिक[4] इनके चतुर्दिक अनेक कवियों और लेखकों के दल इकट्ठे हो गए। पत्र-पत्रिकाओं में काव्य के रूप, उद्देश्य और विषय पर द्वन्द्व छिड़ गए। प्रश्न था, काव्य में प्रधान कौन है—काव्य का रूप अथवा मानव? मेनो तेर ब्राक, ने जो नीत्शे से प्रभावित था, व्यक्तित्व और "अहं" (सब्जेक्टिविटी) पर अधिकाधिक जोर दिया। अनेक बार कवित्वहीन काव्य पर जोर दिया जाने लगा। उधर फ्रांस से "सुर्रियलिज्म" के मेघ उठे और नेदरलैंड्स के साहित्याकाश पर मँडराने लगे। देश में अनेक साहित्यकार ऐसे थे जिन्होंने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। कम से कम दो महत्व के कवि इस दिशा में प्रयत्नशील हुए—गेरिट आख्टर बर्ग[5] और एड० हूर्निक[6]। आख्टरबर्ग की आज के डच-साहित्य में काफी धाक है।

परन्तु कुछ ऐसे भी प्रतिभावान कृतिकार हैं जो दलों से अलग हैं और लगन से अपने तरीके से साहित्य सेवा कर रहे हैं। वेस्दिक[7] ऐसा ही साहित्यकार है। १९३५ में वह अपने वैद्य के पेशे के साथ साहित्य-क्षेत्र में उतरा और दस वर्ष के भीतर इतना लिखा कि समसामयिक जगत् चकित हो गया। उसके उत्साह प्रेरणाओं और ज्ञान की परिधि नहीं है। नात्सी शासन के समय उसे सालों जर्मन "कन्सेन्ट्रेशन कैंप" में बिताने पड़े। वहाँ जब मिनट-मिनट पर उसे मृत्यु का अन्देशा हो आता था, उसने ३०० लिरिक कविताएँ, दो दार्शनिक ग्रन्थ और अनेक उपन्यास लिखे। उसका ऐतिह्य ज्ञान स्थिति को मूर्तिमान करने में बड़ा सहायक होता है और मनोवैज्ञानिक चेतना चरित्रों में जीवन भरती है। 'हेट विफदे जेगेल' उसका महान् ऐतिहासिक उपन्यास है। पिछले दस वर्षों से कवि उपन्यासकार, आलोचक और सिद्धान्तनिर्माता के रूप में वेस्दिक नेदरलैंड्स के साहित्याकाश में छाए हुए हैं। तरुण गद्यकारों में अपने स्वप्नों में जाग्रत आद्रियान वान डेर वीन[8] है। उसने लिरिक कविता के माधुर्यवाली अनेक कहानियाँ लिखीं फिर न्यूयार्क में अपना असामान्य उपन्यास 'हम पखधर हैं'—पूरा किया।

नात्सी शासन के संघर्षकाल में नेदरलैंड्स की सारी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ कुंठित हो गईं। नात्सीवाद के प्रायः सभी साहित्यकार शिकार हो गए। मार्समान इंग्लिश चैनेल

---

१. J J Slauer-hoff (१८९८-१९३६), २ Hendrik de Vries, ३. E. du Perron (१८९९-१९४०), ४ S Vestdijk (जन्म १८९८), ५ Gerrit Achterberg (जन्म १९०६), ६ Ed Hoornik (जन्म १९१०); ७. S Vestdijk (जन्म १८९८); ८ Adriaan Van der Veen

में डुबा दिया गया। तेरब्राक ने आत्महत्या कर ली। दु पेरो आक्रमण के परिणाम-स्वरूप ही मरा। ओटेन मार डाला गया। जॉन कैम्पर्ट[1], वाल्टर ब्राडलाइट, विलेम आरोन्दियस और अनेक-अनेक शत्रु की गोली के शिकार हुए। नेदरलैंड्स के साहित्यकारो का यह सघर्ष, त्याग और बलिदान निस्सदेह उसके साहित्य के इतिहास में अमर रहेगा।

उससे एक लाभ हुआ—साहित्यकार अपने दायित्व की ओर विशेषत आकृष्ट तो हुए ही, काल्पनिक स्वप्रदेश से लौटकर उनकी प्रतिभा यथार्थ की ओर लगी। उपचेतन की व्याख्या करने वाला सुरियलिज्म वहाँ अब प्राय समाप्त हो गया और उसके स्थान पर स्वस्थ मौर सद्य. का यथार्थ प्रतिष्ठित हो गया है। इस अग्निस्नान से काव्यक्षेत्र में एक नए प्रकार का आरम्भ हुआ—युद्ध काव्य का। और इसी बीच एक नए कवि बर्तुस आफ्येज[2] ने अपनी शक्ति और मेधा लिए साहित्य क्षेत्र मे पदार्पण किया। नेदरलैंड्स का साहित्य समाजवादी यथार्थवाद की ओर इधर पर्याप्त अग्रसर हुआ है।

---

१. Jan Campert; २. Bertus Aafjes

१२. डेनी साहित्य

डेन्मार्क का प्राचीनतम साहित्य अभिलेखों के रूप में चट्टानों पर खुदा मिलता है। उसका अधिक भाग लोक-साहित्य है जो उस काल की पौराणिक ख्यातों, जन्तर-मन्तर, ऐतिहासिक घटनाओं और वीर-कृत्यों पर प्रकाश डालता है। कुछ चट्टानों पर तत्कालीन कानूनों का उल्लेख भी मिलता है।

डेन्मार्क का बहुत-सा साहित्य मध्य-युग में लैटिन में लिखा गया। लैटिन का सांस्कृतिक भाषा के रूप मे वहाँ १२ वी सदी मे प्रवेश हुआ था। उस काल का सबसे बडा लैटिन-ग्रन्थ "गेस्तादानीरुम' (डेनो के वीर कृत्य) १६ खण्डो मे साक्से[१] ने लिखा था। उसका डैनी भाषा में शीघ्र अनुवाद हो गया।

सुधारवादी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के देश मे प्रवेश से डेनी भाषा और साहित्य दोनो पर गहरा प्रभाव पडा। भाषा प्राचीन 'नौर्दिक' से बदल कर वर्तमान डैनी हो ही चली थी अब उसे लिखने मे लैटिन अक्षरो का भी उपयोग होने लगा। स्वाभाविक ही उस काल की रचनाएँ धर्म-प्रधान हैं और अनेक लैटिन भाषा में ही लिखी गयी हैं। क्रिस्तियर्न पैडरसन[२] ने अधिकतर डेनी भाषा में ही अपने ग्रन्थ लिखे जिनमें 'डेमार्क का इतिहास' विशिष्ट था। बाइबिल के उसके आंशिक अनुवाद ने डेनी भाषा पर दूरगामी प्रभाव डाला। पैडरसन का समसामयिक ही वाइवोर्ग का प्रभावशाली विषप हान्स ताउसेन[३] था जिसने इब्रानी से "पेन्तातुख" का अनुवाद किया और काव्य रूपक की शैली में 'झूठ और सच' लिखा। पेडर प्लादे[४] नील्स हेमिंग्सन[५] और जैस्पर ब्रोकमाण्ड[६] ने भी अपनी कृतियो से उस काल का प्रारंभिक डेनी साहित्य भरा। नील्स असाधारण पण्डित था। वह डेन्मार्क का गुरु कहलाता है। 'जीवन की राह' उसकी सुन्दरतम कृति है जिसका डेनी भाषा पर गहरा प्रभाव पडा। एन्डर्स सीरेन्सन वैडैल[७] जैस्पर का समकालीन और बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्ति था। वह उपदेशक, कवि, वैज्ञानिक पुराविद् और इतिहासकार था। उसने नौर्दिक लोक-गीतों का संग्रह किया। उसी ने साक्से के वृहद् ग्रन्थ "गेस्ता दानोरम" का डैनी में अनुवाद भी किया। डेन्मार्क के राजा क्रिश्चियन चतुर्थ की पुत्री लियोनोरा क्रिस्टाइन[८] का देशद्रोह के लिए

---

१ Saxo (११६०–१२२०); २ Christiern Pedersen (१४८०-१५५४), ३. Hans Tausen (१४९४-१५५४), ४ Peder Plade (Petrus Pladius) (१५०५–६०), ५ Niels Hemmingsen (१५१३–१६००), ६ Jesper Brochmand (१५८५–१६५२), ७ Anders Sorensen Vedel (१५४२–१६१६), ८ Leonora Christine (१६२१–९८)

पति के साथ ही १७वी सदी मे विचार हुआ था। फलत वह २२ वर्ष तक कैद में रखी गयी थी। उसी बीच उसने यातना और धीरज पर अत्यन्त 'करुण-ससमरण' लिखे।

१५६९ के बाद डेनी भाषा में प्रार्थना के लिए स्तोत्र लिखे जाने लगे। १७वी सदी का प्रधान स्तोत्रकार टाम्स किंगो[1] था। उसके स्तोत्रो में सबसे प्रसिद्ध 'ससार के अहकार से विदा' था। उसके अनेक स्तोत्र आज भी डेनमार्क के गिरजाघरो में गाये जाते है। वह डेनी भापा का पहला लिरिक कवि था।

१७वी सदी में ही धर्मतर साहित्य का भी आरम्भ हो गया था। काउन्ट मोगेन्स स्कील[2] पहला डैनी नाटककार था। उसने मोलिए[3] से प्रेरणा ली और अपने नाटको मे दरबार के अभिजात-वर्गीय कुलो पर व्यग्य किया। उस काल का सबसे बडा नाट्यकार होलबर्ग[4] था। उसकी कॉमेडियो ने जनता का मर्म छू लिया। लुडविग होल्वर्ग बर्गिन में पैदा हुआ था और कोपेनहागेन मे पढा-लिखा था। उसने यूरोप का भ्रमण भी खूब किया। पहले उसने यूरोप और डेनमार्क के इतिहास पर ग्रन्थ लिखे जिसके परिणामस्वरूप वह यूनीवर्सिटी का असाधारण प्रोफेसर नियुक्त हुआ। फिर उसने अपनी कॉमेडियो में व्यग्यकार की असामान्य प्रतिभा विकसित की। उन दिनो डेनमार्क में होमर[5] और वर्जिल[6] की बडी धूम थी। होल्बर्ग ने अपना 'पेडरपार्स' लिखकर उन पर गहरे व्यग्य किये। उसी की प्रेरणा और योग से १७२२ में 'राजकीय थियेटर' का कोपेनहागेन मे आरम्भ हुआ। होमर और वर्जिल के साथ ही होलवर्ग ने उन सारी विदेशी प्रवृतियो और प्रभावो पर अपनी कॉमेडियो मे मार्मिक व्यग्य किये जो डेनी सस्कृति और साहित्य में घुन की तरह लगते आ रहे थे। होल्वर्ग की सुन्दरतम कॉमेडियाँ निम्नलिखित हैं—'राजनीतिक भूत', 'प्रहसन', 'लडखडानेवाला' 'जाद-फास' 'गर्ट वैस्टफालेर', 'जैकब वान थीवों', 'सूम'।

हान्स अडोल्फे ब्रोर्सन[7] किंगो के बाद दूसरा प्रसिद्ध स्तोत्रकार था। उसके स्तोत्रो में बडी सादगी और सौंदर्य था। वह व्यक्तिगत भावनाओ, अनुभूतियो तथा प्रतिक्रियाओ का उद्‌बोधक था। फिर भी उसके स्तोत्रो में करुणा, विषाद और निराशा का स्वर मुखरित हुआ। उसके जीवनकाल में 'धर्म की 'असाधारण निधि' (१७३९) में और मृत्यु के बाद 'हस-गान' (१७६५) प्रकाशित हुए।

डेन्मार्क का एक किसान एम्ब्रोसियस स्टब[8] की कविताएँ बडी मधुर मानी जाती है। उसने भी अनेक स्तोत्र लिखे। जोहान हर्मान वैसेल[9] भी होल्वर्ग की ही भाँति विदेशी प्रभावो

---

१ Thomas Kingo (१६३४–१७०३), २ Count Mogens Skeel (मृत्यु–१६९४), ३. Moliere, ४. Holberg (Ludvig) (१६८४–१७५४); ५ Homer; ६. Virgil, ७. Hans Adolphe Brorson (१६९४–१७६४); ८ Ambrosius Stub (१७०५—५८), ९. Johan Herman Wessel (१७४२–८५)

का विरोधी था। उसने फ्रेंच और इटैलियन प्रभावो का प्रबल विरोध किया। १७७२ मे उसने फ्रेंच ट्रैजेडी की "पैरोडी" में अपनी पहली और सर्वोत्कृष्ट रचना 'मौजें बिना मुहब्बत' प्रकाशित की। जोहान्स इवाल्ड[1] वैसेल का गहरा दोस्त था और दोनो का जीवन सर्वथा अभिन्न था। इवाल्ड के असफल प्रणय ने उसे अत्यन्त विषण्ण बना दिया जिससे उसकी कविता अत्यन्त मार्मिक हो उठी। परन्तु उसमें उसने दु ख की छाया न पडने दी। उसकी अनेक कविताएँ बडी प्रसिद्ध हैं। यद्यपि ख्याति उसे फ्रैडरिक पचम की मृत्यु सम्वन्धी कविता से ही मिली। 'बाल्डर की मृत्यु' लिखकर उसने नाट्यकला की चोटी छू ली। उसकी माली हालत वडी खराब थी। प्रेम और निर्धनता का मारा वह अक्सर चुपचाप फिरा करता था। परन्तु उसकी सहृदयता वडी आकर्षक थी और उसने उसे काफी लोकप्रिय बनाया। बाद मे भी उसने अनेक रचनाएँ की जिनमें सबसे सुन्दर 'मछुआ' थी।

उस काल के दूसरे साहित्यकार ओले जोहान साम्से[2] और टॉमस थारूप[3] थे। इनमें से पहले की प्रसिद्ध कृति 'दिवेकी' और दूसरे की 'कटिया मडली' थी।

उस काल डेन्मार्क मे दो आन्दोलन प्रकट हुए। एक तो फ्रेंच राज्य-क्राति ने जीवन के आधार को हिला दिया, दूसरे जर्मन और अग्रेजी रहन-सहन के विरुद्ध एक विद्रोह उठ खडा हुआ। दोनो आन्दोलनो का नेता पीटर-एन्ड्रीज हाइबर्ग[4] था। अपनी अनेक कृतियो द्वारा उसने देश की सस्थाओ पर उत्कट व्यग्य किये। स्वतन्त्र कृतियो के अतिरिक्त हाइबर्ग ने राहबैक[5] द्वारा प्रकाशित 'दर्शक' को अपने व्यग्यो का साधन बनाया। उसने उसमें लगातार अग्रेज राजदूत पर प्रहार किये। उसकी राजनीतिक वामपक्षीय रचनाओ के कारण उसे स्वदेश छोडना पडा (१८००)। शेष जीवन उसने पेरिस में विताया। राहबैक का उल्लेख ऊपर हो चुका है। क्नुड लिन राहबैक का उसके मौलिक प्रकाशनो के कारण इतना नही, जितना पुरानी लुप्त कृतियो के अनुसधान और आलोचनात्मक प्रकाशन से डेनी साहित्य पर गहरा प्रभाव पडा। उसका घर, जिसका नाम पर्वत का गृह पड गया था, डेनी चिन्तन साहित्य और कला के उदीयमान कृतिकारो का गढ वन गया। वही नये विचारो पर कथोपकथन होते। वही नयी प्रवृत्तियो को रूप मिलता। राहबैक 'दर्शक' नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशक और सपादक था और उसी में उसकी आलोचनाएँ रूप धारण करती थी। उसके सस्मरण १८०० ई पूर्व के डेनी साहित्य और सस्कृति पर प्रभूत प्रकाश डालते हैं।

---

१ Johannes Ewald (१७४३–८१), २ Ole Johan Samsoe (१७५९–९६); ३ Thomas Thaarup (१७४८–१८२१), ४ Peter Andreas Heiberg (१७५८–१८४१), ५ Rahbeck (Knud Lyne Rahbeck) (१७६०–१८३०)

जेन्स बागेसन[1] स्वाभाविक कवि था और साथ ही नितान्त भावुक भी। उसके ओप्रा 'होल्गर दान्स्के' की जब कटु आलोचना हुई, तब वह खिन्न होकर देश से वाहर चला गया और जब लौटा तो उसने अपनी यात्राओ के सुन्दर सस्मरण प्रकाशित किये। उसने कवितायें भी काफी लिखी।

जैकब पीटर मीन्स्टर[2] विशप था और उसने अपनी गभीर रचनाओ द्वारा देश मे वढते बुद्धिवाद का विरोध किया। राजनैतिक और राष्ट्रीय तथा धार्मिक क्षेत्रो में उसकी रचनाओ का खासा प्रभाव पडा। हान्स क्रिश्चियन ऑर्स्टेड[3] एलेक्ट्रो-चुम्बक के अनुसधान से विज्ञान के क्षेत्र मे काफी प्रसिद्ध हो चुका है। उसकी वैज्ञानिक रचनाओ मे साहित्यिक शैली का विकास हुआ। वह अपने देश, इतिहास और भाषा से वडा प्रेम करता था और उसने अनेक सास्कृतिक विपयो पर भी लगातार व्याख्यान दिये। उसके भाई एण्डर्स सैण्डो ऑर्स्टेड[4] ने 'मेरा जीवन' और 'मेरा युग' लिख कर डेनी साहित्य का भडार भरा।

एडम गोटलाव इहलेन्स्लीगर[5] डेनमार्क के साहित्य और सस्कृति का शेक्सपीयर है। नौ वर्ष की आयु मे ही उसने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय 'प्रभात का स्तोत्र' लिख कर दिया। स्कूल मे उसकी शिक्षा तो नही हुई, परन्तु निजी तौर पर उसने प्राचीन नॉर्दिक पुराणो तथा अन्य साहित्य का वडा गहरा और विस्तृत अध्ययन किया। वह भी राह-वैक के मित्रो में से था और उसके घर मे निरन्तर चलने वाले विचारो में बराबर भाग लेता था। उसकी पहली काव्य कृति 'सुनहरे सीग' थी जिसके क्रातिकारी स्वर ने देश में राष्ट्रीयता की एक लहर वहा दी। फिर तो वह लगातार अपने नये दृष्टिकोण की कवितायें लिखता ही गया। 'सिंहवीर', 'हाकोन जार्ल की मृत्यु', 'सन्त जान की सध्या', 'लाग द्वीप की यात्रा', 'साल का गीत' आदि एक के वाद एक प्रकाशित हुए। 'अलाद्दीन' उसकी सर्वोत्तम कृति है। जिस पर उसकी आत्मकथा की छाप है। उसने अनेक देशो की यात्रा भी की। गेटे आदि से मिला। उस यात्रा के क्रम में उसकी अनेक कृतियाँ प्रकाशित हुई। स्वदेश लौटने पर उसकी वडी इज्जत हुई। पिछले काल की उसकी कृतियो मे महान् 'हेल्गे' (१८१४) और दीना' (१८४२) हैं। हेल्गे 'ट्रिलोजी' है और काफी ख्याति पा चुका है। ऐडम साहित्य की अनेक दिशाओ में स्तम्भाकार ऊँचा था।

स्टीन स्टीन्सन ब्लिखेर[6] डेनमार्क का पहला यथार्थवादी था। उसने अपने उपन्यासो में जटलैण्ड के लोक जीवन के विविध चित्र खीचे। उसके अनेक उपन्यासो में किसान जीवन

---

१ Jens Baggesen (१७६४-१८२६), २ Jakob Peter Mynster (१७७५-१८५४); ३ Hans Christian Orsted (१७७७-१८५१), ४ Anders Sando Orsted, ५ Adam Gottlob Oehlenslaeger (१७७९-१८५०), ६ Steen Steensen Blicher (१७८२-१८४८)

अंकित हुआ। उसमे उसने जटलैण्ड की किसानी बोली का भी जहाँ-तहाँ उपयोग किया। उसके कुछ उपन्यासो के आधार पर अतीत के चित्र भी हैं। स्टीन कवि भी था। उसके अनेक लिरिक जाने हुए हैं। वह "उत्तरी प्रकाश" नामक पत्र का सपादन भी करता था।

इहलेन्स्लीगर ने जिस राष्ट्रीय भावना से प्रेरित पुरानी ख्यातो का पुनरुद्धार किया था उसकी परिणति निकोलाज फ्रेडरिक सेवरिन ग्रुन्ट्विग[1] की ऐतिहासिक और सास्कृतिक कृतियो में हुई। ग्रुन्ट्विग डेनमार्क का महान् लेखक हो गया है। उसने इतिहास के क्षेत्र में नितान्त नयी भावनाओ से प्रेरित अनेक ग्रथ प्रकाशित किये जिनकी घटनाओ और नायको के प्रति उसके दृष्टिकोण का रूढिवादी विद्वानो द्वारा प्रतिवाद भी हुआ। धर्म और दर्शन के क्षेत्र में भी उसने अनेक रचनायें की। साथ ही उसकी राष्ट्रीय कवितायें और गान भी लोगो की नजरो मे ऊँचे उठने लगे। उसका प्रभाव इतना बहुमुखी था कि उसने देश के सास्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक सभी क्षेत्रो को प्रभावित किया। लोकवादी हाई स्कूल का देश में जो आन्दोलन चला, वह भी बहुत कुछ उसी के प्रभाव और सहयोग का परिणाम था। कहते हैं कि विद्वता के क्षेत्र में तो उसके ग्रथो की उत्तमता प्रमाणित ही है, यदि उसके स्तोत्रो और धार्मिक गीतो का सही अनुवाद हो तो वे ससार की तद्विषयक सुन्दरतम रचनाओ मे गिने जायेंगे।

ग्रुन्ट्विग के अनेक समकालीन, साहित्य और दूसरे क्षेत्रो में प्रसिद्ध हो चुके हैं। क्रिश्चियन मॉलबैख[2] ने पुरानी साहित्य-कृतियो को ढूँढ कर प्रकाशित किया। वह उच्चकोटि का आलोचक और कोषकार था। क्रिश्चियन ह्विग ब्रेदाल[3] ने गाँव मे रह कर अपना प्रसिद्ध नाटकीय दृश्य छह भागो में लिखा। रास्मस क्रिश्चियन रास्क[4] ससार का सबसे बडा भाषा-शास्त्री माना जाता है। अपने अध्ययन द्वारा उसने डेनमार्क की भाषा और साहित्य का बडा उपकार किया। उसने आइसलैण्ड के 'हिम्सक्रिगला' का अनुवाद किया और साथ ही उसके लिए एक व्याकरण और कोष भी रचा। लैटिन, ग्रीक, इब्रानी, और सस्कृत का वह पडित था। साथ ही उसने नोर्दिक, रूनिक, स्लाव और सारी यूरोपीय भाषाओ पर अधिकार कर लिया था। अरबी और तिब्बती, चीनी और हिन्द चीनी तथा हिन्दुस्तान की अनेक भाषायें उसने भली प्रकार सीख ली थी। प्राय ५५ भाषायें वह मादरी जबान की तरह बोल सकता था। साथ ही उनके इतिहास और विकास का भी उसने अध्ययन किया। अनेक भाषाओ के व्याकरण भी उसने प्रस्तुत किये। उसके दृष्टिकोण ने भाषा विज्ञान के सिद्धातो में आमूल

---

१. Nikolaj Frederik Severin Grundtvig (१७८३-१८७२), २ Christian Molbech (१७८३-१८५७), ३ Christian Hvid Bredahl (१७८४-१८६०), ४ Rasmus Kristian Rask (१७८७-१८३२)

क्राति उपस्थित कर दी। वह स्वय भाषा-विज्ञान का जनक था। सस्कृत और लिथुएनियन का अन्यतम साम्य प्राय उसी ने पहले-पहल प्रमाणित किया।

बर्नहार्ड सेवेरिन इगमान[1] रोमाण्टिक आन्दोलन का नेता और प्रकाण्ड साहित्यकार था। उसने १८११ में अपना 'एपिक' और 'लिरिक' कविता में प्रकाशित किया। उनका दूसरा भाग अगले वर्ष में निकला। परन्तु उसकी प्रतिभा का सिक्का उसकी विशिष्ट कृति 'कृष्णवीर' से जमा। उसके बाद उसने अनेक नाटक लिखे। 'मासिनिएलो', 'ब्लाका' 'पूरब की आवाज', 'अनोखा शिशु राइनाल्ड' 'सिहवीर' 'तोलोसा का गडरिया' 'तासो की मुक्ति।'। फिर भी उसने लिरिको का लिखना बन्द न किया। उसके राष्ट्रीय गीत और स्तोत्र अन्यन्त सुन्दर माने जाते हैं। इगमान ने पुराने राष्ट्रीय नायको की घटनाओ पर कुछ सुन्दर उपन्यास भी लिखे।

जोहान्स कार्स्टेन होख[3] वैज्ञानिक और कवि था। उसने कविता में 'हामाद्रियाद' और मेलोड्रामा 'वाराजत' लिखा। रोम में उसने 'टाइबेरियस' और 'ग्रेगोरियस' सप्तम, नामक नाटक लिखे। रोम से लौटने पर उसने कुछ और नाटक लिखे और कुछ उपन्यास भी। जोहान लुडविग हाइबर्ग[4] का प्रसिद्ध पिता पी ए हाइबर्ग[5] अपनी साहित्यिक व्यग्य रचनाओ के कारण देश से निकाल दिया गया था। उसकी माँ भी साहित्यकार थी। जोहान्स स्वाभाविक ही साहित्यिक दाय का अधिकारी हुआ और राहबैक के साहित्यिक और सास्कृतिक परिवार में उसकी खूब रसाई भी थी। उसे अपने नाना काउण्ट गिलेन बोर्ग[6] के घर विदेशी राजनीतिज्ञो से मिलने का भी सयोग मिला। इससे उसे स्वतत्र व्यक्तित्व मिला। उसकी यात्राओ ने भी उसे अनुभूति प्रदान की। उसकी प्रारम्भिक कृतियाँ 'मार्यो नेत थियेटर' आदि थी। जर्मनी मे उसने हीगेल के दर्शन का अध्ययन किया जिससे उसने स्वदेश लौट कर 'मानव स्वाधीनता' पर अपने विचार प्रकट किये। उसकी अनेक रचनाओ में प्रधान 'सोलोमन और जोगैन', 'अभिन्न', 'अप्रैल का मूर्ख' आदि हैं। क्रिश्चियन चतुर्थ सबधी राष्ट्रीय नाटक 'एल्फ हिल' (१८२८) उसकी सर्वोत्तम रचना है। अगले बीस वर्ष वह डेनी साहित्य का एकमात्र नेता रहा। उसने अपनी माँ थामसिन क्रिस्टाइन गिलेन बोर्ग[7] के भी अनेक उपन्यास प्रकाशित किये जिनमे 'रोजमर्रा की कहानिया' प्रसिद्ध है। १९वी सदी के अन्य कवियो में पौल मार्टिन मोलर[8] एस एस ब्लिखर[9] और क्रिश्चियन विन्थर[10]

---

१. Bernhard Severin Ingemann (१७८९-१८६२), २ 'Black Knights', ३. Johannes Carsten Hauch (१७९०-१८७२), ४ Johan Ludvig Heiberg (१७९१-१८६०), ५ P A Heiberg, ६. Count Gyllenborg, ७ Thomasine Christine Gyllenborg (१७७३-१८५६), ८ Poul Martin Moller (१७९४-१८३८), ९. S S Blicher; १० Christian Winther (१७९६-१८७६)

थे। ब्लिखर जटलैण्ड का कवि था और विन्थर जीलैण्ड का। विन्थर का प्रसिद्ध कविता संग्रह 'काष्ठ तक्षण' प्रसिद्ध कृति है। उसने उसके अतिरिक्त उत्तरी जीलैण्ड के प्राकृतिक सौंदर्य को भी अनेक कविताओ और गीतो में प्रतिबिम्बित किया। उसकी सर्वोत्तम रचना 'मृग का पलायन' है।

हाइबर्ग का प्रधान शिष्य हेन्रिक हर्त्स[1] था जिसने रोमाटिक प्रवृत्तियो से यथार्थवाद की ओर प्रगति पूरी कर दी। उसे उसके 'प्रेत पत्र' से ख्याति मिली। उसने अनेक नाटक लिखे, 'स्वेन्द्र डीरिंग का घर', 'राजा रेनी की पुत्री', 'निनोन' 'सेविंग्स बैंक', 'कोपेनहागेन की यादगार', और 'चगा होने का तरीका'। उसके लिरिको में सबसे सुन्दर 'तट का युद्ध' और 'हिरशोल्म' कविताएँ हैं। कार्ल बर्नहार्ड[2] का जन्म नाम एन्डर्स निकोलाई द सेन्त आबेन था। उसकी कृतियाँ डेनमार्क के लोक साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। उनमें प्रसिद्ध निम्नलिखित कहानियाँ हैं—'कमिश्नर', 'बच्चो का नृत्य', 'भाग्य का प्रिय', 'सस्मरण' आदि। एमिल अरस्ट्रुप[3] और लुडविग बोडखर[4] ने भी सुन्दर कवितायें प्रकाशित की। पहला पेशे से डाक्टर था, दूसरे ने इटली से अपनी प्रेरणा पाई।

फ्रेडरिक पालुदान-मुलर[5] को ख्याति अपनी कविता 'नर्तकी' से मिली। उसकी सर्वोत्कृष्ट रचना 'एडेमहोमो' है जिसमे समकालीन मानव पर व्यग्य है। उसने कुछ धार्मिक कविताये भी लिखी। उसकी कुछ कविताओ के विषय ग्रीक कथानक है। उसकी कृति 'कलानस' भारतीय आधार पर आधारित है। उसने कुछ उपन्यास भी लिखे। उसका एक उपन्यास 'यौवन का स्रोत' है।

हान्स क्रिस्टियन ऐन्डर्सन[6] का जीवन जादू की कहानी है। ओडेन्स से वह कोपेनहागेन पहुँचा। कालिन[7] की सहायता से उसने अपनी पहली कविता "मरणासन्न शिशु" प्रकाशित की। इसके बाद ही उसकी पहली पुस्तक 'पैदल यात्रा' (१८२९) निकली। उसे आरम्भ में भी असफल नही कहा जा सकता किन्तु उसकी कृतियो की बडी खरी और हृदयहीन आलोचना हुई। वह इटली चला गया और जब लौटा तो देखा कि लोगो की सहानुभूति उसकी ओर हो गई है। उसके 'गायक' का परिणामत डेनमार्क और जर्मनी दोनो देशो में बडा स्वागत हुआ। उसी साल उसने बच्चो लिए 'परियो की कहानिया' लिखी और सालो साल क्रिसमस के अवसर पर लिखता गया।

---

१ Henrik Hertz (१७९७-१८७०), २. Carl Bernhard (Anders Nicolai de Saint-Aubain (१७९८-१८६५); ३ Emil Aarestrup (१८००-५६), ४ Ludvig Boedtcher (१७९३-१८७४), ५ Frederik Paludan-Muller (१८०९-७६), ६. Hans Christian Andersen (१८०५-७५), ७ Collin (Well known Philanthropist)

एन्डर्सन ने अनेक उपन्यास भी लिखे। परन्तु विशेष सफल उसकी कॉमेडियाँ हुई। 'वालू का आदमी', 'मोती और सोने से भी बढ कर' आदि। होल्बर्ग ने 'सोने का स्थान' लिखा। परियो की कहानियो से मिलती-जुलती ही उसकी 'विना चित्रो की सचित्र पुस्तक' है। उसने अनेक गीत भी लिखे जो सारे डेनमार्क में आज भी गाये जाते है। उसकी 'लोरी' तो उस देश के साहित्य मे अमर हो गयी है। उसने अनेक यात्राएँ की और उन यात्राओ के सुन्दर वृत्तात प्रकाशित किये। ऐन्डर्सन ने सारे यूरोप के रगमच पर प्रभाव डाला और उसकी रचनायें शीघ्र ही डेनमार्क की सीमाएँ पार कर गयी। उसका स्थान ससार के सुन्दरतम साहित्यकारो मे है।

पार्मो काल प्लूग[1] असाधारण वाग्मी और राजनीतिक था। उसने विद्यार्थियो के लिए अनेक गीत लिखे जिनका सग्रह प्रकाशित हुआ। अपने सॉनेटो में उसने पारिवारिक चित्र खीचे। जर्मन युद्ध ने उसे दु खी कर दिया। उसकी कविताए समसामयिक घटनाओ की ही अधिकतर प्रतिबिम्ब है। उसी काल का कवि जेन्स क्रिस्टियन हास्ट्रप[2] भी था जिसके गीत पर्याप्त लोकप्रिय हुए। उसने विद्यार्थियो के लिए कुछ कॉमेडियाँ भी लिखी। माइर आरो गोल्डश्मिट[3] रूढियो का स्वाभाविक शत्रु था। आरम्भ में ही उसने सरकार और रूढिवादी राष्ट्रीय सस्थाओ की सख्त आलोचना की। उसने अनेक उपन्यास लिखे। उनकी शैली भापा की दृष्टि से अप्रतिम है। उनमें कुछ है—'यहूदी', 'वारिस', 'गृहहीन', 'काग', 'चाचा के घर की कहानियाँ', 'कहानियाँ और यथार्थ'।

क्रिश्चियन रिचर्ड[4] अत्यन्त मधुर लिरिककार था। 'घोषणाएँ' उसने अपने विद्यार्थी जीवन में ही लिखा था। शीघ्र उसने "सक्षिप्त कविताए" प्रकाशित की और तदनन्तर अनेक कविता सग्रह। उनमें से कुछ 'कोलबस', 'बोनेवाला', 'नजरथ' थे। उसकी विशिष्ट कृतियो में एक ओप्रा 'द्रोत और मास्के' और दूसरी भौगोलिक कविता "हमारा देश" है। उसने अनेक सुन्दर गीत और स्तोत्र भी लिखे। हान्स विलहेल्म कालून्ड[5] ने भी कुछ कवितायें और एक 'एपिक' लिखा। उसे ख्याति उसके वसन्त और पतझड' से मिली। उसका नाटक "फुल्विया" बडी सफलतापूर्वक खेला गया। आदर्शवाद और यथार्थवाद की कशमकश में वह यथार्थवाद के पक्ष में था और अपनी सुन्दरतम कविताएँ उसने उसी पक्ष में लिखी।

क्रिस्टियन क्नुड फ्रेडरिक मोल्बेक[6] ने अनेक कविताएँ लिखी पर सफलता नही मिली।

---

१ Parmo Carl Ploug (१८१३-९४), २ Jans Christian Hostrup (१८१८-९२); ३ Meir Aaron Goldschmidt (१८१९-८७); ४ Christian Richardt (१८३१-९२), ५ Hans Vilhelm Kaalund (१८१८-८५), ६ Christian Knud Frederik Molbech (१८२१-८८)

तब उसने अपना नाटक 'अम्ब्रोसियस' लिखा। वह उसी नाम के डेनी कवि के जीवन के आधार पर था। उसका वह नाटक बडा सफल हुआ। हान्स पीटर होल्स[1] ने कुछ अत्यन्त मधुर कविताएँ छोडी है। उसने कुछ नाटक भी लिखे, पर वे असफल रहे। जोर्गेन विलहेल्म ओटो बर्गसी[2] प्राणि-विज्ञान का पडित था परन्तु आँखें खराब हो जाने के कारण वह साहित्य मे आया। उसन कुछ उपन्यास और लिरिक लिखे। कई खडो में प्रकाशित उसके सस्मरण सुन्दर हैं।

जोहान क्रिस्टियन ब्रास्बोल[3] ने अपनी सारी कृतियाँ कारित एटलर[4] नाम से प्रकाशित की। उसने बडे लोकप्रिय उपन्यास लिखे। उसने ऐतिहासिक उपन्यासो मे विशेष सफलता पाई। उसकी वर्णन शक्ति बडी ही प्रभावोत्पादक थी। उसके कुछ उपन्यास निम्न-लिखित हैं—'कबीले का सरदार', 'क्वीन्स गार्ड का नायक', 'गढो की कहानियाँ', 'काले का कैदी'। इनके अतिरिक्त उसने कुछ कॉमेडी नाटक भी लिखे। हरमान फ्रेडरिक इवाल्ड[5] अपने पहले ही उपन्यास से विख्यात हो गया। उसने भी अधिकतर एतिहासिक उपन्यास लिखे। उनमे मुख्य ये थे —'वाल्डेमार का हमला', 'क्राम्बोर्ग मे स्वीड', 'क्रुड गिल्डेन्स्ट्यर्न,' 'नील्स ब्राहे।'

क्रिस्टियन लुडविग एडवर्ड लेम्बके[6] लिरिककार था और उसने कुछ सुन्दर राष्ट्रीय गीत लिखे। परन्तु वह प्रसिद्ध शेक्सपियर के नाटको के अपने अनुवाद से हुआ। एरिक बोग[7] नाटककार था। १८५० में उसने अपना पहला नाटक 'नये दिन की रात' प्रकाशित किया। 'जनता का पत्र' मे उसने सशक्त सम्पादकीय लिखा जिनका प्रकाशन 'यह और वह' नाम से हुआ। उसके नाटको में प्रसिद्ध 'लैन्टेन पार्टी' है। उस ने अनेक हास्य कहानियाँ लिखी, जिनमें 'वेर्तेल और गधा' बडी सुन्दर है। उसने उपन्यास और सस्मरण भी लिखे।

हान्स इगेड शैक[8] राष्ट्रवादी था और डेन्मार्क के राजनीतिक सघर्ष मे भाग ले चुका था। बहुत दिनों तक उसके विचार कल्पना और यथार्थ के बीच मँडराते रहे। अन्त में उसने यथार्थ को स्वीकार किया और अध्यात्म का खोखलापन प्रमाणित करने के लिए अपना उपन्यास 'काल्पनिक' लिखा। यह डेन साहित्य का सभवत पहला यथार्थवादी उपन्यास था। निकोलाज के नाम से कार्ल हेन्रिक शार्लिंग[9] ने भी हास्यात्मक उपन्यास लिखे।

---

१ Hans Peter Holst (१८११-९३), २ Jorgen Vilhelm Otto Bergsoe (१८३५-१९११), ३ Johan Christian Brosboll (१८१६-१९००), ४ Carit Etlar, ५. Herman Frederik Ewald (१८२१-१९०८); ६ Christian Ludwig Edward Lembcke (१८१५-९७), ७ Erik Bogh (१८२२-९९), ८ Hans Egede Schack (१८२०-५९), ९ Carl Henrik Scharling (जन्म १८३६)

विलहेल्म टोप्सो[1] पत्र सम्पादक था। उसकी कलम में बडा तीखापन था। वह असाधारण शैलीकार माना जाता है। उस देश के साहित्य में वही यथार्थवाद का प्रचारक हुआ। उसकी कहानियो के पाँच सग्रह उसकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुए।

कुछ काल से डैनी साहित्य मे शिथिलता आ गई थी। जार्ज ब्रेंडिज[2] ने उसे पुनरुज्जीवित करने का प्रण कर लिया। भावो की स्वतत्रता की प्रेरणा उसे दार्शनिक ब्रोश्नर[3] से मिली थी। डेन्मार्क में उस काल हीगल आदि दार्शनिको के दृष्टिकोण के अनुकूल और प्रतिकूल अनेक विचारधाराएँ एक दूसरे के विरुद्ध टकरा रही थी। ब्रेंडिज को भी पहले उस कशमकश में पडना पडा। अन्त में उसने केवल तर्क और बुद्धि को स्वीकार किया। हाइबर्ग, पालुदान-मीलर, इबसन सभी पर उसने आघात किया। इन विचारो के परिणामस्वरूप उसकी दो प्रखर कृतियो का प्रकाशन हुआ—'रसो का अध्ययन', 'आलोचनाए और चित्र' (१८७०)। उसने अपन यूरोपीय भ्रमण में जर्मनी के रोमाण्टिक आन्दोलन, फ्रास की प्रतिक्रियात्मक प्रवृत्ति और इग्लैण्ड के प्रकृतिवाद का सैद्धातिक विस्तृत विवेचन अपने विशद ग्रथ 'उन्नीसवी सदी की प्रधान साहित्यिक प्रवृत्तियो' में किया। उसके आलोचना चित्र 'सोरेन की एर्कणर्द' डेन्मार्क के कवि, इसाइया तेग्नर, डिजरेली, लासाल आदि पर प्रस्तुत हुए। अनेक साहित्यिक विषयो पर दिये उसके व्याख्यानो के सग्रह पुस्तक रूप में प्रकाशित हुए। ब्रेंडिज ने तत्काल अपने साहित्य और समाज पर अपने विचारो का प्रभाव डाला और अनेक युवा चिंतक और साहित्यकार और आलोचक उसके इर्द गिर्द जमा हो गए। उसने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। परन्तु उसका कार्य उसके अनुयायियो की शक्ति के परे था।

होल्गर हेन्रिक हरहोल्ट द्राकमान[4] चित्रकला के क्षेत्र से साहित्य में आया। उसने पहले अपनी कवितायें प्रकाशित की। जिनकी ब्रेंडिज ने प्रशसा की। उसने साहित्य के सभी अगो का अपनी प्रतिभा से गठन किया। उसकी कृतियो में प्रधान थे—'तानहाउसेर' (उपन्यास), 'सीमा के दक्षिण से' (स्कैच), और 'सागर के गीत'। उसकी रचनाओ का विस्तार बहुत बडा है। उसके नाटको में मुख्य 'एक समय' है। भाषा पर उसका असाधारण अधिकार था। वह उन्नीसवी सदी के पिछले काल के प्रधान कवियो में है।

लियोपोल्ड बुडे[5] जनता का साहित्यकार था। उसने जन हिताय लिखा। जन विषयक लिखा। 'क्रिस्मस की शाम के चित्र' और 'तरुण काल से' की शैली बडी सुघड है। जकारिया निलसन[6] ने भी अपनी स्वतत्र शैली विकसित कर ली थी। वह मुदर्रिस था

---

१ Vilhelm Topsoe (१८४०-८१), २ Georg (Morris Cohen Brandes (१८४२-१९२७), ३ Brochner, ४ Holger Henrik Herholt Drachmann (१८४६-१९०८), ५ Leopold Budde (१८३६-१९०२), ६. Zakarias Nielsen (जन्म १८४४)

और उसकी कविताएँ आज भी स्कूलो में पढी जाती है। 'मिलन' उसका ऐसा ही लिरिक है। उसकी कविताएँ बडी ही सरस होती थी। वह स्वय बडा सहृदय था।

रोजेन्बर्ग[1] मुख्यत साहित्यिक और नाटकीय आलोचक था। अपने लेखो और 'नई सदी' द्वारा उसने ब्रेडिज और उसके क्रातिकारी विचारो का विरोध किया। 'नई सदी' नाट्य कृति थी। उसके अन्य नाटक थे—'हनिंग तोन्डोर्फ, 'समुद्री नगर' आदि। उसने दर्शन और जीवन चरित सबधी पुस्तकें भी लिखी। वह कोपेनहागेन के राजकीय थियेटर का डायरेक्टर था। उस अधिकार से और नाट्यालोचक के नाते उसने डेन्मार्क के नाटको और नाट्यकारो पर पर्याप्त अनुशासन रखा। अल्फ्रेड इप्सेन[2] पहले ब्रेंडिज के शिष्यो मे था फिर उनसे अलग होकर उसने अपने गुरु पर ही प्रहार किया। वह कवि था और उसका 'हरे पथ के बराबर' कविताओ का सग्रह था। उसका दूसरा सग्रह 'सॉनेट और गीत' था। उसका नाटक 'मैफिस्टोफॅलिज' नितान्त गम्भीर कृति है। 'कल्पना देश की कहानिया' भी उसकी बडी उत्कृष्ट रचना है। और यात्रा वृत्तात के क्षेत्र में उसका "हालैण्ड" अनुपम है।

जाकःसन[3] वनस्पति-शास्त्र का विद्वान था और डारविन का शिष्य था। उसने उसके ग्रथो का डेनी भाषा में अनुवाद किया। वह भाषा का जादूगर था और ब्रेडिज के अनुयायियो में था। उसके उपन्यासो—'मारी ग्रुवे' और 'नील्स लिहने' में उसकी भाषा खुल पडी है। उसने कहानियाँ और सुन्दर कविताएँ भी लिखी। कार्ल ग्येलेरुप[4] भी ब्रेडिज के शिष्यो में था। उसकी पहली कृति 'आदर्शवादी' थी। डार्विन की मृत्यु पर उसने एक अतीव सुन्दर कविता (मरसिया) लिखी। ग्रीस से लौट कर वह ब्रेंडिज के दल का विरोधी हो गया। धीरे-धीरे वह बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुआ और उसकी पिछली रचनाओ पर इस नई चेतना का खासा असर पडा। उसकी सुन्दरतम कृतियो के विपय नोर्दिक कथानको से चुने गये थे। जैसे 'ब्रिनहिल्ड' 'हागवार्ट' और 'सिगने वुयहोर्न'। 'वुयहोर्न' उसका उत्कृष्ट नाटक था।

हेन्रिक पोन्टोपिदान[5] सर्वथा डेनी है। उसकी प्रधान कृतियो के नाम हैं—'सस्मरण' 'पृथ्वी', 'प्रतिश्रुत देश', 'कयामत का दिन', 'भाग्यवान पर'। सोफस शैन्डोर्फ[6] ब्रॅडिज के शिष्यो मे था और खरा यथार्थवादी था। उसने उपन्यास और कहानियाँ लिखी। सोफस बॉदित्स[7] ने भी सुन्दर कहानियाँ लिखी। हरमान जोखिम वाग[8] कोपेनहागेन के

---

१ P A. Rosenberg (जन्म १८५८), २ Alfred Ipsen (जन्म १८५२), ३ I P. Jacobsen (१८४७-८५), ४ Karl A. Gjellerup (जन्म १८५७), ५ Henrik Pontoppidan (जन्म १८५७), ६ Sophus Schandorph (१८३६-१९०१), ७ Sophus Bauditz (जन्म १८५०), ८ Herman Joachim Bang (जन्म १८५७)

अनेक दैनिक पत्रो मे लिखता था जिससे उसकी शैली मँज गई थी। उसके पहले नाटक 'निराश पीढिया' ने लोगो मे उथल-पुथल मचा दी। उसने अनेक कहानियाँ और उपन्यास लिखे। उनमें प्रधान है—'एकाकी निवासी', 'जुए के नीचे', वह रोजमर्रा का जीवन बिना छिपाये खोल कर रख देता था जिससे समाज में हलचल मच जाती थी। उसने वह देखा जो किसी ने न देखा था। उसने वह कहा जो किसी ने नही कहा था उस पर बाल्जाक[१] जोला[२] और ब्रेंडिज[३] के प्रकृतिवाद का गहरा प्रभाव पडा था।

कार्ल ईवाल्ड[४] ने अनेक कहानियाँ, यात्रा-वृत्तान्त आदि लिखे। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ 'परियो की कहानियाँ' हैं। कार्ल-लार्सेन[५] की आरम्भिक कृतियाँ दो नाटक—'इज्जत' और 'नारियाँ' थी। फिर उसने कहानियाँ और ख्यातें लिखी। उसने विवाह सबधी कहानियाँ भी लिखी। वह भाषा और मनोवैज्ञानिक चित्रण का माहिर था। गुस्ताव जोहान्स वीड[६] की पहली ही पुस्तक 'छाया चित्र' काफी सफल हुई। फिर तो उसने अनेक कहानियाँ, उपन्यास और नाटक लिखे। उसका उत्कृष्ट उपन्यास 'बालवत् आत्मायें' हैं। और सफल नाटक 'पीढी' और 'जीवन की शठता'। उसने अभिजातकुलियो, पादरियो, मध्यवर्गियो और किसानो पर चार 'व्यग्य' लिखे। वीड हास्यकार है, समर्थ और प्रखर व्यग्यकार।

जोहान्स जोर्गेन्सन[७] ने 'कविताएँ' प्रकाशित कर उनके अभिराम सौंदर्य द्वारा लोगो का ध्यान तत्काल आकृष्ट किया। उसने अपनी कहानियाँ 'ग्रीष्म' और 'जीवन तरु' में फ्रेंच प्रतीकवाद की शैली प्रस्तुत की। प्रतीकवाद की परिणति उसके कविता सग्रह 'भाव' और पत्रिका "स्तम्भ" में हुई। बाद में वह रोमन कैथोलिक हो गया और उस चेतना से अनुप्राणित कविताएँ लिखने लगा। 'जीवन का झूठ-सच', 'आखिरी दिन' 'कविताएँ', 'आसमान का सूत' 'कवि' आदि उसी दिशा में रचे गये। जेपे आकजीर[८] जटलैण्ड के विशिष्ट कवियो में था। उसने लिखा भी अनेक बार जूटो की ही भाषा मे। वह ब्लिखर और राबर्ट बर्न्स से प्रभावित है। उसकी कविताएँ प्रकृतिपरक है। उसने कुछ उपन्यास भी लिखे।

जोहान्स क्नुडसेन[९] ने अधिकतर उपन्यास लिखे। उसके उपन्यास 'बूढा पादरी' को समाज विरोधी कह कर कटु आलोचना की गई। इससे उसने और प्रौढ कृतियाँ प्रस्तुत की। 'व्रोना', 'काटना', 'मन', 'उरूप' 'शिक्षक'। वह डेनी साहित्य में अपना स्थान रखता है। उसने समाज की रूढियो और परम्परागत आचारो का अपनी कृतियो मे भडाफोड

१ Balzac, २ Zola, ३ Brandes, ४ Carl Ewald (१८५६-१९०८), ५ Karl Larsen (जन्म १८६०), ६ Gustav Johannes Wied (जन्म १८५८), ७ Johannes Jorgensen (जन्म १८६६), ८ Jeppe Aakjaer (जन्म १८६६), ९ Johannes Knudsen (जन्म १८५८)

किया। उसकी भाषा सुन्दर और शैली शक्तिम है। जोहान्स वी. जेन्सेन[१] साहित्य के क्षेत्र मे अपना उपन्यास 'डेन' लेकर उतरा। परन्तु आलोचको का ध्यान आकृष्ट न कर सका। फिर उसने अन्य उपन्यास लिखे—'आइनर एल्कजीर', 'हिमरलैण्ड के लोग', फिर ऐतिहासिक उपन्यास—तीन एक ही जिल्द में—'बादशाह का पतन', (क्रिश्चियन द्वितीय सबधी)। फिर उसने हिमरलैण्ड की 'नई कहानिया', 'पहिया' आदि लिखे। उसके 'अमरीकी महाद्वीप' और उसका 'उपनिवेशीकरण' पर उसे नोबुल पुरस्कार मिला। डेनी साहित्य के अपने युग का वह विशिष्ट प्रतिनिधि माना जाता है।

हान्स लासेन मार्तेन्सन[२] न केवल धर्म के क्षेत्र में प्रत्युत विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में भी असामान्य कोटि का रचयिता हो गया है। वह पहले हीगेल आदि जर्मन दार्शनिको के प्रभाव में आया। उसका नाम सुन कर यूरोप के दूर देशो से विद्यार्थी कोपेनहागेन आने लगे। जहाँ मार्तेन्सन धर्म का दर्शन पढाता था। उसका ग्रन्थ 'एथिक्स' उसके पाण्डित्य का प्रमाण है। उसकी अन्तिम कृति उसके सस्मरण 'मेरे जीवन से' थी। विल्हेल्म वैक[३] ने भी अपने सस्मरण लिखे। उसके उपदेश और प्रवचन उसके काल के धार्मिक आन्दोलन के प्राण बन गये। वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए। ऑल्फर्ड रेकार्ड[४] के प्रकाशन भी उसी दिशा में हुए। उसके राष्ट्रीय और आध्यात्मिक गीत कविता की दृष्टि से बडे मधुर और प्रभावोत्पादक है। उसकी विशिष्ट कृति 'शका और श्रद्धा' है।

बीसवी सदी में मार्क्सवादी प्रेरणा से प्रभावित अनेक साहित्यकारो ने अपनी प्रतिभा से डेनी साहित्य का नया विकास किया है। उनमें से कुछ निम्नलिखित है — मार्टिन एण्डर्सन निकसो, हान्स कर्क, हान्स शेरफिग, ओटो गेल्स्टेड, हिल्मर वुल्फ विलियम हाइनेसेन। ये सभी पिछले युद्ध काल मे हिटलर के बन्दी रहे है। पर नात्सी इनका स्पिरिट तोड न सके। इन्होने निरन्तर यातनाएँ सही परन्तु उनकी आवाज उनके ऊपर उठ उठ कर आक्रान्ताओ को धिक्कारती ही रही। ये विदेशी सत्ता से अपनी आजादी के लिए सघर्ष करते रहे। इनमें सबसे महान ८४ वर्ष का निकसो है। शाति के पक्ष मे उसकी आवाज यूरोप में सबसे ऊँची उभर रही है। वह विश्वशाति काउन्सिल का सदस्य है, स्तालिन पुरस्कार की 'जूरी' का भी सदस्य है, निकसो डेनी साहित्य का आज प्रधान व्यक्ति है। नात्सी शासन में उसे भी 'कान्सेन्ट्रेशन कैम्प' में रहना पडा था। वह उस देश का आज सर्वप्रिय साहित्यकार है। वह मजूरवर्ग से उठा है, उसने कारखानो में काम किया है। उसका वृहद् उपन्यास 'जीवन के गान' अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है। वह लिखता है कि 'मेरे उप-

---

१ Johannes V Jensen (जन्म १८७३); २ Hans Lasen Martensen (१८०८-८४), ३. Vilhelm Beck (१८२९-१९०१), ४ Olfert Ricard (जन्म १८७२)

न्यास का उद्देश्य, आजादी, शांति और जनतत्र के लिए सघर्ष करने वाली जनता का चित्रण करना है।"

हान्स कर्क ने अपना बडा उपन्यास 'गुलाम' द्वितीय महा समर के पहले लिखा था। उसे नात्सियो ने पाण्डु लिपि की अवस्था में पाकर जला डाला। कर्क 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में डाल दिया गया। उसने वह उपन्यास फिर लिख डाला। फिर हस्तलिपि नात्सियो ने नष्ट कर दी। उसने उसे फिर लिखा। वह उस साहित्य का प्रधान यथार्थवादी है। वह अपनी कैद से निकल भागा था। हान्स शेरफिग ने अपना उपन्यास 'अफसर जो अन्तर्ध्यान हो गया' लिख कर निम्न मध्य वर्ग पर गहरा व्यग्य किया। उसका दूसरा उपन्यास 'आदर्शवादी' आदर्शवादियो का कच्चा चिट्ठा उपस्थित करता है। ऑटो गेल्स्टेड बडा समर्थ कवि है। उसकी अत्यन्त शक्तिम कविताओ का सग्रह 'उठो दीप जला दो' है। उसने अपनी कविता 'हमारी चेतना का चोर नात्सीवाद' लिख कर अनेक डेनी फासिस्टो का चोर बाहर निकाल कर रख दिया। हिल्मर वुल्फ सुन्दर प्रगतिशील कहानियाँ लिखता है। उसकी एक कहानी 'तुम भूले नही जा सकते' अत्यन्त मार्मिक है। विलियम हाइनेसेन उपन्यासकार है। उसका उपन्यास "काली कढाई" मध्यवर्गीय समाज के आचारो पर उत्कट व्यग्य है। वह युद्ध विरोधी है। उसका यह उपन्यास भी युद्धवाद के विरुद्ध अपना नारा बुलन्द करता है।

उपरोक्त दो पैरो में उल्लिखित साहित्यकार सभी जीवित है। सभी प्रगतिशील। इनसे डेनी साहित्य का क्षेत्र प्रकाशित है।

१३. तुर्की-साहित्य

भाषा की दृष्टि से तुर्की अल्ताई विभाग का अग है और उसकी गणना मगोली तथा तुगुसी जबानो के साथ होती है। तुर्की का उल्लेख पाँचवी सदी के चीनी साहित्य में मिलता है। तब से तुर्की भाषा की अनेक बोलियाँ मध्य एशिया और बाल्कन के देशो में बोली जाती रही है।

प्राचीनतम तुर्की-साहित्य का उदाहरण मध्य एशिया के कुछ अभिलेखो से मिलता है। उनमें से एक सस्मरणात्मक है जो खान बिल्गा[1] के भाई शाहजादा कुल तेगिन[2] की यादगार में ७३२ ई में चीनी सम्राट द्वारा खुदवाया गया था। मध्य एशिया के तुर्की साहित्य की एक मजिल महमूद काशगरी[3] के कोष 'दीवाने लुगति-त-तुर्क' (१०७३) है। उस कोष में शब्दो के अर्थ के साथ ही अरबी में उनकी परिभाषा और उनके प्रयोग के उदाहरण दिये गये हैं।

उस काल की साहित्यिक भाषा 'उइगुर' तुर्कों की भाषा है। और उसका विशिष्ट उदाहरण यूसुफ खास हाजिब[3] का ग्रन्थ 'कुदात्कू बिलिक' है। ग्रन्थ १०७० मे लिखा गया था और ६५०० पक्तियो के काव्य रूपक मे आचार और राजनीति का विवेचन करता है। उस पर फारसी का प्रभाव स्पष्ट है। उइगुर साहित्य का दूसरा उदाहरण 'बख्तियार-नामा' (बख्तियार चरित) है। उसमें १० वजीरो की कहानियाँ सगृहीत है जिनका उद्गम हिन्दुस्तान है। 'मीराजनामा' उसी प्रकार की एक अन्य कृति है, जिसमें मुहम्मद की सातवें बहिश्त की यात्रा का वर्णन हुआ है।

तुर्की की चगतई बोली में 'बाबरनामा' और 'शेजेरेई-तुर्क' जाने हुए ग्रन्थ है। इनमें पहला तो मुगल विजेता बाबर के अपने सस्मरण प्रस्तुत करता है और दूसरा अबुल गाजी बहादुर खा[4] का लिखा तुर्कों का इतिहास है।

पश्चिमी तुर्की साहित्य 'उस्मानली' अथवा 'उत्तमान' तुर्कों से सबन्ध रखता है। उसका पहला युग १३०० ई से १४५० ई तक है। इस बीच उस्मानली राष्ट्र की शक्ति बढी और प्रतिष्ठित हुई थी। सेल्जुक तुर्कों के साहित्य पर फार्सी की गहरी छाया पडी थी। इसी से जलालुद्दीन रूमी तक ने अपना 'मस्नवी' फारसी में लिखा। उनके बाद उस्मानली

---

१ Khan Bilga ; २ Kul Tegin , ३. Mahmud Kashgari; ४ Yusuf Has Hajib (Khass Hadjib), ५ Abul Gazi Behadur Han (Aboul-Ghazi Behadour Khan)

तुर्कों ने जनता की बोली तुर्की में लिखना शुरू कर दिया था। यूनुस एम्रे[1] ने अपना 'मस्नवी'' तुर्की में ही लिखा। वह आज तुर्की का पहला महान् राष्ट्रीय कवि माना जाता है। उस भाषा में दूसरा महत्त्व का ग्रन्थ सुलेमान चेलेवी[2] ने लिखा। ग्रन्थ हजरत मुहम्मद की प्रशस्ति के रूप में है और 'मौलीदी-शरीफ' कहलाता है। इसकी लोकप्रियता रचना के दिन ही प्रतिष्ठित हो गई थी —जो आजतक अक्षुण्ण बनी है।

इन दो विशिष्ट कृतियो के बावजूद भी तुर्की के साहित्यकार बराबर अपने मॉडलों के लिए फारसी और अरबी की ओर देखा करते थे। तुर्की साहित्य का सबसे सक्रिय युग मुराद द्वितीय का शासनकाल (१४२१-५१) है। मनीसा के अपने दरबार में मुराद ने दूर-दूर के कवियो, दार्शनिको और विद्वानो को एकत्र कर लिया था। अपनी अध्यक्षता में ही उसने तुर्की में अनेक अरबी और फारसी ग्रन्थो का अनुवाद कराया। वस्तुत यही कारण था कि तुर्की प्राय चार सदियो तक फारसी और अरबी की चेरी बनी रही।

१४५० और १८५९ का काल तुर्की साहित्य का दूसरा युग है। १४५३ में फतह मुहम्मद ने कुस्तुन्तुनिया जीत कर पूर्वी रोमन साम्राज्य का अत कर दिया। तबसे तुर्की साहित्य विशेषत काव्य के रूप में विकसित हुआ और फारसी की मदद से जनबोली को साहित्यिक अलकृत भाषा की प्रतिष्ठा मिली। इस काल चार कवि विशेष विख्यात हुए—फजली[3] बाकी[4], नफ़ी[5] और नदीम[6]।

अपनी शायरी में इन कवियो ने अधिकतर 'गजल' का प्रयोग किया है। 'कसीदा' का उपयोग भी उसी मात्रा मे हुआ है जिस मात्रा में 'गजल' का। 'मस्नवी' वस्तुत प्रबन्ध अथवा वीर-काव्य (एपिक) का नाम है।

उस युग का सबसे बडा कवि शेख गालिब[7] था जिसने' हुस्नो इश्क' (सौन्दर्य और प्रणय) लिखा। वह कविता खुदा की मुहब्बत का रूपक है जिसमें मानव प्रेम को अन्तत उद्देश्य माना गया है। गालिब ने यह मस्नवी केवल २१ वर्ष की आयु में लिखा था।

उस युग का साहित्य विशेषत काव्य में है फिर भी इतिहासो का उसमें काफी निर्माण हुआ है। सैदुद्दीन[8] ने अपने ग्रन्थ 'ताकूत तवारीख' में उत्तमन तुर्कों का इतिहास प्राचीनतम काल से १७वी सदी के अपने युग तक लिखा है। उसमें तवारीख-नवीसो की एक सूची दी गई है। नाइमा[9] उस काल का सबसे बडा इतिहासकार है जिसने अपना इतिहास 'तवारीख' कई खडो में लिखा था। फिर भी वह केवल १५९१ और १६५९ के बीच की घटनाऍ ही व्यक्त कर सका। जेवदेत[10] का 'तवारीख' जो १२ खडो में प्रस्तुत

---

१ Yunus Emre, २ Syleyman Chelebı ३ Fuzulı (मृ ल १५६२), ४. Bakı (१५२६–१६००), ५ Nefi (मृ. ल. १६३५), ६ Nedim (मृ १७३०), ७ Sheyh Galıb (१७५७-९९), ८ Saduddın, ९ Nama, १०. Jevdet

हुआ, १९वी सदी के केवल २६ वर्षों की घटनाएँ क्रमबद्ध कर सका। इन तवारीखो के गद्य की एक अपनी शैली है और अधिकतर वह उसी 'सैंज' शैली में लिखे गये हैं।

१९वी सदी के मध्य तुर्की में नई क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो का उदय हुआ। तुर्की साम्राज्य तेजी से लुप्त हो चला। फ्रेंच साहित्यिक प्रभाव भी तुर्की-साहित्य पर पडा। उस प्रभाव के प्रवर्तक विशेषत शिनासी एफेंदी[1] जिया पाशा[2] और नामिक कमाल[3] थे। फ्रेंच क्रान्ति-कारी भावनाएँ धीरे-धीरे तुर्की में भी राष्ट्रीयता, देश-प्रेम और आजादी की प्रेरक बनी। नये लेखको मे विशिष्ट नामिक कमाल था। उसने 'वतन' नाम का नाटक लिखा। जब वह स्तम्बूल के थियेटर में खेला गया तब सुल्तान को उसके दृश्यो से इतना डर लगा कि उसने अपनी रक्षा के लिए थियेटर बद करवा दिया। नाटक जब्त कर लिया और उसके रचयिता कमाल को निर्वासित कर दिया। अब तुर्की-साहित्य अपने को फारसी और अरबी की शृखला से मुक्त कर चला था और यूरोपीय विद्रोही विचारो का अनुगत हो चला था।

ओत्तमान साम्राज्य के उस अतिम युग के तुर्की साहित्य में उपन्यास, आधुनिक ड्रामा, निबन्ध और अन्य विविध यूरोपीय साहित्यिक रूपो की रचना हुई। नामिक कमाल विद्रोही कवि था और जब उसकी कविताएँ जब्त कर ली गयी तब सालो लोग हाथ से उनकी नकल कर छिपे तौर से उनका प्रचार करते रहे। अहमद मिधात[4] का प्रभाव भी तुर्की-साहित्य पर बडा था परन्तु उसने सुलतान से राजनीतिक समझौता कर लिया। इससे एक लाभ जरूर हुआ कि उसकी बीसियो कृतियाँ आम जनता में चलती रही और उदीयमान लेखक उनसे अपनी प्रेरणा जन साधारण की भाति ही लेते रहे।

'नया साहित्य' (अदीबियाते जदीद) आन्दोलन उस युग के महत्त्वपूर्ण अदबी-आन्दोलनो में था। उसका नेता तौफीक फिकरत[5] था। वह असाधारण देशभक्त और आदर्श वादी था। उसने तुर्की में अनेक शैलियो का प्रयोग किया। उसने फारसी से लेकर असामान्य शब्दो का इस्तेमाल किया है। उसकी कविताओ के सग्रह का नाम 'रुबाबे शिकस्त' (टूटी तत्री) है। उस युग का दूसरा कवि प्रसिद्ध अब्दुलहक हमीद[6] था जिसकी पत्नी की स्मृति में लिखी कविता 'मकबर', तुर्की साहित्य में 'क्लासिक' मानी जाती है।

हालिद जिया[7] तुर्की का पहला विशिष्ट उपन्यासकार है। उसकी कृति 'मै चे सियाह' के कई सस्करण हो चुके हैं।

पहले-पहल उसी युग में पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन शुरू हुआ। जिया गोक आल्प[8] ने अपने अध्ययन और सूझ से देश को शिक्षा में क्रातिकारी परिवर्तन किये। प्राचीन तुर्की

---

१. Shinasi Efendi, २ Ziya Pasha; ३. Namik Kemal, ४ Ahmed Midhat, ५ Tevfik Fikret (१८६७-१९१५), ६. Abdul Hak Hamid, ७. Halid Ziya, ८ Ziya Gok Alp

समाज का उसका अध्ययन अप्रतिम था। इसी काल जाति का पुराना नाम 'ओस्मानली' बदल कर तुर्क कर दिया गया। पहले 'तुर्क' शब्द का उपयोग अशिष्ट खानाबदोश के अर्थ मे होता था। उसका अच्छे अर्थ में प्रयोग पहली बार १८७५ के लगभग सुलेमान पाशा[१] ने अपने ससार के इतिहास (तारीख-ए-आलम) में किया।

१९२३ से तुर्की-साहित्य में वर्तमान काल का आरभ होता है। उस काल 'खिलाफत' का अत कर तुर्की-प्रजातन्त्र का सूत्रपात हुआ, और एक नई राष्ट्रीयता का श्रीगणेश हुआ। इस युग मे दो आन्दोलन चले। एक तो तुर्क जाति की महत्ता में विश्वास था, दूसरे ससार के क्लासिकल साहित्य मे विशेष रुचि का आविर्भाव। मुस्तफा कमाल अतातुर्क[२] के नेतृत्व मे तुर्कों ने अपने प्रागिस्लामी इतिहास का सिहावलोकन किया और तुर्की भाषा को सारी भाषाओ का मूल तथा तुर्की सभ्यता को सारी सभ्यताओ का आधार माना। इस अर्थ एक सस्था 'तुर्कियात एन्स्तितूसू' कायम हुई और मुहम्मद फुआद कोपरूलू[३] की अध्यक्षता मे तुर्की सस्कृति पर अनेक जिल्दें प्रकाशित हुई। साथ ही लोक साहित्य में भी लोगो की रुचि बढी। उस दिशा मे भी पर्याप्त कार्य हो चुका है। साथ ही ससार के सारे साहित्यो से उत्कृष्ट ग्रन्थो के अनुवाद भी हो रहे है।

तुर्की के वर्तमान साहित्य मे उपन्यास ने विशेष प्रगति की है। जीवन को प्रतिबिंबित करने और विचारो का प्रचार करने वाले दोनो प्रकार के उपन्यास वहाँ लिखे गये हैं। आधुनिक उपन्यास का उदाहरण हलीदा अदीब का 'विदूषक' और 'उसकी कन्या' हैं।

इधर हाल में लोक-साहित्य को एकत्र और प्रकाशित करने का प्रयत्न हो रहा है। इस दिशा में काम हुआ भी पर्याप्त है। लोगो ने उस काम में रुचि भी काफी दिखाई है। उस साहित्य का प्रधान अग उसकी कथाएँ (मसल) है। ये दो प्रकार की हैं—एक तो वो जो हजरत अली और सैयदगाजी बत्ताल[४] के वीर कृत्य प्रगट करती हैं। दूसरी वो जो काव्यबद्ध हैं और अनेक प्रकार से 'कौर ओग्लू' (अन्धे के बेटे) की कहानी प्रस्तुत करते है। जनसाधारण को इन कहानियो से इतना प्रेम है कि इनके सस्करण उस देश के उपन्यासो से सख्या में प्राय दस गुना होते हैं। तुर्की मे ये कथाएँ सदियो लोकप्रिय रही है, पर इनका लोप होता गया है। अब प्रकाशन के कार्य ने फिर इन्हें लम्बी आयु दी है।

तुर्की साहित्य में विनोद और हास्य भी पर्याप्त है, अनेक कहानियो में मर्द और औरत की बुद्धिमानी या धूर्तता का चित्र खीचा गया है। हास्य का बहुत-सा जाना हुआ साहित्य तो गाँव के मौलवी नासिरुद्दीन खोजा[५] के नाम से सबद्ध है। वह इतना लोकप्रिय है कि लोगो

१. Suleyman Pasha, २. President Mustafa Kemal Ataturk, ३ Mehmed Fuad Koprulu, ४ Seyid Gazi Battal, ५ Nasreddin Hoja

और व्याख्यानो को स्पष्ट करने के लिए अक्सर लोग उसकी 'मसलो' से मिसाल दिया करते हैं। एक मजे की कहानी यह है कि नासिरुद्दीन खोजा को हर जुम्मा को मस्जिद मे व्याख्यान देना पडता था। वह उससे बचना चाहता था। उसने एक उपाय ढूंढ निकाला। अपने सुनने वालो से वह पूछता—क्या तुम्हें मालूम है मैं किस विषय पर आज उपदेश दूगा ? उनके 'नही' कहने पर वह कहता—फिर उस विषय पर क्या बोलना जिसे तुम-हम जानते ही नही ! और चला जाता। दूसरी बार वह वही प्रश्न करता और स्वाभाविक ही उत्तर मिलता—हा ! तब वह कहता—फिर ऐसे विषय पर क्या उपदेश देना जो तुम जानते ही हो ! अब उसके सुनने वालो (उसे परास्त करने के विचार से तीसरी बार जब प्रश्न करता) में से उत्तर मे कुछ कहते हाँ और कुछ कहते न—तब वह कहता—फिर उसके कुछ कहने की आवश्यकता नही। बस जो जानते हैं वे नही जानने वालो को बता दें।

ड्रामा में आज के तुर्की ने खास दिलचस्पी दिखाई है। पिछली सदी में मोलिए[१], शेक्सपियर आदि के नाटको के तुर्की भाषा मे अनुवाद हो गये थे। धीरे-धीरे अन्य भाषाओं से भी नाटको के अनुवाद हुए और अब प्राय ससार के सभी साहित्यो के प्रधान नाटक वहाँ के रगमच पर खेले जाते हैं, कम से कम पढे तो जाते ही हैं।

तुर्की-साहित्य को समृद्ध नही कहा जा सकता। उसमे न तो अरबी फारसी की काव्य-सपदा या दार्शनिक चिन्तन राशि है न यूरोपीय साहित्यो की विचार-प्रतीकता। उसका जो कुछ दार्शनिक साहित्य है अधिकतर अरबी-फारसी से आया है। यूरोपीय दृष्टिकोण का वितत्वन पश्चिमी आधार से उठा है। इन क्षेत्रो मे तुर्की साहित्य की अपनी देन नही के बराबर है। परन्तु उसका लोकसाहित्य विशेषत हास्यपरक, असाधारण है और कम से कम हास्यपरक लोक-साहित्य के क्षेत्र मे तो एक मात्रा मे अरबी और फारसी भी उसके ऋणी हैं।

---

१. Moliere

१४. नार्वे का साहित्य

नार्वे को प्रकृति ने अपने हाथो सँवारा है। यूरोप का वह प्राय उत्तरतम देश है। आधी रात को वहाँ सूर्य चमकता है और उषाकाल उत्तरी क्षितिज पर लघुतम अग्नि-पिण्ड उछलते हैं, अनन्त तारिकाएँ ज्वलन्त स्वर्णमयी नीहारिकाओ के रूप मे निरन्तर उछलती, टूटकर बिखरती रहती हैं। ऐसा नार्वे स्वाभाविक ही कवि की चेतना को जागृत करेगा। नार्वे के साहित्य का प्रारभिक काल इसी कारण अपने अनूठे प्राकृतिक वातावरण में गायन का अभिराम स्वर लिये उतरा।

३३० ई० पू० जब ग्रीक पीथियस् इग्लैंड और स्कॉटलैंड के समुद्रतट से नार्वे पहुँचा तब उस देश में आबादी का नाम न था। बर्फीले प्रसार पर प्रकृति जैसे सोती थी, जो जब-तब बनैले जानवरो की उछल-कूद से अँगडाती, फिर सो जाती। नार्वे में मनुष्य की बस्तियो का विशेष विकास ईसा की प्रारभिक सदियो में हुआ, और तब से उसकी आबादी निरन्तर बढती गई, यद्यपि जीने के साधन नार्वे के उन निवासियो के पास कम थे। यही कारण है कि उन्होंने आसपास के देशो पर हमले शुरू किये। पास कुछ खाने को न था और समुद्र-तट का जीवन उनके लिए ऐसा स्वाभाविक था जैसा मछलियो का होता है। इससे माँझी बनने में उन्हें किसी प्रकार की अडचन न पडी।

नार्वे का आकार-प्रकार बडा है पर आबादी थोडी है। वह आबादी भी अन्य देशो में एक बडी सख्या में बिखरी हुई है। इग्लैंड और अमेरिका में उसकी एक पर्याप्त सख्या है, और प्रचुर सख्या समुद्र पर है। समुद्र-पर्वत और 'फ्योर्द' नार्वे-निवासियो के जीवन में रम गये हैं 'स्कीइग और स्केटिंग' के लिए जितना नार्वे के बर्फ से ढके पहाड और जमे पानी से दर्पण की भाँति चमकती झीलें उपयुक्त हैं उतना दुनिया का कोई स्थल नही। सौंदर्य वहाँ सर्वत्र लहराता है और वह न केवल मानवेतर प्राकृतिक विभूतियो का ही एकान्त रूप है वरन् स्वय मानव का भी। और मानव तथा प्रकृति की यह अनन्य एकता मानव में एकान्त गायन की रति अनायास भर देती है।

ईसा की दूसरी और छठी सदियो के बीच मनुष्य ने वहाँ अपने सास्कृतिक जीवन का आरभ किया। १५ सदियो तक फिर लगातार, वहाँ, वह अपने विविध स्वरो में सगीत भरता रहा जिसका एक भाग 'वाईकिंग' कहलाता है। दूसरा अभिजातवर्गीय अमर कृतियो का गान है और तीसरा 'एद्दा' नाम की धार्मिक कविताएँ। इनमें अधिकतर सम्भ्रान्त जमीदारो का ही सगीत मुखरित हुआ।

वाइकिग काव्य

'वाइकिग' कविता का युग साधारणत दूसरी से सातवी सदी के बीच माना जाता है। वह साहित्य अधिकतर हमलावर अभिजात कुलो का था, प्राय सारा का सारा अलिखित, जिसे लोग गा-सुनाकर सुरक्षित रखते थे। वाईकिंग-काव्य स्वाभाविक ही चारण-काव्य है, जो लाक्षणिक रूप से 'स्काल्दिक' कहलाता है। त्योहारो के अवसर पर मत्र के रूप में यह गाये जाते थे और इनको गाने तथा गाकर सुरक्षित रखने वाले चारण सरदारो के दरबार में रहते थे। वे दरबार-दरबार घूमते रहते थे। उनके प्रति लोगो की श्रद्धा थी और स्केण्डि-नेविया (नार्वे, स्विडन और डेनमार्क) तथा ब्रिटिश द्वीपो में जहाँ भी वे पहुँच जाते उनको आदर और सत्कार की कमी न रहती। वाईकिंग-अभिजात कुलो का जीवन आक्रान्ता का जीवन था, निरन्तर हमलो और युद्धो का जीवन, जिससे उनके सबध की कविताओ का भी ओजस्वी होना स्वाभाविक ही था, यद्यपि इसी कारण उनमें करुणा और दया का भी प्राय अभाव है। वाइकिग काव्य गर्वीले मानव की गर्वोक्ति है। सेनाओ के अभियान की धमक और अस्त्रो की झकार उनका प्राण है। उस काव्यधारा में वीरो की हुकार देवताओ के साहचर्य की निष्ठा रखती है और पूजा में भी दासत्व-प्रकाश का कही नाम नही होता। स्वय चारण सरदारो के प्रसाद पर जीने वाले अकिंचन गायक नही, अनेक बार तो स्वय हमलावर कबीलो के सरदार थे और सदा अभिजात वशधर। वे उन प्रशस्तियो को उद्-गीरित करते थे जिनके भौतिक निर्माण में स्वय उनका भी हाथ रहा था। प्रगट है कि उन काव्यो की ओजस्विता सार्थक होगी, क्योकि उनके गायक स्वय उनके निर्माता भी थे। नार्वे के साहित्य के इस प्रारभिक काव्य का यह रूप सभवत ससार के साहित्य में अनूठा है। यह 'स्काल्दिक' काव्य अलकरण मे बडा ऋद्ध है। उसकी प्रभूत उपमाएँ दृश्य के साक्षा-त्करण में अत्यन्त सहायक होती हैं, और उसकी सादगी स्थिति को स्पष्ट करने में शक्तिम। अलकार के होते हुए भी उसमें कृत्रिमता का सर्वथा अभाव है। जीवन जैसे उसमें उबला पडता है।

अनेक बार उस 'स्काल्दिक' काव्य में वशावलियो का उल्लेख हुआ है। क्वाइन के कवि त्योदोल्फ[१] ने इस प्रकार की एक 'इगलिंग की वशावली' रची जिसमें उसके राजा सुकेशी हेराल्द के 'जन' का कुर्सीनामा प्रस्तुत हुआ। 'हालोगालैंड के श्रीमानो की वशा-वलि' गाकर आइविन्द स्काल्दास्पिलिर[२] ने भी उसी प्रकार प्रशस्तियो को इतिहासपरक बनाया। इन प्रशस्तियो से नार्वे के इतिहास लेखन को बडी सहायता मिली है।

उस काल के विख्यात चारण-कवि त्योदोल्फ और आइविन्द थे जिन्होने क्रमश हेराल्द और हाकन के दरबारो और सुकृत्यो का बखान किया। त्योदोल्फ की कविता

---

१ Agder poet Tjodolf of Kvine २ Eyvind Skaldaspillir

'पतझड का गान' जितनी मधुर थी, आइविन्द की 'राजा-हाकन की स्मृति' उतनी ही शालीन। उनके समकालीन चारण कवि थोर त्र्योर्न हॉर्नक्लोवी[1] ने भी कल्पना और ओज से प्रौढ काव्य रचा। वाइकिंग के जमाने में ही नार्वे निवासियो ने जो आइसलैंड को जीत कर वहाँ अपनी बस्तियाँ बसा ली थी उससे वहाँ के दसवी-ग्यारहवी सदियो के कवियो ने भी नार्वे के दृश्यो को ही अपनी कविता में चित्रित किया।

वाईकिंग-काल में अनन्त ख्यातो और पौराणिक आख्यानो का भी एक विपुल समुदाय प्रस्तुत हुआ। लोक-साहित्य खूब फूला-फला जिसमे पहाड और समुद्र, परियो और दानवो की कहानियाँ असीम मात्रा में प्रस्तुत हुईं। उस काल का धर्म वह अभिजात्य धर्म था जो बाहर के आक्रमणो, समुद्र के वीर-कृत्यो तथा भू-स्वामिता से सबध रखता है। समुद्री राजाओ की कमी न थी और न उत्तरी तथा बाल्टिक समुद्रो की सतह पर वीर-कृत्यो की कमी थी। काव्य एक नयी दिशा की ओर चल पडा, धार्मिक गायन की ओर। परिणाम हुआ 'एद्दा' काव्यधारा का उदय। 'एद्दा' कविताओ का स्वर बहुत कुछ होमर के स्वर से मिलता-जुलता है और राइनलैंड तथा वर्गण्डी जीतने वाले वीर-कृत्यो से अनुप्राणित है। 'एद्दा' कविताओ का एक दल 'वीरो के गीत' नाम से सगृहीत है जिसका एक भाग 'देवताओ के गान' है। 'देवताओ के गान' का आधार 'वोलुस्पो' नवी या दसवी सदी मे लिखा वह सबल काव्य है जिसमें भविष्यवादिनी, 'वोल्वेन', सृष्टि की कहानी कहती है। कहानी व्याख्यात्मक है। उसमें सृष्टि का उदय, देवासुर सग्राम, मानव जाति के मूल और भाग्यो का वखान है। इनके बाद वह दैवी भविष्य के उन दिनो का काल्पनिक रूप अकित करती है जब अनाचार और क्रूरता, भ्रातृ-विनाश और नर-सहार ससार की एकमात्र क्रिया-शक्ति हो जायेंगे और पाप और पुण्य की शक्तियो के अतिम सघर्ष मे उसका विराम होगा। उस सघर्ष का नाम भविष्यवादिनी ने 'राग्नारोक' दिया है। उस संघर्ष के वाद उसका कहना है, 'एक नये और सुन्दर ससार की अभिसृष्टि होगी।' 'एद्दा' के गीतो में देवताओ के कृत्य और समस्याएँ भी अपना भाग पाती हैं। उनकी रचना ७०० से ११०० ई० के बीच हुई और उनका सग्रह १२०० ई० के लगभग हुआ। इन कविताओ का नाम तेरहवी सदी में "एद्दा" पडा जिसका अर्थ है "ओद्दी"—पुस्तक। ओद्दी आइसलैंड में एक स्थान का नाम था जहाँ यह कविताएँ नाव से ले जाकर एकत्र की गई। 'एद्दा' कविताओ का प्रवाह और सादगी वाइकिग चारणो की कविताओ से कही अधिक है। विशेष कर 'वोलुस्पो' के दृश्य बड़े शालीन हैं और उनके वर्णन दृश्यो को मूर्तिमान कर देने में नितान्त समर्थ।

---

१. Thobjorn Hornklow

यहा पर 'एद्दा' और 'स्काल्दिक' गीतो को स्पष्ट कर देना समीचीन होगा। 'एद्दा' कविताएँ वाइकिंग-काल की सर्वोत्तम साहित्य-कृतियाँ हैं। नार्वे के मानुषिक जीवन के कल्पना-चित्र, उनके पुराणो, देवताओ, वीरो और तत्सबधी आख्यानो के साथ उनमे काव्यबद्ध हुए। उनकी शैली सक्षिप्त और मत्रवत् है, उनमे नाटकीय शक्ति है और असाधारण सादगी। सुननेवालो पर निस्सदेह उनका प्रभाव गहरा पडता होगा। उनके विपरीत "स्काल्दिक" गीत जो राजाओ-सरदारो के सस्मरण अथवा प्रशस्तियो का अकन करते हैं, जाने हुए कवियो की रचनाए है। यह कवि नार्वे के प्राचीनतम काल के कवि हैं, इनमें से कुछ आइसलैंड के भी हैं, बारहवी-तेरहवी सदियो के। स्काल्दिक कविताओ की शैली अलकार-बोझिल और उपमाओ के पेच से कसी है।

आइसलैंड के साहित्यिको मे सबसे महान् स्नोरे स्तर्लासोन[1] था जो १२४१ में मरा। उसका प्रधान ग्रन्थ 'हाइम्स्क्रिग्ला' है। उसमे ११७७ तक के नार्वे के राजाओ का इतिहास अद्भुत क्षमता से अकित हुआ है। नार्वे की साधारण जनता उसे आज भी बडे चाव से पढती है। जब-जब नार्वे की राष्ट्रीयता को चोट पहुँची है तब-तब इसी ग्रन्थ के स्वर जनता की आवाज में बुलन्द हुए है। १८१४, १९०५ और १९४० का राजनीतिक इतिहास इस नार्वेई ग्रन्थ का दम भरता है।

तेरहवी सदी में नार्वे का सबध यूरोप के इग्लैंड और फ्रास आदि देशो से सास्कृतिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र मे पर्याप्त घना हुआ। उससे उन देशो के साहित्य का नार्वे पर छाया पडनी अनिवार्य थी। 'कागेस्पाइलेत' (राजा का दर्पण), जो एक सुन्दर सास्कृतिक सग्रह है, अनूदित साहित्य के रूप में इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है। इस सग्रह मे पश्चिमी यूरोप के वीर-काल की कविताएँ नार्वे की भाषा मे सगृहीत हुई। नार्वे की १४वी सदी साहित्य निर्माण की दिशा में कगाल सिद्ध हुई। इसका कारण काल-मृत्यु का वह परिणाम था जिसने यूरोप के अनेक भू-भागो को वीरान कर दिया। उसमें अधिक क्षति उस काल की सस्कृति के अग्रणी पादरियो को हुई जिससे साहित्य के क्षेत्र पर तुषारापात हो गया। हाँ, मध्ययुग की पिछली सदियो मे निश्चय ही नार्वे में पर्याप्त काव्य-रचना हुई, यद्यपि मौलिक कविताओ का ही साहित्य में प्राधान्य रहा। उनका लिखित सग्रह १९वी सदी के मध्य पहली बार प्रस्तुत हुआ।

नार्वे के उत्तर-मध्यकालीन लोकगीतो का सबध डेनी, अग्रेजी और स्काटी 'बैलेड' कविता से है। इससे यह ध्वनि निकालने की आवश्यकता नही कि नार्वे के अपने 'बैलेडो' की कोई अपनी सत्ता नही। वस्तुत उनका अपना सौंदर्य है और उनकी शबिन लिरिक अथवा वीर-काव्यो में कम ही पायी जाती है। उनकी मनोवैज्ञानिक और नाटकीय प्रौढता

---

१ Snore Sturlason

वैयक्तिक दृश्यो मे उन कविताओ मे प्राय सर्वत्र लक्षित होती है। उन लोकप्रिय काव्य-कृतियो में मूल रूप से उन पौराणिक आख्यानो, विश्वासो और कथाओ का समावेश है जो नार्वे के पर्वत और समुद्र-प्रधान जीवन को व्यक्त करती है। नार्वे के बौद्धिक इतिहास की १४वी, १५वी और १६वी सदिया साहित्य की दृष्टि से अनुर्वर कही गई है। परन्तु यह न भूलना चाहिए कि उसी काल उन लोक-कहानियो, का विशेषत साहित्य में आरम्भ हुआ था जो उस काल के लोक-विश्वास को प्रगट करती है। वे कथाएँ पीढी दर पीढी १८४० तक कही जाती रही और तब उनको सग्रह के रूप में एकत्र कर लिया गया। उस पर्वतीय देश मे घाटियो का बाहुल्य है और इन्ही घाटियो में नार्वे की किसान जनता एक लबे काल तक अपना अविकृत जीवन बिताती रही थी, जब धीरे-धीरे यूरोपीय बौद्धिक धारा और साहित्यिक शैलियो का आन्दोलन वहाँ पहुचा। परन्तु यद्यपि, यूरोपीय साहित्य-चेतना ने नार्वे की भाषा तथा साहित्य को समृद्ध किया, वह उसकी मुलभूत प्रेरणाओ को विकृत न कर सकी। इसी कारण नार्वे की कला और साहित्य दोनो स्थानीय विशेपताओ से युक्त और अपनी आधारभूत प्रेरणाओ से अनुप्राणित हुए। उस साहित्य की लोक-कथाओ में जब एरिक बेरेन्सिक ओल्ड[१] और थ्योडोर किटल्सन[२] ने उनको चित्राकित कर दिया तब वे नार्वे में घर-घर की निधि बन गई। तब उनका अनुवाद अग्रेजी और फ्रेंच मे भी हुआ और लोक-साहित्य के अध्येताओ की वे मनन की वस्तु बन गई।

धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन ने नॉर्वे के इतिहास को भी प्रगति दी। वहाँ उसके प्रभाव से साहित्यिक चेतना सजग हो उठी। उस देश के पादरियो ने बौद्धिक जीवन की बागडोर तब अपने हाथ में ली। उनमें से अनेक कोपेनहागेन के विश्वविद्यालय के विद्यार्थी रह चुके थे और वहाँ वे नये विचारो और विदेशी बौद्धिक प्रवृत्तियो के सम्पर्क में आये थे। १६वी और १७वी सदियो से उनके द्वारा नार्वे के साहित्य मे मानवतावादी ज्ञान था रजित काव्यधारा का प्रवेश हुआ। फिर भी १८वी सदी में ही आधुनिक परपरा की प्रतिभा का उस देश में विकास हुआ। उसकी पहली मजिल लुडविग होल्बर्ग[३] ने तय की। उसके प्रादुर्भाव से देश के साहित्य में एक नयी चेतना का आरभ हुआ। उसका स्थान समसामयिक यूरोप के प्रधान मेधावियो में था। होल्बर्ग का जन्म बर्लिन में हुआ था। और अपनी तरुणावस्था मे उसने हालैंड, इग्लैंड, जर्मनी, फ्राम तथा इटली का भ्रमण किया था। इग्लैंड के अपने ढाई वर्ष के प्रवास में उसने क्वीन ऐन-कालीन बौद्धिक वातावरण से गहरा सम्पर्क स्थापित किया। परिणामस्वरूप जो उसने कॉमेडी नाटको की एक लम्बी परपरा रच दी वह डेनी और नार्वे साहित्य के प्रबल पाये सिद्ध हुए। जीवन के

१ Erik Wererskiold, २ Theodore Kittelsen, ३ Ludvig Holberg (१६८४-१७५४)

उत्तरकाल मे होल्बर्ग ने आचारवादी और दार्शनिक निबन्धकार के रूप में देश के साहित्य पर अपना प्रभाव डाला। उसमें बोल्तेयर, मोलिए और एडिसन की विविध प्रतिभाएँ अपने-अपने अश और मात्रा में एकत्र हुईं। इसी कारण डेन्मार्क और नार्वे दोनो के साहित्यिक समान रूप से उसे अपने साहित्य का जनक मानते हैं। होल्बर्ग अपने काल का केवल सबसे बडा नाटककार ही न था, उस युग का प्रधान प्रतिनिधि भी था।

डेन्मार्क और नार्वे दोनो देश पहले सदियो मे समान शासन में रहे। एक राजा दोनो का स्वामी था। और होल्बर्ग समान रूप से दोनो जातियो का प्रतिनिधि था। उसकी मृत्यु के बाद ही नार्वे और डेनमार्क के निवासियो में खटक शुरू हुई और नार्वे की जनता डैनी प्रतियोगिता मे अपना विकास कुठित मान एक नयी राष्ट्रीय चेतना से गतिमति हुई। यह चेतना राजनीति की ही भाँति साहित्य के क्षेत्र में भी फूली फली। छन्द में नार्वे के नैसर्गिक दृश्यो का 'रोमाटिक सौंदर्य' मुखरित हो उठा। पोप, टामसन और यग का अनुकरण होने लगा। १७७० के बाद ही साहित्य में जिस विद्रोह और क्राति ने रूप धारण किया १८१४ के आन्दोलन में वही राजनीतिक सक्रियता में रूपायित हुए और तब नार्वे डेन्मार्क का पिछलग्गू न रह सका। उसने अपने को डेन्मार्क की छाया से स्वतन्त्र कर लिया। एक सविधान-सभा का निर्माण कर उसने स्वतन्त्र सविधान अपनी जनता को दिया।

यह राजनीतिक परिवर्तन सामाजिक और सास्कृतिक प्रगति में अलक्षित न रह सका। उस पर उसका गहरा प्रभाव पडा। परिवर्तन भी असाधारण था और शीघ्र उससे प्रेरणा पाकर नार्वे के सबसे महान् लिरिक कवि हेन्रिक वर्गलेण्ड[1] ने अपनी रचनाए शुरू की।

वर्गलैंड केवल ३७ वर्ष जीवित रहा परन्तु उसने उसी अल्पकाल में महती प्रतिभा का विकास किया। वह लार्ड बाइरन का भक्त था यद्यपि अपने विचारो और शैली में वह शेली के अधिक निकट था। उसकी कल्पना का ससार तो अनेक बार शेक्सपियर की ऊँचाइयो को छू लेता है। वह फूलो और तितलियो से, तरुओ और शशको से नितान्त स्वाभाविक आत्मीयता से बात कर सकता था और उसकी कल्पना मेघो के परीदेश तथा आकाश-गगा की नीहारिकाओ में रम जाती थी। उसने विचारो के क्षेत्र में तो काव्यवद्ध गीत गाये ही, राजनीति के क्षेत्र में भी उसकी काव्य-कल्पना पर्याप्त गतिमती हुई। घर और बाहर दोनो के स्वाधीनता के लडाको के पक्ष मे उसकी वाणी मुखरित हुई और उसने यहूदियो तथा अन्य अत्याचार पीडित मानवो की रक्षा में अपना काव्य-कवच प्रस्तुत किया। वर्गलैंड मध्यममार्गीय चेतना का व्यक्ति न था। ससार की वर्तमान वर्ग-परम्परा में सही और ईमानदारी के साथ सोचने वाला कर्मठ व्यक्ति मध्यमपदीय हो भी नही सकता।

---

१ Henrik Wergeland (१८०८-४५)

यदि वह आत्मरत नही तो निश्चय ही अन्यायपूर्ण परिस्थितियाँ उसे उसकी शात पृष्ठभूमि से विप्रस्थित कर देगी और वह एकान्तिक शक्तिम शब्दो में स्थिति-विशेष के पक्ष अथवा विरोध मे बोल उठेगा। वर्गलैंड भी उसी प्रकार सबल और स्पष्ट विचारो का प्रतिपादक था। अनेक बार तो उसकी वाणी ऐसा रूप और आवाज धारण कर लेती थी कि लोगो को उससे घबडाहट हो जाती थी। वर्गलैंड सब प्रकार से अतिकाय था। विचारो मे, साहित्य की शैली में, शब्दो के चयन और प्रयोग मे, और वैसे ही शरीर के आकार मे भी। उसका विशाल शरीर अन्त मे राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, फिर भी अपनी रोग-शय्या से वह मधुर काव्यधारा प्रवाहित करता रहा यद्यपि उसके शब्दो मे अब अधिक सयम आ गया था। उसकी भावनिधि तथा काव्य-सम्पदा ने साहित्य की दिशा मे उसे राष्ट्रीय सन्त का पद प्रदान किया।

वेल्हावेन[1] वर्गलैंड का साहित्य मे प्रधान प्रतिद्वन्द्वी था। उसके साथ ही उसने कोपेनहागेन की यूनिवर्सिटी मे शिक्षा पाई थी। जान सेवेस्टियन वेल्हावेन की प्रतिभा कुछ खास क्रियात्मक न थी, परन्तु उसके व्यक्तित्व मे अद्भुत शिष्टता थी और कला के मूल्याकन मे उसकी गति बड़ी सूक्ष्म थी। शैली मे वह नितान्त सूत्रवादी था। काव्य की रचना मे वह अन्तर्निविष्ट चेतना से क्रियाशील होता था। समसामयिक वाह्य वातावरण से उसकी कविता को कोई सरोकार न था परन्तु स्वभाव की करुणा जैसे उसकी काव्य-चेतना में नितान्त मार्मिक आवाज उठाती थी। वर्गलैंड के जीवन को झकझोर देने वाली और नार्वे के साहित्य में अनुपम गति उत्पन्न करने वाली एक घटना वेल्हावेन के जीवन से घना सबध रखती है। वर्गलैंड की नितान्त भावुक असाधारण मेघाविनी और मधुर अनुरागिणी भगिनी कामिला कोलेट युवावस्था में वेल्हावेन के प्रति आकृष्ट हुई। आकर्षण उस प्रेम का था जो भाई और पिता के मित्र अथवा शत्रु का विचार नही करता। वर्गलैंड कामिला के भाई और पिता दोनो का सबसे बडा प्रतिद्वन्द्वी था। शेक्सपियर की जूलियट की भाँति वह अपने रोमियो की ओर तीव्र गति से आकृष्ट हुई। परन्तु रोमियो की भाँति उसका इष्ट वेल्हावेन उसके प्रति प्रेमासक्त न हुआ। सात वर्ष तक निरन्तर प्रणय की आग में जलते रहने के बाद कामिला ने अनुराग के सफल होने की आशा छोड दी। परन्तु उसका इस प्रकार घुलना वेकार न हुआ। ऋग्वेद की शशीयसी की भाँति उसकी वाणी ने कम्पन और कराह धारण की जिससे करुणा का प्रवाह प्रसूत हो कर चराचर को सीच चला। उसकी डायरी और सस्मरण करुणा के सतत् उद्गम प्रमाणित हुए। उसका उपन्यास 'अम्तमान्देन्स् दोर्ने' (देहाती सर्राफ की कन्याएँ) उस काल की अत्यन्त सफल कृति थी। उसने साहित्य में नारी की स्वतन्त्रता का भी अपने निबन्धो द्वारा आन्दोलन शुरू कर दिया। उस आन्दोलन का मूल उसकी अन्य

---

१ John Sebastian Welhaven

कृतियो के आधार की ही भाँति उसके विजित अनुराग मे ही ढूंढा जाता है।

कामिला कोलेट ने सुन्दर निसर्ग-वर्णन मे भी पर्याप्त साहित्य रचा है। १८५० के लगभग नार्वे के प्राकृतिक सौन्दर्य ने अनेक साहित्यकारो को आकृष्ट किया था, और उस दिशा मे उन्होने प्रचुर काव्य-रचना की थी। इन प्रकृतिवादी रचयिताओ में अधिकतर कामिला के मित्र थे। उन्ही दिनो लोक-कथाएँ, लोक-गीत आदि एकत्र कर प्रकाशित किए गए थे। उन्ही दिनो जनता के इतिहास, भाषा और सास्कृतिक गवेषणा को नयी प्रेरणा मिली थी। किसानो के प्रति तब एक नये उत्साह का जन्म हुआ था। प्रकृति-सबधी लिरिक और विनोदशील व्यग्य का ऋद्ध विकास विन्ये की कृतियो मे हुआ। ए० ओ० विन्ये बोलियो पर अवलवित भाषा का १८५० और ६० के बीच नार्वे का सबसे महान् कृतिकार था। उन्ही दिनो विन्ये के दो सहपाठियो—हेन्रिक इब्सेन[1] और ब्योर्नस्त्येर्ने ब्योर्न्सन[2] ने साहित्य-क्षेत्र मे पदार्पण किया। होल्वर्ग के बाद इन्ही दोनो ने साहित्य में विश्व-व्यापी यश लाभ किया।

युवावस्था मे इब्सेन और ब्योर्न्सन दोनो राष्ट्रीय आन्दोलन मे बहे थे। और दोनो ने नार्वे के इतिहास और लोकप्रिय काव्यधारा से प्रेरणा पाई थी। परन्तु जैसे-जैसे वे आयु में वढते गए उनकी पारस्परिक रुचियो की दिशा भी बदलती गयी। उनमे अन्तर भी वढता गया। प्राय आधी सदी तक उन्होने अपनी साहित्यिक सक्रियता जारी रखी और पिछली सदी के अन्त तक वे दोनो नार्वे के साहित्य और बौद्धिक जीवन में अग्रणी बने रहे। आरभ मे हेन्रिक इब्सेन ने अनेक लिरिक कविताएँ लिखी जिनकी प्रान्जल शैली और विचार-सौन्दर्य ने अधिकारी आलोचको को मोह लिया। परन्तु इब्सेन प्रथमत और मूलत नाटककार था उस दिशा में उसकी प्रतिभा धीरे-ही-धीरे निखरी और १८५०-६० के बीच इतिहास और लोक-गीतो पर लिखे उसके नाटक नाटकीय लेखन मे अभ्यास मात्र है। पर कुछ ही काल बाद उसने अपने रुचि-वैचित्र्य और प्रेरक सिद्धान्तो—लेखक का दृष्टिकोण—को पकड लिया। शीघ्र ही उसकी प्रक्रिया—शैली बदल गई।

शेक्सपियर से इब्सेन को अपनी प्रथम उज्ज्वल कृति 'कोग्सेन्मेर्ने' के लिए आकृति मिली। यह रचना सदेहवादी स्कूल बार्दसोन के ऊपर एक ऐतिहासिक नाटक थी जो १८६३ में प्रकाशित हुई। उसके उपरान्त उसने छन्द में अपने दो काव्य-दर्शन प्रौढ नाटक 'ब्रान्ड' और 'पियर गिन्ट' लिखे। इनमें दो विरोधी विचारो का रूपायन हुआ। पहले का हीरो पादरी विचारो और दृढता का प्रतीक है। उन्ही कारणो से वह सबसे, अपने परिवार से भी, अकृत्रिम आचरण चाहता है और अपने सिद्धान्तो के व्यावहारिक आचरण में अपनी माता, पत्नी और पुत्र की दशा तक का विचार नही करता। अन्त में उसका एकान्त आदर्शवाद

---

१ Henrik Ibsen (१८२८-१९०६), २ Björnson (१८३२-१९१०)

ही उसका सर्वनाश कर डालता है। मानवजीवन की सीमाओ को वह तोड देता है। उसकी निष्ठा असाधारण है परन्तु उसके आदर्श की एकदेशीयता इतनी आशिक है कि वह स्नेह के अधिकारो की भी परवाह नही करती। 'पियर गिन्ट' का प्रधान प्रसग नार्वेई लोक-कथा से लिया गया है। परन्तु उसके हीरो का आचरण सर्वथा अपना है। उसका अह अपनी सीमाएँ आप बनाता है। वह अपनी कायरता के कारण सारे विघ्नो से मुँह मोड लेता है और सिवा एक अन्त काल के, जीवन मे कभी कोई स्पष्ट निर्णय नही कर पाता, कोई दृष्टिकोण निश्चय नही कर पाता। परन्तु अपनी अनेक नीचताओ के बावजूद भी पियरगिन्ट कल्पना, विनोद, और मानवीय आकर्षण मे असाधारण है। वस्तुत इतना असाधारण कि पाठक की सहानुभूति सदा उसके साथ रहती है। 'पियर गिन्ट' आज यूरोप और अमेरिका के देशो मे अपनी रगमचीय सफलता में बेजोड है। साथ ही 'हेम्लेट' की ही भाँति वह भी रगमच से पृथक अपना साहित्यिक मूल्य भी पर्याप्त रखता है। वस्तुत उसके हास्य और विनोद, मानवीयता और कमजोरी, विचार-गाभीर्य और कल्पना-वैभव का पता तो अध्ययन से ही लगता है। जिस मात्रा मे कवि अथवा कृतिकार अपनी शब्दावली को अपनी भाषा में चलाता है, उसी मात्रा मे वह साहित्य मे महान् होता है। हिन्दी मे तुलसीदास और अग्रेजी में शेक्सपियर इस दृष्टि से असाधारण महान् है। हिन्दी और अग्रेजी में इन महाकवियो को जो स्थान प्राप्त है वही इब्सेन को नार्वे की भाषा और साहित्य मे प्राप्त है। यदि सारे नार्वेई-साहित्य की सर्वोत्तम काव्यकृति का उल्लेख करना हो तो किसी को 'पियर गिन्ट' का नाम लेने मे प्रयास न करना होगा। यह नाम लेखनी अनायास ही लिख जाएगी।

स्वय इब्सेन "सम्राट और गैलीलियन" (१८७३) को अपनी रचनाओ में सबसे सुन्दर मानता था। परन्तु धर्म विद्रोही जूलियन और ग्रीक-रोमन तथा ईसाई धर्मो के सघर्ष पर अवलवित वह विश्व-इतिहास का नाटक दार्शनिक रूप से महान् होता हुआ भी 'ब्रान्ड' अथवा 'पियर गिन्ट' की बराबरी नही कर सकता। पिछले दोनो नाटक, प्रयुक्त दृश्य अथवा मनोवैज्ञानिक अध्ययन दोनो दृष्टियो से 'सम्राट् और गैलीलियन' से सुन्दर है। "सम्राट् और गैलीलियन" के प्रकाशन के बाद चार वर्ष इब्सेन चुप रहा, चुपचाप एक नई दिशा में प्रयोग की तैयारी करता रहा—गद्य मे यथार्थवादी, घरेलू, आधुनिक ड्रामा की दिशा में। १८७७ और ९९ के बीच प्राय २२ वर्षो मे उसने बारह नाटक लिखे। इन नाटको ने विश्व-साहित्य मे इब्सेन का नाम अमर कर दिया। अब वह केवल नार्वे का ही न था, ससार के अनेक तरुण और प्रौढ साहित्यिक अपनी अगली रचनाओ की टेकनीक इब्सेन के आधार पर टेकने लगे थे। इन बारह नाटकों में से पहले चार उद्देश्यपरक थे। सामाजिक समस्याओ पर अवलवित। दूसरे चार शुद्ध मनोवैज्ञानिक अध्ययन थे। और अन्तिम चार एक प्रकार के आत्मस्वीकरण-से थे जिनमें 'स्फिक्स' प्राय 'ब्राड' और 'पियर गिन्ट'

की परपरा में है ।·'गुडिए का घर', 'भूत', 'जनता का शत्रु', 'वन्य हस' और 'रोस्मरशोल्म' एक के बाद एक प्रकाशित हुए और नाटकीय तथा मानव-अध्ययन के दृष्टिकोण से अत्युत्तम है । परन्तु जिन समीक्षको और सहृदयो ने इब्सेन की कविताओ को जीवन का अश बना लिया है । वे उसकी अन्तिम कृति 'जब हम मर कर जी उठते है' में एक अद्भुत आकर्षण पाते है । उसमें कवि जैसे पीछे देखते हुए पूछता है, क्या जीवन के बदले कला का चुनना उचित हुआ ?

जीवन भर इब्सेन आदर्शों के निर्वाह के लिए आवश्यकताओ से सघर्ष करता रहा था। एक बार उसने अपने प्रतिस्पर्धी और मित्र ब्योन्स्टेर्ने ब्योर्न्सन को कृतज्ञता के एक क्षण में लिखा कि ब्योर्न्सन के स्मारक-पट का उचित अभिलेख होगा—"उसका जीवन ही उसकी सुन्दरतम कविता थी ।" व्यक्तिगत व्याख्या के रूप मे इब्सेन ने कुछ और लिखा—"नित्य के आचरण में अपने आदर्शों की परिणति—बस यही, मेरे विचार से, मानव का अनन्यतम इष्ट है ।"

इब्सेन के एकागी-केन्द्रीकरण के सामने ब्योर्न्सन की बहुमुखी प्रतिभा असाधारण लगती है । उसका कृतित्व इब्सेन से नितान्त भिन्न है, असम, ऊबड-खाबड । परन्तु निस्सदेह उसके कवि रूप मे प्रथम दर्शन से ही उसकी अप्रतिम मेधा का प्रमाण मिल गया था । ड्रामा और कहानी दोनो क्षेत्रो मे ब्योर्न्सन ने अनुपम रत्न उत्पन्न किये है । लिरिक काव्य की तो उसने एक अभिराम राशि अपने देशवासियो को भेट दी है । इसके अतिरिक्त वह अनुपम वाग्मी था, अद्भुत रगमचीय सूत्रधार, मधुर और आकर्षक पत्र-लेखक, और इन सबसे ऊपर पत्र-पत्रिकाओ मे अनन्त-विविध विषयो पर जीवन भर लेख लिखते रहने वाला अथक और अप्रतिम निबधकार । कितने प्रश्न, कितनी समस्याएँ उसकी लेखनी के नीचे थी—कला और राजनीति, धर्म और शिक्षा, सामाजिक और सास्कृतिक, राष्ट्रीय और अन्त-र्राष्ट्रीय । उसका स्थान वस्तुत दिदरो, आदि विश्वकोष-प्रणेताओ की पक्ति में है । कालान्तर में उसके विचार ससार के सुदूर प्रदेशो तक जा पहुँचे और वृद्धावस्था में वह आक्रान्त राष्ट्रो का 'चैम्पियन' बन गया । दक्षिण जटलैंड के निवासी, चेक और स्लोवक, फिन, पोल, रूथेनी, सभी उसकी ओर प्रेरणा के लिये देखने लगे । व्यक्ति के रूप में इतनी महान् विभूति नार्वे ने अपने इतिहास में दूसरी नही उत्पन्न की ।

तरुणावस्था मे ब्योर्न्सन ने लिरिक, कहानियाँ और ऐतिहासिक नाटक लिखे । इनसे राष्ट्रीय आन्दोलन से उसका सपर्क व्यक्त होता है । नाटको में उसकी 'ट्रिलोजी' 'सिगुर्द स्लोम्बे' विशेष मनोरम है, शेक्सपियर की परपरा में प्रस्तुत बाद में उसी ने स्कैंडिनेविया के देशो में पहले-पहल आधुनिक यथार्थवादी नाटको का प्रचलन किया । उसी के बनाए मार्ग पर इब्सेन और स्ट्रिन्डबर्ग आरूढ हुए । रगमच के लिए प्रस्तुत उसकी रचनाओ में प्रधान 'पाल लागे' और तोरा पार्सबर्ग है । 'ओवेर ईव्ने' नाम के दो

नाटको मे से प्रथम यह नाटक ससार के साहित्य में अपना असाधारण स्थान रखता है।

उपन्यासकार और नाट्यकार के रूप में ब्योर्न्सन ने ससार में बडी ख्याति पाई। उसके पाठको की एक बडी सख्या यूरोप और अमेरिका दोनो महाद्वीपो मे थी। अनेक स्कैंडिनेविया निवासी कवियो को उसकी कविताओ ने प्रेरणा और दृष्टि दी हैं। कन्सर्ट-हाल उसके गीतो की ध्वनि से गूंजते रहते हैं। साथ ही जनसाधारण में भी उनका असीम राज है। आज भी उसके व्यक्तित्व की याद नार्वे निवासियो में उत्साह का सचार करती है।

इब्सेन की कृतियो—'ब्राड' 'भूत' 'रोस्मर्शोल्म' की पृष्ठभूमि मे नार्वे की प्रकृति अँगडाती है। उसके जगल और पहाडी पठार अपनी लम्बी छाया फेकते हैं। झरने गरजते हैं, बर्फीली चोटियाँ निस्पन्द खडी हैं। ब्योर्न्सन की कला भिन्न है—उसकी प्रकृति के विस्तार मे मानव क्रियाशील है, घने जगलो से ढके देहात—हजार घरो के प्रदेश—जागते सोते हैं, विस्तृत फ्योर्द (समुद्र के थल से घिरे भाग) मानव-चित्त के विकारो को प्रतिबिंबित करते हैं। दोनो के लिए प्रकृति और मानव की यह अविराम लुका-छिपी निरन्तर अकन का केन्द्र है।

यह प्रवृत्ति १८७० के बाद वाले उपन्यासकारो मे भी लक्षित होती है। नार्वे के साहित्य-प्रकाशन पर भी यूरोपीय साहित्यिक आन्दोलनो का प्रभाव निरन्तर पडता जा रहा था। धीरे-धीरे यथार्थवादी उपन्यासो का स्थान १८८० के बाद, एकान्तत प्रकृतिवादी उपन्यास ले लेते हैं जिनमे घटनाएँ साधारणत बडे नगर में घटती है और लिरिक के प्रति सारी चेतना दबा दी जाती है। कारण कि मनुष्य, परवश मानव गा नही पाता, केवल चीत्कार करता है और उसको विशृंखलित करने के लिए साहित्य भी अब कटिबद्ध होता है। स्वाभाविक ही तब सामाजिक और राजनीतिक उपन्यास समस्याओ के समाधान में लिखे जाते हैं और अनेकधा क्रान्ति के गीत गाते है, इन्कलाब के नारे बुलन्द करते हैं।

इस पिछली परपरा मे अधिकतर तरुण साहित्यकार दीक्षित हुए। उससे पहले की पीढी—इब्सेन और ब्योर्न्सन के मित्रो—ने यह प्रतिबन्ध न माना और योनास ली[1] तथा अलेक्जान्डर कीलान्ड[2] पुराने सिद्धान्तो का ही साहित्य में निर्वाह करते रहे। १८८० के बाद अनेक उपन्यासो की रचना हुई। इनमे समसामयिक समाज लहरें मारता था और सम-कालीन साहित्यिक सिद्धान्त रूपायित होते थे। ड्रामा के क्षेत्र में तो नार्वे इब्सेन तथा ब्योर्न्सन के नेतृत्व में ससार मे कब का अग्रणी हो चुका था, उपन्यास की दिशा में भी वह अब देशो की अगली पक्ति मे जा खडा हुआ।

---

१ Jonas Lie, २ Alexander Kielland

उस काल ही फ्रास और जर्मनी मे नव-रोमाटिक प्रतिक्रिया ने यथार्थवादी साहित्य का प्रतिवाद करना आरभ किया था। नार्वे मे भी १८९० के लगभग उसकी लहर उठी। उद्देश्यवादी उपन्यासो पर गहरा आघात हुआ। व्यक्तियो के महान् यथार्थवादी चित्रकार योनास ली ने कुछ काल उपन्यास लिखना छोडकर परियो की कहानियाँ लिखनी शुरू की। उसकी मेधा कुछ काल प्रकृति की शक्ति, चन्द्रिका के सम्मोहन और रहस्यवाद के पेंच में पडी ऐंठती रही। गर्बोर्ग[1] उस काल प्रादिशिक बोलियो के क्षेत्र मे सबसे महान् लेखक था। उसने आन्दोलन प्रेरित प्रतिबन्धो को अस्वीकार कर काव्य को अपनी मधुवर्षिणी मेधा का चमत्कार अर्पित किया। वह अब अपने मूलस्थान को लौट गया था और बचपन के दृश्य उसकी स्मृतियो में उभर-उभर कर रूप धारण करने लगे। लिरिक और प्रबन्ध-काव्य उसकी राष्ट्रीय-भावनाओ और धार्मिक प्रेरणाओ के वाहन बने। काव्य की सीमाएँ अधिकाधिक व्यापक होती गई। काव्य-कली देहात के सौरभ से मत्त होकर चिटक रही थी। उसी देहाती काव्यबन्ध की परपरा आज भी नार्वे में पूर्ववत् जाग रही है। विविध साहित्यिको ने नार्वे के विविध प्रदेशो और मडलो को उनकी निसर्ग-विभूति और किसान-जीवन को अपनी लेखनी से चित्रित किया है और आज भौगोलिक मानचित्र की ही भाँति नार्वे का एक साहित्यिक मानचित्र भी अपने विभिन्न धरातलो और दृश्य परपराओ के साथ प्रस्तुत हो गया है।

बीसवी सदी के प्राय आरभ में ही इब्सेन, ब्योर्न्सन और उनके अनेक समकालीनो का निधन हो गया। उनकी मृत्यु से एक युग का अन्त हो गया। परन्तु नए युग के आने में देर न लगी। क्नुत हाम्सुन[2] और योहन बोयेर[3] अब यूरोपीय यश के भागी हुए। उपन्यास के क्षेत्र में फिर नार्वे का साहित्य एक बार यूरोप की दृष्टि में चमका। १९०७ के साल में अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तियो का प्रादुर्भाव हुआ। इन्ही मे सीग्रिद उन्डसेत[4] भी थी जिसका प्रभाव युगप्रवर्तक प्रमाणित हुआ।

श्रीमती सीग्रिद उन्डसेत की ख्याति विशेषत अपने वर्तमान युगीय उपन्यासो से हुई परन्तु अपने ऐतिहासिक ज्ञान और कल्पना के वैभव के लिए वह स्वदेश में बहुत पहले से ही विख्यात थी। क्रिस्तिन लाव्रान्स्दातेर पर उसकी ट्रिलोजी (१९२०-२२) बीसवी सदी के नार्वे की सबसे महान् साहित्यिक कृति है। इस कृति से अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, ऐतिहासिक उपन्यासो का साहित्य मे पुनरागमन भी होता है। कुछ काल से उनका नार्वे के साहित्य मे अभाव हो गया था। अब जो सीग्रिद की प्रेरणा और कृतिमत्ता से जो उनका पुनरावर्तन हुआ तो ऐतिहासिक उपन्यास लिखना फैशन ही हो गया। श्रीमती उन्डसेत (जन्म १८८२)

---

१ Arne Garborg, २ Knut Hamsun, ३ Johan Bojer,

४ Sigrid Undset

नार्वे के एक अत्यन्त प्रतिभाशील पुराविद् की कन्या है। पिता की अकाल-मृत्यु हो गई पर उसके गम्भीर ज्ञान की विरासत पुत्री को मिली। वह विरासत इतनी ज्ञानसम्पन्न है कि पण्डितो की पैनी खोज के बावजूद भी सीग्रिद के चौदहवी सदी सम्वन्धी उपन्यास मे एक दोप भी न मिला। क्रिस्तिन वस्तुत १४वी सदी की होकर भी आज की नारी है। सीग्रिद अपने ज्ञान और व्यक्तित्व दोनो अधिकार से आज "नार्वे की माता" है। देश उसकी कृतियो में साँस लेता है। उसकी जनता, उसके नगर-देहात, जगल-पहाड, ऋतु-वर्प सभी उनमें अमर हो गए हैं। इस कथन की सार्थकता सीगिद के दो समकालीन साहित्यिको के उपन्यासो में भी है। ओलाव दून[१],और जोहान फाल्कवेर्गेत[२] इस युग के दो ख्यातिलब्ध कृतिकार हैं।

१९२० से आरम्भ होने वाला दशक उपन्यास लेखन मे काफी सफल सिद्ध हुआ। पिछली पीढी के साहित्यिक नार्वे का साहित्य भण्डार भरते रहे है। नाटको का सृजन इतनी मात्रा में निस्सन्देह नही हुआ जितनी मात्रा में उपन्यासो का। परन्तु केवल यही दो क्षेत्र साहित्यक सक्रियता से सनाथ न हुए। वैज्ञानिक विपयो पर भी ऊँचे तवके के निवन्धकारो ने प्रभूत साहित्य रचा। उनसे वौद्धिक जीवन पर्याप्त समृद्ध हुआ।

नार्वे के साहित्यिको ने भी डेनमार्क आदि के साहित्यिको की भाँति नात्सी ताना-शाही का साहित्यत विरोध किया। नात्सी शासन-काल मे ऋद्ध लिरिक कविता की धारा वह चली और वह समर्थ कवियो के साथ स्वाधीनता के सघर्प में अमोघ अस्त्र वन गए। वह सोद्देश्य काव्य साधना सफल हुई। उन अगणित कवियो मे, जो देश के लिए तपे, दो विशेप उल्लेखनीय हैं। आर्नूल्फ ओवरलैंड[३] और नार्दाहल ग्रिग[४]। आर्नूल्फ जर्मन कैद मे चार साल रहा। उसने अपनी अमर कृति—'वी ओवर्लिवर आल्त' (मवके बावजूद हम जीवित हैं) में वर्दाश्त और दृढता को क्लासिकल मूर्तिकारो के जादू से रूपायित किया। कितनी साधना और तप उस काल क्रूर सहर्ता से सघर्प मे अपेक्षित थी। यह आर्नूल्फ का जीवन प्रमाणित करता है और वह जीवन इस कृति की पक्तियो से साकार हो उठा है, जीवन जो मृत्यु को ललकार उठा है। ग्रिग ने वर्लिन की गोलावारी में वीरगति पाई। परन्तु उसकी अमर पुकार आज भी उसकी ओजस्वी कविता सग्रह 'फ्रिहेतेन' (स्वाधीनता) में गूंज रही है। नार्वे के स्वतत्र होने के शीघ्र ही वाद वह सग्रह प्रकाशित हुआ और देखते ही देखते उसकी ७०,००० प्रतियो का सस्करण विक गया जो नार्वे की तीस लाख की आवादी को देखते हुए निस्सन्देह विस्मयकारक है।

---

१ Olaf duun, २ Johan Falkberget, ३ Arnulf Overland, ४ Nordahl Grieg

१५. पोल-साहित्य

पोल-साहित्य भी रूसी साहित्य की ही भाँति स्लाव साहित्य है। परन्तु यद्यपि वह अन्य स्लाव साहित्यो मे सबसे महत्वपूर्ण है, रूसी की अपेक्षा वह साधारण है। उसमें उस पूर्वी साहित्य की न तो ताजगी है, न उसका साहस, न सौन्दर्य। उसका सम्बन्ध पूर्व की अपेक्षा पश्चिम से अधिक रहा है। इसी से उसके साहित्य की परपराएँ भी पश्चिमी यूरोप के साहित्यो की रही है।

पोलैंड का दसवी सदी मे ईसाई हो जाना उसकी सस्कृति में बडा महत्व रखता है। वह इससे यकायक पश्चिमी देशो की पक्तियो मे जा खडा होता है। उसकी भाषा और साहित्य लैटिन प्रवृत्तियो और रूपो मे प्रभावित होते है और उन्ही की प्रवृत्तियाँ सोतो की तरह उनमें फूटती है। यही कारण है कि उसका पहला लिखित साहित्य लैटिन में मिलता है और उसका पहला लेखक लैटिन का प्रयोग करता है।

१३वी सदी में पहली बार पोल भाषा साहित्य मे प्रयुक्त हुई जब उसमे 'बुगुरो-द्ज़िका' (खुदा की माँ) लिखी गई। वह पोलैंड का पहला राष्ट्रीय स्तोत्र था जिसका गिरजाघर में और युद्धभूमि दोनो में समान रूप से व्यवहार हुआ। १४वी सदी में उस भाषा में काफी लिखा गया। बाइबिल का एक अनुवाद हुआ और कुछ अन्य प्रयोग भी हुए। उसी सदी में (१३६४) क्रैको यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई और लियुएनिया के मिला लिए जाने से पोलैंड की सास्कृतिक चेतना में तो अभिवृद्धि हुई ही साहित्यिक प्रयास को भी शक्ति मिली। उस काल का सबसे महान् नाम निकोलस कोपरनिकस[1] का है जिसने आधुनिक ज्योतिष-विज्ञान की नीव डाली, यद्यपि उसकी रचनाएँ भी अधिकतर लैटिन मे ही हुई।

क्रैको यूनिवर्सिटी के रेक्टर जैकब पारकोज[2] ने १५वी सदी के आरभ में लिपि का सुधार किया और उसी की बनाई मात्राओ का प्रयोग आज की पोली मे भी होता है। उससे भाषा के प्रयोग में कुछ सुविधा तो हुई परन्तु लिखने का प्राय सारा कार्य लैटिन मे ही होता रहा। फिर भी १६वी सदी के आरम्भ में ही इटैलियन रेनेसास का प्रभाव पोली साहित्य पर भी गहरा पडा।

पोलैंड शीघ्र ही सुधारवादी धार्मिक प्रेरणाओ से भी प्रभावित हुआ। उस आन्दोलन का वहाँ समर्थक नाग्लोविस का मिकोलज रेज[3] था जिसने भाषा में प्रभूत सुधार कर

---

१ Nicholas Copernicus (१४७३–१५४३), २. Jakob Parkosz,
३ Mikolaj Rej (१५०५-६९)

उसे १६वी सदी के साहित्यिक स्वर्णयुग के लायक बनाया। उस सदी का सबसे सुन्दर व्यग्य, 'लार्ड, मजिस्ट्रेट और पादरी में सक्षिप्त वार्तालाप,' उसी ने लिखा। उसने कुछ नैतिक और आचार सम्बन्धी कविताएँ और धार्मिक नाटक भी लिखे। उसकी प्रधान कृतियाँ 'चिडियाघर', 'दर्पण' और 'ईमानदार का जीवन' हैं। उस काल का दूसरा गद्यकार स्तानिस्ला ओर्जेकोव्स्की[1] नामक एक पादरी था जिसने पादरियो के विवाह के लिए चर्च के अधिकारियो से काफी लडाइयाँ लडी। उसके राजनीतिक लेखो का पोलैंड के इतिहास पर दूरगामी प्रभाव पडा।

उस युग का विशिष्ट कवि जान कोचानोव्स्की[2] था। इटली में शिक्षा-दीक्षा होने के कारण वह रेनेसास के प्रभाव मे पर्याप्त आया था और लैटिन के अतिरिक्त इटैलियन के समकालीन कवियो को भी पढने-समझने लगा था। स्वदेश लौटने के कुछ काल बाद उसने अपनी भाषा में कविताएँ लिखनी शुरू की और उसे उसका उचित पद दिया। १५७० में उसने बाइबिल के स्तोत्रो का पोली छन्द मे रूपान्तर किया और ग्रीक परपरा मे एक मौलिक ट्रैजेडी (दुखान्त नाटक) —'ग्रीक दूतमडल का प्रत्यागमन' (१५७७) —लिखी। फिर उसने 'सन्त जान की सन्व्या के गीत' और अपनी कन्या उर्मुला की मृत्यु (१५७९) पर "रौदस" (मरसिया) लिखी। उसकी ट्रैजेडी समूचे रेनेसाँस साहित्य में अपना स्थान रखती है। कोचानोव्स्की पोलैंड के रेनेसाँस-युग का सबसे महान कृतिकार था। उसका अपने देश के साहित्य पर खासा असर पडा। साइमन सिमोनोविच[3] उसके अनेक अनुयायियो मे से एक था। उसने थियोक्रिट्स के 'इदिल्स' के अनुकरण में अपना 'गाँववाले' प्रस्तुत किया।

सोलहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे विशेषकर जेसुइत मिशनरियो के आगमन मे देश से सुधारवादी आन्दोलन का अन्त हो गया। पोलैंड के सबसे प्रसिद्ध जेसुइत पियोत्र स्कार्गा[4] ने राजनीति और धर्मक्षेत्र मे असाधारण प्रभावोत्पादक अपने उपदेशो और प्रवचनो को पोली मे ही लिखा।

परन्तु १७वी सदी में पोली भाषा और साहित्य का ह्रास हुआ। अनवरत युद्धो ने देश की काया क्षीण कर दी और शिक्षा की भी वर्णनातीत हानि हुई। केवल जब-तब साहित्य निर्माण की दिशा मे प्रयास हुए। वाक्ला पोतोकी[5] ने तभी अपने एपिक और कविताएँ—विशेपकर चोकिम-युद्ध की कविता (१६२१)—लिखी और सामुएल जे स्क्रूज़िप्नी त्वार्दोव्स्की[6] ने अपनी प्रशस्तियाँ और व्यग्य लिखे।

---

१ Stanislaw Orzechkowski (१५१३-६६), २ Jan Kochanowski (१५३०-८४), ३ Szymon Szymonowicz (१५५८-१६२९), ४ Piotr Skarga (१५३६-१६१२), ५ Waclaw Potocki (१६२३-९६), ६ Samuel-ze Skrzypny Twardowski (१६००-६०)

देश और साहित्य का पुनरुदय स्तानिस्ला कोनार्स्की[1] ने किया। इटली और फ्रास से पढ कर लौटने के बाद ही उसने स्वदेश की स्थिति सम्हालनी शुरू की। नये स्कूल खोले और उनमें प्राकृतिक विज्ञानो को पढाने का प्रवन्ध किया। साथ ही उसने 'सफल शासन का रूप' लिखकर राजनीति पर भी अपना प्रभाव डाला। राजा स्तानिस्ला आगुस्त पोनियातोव्स्की[2] के अनेक साहित्यिक तरुण दरवारियो मे कोनार्स्की के विचारो की प्रतिध्वनि उठी। स्तानिस्ला रूसी साम्राज्य का कमजोर अनुचर था, परन्तु उसकी सास्कृतिक चेतना और उदारता ने देश में साहित्य और कला का सम्मान किया। ह्य गो कोलाताज[3] ने शिक्षा कमीशन द्वारा कोनार्स्की के विचारो का प्रसार किया और स्तानिस्ला स्ताज़िक[4] ने अपनी योजनाओ—'वक्तव्य' और 'नसीहत' द्वारा देश का कल्याण किया। आदम नारूज़ेविक्ज[5] ने उसी काल अपना 'पोल जाति का इतिहास' लिखा।

इग्नासी क्रासिकी[6] भी स्तानिस्ला का समसामयिक था जिसने लिरिक कविताएँ और एक वीरकाव्य 'चोकिम का युद्ध' लिखे। उसकी 'मोनाचोमाचिया' और 'आन्ती-मोनाचोमाचिया' पोली भाषा की स्पष्टाकृति कृतियाँ है। निस्सन्देह तव का पोली साहित्य फ्रेंच क्लासिकल प्रवृत्तियो का शिकार था। उसी काल स्तानिस्ला त्रेम्वकी[7] और तोमास काजेतन वेगिएर्स्की[8] ने अपनी कथाएँ, फ्रासिजेक कार्पिन्स्की[9] ने अपने लिरिक और कथाएँ तथा फ्रासिज़ेक दियोनिज विनयाज्निन[10] ने अपनी कथाएँ लिखी।

शीघ्र ही अभागा पोलैंड यूरोपीय साम्राज्यवादी लोलुपता का शिकार हो गया। रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया ने उसका वन्दर-वाँट कर लिया। इससे पोली साहित्य की वडी हानि हुई। जो कुछ साहित्य प्रस्तुत हुआ वह अधिकतर उन्ही की लेखनी से जो उस उथल-पुथल के समय पोलैंड से भाग गए थे। ऐसा एक सिपाही जोज़ेफ विविकी[11] था जो नेपोलियन की नौकरी मे था और जिसने १७९८ मे पोली राष्ट्रीय गीत 'जेज़्रेज़े पोल्स्का निए ज्निनेला' लिखा। इसी प्रकार पश्चिमी यूरोप में अनेक पोल कवि यकायक प्रादुर्भूत हुए।

परन्तु वास्तविक साहित्यिक प्रगति देश मे ही हुई जव पोलैंड के साहित्यकारो ने फ्रेंच 'क्लासिकल' प्रवृत्ति को त्याग अग्रेजी या जर्मन प्रकार की रोमान्टिक परपरा को अप-

---

१ Stanislaw Konarski (१७००-७३), २ Stanislaw August Poniatowski ३ Hugo Kollataj (१७५०-१८१२), ४ Stanislaw Staszic (१७५५-१८२६), ५. Adam Naruszewicz (१७३३-९६), ६ Ignacy Krasicki (१७३५-१८०१), ७ Stanislaw Trembecki (१७३५-१८१२), ८ Tomasz Kajetan Wegierski (१७५५-८७), ९ Franciszek Karpinski (१७४१-१८२५), १० Franciszek Dionyz Kniaznin (१७५०-१८०७); ११ Josef Wybicki

नाया। जुलियन उर्सिन-नीमसीविक्स[1] ने अपने लम्बे अमरीकी प्रवास से लौट कर अपनी कॅमेडी 'दूत का प्रत्यागमन' लिखी। फिर स्कॉट द्वारा प्रभावित होकर उसने ऐतिहासिक उपन्यास और रोमान्टिक बैलेड भी लिखे। जॉन पावेल वोरोनिक्ज[2] ने देश प्रेम की कविताएँ लिखकर राष्ट्रीय चेतना जगाई। कुछ पोल साहित्यकार अब भी ग्रीस और रोम की विगत सत्ता की ओर देख रहे थे। इनमें उल्लेखनीय काजेतन कोज्मिया[3] है।

युग रोमान्टिक प्रवृत्तियो का था। नए युग का आरम्भ काजिमिर्ज ब्रोदजिन्स्की[4] ने किया। उसने हर्डर[5], गेटे,[6] और शिलर[7] के बैलेडो का पोली में अनुवाद किया। वह जर्मन विचारधारा से काफी प्रभावित था और उसके आलोचनात्मक ग्रन्थ उसी प्रेरणा मे लिखे गए। उसने फिर भी अपनी स्वतत्र चेतना को विस्मृत न होने दिया। रोमान्टिक चेतना ने पोलो को उनके गौरवमय अतीत की ओर आकृष्ट किया और उनमे राष्ट्रीय भावना जगाई। १८०० मे वारसा मे 'विज्ञान के मित्रो का सघ' बना। विल्नो का विश्वविद्यालय राष्ट्र-प्रेमी युवको का केन्द्र बन गया। अनेक साहित्यिक सस्थाओ का आरम्भ हुआ जिनका उद्देश्य गुप्त रूप से राष्ट्रीयता का प्रतिपादन करना भी था। इन सस्थाओ में मुख्य 'फिलोमाती' और 'फिलारेती' थे। उसी काल दक्षिण पूर्व में एक रोमान्टिक पोली-उक्रेनी लेखक दल का प्रादुर्भाव हुआ। उन्ही मे रोमान्टिक कवि आन्तोनी माल्चेव्स्की[8] भी था। उसने तुर्कों के विरुद्ध पोलो और उक्रेनियो के सम्मिलित सघर्ष को अपने काव्य 'मार्जा' का विषय बनाया। उसमें सारी उदात्त भावनाएँ, प्रेम और घृणा के आदर्श, राष्ट्रीयता की समग्र सक्रियता, अतीत का गौरव, शील और वीरता रूपायित हुई। उसी काव्य परपरा के उपासक कवि जोजेफ बोहदान जालेस्की[9] और सेवेरिन गोज़्रेजिन्स्की[10] हुए।

उस आन्दोलन और साहित्यिक पुनर्जागरण को विशेष बल विल्नो के विश्वविद्यालय से मिला। वही नए कवियो और लेखको के दल साहित्य और राष्ट्र के नवनिर्माण मे दीक्षित होते थे। आदम मिकीविक्स[11] सबसे महान् पोली रोमान्टिक कवि था। विल्नो यूनिवर्सिटी में उसने बडी तत्परता से साहित्य का अध्ययन किया था और आरम्भ में क्लासिकल परपरा का भक्त था। परन्तु शीघ्र ही कोनो में प्रोफेसर होने के बाद उसकी विचारधारा बदल गई और जर्मन रोमान्टिक कवि उसे रुचने लगे। १८२२ और २३ में उसने अपनी कविताओ की पहली दो जिल्दे प्रकाशित की। साथ ही 'पूर्वज' नाम के बैलेडो के भी अनेक

---

१ Juljan Ursyn Niemcewicz (१७५७-१८४१), २ Jan Pawel Woronicz (१७५७-१८२९), ३ Kajetan Kozmian (१७७१-१८५६), ४ Kazimierz Brodzinski (१७९१-१८३५), ५. Herder, ६ Goethe, ७ Schiller, ८ Antoni Malczewski (१७९३-१८२६), ९ Jozef Bohdan Zaleski (१८०२-८६), १० Seweryn Goszczozinski (१८०१-७६), ११ Adam Mickiewicz (१७९८-१८५६)

खण्ड प्रकाशित हुए। १८२४ मे वह कैद कर रूस निर्वासित कर दिया गया। पीटर्सबर्ग, ओदेसा और मॉस्को का उसका प्रवास उसके लिये वडा लाभदायक सिद्ध हुआ। वह तत्कालीन रूसी साहित्य के प्रमुख निर्माताओ से मिला। पुश्किन से भी उसकी मैत्री हुई। उस काल की उसकी रचनाएँ 'क्रीमिया के सॅनेट' 'कोन्राद वालेन्रोद' और 'फारिज़' है।

सरकार से अनुमति लेकर मिकीविक्स स्विट्ज़रलैंड और पेरिस गया, जहाँ वह ज़िग्मुन्ट क्रासिन्स्की[1] और जूलियस स्लोवाकी[2] से मिला। पोली विद्रोह तभी भडका और उसने स्वदेश लौट कर विप्लव मे हाथ बँटाना चाहा पर लौट न सका। फिर उसने आत्म वृत्तान्तात्मक 'पूर्वज' के कुछ खण्ड लिख डाले। उसमे उसने अपने समसामयिक क्रान्तिकारियो का वडा सजीव वर्णन किया। विल्नो में क्रान्तिकारियो का विचार हो रहा था। उसने उस मुकदमे का कच्चा चिट्ठा खोलकर अपनी इस अमर कृति में रख दिया। इसी काल उसने अपना 'पोल राष्ट्र और तीर्थ-यात्रा' प्रस्तुत किया जिसमे सदियो पहले का पोलैंड अपने सघर्षो और अविजित पौरुष के साथ उभर आया। १८३४ मे उसने अपनी सर्वोत्कृष्ट रचना 'पान ताद्युज़' (लिथुएनिया का अन्तिम मोर्चा)—प्रकाशित की जिसमें नेपोलियन पूर्व का पौलैंड, अपने राजनीतिक—सामाजिक रूप मे, मूर्तिमान हुआ। यह कृति जितनी राष्ट्रीय वीरकाव्य के रूप मे पोलैंड की परिचायक है उतनी ही अपने रचयिता मिकीविक्स की। कुछ काल वह रोमन कैथोलिक पादरी आन्द्रेज तोविआन्स्की[3] के प्रभाव मे रहा और परिणामस्वरूप उसे पेरिस के कॉलेज व फ्रास की प्रोफेसरी छोडनी पडी। परन्तु शीघ्र ही वह प्रकृतिस्थ हो गया, क्रीमिया के युद्ध में उसने पोलो की एक सेना प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया, कुस्तुन्तुनिया गया और वही वीमार होकर १८५६ में मर गया।

जूलियस स्लोवाकी का उल्लेख ऊपर हो चुका है। मिकीविक्स उससे पेरिस में में मिला था। दोनो के विचारो मे प्रभूत अन्तर था। स्लोवाकी[4] को अनेक मिकीविक्स से भी महान् मानते है पर साधारणतया वह पोली रोमान्टिक कवियो मे दूसरा महान् कवि समझा जाता है। विल्नो मे असफल प्रणय के वाद वह वारसॉ और तदुपरान्त फ्रास चला गया था। वह अधिकतर स्विट्ज़रलैंड और फ्रास में ही रहा। वह मिकीविक्स का मित्र और आलोचक दोनो था। उसने पहले 'मिन्दोवे' और 'मार्जा स्तुअर्त' के से नाटक लिखे। शीघ्र ही उसकी कविता 'जान विलेकी' और 'लिरिक' 'भगवान की माता का स्तोत्र' और 'स्वाधीनता-गान' प्रकाशित हुए। 'कोर्जान' में उसने आत्मकथात्मक सामग्री का उपयोग किया और आन्हेली में प्रवासियो के चरित पर प्रकाश डाला। 'वेनिओव्स्की'

---

१ Zygmunt Krasinski, २ Juljusz Slowacki, ३ Andrzej Towianski, ४ Juljusz Slowacki (१८०९-४९)

[illegible] की एक कथा है। 'दालादिना' और 'लिलावेनेदा' प्रागैतिहासिककालीन [illegible] नाटक के रूप में आई हैं। 'प्लेगपीडितो का पिता' भी पूर्वात्यकथानक [illegible] ही है। वह भी एक बार मिकीविक्स की ही भाँति तोविआन्स्की के चक्कर मे [illegible] और तब नितान्त दार्शनिक कविताएँ लिखने लगा था। 'आत्मा की उत्पत्ति' [illegible] विशेषत 'कोल दून' उसी सबन्ध के द्योतक है। स्लोवाकी अल्पायु में ही मर गया।

इस दल का तीसरा विशिष्ट कवि जिगमुन्ट क्रासिन्स्की[1] था। वह भी प्रवासी पोल था। पेरिस में पैदा हुआ था, वारसाँ मे बडा हुआ और पोली विप्लव के पहले स्विट्-जरलैंड भेज दिया गया यद्यपि वह आन्दोलन में भाग लेना चाहता था। उसने 'अदैवी कॉमेडी' (१८३५) द्वारा ख्याति अर्जित की। उसमें उसने आन्दोलन के कुछ पहलुओ पर साहित्य के माध्यम से प्रकाश डाला। 'इरीडियन' मे ग्रीक कथानक का उपयोग हुआ। इन दोनो कृतियो में पोलैंड के सम्बन्ध में उसने निराशाजनक भावनाएँ चित्रित की है। आशात्मक सभावनाओ का उद्रेक उसकी अन्य कविताओ—जैसे, 'उपा' 'भविष्य के स्तोत्र' और 'सहानुभूति के स्तोत्र'—मे हुआ है।

पोली अभिनिष्क्रमण ने छोटे वडे अनेक अन्य कवि उत्पन्न किये। इनमे प्रधान सिप्रियन कामिल नॉविद[2] और अलेक्सान्दर चोदस्को[3] थे। इनके अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विवेचक भी थे जिन्होने साहित्य को अपने दर्शन का आधार वनाया, उनमें प्रधान जोजेफ होइने रोन्स्की[4] जोजेफ क्रेमर[5] कारोल लीबेल्त[6] ब्रोनिस्ला फर्दिनान्द त्रेन्तावस्की[7] और आगुस्त सीजकाउस्की[8] थे।

पोलैंड पर विदेशी सत्ता का अधिकार हो तो गया था पर वहाँ भी साहित्य-निर्माण का कार्य किसी न किसी रूप और मात्रा मे चलता रहा। स्तेफाँ जेरोम्स्की[9] ने निराशात्मक प्रवृत्ति का अपने 'गृहविहीन लोग' और 'भस्म' मे परिचय दिया। उसने प्रणय और

उद्देश्य था। पोलैंड का साहित्य भी उस नये मूल्याकन का लक्ष्य बना। उस दल का सबसे विशिष्ट लेखक स्तानिस्लॉं विस्पियान्स्की[१] चित्रकार, कवि और नाट्यकार था। उसके विचारो में न्यायप्रियता और आजादी का प्राधान्य था। वह पोली दृष्टिकोण रखता हुआ भी मानव दृष्टिकोण का पक्षपाती था और सर्वत्र उसने उसे अपने विचारो का आधार बनाया। 'विवाह' 'और 'वारसा' की लडकी' (१८३१ का एक गीत) दोनो में उसका यह दृष्टिकोण समुचित रूप से स्थापित हुआ है। प्रथम महायुद्ध के साथ ही पोल साहित्य का सभी दिशाओ मे विकास हुआ। ल्योपोल्ड स्टाफ[२] ने काव्य में रसवाद का प्रसार किया, जोजेफ वेसेनहाफ[३] ने भावुक कृतियाँ प्रस्तुत की, जाफ्जा रिगीर-नाल्कोवस्का[४] ने 'नारी दर्शन' का चिन्तन किया, स्तानिस्ला ब्राजोजुस्की[५] ने क्रान्तिकारी आलोचना का सूत्रपात किया और स्त्रुग (तादुस गालेकी)[६] ने रोमान्टिक प्रवृत्तियो को सँभाला। इस प्रकार चेतना चाहे जैसी रही हो, थी वह प्राय सर्वतोमुखी।

राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, आजाद विचारो का प्रकाशन बडी तन्मयता और आसानी से होने लगा। 'स्कामान्दर' प्रधान साहित्यिक पत्र था जिसके कॉलम जूलियन तूविम[७] के लेखो से भरे रहते थे। उसने शब्द की व्याख्या विशेष रूप से करनी शुरू की और अन्तोनी स्लोनिम्स्की[८] तथा जान लेचोन[९] ने अलकारो का विशेष उपयोग किया। इनके योग से पोली भाषा और काव्य-शैली निखर चली। इला काजीमीरा इलाकोविचोवना (इलाकोविच)[१०] ने मानवी हृदय की यातनाओ को व्यक्त किया और मार्जा पोलिकोव्स्का[११] ने सक्षिप्त शैली का अपनी कृतियो मे विकास किया। व्लादिस्लाव ब्रोन्यूवस्की[१२] इनके विपरीत, जनता का साहित्यकार था और उसने अपनी रचनाओ में सर्वहारा वर्ग के पक्ष का समर्थन किया।

गद्य के क्षेत्र में पुराने लेखको को भी युद्धोत्तर ससार ने एक नयी दृष्टि दी। रेमोन्ट,[१३] कासप्रोविक्स[१४] और जेरोम्स्की[१५] तो बहुत दिनो जिन्दा न रहे परन्तु व्लोदीमीर्ज परजिस्की[१६] वाकला बेरेन्ट[१७] आदि ने अपने उपन्यासो मे विविध विचारो का प्रकाश किया।

---

१ Stanislaw Wyspianski (१८६९-१९०७), २ Leopold Staff, ३ Jozef Wejssenhaf (१८६०-१९३२), ४ Zafja Rigier Nalkowska (जन्म १८८५), ५ Stanislaw Brzozowski (१८७८-१९११), ६ Strug TSadeusz Galecki) (जन्म १८७३), ७ Juljan Tuwim (जन्म १८९४), ८ Antoni Slonimski (जन्म १८९५), ९ Jan Lechon (जन्म १८९९), १० Illa Kazimiera Illakowiczowna (Illakowicz) (जन्म १८९२), ११ Marja Pawlikowska १२ Wladyslaw Broniewski (जन्म १८९८), १३ Reymont, १४ Kasprowicz; १५ Zeromski १६ Wlodzimierz Perzynski (१८७८-१९३०), १७ Waclaw Berent (१८७३-१९४०)

में अट्ठारहवी सदी की एक कथा है। 'बालादिना' और' लिलावेनेदा' प्रागैतिहासकालीन स्लावो की कथाएँ नाटक के रूप मे आई है। 'प्लेगपीडितो का पिता' भी पूर्वात्यकथानक का एक नाटक ही है। वह भी एक वार मिकीविक्स की ही भाँति तोविआन्स्की के चक्कर में पड गया था और तब नितान्त दार्शनिक कविताएँ लिखने लगा था। 'आत्मा की उत्पत्ति' और विशेषत 'क्रोल दूच' उसी सबन्ध के द्योतक है। स्लोवाकी अल्पायु में ही मर गया।

उस दल का तीसरा विशिष्ट कवि ज़िगमुन्ट क्रासिन्स्की[१] था। वह भी प्रवासी पोल था। पेरिस में पैदा हुआ था, वारसॉ मे वडा हुआ और पोली विप्लव के पहले स्विट्जरलैंड भेज दिया गया यद्यपि वह आन्दोलन मे भाग लेना चाहता था। उसने 'अदैवी कॉमेडी' (१८३५) द्वारा ख्याति अर्जित की। उसमे उसने आन्दोलन के कुछ पहलुओ पर साहित्य के माध्यम से प्रकाश डाला। 'इरीडियन' मे ग्रीक कथानक का उपयोग हुआ। इन दोनो कृतियो मे पोलैंड के सम्बन्ध में उसने निराशाजनक भावनाएँ चित्रित की है। आशात्मक सभावनाओ का उद्रेक उसकी अन्य कविताओ—जैसे, 'उषा' 'भविष्य के स्तोत्र' और 'सहानुभूति के स्तोत्र'—मे हुआ है।

पोली अभिनिष्क्रमण ने छोटे वडे अनेक अन्य कवि उत्पन्न किये। इनमें प्रधान सिप्रियन कामिल नॉर्विद[२] और अलेक्सान्दर चोदस्को[३] थे। इनके अतिरिक्त कुछ दार्शनिक विवेचक भी थे जिन्होने साहित्य को अपने दर्शन का आधार बनाया, उनमें प्रधान जोजेफ होइने रोन्स्की[४] जोजेफ क्रेमर[५] कारोल लीबेल्त[६] ब्रोनिस्ला फर्दिनान्द त्रेन्तावस्की[७] और आगुस्त सीजकाउस्की[८] थे।

पोलैंड पर विदेशी सत्ता का अधिकार हो तो गया था पर वहाँ भी साहित्य-निर्माण का कार्य किसी न किसी रूप और मात्रा में चलता रहा। स्तेफॉ जेरोम्स्की[९] ने निराशात्मक प्रवृत्ति का अपने 'गृहविहीन लोग' और 'भस्म' मे परिचय दिया। उसने प्रणय और मानवी समस्याओ पर "पाप का इतिहास" में अपने विचार प्रगट किये। उसके उपन्यास और नाटक दोनो मे उसी निराशावादी प्रवृत्ति का अकन हुआ परन्तु प्रथम महायुद्ध और पोलैंड की स्वतन्त्रता ने उसे अपना 'समुद्र की हवा' लिखने को प्रोत्साहित किया।

१९वी सदी के अन्त में पोलैंड में 'तरुण पोलैंड' नाम का एक आन्दोलन शुरू हुआ। मिकीविक्स को आदर्श मानकर पोली-कला को पुनरुज्जीवित करना ही उसका

---

१ Zygmunt Krasinski (१८१२-५९), २ Cyprjan Kamil Norwid (१८२१-८३), ३ Aleksander Chodzko (१८०४-९१), ४ Jozef Hoehne Wronski (१७७८-१८५३), ५ Jozef Kremer (१८०६-७५), ६ Karol Libelt (१८०७-७५), ७ Bronislaw Ferdynand Trentowski (१८०७-६९), ८ August Cieszkowski (१८१४-९४), ९ Stefan Zeromski (१८६४-१९२५)

उद्देश्य था। पोलैंड का साहित्य भी उस नये मूल्याकन का लक्ष्य बना। उस दल का सबसे विशिष्ट लेखक स्तानिस्लॉ विस्पियान्स्की[१] चित्रकार, कवि और नाट्यकार था। उसके विचारो में न्यायप्रियता और आजादी का प्राधान्य था। वह पोली दृष्टिकोण रखता हुआ भी मानव दृष्टिकोण का पक्षपाती था और सर्वत्र उसने उसे अपने विचारो का आधार बनाया। 'विवाह' 'और 'वारसा' की लडकी' (१८३१ का एक गीत) दोनो में उसका यह दृष्टिकोण समुचित रूप से स्थापित हुआ है। प्रथम महायुद्ध के साथ ही पोल साहित्य का सभी दिशाओ मे विकास हुआ। ल्योपोल्ड स्टाफ[२] ने काव्य मे रसवाद का प्रसार किया, जोजेफ वेसेनहाफ[३] ने भावुक कृतियाँ प्रस्तुत की, जाफ्जा रिगीर-नाल्कोवस्का[४] ने 'नारी दर्शन' का चिन्तन किया, स्तानिस्ला ब्राजोजुस्की[५] ने क्रान्तिकारी आलोचना का सूत्रपात किया और स्त्रुग (तादुस गालेकी)[६] ने रोमान्टिक प्रवृत्तियो को सँभाला। इस प्रकार चेतना चाहे जैसी रही हो, थी वह प्राय सर्वतोमुखी।

राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, आजाद विचारो का प्रकाशन बडी तन्मयता और आसानी से होने लगा। 'स्कामान्दर' प्रधान साहित्यिक पत्र था जिसके कॉलम जूलियन तूविम[७] के लेखो से भरे रहते थे। उसने शब्द की व्याख्या विशेप रूप से करनी शुरू की और अन्तोनी स्लोनिम्स्की[८] तथा जान लेचोन[९] ने अलकारो का विशेप उपयोग किया। इनके योग से पोली भापा और काव्य-शैली निखर चली। इला काजीमीरा इलाकोविचोवना (इलाकोविच)[१०] ने मानवी हृदय की यातनाओं को व्यक्त किया और मार्जा पोलिकोव्स्का[११] ने सक्षिप्त शैली का अपनी कृतियो मे विकास किया। ब्लादिस्लाव ब्रोन्यूवस्की[१२] इनके विपरीत, जनता का साहित्यकार था और उसने अपनी रचनाओ में सर्वहारा वर्ग के पक्ष का समर्थन किया।

गद्य के क्षेत्र में पुराने लेखको को भी युद्धोत्तर ससार ने एक नयी दृष्टि दी। रेमोन्ट,[१३] कासप्रोविक्स[१४] और जेरोम्स्की[१५] तो वहुत दिनो जिन्दा न रहे परन्तु व्लोदीमीर्ज परजिस्की[१६] वाकला वेरेन्ट[१७] आदि ने अपने उपन्यासो मे विविध विचारो का प्रकाश किया।

---

१ Stanislaw Wyspianski (१८६९-१९०७), २ Leopold Staff, ३ Jozef Wejssenhaf (१८६०-१९३२), ४ Zafja Rigier Nalkowska (जन्म १८८५); ५ Stanislaw Brzozowski (१८७८-१९११), ६ Strug TSadeusz Galecki) (जन्म १८७३), ७ Juljan Tuwim (जन्म १८९४), ८ Antoni Slonimski (जन्म १८९५), ९ Jan Lechon (जन्म १८९९); १० Illa Kazimiera Illakowiczowna (Illakowicz) (जन्म १८९२), ११ Marja Pawlikowska १२ Wladyslaw Broniewski (जन्म १८९८), १३ Reymont, १४ Kasprowicz, १५. Zeromski १६ Wlodzimierz Perzynski (१८७८-१९३०), १७ Waclaw Berent (१८७३-१९४०)

तरुण लेखको ने उनसे अधिक अपनी प्रवृत्तियो को रूपायित किया। उगेन्जुज कोरिविन-माल्कचेव्स्की[1] ने अपने उपन्यासो का आधार युद्ध की अनुभूतियो को बनाया। फर्दिनान्द गेतेल[2] ने अपने उपन्यास 'दिन ब दिन' मे तुर्किस्तान का जीवन अकित किया। जोफिया कोसाकजुका[3] ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे।

कम्युनिस्ट लेखको मे सबसे महत्त्व का सभवत वान्दा वासिलेव्स्का[4] है। उसी प्रकार के विचारो का लिओन क्रुस्काव्स्की[5] भी है। जूलियस कादेन वन्द्रॉवस्की[6] मार्शल पिल्सुदस्की[7] का प्रबल अनुयायी है और उसी की भाँति उसने भी पोल जीवन की आलोचना की है। जारोस्ला इवास्कीविक्स[8] और मिचाल चोरोमान्स्की[9] वातावरण का सुन्दरतम अकन करते है। जोजेफ विटलिन[10] ने प्रथम महायुद्ध पर सुन्दर उपन्यास 'जमीन का नमक' लिखा। साहित्यालोचना के क्षेत्र में तादूज व्वाय-जेलेन्स्की[11] प्रधान है।

दूसरे महायुद्ध मे पोलैंड चेकोस्लोवेकिया के बाद ही नात्सी साम्राज्यवाद का शिकार हुआ था। अत्यन्त क्रूरता से उस देश की आजादी का गला घोट डाला गया। लाखो की तादाद में लोग वहाँ मारे गये। पोलैंड सदा का अभागा देश रहा है परन्तु जिस निष्ठा से नात्सीवाद ने उस युद्ध के आरभ मे पोलैंड की जनता का सहार किया वह इतिहास मे अन्यत्र उपलब्ध नही। वहाँ के 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' नरक की नितान्त काल्पनिक यातनाओ को भी अपनी यथार्थता से सच कर देते है। 'पोग्रम' (जनदल का आयोजित सहार) इतने भयकर उदाहरण और कही नही मिलते जितने नात्सी अधिकृत तब के पोलैंड में। यहूदियो की वहाँ सख्या अधिक होने के कारण उनका विनाश भी उसी मात्रा में हुआ। उसी मात्रा मे पोलैंड के साहित्यकारो का भी सहार हुआ। अनेक मार डाले गये। अनेक आक्रमण के शिकार हो गये, अनेक निर्वासित कर दिये गये, अनेक अपने आप बडी कठिनाई से देश छोड कर बाहर चले गये। अब नात्सियो से आजाद होने के बाद फिर पोलैंड की भारती एक बार फिर मुखरित हुई है और साहित्य का निर्माण जनहिताय होने लगा है। अपने बलिदानो और साम्राज्यवादी महत्त्वाकाक्षा का आहार बनने की भयकर अनुभूति से पोलैंड का साहित्यकार भावो का सबसे बडा धनी है, निस्सन्देह उसकी अनुभूति-सम्पदा उसके साहित्य का प्रशस्य विषय बनेगी।

---

१ Eugenjusz Korwin-Malaczewski (१८९५-१९२२), २ Ferdynand Goetel (जन्म १८९०), ३ Zofja Kossak-Szczucka, ४ Wanda Wasilewska, ५ Leon Kruczkowski, ६ Juljusz Kadren-Bandrowski (जन्म १८८५), ७ Marshal Pilsudski, ८ Jaroslaw Iwaskiewicz (जन्म १८९४), ९ Michal Choromanski (जन्म १९०४), १० Jozef Wittlin (जन्म १८९६); ११ Tadeusz Boy-Zelenski (जन्म १८७४)

१६. फ़ारसी-साहित्य

: १ :

इस्लाम से पूर्व

ईरानी हिन्द-यूरोपीय आर्यों की ही एक शाखा माने जाते हैं। "ईरानी" शब्द भी व्युत्पत्तिक रूप में 'आर्य' शब्द के बहुत पास है। फारस या पार्स ईरान के एक विशिष्ट प्रान्त का नाम था जिससे वह फारस, पार्स या फार्स कहलाया। सस्कृत में ईरानियो को "पारसीक" कहा गया है। फारसी भाषा का सबध एक ओर तो प्राचीन भारतीय सस्कृत से है दूसरी ओर यूरोप की "क्लासिकल" भाषाओ से। प्राचीन काल मे ईरानी मूल आर्य जाति से सभवत कास्पियन सागर के समीप पृथक हुए और दक्षिण-पूर्व की ओर घूमते हुए ईरानी, मीडी आदि अनेक नामो से सीर, आमू (वक्षु) आदि नदियो की घाटी में बस गए। इन्ही दिनो वे ईरान में भी बसे और अपनी भाषा का विकास किया।

ईरानी जाति का उत्कर्ष नवी सदी ई० पू० के मध्य मे हुआ। तव उस दिशा मे और पश्चिमी एशिया मे, मिश्र तक, असुरो का प्रभुत्व था। कुरूप् महान् के राज्यकाल (५५८-५३०) ई० पू० मे ईरान अपनी शक्ति के लिए विख्यात हुआ। कुरूप् (साइरस) ने मीडी कुल को उखाड फेंका और बाबुल (बावेरू) तथा उसके अनुवर्ती देशो को जीतकर इतिहास प्रसिद्ध हख़मनी वश की नीव डाली। इस वश का उत्कर्ष पहले पार्स प्रात मे ही हुआ और जैसे-जैसे समूचे ईरान पर उस राज वश का प्रभुत्व फैला पार्स भी वैसे ही वैसे उस देश की सज्ञा बन गया। ग्रीको ने उसे "पर्सिस" कहा जिसका लेटिन रूप "पर्जिया" या पर्शिया" आज भी प्रचलित है।

कुरूप् के बाद उसके राज्य का स्वामी उसका पुत्र काम्बुजीय हुआ। उसने मिश्र तक भूमि जीत ली। परन्तु घर का विद्रोह दवाने जब वह शीघ्रता से लौटा तो सीरिया में राह में ही उसकी मृत्यु हो गई (५२१ ई० पू०)। उसके बाद हख़मनी राजकुल की गद्दी का हिस्तास्प हकदार हुआ परन्तु वह काम्बुजीय के शत्रु से राजदण्ड न छीन सका। यह कार्य उसके पुत्र दारायवौष प्रथम (दारा) ने किया। दारा ने ५२१ ई० पू० में ही राज्य शत्रु से छीन लिया और अपने शासन की सीमाएँ दूर दूर तक फैला दी। फारसी साहित्य का आरम्भ उसी नृपति के शासन काल में हुआ। उनके अनेक विजयलेख आज भी चट्टानो और प्रस्तर पट्टो पर सुरक्षित हैं। इनमें प्रसिद्ध बहिस्तून और नक्श-ए-रुस्तम के अभिलेख हैं। पिछले अभिलेख से, जो उस शक्तिशाली सम्राट् की कब्र पर खुदा है,

स्पष्ट है कि उसने सिन्ध और पश्चिमी पजाब जीतकर बीसवी क्षत्रपी (सूबा) अपने साम्राज्य में मिला लिया था। उसी लेख में पहले-पहल हिन्दू (हिंदु) शब्द का प्रयोग हुआ। जिससे कालान्तर में हिन्दी भाषा का नाम पडा। बहिस्तून खुरासान-वणिक्पथ पर किरमानशाह से पन्द्रह कोस पूर्व है। इस लेख में सम्राट ने अपने पूर्वजो, विरुदो और विजयो का उल्लेख किया है और उस आहूरमज्दा का भी जिसकी कृपा से उसे युद्धो में विजय मिली। उसके अभिलेखो का भारतीय लेख-प्रथा पर बडा प्रभाव पडा। मौर्य-कला ने तो उसकी कला-कृतियो को अपना प्रतीक बनाया ही, अशोक ने उसी के अभिलेखो को सामने रख भारत में पहली बार विस्तृत रूप से चट्टानो और स्तम्भो पर अपने विचार खुदवाए। पश्चिमी पजाब मे तो उसने हखमनी लिपि (दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जानेवाली खरोष्टी) में ही अपने अभिलेख खुदवाए और खोदने वाले को ईरानी भाषा की ही "दिबिर" (लेखक) सज्ञा मिली।

लेख गद्य की एक शैली प्रस्तुत करते हैं। भाषा सस्कृत से मिलती है। दारायवौष् अपने को "आर्या" में आर्य (आर्याणा आर्य) क्षत्रियो में 'क्षत्रिय' (क्षत्रियाणाम् क्षत्रिय) कहता है। दारायवौष और उसके उत्तराधिकारी क्षयाषी (४८५-४६५ ई पू) (ज़रक्सीज़) और आर्तक्षयाषी (ऋतज्ञ-याषी-४६५-२४) के नक्शा-ए-रुस्तम और पर्सिपोलिस के लेख ईरानी राष्ट्रीय साहित्य का आरभ करते हैं। क्षयाषी का उल्लेख ग्रीक-साहित्य में प्रचुर हुआ है क्योकि उसने अपनी राज्यसीमा भूमध्य सागर तक बढाकर एथेन्स को जला डाला था। उसकी ओर से भारतीय भी ग्रीस में लडे थे। इन लेखो में जो आहूरमज्दा का उल्लेख हुआ है उससे प्रगट है कि छठी सदी ई पू तक जरतुश्ती (पारसी) धर्म ईरानी मे पूर्णतया प्रचलित हो चुका था।

जरतुश्त (जरथुश्थ) के काल के सबध में विद्वानो में बडा विरोध है। उसका जीवन काल ६००० से ६०० ई० पू० तक रखा गया है। वैज्ञानिक विद्वानो ने उस महापुरुष का समय सातवी सदी ई० पू० का उत्तरार्द्ध माना है। वह सम्भवत अजरबैजान का रहने वाला था। पारसियो का होमपरक धर्म ग्रथ "अवेस्ता" उसी की कृति माना जाता है। कम से कम उस ग्रथ का गाथा भाग ज़रतुश्त द्वारा प्रस्तुत मानने में कम विद्वानो को आपत्ति है। "अवेस्ता" में स्थान-स्थान पर सुन्दर कविता का परिचय मिलता है। "अवेस्ता" प्राचीन ईरानियो (भारतीय पारसियो) का धर्मग्रथ तो है ही, उस काल की बोली का भी नाम है। उसकी भाषा अभिलेखो की भाषा से अनेकार्थ में भिन्न और वैदिक सस्कृत के अनुरूप है। कुछ ध्वनियो को बदल कर पढने से लगता है कि हम ऋग्वेद के उच्चरित मत्र सुन रहे हो। वर्तमान "अवेस्ता" केवल खड रूप में ही उपलब्ध है। पारसियो का कहना है कि ससानी काल (छठी सदी ईस्वी) में उसके इक्कीस खड थे। उसके दो भाग हैं—अवेस्ता और प्रार्थनाओ का खुर्द अवेस्ता। अवेस्ता तीन भागो में विभक्त है—(१) गाथापद्य

"वेन्दीदाद" (२) यज्ञमत्रो का सग्रह "विस्पेरद और पूजापरक" "यस्त"। अवेस्ता का महत्व वस्तुत साहित्य के क्षेत्र मे इतना नही जितना भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में है।

चौथी सदी ईस्वी पूर्व में ईरान का स्वामी दारायवौष तृतीय था। उसी को मकदूनिया के सिकन्दर ने ३३१ ई० पू० में गागामेला में परास्त किया। उस पराजय से जो ईरानी साम्राज्य का पतन हुआ तो सदियो ईरान की सत्ता भूलुण्ठित रही। फिर २२४ ईस्वी में ससानी राजकुल का आरम्भ हुआ और एक बार फिर धर्म और साहित्य का उत्कर्ष हुआ। इन पाँच सौ वर्षों के अन्धकार-युग मे ईरान पर पहले ग्रीक सेल्यूकस के राजवश का, फिर अर्सक राजकुल का शासन रहा। अर्सक ने सेल्यूकस के साम्राज्य से विद्रोह कर जिस शासन का आरभ किया था वह भी ईरानी ही था, परन्तु ज़रतुश्ती धर्म वास्तविक राष्ट्रीय आदोलन के साथ फिर से ईरानी धरा पर ससानी राजकुल के साथ ही आविर्भूत हुआ। इसका पहला राजा आर्दशीर अथवा आर्दक्षीर (ऋतक्षीर) था जो अपने को हख़मनी कुल का ही वशधर मानता था।

उस काल ईरान में जिस भाषा का प्रचलन हुआ वह पहलवी थी, "पार्थवी"। पहलवी का पूर्वतम रूप हमें प्राचीनतम ससानी अभिलेखो में मिलता है। इस भाषा मे जरतुश्ती धर्म के ऊपर इस्लाम की विजय के पहले काफी साहित्य प्रस्तुत हुआ होगा। परन्तु इस्लाम की सहारक चोट ने प्राय सबका अन्त कर दिया। पहलवी के स्थान पर अरबी लिपि का व्यवहार आरम्भ हुआ और पहलवी जरतुश्ती पुरोहितो मात्र की भाषा रह गई। नवी सदी ईस्वी के बाद तो पहलवी का सर्वथा अन्त ही हो गया और उस काल की जो कुछ रचना बच रही है उसकी रक्षा का श्रेय बम्बई के पारसियो को है जिनके पूर्वज धार्मिक असहिष्णुता के कारण ईरान छोड कर आठवी सदी में हिन्दुस्तान चले आए थे।

जो कुछ बच रहा है वह सारा धार्मिक साहित्य है, अवेस्ता से सम्बन्धित। अवेस्ता की व्याख्या को जन्द कहते है और प्राय दोनो का एक साथ जन्दावेस्ता नाम लिया जाता है। जन्द साहित्य की भाषा पहलवी है। अवेस्ता सम्बन्धी अन्य धार्मिक रचनाओं के नाम है "बुन्दहिश" "दीन्कर्त" "मैन्यो इ खिरद्"। इन्ही के साथ कुछ लौकिक साहित्य का भी प्रादुर्भाव हुआ जिसमें ऐतिहासिक ख्यातें, कथाएँ आदि सुरक्षित हुई। ये ही ख्यातें मुस्लिम ईरान के कवियो के लिए विचार भण्डार सिद्ध हुई। इस दृष्टि से इस काल की लौकिक रचनाएँ बडे महत्त्व की हैं। उनमें बडी विविधता है। इनमें ससानी काल का पारसियो के सामाजिक आचार का एक शास्त्र भी है जिसमें विवाह, सम्पत्ति, गुलामो आदि के सम्बन्ध में विधान दिए हुए हैं। इसी प्रकार पत्र-लेखन की कुछ शैलियाँ भी एक सग्रह में प्रस्तुत है जिनमें पत्रो के आरम्भ-अन्त करने की पद्धति दी हुई है, साथ ही उनमें प्राचीन पहलवी की एक शब्दावली भी पाज़न्द ज़बान में दी हुई है। इस साहित्य की एक रचना शतरज सम्बन्धी एक काल्पनिक कहानी है, दूसरी खुसरो-ए-क्वादातान् और उसके अनुचर

की कथा है। परन्तु साहित्य की सबसे महत्व की कृतियाँ है—"यात्कार-ए जरीरान" (ज़रीरो के सस्मरण) जिसका दूसरा नाम "शाहना-ए-गुश्तास्प" (गुश्तास्प का वीर काव्य) है, और "कार-नामक-ए-अर्तख्शीर-ए-पापकान" (बाबकपुत्र अर्दशीर के वीर-कृत्यो की पुस्तक)। इनमें पौराणिक और अर्धेतिहासिक व्यक्तियो की कथाएँ हैं और इनकी सामग्री बहुत कुछ फिरदौसी के शाहनामा से मिलती है।

"यात्कार" में अर्जास्प और गुश्तास्प नामक दो राजाओ के युद्ध का वर्णन है। अर्जास्प के दूत गुश्तास्प को अपना ज़रतुश्ती धर्म छोड देने को कहते हैं और उसके इन्कार करने पर लडाई छिड जाती है। गुश्तास्प का भाई जरीर बडे पराक्रम के बाद वीरगति को प्राप्त होता है। कार-नामक-ए-अर्तख्शीर में अर्दशीर की कथा है जो वस्तुत दारा का वशधर है, पर अनजान मे भेड चराता है। बडे होने पर उसे ईरान का बादशाह बुला लेता है पर शाहजादे से लडने के कारण वह महल से निकाल दिया जाता है। वह फिर लौटता है और बादशाह को हरा कर उसकी कन्या से विवाह करता है। इन कृतियो का सही रचना-काल तो ज्ञात नही परन्तु नि सदेह वे किसी पश्चात्कालीन ससानी राजा की सरक्षा में प्रस्तुत हुई। फिरदौसी को अपने शाहनामा के लिए इससे बडी सामग्री मिली।

उस काल के काव्य का कोई रूप हमे आज उपलब्ध नही, यद्यपि यह विश्वास करना कठिन है कि नौशेरवाँ और खुसरो परवेज के से बादशाहो के अपने कवि और गायक न थे। अरबो ने यज्दगिर्द को परास्त कर ससानी राजकुल का अन्त कर दिया। इस्लाम ने ज़रतुश्ती धर्म का स्थान लिया और ईरान विशाल अरब साम्राज्य का एक प्रात बन गया। इस्लाम अपने विचार और जीवन के प्रति अपना दर्शन लेकर आया था, नित्य के आचार तक, और उसने ईरानी आचार-विचारो, धर्म-विश्वासो में आमूल परिवर्तन कर दिये।

साहित्य के क्षेत्र में भी उसका दूरगामी प्रभाव पडा। पहलवी लिपि के स्थान पर अरबी प्रतिष्ठित हुई और प्रत्येक नव-मुस्लिम का अरबी जुबान जानना अनिवार्य हो गया क्योकि उसके बिना नमाज़ या कुरान पढना सम्भव न था। जरतुश्ती धर्म का सर्वथा नाश न हुआ और उस काल की ख्याते, कथाएँ और लोक-साहित्य निश्चय ही बचे रहे जो भावी साहित्य का आधार बने। स्वय इस्लाम को ईरानियो ने अपने रग मे रँग दिया, जिससे अली की हत्या के बाद शिया सम्प्रदाय का आरभ हुआ। जिस कट्टरता से ईरानियो की रहन-सहनपर अरबो ने शासन रखा उसमे सम्भव न था कि वहाँ किसी प्रकार के इस्लाम-विरोधी जातीय साहित्य का निर्माण हो। ईरान के पतन के सौ-दो सौ वर्षो बाद का काल साहित्य की दिशा मे प्राय सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुआ।

: २ :

अब्बासी ख़िलाफ़त-काल

(७५०–१२५८ ई०)

धीरे-धीरे रूढिवादी इस्लाम का पलडा भारी होता गया, उसकी शक्ति बढती गई। उसके नेताओ ने ईरानी असतोष से लाभ उठा ईरानियो में बगावत फैला दी। बगावत सफल हुई और खलीफो की परपरा शक्तिमती हुई। तब मुस्लिम साम्राज्य की राजधानी दमिश्क से उठकर बगदाद चली गई और तब ईरानियो को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। उनकी सूझ और शासन-कुशलता का अरबो की दुनिया में साका चलता था। शीघ्र वे खलीफो के साम्राज्य मे सर्वत्र ऊँचे अफसर नियुक्त होने लगे।

'अरबी' धर्म, विज्ञान और राजकीय पत्रव्यवहार की भाषा बनी रही जिसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि इस काल के विख्यात धर्मशास्त्री और वैज्ञानिक ईरानी थे, उनकी कृतियाँ अरबी में प्रस्तुत हुई और अरबी साहित्य की निधि बनी। इस प्रकार के प्रधान लेखको में अग्रणी इतिहासकार तबरी, चिकित्सक और दार्शनिक अविचेन्ना, तवारीखनवीस अल्बेरूनी, और कुरान का व्याख्याता अल्बेजावी थे। ईरानी इब्न खुर्दादबिह ने अरबी का प्राचीनतम भूगोल–किताबुल मसालिक व ममालिक (सडको और मुल्को की किताब) लिखी (८४४ ई०)। अपनी भाषा में ईरानी केवल कविता करते रहे। इस दिशा में भी पहले उन्होने अरबी पद्य की शैलियाँ अपनाई। आधुनिक फारसी साहित्य के उद्गम खुरासान और ट्रान्साक्सियाना के अरबो द्वारा प्राय तीन सदियो तक शासित होने से ऐसा होना स्वाभाविक ही था। परन्तु ईरानियो ने अरबो से जो-जो लिया पचा डाला और शीघ्र ही उनकी काव्य-प्रतिभा अरबो को लाँघ चली।

परन्तु फारस में काव्य परपरा का विस्तार तब हुआ जब बगदाद के खलीफो की दुर्बलता का लाभ उठा, साम्राज्य के दूरस्थ प्रान्तो ने अपने-अपने स्वतन्त्र राजवश खडे कर लिये, ईरान में भी ऐसा ही हुआ और ८२० ई० मे ताहिर इब्नहुसैन ने वहाँ स्वतन्त्र शासन की बुनियाद डाली। उसने हारूँ अलरशीद के बेटे की लडाई मे मदद की थी और बदले में खुरासान की गवर्नरी मिली थी। अपने आचार-विचारो में सर्वथा अरबी होने के कारण उस राजकुल के राजाओ से स्थानीय कवियो के प्रति हमदर्दी विशेष तो नही हो सकती थी, फिर भी प्रमाणत उस काल कुछ फारसी साहित्य प्रस्तुत हुआ। उस काल के दो फ़ारसी कवियों के नाम सुरक्षित हैं जिन्होने उस सफ्फारी राजकुल के शासनकाल मे कविताएँ लिखीं जो ताहिरियो के बाद ईरान का स्वामी बना (८६७-९०३ ई०)। ये थे बगदाद का हन्ज़ला और हेरात के महमूदी वर्राक।

इस दिशा मे वास्तविक प्रगति सामानी राजाओ के शासन (८७४-९९९ ई०) में हुई। ये सम्भवत सासानी राजाओ के ही वशधर थे। उन्होने सफ्फारियो को परास्त कर ट्रान्सा-क्सियाना, खुरासान और उत्तरपूर्वी फारस का एक बडा भाग जीत लिया (९०० ई०)। युद्धकाल मे भी वे कवियो और इतिहासकारो से घिरे रहते थे। इनमें एक बलख का अबूशकूर[४] था जिसने पहले-पहल रुबाइयाँ लिखी। रूबाइयो की शैली आगे आने वाली सदियो मे रहस्यवादी क्षेत्र मे विशेष रुचिकर हुई। कोषो मे उसकी कविताओ की सादगी आज भी सुरक्षित है। फारसी साहित्य का प्रारम्भिक इतिहास लिखने मे इनकी सामग्री अमूल्य सिद्ध होगी। जीवनचरितो में कवियो की कविताओ के उद्धरण दिये गये। उसी प्रकार कोषो में भी शब्दो के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए काव्य कृतियो से उदाहरण दिए गए है।

फारस का पहला महान् "क्लासिकल" कवि रूदागी था। ईरान की दरबारी कविता का आरम्भ उसी से हुआ। रूदागी प्रशस्तिकार था। प्रशस्तियो की तब परिपाटी चल पडी और कवियो को दरबार में सरक्षा मिलने लगी। 'रूदागी' कवि का तखल्लुस मात्र है। उसका असल नाम अबू अब्दुल्ला जाफर इब्न मुहम्मद था। वह खुरासानी था। कहते हैं कि रुदागी जन्मान्ध था फिर भी अपनी प्रतिभा के बल पर वह सामानी नृपति नस्र इब्न अहमद (९१४-४३ ई०) का दरबारी कवि बन गया। उसका वर्णन अतिरजित है, शैली भी कृत्रिम है पर काव्य उसका सुगम है। उसमें प्रसाद गुण की कमी नही। उसकी कविता में ही पिछली काव्य-धारा का अन्तर्विरोध प्रगट हो गया है। ईरानी जीवन में निसर्ग की प्रेरणा बडी थी, उससे जनित आनन्द का उल्लास भी अदम्य था पर इनसे कही बढकर इस्लाम के तपाचरण का भय भी उस पर हावी था। नारी, मदिरा और सगीत का आकर्पण धर्म के अनुशासन से नही दबाया जा सकता था और उन तीनो की प्रशसा में धर्मानुशासन के बावजूद भी ईरानी कवियो का भावस्रोत उमड पडा। स्वय रूदागी इस प्रभाव से वचित न रह सका और उसका भावोद्रेक धर्म की प्राचीरे तोड अनिर्वचनीय की स्तुति में वह चला। उसने तीन ऐतिहासिक काव्य लिखे जिनमें प्रधान "वामिक और अज्रा" पहलवी सामग्री से प्रस्तुत है। उसके ये काव्य तो अब नही मिलते परन्तु जीवनचरितो और दीवानो में उसकी अनेक प्रशस्तियाँ और कविताए सुरक्षित है।

सामानियो की ही सरक्षा में दकीकी भी फूला-फला। दकीकी का उल्लेख पहलवी "यात्कार" (यादगार) के सम्बन्ध मे किया जा चुका है। उसने ससार की चार-नियामते— रक्ताधर, तन्त्रीनाद, जरतुश्त के प्रवचन और लाल मदिरा-मानी है जिससे कुछ विद्वानो ने उसे जरतुश्ती धर्म का अनुयायी भी माना है। प्राचीन पह्लवी सामग्री के आधार पर फिरदौसी का प्रसिद्ध "शाहनामा" उसी ने आरम्भ किया। वह उसके हजार शेर लिख चुका था कि एक गुलाम ने उसकी हत्या कर दी। उस "शाहनामा" को फिर फिरदौसी ने पूरा किया।

शाहनामा फिरदौसी की कृति के नाम से ही विख्यात है। फिरदौसी की प्रतिभा उसका वर्णन-चातुर्य, उसके मनोरम दृश्याकन इस अद्‌भुत रचना का कवि होने का उसका दावा अगीकार करते हैं। उसकी और दकीकी की शैली तथा शब्दचयन में कोई अन्तर नही। यदि उसने दकीकी की रचना अपने "शाहनामा" में मिला लेने की बात न लिख दी होती तो हमें उसका गुमान भी न होता और न दकीकी की हत्या का ही। शाहनामा सामानी राजाओ की सरक्षा का ही परिणाम था। परन्तु इन राजाओ की सरक्षा कवियो तक ही सीमित न थी। सामानी राजा मन्सूर इब्न नूह के वजीर अल् बलामी ने तबरी के "विश्व इतिहास" का अरबी से फारसीमें अनुवाद किया। यह सक्षिप्त अनुवाद फारसी गद्य का प्राय पहला रूप है। दो ईरानी चिकित्सको और दार्शनिको—राजिस और अविचेन्ना—ने भी सामानी राजाओ के तत्वावधान में ही अपने कृतियाँ प्रस्तुत की। राजिस ने अपना चिकित्सा सम्बन्धी ग्रन्थ "किताव-ए-मन्सूरी" खुरासान के सामानी गवर्नर अबू सालिह मन्सूर को समर्पित की।

अली (८६४-९२० ई०) और जियारी (९२८-१०४२ ई०) घरानो ने भी उस काल मे साहित्य की काफी उन्नति की। जियारियो मे से एक कावूस इब्न वश्मगीर (१०१२ ई०) कवियो का मित्र और स्वय असामान्य कवि था। उसकी प्रसिद्धि इस कारण भी हुई कि गजनी के सुलतान महमूद के क्रोध से भागे विख्यात अविचेन्ना को उसने शरण दी थी। महमूद का नाम भारत के इतिहास मे अपनी धार्मिक कट्टरता और लूटो से अमर हो गया है। महमूद का साम्राज्य लाहौर से वगदाद तक फैला हुआ था और लूटमार तो उसने सोमनाथ और वनारस से बगदाद और पश्चिमी ईरान तक की।

महमूद ने गजनी में उन कवियो लेखको और वैज्ञानिको को एकत्र किया जो फारसी साहित्य के इतिहास में विख्यात हो गए हैं। उसके राजकवि वलख के उन्सूरी (ल० १०५०) का दीवान आज भी उपलव्ध है। उसकी कविताएँ सुलतान की विजयो की प्रशस्ति में लिखी गई हैं, शैली से शब्दवहुल और वोझिल है। प्रगटत उस पर भी औरो की ही भाँति रूदागी की शैली की छाप है। उसके अतिरिक्त मसूद के दरवार मे अन्य कवि भी थे। फरुखी और आजादी दोनो उसी परपरा के कवि थे यद्यपि फरुखी की काव्यप्रतिभा उसमे अधिक मुखरित है। मिनुचिही मसूद के अतिरिक्त उसके उत्तराधिकारियो का भी राजकवि रहा था। १०४१ ई० के शीघ्र ही वाद वह मरा। उसका "दीवान", प्रशस्तिवाचक सीधी और फुटकर कविताओ से भरा है। ईरानी काव्य परपरा के अनुनार ही उसमें ही मदिरा और शृगार की प्रभूत स्तुति है।

ऊपर लिखे कवियो की विशेषता काव्यसौन्दर्य का अकन नही वरन् सामन्ती परपरा का प्रशस्तिमय निर्वाह है। परन्तु महमूद की सभा में कुछ ऐसे कवि भी थे जिनकी मान्यता आज भी काव्य-क्षेत्र मे प्रतीक मानी जाती है और जो इन कवियो ने अपनी काव्यमेधा में सर्वथा भिन्न थे। वे हैं असदी और उनका शिष्य फिरदौसी। असदी, जो अपने शिष्य की

मृत्यु के बाद १०३० और १०४१ ई० के बीच कभी मरा, 'मुनाजरा' नाम की एक प्रकार की कविताओ का स्रष्टा है। इस प्रकार की कविताएँ प्रशस्तियो की भूमिका के रूप में प्रयुक्त होती है जिनमें काल्पनिक पात्र नायक के गुणगायन में एक दूसरे से होड करते हैं। इस प्रकार की कविताओ में पीछे रहस्यवादी विषय भी अकित होने लगे। आरिफी की "गूय उ चौगान" (गेंद और पोलो का डडा) उसी प्रकार की कविता है।

फिरदौसी का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। वह फारसी साहित्याकाश का उज्ज्वलतम नक्षत्र है। मुस्लिम ससार के सबसे महान् बादशाह महमूद के पास वह पैंतीस वर्षों के परिश्रम से प्रसूत अपना शाहनामा लेकर पुरस्कार की आशा से गया। उसकी निराशा, महमूद पर व्यग्य और अन्त में पलायन की कहानी बार-बार कही गई है। महमूद ने शायद उसको नियत सख्या में अशर्फियाँ भेज दी, पर कहते है, वे उसके पास तब पहुँची जव उसका शरीर कब्र में डाला जा रहा था। शाहनामा की काव्यधारा से उसका प्रतिपाद्य विपय फिर भी महत्तर है। उसमें जो प्राचीनतम काल के ईरानी पराक्रम का वर्णन है, उससे वह कृति ईरानी जाति की राष्ट्रीय रचना हो गई है। पचास राजाओ की यह कीर्तिगाथा अद्भुत क्षमता से प्रस्तुत हुई है। इसी में सुहराब और रुस्तम का साहित्य-प्रसिद्ध द्वन्द्वयुद्ध है। फिरदौसी अपने प्राचीन ईरानी गौरव के चित्रण के लिए समसामयिको में निन्दा का पात्र भी वना और यदि उसने अली की प्रशस्ति लिखकर उसमें जोड दी होती तो उसकी कृति मुस्लिम जगत् में इतनी लोकप्रिय न हो पाती। शाहनामा मे ऐतिहासिक भ्रान्तियाँ है, पर वह अपनी विषय गरिमा से पिछले कवियो की प्रतीक वन गई।

फिरदौसी ने मस्नवी शैली में "यूसुफ और जुलेखा" नाम का एक और खण्ड काव्य लिखा। इसमें सौन्दर्यादि के प्रतीक यूसुफ और जुलेखा के पारस्परिक सम्वन्ध का चित्रण है। काव्य सौन्दर्य में यह कृति शाहनामा से वहुत घटकर है। फिर भी फारसी साहित्य में इसके अनेक अनुकरण हुए।

महमूद के दरवारियो में विख्यात तवारीखनवीस अलवेरूनी भी था जिसकी अरवी की कृतियो में प्रवान "असरुल वाकिया" (अवशिष्ट-इमारते) और "तारीखुल हिन्द" है। महमूद ने प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री और दार्शनिक अविचेन्ना (अवू अलि इब्न सिना) को भी वलपूर्वक अपने दरवार में लाना चाहा पर वह भाग कर जियारी राजा कावूस इब्न वश्मगीर की शरण में चला गया। अविचेन्ना ने अरवी मे कसीदे लिखे। उसके फारसी के अनेक कसीदे और गजल उमर खय्याम के मान लिए गए है। उसने 'दानिशनाम-ए-अलाई' नाम मे विज्ञान का एक विश्वकोप तैयार किया। ग्रन्थ इस्फहान के अलाउद्दौला के लिये लिखा गया था और ग्रन्थ के नाम मे "अला" उसी की सज्ञा है। उसका यश अरवीगद्य में लिखे चिकित्सा और दर्शन ग्रन्थो पर अवलम्बित है। इनमें अरस्तू आदि यूनानी दार्शनिकों का ज्ञान सग्रहीत है। ईरानी चिकित्सा का भी इनमें समावेश है। उसकी पुस्तको ने यूरोपीय

सभ्यता को प्रभावित किया है। जिन पुस्तको ने ग्रीकज्ञान की रक्षा की है अविचेन्न
कृतियाँ उन्ही में से है। यूरोप में मुद्रणयत्र का प्रयोग होते ही अविचेन्ना की पुस्तकों
धूम मच गई थी। वह १०३७ में हमदान में मरा और उसकी कब्र ज्वरपीडितो के
तीर्थ बन गई है।

फारसी पद्य का धरातल तो ऊँचा था पर उसके गद्य की मात्रा थोडी थी। महमू
ही दरबार में रहकर उतबी ने अपना प्रसिद्ध इतिहास "तारीखे यमीनी" (अरबी में) लि
उसी दरबार के अबुल फज्ल अहमद (बदी अलजमान-जमाने का अचरज) ने अरबी पद्य
की सम्मिलित शैली की 'मकामात' नाम की एक नई रीति चलाई। वह भी प्रशस्तिकार

ग्यारहवी सदी के पूर्वार्द्ध में सेल्जुक तुर्कों ने एशिया मे अपना आतक जमाया
तुगरिलबेग ने ईरान, एक ओर भारत की सीमा और दूसरी ओर बगदाद तक जीत लि
वह साम्राज्य फिर मिस्र तक जा पहुँचा। उन दिनो विद्वान दरबार-दरबार फिरा करते
सेल्जुक तुर्कों के दरबार में भी उनकी रसाई थी। उनके दरबार का प्रधान साहित्य
निजामुल मुल्क अबू अली अल हसन था। वह तुगरिल के भतीजे अल्प अस्लनि का वजीर
वह बगदाद के प्रसिद्ध निजामिया कॉलेज का निर्माता था। उसने "सियासतनामा" नाम
राजनीतिक ग्रन्थ लिखा। १०९३ में उस गिरोह के एक व्यक्ति ने उसकी हत्या कर
जिसको अपने ग्रन्थ में उसने राज्य-शत्रु-सस्थाओ मे गणना की थी।

इस काल कुछ रहस्यवादी कवियो का भी प्रादुर्भाव हुआ जो तत्सामयिक धार्मिक प्रे
का परिणाम था। शिया सम्प्रदाय की एक शाखा इस्माइलिया ने इस दिशा में विशेष प्र
की। इस काल के कवियो में नासिर का स्थान काफी ऊँचा है। उसने अपने "सआदतना
मे राजाओ की कमजोरियो को धिक्कारा। "जादुल मुसाफिरीन" मे उसके दार्शनिक सिद्ध
का निरूपण है। नासिर ने अपनी कविता में व्यावहारिक और रहस्यमय सत्य का समन्
किया है। वास्तव मे वह पश्चात्कालीन नीतिपरक कविता का आरम्भ करने वाला
उसका "रौशना-ए-नामा" भी उसके रहस्यवाद को ही प्रस्तुत करता है।

इस्माइली सिद्धान्तो से कही अधिक प्रबल सूफीवाद का आन्दोलन था। इनका उ
इस्लाम द्वारा ईरान की विजय के प्राय साथ ही हुआ। सम्भवत इस रहस्यवादी आन्दो
का कारण इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध आर्य विद्रोह था। परन्तु यह महत्व की बात है
इसके प्रारम्भिक प्रवर्तक अरब और दरवेश थे जो ऊन के कपडे पहनते थे। अरबी मे ऊन
सूफ कहते थे जिससे उन्हे पहनने वालो का नाम सूफी पडा। इस आन्दोलन का आरम्भ
जैसे हुआ हो, इसमें सन्देह नही कि इनका विकास और विस्तार ईरान में विशेषत तब
जब अब्बासी खलीफाओ के शासन काल में ईरान अपेक्षाकृत स्वतन्त्र हुआ और उ
दिमागी आजादी का आनन्द फिर से पाया। इनके सिद्धान्तो पर इस्लाम के साथ
ही भारतीय विचारो का भी प्रभाव था। इस्माइलियन सम्प्रदाय ने तो अवतारो की

कार की ही, सूफीवाद ने वेदान्त का देशव्यापी प्रचार किया था। वस्तुत रहस्यवाद केवल ान की ही दार्शनिक खोज या सम्पत्ति न थी। मध्ययुग में सर्वत्र अज्ञात के भीतर झाँककर ने की प्रवृत्ति हो गई थी, भारत में तो उससे भी वहुत पहले।

ईरान मे इस रहस्यवाद को इस्लाम से समझौता करना पडा। सूफी सिद्धान्तानुसार खुदा एक सत्य है। इस सिद्धान्त को मानने में भला किसी मुसलमान को क्या आपत्ति हो ती थी। खुदा और उसके बन्दे आदमी में एक छिपा प्रेम है और चूकि खुदामात्र यथार्थ है, ाक मनष्य में उसका एक अश होना आवश्यक है जो पूर्ण (खुदा) से मिलने को सदा ायित रहता है। आनन्द क्षणभर जब तक पुनर्मिलन का सुख प्राप्त कर लेता है परन्तु न्त मिलन के लिए शरीर रूपी अवगुठन और बाधा का नष्ट हो जाना आवश्यक है। न्त मिलन के लिए शरीर का अन्त करने के पीरो ने अनेक मार्ग वताए। खुदा और मानव प्राकृत एकता के सिद्धान्त ने स्वाभाविक ही इस्लाम के प्रति सूफियो के मन मे शका स्थित कर दी। इस सिद्धान्त की अद्भुत उपज सूफीवाद का परम साधु मन्सूरी हलाज था ानें उपनिषदो की "सोऽहम" भाषा में नारा बुलन्द किया—मै ही सत्य हूँ—"मै ही ा हूँ "और फलत प्राणदण्ड पाया।

जलालुद्दीन रूमी का "मस्नवी-ए-मानवी भी" सूफीवादी कविता की एक ड कृति है। फारसी साहित्य में सूफीवाद का महत्त्व यह है कि उसने समूची काव्यधारा अपनी प्रेरणा दी। फिरदौसी को छोड सभी वडे कवियो ने अपने विचारो मे सूफीवाद ही सहारा लिया। अधिकतर लिरिक-कवियो ने सूफीवाद की उपमाओ से अपनी कृतियो सनाथ किया। अनेक ने तो अपनी कविताओ में सूफीवाद को ही साध्य वनाया जिससे उसके सिद्धातो के अध्ययन के लिए इन कविताओ का ही अध्ययन करना अनिवार्य हो ा है। गद्यकृतियाँ इसका विश्लेषण तो करती है पर भेद नही खोल पाती।

सूफी आन्दोलन का पहला समर्थ कवि अवूसैद इब्न अबुल खैर (९६८-१०४९ ई) जिसने शैली के रूप में रुवाइयो को लोकप्रिय वनाया। फिर तो रहस्यवादी विचारो के ्क रूप में एक मात्र रुवाई ही प्रचलित हुई। भगवान के प्रेम के सम्वन्व में शारीरिक र पार्थिक भोगो की उपमाएँ भी सूफी साहित्य मे पहले-पहल उसने ही प्रचलित की। ीवादी काव्यधारा में प्रतीक रूप से सौन्दर्य, प्रणय, मदिरा, सभी प्रयुक्त हुए हैं। अवूसैद ाद ही हेरात का अन्सारी हुआ। वह नासिर खुसरो का समकालीन था। उसने भी सेर की ही भाँति अपनी गद्य-पद्य दोनो कृतियो में पार्थिव आचार और सार्वभौमिकता सम्मिलित उपयोग किया। उसने 'रुवाइयो' और 'मुनाजात' का प्रचुर व्यवहार किया। ाजात खुदा के प्रति प्रार्थनाएँ दुआएँ और सूफीवाद के पक्ष में प्रचारक कविताएँ है। ाई ने सूफी कविता में मस्नवी शैली का व्यवहार सवसे पहले किया। हदीकतुल हकीका ा प्रसिद्ध मस्नवी है। यह मस्नवी फरीदुद्दीन अत्तार के रूपक काव्य "मन्तिकुत तैर"

और जलालुद्दीन रूमी के रहस्यपरक "मस्नवी" का प्रेरक पूर्ववर्ती माना जाता है। "हदीक" मे सिद्धात अधिक है, काव्यत्व कम, पर सनाई के "दीवान" से वह कमी पूरी हो जाती है।

सूफीवाद के आनन्दपरक अध्यात्म के साथ ही उमर खैयाम के निराशावादी राग का उल्लेख उचित होगा। उमर इब्न-इब्राहीम अल-खैयाम नैशापुर के एक खेमा बनाने वाले का पुत्र था। अपने देश में वह ज्योतिपी, गणितज्ञ और स्वतन्त्र विचारक के रूप मे कवि से अधिक विख्यात है। निस्सदेह वह निर्भीक स्वतन्त्र विचारक था। उसकी कविता मे कही प्रशस्ति, वाचन या चाटुकारिता का नाम तक नही है। अपनी कविता की प्रेरणा मे वह निसन्देह सर्वथा ईरानी है। वह उन लोगो मे अग्रणी था जिन्होने सिद्धातवाद की सकीर्णता और पुण्याचारो के विरुद्ध आवाज उठाई, उन पर व्यग्य किए। उस वर्ग के कवियो का विश्वास था कि खुदा सारी मानवीय मुसीबतो का कारण है और भाग्य ही ससार का विधायक है। दर्शन और ज्ञान रिक्त है, कोरी जल्पना, जीवन का क्षणिक आनन्द भी सार्थक है। प्रकट है कि उमर सकीर्ण विचार पन्थियो को प्रिय नही हो सकता था। उसे अपने विचारो के कारण बडा सघर्ष भी करना पडा। उसकी रुबाइयो में से अधिकाश तो उसकी है पर उसके नाम से चलने वाली सभी नही। उसने मदिरा की प्रभूत स्तुति की है।

उमरखैयाम ने अरवी में एक बीजगणित और यूक्लिद की कुछ परिभाषाएँ भी प्रस्तुत की। ज्योतिप ग्रथ जीफ-ए-मलिकशाही के एक भाग का वह रचयिता माना जाता है। उसका मृत्युकाल ११२३ ई० बताया जाता है पर तिथि सदिग्ध है।

सूफीवाद ने साहित्य को विशेष प्रभावित किया, परन्तु इसका मतलब यह नही कि दूसरे प्रकार की कृतियो का सर्वथा अभाव था। काल्पनिक रोमानी कहानियाँ भी बराबर लिखी जाती रही। इसी प्रकार की एक कृति "वीस और रामिन" है जिसे तुगरिल वेग के दरवारी अल जुरजानी ने लिखा। फिर भी साधारणत पद्य की अपेक्षा गद्य का सृजन उस काल बहुत कम हुआ। अधिकतर गद्यात्मक कृतियाँ विज्ञान के क्षेत्र मे ही प्रभूत हुई। इस प्रकार की चिकित्सा सम्बन्धी एक रचना—"जखीर-ए-ख्वारजमशाही"—जैनुद्दीन अल-जुरजानी ने बारहवी सदी के उत्तरार्द्ध मे प्रस्तुत की। तभी जियारी राज काबूस के पौत्र कै-कौस इब्न इस्कन्दर ने राजनीति सम्बन्धी अपना "काबूस-नामा" लिखा। इनमे ईरान के पौराणिक महात्माओ हुशग, जमशेद और लुकमान आदि का हवाला देकर ग्रन्थकार ने अपने पुत्र और भावी सुल्तान को नीति समझाई है।

बारहवी सदी मे ही (सम्भवत पूर्वार्द्ध मे) प्रसिद्ध महात्मा अल गजाली हुआ। उसने अधिकतर अरवी मे लिखा परन्तु अल्केमी के अपने प्रसिद्ध ग्रथ "इह्या उल्मुद्दीन" का उसने फ़ारसी मे एक सक्षिप्त रूपान्तर रचा जो "कीमिया-ए-सआदत" नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह इस्लाम धर्म का सूफीपरक विवेचन है। उसी ने सूफी सन्तो के प्रसगो, प्रव-

चनो और रूपको की व्याख्या की। फिर भी रूढिवादी इस्लाम के अनुयायियो पर उसका इतना प्रभाव था कि उसे "हुज्जातुल इस्लाम" का खिताब मिला।

इस काल फारसी में कुछ अनुवाद भी हुए। बिदपाई की कहानियो का अनुवाद नसरुल्ला इब्नुल हमीद ने किया। इन कहानियो का मूल सस्कृत पन्चतन्त्र में था जिसका पहला अनुवाद ससानी नृपति खुसरो नौशेरवाँ (५३१-७९ ई) की सरक्षा में वरजुए नामक वैद्य ने "करटक दमनक" नाम से पह्लवी में किया था। यह पह्लवी मूल अनुवाद तो लुप्त हो गया परन्तु उसका पता हमें दो सीरियक और अरबी अनुवादो से चलता है। ५७० ई० मे बूद ने एक अनुवाद प्राचीन सीरियक भाषा मे प्रस्तुत किया था, दूसरा ७५० ई० के लगभग अरबी मे अब्दुल्ला इब्न मुकफ्फा ने "कलीला वा दम्ना" नाम से किया। इसी पाठ से नसरुल्ला ने भी अपना अनुवाद किया और उससे पहले पद्य में रूदागी ने "मस्नवी" अनुवाद किया था जो आज उपलब्ध नही। पचतत्र की कहानियो का सोलहवी सदी में प्रस्तुत हुसेन वैज काशिफी का अनुवाद "अनवारे सुहेली" बडा लोकप्रिय हुआ।

सेल्जुक सुल्तानो के मध्यकाल में लिखे "चहारमकाल" की फ़ारसी में बडी प्रतिष्ठा है। इसका लेखक निजामी-ए-अरूज़ी-ए-समरकन्दी वदख्शा में गूर के सुल्तानो का दरबारी कवि था। "चहारमकाल" मे चार स्कन्ध हैं, साम्प्रदायिक, काव्य, ज्योतिप, और चिकित्सा पर। इसमे इतने उदाहरण है कि ग्रथ कोष का रूप धारण कर लेता है। जहाँ तहाँ प्रशस्तिवादी चाटुकारिता का भी पुट है। जीवनचरितो के लिए इसमें बडी सामग्री है।

सेल्जुक काल की प्रशस्तियाँ और कशीदे फारसी साहित्य मे अपना सानी नही रखते। इस प्रकार के कवियो मे अनवरी अग्रणी हैं। मालिकशाह के पौत्र खुरासान के सुल्तान सन्जर (१११७-५७) का प्रिय प्रशस्तिकार अनवरी फारसी साहित्य में सबसे प्रवीण कशीदाकार हो गया है। उसके कशीदो में प्रचुर व्यग्य भी हैं। ११५४ के खुरासन के सहार पर उसने "खुरासान के आँसू" लिखा जो अपने करुण राग के लिए विख्यात है।

अनवरी की ही भाँति खाकानी भी प्रशस्ति-लेखन मे प्रसिद्ध हो गया है। परन्तु उसके कशीदो की शैली अनवरी की शैली से भी अधिक बोझिल और दुरूह है। उसका शब्दजाल उसकी सूक्तियो को कमजोर कर देता है। उसकी एक जानी हुई मस्नवी कविता "तुह्फोतुल इराकैन" है। मक्का की यात्रा करते समय उसने ईरानी और अरबी दोनों ईराकों पर यह कविता लिखी। अपने स्वामी के सामने अहकार प्रदर्शन करने के कारण वह कैद में डाल दिया गया जहाँ उसे अपनी कविता "हबासिया" (जेल की कविता) की सामग्री मिली।

वह युग वस्तुत प्रशस्तियो का था। उस [illegible] सामन्ती युग ने दरबारी परम्परा बाँध दी। सभी दरबारो में कवि और [illegible] रहते थे और उनका काम अपने स्वामियो की

कृपा और इनाम के बदले उनकी प्रशस्ति लिखना था। वह परपरा निश्चय ही जीवन की आलोचना के रूप मे काव्य-रचना का पोषक नही हो सकती थी। जीवन की आलोचना मे काव्याकन रहस्यवादी और लिरिक कवियो ने ही किया। जमाने का कुछ हाल फिर भी इन प्रशस्तियो में मिल जाता है जहाँ हम प्रशसात्मक वाग्जाल के भीतर झाँक पाते हैं। कुछ अपेक्षाकृत साधारण कवियो ने भी इस काल कशीदे लिखे। असीरुद्दीन अख्सीकती इन्ही मे से थे - उसके कशीदे अनवरी के कशीदो की ही भाँति विख्यात है। सजर के राजकवि अमीर मुइज्जी (११४७-४८) ने भी पठनीय कविताओ का एक दीवान छोडा है। रशीदी वतवात विशेषत अपनी सुन्दर कृति "हदाकुल-सिहर" (सम्मोहन की वाटिका) से प्रसिद्ध हुआ। सूजनी ने उस काल के सिद्धान्तवादी कवियो का बडा मजाक उडाया। उसके व्यग्य ने किसी को न छोडा। बाद मे रहस्यवादी सनाई का शिष्य होकर उसने इमामो की प्रशस्ति में कशीदे लिखे। पर वह अपनी व्यग्यात्मक कविताओ के लिए विख्यात है। उसने समकालीन कवियो की अच्छी पैरोडी की। इन्ही दिनो तिरमिज के अदीव साविर ने अपनी कविताएँ लिखी। सजर ने उसे अपना भेदिया बनाकर अपने वागी सामन्त अत्सिज के पास भेजा। भेद खुल गया और साविर वक्षुनद मे डुवा दिया गया।

सेल्जुक काल मे भी प्राचीन ईरानी ख्यातो पर आधारित प्रणय सम्वन्धी रोमैंटिक कविताएँ लिखी गईं। इस दिशा मे गजा के निजामी ने पहला डग भरा। वह विशेषत. शृगारिक कवि है। निजामी ११४१ के लगभग कुम में जन्मा। उसका शिक्षण सुन्नी सम्प्रदाय के आधार पर हुआ था जिससे उसका कवि हृदय दीर्घकाल तक निस्पन्द पड़ा रहा। चालीस वर्ष की आयु में उसने अपना "मखजनुल असार" (रहस्यो का कोप) लिखा। धार्मिक प्रसगो से भरा यह ग्रथ मस्नवी शैली मे लिखा गया था, परन्तु इसकी आख्यानराशि ने अगले रोमान्सो के लिए प्रचुर सामग्री उपस्थित कर दी। अपने साहित्यिक गुणो से उचित ही निज़ामी फारसी भाषा का प्रसिद्ध कवि माना गया है। उस साहित्य मे उसका स्थान कवियो मे दूसरा है। "खुसले उशिरी" उसका पहला रोमास है। उसमे ससानी राजा खुसरो परवेज का अर्मिनी शाहजादी शीरी के प्रति प्रणय वर्णित है। फरहाद का प्रसग उसी कृति मे आया है जिससे शीरी-फरहाद का जोड़ा अमर हो गया है। निजामी की दूसरी प्रसिद्ध रचना "लैला-उ-मजनू" है। घटना अरव की है। जहाँ शत्रु घरानो के तरुण-तरुणियो का परस्पर प्रेम अनेक साहित्यकारो का आधार बना। निजामी का "हफ्त पैकर" मस्नवी शैली मे लिखा सात कहानियो का सग्रह है। ससानी सुल्तान वहराम की सातो रानियो मे से प्रत्येक एक कहानी सुल्तान से कहती है। कवि का अन्तिम मस्नवी "इस्कदुरनामा" है, सिकन्दर के जीवन से सम्बद्ध। निजामी की पाँचो कृतियाँ एकत्र 'खम्स या पजगज" कहलाती है। उन्होने पश्चात्कालीन साहित्य पर प्रभूत प्रभाव डाला। निजामी १२०३के लगभग मरा। उसकी रचनाएँ वडी मधुर है और ईरान में वे वहुत लोकप्रिय हुई

सूफी परपरा को फ़ारसी के एक असामान्य कवि फरीदुद्दीन अत्तार (१११९-१२३०) ने जारी रखा। वह इत्र वेचने वाला था। उसने दरवेश के रूप में काफी भ्रमण किया और उस वीच अनेक सूफी नेताओ से मिला। उसने सूफी सिद्धातो को अपने चिन्तनका योग दिया। प्रसिद्ध है कि जव चगेज खा ने नैशापुर का विध्वस किया तव यह फारसी का निष्णात कवि भी मार डाला गया। मस्नवी शैली मे लिखे सुन्दर रूपक ग्रथ "मन्तिकुल तैर" (पक्षियो की वाणी) में उसने पक्षियो (सूफियो) के सातमजिलो से होकर सुल्तान सीमुर्ग (सत्य) तक पहुँचने का रूपक वाँधा है। सूफी सिद्धान्त की तीन मजिलो मे उसने चार और जोडी। अत्तार की रचनाओ में सवसे प्रसिद्ध "मन्तिकुल तैर" है, परन्तु ईरान मे उसकी सवसे अधिक लोकप्रिय कृति "पन्दनामा" है। उसके "तज्किरातुल औलिया" मे सूफी सन्तो के चरित हैं जिससे सूफी सम्प्रदाय के अध्ययन में उससे वडी सहायता मिलती है। अत्तार की अनेक प्रकाशित रहस्यवादी रचनाएँ ऑक्स्फोर्ड के वोडलेन पुस्तकालय मे और अन्यत्र सुरक्षित हैं। "गुल उ हुरमुज़" "मुसीवतनामा" शुतुरनामा", वुलवुलनामा", इसी प्रकार की अप्रकाशित रहस्यवादी कृतियाँ हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अत्तार की हत्या सम्भवत चिंगेजखा के हमले में हुई थी। तव मध्य एशिया मे मगोलो का उदय हो रहा था जो पूर्व में प्रवल होकर सहसा पश्चिम की ओर दौड पडे थे। चिंगेज खा ने प्रशान्त सागर से डैन्यूव नद तक सारा महाद्वीप जीत लिया और वह जहाँ जहाँ गया विध्वस मूर्तिमान हो उठा। ईरान मे ख्वरिज्म शाहो के खीव के प्रातो और खुरासान पर चिंगेज ने पहली चोट की। उनके निवासी तलवार के घाट उतार दिए गए। उनके नगर लूटकर जला दिए गए, उनकी सभ्यता विनष्ट हो गई। १२२७ में चिंगेज तो मर गया पर उसके क्रूर हमलो की परपरा उसके उत्तराधिकारियो ने जीवित रखी। १२५१ मे मगोल सरदारो ने दो आक्रमण किए। एक कुवले खाँ के नेतृत्व में चीन पर हुआ, दूसरा हुलागू खाँ के नेतृत्व में ईरान, मेसोपोतामिया, लघु एशिया और सीरिया पर। सीरिया ने कुछ काल लडाई जारी रखी पर फारस और मेसोपोतामिया तो कुचल गए। पश्चिम की अपनी चढाई मे हुलागू ने इस्मायली-हशीशियो के गढ़ अलामूत को वरवाद कर दिया, फिर १२५८ में वगदाद का सत्यानाश कर उसने उस अब्बासी खिलाफत का अन्त कर दिया जिसने फारस पर प्राय पाँच सौ वर्ष अपना दवदवा रखा था।

: ३ :

मंगोल-युग

मगोल हमलो का एक प्रवल प्रभाव तो यह हुआ कि कुछ समय के लिए मुस्लिम-संसार का कोई सरपरस्त न रहा और फारस मे अरवों की सत्ता उठ जाने से वहाँ की राज-

कीय भाषा बजाय अरबी के अब फारसी हो गई। इसके अतिरिक्त हुलागू खाँ ने ईरान की वश-बहुल सत्ता का अन्त कर सारे देश को एकाधिकार मे रखा। धीरे-धीरे उसके खानो ने चीन की सत्ता से भी स्वतन्त्र होकर अपना सम्बन्ध ईरानी जनता के साथ अधिकाधिक जोडा। और जब गाज़ा खा ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तब तो उसके ईरानी बनने मे कोई कोर कसर न रही। खानो ने फारस मे अपनी शक्ति प्रतिष्ठित कर शान्ति स्थापित की यद्यपि यह शान्ति भीतरी न थी। देश में आन्तरिक युद्ध फिर भी होते रहे। खानो के बाद ईरान पचास वर्ष तक अराजकता का केन्द्र बना रहा। अन्त में ततारी की शक्ति बढी और समरकन्द से निकल कर तैमूर लग ने भारत के गगातट से भूमध्य सागर तक के सारे देश-फारस, मेसोपोतामिया, तुर्किस्तान, लघुएशिया (एशिया माइनर) सब जीत लिए। चिंगेज की भाँति तैमूर भी विध्वसक था। (१४०५) में चीन विजय को जाते समय राह मे ही उसकी मृत्यु हो गई।

तैमूर के बाद भी कुछ काल तक मार-काट मची रही। उस बरबादी से दो सूफी-कवि, जिनकी रचनाएँ हम तक पहुँची है, बच रहे, एक तो जलालुद्दीन रूमी दूसरा सादी। जलालुद्दीन रूमी का जन्म १२०७ ई० मे बलख में हुआ। उसके पैदा होते ही उसके पिता को मालिक के भय से भागना पडा और अन्त में एशिया माइनर कोनिया में उसने पनाह ली। स्थान रूम कहलाता था जिससे वह स्वय रूमी कहलाया।

जलालुद्दीन विज्ञान का पडित था। उसकी शुष्कता से ऊबकर उसने सूफी रहस्य-वाद का अध्ययन किया जिसमे उसे बुरहानुद्दीन तिरमीजी और शम्श-ए-तब्रीज से बडी सहायता मिली। शम्श का उस पर इतना गहरा प्रभाव पडा कि उसकी लिरिक कविताओ का सग्रह सदियो "दीवान-ए-शम्श-ए-तब्रीज" नाम से प्रसिद्ध रहा। अपने इस गुरु के मरने पर जलालुद्दीन ने दरवेशो की एक नई जमात मौलवी (मेवलेवी) चलाई। ये मौलवी नाचते रहते है और इनका नाचना रहस्यवादी अर्थ में ब्रह्माण्डो का नाचना है। उस नाच को लाक्ष-णिक रूप से समा कहते है।

जलालुद्दीन ने जमाने के अनुसार अपने गज़लो, रूबाइयो और तर्जीबन्दो का एक दीवान प्रस्तुत किया। उसकी कविताओ में "सत्य" में लय हो जाने की उत्कट इच्छा दरशाई गई है। उसके बाद उसने अपना प्रसिद्ध "मस्नवी-ए-मानवी" लिखा जो "पह्लवी जबान का कुरान" माना जाता है। मस्नवी बडी कृति है जिसमें सूफी सिद्धातो, परपरा, ख्यातो आदि का रूपक उपमाओ मे काव्यबद्ध सग्रह है। भगवान का मनुष्य पर अटूट प्रेम है और मनुष्य को उसमें मिल जाने के लिए अपने को नष्ट कर देना चाहिये यही अधिकतर उसका मन्तव्य है। उसकी अरबी भूमिका मे कवि ने उसे "कुरान की व्याख्या" और "फकीरो का मार्ग" कहा है। रूमी १२७३ मे कोनिया में मरा।

शीराज का सादी (लगभग ११८४-१२९१) जलालुद्दीन से सर्वथा भिन्न था।

उसका दर्शन आम फहम था। उसने आचार के मूल सहज सिद्धातो-नम्रता, विनय, दान—का प्रचार किया। वह पार्थिव भोगो को त्याज्य नही बताता था। और सम्भवत स्वय उनसे दूर न था। शीराज मे जन्म लेकर फार्स के अपावेग साद इब्न जगी की कृपा से उसने बगदाद के निजामियाँ कालेज मे शिक्षा पाई। उसने भारत, अरब और उत्तरी अफ्रीका का भ्रमण किया। कुछ काल वह सन्त की भाँति जेरूसेलम में भी रहा जहाँ से उसे कैदकर सीरिया ले गए और त्रिपोली के गढ़-निर्माण में मजूर बना दिया। वहाँ स्वामी की कन्या से विवाह करने पर छुटकारा मिला परन्तु वह सम्बन्ध इतना कष्टकर हुआ कि वह फिर यात्रा के लिए निकल पडा। घूम फिर कर जब वह शीराज पहुँचा तो मालूम हुआ कि दक्षिणी ईरान मगोलो के विध्वस से बच गया है। उसने अपने पुराने सरक्षक के पुत्र के दरबार मे शरण ली और जगत मे शेखसादी नाम से विख्यात हुआ। वही उसने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ की जो फारसी साहित्य की निधि है। सादी की विख्यात रचनाएँ "बूस्ता (बाग) और गुलिस्ता (गुलाब वाटिका) है। दोनो नीति प्रधान कृतियाँ है, पहली पद्य मे है दूसरी गद्य-पद्य दोनों में। बूस्ता (बोस्ता) गुलिस्ता से कुछ अधिक गम्भीर है। गुलिस्ता सरल और मधुर है। उसमे विनोद का भी पुट प्रचुर है। व्यवहार कुशलता उन दोनो का प्रिय विषय है। उनकी भाषा मे गजब की मिठास है, अनूठी सादगी और भावो मे अनोखी ताजगी। उसके "दीवान" से प्रमाणित है कि मधुरतम शैली मे वह "लिरिक" आदि लिख सकता था। उसके कुछ लिरिक तो हाफिज के लिरिको के बराबर माने गए हैं। हाफिज फारसी जुबान का सुन्दरतम लिरिकार है।

सादी ने यात्राये भी लम्बी की। वह दरवेश के वेश मे भ्रमण करता था। वह दरवेश भी हो गया था। उसकी कृतियाँ ससार की अनेक भाषाओ मे अनूदित हो गई हैं और रहस्यवाद की शैली से मुक्त होने के कारण सुगम है। उसने अपनी रचनाएँ वृद्धावस्था मे की जिससे उनमे उसकी परिपक्व मेधा झलक पडी। अपने सरक्षको के लिए सादी ने कसीदे और मुतायबात (मजाक) भी लिखे। "मुतायबात" "खबीसात" (अनिर्वचनीय शृगार) भी कहलाते है। इन कृतियो का तथ्य इनके नाम से ही प्रकट है। सादी ने अपने सरक्षकों के प्रसादन के लिए इन्हे लिखा था परन्तु शुक्र है कि उसका यश इन पर नही उसकी अन्य रचनाओ पर अवलम्बित है।

मगोलो के आक्रमण के पहले जिनकी ख्याति स्थापित हो चुकी थी उन्ही मे तूस का नसीरुद्दीन (१२७४) था, [illegible] ज्योतिषी [illegible] था। [illegible] ने अलमूत का विध्वस किया [illegible] में [illegible] दिया। बगदाद के विध्वस में [illegible] था। [illegible] मरागा मे अपनी समकालीन [illegible]

अरबी में है। परन्तु अपनी प्रसिद्ध कृति "अखलाक-ए-नासिर" उसने फारसी मे लिखी। हुलागू के लिए उसने "जीजी ईलखानी" (ज्योतिष की पट्टिकाएँ) मरागा में लिखी। "मियारूल अशआर" (काव्य का पारस) भी उसी की रचना मानी जाती है। नसीरुद्दीन ने अपनी कौम के साथ स्वार्थ के लिए दगा किया। अलमूत मे अपने हशीशी स्वामी को तो उसने पकडवा ही दिया, खलीफा भी उसी की वचकता से मगोलो की नृशसता का शिकार हुआ। अखलाक-ए-नसिरी इस्लाम-साहित्य मे आचार के क्षेत्र में सुन्दरतम ग्रन्थ है। ग्रन्थ की शैली दुरूह है। यह तीन भागो में विभक्त है। इसका अन्तिम भाग राजनीति पर है।

कुतुबुद्दीन (१३१०) नसीरुद्दीन का शिष्य था, शीराज के वैद्यकुल में जन्मा था। वह भी मगोलो के ही दरबारो में रहा और अपने गुरु की ही भाँति उसने भी दर्शन, चिकित्सा और ज्योतिष पर अरबी मे अनेक ग्रन्थ लिखे। परन्तु उसका यश विज्ञानो के एक विश्वकोष पर अवलम्बित है। हुलागू ने नासिरुद्दीन के साथ ही शामपुर से इतिहासकार अतामलिक (१२८३) को भी अपने साथ ले लिया था। वह हुलागू का सेक्रेटरी बन गया और उसकी कृपा से फिर बगदाद का गवर्नर हुआ। अपने "तारीख-ए-जहागुशा" (दिग्विजयी का इतिहास) मे उसने प्राचीन मगोल इतिहास, चिंगेज और हुलागू की विजयो और शासन का इस्माइलियो की बरबादी तक इतिहास लिखा है जो तत्कालीन घटनाओ का समसामयिक होने से विशेष महत्त्व का है। अतामलिक ने राजनीति मे अपना दबदबा बना लिया था और बगदाद की राजनीतिक बागडोर उसी के हाथ मे थी।

हुलागू के बाद सालो साहित्यिक क्षेत्र अनुर्वर रहा परन्तु उसके प्रपौत्र गाजान खा के वजीर रशीदुद्दीन फजलुल्ला ने जो असामान्य राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था, "जामिउल तवारीख" लिखकर उस दिशा मे कुछ प्रयत्न किये। यह ससार का इतिहास दो भागो में विभक्त है। पहले भाग में तुर्को और मगोलो का इतिहास है, दूसरे मे सृष्टि के आरम्भ से गजानखा के भाई उल्जैतू खा के शासन के पहले वर्ष की घटनाओ तक। साथ ही इसमें खलीफो, सल्जको, गजनवियो, ख्वारिज्मशाहो और इस्माइलियो के भी वृत्तान्त है, फिर चीनियो, इस्रायलियो, फ्रैंको और हिन्दुस्तानियो के भी। अपनी भूमिका में ही इतिहासकार स्पष्ट लिख देता है कि उसके इतिहास उसकी दृष्टिकोण से नही देश विशेष के दृष्टिकोण से लिखा गया है जिससे वह दोषी न ठहराया जाय। यह इतिहास १३०५ में समाप्त होता है यद्यपि ग्रन्थकार १३१८ तक जीवित रहा। उस वर्ष उसके स्वामी उल्जैतू खा का पुत्र अबू सैद गद्दी पर बैठा और उसने रशीदुद्दीन को अपने पिता का हत्यारा घोषित कर उसे बर्खास्त कर दिया और उसकी जायदाद जब्त कर उसे मरवा डाला। रशीदुद्दीन के इतिहास का एक संक्षिप्त रूप फक्री बनाकिती ने "तारीखे बनाकिती" नाम से लिखा जिसमें घटनाएँ अबूसैद के शासनकाल तक की शामिल करली गई थीं। फक्री शायर भी था पर उसका पद्य उपलब्ध नहीं है। उसी काल वस्साफ ने "तारीखे वस्साफ'

लिखा। उसमे मगोलो का इतिहास है पर भाषा इसकी प्रशस्तिवाचक और शब्द बहुल है, जिससे इतिहास का विषय गौण हो गया है। ग्रन्थ का दूसरा नाम "तज्जियतुल अम्सार" है। रशीदुद्दीन की प्रेरणा से ही अपना इतिहास 'तारीख-ए-गुजीद" लिखकर हमदुल्लाह मुस्तोफी ने उसे रशीदुद्दीन के बेटे गियासुद्दीन को समर्पित किया। उसमें सृष्टि से लेकर १३३० ई० तक के ईरानी राजकुलो, इस्लाम, उसके प्रचारको आदि का इतिहास है। जफरनामा में उसने "शाह-नामा" के ही अनुकरण मे तुकान्त पद्य में मुहम्मद से अपने काल तक की घटनाएँ लिखी। हम-दुल्लाह का "नुज्हातुल कुलाब" (हृदयो का आनन्द) विश्व के निर्माण और फारस तथा पडोसी देशो के भूगोल पर समसामयिक परपरा के अनुसार प्रकाश डालता है। "शाहनामा" का एक और अनुकरण चिगेज खा और उसके उत्तराधिकारियो के इतिहास पर "शाहन्शाहनाम" नाम से अहमद तब्रीजी ने प्रस्तुत किया। इस प्रकार के छन्दबद्ध अनुकरणो मे यह कृति काफी सुन्दर है। फारसी कृतियो का हिन्दुस्तानी मुसलमान कवियो पर भी प्रभाव पडा। अमीर खुसरो ने निजामी की प्रेरणा से निजामी की ही भाँति सुन्दर रोमाटिक कविताओ का "खम्स" लिखा। वह वीर काव्य और लिरिक का समर्थ कवि था। वह भारत मे ही जन्मा और मरा (१३२५ई०) था। उसने हिन्दी में भी रचनाएँ की और खड़ी बोली के प्रारम्भिक कवियो मे से है। निजामी का अनुकरण करने वालो मे सबसे सफल किरमान का ख्वाजू (१२८१-१३५२) हुआ उसका खम्स निजामी की असामान्य अनुकृति है। उसमें कुछ प्रेम-कहानियाँ भी छन्दबद्ध की हैं, जैसे "हुमै और हुमायूँ" "गुल और नौरोज" "रोजतुल अनवार"। अपने आकाओ के प्रसादन मे उसने कुछ प्रशस्तियाँ और कशीदे भी लिखे। उसके दीवान मे अनेक अच्छी कविताओ का संग्रह है।

तैमूर लग के शीघ्र पहले के दो सूफी कवि ईराकी (मृत्यु ल० १२८८) और महमूद (मृ० १३२०) हैं। पहले ने "लमआत" लिखा, दूसरे ने "गुलशने राज"। इसमें रहस्यवादी प्रेम की मजिलो का वर्णन है। डेढ सौ वर्षों बाद इस पर प्रसिद्ध फारसी कवि ने एक भाष्य लिखा। इसके कवि ने सुन्दर गजल और दूसरी कविताएँ भी की जो उसके दीवान मे सग्रहीत हुईं। ईराकी अपने रहस्यवादी प्रणय में काफी शृगारिक हो गया है। सूफी कवियो की यह प्रणय-लिप्सा भारत के कृष्णभक्त सूर, बेनीमाधव आदि कवियो में भी जगी। ईराकी ने भारत, एशिया माइनर, सीरिया, मिस्र आदि भी भ्रमण किया था। सूफियो मे सिद्धात परिचायक ग्रन्थ के रूप मे "गुलशने राज" का बडा मान है। यह मस्नवी शैली में प्रश्नोत्तरी है। एक रहस्यवादी काव्य "जामेजम" "सनाई के" "हदीकतुल हकीक" के अनुकरण मे मराग के ओहदी (मृ० १३३७) द्वारा लिखा गया। इसके बाद ईराक में जलाइर और शीराज मे मुजफ्फरी राजकुलो का दबदबा हुआ जिन्होंने फारसी के तीन महान् कवियो को सरक्षण दिया।

जलाइर खानदान की नीव डालने वाले शेख हसनी बुजुग के पुत्र शेख उबेस ने उबदी जाकानी (मृ० १३७०–१) को आश्रय दिया। जाकानी व्यग्य पद्य रचना में सूजनी का उत्तराधिकारी था। उसने अपने "अखलाकुल अशराफ" मे "अखलाके नासिरी" के से नीति काव्यो की पैरीडी की। "तारीफात" मे उसने समसामयिक आचार-विचार धर्मादि का खूब मजाक उडाया। उसके "रिसाल-ए-रीश" मे दाढी आदि के प्रसगो पर व्यग्यात्मक रचनाएँ है। उसका "हजलियात", अरवी-फारसी मे गद्य-पद्य दोनो में लिखा, अश्लील विनोद का प्रतीक है। वह सर्वथा मौलिक है। और जहाँ उसे विपय के लिए प्राचीनो से लेना पडता है, वहाँ भी वह विषय का नितान्त मौलिक रूप मे निर्वाह करता है। उसका "मूश उगुर्बा" इसी प्रकार का चूहे और बिल्ली की कहानी पर अवलम्वित व्यग्यात्मक विनोद है।

जिस मात्रा मे उवैद को व्यग्यात्मक साहित्य मे ख्याति मिली, उसी मात्रा मे प्रशस्ति के क्षेत्र में साव के सलमान (मृ० १३७६-७७) को मिली। वह पिता-पुत्र दोनो शेखो का दरवारी कवि था। उसने उवैद के लिए फिराकनामा लिखा और अपना "जय-शीद-खुर्शीद" नामक मस्नवी भी उसी को समर्पित किया। कशीदे लिखने मे वह वडा कुशल था परन्तु इनकी शैली मे वडी कृत्रिमता थी। फिर भी उसकी कविता मे माधुर्य और प्रवाह है।

हाफिज फारसी का सवसे महान् कवि था। उसका पूरा नाम था मुहम्मद शम्सु-द्दीन हाफिज। कुछ काल उसका सरक्षक राजकुल का शाहशुजा था। उसके जीवन सम्वन्धी घटनाएँ वहुत कम जानी हुई है। उसके "हाफिज" नाम से ज्ञात होता है कि कुरान का वह पण्डित था जो उसकी कृतियो से भी प्रमाणित है। जीवन का अधिकतर काल उसने अपनी जन्मभूमि शीराज मे ही विताया और अपने खुतवे के अनुसार वह १३८९ या १३९० मे मरा। उसकी मृत्यु के दो वर्प पहले तैमूर ने शीराज जीता और तभी, किम्वदन्ती है, वह उस विख्यात कवि से मिला भी। सूफ की गहराई, जवान के वहार, कल्पना की सुघ-राई और ध्वनि के माधुर्य मे हाफिज सर्वथा वेजोड है। उसने कशीदे और रुवैयात दोनो लिखे। पर रुवैयात लिखने मे तो उसे कमाल हासिल है। उसकी रचनाओ के विपय पुराने ही है—शराव, प्रेम, प्राकृतिक सौन्दर्य—परन्तु उनका रूपायन, वर्णाङ्कन, ताजगी सर्वथा नई है। प्रेम का आधार सुन्दर तरुण युवा है। उसने प्रशस्तिवाचन या समसामयिक को त्याग दिया है। हाफिज महान सूफी कवि-शृखला की अन्तिम कडी है। उसकी नितान्त भावुक और शृगारिक कविताओ मे भी लोगो ने रहस्य का ही स्वाद पाया है और फलत. उसे "लिसानुल गैव" (प्रच्छन्न की जिह्वा) की उपाधि दी है। उमर खैयाम की ही भाँति हाफिज ने भी अपनी प्रणय-कल्पनाओ और परिस्थितियो का अकन सूफी उपमाओ से ही किया है। उसकी मृत्यु के वाद उसकी कविताओ का सग्रह उसके मित्र मुहम्मद गुल्न्दाम

ने किया और तत्काल उसकी कविताओ का फारसी साहित्य पर साका चल गया। इनमे दो तो "साकीनाम" नाम के मस्नवी है, बाकी लघु कविताएँ है।

इसके बाद तैमूरिया जमाना आया, जब लोगो ने अधिकतर इतिहास ही लिखे यद्यपि काफी घटिया। तैमूर और उसके बेटे शाहरूख के दरबारी कवि हाफिजी अब्रू ने "जुब्दतुल तवारीख" नामक एक विश्व-इतिहास और फारस का एक भूगोल लिखा, इनमे से आज कोई समूचा उपलब्ध नही है। उस काल के अन्य इतिहासकार निजामि शामी और शर्फ़ुद्दीन अली यज्दी थे। दोनो ने "जफरनामा" लिखा। शर्फ़ुद्दीन ने शामी का प्रचुर अनुकरण किया। कवि की मेधा मे समरकन्द का अब्दुल रज़्ज़ाक (मृ० १४८२) और हैरात का मीरख्वाद (मृ० १४९८) इनसे कही ऊँचे थे। रज्ज़ाक का "मतलउल सादैन" (दो मगलग्रहो का उदय) हाफिजी अब्रू के "जुब्दातुल तवारीख" पर आधारित है। इसमे हूलागू के प्रपौत्र अबू सैद से लेकर तैमूर के उत्तराधिकारियो का १४७० ई० तक का इतिहास दिया हुआ है। मीरख्वाद का "राजतुल सफा" विश्व का इतिहास है। अपनी बोझिल शैली के बावजूद भी यह ग्रन्थ फारसी साहित्य मे अत्यधिक उद्धृत हुआ है। तैमूरिया काल के भी अपने रहस्यवादी कवि थे यद्यपि जामी को छोडकर उनमे कोई अव्वल दर्जे का कवि नही था। खुजाँद के कमाल (मृ० १४००) और तब्रीज़ के मुल्ला मुहम्मद शिरी मगरिबी (मृ० १४०६ या ७) लिरिक कविता मे हाफिज के अनुयायी थे। कातिबी तैमूर और शाहरूख के शासन-काल में प्रशस्तिकार के रूप में हरात मे रहा था। उसे ख्याति शीरवा और अस्तराबाद के दरबारो मे मिली। उसने वहाँ कशीदो के अलावा मस्नवी भी लिखे जो निजामी परपरा के खम्स के अपूर्ण भाग थे। उसकी मृत्यु १४३४ और १४३६ के बीच कभी हुई।

हेरात के दरबार मे कातिबी के साथ ही एक और कवि था, मुईनुद्दीन कासिमी अनवार जो शायद १४३४ में मरा। कासिम शिया सन्त भी माना जाता है। उसने अपने ग्रन्थ "अनीसुल आरिफीन" मे अनेक सूफी लाक्षणिक शब्दो का प्रयोग किया है जिससे कुछ लोगो ने उसे भी सूफी माना है। उसे अपने शत्रुओ के कारण हेरात छोडकर खुरासान भागना पडा। ऊपर लिखे मस्नवी के अतिरिक्त उसका एक दीवान भी उपलब्ध है जिसमें अनेक धार्मिक कविताएँ सग्रहीत है।

उबैद-ए-जाकानी की परपरा के दो पैरोडीकार अबू इसहाक (बूशाक) और महमूद कारी थे। इनमें से पहला भोजन का कवि और उसका अनुयायी दूसरा "कपडे का कवि" कहा गया है। पहले ने अपने रुबाइयो के सग्रह "कजुल इश्तिहा" मे भूख की निधि में स्वाद और भोजन के गुण गाए हैं। "दीवाने अल्बिस" का रचयिता "कारी" इस काल के प्राय डेढ सौ वर्ष बाद हुआ परन्तु अपनी शैली और प्रतिपाद्य विषय के चुनाव में वह इसहाक का ऋणी है। दोनो पुरमजाक कविताएँ लिखने में सिद्ध-हस्त है।

अन्तिम तैमूरिया सुल्तान हुसेन का मत्री मीर अलीशीर नवाई विद्वानो का बडा आदर करता था। उसने अपने दरबार मे दूर-दूर से साहित्यकार बुला रखे थे। इन्ही मे से एक दौलतशाह ने कवियो का जीवन चरित "तजिकरातुल शुअरा" लिखा। सुल्तान हुसेन ने स्वय "मजालिसुल उश्शाक" नामक प्रशस्तिपरक ग्रन्थ लिखा। उसका मत्री मीर अली शीर भी कवि था और उसने तुर्की जवान की चगतई वोली और फारसी दोनो मे कविता की। उसके "मजालिसुल नफाएस" में समकालीन कवियो के चरित गाए गए है। इसका तुर्की से फारसी मे "लताएफनाम" नाम से अनुवाद हुआ। "अनवारे सुहेली" का प्रसिद्ध रचयिता हुसेन वाइजी काशिफी भी इसी काल हुआ जिसने पचतत्र की कहानियो के अरबी अनुवाद "कलील व दिमन" (करकट-दमनक) का फारसी अनुवाद "अनवारे सुहेली" नाम से प्रस्तुत किया। "अहलाक-ए-मुहसिनी" उसकी मौलिक रचना है जो मुहम्मद इब्न असद दूवानी (मृत्यु १५०६) के "अखलाक-ए-जलाली" की शैली में लिखी गई। दवानी ने अपनी कृति में नसीरुद्दीन तूसी के "अखलाक-ए-नासिरी" का अनुकरण किया था।

मीर अली शीर के कवियो में प्रधान, वस्तुत समूचे तैमूरी-काल का प्रधान कवि मुल्ला नूरुद्दीन अब्दुल रहमान जामी १४१४ मे खुरासान के जामी नामक गाँव मे जन्मा था। उसका तखल्लुस "जामी" फारसी साहित्य के प्रसिद्ध नामो मे है। ईरानियो के प्रधान सात कवियो मे वह गिना जाता है। ईरानियो के दानिश मे फिरदौसी वीरकाव्य मे वेजोड है, निजामी रोमास मे, रूमी रहस्यवादी काव्याकन मे, सादी नीति-आचार के प्रसगो मे, हाफिज "लिरिक" मे, पर जामी की महारत इन सारी विशेषताओ मे एक सी है। पिछले खेवे के फारसी कवियो मे जामी प्रमुख माना जाता है। उसकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। उसका गद्य उतना ही प्रभावशाली है जितना अभिराम उसका पद्य है। लिरिक कविता के उसके तीन-तीन "दीवान" है। उसकी सात मस्नवी कविताओ का सग्रह (खम्स) अरवी में "सव" और फारसी मे "हफ्त औरग" कहलाता है। इन पर निजामी की स्पष्ट छाप है यद्यपि इनमे से अनेक कविताएँ नैतिक, काल्पनिक, रूमानी आधार पर मौलिक और अभिराम चित्र उपस्थित करती है। उसकी भाषा और वर्णन की ताजगी सम्मोहक है। उसके मस्नवी सग्रह की कहानी "यूसुफ व जुलेखा" अभिराम है।

जामी की गद्य कृतियो मे एक "अशीअतुल लमाआत" ईराकी की "लैमाआत" नामक रचना का भाष्य है। उसकी प्रधान कृति सूफी सन्तो के चरित पर लिखा एक कोष "नफहातुल उन्स" है। उसके "लवाइह" मे भी सूफी सिद्धातो का उल्लेख है। "वहारिस्तान" उसकी गद्य रचनाओ मे सवमे अधिक लोकप्रिय है। यह सादी के "गुलिस्ता" मे प्रभावित है परन्तु उस अमर कृति की सादगी इसमे नही। तैमूरी काल की शैली अधिकतर शब्दा-डम्बर से वोझिल है, अलकरण से भरी। जामी स्वय उसी परपरा का कवि है। यद्यपि

उसकी शैली मे निखार प्रचुर है।

तैमूर की मृत्यु के बाद दक्षिण-पश्चिमी ईरान उसके वशधरो के हाथ से निकलकर उन तुर्क सरदारो में बँट गया जिनमें शक्ति के लिए निरन्तर कशमकश चलती रही। तैमूरवशीय हेरात का अतिम सुल्तान हुसेन था जिसके बाद ईरान के उस भाग में भी अराजकता फैल गई। उस अराजकता का अन्त शियो के सातवे इमाम के वशधर इस्माइल ने किया। इस्माइल ईरानी था और उसने ईरानी इतिहास मे सफवी राजकुल की नीव डाली।

: ४

आधुनिक ईरान

पहली बार ईरान वैधानिक तौर से शिया हुकूमत मे आया। इसका प्रभूत राजनीतिक महत्त्व तो है ही, साहित्य पर भी इसका बडा दूरगामी प्रभाव पडा। एक राष्ट्रीय चेतना का इस राजकुल के साथ आरम्भ होता है।

धीरे-धीरे ईरान का सम्बन्ध भारत और यूरोप के देशो से बढा। इन सम्पर्कों का प्रतिबिम्ब उन्नीसवी सदी के साहित्य पर पडा। इससे पहले का साहित्य अधिकतर प्राचीन फारसी साहित्यकारो का अनुकरण है। पिछले साहित्य के निर्माण मे जामीके प्रभाव और प्रेरणा का भी अपना स्थान है।

मीर अली शीर के प्राय सौ वर्ष बाद सफवी शाह अब्बास महान् ने भी अपने दरबार मे उस काल की सारी प्रतिभाओ को एकत्र किया। भारत मे तैमूर और चिंगेज के वशधर मुगल बाबर ने मगोल-प्रभुता का विस्तार किया और साहित्य का ईरान से भी अधिक वहाँ पोषण हुआ। स्वय बाबर ने तुर्की में अपने अनूठे सस्मरण लिखे जिनमें अमानवीय कर्मठता के साथ साहित्य के मलयानिल का मृदु स्पर्श है। उसके चचेरे भाई मिर्जा हैदर दुगलात ने मध्यएशिया के मगोलो का इतिहास अपने "तारीख-ए-रशीदी" में प्रस्तुत किया।

फारस मे भी जामी के बाद सुल्तानो की उदासीनता के बावजूद भी काव्य मर न सका। जामी के भतीजे स्वय हातिफी (मृ १५२१) ने "लैला व मजनू" "खुसरो व शीरी" आदि लिख कर रोमांटिक क्षेत्र मे बडा नाम कमाया। वीर काव्य के रूप में अपने "तिमूरनाम" में जो उसने तैमूर का जीवन प्रतिबिंबित किया वह फिरदौसी के अनुयायी कवियो के नि शक्त कृतित्व के बहुत ऊपर उठ गया। हातिफी आर्थिक सघर्ष का शिकार था। उसने लिखा भी है कि यदि वह आर्थिक परेशानियो से मुक्त हो जाता तो कला के क्षेत्र में अधिक लगन मे काम कर सकता। कला और साहित्य के क्षेत्र में सघर्ष करने वालो मे

हातिफी निस्सन्देह प्रथम नही और न अन्तिम ही था। उस क्षेत्र के साधको को प्राय जो सघर्ष करना पडा हैं वह भारत में अनजाना नही। सरस्वती और लक्ष्मी की विषमता के सम्बन्ध मे यहाँ अनेक कहावते ही बन गयी है।

हातिफी का एक समकालीन फिगानी था। वह जामी की ही भाँति सुल्तान हुस्सैन का दरबारी था, परन्तु इर्ष्यालु शत्रुओ के कारण उसे हेरात से भागकर तब्रीज के आक कुयुन्लु के दरबार में शरण लेनी पडी। वहाँ उसकी काफी इज्जत हुई। वहाँ उसे बाबा-ए-शुअरा (कवियो का पिता) का खिताब मिला। फिगानी ने काव्य के पुराने अलकरणो को छोड सर्वथा नयी और मौलिक उपमाओ का व्यवहार किया। काव्याकन मे वह इतना प्रवीण था कि उसे लोग "लघु हाफिज" कहा करते थे। वह १५१६ और १५१९ के बीच कभी मरा।

जामी का शिष्य आसफी भी अपने गुरु की ही भाँति मीर अली शीर का दरबारी था। उसका समकालीन शीराज का अहली (१५३३) निष्णात विद्वान् तो था ही कशीदा लिखने में भी वह असाधारण था। अपने अधिकतर कशीदे उसने शाह इस्माइल पर लिखे। "सिह्-ए-हलाल" में उसने फारसी-काव्य के क्षेत्र में टेकनीक को विशेष महत्त्व दिया। वह वस्तुत परपरागत था। परन्तु निश्चय है कि यह काव्य का गुण नही, उसका चित्राकन है, कलम की कलाबाजी दिखाते हुए उसने 'शमा व परवाना' लिखकर रहस्यवाद की दिशा मे भी कदम उठाया। अस्त्राबाद का हिलाली उसी काल का सूफी कवि था जिसे हेरात के उजबक विजेता ने प्राणदण्ड दे दिया। उसकी विविध कविताएँ उसके "दीवान" मे सगृहीत हुई। "शाह व गदा" नाम का एक मस्नवी भी उसने लिखा और उसके रूपक "सिफातुल आशिकीन" ने विश्व भ्रातृत्व के राग गाये। अहली के "शाह व गदा" पर शाहरुख के दरबारी कवि आरिफी (मृत्यु १४४९) की रहस्यवादी कविता "गूय व चौगान" का स्पष्ट प्रभाव पडा।

शाह इस्माइल के पुत्र साम मिर्जा ने भी "तुहफा-ए-सामी"-लिख कर दौलतशाह के कवियो के जीवन सम्बन्धी घटना-लेखन को आगे बढाया। शाह तहमास्प का प्रधान कवि हैराती १५५४ मे मरा और कासिमी ने "शाहनाम" लिख कर शाह इस्माइल और उसके उत्तराधिकारी का यश काव्यबद्ध किया। इस काल के कवियो में प्रधान मुहतशाम काशी था जो १५८८ मे मरा और हुसेन की शहादत पर उसकी प्रशस्ति फारसी साहित्य मे मरसिया के रूप मे अपना सानी नही रखती।

१५८७ ईस्वी में शाह अब्बास महान् ने ईरान के सिंहासन पर आरूढ होकर ईरानी इतिहास मे एक नये अध्याय का आरम्भ किया, यूरोप से सम्पर्क के रूप मे उसके दरबार में यूरोपीय राज्यो के अनेक दूत आये और एक अंग्रेज सर एन्थॅनी शरले उसके मन्त्रियों में से था। साहित्य की दिशा मे भी उसने प्रभूत उत्साह दिखाया और उसका दरबार इस्फहान

में साहित्यिको का अखाडा वन गया। इन्ही मे वह तेहरान का शानी (मृत्यु १६१४) था जिसकी कृतियो का पुरस्कार शाह ने उसे तौलकर सोने से दिया । अव्वास का दूसरा प्रशस्तिकार कवि हेरात का फसीही (१६३९) था जो पहले खुरासान के गवर्नर का दरवारी रह चुका था। मिर्जा जलालअसीर भी जो दरबार का प्रधान पियक्कड और शाह का विशेप विश्वासभाजन था, कवि था। अव्वास का चिकित्सक शिफाई (मृ १६२८) व्यग्यकार था और उसने कुछ मस्नवी और मौलिक रचनाएँ की। उसकी जानी हुई रचनाएँ "मिहओ मुहव्वत", "नमकदान-ए-हकीकत," "किस्सए इराकैन" और "दीद-ए-विदार" हैं। इनमे पहली रचना भगवान की सर्वज्ञता तथा सर्व-शक्तिमत्ता के विपय में है।

शाह अव्वास के दरबारी साहित्यकारो मे एक और जुलाली (मृ० १६१५-१६) भी था जिसने कुछ मस्नवी लिखे। उसकी सात कविताओ के सग्रह मे "महम्द व अयाज़" की प्रसिद्ध कहानी है। यह सग्रह "सव तैयार" (सात ग्रह) के नाम से प्रसिद्ध है। इसी सग्रह मे "शेबा की मलका" और "हसन" की भी कहानियाँ है। "महमूद व अयाज" की कविता अभिराम है। जुलाली ख्वान्सार का रहने वाला था। प्रगट है कि अव्वास का दरवार शियाओ का अखाडा था। प्रसिद्ध बहाउद्दीन आ मुली (मृ०१६२१) को अव्वास की सरक्षा प्राप्त थी। वहाउद्दीन शिया कानून का अधिकारी विद्वान माना जाता है। उस विपय पर उसने "जाम-ए-अव्वासी" नामक प्रसिद्ध ग्रथ लिखा। उसने दरबार के प्रभावशाली जीवन को छोड तप का जीवन अपनाया और अपने इस नये जीवन की प्रशसा मे "नान व हलवा" नामक कविता लिखी। अव्वास १६२९ मे मरा। उसके जीवन और कार्यों पर सब्जवार के कमाली ने अपना "शाहनाम" लिखा। उसी विषय पर गद्य में इस्कन्दर वेग मुन्शी ने अपना वृहत् इतिहास "तारीख-ए-जहाँनाराए-अब्बासी" लिखा।

भारत मे उन दिनो साहित्य-निर्माण मे जो प्रगति हो रही थी उसकी ओर सकेत किया जा चुका है। वहाँ जिन ईरानी लेखको ने साहित्य-रचना की उनमें इतिहासकार ख्वान्दमीर भी था। वह "रौजातुल सफा" के लेखक मीरख्वान्द का पोता था और हेरात मे जन्मा था। वावर का निमत्रण पाकर वह हिन्दुस्तान गया और वहाँ उसने अपने वृहत ग्रथ "हबीबुल सियर" की रचना की। यह ग्रन्थ आदि काल से लेकर शाह इस्माइल सफवी की मृत्यु (१९२४) तक का इतिहास हैं। इसमें भूगोल पर भी एक परिशिष्ट जुडा हुआ है। इसे उसने शरफुद्दीन के "जफरनाम" का सक्षिप्त सस्करण कहा है। उसके अन्य ग्रन्थ "खुला-सतुल-अखबार" "दस्तूरुल वुजरा" और "हुमायूँनाम" हैं जिनमें अलकृत शैली का व्यवहार हुआ है। अकबर के जमाने में "तारीख-ए-अलफी" नामक एक ऐतिहासिक ग्रन्थ की रचना का आरम्भ हुआ जिसमे मुहम्मद के वाद की घटनाओ का उल्लेख था।

अकवर केवल राजनीति का ही निर्माता न था साहित्य के क्षेत्र को भी उसने वडा

प्रोत्साहन मिला। बुखारा का लिरिककार मुश्फिकी (मृ० १५८६) को उस सम्राट से वडी मदद मिली। दरबार के प्रधान कवि शीराज के उर्फी (मृ० १५९५) थे। फैजी की "नल दमन" नाम की एक रचना थी जिसमे नल-दमयन्ती की प्रसिद्ध कहानी छद-वद्ध हुई। तेहरान के जुहरी (मृ० १६१६) ने भी इसी काल अपना "साकीनाम" लिखा जो हाफिज का इसी नाम की एक कृति का मस्नवी अनुकरण है। अब्बास महान् की मृत्यु के वाद भी साहित्य मे निर्माण-कार्य होता रहा। उस काल के इस्पहान का कवि साइव तो जामी के बाद के कवियो मे प्रमुख माना जाता है। उसने कुछ समय शाहजहाँ के दरवार में भी बिताया था। फिर जव वह स्वदेश लौटा तो शाह अब्बास द्वितीय (१६४२-६७) ने उसे "मलिकुल शुअरा" का खिताव देकर अपना राजकवि बना लिया। उसने काव्य के रूपायन मे, उसके रूप और शैली मे, नए प्रयोग किए जो अगली सदियो के लिए प्रतीक वन गए। उसका "दीवान" अभिराम-कविताओ और रुवाइयो से भरा है। साइव १६७७ में मरा।

फय्याज उसका समकालीन था और इमामो की प्रशस्ति मे उसने सुदर राष्ट्रीय 'कशीदे' लिखे। हसन और हुसेन पर उसके मरसिये तो वहुत ही करुण हैं। उसने शिया सप्रदाय के सिद्धातो पर अरवी मे भी एक ग्रथ लिखा और मूर रहस्यवादी इब्नुल अरवी के "फुसूसुल हिकम" पर फारसी में एक भाष्य लिखा। अब्वास द्वितीय का वजीर ताहिर वहीद पत्र-लेखन की साहित्यिक कला मे निपुण था। उसने "तारीख-ए-शाह अब्वासे शानी" लिखकर इतिहास के क्षेत्र में नाम कमाया। सफवी शासन के अन्त मे इस्पहान का कवि मीर अब्दुल अल नजात (मृ० १७१४) हुआ जिसके "दीवान" की उसके सममामयिको मे ही खासी चर्चा हुई। उसकी शैली को भद्दा कहा गया। उसने पहलवानी पर "गुल-ए-कुश्ती" नाम का एक मस्नवी लिखा जो लोकप्रिय हुआ और जिस पर अनेक टीकाएँ लिखी गयी। कुश्ती सम्वन्धी कृति होने पर भी यह रचना अधिकतर श्रृंगारिक है।

सफवी काल के वाद यूरोपीय प्रभाव साहित्य के क्षेत्र मे दृष्टिगोचर होने लगे फिर भी अनेक कवि पुरानी शैली मे ही लिखते रहे। उन्हीं मे इस्पहान का शेख अली हजी भी था। जिसे राजनीतिक षडयन्त्र के कारण हिन्दुस्तान भागना पडा। उसने वहुत लिखा और अपने समसामयिक तथा अन्य कवियो पर उसने ग्रन्थ लिखे। उसका "तज्किरातुल मुआसिरी" पुराने विद्वानो और कवियो का वर्णन करता है और अपने आत्मचरित "तज्किरातुल अह्वाल" मे अपने समकालीनो का। इन्ही मे ईरानी शाहो के हिन्दुस्तान से सम्वन्ध का भी वर्णन है। उसने सात मस्नवी लिखे और चार दीवान। अली हजी १७६६ ईस्वी में वनारस मे मरा। "आतशकदा" का इस्पहानी कवि लुत्फ अली आजुर, हजी से कहीं समर्थ कवि था और कुछ काल वह अफशारिदशाह (१७३६-९६) के दरवार मे रहा। वाद मे वह दरवेश हो गया। ऊपर लिखा उसका चरितकोष १७६०-७३ में लिखा

गया जिसमे ८०० से अधिक कवियो का उल्लेख है। उसके दीवान मे विविध कविताएँ सग्रहीत हुई और मस्नवी में "यूसुफ और जुलेखा" की रोमाचक कहानी उसने प्रस्तुत की। यज्द का फौकी उसका समकालीन था और उसने भी प्रेम, शराब आदि पर कविताएँ और प्रशस्तिवाचक कशीदे लिखे परन्तु अली आजुर के काव्यस्तर को वह न छू सका। उसके वर्णन नितान्त यौन है।

१९ वी सदी मे (१७९७-१८३६) फतह अलीशाह ने भी गजनी के महमूद की भाँति अपने दरबार मे अनेक साहित्यकार एकत्र किये। वह स्वय पद्यकार था। और उसके राजकवि फतह अली खा सबा ने एक "दीवान" और एक "शाहशाहनाम" लिखा परन्तु काव्य रचना मे वस्तुत शाह का परराष्ट्र सचिव अब्दुल वहाबू नशात उससे बाजी ले गया। उसने अपने "दीवान" के अतिरिक्त अपने आका और उसके राजकवि की कविताओ की भूमिका तुकान्त छदो मे लिखी। वही जमाना था जब फारस में अधिकारो के लिए इग्लैंड, फ्रास और रूस मे कशमकश हो रही थी। फतह अली के दरबार मे एक और कवि मिर्जा हबीबुल्ला (मृ० १८५३) था जो अपने तखल्लुस "काआनी" से अधिक प्रसिद्ध है। १९ वी सदी के फारसी-साहित्य का वह सबसे प्रतिभाशाली कवि है। उसके व्यग्यो और प्रशस्तियो मे ऊँची कविता रूपायित है। उसमें विनोद का भी पुट है यद्यपि अक्सर जीवन का निराशावाद उसकी ध्वनि बन जाता है।

मलका विक्टोरिया के जमाने मे नासिरुद्दीन शाह (१८४८-९६) ने इग्लैण्ड का भ्रमण किया। उसने यूरोप सम्बन्धी अपनी यात्राओ की अनुभूति फारसी डायरी मे सुन्दर सरल शैली मे प्रस्तुत की। उसके शासनकाल के कवियो मे रिजाकुली खा लालाबाशी (मृ० १८७९) प्रधान था। उसने लिरिक, वीर कविताएँ, और धार्मिक मस्नवी लिखे। साहित्यिक चरितो के क्षेत्र में भी उसने दो महान् ग्रन्थ रचे—"मजमाउल फुमहा" और "रियाजुल आरिफीन"। इनमे फारसी-साहित्य के आदि से लेकर ग्रन्थकार के जमाने तक के साहित्यिको का जिक्र है। वह कुछ दिनो ख्वारिज्म के दरबार में अपनी सरकार का दूत भी रहा। अपने "सिफारतनाम" में उसने अपनी खीव की यात्रा का विवरण दिया है।

यूरोप का प्रभाव रजाकुली खाँ के समकालीन शैवानी की कृतियो पर स्पष्ट है। वे १९वी सदी के यूरोपीय साहित्य का उत्कट यथार्थवाद और निराशावाद प्रतिबिम्बित करती है। इसी काल पहले-पहल नाटको का भी फारसी में प्रादुर्भाव हुआ परन्तु वे सारे के सारे तुर्की नाटको के अनुवाद थे, कॉमेडी जो कभी रगमच पर खेले न जा सके।

इनसे सर्वथा भिन्न नाटक वे "ताजिया" हैं जो प्रतिवर्ष मुहर्रम के अवसर पर हुसैन अली और हसन की मृत्यु पर प्रदर्शित होते हैं, इन नाटको मे ईरानी राष्ट्रीय चेतना ईरान

मे जगी क्योकि हुसैन और हसन ईरान के माने हुए सन्त और शहीद थे। ताजियो का उदय सर्वथा आधुनिक है जो कर्बला सम्बन्धी कुर्बानी के आधार पर उठे। ये नाटक केवल खेले जाते हैं, कभी लिखे न जा सके और इनके रचयिताओ का भी कुछ पता नही। इनका अदाज भारतीय रामलीला आदि से लगाया जा सकता है।

१९वी० सदी का सब से बडा ईरानी धार्मिक आन्दोलन "बाबीवाद" के नाम से विख्यात है। १८४४ ईस्वी मे शीराज के मिर्ज़ा अली मुहम्मद ने अपने को "महदी" एलान कर इसका प्रवर्तन किया। "बाब" वह द्वार है केवल जिससे "सत्य" का लाभ हो सकता है। अली मोहम्मद का आन्दोलन सूफी आधारो पर ही खडा हुआ, एक रहस्यवादी भ्रातृभाव उसने धारण किया और व्यावहारिक रूप से कम्यूनिस्ट प्रवृत्तियो की एक झलक उसके आन्दोलन मे मिली। स्वाभाविक ही वैधानिक इस्लाम की आवाज उसके विरुद्ध उठी। आन्दोलन के अनेक अनुयायी मार डाले गये और अनन्त यन्त्रणाओ के शिकार हुए। शीघ्र ही बाद में बाबियो में आन्तरिक झगडे खडे हो गये। नए सम्प्रदाय का प्रधान नेता बहाउल्ला हुआ और उसी के नाम पर आन्दोलन का पिछला नाम "बहाई" पडा। यद्यपि इस आदोलन का अधिकतर प्रभाव ऐतिहासिक है परन्तु साहित्य भी उससे अछूता न बचा। स्वय बाब ने अनेक ग्रन्थो की रचना की जिनमें प्रधान सिद्धान्तवादी "बया" (व्याख्या) है। उसके अनुयायियो ने भी अपने सम्प्रदाय का साहित्य प्रस्तुत किया।

वर्तमान काल का फारसी-साहित्य राजनीतिक वातावरण मे स्वाभाविक ही एक नयी दिशा में चल पडा है। अनेक कवियो ने साहित्य की शोभा बढायी है। बीसवी सदी मे मशवाद के बाहर ने अच्छी कविताएँ की और वहाँ से एक अखबार भी निकाला। आसिफ ने कुछ बडे सुन्दर राजनीतिक बैलेड लिखे हैं। आसिफ को अपने विचारो के कारण कैद की सजा तक भुगतनी पडी है। गीलान के सैयद अशरफ ने रूढिवादी मुल्लाओं के विरुद्ध काफी सुन्दर काव्य रचना की। इनके अतिरिक्त अनेक नवोदित लेखक और कवि आज के ईरान मे प्रगतिशील साहित्य का निर्माण कर रहे है। वहाँ के प्रसिद्ध "तूदे" दल ने जिस प्रहारक नीति से विदेशी शोषण का प्रतिकार किया है उसमे वहाँ के अनेक प्रतिभाशाली प्रगतिशीलो का भी योग है और प्रकट है कि जनवादी साहित्य के क्षेत्र मे ईरान उत्तरोत्तर प्रगति करता जायगा।

१७. फ़िनलैंड का साहित्य

फिनलैंड उसी भू-भाग मे स्थित है जिसमे स्कैन्डिनेविया के नार्वे और स्विडन है। यद्यपि वह स्कैन्डिनेविया का भाग नही माना जाता परन्तु कई अर्थ मे वह उन्ही देशो के समान है। उसकी आबादी में भी कम-से-कम दस प्रतिशत स्वीडी बोलने वाले है। फिनलैंड की आबादी कुल ४० लाख है। इस प्रकार वह दो भाषाओ का देश है।

फिनलैंड ६०० वर्षो तक रहा भी है स्विडन राज्य का अग जिससे उसकी सस्थाओ और सास्कृतिक अभिप्रायो का स्वीडी परपरा मे विकसित होना और उनसे प्रभावित होना स्वाभाविक ही है। स्वीडी भाषा बहुत दिनो तक वहाँ राजकीय भाषा मे स्वीकृत हुई। इसी कारण १९ वी सदी से पहले का उसका साहित्य आज के अर्थ में विशेष महत्व का नही। हाँ, लोक-साहित्य की सम्पदा उसमे काफी रही है।

१२००-१५०० के बीच का तीन-चार सौ सदियो का साहित्य लोक-साहित्य है जिसमे वीर काव्य, लिरिक आदि सभी रचे गये है। प्राय ५० हजार लोक-कविताएँ सगृहीत हो चुकी है, लगभग ३० हजार लोक कथाएँ, १० लाख कहावते और प्राय ४० हजार पहेलियाँ। लोक-साहित्य की मात्रा का इससे कुछ अन्दाज लगाया जा सकता है। उनका प्रकाशन पहली बार के मुद्रण माध्यम से १९ वी सदी मे हुआ।

स्विडन के शासन का अग होने के कारण फिनलैंड के साहित्य की अपनी स्वतन्त्र स्थिति तो हो ही नही सकती थी। इससे स्वाभाविक ही उसका विकास श्रखलित रूप से हुआ। फिन्नी साहित्य का जनक विशप माइकेल एग्रिकोला[1] कहलाता है। १६ वी सदी के मध्य उसने इजील की नई पोथी का अपनी भाषा मे अनुवाद किया। वह सुधारवादी लूथर के आन्दोलन से प्रभावित था। विशप एरिक सोरोलैनेन[2] ने बाइबिल की पुरानी पोथी का अनुवाद भी समाप्त किया। अनुवाद की भाषा फिन्नी-गद्य का सुन्दरतम रूप मानी जाती है। विशप एरिक ने अपने उपदेशो का एक बडा सग्रह भी प्रकाशित किया था।

१७ वीं और १८ वी सदियो मे फिन्नी-साहित्य की सीमाएँ कुछ फैली। भाषा मे कुछ नए अनुवाद हुए और साहित्य धर्म की सीमाओ के बाहर लौकिक विषयो की तरफ भी बढा। फिर भी फिन्नी-साहित्य की प्रगति बहुत धीमी थी। उस काल की सबसे महत्व-पूर्ण साहित्यिक कृति माथयाज सालाम्नियस[3] की कविता "मेनिआ" (१६९०) है जिसमें ईसा का चरित सहज और स्पष्ट भाषा मे अकित हुआ है।

---

१ Bishop Michael Agricola २ Bishop Eric Sorolainen (मृत्यु १६२५)

३ Mathias Salamnius

१८ वी सदी से फिनलैंड मे स्वतन्त्र सास्कृतिक जीवन का आरम्भ होता है। उसका प्रधान केन्द्र तुर्क विश्वविद्यालय बना जहाँ जर्मन और अग्रेजी रोमान्टिक प्रवृतियो का प्रवेश हुआ। हर्डर ने फिनलैंड के साहित्य को सिद्धात प्रदान किये और अग्रेजी साहित्य ने नए मॉडल। इस नए क्षेत्र का नेता प्रोफेसर पोर्थन[1] था। वह फिनलैंड का पहला इतिहासकार और भूगोलविद् था और उसी ने उस देश के अतीत के चित्र प्रस्तुत किये। उसने फिन्नी भाषा और लोक-साहित्य के क्षेत्र में भी बडा अनुसधान किया और उसके अनेक शिष्यो ने उसके बाद भी उस अनुसधान की श्रखला जारी रखी, जैकब तेगस्तोम[2] और फ्रास माइकेल फ्राजेन[3] उसके शिष्यो मे प्रधान थे। इनमे पहला इतिहासकार और रसवादी था और उसने ग्रीक तथा रोमन मॉडलो के विपरीत इब्रानी, अग्रेजी और प्राचीन स्केन्डिनेविया के लोक-साहित्य को अपना आदर्श माना। इससे एक तो १९ वी सदी को रोमान्टिक प्रवृत्तियो के देश मे विकास का लाभ हुआ और दूसरे फिन्नी सस्कृति तथा राष्ट्रीयता को शक्ति मिली।

उस काल का सबसे महत्वपूर्ण कवि पोर्थन का दूसरा शिष्य फ्रास माइकेल फ्राजेन[4] था उसने यूरोप का काफी भ्रमण किया था। उसकी कविताओ मे बडी सादगी और स्वाभाविकता है। "मानव मुख" और "बूढा सैनिक" उसकी दो प्रारम्भिक कविताएँ हैं। बाद में वह घरेलू जीवन पर कविताएँ लिखने लगा था। स्वदेश की प्रेरणा में भी उसने कुछ कविताएँ लिखी और स्वीडन मे उसकी प्रशसा काफी हुई। वहाँ की एकेडेमी का वह सदस्य चुन लिया गया था। स्वीडन में ही वह १८४७ मे मरा।

१८०९ में स्विडन से अलग होकर फिनलैड रूसी साम्राज्य का अग बन गया। तब उस देश के अनेक नेता स्विडन चले गये। १९ वी सदी के प्राय आरम्भ मे ही रोमाटिक आदोलन का फिनलैंड मे प्रवेश हो गया था। उसके प्रचारको ने भाव साम्राज्य की गाथा गायी और पुरानी रूढियो को दबाने में वे सफल हुए। उस आन्दोलन के परिणाम स्वरूप राष्ट्रीयता का जो देश मे विकास हुआ उससे साहित्य को अच्छी मात्रा मे लाभ हुआ। राष्ट्रीय भाव धारा का प्रधान समर्थक आर-विदसन[5] था जिसने अपने लेखो द्वारा राष्ट्रीय सुधारो की माँग की। उसने समकालीन रूढिवादी वृद्ध नेताओ को उनकी प्रतिगामी सक्रियता के लिए धिक्कारा। रूसी शासन के तेवर तब बदले और उसे फिनलैंड छोडकर स्वीडन भागना पडा। १८२८ में विश्वविद्यालय तुर्कु मे उठकर हेलसिंकी चला गया और हेलसिंकी मे ही तब से फिनलैंड का सास्कृतिक जीवन केन्द्रित हुआ। १८३० मे वहाँ

---

१ Professor H G Porthan (१७५९-१८०४), २ Jacob Tengstrom, ३. Frans Mikael Franzen, ४ Frans Mikael Franzen (जन्म १७७२), ५. A I Arwidsson (१७९१-१८५८)

जिस सोसाइटी की नीव पडी उसने फिनलैंड के सास्कृतिक जीवन मे वडा महत्वपूर्ण काम किया। उसकी वैठके शनिवार को होती थी, इसीलिये उसका नाम भी "शनिवार-समाज" पड गया। उस समाज के सदस्य अधिकतर तरुण थे। उस दल का प्रधान पुरुष नरवान्दर[१] था। वैज्ञानिक होने के अतिरिक्त वह कवि भी था। उसकी कविताओ मे सुन्दर-सरल भापा मे उस काल के रोमान्टिक आदर्श प्रतिबिम्बित हुए। उस दल का दूसरा महत्वपूर्ण सदस्य फ्रेडरिक किग्नियस[२] था। उसकी गद्य रचनाएँ रोमान्टिक प्रवृत्ति से भरी थी। उसने फिनलैंड के सास्कृतिक जीवन पर काफी प्रभाव डाला। वह आलोचक भी था। उस दल का सर्वोत्तम कवि जोहान लुडविग रूनेबर्ग[३] था। उससे समाज के आदर्शवाद को वडी प्रेरणा मिली। रूनेबर्ग ने अपनी कृतियो मे फिन्नी किसान का वडा हृदयग्राही चित्र खीचा। उसकी यथार्थवादी किसान सम्बन्धी कृति मे किसान की आत्मा जाग्रत हो उठी। "एल्क-शिकारी" "हन्ना" और "क्रिस्मस की सध्या" उनकी जानी हुई कृतियाँ है। पिछली रचनाओ में उसने मध्यवर्ग और अभिजातकुलीय जीवन को मूर्त किया है। "एल्क-शिकारी" राष्ट्रीय एपिक है। १८०८-९ के रूसी युद्ध मे फिनलैंड ने वडी वीरता का प्रदर्शन किया था। तत्सम्वन्धी घटनाओ का रूनेबर्ग ने अपनी सशक्त कविताओ मे वर्णन किया और यह कविताएँ न केवल उसकी ही रचनाओ मे श्रेष्ठ मानी गई वरन् फिनलैंड की राष्ट्रीय भावना का भी प्रतीक वन गई। १९वी सदी के मध्य से कुछ ही पूर्व यूरोप के साहित्य मे यथार्थ-वादी प्रवृत्ति का आरभ हुआ था। रूनेबर्ग उस यथार्थवादी प्रवृत्ति का सही प्रतिनिधि था। सशक्त प्रवृत्ति के स्पर्श से समर्थ जीवन उसके आकर्पण का केन्द्र वना और वह रोमान्टिक प्रवृत्ति के ऊपर उठ गया। वाद मे निश्चय ही रोमान्टिक प्रवृत्ति, सम्भवत और असफल प्रेम के फलस्वरूप उसकी चेतना मे लौट पडी। "नादेश्दा" और "राजा फ्यालार" रूनेबर्ग की उसी प्रवृत्ति की कविताएँ हैं। फिर भी उससे उसकी यथार्थवादी चेतना नष्ट न हो सकी।

उस काल के रोमान्टिक लिरिक कवियो मे सवसे विशिष्ट लार्स जैकव स्टेन्वैक[४] था। उसकी कविताओ मे सौन्दर्य की उपासना थी। परन्तु कुछ ही काल वाद धर्म के पचडे मे पडकर उसने साहित्य से प्राय किनारा ही कर लिया। १९वी सदी के मध्य के वाद भी फिनलैंड मे रोमान्टिक प्रवृत्ति जीवित रही परन्तु उसके रूप मे अव कुछ अन्तर पड गया था। अव वह दार्शनिक कम थी हल्की और सद्योजात अधिक। उसमे मातृभूमि की उपासना प्राय आवश्यक हो गई। जाक्रिस तोपेलियस[५] उस युग का सवसे वडा लेखक है। वह पहले कवि था, लिरिक कवि और अपनी कविताओ मे उसने स्वदेश के अभिराम प्राकृतिक दृश्यो का

१ J J Nervander (१८०५–४८), २ Fredrik Cygnaeus (१८०७–१८८१); ३ John Ludvig Runeberg (१८०४–७७), ४. Lars Jakob Stenback (१८११-७०), ५ Zachris Topelius (१८१८–९८)

गुणगान किया। बाद मे उसने स्कॉट से प्रभावित होकर राष्ट्रीय रोमान्टिक परपरा के ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। इनमे "फिनलैंड की डचेज" और "सैनिक सर्जन की कहानिया" विशिष्ट हैं। उसने ऐतिहासिक ड्रामा भी लिखे। प्रतिभाशाली कवि और नाटककार जोज़ेफ जूलियस वेकसल[१] तोपोलियस का शिष्य था। उसने अपना प्रसिद्ध और सफल नाटक "दानिएल हयोर्त" केवल २३ वर्ष की आयु मे लिखा था। परन्तु वह आज भी दर्शको को मुग्ध कर देता है।

कवि कार्ल तावास्तस्त्येना[२] ने अपनी कविताओ—"नए छन्द" (१८८३) द्वारा अतीत वाली परपरा तोड दी ये कविताएँ अपनी प्रेरणा, रूप और प्रभाव सभी में अद्यावधि कविताओ से भिन्न थी। अपने "बचपन के मित्र" मे उसने सामाजिक साहित्यकारो का उल्लेख गिया। उसने फिर तो सामाजिक प्रश्नो पर भी विचार करना शुरू किया। अपने नाटक "व्यवसाय" और उपन्यास "नारी शासन" मे उसने नारी की स्वतन्त्रता पर विचार किया। एक दूसरे उपन्यास "कठिन जमाना" में उसने किसान का जीवन व्यक्त किया। परन्तु किसान दयनीय न था, दैत्य था जो किसी का भरोसा नही करता था। बाद में वह यथार्थवादी दृष्टिकोण से भी कुछ उदासीन हो गया। और आत्मानुगत लिरिक लिखने लगा।

१९वी सदी के अन्त मे तरुण कवियो और लेखको ने फिर यथार्थवादी दृष्टिकोण त्याग कल्पना और भावो का सहारा लिया। इन तरुणो में पहला माइकेल लीवेक[3] था जिसने पहले प्रकृतिवादी उपन्यास लिखे फिर प्रतीकवादी। रूनार शिल्ट[४] मनोवैज्ञानिक उपन्यास का आचार्य था। रिचर्ड माल्मबर्ग[५] और थूरे जानसन[६] व्यग्कार थे और अर्विद मोर्ने[७] तथा अर्न्स्ट नेप[८] समर्थ लिरिककार। लिरिककवियो मे प्रधान बर्तेल ग्रिपेनबर्ग[९] था।

फिन्नी भाषा और सस्कृति का असाधारण पुजारी एलियस लौनरॉट[१०] था। उसने उस भाषा का लोकसाहित्य तो एकत्र किया ही उसे एक नई शैली भी प्रदान की। समान विषयक विभिन्न पाठको को एकत्र कर उसने उस भाषा का महदुपकार किया। वह समन्वित साहित्य राशि "कालेवाला" (१८३५) नामक सग्रह में सचित हुई। यह एक वीर काव्य है जिसमें 'कालेवा' और 'पोहयोला' नामक दो जातियो के युद्ध और सन्धि का वर्णन हुआ

---

१ Josef Julius Wecksell (१८३८–१९०७), २ Karl A Tavastst Jerna (१८६०–९८), ३ Mikael Lybeck (मृ० १९२५), ४ Runar Schildt (मृ० १९२५), ५ Richard Malmberg, ६ Thure Jansson, ७ Arvid Morne, ८ Ernst Knape, ९ Bertel Gripenberg (जन्म १८७८), १० Elias Lonnrot (१८०२–८४)

है। चरित्र प्रकृति के निकटस्थ है, सभ्यता से प्राय दूर। प्रकृति का भी उसमे प्रचुर वर्णन हुआ है। उसके शब्दचित्र अत्यन्त मार्मिक है। फिन्नी साहित्य, सगीत और चित्रकला पर 'कालेवाला' का गहरा प्रभाव पडा। लोनराट ने "कान्तेलेतार" नामक एक वृहद ग्रन्थ मे प्राचीन लोक-लिरिक, वैलेड और ख्याते एकत्र की। साथ ही उसने मुहावरो (१८४१) पहेलियो (१८४४) और मत्रो (१८८०) के भी सग्रह प्रकाशित किए। फिन्नी भाषा इन सग्रहो से समृद्ध हुई। उसे वडा वल मिला।

आधुनिक फिन्नी भाषा का पहला मौलिक कवि अलेक्सिस कीवी[1] था। उसने विश्वसाहित्य का अध्ययन काफी किया था। रोमान्टिक परपरा मे उसने कुछ बड़ी सुन्दर भावुक और ताजी कविताएँ लिखी। उसके नाटक "लिया" (१८६९) ने फिन्नी रगमच का सूत्रपात किया। उसने यथार्थवादी परपरा में भी साहित्य रचा और फिनलैंड की जनता का सच्चा चित्रण किया। उसकी कॉमेडी "मोची" (१८६४) एकाकी "मँगनी" (१८६६) और उपन्यास "सात भाई" (१८७०) फिन्नी जीवन के सुघड सचायक है। कीवी युग का सबसे विशिष्ट कवि ओक्सानेन[2] था। उस काल के कुछ अन्य कवि निम्नलिखित थे। जिन्होने अपने-अपने मौलिक तरीके से फिन्नी साहित्य का उपकार किया—

कार्लोक्रम्सू[3], जोहाना हेन्रिक्की एर्को[4], अर्वी जेनिस[5], पावो काजान्दर[6]।

मध्य १९वी सदी के वाद फिनलैंड का साहित्य खूब वढा। उसके पढने वालो की सख्या वढी और अन्य यूरोपीय साहित्यो के सीधा सम्पर्क में आ जाने के कारण 'स्थानीय' से अधिक व्यापक मानवीय प्रश्नो पर विचार होने लगा। नई प्रवृत्तियो का उसमें प्रवेश हुआ। १८८० के वाद प्रकृतिवाद का प्रचार हुआ जिससे सामाजिक समस्या विशेपत. सामाजिक वर्गों के पारस्परिक सघर्प, वर्तमान समाज में नारी के अधिकार मजूरवर्ग के अधिकार—साहित्य का आराध्य वन गई।

नई प्रवृत्ति जिसमे प्रकृतिवाद और रोमान्टिक शैली का समन्वय था—का आरम्भ एक लेखिका मिन्ना कान्थ[7] ने किया। पहले वह पुरानी परपरा में लिखती थी जिसका इष्ट रोमान्टिक शैली से देहाती जीवन को व्यक्त करना था। अब अपने "मजूर की पत्नी" (१८८५) में उसने सामाजिक असुविधाओ पर आघात किया। अपने अन्य उपन्यासो— "गरीवलोग" और "छिपी चट्टान" मे भी उसने सामाजिक विपमताओ और कुरीतियों का भण्डाफोड किया, नारी के अधिकारो की माँग की। सपत्तिहीन जनो का प्रश्न उसने

१ Alexis Kivi (१८३४–७२), २ Oksanen (१८२६–८९), ३ Kaarlo Kramsu, ४ Juhana Henrikki-Erkko, ५ Arvi Jannes, ६ Paavo Cajander, ७ Minna Canth (१८४४–९७)

गुणगान किया। बाद मे उसने स्कॉट से प्रभावित होकर राष्ट्रीय रोमान्टिक परपरा के ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। इनमे "फिनलैंड की डचेज" और "सैनिक सर्जन की कहानिया" विशिष्ट है। उसने ऐतिहासिक ड्रामा भी लिखे। प्रतिभाशाली कवि और नाटककार जोज़ेफ जूलियस वेकसल[1] तोपोलियस का शिष्य था। उसने अपना प्रसिद्ध और सफल नाटक "दानिएल हयोर्ते" केवल २३ वर्ष की आयु में लिखा था। परन्तु वह आज भी दर्शको को मुग्ध कर देता है।

कवि कार्ल तावास्तस्त्येना[2] ने अपनी कविताओ—"नए छन्द" (१८८३) द्वारा अतीत वाली परपरा तोड दी ये कविताएँ अपनी प्रेरणा, रूप और प्रभाव सभी में अद्यावधि कविताओ से भिन्न थी। अपने "बचपन के मित्र" मे उसने सामाजिक साहित्यकारो का उल्लेख गिया। उसने फिर तो सामाजिक प्रश्नो पर भी विचार करना शुरू किया। अपने नाटक "व्यवसाय" और उपन्यास "नारी शासन" मे उसने नारी की स्वतन्त्रता पर विचार किया। एक दूसरे उपन्यास "कठिन जमाना" में उसने किसान का जीवन व्यक्त किया। परन्तु किसान दयनीय न था, दैत्य था जो किसी का भरोसा नही करता था। बाद मे वह यथार्थवादी दृष्टिकोण से भी कुछ उदासीन हो गया। और आत्मानुगत लिरिक लिखने लगा।

१९वी सदी के अन्त में तरुण कवियो और लेखको ने फिर यथार्थवादी दृष्टिकोण त्याग कल्पना और भावो का सहारा लिया। इन तरुणो मे पहला माइकेल लीवेक[3] था जिसने पहले प्रकृतिवादी उपन्यास लिखे फिर प्रतीकवादी। रूनार शिल्ट[4] मनोवैज्ञानिक उपन्यास का आचार्य था। रिचर्ड मालमवर्ग[5] और थूरे जानसन[6] व्यग्कार थे और अर्विद मोर्ने[7] तथा अर्न्स्ट नेप[8] समर्थ लिरिककार। लिरिककवियो में प्रधान वर्तेल ग्रिपेनबर्ग[9] था।

फ़िन्नी भाषा और सस्कृति का असाधारण पुजारी एलियस लौनरॉट[10] था। उसने उस भाषा का लोकसाहित्य तो एकत्र किया ही उसे एक नई शैली भी प्रदान की। समान विषयक विभिन्न पाठको को एकत्र कर उसने उस भाषा का महदुपकार किया। वह समन्वित साहित्य राशि "कालेवाला" (१८३५) नामक सग्रह में सचित हुई। यह एक वीर काव्य है जिसमे 'कालेवा' और 'पोहयोला' नामक दो जातियो के युद्ध और सन्धि का वर्णन हुआ

१. Josef Julius Wecksell (१८३८–१९०७), २ Karl A Tavaststjerna (१८६०–९८), ३ Mikael Lybeck (मृ० १९२५), ४ Runar Schildt (मृ० १९२५), ५ Richard Malmberg, ६. Thure Jansson, ७ Arvid Morne, ८ Ernst Knape; ९ Bertel Gripenberg (जन्म १८७८), १० Elias Lonnrot (१८०२–८४)

क्षेत्र मे अपने साहित्य को अच्छी कृतियाँ भेट की। माइला ने सामाजिक समस्याओ पर उपन्यास और नाटक लिखकर मिन्ना कान्थ की परपरा जीवित रखी। मारिया के नाटक शैली मे सक्षिप्त हैं और देहात का जीवन प्रतिबिंबित करते हैं। आइनो ने अधिकतर अपने उपन्यासो और कहानियो के पात्र 'इस्टोनिया' के समाज से चुने।

जर्मन अभिव्यञ्जनावाद प्रेरित लौरी हार्ला[1] ने अनेक स्पष्टाकृतिक नाटक लिखे। उसका सर्वोत्कृष्ट नाटक 'जूडास' प्राय ऐतिहासिक है और अभिराम "पाप" सर्वथा यथार्थवादी। "पाप" मे उसने 'अभिव्यजनावाद' त्याग दिया है।

फ्रान्स एमिल सिलान्पा[2] आज का सुन्दरतम फिन्नी उपन्यासकार है। उसके उपन्यासो मे सामाजिक वर्गों का वर्णन है। उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति "जीवन और सूर्य" (१९१६) है। उसके "शान्त दाय" (१९१९) में फिनलैंड के गृह-युद्ध के चित्र हैं। उसकी "नौकरानी" "सिल्या" (१९३१) सरल निश्छल कुमारी के यथार्थवादी परिस्थितियो मे जीवन का वर्णन हुआ है। उसका "मानव-पथ" (१९३२) भी सुघड कृति है। सिलान्पा को १९३९ मे नोबुल पुरस्कार भी मिला था।

द्वितीय महासमर के बाद भी फिन्नी साहित्यकारो को कुण्ठा ने न घेरा। साहित्य निर्माण और प्रकाशन का कार्य होता रहा। देश मे ८० प्रकाशक थे और तीन हजार से ऊपर पुस्तकालय। १९४५ मे प्राय एक करोड पुस्तकें बिकी। भूलना न होगा कि फिनलैंड की कुल आबादी ४० लाख है जिसका १० प्रतिशत स्वीडी है। अर्थात् उस साल किताबो के बिकने का औसत १५ वर्ष से अधिक आयुवाले प्रत्येक जन पर पाँच का रहा। लिरिक कविता और उपन्यास के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई। १९४५ में सिलान्पा ने स्वय अपनी सुन्दर कृति "मानव-जीवन का सौन्दर्य और अभाग्य" लिखकर तत्कालीन जीवन का परिचय दिया। आइनो कालास, मार्या जोतुनी, और माइला तल्वियो का जिक्र ऊपर किया जा चुका है। उन्होने अपनी साहित्यिक सक्रियता जारी रखी। आइनो ने "मृत्यु का हस" और "चन्द्रकिरण" नामक सुन्दर लिरिक लिखे। मार्या ने नाटक और माइला ने "बाल्टिक सागर की कन्या" नामक उपन्यास लिखा। लाउरीहार्ला[3] अपनी मृत्यु के पूर्व ऐतिहासिक उपन्यासो की ओर झुका और वृद्ध कवि कोस्केनियेमी[4] ने लिरिको के कई सग्रह प्रकाशित किये।

कुछ और फिन्नी आधुनिक साहित्यकार काव्य के क्षेत्र में लावरी विल्यानेन,[5] कातृवाला[6] साइमा हरमाजा[7] और ऊनो काइलास[8] है। हेला वुओलियोकी[9] ने कुछ नफा

---

१ Lauri Haarla (१८९०-१९४४), २ Frans Emil Sillanpaa (जन्म १८८८); ३. Lauri Haarla, ४. V. A Koskenniemi, ५ Lauri Viljanen; ६ Katri Vala (१९०१-४४); ७ Saima Harmaja, ८ Uuno Kailas (१९०१-३३), ९ Hella Vuolijoki

अपने नाटक "अभाग्य की सन्तान" (१८८८) में लिया। उसके अन्य नाटक "सिल्वी" और "अन्नालीजा" (१८९५) था।

जोहानी आहो[१] ने भी अपने उपन्यासो—"रेलवे" "पादरी की बेटी" और "पादरी की बीबी"—द्वारा रोजमर्रा के जीवन और उसकी कुरीतियो का चित्र खीचा और नारी के अधिकारो का समर्थन किया। अन्तिम उपन्यास तो उसकी बड़ी सुन्दर कृति है। उसने कुछ अत्यन्त मार्मिक कहानियाँ भी लिखी है। उसकी शैली का फिनलैंड मे काफी अनुकरण हुआ। अर्विद जर्नेफिल्ट[२] दूसरा लेखक था जिसने वहाँ का साहित्य भरा पूरा। उस पर टाल्सटाय[३] का प्रकट प्रभाव था। वह किसान हो गया। उसमें बलिदान और शान्तिपूर्ण व्यवस्था की मात्रा काफी है। उसने अपने उपन्यास, नाटको और कहानियो द्वारा अपने विचारो का प्रचार किया। उसकी विशिष्ट कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

"पितृदेश", "मेरा परिवर्तन", "ग्रेटा और उसका भगवान्", "मनुष्य का भाग्य", और "जीवन-सागर"।

काजीमीर लेइनो[४] ने अपनी कविताओ द्वारा नए उदार विचारो का प्रकाश किया। उसके केवल तीन कविता सग्रह और एक नाटक है पर उनसे उसकी शैली का निखार प्रगट हो जाता है।

जोहानिज्ञ लिनान्कोस्की[५] अपनी कृतियो—"शाश्वत-सघर्ष" "लाल फूल का गीत" "हेइकिला के लिए सघर्ष" "भगोडे" द्वारा फिन्नी साहित्य को समृद्ध किया। इनमे से पहली दो उपन्यास हैं अन्य कहानियाँ। एइने लेइनो[६] काजीमीर का भाई और विशिष्ट कवि था। तीस वर्ष उसने काव्यरचना की और उस क्षेत्र मे सारे पूर्वगामी कविया से वह बढ गया। उसकी सुन्दरतम कविताएँ "हेल्गा सूक्त" है। अपनी प्रवन्ध कविताओ—"काल की लहरो से" में उसने जनता के प्रश्न प्रतिबिंबित किए। अपने भाई की ही भाँति वह कवि होने के अतिरिक्त आलोचक भी था। उसने अन्य भाषाओ की सुन्दर कृतियो का अपनी भाषा में अनुवाद भी किया। उस काल के कुछ और कवि, ओटो मानिनेन[७] कोस्केनिएमी[८] आदि थे।

आधुनिक फिन्नी-साहित्य के निर्माण मे अनेक नारी साहित्यकारो का खासा हाथ रहा है माइला ताल्वियो[९] मारिया जोतुनी[१०] आइनो कालास[११] ने उपन्यास और नाटक के

---

१ Juhani Aho (१८६१–१९२१); २ Arvid Jarnefelt (१८६१–१९३२), ३ Tolstoy, ४ Kasimir Leino (१८६६–१९१९), ५ Johannes Linnankoski (१८६९–१९१३); ६ Eino Leino (१८७८–१९२६), ७ Otto Manninen (ज० १८७२); ८ V A Koskenniemi (ज० १८८५), ९ Maila Talvio (ज० १८७१) १० Maria Jotuni (१८८०-१९४३), ११ Aino Kallas (ज० १८७८)।

१८. फ्रैंच-साहित्य

फ्रैंच-साहित्य ससार के अत्यन्त समृद्ध साहित्यो में से है। उसका काल-विस्तार अग्रेजी को छोडकर प्राय सभी यूरोपीय वर्तमान साहित्यो से बडा है और उसमे केवल सख्या या परिमाण की ही बात नही, गुणत भी वह बडा प्रभावशाली रहा है। जिस प्रकार यूरोप में एक काल तक फ्रैंच राज-दरबार ने अपने आचार को उदाहरण बना दिया था, उसी प्रकार फ्रास का साहित्य भी एक लम्बे अर्से तक यूरोप के साहित्यिको के लिए प्रेरणा तथा अनुकरण की वस्तु बन गया था। मध्यकाल के आरम्भ से अद्यावधि अटूट रूप से वह साहित्य-रत्न उत्पन्न करता गया है। अनेक बार उसी साहित्य ने यूरोपीय साहित्यो के आन्दोलनो का आरम्भ किया।

फ्रैंच साहित्य के अपने विशेष रूप का निर्माता सौन्दर्यबोध था। फ्रास की कला और साहित्य दोनो मे सौदर्य की उपासना उसी मात्रा में हुई है जिस मात्रा मे उसकी जनता ने सौन्दर्य की उपासना की है। फ्रेच जनता जीवन मे अकृत्रिम रूप से असाधारण भावुक और सौन्दर्यपेक्षी है। जीवन का साहित्य में उतर आना स्वाभाविक है और फिर फ्रेच साहित्य का तो उस जाति से निरन्तर सम्बन्ध रहा है। इसका अर्थ यह नही कि और जातियो का सबध उनके साहित्य से कम रहा है। बल्कि केवल यह कि जीवन मे सौन्दर्य-बोध को विशेष महत्व देकर चलने वाले वे लोग सभवत भावुक और साहित्य-स्रष्टा होने के कारण अपने साहित्य में भी उस बोध की छाया गहरे रूप से डाल सकते हैं और फ्रेच साहित्य पर वह छाया नि सन्देह बहुत गहरी पडी। फ्रेच भाषा की मधुरता भी उस सौन्दर्य की सहायक है।

: १ :

मध्य-युग

फ्रैंच-साहित्य का वस्तुत आरम्भ मध्य-युग से होता है। उसकी पहली जानी हुई कृति ग्यारहवी सदी ईस्वी के अन्त मे प्रस्तुत "रोलाँ-का-गीत" है जिसमे फ्रास के प्राचीन वीरो के पराक्रम का छन्दोबद्ध वर्णन है। शार्लमान[1] का शासनकाल उसके कथानक का युग है। "रोलाँ का गीत" मे रोलाँ[2] की मृत्यु, गानेलो[3] के विश्वासघात और शार्लमान के न्याय तथा प्रतिशोध की ओजस्वी कथा है। साथ ही उसमे मूरो के युद्ध और स्वदेश के प्रति फ्रासीसी सैनिको के सस्मरण स्थान-स्थान पर सुन्दर रीति से अभिव्यक्त हुए है। इस रचना की भावधारा और छन्द की गरिमा स्तुत्य है। बडी योग्यता से अनेक वीर-कथाएँ

१ Charlemagne, २ Roland, ३ Ganelon

ड्रामा लिखे हैं और उन्तो सेपानेन[१] अपने रोमांटिक उपन्यास "सूरज और तूफान" (१९३९) तथा मिका वाल्तारी[२] ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास "मिस्त्री सिनुहे" (१९४५) लिखकर ख्याति पाई।

---

१ Unto Seppanen २ Mika Valtari

उपन्यास धारा के प्रारम्भ होने के पहले कुछ काल तक सुन्दर गद्यबद्ध कहानियो का प्रचलन रहा जिनमे छन्द भी प्रचुर मात्रा में अपनी स्वाभाविक धारा में यत्र-तत्र प्रवाहित होता था। कथानक अधिकतर वीर नायक और नायिका के प्रणय, पर्यटन तथा असाधारण कृत्यो से अनुप्राणित होते थे। "ओकासे और निकोलेत" उसी परपरा में लिखी गयी एक सक्षिप्त कथा है। जिसमें फ्रासीसी, देहाती जीवन की भी जहाँ-जहाँ पर्याप्त झलक मिल जाती है। उस काल की रचनाओ मे 'गुलाब का रोमास' प्रख्यात हो गया है। इसके दो खण्ड हैं। जिनमे पहला गिलोम द लोरी[1] ने लिखा और दूसरा जा द मअ[2] ने पहले भाग मे प्रणय के आदर्श चित्रित है और दूसरे मे तर्क की प्रतिष्ठा है। पुस्तक नि सन्देह मध्यकाल का एक प्रबल रूपक है। इसकी काया छन्द-बद्ध है। इस काव्य ने यूरोपीय साहित्य पर बडा गहरा प्रभाव डाला। 'रनार का उपन्यास' उसी परपरा मे लिखा मध्यकालीन सस्थाओ पर समर्थ व्यग्य है। इसमें अनेक प्रकार के पशुओ को पात्र बनाकर मानव कार्यों की पैरोडी की गयी है। पशुपात्रो के वक्तव्य समकालीन मानवो के कृत्यो का उपहास करते हैं। उसी तेरहवी सदी का छन्द मे प्रस्तुत कहानियो का सग्रह "फाब्लियो" समकालीन मनुष्यो की कथा मानव रूप मे रूपायित करता है। उसका व्यग्य भी कुछ कम गहरा नही।

मध्यकालीन लिरिक का प्रभाव भी उसी प्रकार दरवार की भूमि से मध्यवर्गीय समाज की ओर है। काव्य का आरभ उत्तर और दक्षिण के पारपारिक लोक-गायनो से हुआ। परन्तु साहित्य की शैली मे बँधकर वे शालीन वन गए। १४वी और १५वी सदियो मे कुछ काफी अच्छे लिरिक लिखे गये। उस युग का सवसे महान कवि फ्रासुइस विलो[3] था। अपने ही जीवन की कटुताएँ और निर्मम कठिनाइयाँ उसने अपने लिरिको मे सजीव कर दी। अपनी प्रसिद्ध कृति "तैस्तामा" मे अपने झगडे, अपनी माता की प्रार्थना-उपासना, वृद्धा वेश्या का अपने सौन्दर्यनाश पर विलाप, पेरिस के शोहदो की अभद्र चेष्टाओ, अपनी प्रेयसी मार्गो के विलास आदि का उसने बडा सफल चित्र खीचा। इस रचना मे छदोलकार उलझे हुए हैं। परन्तु उसकी सादगी, हृदय पर सीधा और मार्मिक चोट करती है।

उस काल की नाट्य-धारा दो दिशाओ में वही, एक धर्म के क्षेत्र मे और दूसरी लौकिक चेतना के क्षेत्र में। इनमें पहली का विकास चर्च की क्रिया-विधियो के आधार से हुआ, दूसरी का लोकाराधन की प्रवृत्तियो से। धर्म सम्बन्धी नाटक, गिर्जाघर की उपासना वेदी से उठकर पहले उसके आँगन मे खडे हुए, फिर राजमार्ग पर उतर आये। १५वी सदी तक पहुँचते पहुँचते उसने अपना वह विराट रूप धारण किया जिसमें गाँव का गाँव तो प्रदर्शन मे भाग लेता ही था स्वर्ग और नरक की कल्पना भी साकार हो उठती थी। इस प्रकार

---

१ Guillaume de Lorris (Ca. १२३०), २ Jean de Meun (Ca १२७५), ३ Francois Villon

उस एक सग्रह में ढाल दी गयी है। शार्लमान, आरेन्ज की विलियम[1] गिरार्द-द-रोसिला[2] सभी उसकी कथाओ में जीवन धारण करते हैं। इस काल से लेकर १३वी सदी के मध्य तक फ्रास में वीरकाव्य का ही प्राधान्य रहा यद्यपि वह धारा उत्तरोत्तर क्षीण होती गई।

वीर काव्यो के अन्त के पर्याप्त पूर्व ही अनेक वीर कथाएँ फ्रासीसी-साहित्य मे रचनाओ का आधार वन चली थी। राजा आर्थर[3] और उसके वीरो की कहानियो का भी प्रादुर्भाव उस साहित्य में हुआ। बारहवी सदी के मध्य पहले-पहल उनका उपयोग फ्रास की भाषा मे हुआ। छोटी-छोटी छन्दोबद्ध कहानियो में, जिन्हें "ले"[4] कहते हैं, सबसे पहले मारी-द-फ्रास[5] ने उनका उपयोग किया। उनमे वीरो के पराक्रम और महिलाओ के प्रति उनकी भक्ति का वर्णन हुआ। "ले" प्रकार की कथा कविताओ का चरम विकास श्रीतियाँ द त्रौय[6] की कृतियो में हुआ। 'इरेक और एनिद', 'यवें, 'लासलो और 'पर्सिवाल', श्रीतियाँ की प्रसिद्ध कृत्तियाँ हैं। श्रीतियाँ कहानी कहन मे बडा चतुर था। और उसने अपनी वर्णनात्मक कविताओ मे उन चरित्रो और आदर्शों का विकास किया जो मध्यकालीन सस्कृति के प्रतीक माने जाते हैं। चरित्र-चित्रण विनोदात्मक वर्णन शालीन रूपायन, वस्तु के अनुकूल ही अपने आप जैसे उसके स्पर्श के जादू से यथावाछित निर्मित हो जाते थे। 'त्रिस्तन" ख्याते और अन्य अनेक रचनाएँ उसी परपरा में सम्पन्न हुई और प्राय समान वीरो के ही कथानको द्वारा भरी पडी है। आर्थर और उसके वीरो की कथाओ को फ्रेंच साहित्य का प्रारम्भिक आधार वनना इस बात को प्रमाणित करता है कि फ्रास ने अपने साहित्यिक विषयो को चुनने मे किसी भौगोलिक वाधा को स्वीकार नही किया। यह सभव भी न था और यद्यपि उस मात्रा मे न सही फिर भी पर्याप्त मात्रा में स्वय अग्रेजी ने फ्रास की शार्लमान सबधी कथाओ को अपने कथासाहित्य का प्रारभ मे आधार बनाया।

फ्रास ने जिस प्रकार अग्रेजी ख्यातो से अपने साहित्य को समृद्ध किया उसी प्रकार ग्रीस और रोम की सामग्री भी उस साहित्य में प्रतिविम्बित हुई। सिकन्दर, त्राय, थीवी आदि से सबध रखने वाली घटनाओ पर अनेक छन्द कथाएँ उस काल फ्रास में रची गयी। सिकन्दर का रोमास, त्रॉय का रोमास, इनिया क्लिगें' थीवी का रोमास आदि उसी परपरा की कहानियाँ है जिन्हें फ्रेंच भाषा में "रोमास" कहते थे। अभी तक परपरा छन्दो में ही लिखने की थी। धीरे-धीरे काव्य का प्रयोग शुरू हो गया और अधिकतर आर्थर सबधी कथाएँ १२०० ई० के वाद गद्य मे लिखी गयी। 'ग्रेल की ऊँची पुस्तक'[7] उसका एक नमूना है।

---

१. William of Orange, २ Girard-de-Roussillon, ३ King Arthur, ४ Lay, ५ Marie de France ६ Chretien de Troyes, ७ High Book of Grail (Perlesvaus)

उपन्यास धारा के प्रारम्भ होने के पहले कुछ काल तक सुन्दर गद्यबद्ध कहानियो का प्रचलन रहा जिनमें छन्द भी प्रचुर मात्रा मे अपनी स्वाभाविक धारा मे यत्र-तत्र प्रवाहित होता था। कथानक अधिकतर वीर नायक और नायिका के प्रणय, पर्यटन तथा असाधारण कृत्यो से अनुप्राणित होते थे। "ओकासें और निकोलेत" उसी परपरा मे लिखी गयी एक सक्षिप्त कथा है। जिसमे फ्रासीसी, देहाती जीवन की भी जहाँ-जहाँ पर्याप्त झलक मिल जाती है। उस काल की रचनाओ मे 'गुलाब का रोमास' प्रख्यात हो गया है। इसके दो खण्ड हैं। जिनमे पहला गिलोम द लोरी[1] ने लिखा और दूसरा जा द मअ[2] ने पहले भाग मे प्रणय के आदर्श चित्रित है और दूसरे मे तर्क की प्रतिष्ठा है। पुस्तक नि सन्देह मध्यकाल का एक प्रबल रूपक है। इसकी काया छन्द-बद्ध है। इस काव्य ने यूरोपीय साहित्य पर बडा गहरा प्रभाव डाला। 'रनार का उपन्यास' उसी परपरा मे लिखा मध्यकालीन सस्थाओ पर समर्थ व्यग्य है। इसमें अनेक प्रकार के पशुओ को पात्र बनाकर मानव कार्यों की पैरोडी की गयी है। पशुपात्रो के वक्तव्य समकालीन मानवो के कृत्यो का उपहास करते हैं। उसी तेरहवी सदी का छन्द मे प्रस्तुत कहानियो का सग्रह "फाब्लियो" समकालीन मनुष्यो की कथा मानव रूप मे रूपायित करता है। उसका व्यग्य भी कुछ कम गहरा नही।

मध्यकालीन लिरिक का प्रभाव भी उसी प्रकार दरबार की भूमि से मध्यवर्गीय समाज की ओर है। काव्य का आरभ उत्तर और दक्षिण के पारपारिक लोक-गायनो से हुआ। परन्तु साहित्य की शैली मे बँधकर वे शालीन बन गए। १४वी और १५वी सदियो में कुछ काफी अच्छे लिरिक लिखे गये। उस युग का सबसे महान कवि फ्रासुइस विलो[3] था। अपने ही जीवन की कटुताएँ और निर्मम कठिनाइयाँ उसने अपने लिरिको में सजीव कर दी। अपनी प्रसिद्ध कृति "तैस्तामा" मे अपने झगडे, अपनी माता की प्रार्थना-उपासना, वृद्धा वेश्या का अपने सौन्दर्यनाश पर विलाप, पेरिस के शोहदो की अभद्र चेष्टाओ, अपनी प्रेयसी मार्गो के विलास आदि का उसने बडा सफल चित्र खीचा। इस रचना में छदोलकार उलझे हुए हैं। परन्तु उसकी सादगी, हृदय पर सीधा और मार्मिक चोट करती है।

उस काल की नाट्य-धारा दो दिशाओ में बही, एक धर्म के क्षेत्र मे और दूसरी लौकिक चेतना के क्षेत्र में। इनमे पहली का विकास चर्च की क्रिया-विधियो के आधार से हुआ, दूसरी का लोकाराधन की प्रवृत्तियो से। धर्म सम्बन्धी नाटक, गिर्जाघर की उपासना वेदी से उठकर पहले उसके आँगन मे खडे हुए, फिर राजमार्ग पर उतर आये। १५वी सदी तक पहुँचते पहुँचते उसने अपना वह विराट रूप धारण किया जिसमे गाँव का गाँव तो प्रदर्शन मे भाग लेता ही था स्वर्ग और नरक की कल्पना भी साकार हो उठती थी। इस प्रकार

---

१ Guillaume de Lorris (Ca १२३०), २ Jean de Meun (Ca १२७५);
३ Francois Villon

उसके गाँव, स्वर्ग और नरक तीन भाग होते थे। उन नाटको में कुछ तो रहस्यपूर्ण होते थे जिनके विषय बाइबिल से चुन लिए जाते थे और कुछ सन्तो के जीवन और उनके चमत्कारो को प्रदर्शित करते थे। आर्नूल ग्रेबाँ[१] का "मिस्तैर द ला पेशन" पहले प्रकार का प्रतीक है और जा बोदेल[२] का "ज द सा निकोला" तथा रूतबूफ[३] का "मिराकेल द थियोफील" दूसरे प्रकार के उदाहरण हैं।

लौकिक ड्रामा की पृष्ठभूमि पर अधिकतर विनोदपूर्ण और समसामयिक अथवा अन्य घटनाओ का प्रदर्शन होता था और अनेक बार उसमें नैतिकता का आदर्श उपस्थित किया जाता था। हास्य उसका प्रधान रस था और चरित्रो के आचरण पर कटु व्यग्य उनका विशेष मन्तव्य। इसके सुन्दरतम उदाहरण "रोबे मारियाँ, तथा "ज दला फुइली" (ल०१२६०) है। इनमें पिछले का रचयिता आदम द ला हाल[४] है। इसी परपरा मे ग्रेगवार[५] का "ज दु प्रेंस दे सोत" (१५१२) और "मास्टर पार्थेलिन" लिखे गये। इस अन्तिम नाटक का नायक शठ है। वस्तुत इस प्रहसन के सभी पात्र उसी की तरह शठ हैं। उनके वक्तव्य ससार की नीचता पर प्रकाश डालते हुए मनोरंजन और व्यग्य का एक अद्भुत उदाहरण उपस्थित करते है।

: २ :

पुनर्जागरण-काल

रेनेसा[६] या पुनर्जागरण काल प्राय सारे यूरोप मे नयी भावनाओ के साथ प्रादुर्भूत हुआ। एक नयी चेतना, नया दृष्टिकोण, नयी अनुभूति साहित्य और सामाजिक जीवन में मूर्तिमती हुई। कला और साहित्य मे जो नये-नये प्रयोग हुए उनसे स्पष्ट प्रमाणित हो गया कि उस नई चेतना ने एक नए युग को प्रसव किया है। पारपरिक ईसाई सकीर्ण प्रवृत्ति को इस नयी चेतना ने जोर का झटका दिया और राजनीति की ही भाँति साहित्यिक सक्रियता ने भी एक नयी दिशा मे गति की। प्रकृति के अभिराम अनायास उपस्थित सौन्दर्य से मुँह मोड लेने की प्रवृत्ति की चूलें हिल गयी और सौन्दर्य को उसके अकृत्रिम रूप मे अपनाने की चेष्टा सफल हुई, जीवन को भी सौन्दर्य-सम्पन्न करने की प्रेरणा लोगो मे जगी और अतीत की कृत्रिम कुण्ठा को सवल चुनौती मिली। ग्रीक और रोमन विचार जो सदियो से विलुप्त हो गये थे अथवा सुदूर पूर्व मे होने से पश्चिमी यूरोप के लिए अनजाने थे, अब उस नयी परपरा में प्रधान प्रतीक बन कर जागे। १४५३ मे कुस्तुन्तुनिया पर अधिकार कर तुर्कों ने

---

१ Arnoul Greban (ca १४५२), २ Jean Bodel, ३ Rutebeuf, ४ Adam de la Halle, ५ Gringoire, ६ The Renaissance

जो उधर ग्रीक-अध्ययन की परपरा समाप्त कर दी तो वही के ग्रीक और रोमन पण्डित अपने वेष्टनावृत ग्रथो को लिए दक्षिण पश्चिमी यूरोप की ओर भागे। यूरोप फिर एक बार प्राचीन ग्रीक और रोमन दर्शन साहित्यिक और कलागत मानदण्ड और मूल्याकन से प्रभावित हुआ। उस दृष्टिकोण से पहले इटली प्रभावित हुआ फिर फ्रास।

आल्प्स लाँघकर पुनर्जागरण की यह लहर जब फ्रास पहुँची तब उसने साहित्य और कला के सिद्धातो की एक नयी व्यवस्था की। उसने परपरागत साहित्यिक सिद्धातो पर गहरा आघात किया। मध्यकाल में भी साहित्यिक सिद्धान्त नि सदेह थे परन्तु उनका सबध शैली और अलकार मात्र के महत्वहीन उपकरणो से था। पुनर्जागरण-काल के सिद्धान्त काव्यगत विषय, रूप, परपरा, शैली, टैकनीक सभी से सबध रखते थे। अरस्तू आदि प्राचीनो के साहित्यिक सिद्धान्त दार्शनिक शालीनता प्राप्त कर चुके थे। और उनका चिन्तन-निरूपण मध्यकालीन समीक्षको की बुद्धि के परे था। शीघ्र ही नयी चेतना ने प्रमाणित कर दिया कि प्राचीनो का साहित्य सबधी मूल्याकन और उनके तत्सबधी सिद्धात स्तुत्य तथा अनुकरणीय थे। निकट की "गौथिक" परपरा से हटकर सुदूर अतीत की ग्रीक और रोमन परपरा का उन्होने अभिवादन किया और उसी को अपना आदर्श बनाकर उसका अनुकरण किया।

इसी वातावरण मे सोलहवी सदी के फ्रासीसी लिरिक काव्य का जन्म हुआ अभिराम और शालीन[1] पारपरिक रूप उसके निर्जीव हो गये थे और सिवा उनके शब्द रूप के उन काव्य के सौरभ का सर्वथा अभाव हो चुका था। न तो उनमे कायिक सौन्दर्य था, न उनमें प्रतिपाद्य विषय मे कोई वैयक्तितता थी। इस स्थिति का अपवाद कभी ही कभी दृष्टिगोचर होता था। क्लेमा मारो[1] के पत्र (१५२५) अभिराम छन्द मे इसी प्रकार के एक अपवाद की सृष्टि करते है। यह काव्य शक्तिम इसलिए बन पडा है कि यह नितान्त प्रगतिशील है, समकालीन परिस्थितियो को विस्तृत रूप से अपनी काया में प्रति-बिंबित करता है। इसका कवि मारो असामान्य सघर्षशील है, निर्धन, कारावद्ध, निर्वासित होने के कारण और स्वदेश लौटने के लिए, बन्धन से मुक्ति के लिए, जीवन की आवश्यकताओ के लिए उसकी काव्यगत पक्तियाँ पुकार उठती है। स्वत अनुभूत स्थिति उधार ली हुई भावना से कितनी अधिक शक्तिमती होती है, कितनी यथार्य, इसके क्लेमा मारो के "पत्र" असाधारण दृष्टान्त है और अगत विपत्तियो को चुनौती द्वारा झेलने की कवि की शक्ति एक अद्भुत हास्यरस का सृजन करती है। मानव जब विरोधी शक्ति की दुर्विनीत चोट का कायल हो जाता है तब वह उस चोट को अगीकार कर लेता है। वही अगीकरण उसकी हार का सबूत है। और यदि वह उस चोट को हँसकर निष्फल कर देता है तब उसे अगी-

---

१ Clement Marot

कार न करने की सफल प्रेरणा शत्रु की शक्ति को हास्यास्पद कर देती है। मारो अपनी विपत्तियो को हँस कर हास्यास्पद कर देता है। और उसकी कृति अपनी अद्भुत ताजगी का प्रभाव पाठक पर डाले बगैर नही रहती। १५४९ ई० मे जोखेम दु बेले[१] ने फ्रैंच स्थानीय काव्य परपरा पर नये दृष्टिकोण से क्रान्तिकारी चोट की। उसके नये सिद्धान्त-निरूपण ने प्राचीन पिण्डर[२] और होरेस[३] का अनुकरण कर उनसे भी बढ जाने की चेष्टा करने वाले अभिनव फ्रेंच कवियो के दृष्टिकोण को प्रतिविम्बित किया।

दु बैले स्वय उस काल के नये कवियो में अग्रणीय था। वह लिरिककार था। अपना लिरिक-सग्रह 'जैतून' उसने १५४९ में 'खेद' 'रोम का पुरातत्व', और 'देहाती खेल' उसने १५५८ मे प्रकाशित किये। उसने अधिकतर सॉनेट और ओड का उपयोग किया। उसका छन्द अधिकतर पेत्रार्च[४] के अनुकरण में था और अपने ओड के लिये उसने होरेस को आदर्श बनाया। इस क्षेत्र का दूसरा महान, कवि रौं सार[५] था जिसने अपने ३५ वर्ष के रचनाकाल मे अनेक विषयो पर कवितायें लिखी और उस दिशा मे प्राय प्रत्येक प्राचीन क्लासिक कवि का सफल अनुकरण किया। उसकी मेधा वीरकाव्य को छोड और सारी दिशाओ मे कृतिमत्ता हुई। उसके अनेक लिरिक फ्रैंच साहित्य के अप्रतिम उदाहरण माने जाते हैं।

ग्रीक और रोमन परपरा से प्रेरणा ग्रहण करने वाले अभिनव कवियो का फ्रास मे एक दल ही बन गया था जो 'प्लेइयाद'[६] कहलाता था। उस दल के अनेक कवियो ने उस काल मे बडी अच्छी लिरिक रचना की। वैसे उनका प्रधान गढ तो पेरिस था पर लियो आदि नगरो में भी उस दल के सदस्यो की कमी न थी। मौरिस सेव[७] और लुई लबे[८] लियो नगर के ही दो विख्यात कवि थे जिन्होने सॉनेट के रूप में सुन्दर काव्य रचना की। उनके प्रोटेस्टेन्ट वीर काव्यो के रचयिताओ ने भी इसी नयी प्रणाली का अनुकरण किया। मालर्ब[९] ने लिरिक रचना मे अपनी भिन्न चेतना द्वारा एक प्रकार का अवरोध उपस्थित कर दिया। उसके काव्य का रूप उन्माद से ऊपर उठ कर चिन्तनशील बन गया। उसकी दो कृतियाँ "कोमान्टेयर सिर देपोते" और 'कौंसोलासियो द मोसिये दु पेरिये' विशेप प्रसिद्ध हैं। पहली में तो उसने भाषा और छन्द के सुधार की योजना रखी और दूसरी मे उस योजना का सफल निर्वाह किया। उसके छन्द की परपरा अगले फ्रेंच छन्दो का आधार बनी।

यद्यपि दर्शन की परपरा को अनेक आलोचक साहित्य से भिन्न मानते हैं परन्तु शैली के रूप मे भाषा और साहित्य के विकास में निस्सन्देह उसका योग होता है। अनेक बार तो दार्शनिक रचनाओ में साहित्य का अद्भुत सौरभ फूट पडता है। फिर निबन्ध के रूप मे

---

१ Joachim du Bellay, २ Pindar, ३ Horace, ४ Petrarch, ५ Ronsard, ६ Pleiade, ७ Maurice Sceve, ८ Louise Labe, ९. Malherbe

तो दर्शन वैसे भी साहित्य के अनेक अन्तरतम स्तरो को छू लेता है। इसी विचार से १६वी सदी के रावले,[१] काल्विन[२] और मौतने,[३] १७वी सदी के देकार्त[४] और पस्कल[५], १८वी सदी के अनेक दार्शनिको, १९वी सदी के रेनाँ[६] और २०वी सदी के बर्गसो[७] की महान् साहित्यिको मे गणना हुई। इनमे रावले के सम्बन्ध में तो सभवत किसी को आपत्ति नही हो सकती क्योकि ससार के महान् साहित्यिक निर्माताओ में उसका स्थान है। उसके, 'गार्गन्तुआ और पाताग्रुएल' का रूप प्राय उपन्यास का है यद्यपि वह १६वी सदी में ही लिखा गया था। उसकी कथा-सामग्री बहुत कुछ मध्यकालीन परपरा मे साँस लेती है। परन्तु उसकी गति मे चिन्तन का प्रवाह है। उस तथाकथित उपन्यास मे उस काल के सारे विचारो, आदर्शों, परपराओ और विद्रोहो का निरूपण है। उसमे अत्यन्त सुरुचि और सफल हास्य का निर्वाह हुआ है। पुनर्जागरण के सदाचरण के आदर्श के रूप मे सभवत इससे सुन्दर दूसरी कृति उद्धृत नही की जा सकती। मिशैल द मोतेन[८] ने १६वी सदी को ऋद्ध निबन्ध भेट किये जिनमे लेखक स्वय प्रतिपाद्य विषय बन गया। निस्सन्देह शैली लेखक की अहम्भावना की द्योतक न थी वरन् इस विचार को लेकर चली थी कि वह स्वय अपने समय का प्रतिनिधि है और जो वह अपने विषय मे लिखता है वह समाज के सबध मे सत्य है। उसके निबन्ध शुद्ध है और आत्मपरक होने के कारण एक आत्मीयता लिये हुए है।

सुधारवादी आदोलन ने ईसाई धर्मानुयायिओ को भी दो भागो मे विभक्त कर दिया था। परिणामत कैथोलिको और प्रोटेस्टेन्टो में विचार-सघर्ष अनिवार्य हो गया। फ्रास में प्रसिद्ध प्रोटेस्टेन्ट सिद्धान्तवादी काल्विन[९] साहित्यिक गद्य की एक विशिष्ट शैली का प्रवर्तक हुआ। १५४१ ई० मे ,'ईसाई धर्म की सस्थाये' प्रकाशित कर काल्विन ने फ्रैंच-गद्य-शैली को एक नवीन प्रवाह और शक्ति प्रदान की। शैली नितात सक्षिप्त थी और उसमें कम-से-कम शब्दो का अधिक-से-अधिक अर्थ में प्रयोग किया गया है। इस दिशा मे वह रावले तथा मातेन का जवाब बन गया।

नाटक के क्षेत्र में ग्रीक ट्रैजेडी और कॉमेडी का विशेप अनुकरण हुआ। कथावस्तु चाहे जो हो नाम निश्चय ही ग्रीक और लैटिन ही लिये जाते थे। यद्यपि यह प्रयास 'क्लासिकल' साहित्य के रूप मात्र का अनुकरण कर सका। उसकी शालीनता नये अनुकरणो की सीमाओ में न समा सकी। ट्रैजेडी नितान्त विषादपूर्ण होने लगी पर उसमे नाटकीयता का प्राय अभाव हो गया। कॉमेडी में भी असाधारण की जो प्रचुरता हुई उससे वस्तुस्थिति जीवन से भिन्न और कृत्रिम हो उठी। मध्यकाल मे जिस कथा-परपरा का आविर्भाव हुआ था वह भी

---

१ Rabelais , २. Calvin, ३ Montigne; ४ Descarste; ५ Pascal, ६ Renan, ७ Bergson; ८ Michel de Montaigne , ९ Calvin

अपेक्षाकृत कमजोर पड गई। हाँ, 'हेप्तामेरन' १५५८ में निस्सन्देह मार्गरीत द नवार[1] ने कथा शैली को एक नई गति और स्फूर्ति प्रदान की यद्यपि उसकी वह कृति इटली के कथाकार बुकाचो[2] के 'देकामेरन' के अनुकरण मे प्रस्तुत हुई। फिर भी इसमें सदेह नही कि मार्गरीत बुकाचो की सरल शक्ति का निर्वाह अपनी रचना में न कर सकी। उसी काल प्लूतार्च के जीवन चरितो का शुद्ध फ्रेंच शैली में अनुवाद कर आम्यो[3] ने साहित्य का भण्डार भरा।

: ३ :

सत्रहवीं सदी

सोलहवी सदी के फ्रास मे जो 'प्लेइयाद' के सदस्यो ने ग्रीक और लैटिन मॉडलो के अनुकरण में साहित्य रचना प्रारम्भ की थी उसमे अनूठापन तो निस्सन्देह था परन्तु सफलता की मात्रा कम थी। विशेषकर प्रवन्ध काव्यो और नाटको में उनके आदर्श मॉडलो का स्तर उनकी अपनी कृतियो के स्तर से नितान्त ऊँचा था। उसे वे अपनी रचनाओ में न उतार सके। यह कार्य सत्रहवी सदी मे सम्पन्न हुआ यद्यपि कार्य साधारण था नही। पहले तो भाषा को ही उन आदर्श कृतियो का वाहन वनाना था। भाषा में आवश्यक परिवर्तन हो चुकने पर ही क्लासिकल विचारो, प्रकृतियो और आदर्शों का मूर्तन हो सकना सम्भव था। इस उद्देश्य की सफलता में दो घटनायें वडी सहायक हुईं। एक तो १६३४ में 'फ्रेंच एकेडमी' की स्थापना और दूसरी चौदहवे लुई[4] का राज्यारोहण। फ्रेंच एकेडमी की स्थापना ने पुनर्जागरण के आन्दोलन को प्राय सरकारी और राष्ट्रीय वनाकर उसे स्थायित्व प्रदान किया। भाषा साहित्य और उनमें रची जाने वाली कृतियो को उसके अधिकारी सदस्यो ने निश्चित किया। साथ ही अपने कृतित्व से फ्रास के सफलतम साहित्यिको ने उसमे आदर्श भी उपस्थित किया। चौदहवें लुई के राज्यारोहण ने देश को एकता प्रदान की जिससे भाषा की एकता उत्पन्न होने में भी वडी सहायता मिली। लुई का दरवार अपनी शालीनता के लिए इतिहास मे प्रसिद्ध हो गया है। वह शालीनता केवल दरवारी तडक-भडक तक ही सीमित न थी वरन् उसमे मेधा और प्रतिभा का भी प्रभूत योग था। लुई का दरवार फ्रेंच एकेडमी का ही एक दूसरा सस्करण वन गया था और फ्रेंच एकेडमी के अनेक जाज्वल्यमान नक्षत्र स्वय उस सूर्य के चतुर्दिक भी घूमते थे। इतना ही नही, दोनो की स्थिति मे एक अन्तर भी था जो दरवार के साहित्यिको के पक्ष में था। वह था अपनी कृतियो के कथानक के लिए तत्काल और समसामयिक कथानक प्राप्त कर लेना। साथ ही उन्हें अपने स्थायी भावो को प्राणमय

---

१ Marguerite de Navarre, २ Boccaccio, ३ Amyot, ४ Louis XIV

बनाने के लिए विभाव भी वहाँ पर्याप्त मिल जाते थे। वर्साई के महलो मे नन्दन को भी लज्जित करने वाले प्रमदा-वन थे और उनके निकुज कामुको की प्रवृत्ति का निरन्तर उद्दीपन करते रहते थे। राजा स्वय कामुक था जो असख्य ऐसे सामन्तो से घिरा रहता जिन्हे अपनी प्रजा से, सिवा उसके कुचल कर लगान वसूल करने के, और कोई सम्पर्क न था। जो सदा लुई के विलास के साधनो को सजीव करते रहते थे और स्वय भी उसी वातावरण मे जीते थे। कामियो और मुग्धाओ की कमी वर्साई के उस कृत्रिम वनप्रान्तर मे न थी और दरबार के साहित्यिको के लिए वातावरण नितान्त अनुकूल पडता था। यूरोप के अन्य देशो मे ग्रीक अथवा रोमन जीवन के आदर्शों, विशेषकर सामाजिक रोमाटिक प्रवृत्ति को लेकर चलने वाले साहित्यिको को जहाँ दूर की प्राचीन परिस्थितियो की कल्पना मात्र करके साध्य सँभालना पडता था वहाँ लुई के दरबार के प्रतिभाशील साहित्यकारो के सामने जैसे एथेन्स और रोम वर्साई मे ही मूर्तिमान हो उठे थे। लुई स्वय सुरुचि का अवतार था और उसके सरक्षित कलाकारो को भी सुरुचि का अपनी कृतियो मे विशेष निर्वाह करना पडा। फिर लुई की चुहलबाजी भी कुछ ऐसी ही थी कि उसके समकालीन कृतिकारो को अपनी कृतियो मे छाया के स्थान पर धूप का, चकाचौध का, अपेक्षाकृत अधिक उपयोग करना पडा।

इस दिशा मे सत्रहवी सदी के फ्रास के साहित्यकारो मे पहला कदम पियर कार्नेल[1] ने लिया। पहले तो उसने कॉमेडी लिखकर नाम कमाया। फिर सहसा अपनी ट्रैजेडी-कॉमेडी मिश्रित कृति सी लिख कर उसने पेरिस और वर्साई दोनो को चमत्कृत कर दिया। उसकी यह कृति १६३६ मे प्रकाशित हुई। चार वर्ष बाद उसने 'होरेस और चिना' १६४० तथा 'पौलियक्त" १६४२ लिख कर दर्शको को आश्चर्य मे डाल दिया। तत्कालीन लडाको का जीवन में आदर्श था—रोमाचक परिस्थितियो मे अपने कर्त्तव्य-पालन का निर्वाह। वह कर्त्तव्य चाहे राजा की सेवा में हो चाहे सुन्दरियो की। दोनो के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए जीवन को खतरे मे डाल देने अथवा वलिदान तक कर देने का सकल्प उस युग का आदर्श था। और उसे मूर्त्त करने मे कार्नेल की प्रतिभा वडी सफल हुई। उसने अपने नायको और नायिकाओ को उसी वातावरण मे सिरजा। समाज के सामन्तो अग्रणीयो को नित्य के प्रयोग के लिए भाव-सकुल शालीन वाक्य-परपरा चाहिए थी और यह वाक्य-परपरा वहुत कुछ कृत्रिम होती हुई भी प्रयोग वाहुल्य के कारण सहज और स्वाभाविक हो गयी थी उस परपरा को स्वर और वहनीय वोझ देकर कार्नेल अपने समकालीनो का उपास्य वन गया। फिर भी कार्नेल 'क्लासिकल' आदर्श की दिशा में इच्छित मजिल तक न पहुँच सका। उसके नाटको में उसके आदर्शों की अपेक्षा गति की कमी थी। कथानक मे आत्मा जैसे खो जाती

---

१ Pierre Corneille

थी और जीवन की सघर्षशील भावनाओ का उनमे अभाव हो जाता था। कथावस्तु के पेंच, भावो की विविधता और शैली की शालीनता उनमें एकत्र रूपायित न हो सकी।

कार्नेल की यह कमी रेसाइन[1] ने पूरी की। जाँ रेसाइन के अनेक ट्रैजेडी-नाटक ऐसे है जिनको पूर्ण की सज्ञा दी गई है। १६६७ और ७७ के बीच उसने सात गजब के नाटक रचे। 'आद्रोमाक' और 'फैद्र' तो प्राय सर्वथा बेजोड थे। इनके अतिरिक्त उसने दो बाइबिल सम्बन्धी नाटक 'एस्थ' और 'अथाली' लिखे। रेसाइन की इस सफलता का एक विशेष कारण था। उसने रोमन के बजाय सूक्ष्म ग्रीक आदर्शों को अपना मॉडल बनाया। सुरुचि तो उसे अपने युग ने ही दी परन्तु भावो का आवेग और कवित्व की प्रतिभा उसकी अपनी थी सर्वथा वैयक्तिक। फिर जब उसने सुरुचिके साथ अपनी मेधा के योग से ग्रीक आदर्शों को स्थापित किया तब उसकी सफलता मानो सहज हो गयी। तीनो का एकत्र योग सजीव और सफल नाट्याकन का कारण बना। कथानक अत्यन्त सहज स्थिति से उठता है। फिर धीरे-धीरे वह उलझने और गुजलक भरने लगता है। फिर तो उस उलझन मे मनोवैज्ञानिक चेष्टाओ के घात-प्रतिघात शुरू हो जाते है। उदाहरणत 'फैद्र' पत्नी है परन्तु उसे प्रेम हो गया है। फिर वह अपने पति के प्रति अपना उत्तरदायित्व सहज ही निभाना चाहती है। उस दिशा में वह प्रयत्नशील भी है और अपनी आचार-गुरुता का दर्शको पर प्रभाव डाले बिना नही रहती। वह अपने अपराध से स्वय अत्यन्त भयान्वित हो उठती है। उसका हृदय इस ईमानदार चेतना के कारण मथ उठता है और वह दु ख, ईर्ष्या और प्रणय का शिकार हो जाती है। इस प्रकार उसके प्रणय की अकेली भावना में अनेक स्थितियाँ विकार उत्पन्न करती जाती है और कथानक मे पेच पर पेच पडता जाता है।

कार्नेल और रेसाइन ने तो सुरुचि और शालीनता का फ्रेंच रगमच पर विकास किया, परन्तु उस काल के लिए इतना ही पर्याप्त न था। सुरुचि आखिर जनसाधारण की स्वाभाविक प्रकृति इतनी न थी जितनी लुई के दरबार के कृत्रिम और सयत पार्षदो की। जनसाधारण को कथागत गौरव तथा सुरुचि से परहेज न था परन्तु उसे इनके अतिरिक्त कुछ और भी चाहिये था। अकृत्रिम मुक्त हास्य। वह फ्रास की जनता को उसके प्रिय नाटककार मौलिए[2] ने दिया। मौलिए रगमच का जादूगर था। भाषा, भाव, और पात्र जैसे सिरजी हुई परिस्थितियो मे स्वाभाविक ही गतिमान हो उठते है। और उनका एक-एक स्फुरण दर्शको के मुक्त और प्रतिध्वनित हास्य का कारण होता है। मौलिए सहज ही लोकप्रिय हो गया। फ्रेंच जनता कुछ स्वभाव से भी दूसरी जातियो की अपेक्षा अपने कृतिकारो का विशेष मान करती है। फिर मौलिए के पक्ष मे तो उसकी असाधारण प्रतिभा भी थी। इस सबध मे एक कथा प्रचलित है। कोई फ्रासीसी शेक्सपियर पढ़ रहा था। किसी अग्रेज ने अभिमान

---

१. Jean Racine, २ Moliere

पूर्वक कहा—"अच्छा, हमारा शेक्सपियर पढ रहे हो।" उत्तर मिला—"हाँ, तुम्हारा शेक्सपियर ही, यह देखने के लिए कि वह हमारे मौलिए की अपेक्षा कितना नगण्य है।"

मौलिए ने सत्रहवी सदी के प्राय मध्य मे लिखना शुरू किया परन्तु उसकी महान् रचनाये—"तारतिफ", "दो जुआँ," "ला मिजा थ्रोप", "लै फाम सावात"—रेसाइन की कृतियो की ही समकालीन थी। यह बात विशेष ध्यान देने की है कि जहाँ कार्नेल और रेसाइन, कम-से-कम रेसाइन, के सामने उनके क्षेत्र मे सफल-असफल प्रयत्न के रूप मे कुछ मॉडल उपलब्ध थे, मौलिए अपना मॉडल आप था। साधारण से साधारण विनोदात्मक परिस्थिति अथवा हास्य से लेकर सूक्ष्म से सूक्ष्म व्यग्यात्मक चरित्राक्षेप तक सब कुछ मौलिए ने अपने आप ही सिरजा। उसकी अपनी ही रचनाओ मे उसके साहित्य का समूचा विकास हुआ। न तो उसने पथ-प्रदर्शन के लिए किसी की ओर देखा और न देखने पर भी उसका मिल सकना सभव था। हास्य की परिस्थितियाँ वह सहज जीवन से जैसे चुन लेता था। समाज की स्वार्थ-परकता, वचकता, कामुकता, हास्यास्पद चेष्टाएँ उसकी लेखनी की नोक से जैसे टपकती जाती थी और उनके साधन से परिस्थितियो को मूर्त्त कर हाल को दर्शको के हास्य की सहज प्रतिध्वनियो से गुँजा देता था। नाटक के क्षेत्र मे मौलिए का वही स्थान है जो चित्र लेखन की दिशा मे व्यग्य चित्रकार का। कार्टून वनाने वाला रेखाढ्य कलावत जैसे अपने आलेख्य को उसकी आकृति के अवयव विशेष को असाधारण खीच कर उसको रूपायित कर देता है और अपने इस प्रयास मे उसके अन्य अगो को नगण्य अथवा नितान्त छोटा वना देता है—उसी प्रकार मौलिए पापी अथवा अपराधी पात्र की कमजोरियो मे से केवल एक को चुनकर उसे जाल की तरह तेजी के साथ वुनने लगता है, परिस्थितियो का योग और उनके प्रति उसके पात्र की प्रतिक्रिया उसकी उस अपराध-चेतना को वृहदाकार कर देती है। परिणामत वह हास्यास्पद हो उठता है।

सत्रहवी सदी के फ्रास मे नाटक-साहित्य ने तो असाधारण प्रगति की ही उस काल गद्य रचनाओ को भी फ्रेंच प्रतिभा का अपूर्व दान मिला। मौलिए के समकालीन साहित्यकार समर्थ जा द ला फौतेन[1] ने कथा साहित्य मे युगान्तर उपस्थित कर दिया। १६६८ और ९४ के बीच उसने वारह खण्डो मे ऐसी काल्पनिक कथाएँ लिखी जिनकी समता कोई आधुनिक साहित्य नही कर सकता। ला फौंतेन के कथा-साहित्य का अनुवाद अनेक यूरोपीय भाषाओ मे हुआ और विदेशो के वढते हुए साहित्य ने कथाओ की दिशा मे उसी साहित्य का दामन पकडा। ला फौंतेन पशु पक्षियो की कथा तो लिखता है। परन्तु उसकी सैटिग, उसका प्रसार और प्रवाह सव कुछ नाटकीय होता है। उसमे चरित्रो का विकास, परिस्थितियो की पारस्परिक प्रतिक्रिया, शक्तिम डायलॉग और गति प्रभूत होती है। अन्त मे स्थिति नुकीली

---

१ Jean de la Fontaine

होकर उपदेश के रूप में जैसे टपक पडती है। ला फौंतेन की नीति-कथाएँ वस्तुत शैली, सूक्ष्मता और प्रतिभा की आकर है।

उस युग ने अपने साहित्य मे एक असाधारण प्रतिभा के व्यग्यकार को भी जन्म दिया। वह था मौलिए, रेसाइन और ला फौंतेन का समान मित्र निकोला ब्वालो[1]। वह गजब का व्यग्यकार और नीति-पद्यकार था। मजाक उडाने की उसकी प्रतिभा इतनी चुटकीली थी कि कम-से-कम शब्दो में वह स्थिति और पात्र दोनो पर गहरा प्रहार कर सकता था। उसके विचारो और साहित्यिक प्रहारो का प्रभाव अगली सदी तक बरावर लोगो पर पडता रहा। १६७४ में लिखे ब्वालो के 'आर पोएतिक', ने रेनेसा (पुनर्जागरण) के मूल सिद्धान्तो और आदर्शों का फ्रेंच मे पहली बार दार्शनिक रूप से प्रकाश किया। १८वी सदी में साहित्य के क्षेत्र मे जो मनुष्य के व्यापक शाश्वत स्वरूप पर जोर दिया गया, कला के नियमो का अनिवार्यत पालन हुआ और बौद्धिक न्याय के ऊपर सुरुचि की प्रमाण माना गया, वह सारा इस ब्वालो की लेखनी का ही परिणाम था। साहित्य मे इन विचारो की सत्ता समकालीन दर्शन के कारण हुई और उस दर्शन का मूल निर्माता अकेला ब्वालो था। ब्वालो चिन्तन की दिशा में उस काल का अरस्तू था और उसी की भाँति दर्शन तथा साहित्य के सिद्धान्तो को, दार्शनिक रूप से उसने तर्कवद्ध किया। फ्रेंच साहित्य मे सन्तुलन-समीक्षा-शास्त्र का पहला प्रणेता ब्वालो ही था।

नाटक और नाट्यगत काव्य की महत्ता १७वी सदी की अपनी चीज थी ही, उस सदी में कथा की साधारण स्थिति से उठ कर उपन्यास की परपरा भी आकार धारण कर चली। द उफ़[2] और स्किदेरी[3] ने सदी के आरभ मे ही उपन्यास-धारा का स्रोत उद्घाटित कर दिया। हाँ, उपन्यास का स्वरूप अभी घटना वहुल ही था और परिणामत दीर्घकाय, यद्यपि चरित्रो के निर्माण और चित्रण से उपन्यासकार सर्वथा उदासीन न थे। परन्तु शीघ्र ही उस दिशा में भी विशेष प्रगति हुई। घटनाओ को परिस्थितियो के अनूकुल कर, अनावश्यक घटनाओ को काट-छाँट उसकी आकार चेष्टा युक्तिसगत कर ली गई। उस दिशा में, मादाम द लाफायेत[4] ने अपने उपन्यास 'प्रेंसेस द वलीव' (१६७८) में वहुत कुछ वही सफलता प्राप्त की जो रेसाइन ने अपने नाटको मे की थी। यह उपन्यास निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता किसका है परन्तु साधारणत यह मादाम लाफायेत की ही कृति माना जाता है।

लुई चौदहवें की ही साहित्यिक परपरा में वोसें[5] भी था। उसने धर्म को एक फैशन बना दिया। उसके करुण प्रवचनो में उच्चकोटि की नाटकीयता होती थी और उसकी भाषा का प्रवाह तथा उसकी साहित्यिक प्रतिभा उन्हे प्रथम श्रेणी की साहित्यिक कृति का पद

---

१ Nicolas Boileau, २ D'urfe, ३ Scudery, ४. Mme de Lafayette,

५ Bossue

प्रदान करते थे। उसकी गद्य की यह विशेषता ला ब्रियेर[1] के गद्य मे भी मिलती है। ला ब्रियेर ने अत्यन्त सक्षिप्त परन्तु पैनी नोक से सजी गद्य शैली का अपने 'कारक्तेर' (१६८८) में उपयोग किया। उसमें समकालीन महानुभावो पर गहरी चोट की गयी है। उस कार्य मे साहित्यकार की चुस्ती अदभुत स्फूर्ति धारण कर लेती है। गद्य के इस चुटकीलेपन का दूसरा आचार्य ला रोशफूकोल[2] था जिसने उस दिशा में प्राय एक सूत्र-शैली का प्रयोग किया। उसके 'माक्सिम' (१६६४-६५) १७वी सदी के फ्रैंच गद्य की असाधारण शक्ति का परिचय देते है। उनमें गजब की स्पष्टता और व्यग्य-बाहुल्य है। मदाम द सैविने[3] ने अपने गद्य मे एक आत्मीयतापरक शैली का उद्घाटन किया। उसकी पुत्री और मित्रो को लिखे उसके पत्र उस शैली के माध्यम हैं जिनकी शक्ति और गहराई साधारण स्थिति में भी असाधारण प्रभाव उत्पन्न करते है। उस काल मे सिमो[4] ने फ्रैंच मे अत्यन्त सुन्दर और मधुर सस्मरण लिखे। यह याद रखने की बात है कि उस काल का फ्रैंच-साहित्य सस्मरणो से भरा था जिसकी शैलीपरक ऊँचाई एकान्त-सिद्ध थी। परन्तु सेंट-सिमो उस दिशा में अनुपम प्रमाणित हुआ। उसकी भाषा और भावो के व्यग्य शक्तिम होते थे और लुई के दरबारियो को पास से देख सकने के कारण वह अपनी कृति को यथार्थत सच्चा और चुटीला बना सकता था।

परन्तु १७वी सदी के सबसे महत्वपूर्ण गद्य देकार्त्त[5] और पस्कल[6] ने लिखे। देकार्त्त और पस्कल दोनो फ्रास के प्रसिद्ध दार्शनिक हो गये है और देकार्त्त तो दर्शन के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। उसका कपाल आज भी "लोम्म" नामक पैरिस के नए नृशास्त्र-सग्रहालय में सुरक्षित है। यहाँ उसकी दार्शनिक विवेचना का उल्लेख न कर केवल उसकी गद्य शैली की ओर सकेत करेंगे। उस दशा में इतना कहना पर्याप्त होगा कि देकार्त्त के ग्रथ "पद्धति पर विचार"[7] से प्रकट होता है कि फ्रैंच भाषा किस बौद्धिक स्तर तक पहुँच चुकी थी और किस प्रभूत मात्रा मे दार्शनिक सूक्ष्मता का यह वाहन बन सकती थी। कहना न होगा कि देकार्त्त ने भी सूत्र पद्धति को ही अपने विचारो के प्रकाशन के लिए चुना यद्यपि उसकी धारावाहिक सरणि गति और व्याख्या के रूप मे एक मजिल उपस्थित करती है। ब्लेज़ पस्कल मेधावी वैज्ञानिक था, फिजिक्स का पण्डित और गणितज्ञ। उसके पत्र असाधारण गतिमान और विनोद बहुल है। उनमें उनकी भाषा की ताजगी आज भी पाठको को निहाल कर देती है। जीवन के अतिम चरण मे पस्कल 'मिस्टिक' हो गया था। उसकी दार्शनिक और विज्ञानवादिनी शैली भी सक्षिप्त और स्पष्ट है। वस्तुत उसने उस काल के गद्य लेखको के सामने साहित्य मे एक मॉडल उपस्थित कर दिया।

---

१ La Bruyere, २ La Rochefoucauld, ३ Mme de Sevigne, ४. Saint Simon, ५ Descartes, ६ Blaise Pascal, ७ Discourse on Method (१६३७)

: ४ :

अट्ठारहवीं सदी

साहित्य-निर्माण के परिमाण में अट्ठारहवी सदी भी कुछ कम महत्व की न थी। देकार्त्त की पद्धति ने उस सदी के विचारको को काफी प्रभावित किया। १८वी सदी वुद्धिवादी थी और चर्च, ईश्वर, राज्य, अर्थशास्त्र, आचार-शास्त्र, दर्शन, विज्ञान सब पर अपरिमित साहित्य उस काल प्रस्तुत हुआ। वस्तुत उसने समाज को न केवल विचारने को वरन् गतिमान होने को बाध्य किया। उसका परिणाम हुआ अन्तत १७८९ ई० की फ्रासीसी राज्य क्राति। उस क्राति के कारणो मे से एक प्रधान कारण १८वी सदी के चिंतको का विचार-प्रकाशन था। परपरा के विरुद्ध विज्ञान के आगमन ने उँगली उठाई और कोई युक्ति-विरहित विचार केवल परपरागत होने के कारण लोगो को स्वीकार्य न था। इस दिशा में इग्लैड के चिंतको ने भी फ्रच विचारको पर कुछ कम प्रभाव न डाला। बेकन[1], न्यूटन[2], लॉक[3], सभी ने अपने-अपने विचारो से सचेत फ्रैंच चिंतको को प्रभावित किया।

देकार्त्त और पस्कल ने धर्म की रक्षा के लिए दर्शन प्रयोग किया था। १८वी सदी के तर्क ने उस धर्म पर मरणातक चोटे की। पहली चोट पियर बैल[4] ने अपने 'ऐतिहासिक और आलोचनात्मक कोष' (१६९७) द्वारा की। ग्रथ विविध विपयो से भरा असाधारण ज्ञान-कोष था जिसमे वाइबिल, चर्च-पिताओ के उपदेश और ईसाई धर्म के मूल सिद्धातो पर गहरे तथा तर्कयुक्त सन्देह उपस्थित किये गये थे। युक्तिपूर्ण ऐतिहासिक विश्लेषण द्वारा उसने उनकी असत्यता सिद्ध कर दी। साधारणतया उस सदी के दार्शनिक अनीश्वरवादी न थे। इस काल के चिन्तको ने इस वात को समझा कि चर्च सभी प्रकार की रुढिवादिता का गढ है। और उसे तोडे बिना फ्रेंच समाज और जीवन में आवश्यक परिवर्तन नही किये जा सकते थे। उनमे पैम्फलेटो, निवन्धो और गद्य तथा पद्य द्वारा वोल्तेयर[5] का आक्रमण सबसे अधिक भीषण था। उसने चर्च के विरोध में अनेक निवन्ध लिखे और प्रत्येक निवन्ध के अन्त में वह लिखता—"इस घृणिततम वस्तु को कुचल डालो।" चर्च के प्रति उसकी घृणा इतनी घनी थी कि वह उसका नाम भी न ले सकता था। वोल्तेयर के विचार कुछ अपने ही न थे वरन् युग और समकालीन चिन्तको की प्रेरणा का प्रतिनिधित्व भी करते थे। परन्तु उसका उत्कट व्यग्य, नुकीली शैली, अनवरत धिक्कार, भापा का अविरल शक्तिम्-प्रवाह इतने अपने थे कि वह रुढियो पर तत्सामयिक प्रहार की एकान्त हरावल वन गया।

ईश्वरवादिता, ईसाई आचार शृखला, परपरा की अतर्क्य शक्ति, प्राकृतिक कानून सब की आधारशिला हिल गई जब वोल्तेयर ने अपने लेखो और व्यग्य कविताओ, प्राकृतिक

---

१ Bacon, २ Newton, ३ Locke, ४ Pierre Bayle, ५ Voltaire

कानून पर कविता, तथा रूसो[१] ने अपने "विचारो" (१७५०-१७५५) और 'एमिल' (१७६२) द्वारा सबल आघात किया। दोनो ने अपनी कृतियो मे अपने नये विचारो और आचारो की शिला रक्खी। दिदरो[२] की कृतियाँ भी उस दिशा मे, उस सहार और निर्माण कार्य में, किसी से पीछे न रही। अनेक फ्रैंच पर्यटको ने अपने भ्रमण-क्रम मे देखी-सुनी प्रगतिशील भावनाएँ चुस्त और धारावाहिक फ्रैंच मे व्यक्त करना आरभ कर दिया जिससे साहित्य को बडा बल मिला। उन्होने विदेशी राजनीति के सामने फ्रैंच राजनीति का भी सागोपाग विश्लेषण किया और प्रथम राजनीति की राजसत्तात्मक प्रवृत्तियो पर प्रबल प्रहार किया। इस दिशा मे दो ग्रन्थ बडे महत्व के प्रस्तुत हुए—एक तो मातेस्क[३] का 'कानूनो की आत्मा' (१७४८) और दूसरा रूसो का 'सामाजिक राजीनामा' (१७६२) था। मातेस्क ने सरकारो के विविध प्रकारो पर विचार किया और रूसो ने समाज के आचार-स्वरूप सामाजिक राजीनामे पर। यह सामाजिक राजीनामा कुछ काल से समाज के निर्माण के सबध में एक दार्शनिक सिद्धान्त के रूप में प्रयुक्त होता था। रूसो ने होब्स और लॉक के विचारो को काटते हुए मानव प्रवृत्ति को सर्वथा सुन्दर और समाज का प्रारम्भ जनता की प्रेरणा मे माना। जनता को उस दिशा में उसने सर्वशक्तिमान और उसके अनुशासन को अनुलघनीय घोषित किया। उसके विचारो का उपयोग स्वाधीनता युद्ध के वाद अमेरिका ने अपने सविधान मे किया और एक दशाब्दि वाद फ्रास मे ही फ्रैंच राज्यक्राति ने अपनी विचारधारा में किया।

१८वी सदी प्रभूत वैज्ञानिक सक्रियता की भी थी। प्रयोगशालाओ, व्याख्यानो और तर्क-सगत वाद-विवादो की विशेषकर तब के फ्रास में धूम मच गई थी। साहित्य के दृष्टिकोण से भी कुछ प्रकाशन तब बडे महत्व के हुए। इन प्रकाशनो मे अत्यन्त दूरगामी और महान् 'विश्वकोष' (१७५१-७१) था। इसके प्रधान सम्पादक दिदरो और जा ल रौ दलावर[४] थे। उनके अतिरिक्त उस विश्वकोष की काया सिरजने मे देश के प्रमुख मेधावियो का भी हाथ था। उसमे विज्ञान की खोजो से प्रभावित सब प्रकार के प्रगतिशील विचार प्रस्तुत हुए। इसी प्रकार बिफो[५] ने अपने 'प्राकृतिक इतिहास' (१७४९-८८) की प्रौढ शैली मे जीव विकास पर अद्भुत और गम्भीर विचार प्रकट किये। विज्ञान के अनेक क्षेत्रो मे बिफो का यह ग्रन्थ आधार-शिला बन गया। उस काल का वैसे सब से महान् विज्ञान का दार्शनिक देनी-दिदरो[६] था जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। अपने "प्रकृति की व्यवस्था पर विचार" (१७५४) और "द लावर—का स्वप्न" (१७६९) मे उस मनीषी ने विकास के सिद्धान्त की ओर सकेत कर दिया। वह सिद्धान्त वैज्ञानिक रूप मे तो कुछ काल बाद आया, परन्तु

---

१ Rousseau; २. Diderot; ३ Montesquieu; ४. Jean Le Rond Dalembert (१७१७-८३), ५ Buffon, ६ Denis Didrot

उसकी मूलभूत कडियाँ दिदरो ने ही गढ कर रख दी। जीवन का अनादि प्रवाह और उसमें निरन्तर परिस्थितियो के अनुकूल, बदले हुए नये ससार के निर्माण के स्वप्न देखने वालो में महान् ऊपर गिनाये दार्शनिक थे। वोल्तेयर उस नव-निर्माण के देवता का तपोनिष्ठ पुजारी था और तत्सम्बन्वी साहित्य का असाधारण प्रकाशक। उसके हजारो पत्र, सैकडो पैम्फलेट, बीसियो कहानियाँ-कविताएँ और व्याख्यान उसके मानवतावाद को प्रकट करते है। ऊपर कहा जा चुका है कि उसके अस्त्र उसकी सबल शैली और उसके सहारक व्यग्य थे। जिस युद्ध का उसने प्रारम्भ किया था वह आज प्राय जीता जा चुका है। फिर भी उसकी कृतियाँ आज भी उतनी ही ताजगी रखती हैं जितनी वह तब थी। रूसो, वोल्तेयर के विपरीत एक दूसरी ही प्रकृति का व्यक्ति था। गभीर, भावुक, विनोद विरहित। वैयक्तिक चेतना का वह प्रबल पक्षपाती था और उसकी शैली मे गजब का प्रवाह, असाधारण माधुर्य था। गद्य ऐसा लिखता था जैसे छन्दोबद्ध पद्य अविरल अटूट रूप से बह चला हो। विचारो की शृखला दार्शनिक की भाँति नही प्रौढ प्रेरिक साहित्यिक की भाँति मर्म को छू लेती थी। और पढने वाला कुछ कर गुजरने के लिए तत्पर हो उठता था। उसकी साहित्यिक प्रतिभा विशेषत उसके "सस्मरणो" (१७८१-८८) और "एकान्त पथिक के स्वप्न"" में खुल पडी है। मौंतेस्क मे भी गद्य की सुरुचि विशेषकर उसके "फारसी पत्रो" (१७२१) में—रीढ की तरह व्याप्त है। जहाँ वह कहानीकार और सरल गद्यकार के रूप मे प्रकट होता है वहाँ वह निश्चयपूर्वक असाधारण तेजवान सिद्ध होता है। ये लेखक प्राय अपने विचार-प्रकाशन के लिए साहित्य के विविध रूपो को उनका वाहन बनाते थे। इस अर्थ वोल्तेयर ने कहानी को अपना माध्यम बनाया, रूसो ने उपन्यास को, दिदरो ने नाटक को। निस्सन्देह उनकी सक्रियता उद्देश्यपरक थी।

परन्तु जो साहित्य को साधना के रूप से साधक की निष्ठा से सिरजते थे वे इनसे भिन्न थे। उनका सक्षिप्त परिचय दिया जायगा। 'उपन्यास' सदी की बढती हुई दशाब्दियो में विशेष प्रौढ रूप धारण करने लगा। सदी की बौद्धिक चेतना का प्रभाव भी उस पर पडे बिना न रह सका और परिणामत सामाजिक उपन्यासो की अभिसृष्टि होने लगी। अब उपन्यासो के कथानक जन-साधारण के जीवन से चुने जाने लगे। लसाज[१] का "गिल ब्ला" (१७१५-३५) मारिवो[२] के "मारियान" (१७३१-४१) और "पेंस पार्वनी" (१७३५-३६) इसी दृष्टिकोण के नमूने हैं। निस्सन्देह उन पर स्पेनी साहित्य का प्रभाव पडा है। परन्तु फ्रच जीवन और आचार उनके प्राण हैं। इनमें पहला उपन्यासकार सामाजिक आचारो पर व्यग्य करता है और दूसरा भावो का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण। उस काल का सबमे प्रसिद्ध उपन्यास अबे प्रेवोस[३] का "मानो लैस्को" (१७३१) था जिसने मारिवो की परपरा

---

१ Lesage, २ Marivaux, ३ Abbe Prevost

मे मनोविज्ञान का चित्रण किया। उसकी शैली सुरुचिपूर्ण और भाषा नितान्त प्राजल है। कहानी एक विचारवान पुरुष और एक आचारहीन नारी की है। नाटक के क्षेत्र में वोल्तेयर ने कार्नेल और रेसाइन से बहुत कुछ सीखा परन्तु अपनी नयी चेतना से उसने एक नयी दिशा की ओर कदम लिया, यद्यपि नाटकीयता की दृष्टि से उसके नाटक सफल न हुए। सफल नाटक उस काल लसाज, मारिवो और बोमार्क[1] ने लिखे। लसाज की "तिरकारे" (१७०९) और मारिवो का "प्रणय और सयोग का खेल" (१७३०) नाटक के क्षेत्र में विशेष सफल हुए। बोमार्क की दो कमेडियाँ—"सैविल का नाई" और "फिगारो का विवाह"—क्रमशः १७७५ और १७८४ में प्रकाशित हुईं और दोनो ही भाषा शैली और ध्वनि की दृष्टि से बडी मनोरम मानी जाती है। दिदरो ने नाटक तो लिखे ही, तत्सम्बन्धी सिद्धान्तो का भी बडी प्रौढता से अपने "आत्रेतिए" और "पारादीज़"—"सिर ल कौमेंदिए" में विवेचन किया। काश उसके सिद्धान्तो का निर्वाह अपने ही नाटको से सफलतापूर्वक हो सका होता।

१८वी सदी का लिरिक काव्य प्रायः नगण्य है। निश्चय ही आन्द्रे शेनिए[2] की क्रांतिकारी कविताएँ उस सदी की शृगार हैं। परन्तु उनकी रचना प्राय सदी के अन्त मे हुई। क्लासिकल प्रेरणा धीरे-धीरे मरती जा रही थी। और यद्यपि शेनिए की भावधारा स्वाभाविक थी, उसमें उसने सयम का अधिकाधिक प्रयोग किया जो क्लासिकल चेतना का प्राण था।

: ५ :

उन्नीसवीं सदी

उन्नीसवी सदी नया जीवन, नयी प्रेरणाएँ लिए आयी। मध्यकाल के कवियो में क्रूसेडो और वीर कायो की चेतना वसी थी, पुनर्जागरण युग मे प्राचीन ग्रीक और रोमन प्रवृत्तियाँ प्रेरक हुयी और राष्ट्रीय भावना ने जोर पकडा, उसके वाद का युग वैयक्तिक प्राधान्य का था। ग्यारहवी और पन्द्रहवी सदियो के वीच मध्य युग ने निर्यौन प्रणय का उद्घाटन किया, सत्रहवी और अट्ठारहवी सदियो में पुनर्जागरण की प्रेरणा ने प्रतिष्ठा और विकास पाया। वर्तमान काल जो १९वी सदी के साथ आरभ होता है और प्राय अद्यावधि वर्तमान है, नयी चेतनाओ से मुखरित हुआ। उसकी जिज्ञासा क्लासिकल की समस्त मानवीय जिज्ञासा के विपरीत वैयक्तिक थी। उसने राष्ट्र को अन्य राष्ट्रो से भिन्न करके और व्यक्तियो को अन्य व्यक्तियो से भिन्न करके देखा। प्राचीनता उसने अपने दर्शन से अलग कर दी। वर्तमान और सावधि-वर्तमान उसके स्वप्न और सत्य वने। प्रयोगो की साहित्य में एक वाढ सी आ गई।

---

१ Beaumarchais; २ Andre Chenier

"पुनर्जागरण" की ही भाँति वर्तमान युग की वस्तुत यूरोपीय विशेषता है—साहित्य में उसकी अपनी चेतना जिसने कालातर में भूमण्डल के साहित्य को प्रभावित किया। यह चेतना पहले केवल यूरोपीय भूमि पर अवतरित हुई और वहाँ यूरोप के सारे देशो मे समान रूप से उसका विकास हुआ। पिछली सदी में ही यूरोप के प्रधान देशो मे अग्रदूत उसके सन्देश सुना चुके थे—यग[१] ने इग्लैण्ड मे, रूसो ने फ्रास मे, गेटे[२] ने जर्मनी मे। अब राजनीतिक और औद्योगिक क्रान्ति के साथ जो एक नये ससार का उदय हुआ तो उसमे साहित्य की अभिराम कली भी खिलने से बाकी न रही। क्लासिकल प्रेरणा से लोगो ने मुंह फेर लिया और फ्रास ने बजाय ग्रीस और रोम की ओर देखने के इग्लैण्ड, जर्मनी, इटली तथा स्पेन की ओर देखा जहाँ से उसने सामग्री और शैली दोनो ली। इनसे भी बढकर उसने अपनी ओर देखा, अपने खेतो खलिहानो की ओर, देहात-नगरो की ओर, अपनी जनता की ओर। इस प्रकार रोमाटिक और यथार्थवादी साहित्य का समारम्भ हुआ। अलौकिक और अद्भुत को छोड कृतिकारो ने अपने चारो ओर घटने वाली परिस्थितियो को देखा और उन्हे अपने सृजन का आधार बनाया। फिर भावो के सघर्ष और भावुकता के उन्नयन को भी साहित्यकारो की प्रगाढ निष्ठा मिली जिससे उनकी रोमाटिक सज्ञा सार्थक हुई। इस प्रकार उन्नीसवी सदी की दो प्रधान प्रेरक चेतनाएँ 'रोमाटिक' और "रियलिस्टिक" (रूमानी और यथार्थवादी) साहित्य-सृजन का आधार बनी।

नये युग का आरम्भ करने वाले मादाम द स्ताईल[३] और शातोब्रियाँ[४] थे। जर्मन नेक द स्ताईल[५] ने अपने समीक्षा-सम्बन्धी ग्रन्थो मे साहित्य की साहित्यिकता, भौगोलिकता, धार्मिकता, जातीयता आदि के साथ सापेक्षता स्थापित की। उसके उपन्यास "डैल्फिन" और "कौरिन" ने उपन्यासो के क्षेत्र मे नयी भूमि का निर्माण किया। उसे एक नये नारीत्व और कला का पुट मिला। रने द शातोब्रियाँ, मादाम स्ताईल के बाद हुआ और उसने रोमाटिक तथा यथार्थवादी दोनो प्रकृतियो का विकास साहित्य में अपने आप देखा जिससे उसकी कृतियो में इन चेतनाओ का अनिवार्य और सफल विकास हुआ। शातोब्रिया ने कल्पना और भावुकता से भरे अपने "अताला", "रिनी", "ईसाई धर्म की प्रतिभा" रचे।

फ्रास के आधुनिक युग के साहित्य में लिरिक कविता का फिर से विकास हुआ। १८२० और १८५० के बीच फ्रास में लिरिक कविताओ की बाढ-सी आ गयी। लिरिक जो अतीव सुन्दर, मधुर और शालीन थे। इन लिरिको में वैयक्तिक पुकार "त्रुबादूरो" की वैयक्तिक चेतना से कही सबल है। लामार्तीन[६] मिसे[७] विनी[८], ह्यूगो[९], लिरिक कविताओ

---

१ Young, २ Goethe; ३ Mme de Stael, ४ Rane de Chateaubriand, ५ Germaine Necker de Stael, ६ Lamartine; ७ AlFred de Musset, ८ Vigny, ९ Hugo

की पहली धारा मे बहे और १८१० के लगभग उन्होने अपने शालीन लिरिको की धारा बहाई। लामार्तीन के लिरिक-सग्रहो के शीर्षक ही उनके भाव तत्व को प्रकाशित कर देते हैं। "काव्यगत चिन्तन", "काव्यगत और धार्मिक समन्वय" आदि। इन लिरिको का विषय अधिकर प्रेम है। विषादमय, निराशपूर्ण प्रेम, जिस का प्रवाह अटूट और कर्ण मधुर है। लामार्तीन की योग्यता उसके गेय विषयो की सूझ मे है। अपनी प्रकृति, प्रणय, धर्म आदि के सम्बन्ध मे अपनी वैयक्तिक चेतना मे आल्फ़ैद मिसे प्रयोगवादी था। इससे उसके लिरिको मे विविधता प्रचुर मात्रा में है। उसके "स्पेन और इटली की कहानियाँ" की ध्वनि व्यग्यात्मक और विनोदशील है परन्तु मिसे की काव्य शक्ति की प्रतिष्ठा उसके प्रसिद्ध लिरिक "रातें" के प्रकाशन से हुई। इस सग्रह की कविताएँ हृदय को छू लेती हैं। उनमे प्रस्तुत चित्रो का रूपायन बडी भावुकता और बारीकी से हुआ हैं। उनकी गेयता स्वाभाविक है। उनमे लिरिक तत्व का असाधारण प्राचुर्य है। आल्फ्रे द विनी[1] की कविताएँ उनके मुकाबले कही अधिक अवैयक्तिक हैं, कही अधिक गर्वीली। उसके लिरिक विचार-प्रधान हैं। प्रणाय प्रधान नही। "मूसा" मे उसने चिन्तन की प्रतिभा उद्घाटित की है। "भेडिये की मृत्यु" में उसने स्तोइक शालीनता का चित्रण किया है और "सेम्सन का क्रोध" मे नारीकी चपलता का। ये कविताएँ प्रतीकवादी हैं और इनके विचारो की बुलन्दी बिनी की चिन्तन शक्ति और काव्य-क्रियता की सवल उदाहरण हैं। ह्यूगो का नाम भारत में भी विक्टर ह्यू गो[2] के रूप मे जाना हुआ है। इसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा मे असाधारण साहित्यिक प्रौढता और समृद्धि है। पहले गिनाये लिरिककारो से वह बहुत ऊँचा है। विचारो की बुलन्दी और शब्दो के चयन दोनो में। ६० वर्ष उसने साहित्य-सृजन मे लगाये। १८२२ मे उसकी कविताओ का पहला सग्रह "ओड और कविताएँ" तथा १८८३ मे "सदियो की ख्यात" प्रकाशित हुयी। और इस बीच उस साठ वर्ष के दौरान में उसने सभी प्रकार की कविताएँ सभी विषयो पर लिखी। सुकुमार स्निग्ध पितृस्नेह, चुभते व्यग्य, वीर काव्य और चित्र प्रधान प्रबन्ध। कल्पना को काव्य मे सदेह करने वाला उसका सा दूसरा कवि फ्रेंच लिरिक में दूसरा न हुआ।

१९वी सदी के कवियो की दूसरी पीढी नयी शैली और विचारधारा लिए फ्रेंच साहित्य क्षेत्र मे उतरी। उनका प्राधान्य सदी के प्राय बीच मे हुआ। शैली के निखार, भावों का सयत निरूपण, विषयो की विविधता, उनकी प्रकृति के सूचक थे। इस दल के कवियो की सज्ञा "परनासी" है। यह नाम १८६६ में प्रकाशित काव्य के एक सग्रह—लापर्नास काता पौरे—से पडा। उसके पहले १८५२ मे थियोफील गोतिये[3] ने उन्ही चेतनाओ को अभिव्यक्ति अपने "एमो ए कामो" मे की थी। इस कवि की पहले की कविताए रोमाटिक शैली में लिखी गयी थी। परन्तु इस सग्रह मे उसने एक नये टैकनीक का प्रयोग किया जिसमें

---

१ Alfred de Vigny, २ Victor Hugo, ३ Theophile Gautier

रत्न जडने वाले सुनार और चित्रकार की कला का प्रयोग हुआ था। वैयक्तिक भावोद्बोधन से हटकर यह काव्यधारा परनासी परपरा मे सर्वथा व्यक्ति भिन्न भावना मे सम्पन्न हुआ था और वह "कला कला के लिए" वाले सिद्धात का पोषक था। पॉलिश के विचार से जोजे मार्या द आर दिया[1] की त्रौफी (१८९३) से बढकर कविता-सग्रह शायद उस काल नही रचा गया। "त्रौफी" मे अभिराम सॉनेट का प्रयोग हुआ है और यह सॉनेट प्रण का वर्णन न कर मानव इतिहास के विशिष्ट क्षणो को पुनर्जीवित करते हैं। कल्पना, उपमा, रागमाधुर्य से वह अपने भावो का तन्तु प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार लकोत द लिल[2] की कविताएँ—"पोएम आतीक" (१८५२) "पोएम बरबार" (१८६२), "पोएम त्राजीक" (१८८५) भी इतिहास को ही अपना आधार बनाती है। इस दलका सब से महान कवि शार्ल बोदलेयर[3] है। कुछ लोगो की राय में तो वह १९वी सदी का सब से सुन्दर कवि है। उसकी कविता में "अनोखी कुरुचि" का विस्तार हुआ है और विस्तार मे भयानक और घृणित का भीषण योग हैं। असामाजिक, अत्यन्त कुरूप भावनाएँ कवि की मेधा द्वारा असामान्य सुन्दर कविताओ का कलेवर धारण करती हैं। अनेक बार भावो का विस्तार दार्शनिक चेतना उद्बुद्ध करता-सा जान पडता है। दृष्टान्तत उसकी प्रख्यात साधारण सॉनेट "रसिलमा" शरण की कामना और विषाद से मुक्ति का प्रतीक हो गया है। १८५७ मे प्रकाशित उसका "पाप के फूल" पिछले कवियो का आकर्षण केन्द्र बन गया। १९वी सदी के कवियो के अन्तिम दल की चेतना मे उसी रहस्यवाद का विस्तार मिलता है। इन कवियो के चित्रण और लाक्षणिक रूपायन मे भाव सर्वथा खो जाते है। अस्पष्ट, धूमगत, प्रच्छन्न विचारो की ज्योति यहाँ वहाँ जब-तब दीख जाती है। परन्तु वस्तुत गुह्य और गोपनीय ही जैसे उनके विकास का उद्देश्य हो जाता है और वह भी वास्तव मे उनका विकास नही बल्कि समाधिस्थ चित्रण। प्रच्छन्नता उस रहस्यवाद की शैली और दृश्य दोनो हो जाती है। प्रतीकवाद धीरे-धीरे एकान्त व्यक्तिवाद का रूप धारण कर लेता है। और तथाकथित अन्तर्मुखी प्रवृत्तियाँ अस्पष्ट रहस्यमय भाषा में मूर्त्त होती हैं। भावनाएँ, विचार, प्रवृत्तियाँ इतनी वैयक्तिक तथा निजी हो जाती है कि साधारण भाषा उनके प्रकाश का वाहन नही बन सकती और सूक्ष्म से सूक्ष्मतर की ओर बढता हुआ कवि अवचेतन मे विलीन हो जाता है। उन कवियो का कहना है कि वे विश्व की उन अमूर्त भावनाओ का प्रकाशन करते है जिनके लिए सामान्य भाषा व्यजना का माध्यम नही बन सकती। इस दल के फ्रेंच कवियो में मुख्य थे वर्लेन[4] मलार्मे[5] और रिम्बो[6]। वर्लेन के विचार यद्यपि उनका अभाव ही अधिक है सादे है परन्तु उसके साधन वही हैं। यौन ध्वनि, अस्पष्ट उपमाएँ, कविता का क्रमश शुद्ध

१ Jose-Maria de Heredia, २ Leconte de Lisle, ३ Charles Baudelaire (१८४२-१९०५), ४ Verlaine, ५ Mallarme, ६ Arthur Rimbaud

सगीत की ओर आनयन। वर्लेन की कविताएँ सुन्दर गीत है। माला मे तो जैसे गोपनीय मे डुबकी लगा लेता है। अस्पष्ट, अप्रकट-चेतनाएँ उसकी कविता की प्राण हैं। उनमे कुछ कहा नही जाता केवल, ध्वनि-मात्र उत्पन्न की जाती है। उसकी कविता पढने का अर्थ है उसमें प्रच्छन्न अर्थ की खोज। आर्थर रेम्बो उसी प्रवृत्ति का विस्तार है। उसका प्रकाश्य और भी प्रच्छन्न है। उसकी शैली और भी अस्पष्ट। पिछले कवियो ने उसे केवल सराहा ही नही है वरन देवता तक मान लिया है। परन्तु उसकी यह आस्था वस्तुत गोपनीय की उस भ्रमपूर्ण श्रद्धा सी है जो असामान्य को पूजता है। यह वृत्ति हिन्दी के छायावाद में अनजानी नही है जहाँ बालू की भूमि पर सर्वथा वैयक्तिक, अस्पष्ट दार्शनिक सूचना का आडम्बर खडा किया जाता है, परन्तु जिसको दर्शन से कोई वास्ता नही है। वहाँ बाहर के जीवन और सघर्ष से भाग कर अन्तर्मुख हो रहने की ही प्रवृत्ति है और अस्पष्ट शब्दो की योजना द्वारा एक कृत्रिम ससार की सृष्टि की गयी है।

१९ वी सदी का साहित्यकाल लिरिक के अतिरिक्त उपन्यासो का समृद्धि-काल है। उपन्यासो का प्रकाशन पहले स्वतन्त्र पुस्तको के रूप मे नही हुआ। अखबारो, पत्रिकाओ, जर्नलो में धारावाहिक रूप से पहले उनका छपना शुरू हुआ और इन पत्र-पत्रिकाओ की हजारो प्रतियाँ देखते ही देखते रेलवे बुकस्टालो से उठ जाने लगी। उपन्यासो की लोकप्रियता का इससे भी बड़ा प्रमाण यह था कि हालैंड और बेल्जियम मे उनके सस्करण चुपचाप चुरा लिये गये और वहाँ की भाषाओ मे स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित हुए। उस काल की सामाजिक प्रवृत्तियो की छाया भी इन उपन्यासो मे घनी उतरी। १८३० तक उपन्यासो के स्वतन्त्र प्रकाशन का युग प्रारम्भ हो गया था। सन १८३१ मे ईगो (विक्टर, ह्यूगो) का प्रसिद्ध उपन्यास "नात्रदाम द परी?" प्रकाशित हुआ जिसमे चित्रण की विविधता अनूठेपन का आकर्षण और भावो की तारतम्यता उपन्यास के वस्तुतथ्य के रूप मे बडी सुघडता से आकलित हुए। ईगो की काव्य-साधना का भी प्रतिबिम्ब उसके उपन्यासो पर पडे बिना न रहा। उसके लिए यह कुछ कम गौरव की बात नही कि उसके उपन्यास—कम से कम—"नात्र दाम द परी"[१] और "ले मिजराब्ल"[२]—आज भी प्राय उसी उत्सुकता से पढे जाते हैं जिस उत्सुकता से आरम्भ मे पढे गये थे। यद्यपि फ्रेंच साहित्य के वे प्राय प्रारम्भिक उपन्यास थे। "ले मिजराब्ल" (१८६२) में "समुद्र के पर्यटक" (१८६६) मे और "निन्यानवे" (१८७४) में प्रकाशित हुए। इन सबके उपकरण प्राय समान थे। इनकी कला-चेतना प्राय एकसी थी। चरित्रो का निर्माण ईगो के "लम्बकूर्च" से स्पष्ट और सफल हुआ। मनोरजन और रुचि की भी उसमे पर्याप्त व्यवस्था थी। उपन्यास के क्षेत्र में उनकी काफी ख्याति हुई। उन्ही दिनो प्रॉस्पे मेरिमे[३] ने दो विशिष्ट प्रकार के उपन्यासो का आरम्भ

---

१. Notre-Dame de Paris, २ Les Miserables, ३. Prosper Merimee

किया। ऐतिहासिक उपन्यास दृष्टान्त —ऑनीक दु रैन द शार्ल नौ, १८२९ और लघु कथा अथवा नूवेल (नावेल) जैसे "कोलम्बा" और "कारमा"। मेरिमे के उपन्यासो मे शब्दो का चयन शायद ईगो के उपन्यासो से अच्छा हुआ। अधिक से अधिक भावो की अभिव्यक्ति के लिए उसमे कम से कम शब्दो का उपयोग हुआ। यथार्थवादी समकालीनो के बहुत समीप मेरिमे की कृतियाँ पहुँच गयी। भावो और रसो का अविरल प्रवाह रोमांटिक परंपरा के उपन्यासो मे जार्ज सा[1] की रचनाओ मे पाया जाता है। इन सारे उपन्यासो मे समसामयिक जीवन निरन्तर उभरता गया है।

समसामयिकता का विस्तृत रूप वस्तुत. हेनरी वेल[2] (स्तांधाल) की कृतियो मे प्रकट हुआ। उसके दो उपन्यास "लरूज़ ए ल न्वार" (लाल और काला) (१८३०) और "पारमा का चार्टर घर" (१८३९) काफी प्रख्यात है। दोनो एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न है। पहले की विशिष्टता उसके चरित्रो और घटनाओ मे है, दूसरे की उसके चित्रण और आवेगो के अकन मे। मनोवैज्ञानिक उपन्यासो का आरम्भ फ्रेंच रचनाओ से ही हुआ। स्तांधाल के चरित्र, शक्ति के साथ उसकी कृतियो मे सयत्न फिरते हैं।

ओनोरी द बाल्ज़ाक[3] ने उपन्यासो के क्षेत्र मे एक नई दिशा मे कदम उठाया। अपने समाज की विविध वर्गीय परिस्थितियो को जितना बाल्ज़ाक ने अपने उपन्यासो मे प्रतिबिम्बित किया है उतना शायद ही किसी और कृतिकार से हो सका हो। बाल्जाक की "ला कौमेदी इमैन" १८२९ से १८५० तक के काल प्रसार मे प्रस्तुत हुई। वह कृति कलाकार के प्राय जीवन भर की रचना है। उसने अपनी जनता को चुम्बक की तरह अपनी ओर खींचा भी। साहित्य मे उस कृति का प्रकाशन नितान्त साहस और मौलिक सूझ का काम था। उसने ऐसे उपन्यासो की एक परपरा बाँध दी, जिसमे फ्रैंच-समाज के कुल स्तर, उसके विविध पेशे, उसके प्रान्तो और नगरो का जीवन चलचित्र की तरह प्रत्यक्ष हो उठे जैसे मनुष्य जीवन एक घटना से दूसरी घटना की ओर स्वाभाविक ही बढ़ता जाता है वैसे ही इन उपन्यासो मे जाने हुए व्यक्तियो का एक समूह एक कहानी से दूसरी कहानी की ओर अनायास ही बढता जाता है और अपने इस बढने के क्रम मे निरन्तर अपनी क्रियाओ के साथ जीवन का रहस्य खोलता जाता है। इतना बडा वितान साहित्य के क्षेत्र मे जीवन के उपकरणो से बुना कभी न तना। प्रयास असाधारण ही नही एक जीवन के लिए असम्भव-सा था और बाल्ज़ाक की असामान्य प्रतिभा भी उसे समाप्त न कर पाई यद्यपि उसका वृहदाश प्रस्तुत हो गया। बाल्ज़ाक न केवल फ्रैंच साहित्य मे बल्कि १९वी सदी के सारे साहित्यो मे जाज्वल्यमान आलोक बनकर चमका जिसका प्रकाश दीर्घकालिक प्रमाणित हुआ। उसने अनेक अद्‌भुत उपन्यास लिखे जिनमे "वृद्ध

---

१ George Sand; २ Henri Beyle (Stendhal), ३ Honore de Balzac

गोरिओ[१]" (१८३४) "यूजीनी ग्रान्द" (१८३३) "पूर्ण की खोज" (१८३४) विशेष विख्यात है। इनके चरित्र सर्वथा लौकिक हैं और इनका वर्णन नितात घरेलू है। इनके स्रोत से उस यथार्थ जीवन की धारा बहती है जिसके लिए बाल्ज़ाक की कला प्रसिद्ध है।

बाल्जाक की यथार्थता मॉडल के अभाव मे काफी अप्रिय सत्य लेकर आयी। उस कला का और भी परिष्कार फ्लोबर[२] की निखरी शैली ने किया। "मानव कॉमेडी" (१८५०) और "मादाम बोवारी" (१८५७) दोनो मे उसने प्राय क्रमिक जीवन का उद्घाटन किया। समसामयिक जीवन का, जिसके चरित्र समाज मे जैसे पहचाने जा सकते थे। फ्लोबर ने अनेक उपन्यास और कहानियाँ लिखी। "सन्त एन्थॅनी का प्रलोभन" (१८४९) और "सालाम्बो" (१८६२) मे फ्लोबर ने विदेशो का चित्र खीचा और "भावुक शिक्षण" (१८६९), "सरल हृदय" (१८७७) तथा "मादाम बोवारी" में स्वदेश का। "मादाम बोवारी" ससार के साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है और उपन्यास-कला के दृष्टिकोण से पूर्ण सफल उपन्यासो मे से है। कहानी सहज और असाधारण है। किस प्रकार एक नारी मिथ्या के मोहन से निकल कर उद्घाटित सत्य से साक्षात्कार करती आत्महत्या की ओर चुपचाप बढ जाती है। उपन्यास के चरित्र रोजमर्रा जीवन के हैं। फ्लोबर शैली का उतना ही आचार्य है जितना व्यजना के परिमाणो का। अनुभवी कथावस्तु नितान्त कटी-छँटी स्पष्ट, अनावश्यक से रहित साँचे में ढली हुई उसकी रचनाओ मे उतरती है। भावो का आवेग सर्वथा उचित मात्रा मे चरित्रो की प्रतिक्रियाएँ सिरजता जाता है। सुरुचि की सुघराई अनुपम है। आल्फोज दोदे[३] तथा गी द मोपासा[४] दोनो फ्लोबर के कनिष्ठ समकालीन थे। दोनो ही ने कहानी-साहित्य में अद्भुत क्षमता का परिचय दिया। दोदे उस समय अपनी कथाओ मे चरम कृतिमत्ता को छू लेता है जब उनमे वह दक्षिणी फ्रैंच पृष्ठभूमि और प्रोवास के चरित्रो को रूपायित करता है। "मेरी मिल से पत्र" (१८६९) की कहानियो मे गजब की सुरुचि, भावुकता का सम्मोहन और सूक्ष्म व्यग्य अभिव्यक्त हुए हैं। स्थान-स्थान पर हास्य की धारा फूट पडती है। दोदे के उपन्यासो की ख्याति उसकी कहानियो के बराबर तो नही हुई परन्तु वे कुछ ऐसे बुरे भी नही और उसका "साफो" (१८८४) तो निस्सदेह एक विशिष्ट कृति है। मोपासा ससार के साहित्य के इतिहास में फ्रेंच कहानीकार के रूप मे ही विशेष प्रसिद्ध हुआ। उस दिशा मे वह इतना सफल हुआ कि कम लोगो को यह ज्ञात है कि उसने सुन्दर उपन्यास भी लिखे। "फॉर कौम ला मौर" (१८८९) मे उसकी कहानी कारिता कहानियो की ही भाँति खुल पडी है। परन्तु उसकी कहानियाँ निश्चय ही अद्भुत प्रतिभा का परिचय देती हैं और वह उचित ही उस दिशा में भाषा के

---

१ Old Goriot, २ Flaubert, ३ Alphonse Daudet,
४ Guy de Maupassant

नयी शैली का व्यवहार किया। उसके अनेक स्थल अत्यन्त सुन्दर वन पडे है। आद्रे गीद[1] ने १९२६ मे अपनी प्रसिद्ध कृति "प्रवचक" प्रकाशित कर साहित्य मे एक प्रश्न उपस्थित कर दिया। क्या सैक्स की अव्यवस्था या दुर्व्यवस्था साहित्यिक रचना का उचित प्रतिपाद्य विषय बन सकती है? इस दिशा मे गीद प्रूस के पर्याप्त निकट है परन्तु दोनो की समानता यही तक है क्योकि जहाँ प्रूस वर्णन और विश्लेपण पर जोर देता है वहाँ गीद गति और डायलॉग पर। गीद का चरित्र-चित्रण नितान्त स्पष्ट और सीवा है। चरित्रो का व्यक्तित्व निरन्तर खुलता चला जाता है। सूक्ष्मता चरित्रो के शव्दो आदि मे प्रकट की जाती है। कथानक धीरे-धीरे एक विशेष पद्धति से समूचे प्रवाह से वढता है जिसमे चरित्र और घट-नाए परस्पर सम्वद्ध होते जाते है। गीद की दो रचनाएँ इस दिशा मे विशेप प्रसिद्ध है। "नूरितिर तँरेस्त्र" (१८९७) और "ले काव दु वातिका" (१९१४)। इनमे से पहले मे लिरिक की ध्वनि अदम्य है, दूसरी मे व्यग्यपूर्ण असगतता भरपूर। गीद की सारी रचनाओ में समाज, धर्म और आचार की परपरा के प्रति एक चुनौती है। वह यह कि व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार सव कुछ करने का अधिकार है। उसका यह दर्शन उसके उपन्यासो, राजनीतिक साहित्य और निवन्धो, आत्मकथाओ, कहानियो सभी में फूट पडा है। साथ ही उसकी शैली अत्यत मवुर और रोचक है।

वीसवी सदी के साहित्य का एक टैक्नीक उपन्यास-चक्र है जिसे लाक्षणिक रूप से "रोमाफलव"[2] कहते है। इसी परपरा मे रोमाँ रोला[3] ने अपना "जा क्रिस्तोफ" (१९०-४१२) लिखा जिसमे एक जर्मन गायक का तूफानी जीवन सूत की तरह कहानियो मे गुँथता चला गया। वह कृति सामाजिक जीवन की एक सफल समालोचना है, दुआमेल[4] ने भी इसी प्रकार की दो सीरीज लिखी जिनमे से पहली तो अपने हीरो सालावे के जीवन और आका-क्षाओ को मूर्त्त करती है और दूसरी—"पास्की क्रौनिकल" एक समूचे परिवार के जीवन और सघर्षो को रूपायित करती है। सालावे साधारण स्थिति का आदमी है जो जीवन की कठिनाइयो से घिरा अपने छुटपन से ऊपर उठने का प्रयत्न करता है और अतीव आत्म-बलिदान के वाद उठने में सफल भी होता है। सीरीज़ के दूसरे भाग मे "लौरा पास्की" प्रधान पात्र है और उसका परिवार अपनी परिस्थितियो में डूवता-उतराता है। दुआमेल इस शैली का सफल कृतिकार माना जाता है। जूल रोमें[5] ने पहले तो साहित्य मे अनेक प्रयोग किये पर अन्त मे वह भी उसी रोमाफलव-शैली की ओर झुका जिसमें उसने "नेक-नीयत के आदमी" लिखा। उसके दर्शन की चेतना उस सिद्धात के अनुसार रही है कि व्यक्ति की ही भाँति समूह और दल अथवा समाज भी जन्मते-वढते और मरते रहते है। रोमाँ

---

१ Andre Gide, २ Roman Fleuve, ३ Romain Rolland, ४ Georges Duhamel, ५ Jules Romains

ने इसी विचार से प्रेरित होकर अपने चक्र मे एक समूचे समाज का निरूपण किया है। प्रकट है कि ऐसी रचना मे बहुत कुछ अयुक्त तथा अनावश्यक भी स्वाभाविक ही उतर पडेगा। इसी दल के उपन्यासकार रोजे मार्त दु गार[१] को अपने "तीवो" नामक उपन्यास पर (१९३७) मे नोबुल पुरस्कार मिला। इसमे उपन्यासकार ने परिवार के जीवन का बडा स्पष्ट और हृदयग्राही चित्र खीचा है।

वीसवी सदी के कवियो ने अपनी रचना को जब प्रयोग-बहुल बनाया तो उस परपरा मे प्रतीकवाद से लेकर "सुर्रियलिज्म" तक सभी वाद उतर आये। प्रथम महायुद्ध के वाद कला और साहित्य दोनो मे जो "दादावाद" चला उसमे अर्थ का सर्वथा अन्त कर दिया गया। सार्थकता उसके लिए कोई बात ही न रह गई। फिर "सुर्रियलिज्म" मे तर्क और सगत को सत्यार्थ का अवगुण्ठन मानकर उन्हे सर्वथा त्याग अवचेतन के धूमिल वातावरण को यान्त्रिक और नितान्त अस्वाभाविक स्वप्नो से भरा गया। परिणाम यह हुआ कि साहित्यिक कृतियाँ काव्य रचनाएँ और भावावेगो का रूपायन न होकर सिद्धातो की परिचायक बन गई। भाग्यवश अवचेतन की उस धारा ने लोकनिष्ठ जनता का स्पर्श न किया वह उसे प्रभावित न कर सकी। निस्सदेह नये प्रयोगो ने लिरिक के टैक्नीक मे कुछ प्रगति की परन्तु साहित्य की कला को उसने कितना आगे वढाया यह कहने की आवश्यकता न होगी। हाँ, पौल वालेरी[२] के से कुछ व्यक्ति निश्चय ही उस दिशा मे असफल नही कहे जा सकते। वालेरी की कृतियो की प्रधान धारा दार्शनिक चिन्तन की है। अपनी कविताओ मे वह उन विरोधी तत्वो को जन्म देता है जो सघर्ष करते हुए रचना के क्रम मे आगे वढते हैं और अन्त में वे एक दूसरे में लीन हो जाते है। उसकी शैली नितात सक्षिप्त होती हुई भी कल्पना की सम्पदा से स्पष्ट हो उठी है। पर जहाँ वह केवल प्रतीको मे साव्य का वर्णन करता है निश्चय ही वहाँ वह समझ के परे हो जाता है। "ला जून पार्क" (१९१७) और "सिमेतिएर मारे"(१९२०)नामक कविताओ ने प्रसिद्धि पाई है परन्तु उनकी स्पप्टता फिर भी विवादास्पद है।

ड्रामा के क्षेत्र मे अभिनय, वस्त्राभरण, सगीत, दृश्य, प्रकाश आदि के विषय में इस सदी मे काफी प्रयोग और अनुसधान हुए हे और इस दिशा में निश्चय ही उसने प्रगति भी खूब की है। इस प्रगति का श्रेय अधिकतर गास्तो[३]-बाती,[४] जार्ज दुले[५], जाक कोपो[६], जा कोक्तो[७], आदि को है। ड्रामा मे अनेक टैक्नीको का भी आरम्भ हुआ जिनके प्रवर्तक लजू रोमे[८], सारमा[९] और लोनोर्मा[१०]आदि हैं। महान् नाट्यरचना, इनकी कृतियो को

---

१. Roger Martin du Gard, २ Paul Valery, ३ Gaston, ४ Baty, ५ Georges Dull n, ६ Jacques Copeau, ७ Jean Cocteau, ८ Jules Romain, ९ Sarment, १० Lenormand

कहना उचित न होगा। वैसे नाटक के क्षेत्र मे पाल गेराल्दी[1] फ्लेर[2] और कैलेवे[3] तथा मार्सल पाग्नोल[4] जाने हुए व्यक्ति हैं। वैसे ही गम्भीर नाट्यरचना में हेनरी बर्नस्तीन[5] और फ्रास्वा द किरेल[6] भी। स्वप्निल कल्पनाओ का नाट्यकर्त्ता मतरलिंक[7] गायन प्रधान छदात्मक नाटको के रचयिता रोस्ता[8] तथा चमत्कार सम्बन्धी कृतियो के स्रष्टा क्लोदेल[9] हुए। समकालीन नाटक को उन्होने अपने चित्रण के रग और शैली विविधता से आकर्षक बनाया।

बीसवी सदी मे साहित्य के उपकरणो और सिद्धातो पर विस्तृत कथोपकथन हुए। परिणामत साहित्य के इतिहास और समीक्षा-शास्त्र की अभिसृष्टि हुई। सदी के पूर्वार्द्ध का अधिकतर समय सी साहित्यिक प्रवृत्ति ने लिया। साथ ही समाजवादी और कम्यु-निस्ट राजनीतिक चेतना तथा रचनाओ ने अपना दूरगामी प्रभाव और देशो की ही भाँति फ्रास पर भी डाला। बर्गसो[10] ने अपने दर्शन का निरुपण प्रौढ गद्य शैली मे किया और सत्य को अपने रूप से देखने का प्रयत्न किया। अपने विचारो को उसने "सृजनशील विकास" (१९००) मे रखा। दर्शन का शुष्क व्यापार उसकी लेखनी और शैली के मधुर योग से न केवल सह्य वरन् आकर्षक हो गया। उसमें उपन्यास की रोचकता ने घर किया। बर्गसो की कृति ने साहित्यिक सक्रियता को बडा बल दिया यद्यपि साम्यवादी चेतनाओ का प्रसार विपरीत परिस्थितियो के बावजूद भी फ्रैंच-साहित्य के क्षेत्र में निरन्तर होता गया।

द्वितीय महायुद्ध के बाद मार्क्सवादी साहित्यिको का एक प्रगतिशील दल साहित्य क्षेत्र मे उतर पडा है जो जीवन को आशा और विश्वास के साथ देख रहा है। उसने आक्रान्त मानव को आक्रान्ता के विरुद्ध ताल ठोककर प्रेरित करने वाला साहित्य रचा है और रचता जा रहा है। उसकी प्रेरणा में सर्वहारा मानव के उच्छ्वास मूर्तिमान हो रहे हैं और उनकी रचनाओ का साध्य स्वय सर्वहृत मानव के सघर्ष में सहायक हो रहा है।

: ७ :

लोक-साहित्य

फ्रास का लोक-साहित्य बडा समृद्ध है। उसकी जादू सम्बन्धी लोक कथाएँ अभी हाल तक अमित मात्रा मे प्रचलित रही हैं। उनका प्रसार प्राय मौखिक ही रहा है। ये कथाये अधिकतम पश्चिमी यूरोप की लोक कथाओ के साथ ही समान आधार से ली गयी

१. Paul Geraldy, २ Flers, ३. Caillevet; ४ Marcel Pagnol, ५. Henri Bernstein, ६ Francois de Curel, ७ Maeterlinck, ८. Rostand, ९ Claudel; १० Bergson

है। जिससे अधिकतर एक सी है—"दैत्य सहार," "अडे मे पिशाच का हृदय", "नीली दाढी", "जादू की उडान", "युवक जो जानना चाहता था कि भय क्या वस्तु है", "बच्चे और पिशाच", "दानव की निधि चुराने वाला किशोर", "खोई पत्नी ढूँढने वाला पुरुष", "खोए पति की खोज", "सोर्ड सुन्दरी", "सेदरेला", "थल-जल पर चलने वाली नाव", "शीश पर्वत की शाहजादी," "पिता की सजीवनी की खोज मे बेटे," कृतज्ञ पशुओ द्वारा खोजी अँगूठी," "मेज", "गधा और घडी" "पशुओ की रहस्यमयी बात सुनकर फिर अपनी दृष्टि पा लेने वाला अन्धा बालक", "बलवान जॉन और मूर्ख पिशाच", "करविहीन कुमारी" "हिम-श्वेत", "गाने वाली हड्डियाँ"—ये कहानियाँ लोक कहानियो के फ्रेंच सग्रहो में मिलती है। इनके अतिरिक्त अनेक कहानियाँ पूर्व और दक्षिण मे कही सुनी जाती है, अधिकतर केवल फ्रैंच कल्पना की उपज है। फ्रैंच जनता के अध विश्वास मे जो अलौकिक और अपार्थिव का उसके जगलो-मैदानो, नदी पहाडो आदि मे निवास है उससे लोक-साहित्य का अनायास निर्मित हो जाना स्वाभाविक ही है। इसी प्रकार भगवान और सन्तो द्वारा किए सैकडो चमत्कारो की धार्मिक कथाएँ भी उस भाषा मे सुरक्षित हैं। वे विशेषतया ब्रितनी[1] मे प्रचलित है। इसी प्रकार अनेक रोमाटिक सामाजिक कहानियाँ भी फ्रैंच साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन गयी है।

इस साहित्य का निस्सदेह अब फ्रास मे ह्रास होने लगा है और देहाती दुनियाँ उसे भूल चली है। उन्नीसवी सदी के पिछले काल तक फ्रास मे देहाती प्रणय, नृत्य व्यग्य आदि के गीतो का बाहुल्य था - एक प्रकार के सामाजिक अथवा धार्मिक विषादमय गीत, कोप्लेन्त[2] कहलाते थे। हजारो लोकगीत फ्रास से १७ वी १८वी सदी मे कैनेडा और मिसीसिपी की घाटी मे ले जाये गये और वहाँ के जगलो पहाडो को प्रतिध्वनित करने लगे। खेद है कि आज फ्रास के अपने देहातो से लोक-साहित्य उठा जा रहा है।

---

१ Brittany, २ Complaintes

१९. मिस्र का प्राचीन साहित्य

मिस्र का इतिहास अति प्राचीन है । वस्तुत यह कहना कठिन है कि उससे भी प्राचीन कोई सभ्यता कही थी । उसकी समकालीन सभ्यताएँ भारत की सिन्धु सभ्यता और दक्षिणी इराक की सुमेरी सभ्यता थी । परन्तु जहाँ देखते ही देखते ये दोनो सभ्यताएँ (कम से कम भारतीय) लुप्त हो गईं, मिस्री सभ्यता जीवित रही और मिस्र के राजकुल दजला-फरात की घाटी तक छापे मारते रहे ।

ससार की सबसे प्राचीन लिखावट सम्भवत मिस्र के पिरामिडो की है । लिखावट पहले चित्रपरक थी फिर घसीट की कई स्थितियो से गुजरी और क्रमश हिरोग्लीफक[1] हिरेटिक[2] तथा डेमोटिक[3] कहलाई । ईसाई और इस्लाम धर्मों की सहारक चोट ने मिस्र का अत्यधिक साहित्य नष्ट कर दिया । जो कुछ बचा रहा है वह इन्ही पिरामिडो और मदिरो की दीवारो, मूर्तियो और पेपिरस (एक प्रकार का नरकटी कागज) पर है ।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, अनेक पुरानी सभ्यताओ के जन्म के पहले ही प्राचीन मिस्र काल के अन्तराल मे सो चुका था । इससे उसका साहित्य भी उसी अनुसार पुराना है । जो कुछ हमे आज प्राचीन मिस्र की लिपि और इबारत के रूप मे उपलब्ध है, उस सबको तो साहित्य की सज्ञा नही दी जा सकती पर साधारणत उसका स्तर विभाजन किया जा सकता है ।

मिस्र की लिखित सामग्री पाँच भागो मे उसकी भापा के विकास के अनुकूल ही बाँटी जाती है । ये भाग है—(१) प्राचीन मिस्री-साहित्य इतिहास के आदि काल और लिपि के आरम्भ से लेकर प्राय २४०० ई० पू० तक । (२) मध्य मिस्री—आज के साहित्य विभाजन के अनुसार "क्लासिकल-युग" २४०० से १३०० ई० पू० तक । यह मिस्री साहित्य का सबसे समृद्ध युग था । (३) उत्तरकालीन मिस्री—१५५० ई० पू० से ७०० ई० पू० तक । समृद्ध होते हुए भी इस युग मे ह्रास आरम्भ हो गया था । (४) डेमोटिक काल—७०० ई० पू० से ४७० ई० पू० तक । डेमोटिक भापा और लिपि दोनो का नाम है । व्यापार, धर्म और जादू सम्बन्धी तथा अनेक साहित्यिक लेख खण्ड उस काल के मिले है जिनमे प्रकट है कि उस युग में साहित्यिक प्रयास किसी न किसी रूप में हुआ है । (५) कोप्टिक मिस्री युग—जब कोप्टिक[4] भापा मे ईसाई धर्म की पुस्तको का मिस्री मे अनुवाद हुआ ।

मिस्री साहित्य के मूल्याकन मे पहले तो भापा की कठिनाई है । प्राचीन भापा में कही स्वरो का प्रयोग नही होता था । केवल व्यजन ही लिखे जाते थे जिससे ठीक-ठीक

---

१ Hieroglyphic, २ Hieratic, ३ Demotic, ४ Coptic

लिपिबद्ध साहित्य का अर्थ लगाना या उसकी ध्वनियो का माधुर्य आँकना कठिन हो जाता है। फिर भी जो लेख पढे जा चुके है और उपलब्ध है, उनसे मिस्री साहित्य पर कुछ न कुछ प्रकाश पडता है। वह बहुत तो नही है और इसका कारण यह है कि उस सभ्यता के बाद ही मनुष्य की उस भाव सत्ता और अभिव्यजना का विकास हुआ है जिसे हम साहित्य कहते हैं, फिर भी जो कुछ उपलब्ध है उसका निकटतम ब्यौरा इस प्रकार है।

एक बात तो आरम्भ मे ही स्पष्ट रूप से कह दी जा सकती है कि "एपिक" (ऐतिहासिक, वीर, महा-काव्य और नाटक, ड्रामा) जिस रूप में हम उन्हे आज जानते है, प्राचीन मिस्र की साहित्यिक परपरा मे न थे। "एपिक" काव्य का निकटतम रूप हमें मिस्र की उस काव्य प्रशस्ति मे मिलता है जो रामसेज द्वितीय[१] की हत्तीसघ[२] की विजय (१२९५ ई० पू०) पर रची और खोदी गई थी। प्रशस्ति वाचक होने से कविता अतीव अतिरजित है और यद्यपि यह स्वीकार किया जा सकता है कि राजा की व्यक्तिगत वीरता से वह विजय मिली, नि सन्देह उसकी शब्द-योजना नितान्त हास्यास्पद है। स्वय रामसेज उससे इतना सन्तुष्ट था कि उसने अपने तीन-तीन मदिरो पर खुदवा कर उसे घोषित किया। वस्तुत वह इतनी सुन्दर मानी गई कि सौ वर्ष बाद रामसेज तृतीय (११९८-६७ ई० पू०) उसकी शब्दावली अपनी प्रशस्ति मे जोडने से न चूका। पेपिरस पर उसकी एक नकल आज भी सुरक्षित है।

आज की परपरा के नाटक तो मिस्र के साहित्य मे न थे। परन्तु मध्यकालीन यूरोप के से रहस्यमय धार्मिक नाटक निश्चय ही तब के मिस्र मे खेले और पसन्द किए जाते थे। "प्राचीन राजकुल" के पिरामिडो की भीतरी दीवारो पर खुदे कुछ ऐसे नाटको के खण्ड मिले है जिनसे इस निष्कर्ष की पुष्टि होती है। किसी प्राचीन धार्मिक नाटक का डायलॉग (बातचीत) उस पश्चात्कालीन अभिलेख में भी मिला है जिसे मिस्री पुराविद् "मेम्फिस धर्मशास्त्र का अवशेष"[३] कहते हैं।

वस्तुत मिस्री नाटक का प्राचीनतम खण्ड वह है जिसमे "बारहवे राजकुल" के राजा सेनुसर्त प्रथम[४] का राज्यारोहण (१९७२ ई० पू०) दिखाया गया है। नाटक में राजा ने तो स्वय राजा का पार्ट किया था और देवताओ का पार्ट मन्दिर के पुरोहितो ने खेला था। अभिनय सम्भवत साम्राज्य के सभी प्रधान नगरो मे हुआ था। जान पडता है कि इस प्रकार राज्यारोहण का प्रदर्शन मिस्र मे प्राचीनतम काल से होता आया था और जब तक वह स्वतन्त्र रहा तब तक होता रहा था। भारत में रामलीला में राम का राज्यारोहण (राजगद्दी) भी उसी परपरा में है। अबिदोम[५] मे प्राप्त एक समाधिपट पर एक

---

१ Ramesses II, २ Hittite Confedration, ३ Monument of Meenphite Theology, ४ Senusert I, ५ Abydos

नाटक-खण्ड खुदा हुआ है जिसमे लोकप्रिय देवता ओसिरिस[१] के जीवन-मरण की कथा नाटकीय रूप से प्रदर्शित है।

मिस्री लिरिक कविताएँ विपुल मात्रा मे उपलब्ध हैं और उनका काव्य-स्तर भी काफी ऊँचा है यद्यपि भाषा की उच्चारण-पद्धति नष्ट हो जाने के कारण उसकी छन्द-शैली का अनुमान नही किया जा सकता। सम्भवत मिस्री लिरिको मे तुक का प्रयोग नही होता था। परन्तु वाक्यो की लम्बाई आदि से पता चलता है कि उसमे पक्तियो का विभाजन और उनकी सख्या आदि का परिमाण "स्टैन्जा" के रूप मे रहता था। मिस्री लिरिक कविता मे श्लेषात्मक प्रयोगो का बाहुल्य था। वस्तुत श्लेषात्मक शैली का उपयोग केवल पद्य मे ही नही, गद्य तक में होता था। उन लिरिको का विषय-परिमाण प्रभूत है। प्राचीनतम लिरिक पिरैमिडो के अभिलेखो मे है। उनमें साहित्यिक गुण का अभाव है। उनका प्रयोग मन्तर के रूप मे हुआ है जिससे स्वर्ग जाती हुई राजा की आत्मा को राह मे किसी प्रकार की क्षति न हो। उन्ही के बीच जहाँ तहाँ राजा की प्रशस्ति गायी गई है। इनका विकास पहले मध्यकालीन राजकुलो के "तावूत लेखो" में हुआ फिर नए "राजकुल की मर्त्य-पुस्तको" में। इनका परिचय १३७५ ई० पू० के उस लिरिक मे हुआ जो एकेश्वर "अत्तन" की प्रार्थना मे गाई गई थी। तूतन खामन के पिता फेरो अखनातून[२] ने मिस्र के सारे देवताओ का अन्त कर एक सूर्य देव की प्रतिष्ठा की थी। वह देवता अत्तन था। अखनातून सम्भवत ससार का पहला एकेश्वरवादी था। उस लिरिक कविता की रचना शायद उसी ने की थी।

"क्लासिकल" युग का वहुलतम लिरिक-काव्य वारहवे राजकुल के राजा सेनुसर्त तृतीय[३] की प्रशसा मे गाए गए है। ये निश्चय ही प्राचीन राजकुल कालीन कविताओ से भावरूप में सुन्दर है परन्तु अठारहवे—उन्नीसवे राजकुलो की कविताएँ इनसे कही अभिराम है। इनमें सबसे मधुर वह है जो फैरो-सम्राटो मे सबसे महान थुतमोज़ तृतीय[४] की प्रशस्ति मे रची गई है और कारणक के मन्दिर मे शिलापट्ट पर अभिलिखित है। कविता शालीन है, वस्तुत अतिरजित, उसकी उपमाएँ हृदयग्राही और शक्तिम है। यह इतनी लोकप्रिय हुई कि सदियो पीछे तक फैरो इसकी इवारत और पक्तियाँ अपनी प्रशस्तियो मे प्रयुक्त करते रहे।

मिस्र से प्रचुर मात्रा मे प्रेम सम्वन्धी लिरिक साहित्य मिला है। अभाग्यवश व अशत ही सरक्षित है जिससे उनका उचित मूल्याकन हो सकना कठिन है। उनमे कल्पना का वाहुल्य है। उनमे से एक वाटिका स्थित प्रणयीयुगल का वर्णन करती है। वगीचे के

---

१ Osiris, २. Pharaoh Akhnaton, ३ Senusert III (१८७८–४० B C), ४ Thutmose III (१४७० B C)

वृक्ष उनका मधुर भाषणो द्वारा स्वागत करते है। लिरिको मे सुन्दरतम एक का वह भाग है जिसमें निराश मानव का अपनी आत्मा से डायलॉग सुरक्षित है। आत्मघात की भावना से प्रेरित वह कहता है—

आज मेरे मन में मृत्यु है
रुग्ण के स्वास्थ्य लाभ के बाद जैसे,
जैसे बीमारी से उठने के बाद।

आज मेरे मन में मृत्यु है
अगुरू की सुरभि की भांति
आंधी के दिन आश्रय में बैठे-से।

आज मेरे मन में मृत्यु है
कमल की उन कलियो की गन्ध जैसे,
जो मदिरा भरे चषक पर तैर रही हो।
आज मेरे मन में मृत्यु है
जैसे तूफान लौट गया हो,
जैसे समर से लोग लौट पडे हो।

आज मेरे मन में मृत्यु है
जैसे आकाश बुहर जाता है,
जैसे आदमी अनबझे को बूझ लेता है।

आज मेरे मन में मृत्यु है
घर लौटने की उस आदमी की उत्कट कामना की भांति
जो सालो कैद में गुजार चुका हो।

ऊपर कहा जा चुका है कि मध्यकालीन राजकुलो का युग साहित्य की दृष्टि मे बडा समृद्ध है। इसी काल कहानी साहित्य का भी आरम्भ हुआ। इन सुन्दर कहानियो मे से एक "नौविप्लूप माझी" की है। यह कहानी कहानी के भीतर की कहानी है—"मह-स्तरजनी चरित" की कहानी सी। मांझी का जहाज तूफान मे टूट जाता है। उसके साथी समुद्र मे डूब जाते है। वह अकेला बहता हुआ एक ऐसे जादू के द्वीप में पहुँचता है जहां का स्वामी एक सर्प है। सर्प देवोत्तर शक्तियो से सम्पन्न है। उसकी कथा सुनता और उस पर दया करता है। फिर बहुमूल्य उपहारो से एक जहाज भरकर उसी से मांझी को भेज देता है। कहानी मांझी स्वयं कहता है। इसमे कल्पना का एक अद्भुत जगत् निर्मित है। परन्तु इन कहानियो में सबसे सुन्दर "सिनुहे की कहानी" है। यह कहानी अनेक आधारो से मिली है, पेपिरस पर लिखी, चूना मिट्टी के पट्टो पर खुदी। प्रकट है कि सदियो लोग इसकी

नकल करते और इसे पढते रहे थे । बारहवे राजकुल के फेरो एमेनेम्हेत प्रथम[१] की मृत्यु (अथवा हत्या) के बाद एक मिस्री अमीर सिनुहे देश छोडकर भाग जाता है। भागने का कारण जैसे जानबूझकर वर्णन में दबा दिया गया है जिससे रहस्यमय होकर कहानी का प्रभाव और बढ जाता है। वह सीरिया मे शरण लेकर वहाँ के अमीर की कन्या से विवाह करता है। उसका वहाँ एक परिवार खडा हो जाता है पर उसे वतन नही भूलता। स्वदेश लौटने के लिये वह लालायित है। फेरो के मरने पर जब सेनुसेर्त प्रथम राज्यारोहण करता है, तब उसे मिस्र लौटने का आदेश मिलता है और वह लौट आता है। कहानी के अनेक स्थल बडे सुन्दर हैं। भागते समय सिनुहे की मन स्थिति, सीरिया के आक्रान्ता शत्रु के साथ उसका द्वन्द्व युद्ध आदि बडी आकर्षक रीति से वर्णित है। जब वह लौटकर स्वदेश के राज दरबार मे जाता है तब उसकी विदेशी वेश-भूषा का वर्णन कर कथाकार सुन्दर विनोद प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार एक कहानी "वाचाल किसान" की है। मजिस्ट्रेट के इजलास मे वह अपना मुकदमा इस खूबी और वाक्य रीति से कहता है कि हाकिम बगैर फैसला दिए बार-बार उससे उसकी कहानी परपरा है जिससे वह सम्राट् के मनोरंजन के लिए लिख ली जाय। कहानी की परपरा प्राय' हजार वर्ष बाद तक मिस्र मे जीवित रही। पश्चात्कालीन राजकुलो के समय की कहानियाँ तो अनेक उपलब्ध हैं, एक डेमोटिक भाषा मे भी सुरक्षित मिली है। इनमे से एक "मनोरजक कहानी" अभागे राजकुमार की है, उसके प्रणय और भाग्यहीन परिणाम की। "दो भाइयो की कहानी" भी बडी प्रभावोत्पादक है और "वेनामुन की यात्रा" तो और भी। वेनामुन पतनोन्मुख मिस्री साम्राज्य का राजदूत है जो अनेक दिशाओ मे भ्रमण करता है परन्तु जिसका अपमान इसलिए होता है कि मिस्री प्रताप का प्रभाव अब विदेशो मे मिस्रियो की रक्षा नही कर पाता।

गीज़ा के स्फिक्स के पास जो एक शिलापट्ट मिला, इस पर फेरो की शारीरिक शक्ति सम्बन्धी—विशेषत खेल की–प्रदर्शनो से भरी अनेक कहानियाँ एकत्र गुँथी मिली। इनके पाठ अन्यत्र भी मिले हैं। इसकी विशिष्ट कहानी आमेनहोतेप द्वितीय[२] सम्बन्धी। उसमे लिखा है कि अट्ठारहवे राजकुल के इस राजकुमार ने (जो बाद मे फेरो हुआ) तीरन्दाजी, नौका खेने और रथाश्वो के शासन और सचालन मे अपने सारे प्रतिद्वन्द्वियो को परास्त कर दिया। इससे उसका इतिहास प्रसिद्ध पिता थुनमोज तृतीय बडा प्रसन्न हुआ।

---

१ Amenemhet I (१९९२–७२ B C), २ Amenhotep II (१४५०–२५ B C.)

इनके अतिरिक्त कुछ आचार (अथवा नैतिक) ज्ञान सम्बन्धी साहित्य प्राय प्रत्येक युग का उपलब्ध हैं जो असामान्य है। इनको साधारणत ज्ञान-पोथियाँ कहते हैं। इनमे से अन्तिम पोथी, जो कहावतो के रूप मे तरुणो को दिए उपदेश है, १००० ई० पू० के लगभग प्रस्तुत हुई। इनमे से प्रत्येक पोथी के साथ उसके स्रष्टा का नाम सबद्ध है। ये कहावतें बाइबिल की कहावतो से इतनी मिलती हैं कि इसमे सन्देह नही कि एक ने दूसरे से ली हैं और चूंकि सम्भवत मिस्री कहावतें पहले की हैं, बाइबिल ने ही उन्हे वहाँ से लिया होगा। इनमे से विशिष्टतम सगह उन कहावतो का है जिनका रचयिता पाँचवे राजकुल (लगभग २४०० ई० पू०) का एक वजीर प्ताहोतेप[1] है। इसकी नकल अन्यत्र से भी मिली है। इसमे सग्रहीत नसीहतें विवाह, नारी, भोजन आदि के सम्बन्ध मे हैं। साथ ही सरकारी अफसरो, राजदूतो, नेताओ, के सम्बन्ध मे भी कुछ हैं, और कुछ माता पिता और गुरुजनो के प्रति आदर सम्बन्धी हैं।

इन्ही नसीहतो की परपरा मे कुछ ऐसा साहित्य भी है जो सामाजिक न्याय और अच्छे शासन की माँग करता है। उससे प्रकट है कि देश किस मात्रा मे गरीब था और फैरो की अमित स्वर्ण सम्पत्ति के बावजूद भी प्रजा कितनी कगाल थी। साहित्य का एक वर्ग बडा दिलचस्प है। लगता है कि लिखने का पेशा, जैसा कि हजारो-लाखो अभिलेखो से प्रकट भी है, जोर पर था और महत्वाकाक्षी पिता अपने बच्चो को लिपि सिखाने वाले स्कूलो मे भरती करा दिया करते थे। वहाँ ये लडके पेपरिस साहित्य खडो की नकल किया करते थे। इस प्रकार की काफी लिखावटें इन लडको की मिली है, जिन पर उनके गुरुओं का सही किया हुआ भी है। इस वर्ग की लेख मालाओ से मिस्र के प्राचीन-साहित्य पर बडा प्रकाश पडा है क्योकि नकल करते समय विद्यार्थियो को गुरु प्राचीन कथा साहित्य आदि के खण्ड दे दिया करते थे। ये लेख मालाएँ स्वय तो पीछे की हैं, प्राय उन्नीसवे बीसवें राज-कुलो के समय की, परन्तु उन पर मश्क किया हुआ साहित्य पुराना है। एक मजे की बात यह है कि लेखक अपना पेशा निहायत अच्छा समझते थे और अपनी तुलना मे व्यापारियो और सैनिको को तुच्छ। एक पेपिरस लिपिपत्र पर दोनो के अप्रत्याशित मृत्यु आदि के दुर्भाग्यो पर दुख प्रकट किया गया है।

कॉप्टिक मे भी कुछ साहित्य लिखा गया, पर यह अधिकतर ईसाई साहित्य है, बाइबिल आदि के अनुवाद के रूप मे। तब तक मिस्र के समुन्नत युगो का ह्रास हो चुका था और जो कुछ वहाँ लिखा गया वह मिस्रियो ने नही विदेशियों ने लिखा।

---

१ Ptahhotep

२०. युगोस्लाव-साहित्य

युगोस्लाव का साहित्य कई स्लाव का आज सम्मिलित साहित्य है। परन्तु प्राय दो सदी पहले स्लाव की जातियाँ अलग-अलग कबीलो मे बँटी थी और उस देश मे वे तब आयी जब रोम और कुस्तुन्तुनियाँ के परस्पर विरोधी चर्चों मे द्वन्द्व छिडा था। स्लोवीन[1] और क्रोआत्त[2] रोम के प्रभाव मे आये। उन्होने अपना साहित्य लैटिन भाषा और रोमन अक्षरो मे लिखा और पूर्व के सर्व[3] तथा मान्तीनेग्रिनो[4] ने कुस्तुन्तुनिया के परपरावादी ग्रीक चर्च का आश्रय लिया और ग्रीक अक्षरो मे अपने भाव व्यक्त किये। वही अक्षर आज भी युगोस्लाविया मे चल रहे है।

युगोस्लाविया का साहित्य भी अन्य पूर्वी यूरोपीय जातियो की ही भाँति पहले लैटिन मे था। वह अधिकतर धार्मिक था। प्राचीनतम साहित्य वहाँ अन्य जातियो की अपेक्षा सर्वों का है। अन्य मध्यकालीन जातियो की ही भाँति सर्वो का साहित्य भी धर्म-प्रधान था। ग्यारहवी सदी से ग्रीक से अनुवाद होने लगे। साथ ही सर्वों ने अपने सतो की कहानियाँ भी अपनी भाषा मे लिखी। इस प्रकार स्टीफेन[5] और सत सावा[6] ने अपने-अपने पिता के जीवन-चरित लिखे। स्वय सन्त सावा का जीवन चरित सर्व भाषा मे मिलता है। वर्लाम[7] और जोज़ाफत[8] तथा सिकन्दर महान् की कहानियाँ भी तब लिख डाली गयी। वस्तुत यह कहानियाँ सारे यूरोप के मध्ययुग की है।

प्रकट है कि ऊपर लिखे साहित्य का महत्त्व अधिक न था। वास्तविक महत्त्व लोकसाहित्य का है जो उस काल रचा अथवा एकत्र किया गया। यूगोस्लाव का वह साहित्य किसी यूरोपीय जाति के तद्वत् साहित्य से कम नही। उनके लोक-गीत तो काफी प्राचीन है और नारियो के गीत तो कम से कम १३ वी सदी ई० के है। ये गीत व्यक्तिगत हैं और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को चित्रित करते हैं।

लोकसाहित्य का महत्त्वपूर्ण अग उन वीर काव्यो का है जिनमे "नेमान्या कुल" का चरित वर्णित है। वीर काव्यो के दो विशिष्ट भाग है, एक वे जिनका सम्बन्ध १३८९ के कोसोवो के युद्ध से है और दूसरे वे जो हिरो मार्को काल्यिविच से सम्बन्ध रखते हैं। ये "एपिक" और कुछ पिछले काल की कविताएँ युगोस्लाव लोक-काव्य की सुन्दरतम रचनाएँ है। इन कविताओ मे अधिकतर तो अपनी घटनाओ की समकालीन है, इनमे से पिछली

---

१ The slovenes, २ The Croats, ३ Serbs, ४ Montenegrins; ५ Stephen; ६ St Sava, ७ Varlaam, ८ Josaphat

सभवत १६ वी सदी की हैं। समय इनका चाहे जो भी हो इसमे सन्देह नही कि है वे अत्यन्त सुन्दर और हृदयग्राही। १८ वी सदी के अन्त मे जब उनका ज्ञान पश्चिमी यूरोप के सहृदयो को हुआ तो वे इनकी मार्मिकता पर मुग्ध हो गए। लोकसाहित्य, विशेषत लोकगीत, यद्यपि वे पहले सर्वो की वोली मे लिखे गये थे। कालान्तर मे युगोस्लाविया के निवासी हर भाग में पहुँचे और वहाँ की स्लाव जातियो के समान रूप से उपास्य बन गये। एडियाटिक सागर के तट पर बसने वाले उस्कोको के भी सर्वों की भाँति अपने गीत थे। उस्कोक वीर माँझी थे और तुर्क विजेताओ के जहाजो पर निरन्तर छापे मारते रहते थे।

काव्यो मे कोसोवा की युद्धभूमि पर वनेज लाजार की मृत्यु का वर्णन बडा मार्मिक है। उनमें उसके साथियो—मिलोश ओविलिच, युग वोगदान और उसके दस वेटो—के कृत्यो का सुन्दर वर्णन हुआ है। ये सब के सब उस दिन उसी युद्ध में मारे गये थे। फिर उनमे मार्को काल्येविच और उसके अद्भुत घोडे शरत्स का भी अभिराम वर्णन हुआ है। मार्को वाल्कन जातियो का हीरो है जिसने उनके लिए वडी-वडी मुसीवतो का सामना किया था। क्रोआत, स्लोवीन और सब तीनो जातियो ने उसके चरित्र गाये हैं। लोक साहित्य में पिछली घटनाओ का भी छन्दोबद्ध वर्णन हुआ है। १८०३ के सर्व-द्रोह का भी उसमे विस्तृत उल्लेख हैं। इन गीतो की सख्या हजारो में है। इनको वस्तुत युगोस्लाव अध गायको ने सुरक्षित रखा है। अपने भारत की ही भाँति वहाँ भी अधे गायक ज्यादातर तन्त्रियो पर पुराने गीत गाया करते थे। तन्त्री को "गुस्ल्या" कहते थे और उसके सहारे अन्धे गायको को "गुस्ल्यार।"

युगोस्लाविया के जिन भागो मे रोमन कैथोलिक धर्म का प्रचार था वहाँ लैटिन से भिन्न अन्य देशी वोलियो मे साहित्य की प्रगति नितान्त थोडी हुई क्योकि चर्च बरावर लैटिन के अनिवार्य प्रयोग पर जोर देता था। एड्रियाटिक तट के निवासियो में फिर भी चर्च के उस अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना जगी और उनमे स्लाव भाषा की रक्षा के लिए एक आन्दोलन ही चल पडा।

आधुनिक अर्थ में साहित्य का उदय दुब्रोवनिक मे हुआ जान पडता है। दुब्रोवनिक नगर राज्य था। रेनेसा काल का बना। वहाँ वेनिस के अनुकरण मे धनी सौदागरो ने सुन्दर इमारते वनवानी शुरू कर दी थी और धीरे-धीरे वह नगर सुन्दरतम नगरो में गिना जाने लगा था। १४ वी सदी से ही वहाँ युगोस्लाव साहित्य के एक रूप का उदय होने लगा था। जो प्राचीन विजातीनी साहित्य और लोकगीत दोनो से भिन्न था—वह साहित्य इटैलियन रेनेसा के प्रभाव से विकसित हुआ। अभिजात कुलो के तरुण इटली गए और वहाँ उन्होंने साहित्य के नेताओ से साक्षात्कार किया। "तास्सो" पेत्रार्च और ब्रवाद्दूरो के साहित्य से वे प्रभावित हुए। पेत्रार्च[1] का एक शिष्य १४वी सदी मे दुब्रोवनिक में पढाने भी लगा था।

---

१ Patrarch

इटली की लोकप्रिय साहित्यिक प्रवृत्तियो से प्रभावित इन तरुणो ने अपने अनुवादो और स्वतन्त्र कृतियो मे इटली से सीखी भावनाओ का समावेश किया।

१५वी सदी के प्राय मध्य से कवियो का कार्य शुरू होता है और इनकी एक खासी अदद भी है। इन कवियो मे शिशिको मेंचेतिच[1] था। साहित्य जो वना निश्चय ही अधिकाश मे कृत्रिम था क्योकि वह पुराने रूढिगत भावो और रूपो के अनुसार ही प्रस्तुत हुआ था। जव यह दोप उन कविताओ मे स्पष्टत प्रकट होने लगा था तब अपने छदो का उन्होने इटैलियन मॉडल के अनुरूप आकार भी वदल दिया। इन छद-शोधको में प्रवान दिंको रानीना[2] और दिंको ज्लातारिच[3] थे।

उस आन्दोलन का विशिष्ट कवि ईवा गुन्दुलिच[4] था। उसने क्लासिकल शैली के अनेक नाटक लिखे—जैसे "आर्यादने" "प्रोसर्पिना पर वलात्कार" और "दुब्रावका" उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति वीस सर्गों मे समाप्त प्रवन्ध काव्य "ओस्मान" हैं। उसके १४वें और १५वे सर्ग आज उपलव्ध नही। वह काव्य तुर्कों के अत्याचार का अकन करता है और चौदहवे तथा पन्द्रहवे सर्ग उस दिशा में विशेष सयत्न थे। अनुमानत. इसी कारण उन्हे तुर्कों ने नष्ट कर दिया। कहानी मे पोलेण्ड के युवराज व्लादिस्ला के "ओस्मान" के विरुद्ध उस ऐतिहासिक सघर्ष का वर्णन है जिसका अत १६२१ के चेकिम के युद्ध मे हुआ। काव्य की कहानी १६२३ मे ओस्मान की मृत्यु तक चलती है। गुन्दुलिच ने अपने काव्य को तास्सो की रचना "आजाद जेरुसलम" के आधार पर रचा था परन्तु उसमे उसने वहुत कुछ तो पोलेण्ड के इतिहास का अकन किया था और अधिकतर युगोस्लाव के नेताओ के गौरव का। "ओस्मान" दुब्रोवनिक साहित्य की सुन्दरतम कृतियो मे है। दुब्रोवनिक-कवि अधिकतर स्वान्त सुखाय लिखते थे और उनकी कृतियाँ हस्तलिपि के रूप मे मित्रो मे ही घूमती रहती थी। इसी कारण इस काव्य का प्रकाशन भी १८२६ के पहले न हो सका। दुब्रोवनिक साहित्य शृखला का अतिम विशिष्ट साहित्यकार इग्नात ज्योर्गिच[5] था। अविकतर गद्य रचनाएँ तो उसने लैटिन में की परन्तु "मारी माग्दालिनी" नामक नाटक अपनी वोली मे लिखा।

युगोस्लाविया के स्लोवीन भाग मे साहित्य एक पृथक रूप वारण कर रहा था। प्रिमोज त्रुवार[6] ने अपनी भाषा मे धार्मिक पुस्तको का अनुवाद शुरु कर दिया था। साथ ही उसने अपनी स्वतन्त्र पुस्तको और लेखो द्वारा भी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय का प्रचार किया। परन्तु अभाग्यवश उसकी कृतियाँ कैथोलिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप नष्ट कर दी गयी।

---

१. Sisko Mencetic (१४५७-१५२७), २. Dinko Ranina (१५३६-१६०७), ३. Dinko Zlataric (१५५८-१६०९), ४. Ivan Gundulic (१५८८-१६३८), ५ Ignat Gergjic (१६७५-१७३७), ६ Primoz Trubar (१५०८-८६)

सभवत १६ वी सदी की है। समय इनका चाहे जो भी हो इसमे सन्देह नही कि है वे अत्यन्त सुन्दर और हृदयग्राही। १८ वी सदी के अन्त मे जब उनका ज्ञान पश्चिमी यूरोप के सहृदयो को हुआ तो वे इनकी मार्मिकता पर मुग्ध हो गए। लोकसाहित्य, विशेषत लोकगीत, यद्यपि वे पहले सर्वो की वोली मे लिखे गये थे। कालान्तर मे युगोस्लाविया के निवासी हर भाग में पहुँचे और वहाँ की स्लाव जातियो के समान रूप से उपास्य वन गये। एडियाटिक सागर के तट पर वसने वाले उस्कोको के भी सर्वो की भाँति अपने गीत थे। उस्कोक वीर माँझी थे और तुर्क विजेताओ के जहाजो पर निरन्तर छापे मारते रहते थे।

काव्यो मे कोसोवा की युद्धभूमि पर वनेज लाजार की मृत्यु का वर्णन वडा मार्मिक है। उनमें उसके साथियो—मिलोश ओविलिच, युग वोगदान और उसके दस वेटो–के कृत्यो का सुन्दर वर्णन हुआ हैं। ये सब के सब उस दिन उसी युद्ध मे मारे गये थे। फिर उनमे मार्को काल्येविच और उसके अद्भुत घोडे शरत्स का भी अभिराम वर्णन हुआ है। मार्को वाल्कन जातियो का हीरो है जिसने उनके लिए वडी-वडी मुसीवतो का सामना किया था। क्रोआत, स्लोवीन और सव तीनो जातियो ने उसके चरित्र गाये है। लोक साहित्य में पिछली घटनाओ का भी छन्दोवद्ध वर्णन हुआ है। १८०३ के सर्व-द्रोह का भी उसमे विस्तृत उल्लेख है। इन गीतो की सख्या हजारो मे है। इनको वस्तुत युगोस्लाव अध गायको ने सुरक्षित रखा है। अपने भारत की ही भाँति वहाँ भी अधे गायक ज्यादातर तन्त्रियो पर पुराने गीत गाया करते थे। तन्त्री को "गुस्ल्या" कहते थे और उसके सहारे अन्वे गायको को "गुस्ल्यार।"

युगोस्लाविया के जिन भागो मे रोमन कैथोलिक धर्म का प्रचार था वहाँ लैटिन से भिन्न अन्य देशी वोलियो मे साहित्य की प्रगति नितान्त थोडी हुई क्योकि चर्च वरावर लैटिन के अनिवार्य प्रयोग पर जोर देता था। एड्रियाटिक तट के निवासियो में फिर भी चर्च के उस अन्याय के विरुद्ध विद्रोह की भावना जगी और उनमे स्लाव भाषा की रक्षा के लिए एक आन्दोलन ही चल पडा।

आधुनिक अर्थ मे साहित्य का उदय दुब्रोवनिक मे हुआ जान पडता है। दुब्रोवनिक नगर राज्य था। रेनेसा काल का वना। वहाँ वेनिस के अनुकरण मे धनी सौदागरो ने सुन्दर इमारते वनवानी शुरु कर दी थी और धीरे-धीरे वह नगर सुन्दरतम नगरो में गिना जाने लगा था। १४ वी सदी से ही वहाँ युगोस्लाव साहित्य के एक रूप का उदय होने लगा था। जो प्राचीन विजातीनी साहित्य और लोकगीत दोनो से भिन्न था—वह साहित्य इटैलियन रेनेसा के प्रभाव से विकसित हुआ। अभिजात कुलो के तरुण इटली गए और वहाँ उन्होंने साहित्य के नेताओ से साक्षात्कार किया। "तास्सो" पेत्रार्च और त्रवादूरो के साहित्य से वे प्रभावित हुए। पेत्रार्च[1] का एक शिष्य १४वी सदी में दुब्रोवनिक में पढाने भी लगा था।

---

[1] Patrarch

इटली की लोकप्रिय साहित्यिक प्रवृत्तियो से प्रभावित इन तरुणो ने अपने अनुवादो और स्वतन्त्र कृतियो मे इटली से सीखी भावनाओ का समावेश किया।

१५वी सदी के प्राय मध्य से कवियो का कार्य शुरू होता है और इनकी एक खासी अदद भी है। इन कवियो मे शिशिको मेंचेतिच[1] था। साहित्य जो वना निश्चय ही अधिकाश मे कृत्रिम था क्योकि वह पुराने रूढिगत भावो और रूपो के अनुसार ही प्रस्तुत हुआ था। जब यह दोप उन कविताओ मे स्पष्टत प्रकट होने लगा था तब अपने छदो का उन्होंने इटैलियन मॉडल के अनुरूप आकार भी वदल दिया। इन छद-शोधको मे प्रधान दिंको रानीना[2] और दिंको ज्लातारिच[3] थे।

उस आन्दोलन का विशिष्ट कवि ईवा गुन्दुलिच[4] था। उसने क्लासिकल शैली के अनेक नाटक लिखे—जैसे "आर्यादने" "प्रोसर्पिना पर वलात्कार" और "दुन्नावृका" उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति वीस सर्गों मे समाप्त प्रवन्ध काव्य "ओस्मान" है। उसके १४वें और १५वे सर्ग आज उपलव्ध नही। वह काव्य तुर्कों के अत्याचार का अकन करता है और चौदहवे तथा पन्द्रहवे सर्ग उस दिशा मे विशेष सयत्न थे। अनुमानत. इसी कारण उन्हे तुर्कों ने नष्ट कर दिया। कहानी मे पोलेण्ड के युवराज व्लादिस्ला के "ओस्मान" के विरुद्ध उस ऐतिहासिक सघर्ष का वर्णन है जिसका अत १६२१ के चेकिम के युद्ध में हुआ। काव्य की कहानी १६२३ मे ओस्मान की मृत्यु तक चलती है। गुन्दुलिच ने अपने काव्य को तास्सो की रचना "आजाद जेरुसलम" के आधार पर रचा था परन्तु उसमे उसने वहुत कुछ तो पोलेण्ड के इतिहास का अकन किया था और अधिकतर युगोस्लाव के नेताओ के गौरव का। "ओस्मान" दुव्रोवनिक साहित्य की सुन्दरतम कृतियो मे है। दुव्रोवनिक-कवि अधिकतर स्वान्त सुखाय लिखते थे और उनकी कृतियाँ हस्तलिपि के रूप में मित्रो में ही घूमती रहती थी। इसी कारण इस काव्य का प्रकाशन भी १८२६ के पहले न हो सका। दुव्रोवनिक साहित्य शृखला का अतिम विशिष्ट साहित्यकार इग्नात ज्योर्गिच[5] था। अधिकतर गद्य रचनाएँ तो उसने लैटिन मे की परन्तु "मारी माग्दालिनी" नामक नाटक अपनी वोली मे लिखा।

युगोस्लाविया के स्लोवीन भाग में साहित्य एक पृथक रूप धारण कर रहा था। प्रिमोज त्रुवार[6] ने अपनी भाषा मे धार्मिक पुस्तको का अनुवाद शुरू कर दिया था। साथ ही उसने अपनी स्वतन्त्र पुस्तको और लेखो द्वारा भी प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय का प्रचार किया। परन्तु अभाग्यवश उसकी कृतियाँ कैथोलिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरुप नष्ट कर दी गयी।

---

१. Sisko Mencetic (१४५७-१५२७), २. Dinko Ranina (१५३६-१६०७); ३ Dinko Zlataric (१५५८-१६०९), ४ Ivan Gundulic (१५८८-१६३८), ५ Ignat Gergjic (१६७५-१७३७), ६ Primoz Trubar (१५०८-८६)

१८ वी सदी के मध्य तक युगोस्लाव-साहित्य एक नयी दिशा की ओर चल पडा था। शासन हैप्सबर्ग साम्राज्य का था जिसकी सीमाओ मे जर्मन भाषा का प्रभुत्व था और वह भाषा जर्मन भिन्न प्रजा पर भी लादी जा रही थी। उधर तुर्की साम्राज्य युगोस्लाविया के अन्य कुछ भागो पर काबिज था जिससे उधर पढने-लिखने से कोई वास्ता ही न रहा। साहित्य का भी वहाँ पनप सकना कठिन था। इससे क्राति की आवश्यकता स्पष्ट हो गई। आखिर प्रतिक्रिया हुई। रूस ने युगोस्लाविया की सहायता की। उसने अपने विद्यापीठ सर्वों के लिए खोल दिए और सर्व वही जाने लगे। पहले जोवान रिजिच[1] धर्म शास्त्रीय अध्ययन के लिए वहाँ गया। रूस से लौटकर विद्वानो ने सर्व साहित्य को पुनर्जीवित करने मे वडे प्रयत्न किए।

उनसे कही अधिक कार्य उन लोगो ने किया जो १८ वी सदी के वुद्धिवाद के प्रभाव मे आए। वह वुद्धिवाद आस्ट्रिया-हगरी मे "जोजेफिनवाद" कहलाता था। उससे आकृष्ट होकर अनेक सर्व तरुण विएना पहुँचे। इन वुद्धिवादी विशिष्ट लेखको मे पहला दोसितेय ओब्रादोविच[2] था। वह पहले साधु था फिर गृहस्थ हो गया। उसने पश्चिमी देशो की यात्रा की। १७८९ मे वह विएना मे वस गया। परन्तु १८०४ मे जव सर्व-विप्लव हुआ तव वह जमून होता स्वतन्त्र सर्वियो मे पहुँचा। और वहाँ का शिक्षा-मत्री हो गया। वेलग्रेड में ही वह १८११ मे मरा। यद्यपि उसकी रचनाएँ लोकप्रिय नही हो सकी पर उसने सर्व साहित्य की प्रगति के लिए राह वना दी।

शीघ्र ही युगोस्लाविया के अन्य भागो मे भी विद्रोह हुए। साथ ही यूरिय यापेल्य[3] ने वाइविल का अनुवाद किया और अनेक स्वतन्त्र पुस्तकें लिखी। जीगा जोइस[4] के चतुर्दिक भी अनेक वुद्धिवादी लेखक एकत्र हो गए। तभी वालेन्तिन वोदनिक[5] ने भी लुवियाना मे लोक-साहित्य की खोज शुरू कर दी। क्रोअशिया मे भी कुछ प्रयत्न हुए परन्तु वहाँ साहित्य का सृजन अपेक्षा कृत कम हुआ। वहाँ लेखको मे विशिष्ट फ्रासिसकी साधु आन्द्रिया काचिच-मियोसिच[6] था। जिसने "स्लाव जाति की चारुवार्ता" लिखा। उसमे उसने विविध स्लावो के प्राय २०० गीत प्रकाशित किए।

साहित्य के उन क्षेत्रो मे भी स्तुत्य प्रयत्न हुए। प्राग मे जोज़ेफ दोब्रोवस्की[7] ने स्लाव भाषाओ के अध्ययन के लिए एक वैज्ञानिक आधार नियत किया। जरनेज कोपितार[8] ने वही कार्य स्लोवीन स्लाव के लिए किया। उसने अन्य स्लाव शाखाओ से भी सम्पर्क स्थापित

---

१ Jovan Rijic (१७२६-१८०१), २ Dositej Obradovic (१७४२-१८११); ३ Jurij Japelj (१७४४-१८०७), ४ Ziga Zois, ५ Valentin Vodnik (१७३८-१८१९), ६ Andrija Kacic Miosic (१७०२-६०), ७ Josef Dobrovsky, ८ Jernej Kopitar (१७८०-१८४४)

कर लिया। वुक काराद्चिच[1] सर्ब तरुण भी उसके सम्पर्क मे आया। इस सर्ब तरुण ने अपनी भापा के लिए एक व्याकरण लिखा था। उसके सर्ब लोक गीतो के सग्रह ने सर्बो पर गहरा प्रभाव डाला। उसी प्रकार का कार्य क्रोआतो में ल्युदवित गया[2] ने किया। इस प्रकार उन्नीसवी सदी के पूर्वार्द्ध में स्लावो ने अपने नये साहित्य निर्माण के लिए पर्याप्त सावन तैयार कर लिए।

उस काल के कवियो मे प्रधान स्थान पैतर पेत्रोविच न्येगोश[3] का है। वह मान्टिनेग्रो का विशप था। उसका काव्य "पार्वतीय स्रज" आधुनिक स्लाव साहित्यो की मुकुट मणि है उसमे मान्टिनेग्रो के तुर्को से आजाद होने की कहानी लिखी है। न्येगोश उदारवादी और रोमान्टिक आन्दोलनो तथा ईसाई वर्म और इस्लाम के सन्धिस्थल पर खडा है। उसी पीढी मे वर्तमान स्लोवीन काव्यधारा का प्रवर्तक फ्रास प्रेसर्न[4] हुआ। उस क्षेत्र मे उसका सहायक मातिया चोप[5] था - प्रेसर्न कवि था और उसने अपनी भाषा को ऋद्ध करने के विचार ने अन्य भाषाओ से भी शब्द लिए।

देश मे एक "इलीरियक" आन्दोलन भी चला। उसका उद्देश्य स्लोवेनिया, क्रोआशिया और डाल्मेशिया को मिलाकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र इलीरिया कायम करना था। १८४८ तक के अनेक युगोस्लाव कवियो को इस आन्दोलन ने प्रभावित किया। क्रोआत स्लावो मे इस आन्दोलन का वडा जोर था और स्वय स्ताको व्राज[6] ने उसमें अपना योग दिया। प्रसिद्ध क्रोआत ईवा माजुरानिच[7] स्वय उससे प्रभावित था। "स्माइल आगा केगिच की मृत्यु" मे एक क्रूर तुर्क सरदार की कथा है जिसको डालमेशिया की आजादी के लिए लडने वाले उस्कोको ने मार डाला था। साहित्यिको का एक दल पेतर प्रेरादोविच[8] के साथ हो गया जो रहस्यवादी था।

१८४८ का साल सारे यूरोप के राजनीतिक और साहित्यिक इतिहास में क्रांतिकारी महत्व का था। वाल्कन देशो मे तो उस साल के आन्दोलन ने वडा जोर पकडा। स्वतन्त्र सर्बिया और अन्य स्लाव देशो में भी हैप्सवर्ग राजकुल के विरुद्ध विद्रोह की प्रवल भावना जगी और साहित्यिक (तथा राजनीतिक) सस्थाएँ जैसे "ओम्लादीना" (तरुण) यकायक उठ खडी हुयी। यह आन्दोलन रोमाटिक परपरा का था परन्तु पश्चिमी यूरोप की तद्विषयक परपरा से भिन्न। उसमे राष्ट्रीयता की भावना अधिक थी। "इलीरियन" आन्दोलन स्लाव जाति का आन्दोलन था, यह सर्वो, क्रोअतों, स्लोवीनों का अलग-अलग जातीयता का आन्दोलन था।

---

१. Vuk Karadjic (१७८७-१८६४), २ Ljudevit Gaj (१८०९-७२),
३ Petar Petrovic Njegos (१८१३-५१), ४ France Preseren (१८००-४९);
५ Matija Cop (१७९७-१८३५), ६ Stanko Vraz (१८१०-५१),
७ Ivan Mazuranic (१८१४-९०), ८ Petar Preradovic (१८१८-७२)

फाक लेव्स्तिक[1] ने लोक बोलियो के आधार पर एक भाषा के निर्माण का प्रयत्न किया। परिणामत स्लोवोन गद्य का जन्म हुआ। वह १९ वी सदी की एक हस्ती था। इस आन्दोलन ने सर्वो में अनेक प्रसिद्ध लेखक उत्पन्न किये। इनमे प्रधान जमाज योवान योवानोविच[2] था। उसकी काव्य धारा ब्राको रादिचेवच[3] सर्व राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित रोमाटिक लिरिको से ही प्रादुर्भूत हुई थी। योवानोविच की काव्य धारा अपनी जनता को प्राय तीस वर्षो तक प्रभावित करती रही। उसने "एपिक", लिरिक, बाल-साहित्य लिखे और उन्हे किसान सस्थाओ की प्रगति का साधन बनाया। जूरा याक्शिच[4] भी उसी दृष्टिकोण का था उसने कविताएँ तो लिखी ही अपनी सर्व जनता के जीवन पर कहानियाँ लिखने वाला वह पहला साहित्यकार था। उसने सर्व-मध्ययुग पर भी कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी।

क्रोआत लेखको मे प्रधान फ्राजो मार्कोविच[5] और ओगुस्त सेनोआ[6] थे। इनमे पहला आलोचक था दूसरा कवि और उपन्यासकार। १८७० के बाद युगोस्लाव लेखको पर रूसी यथार्थवादी साहित्यकारो का प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। उसी काल रूसी जनवादी साहित्यिक आन्दोलन, साहित्य और कला को सामाजिक समाधान का साधन बनाने पर जोर देने लगा था। पिछले युग की निष्क्रियता वहाँ अनीश्वरवादी लोक चेतना मे बदल चली थी। चेर-निगेव्स्की[7] दोब्रोल्युबोव[8] और पिसारेव[9] ने जो समसामयिक समाज व्यवस्था पर चोट की उसका स्लाव लेखको पर बडा प्रभाव पडा। युगोस्लाविया के लेखक उस दिशा में चैतन्य हुए। रूस से इन नये विचारो को लेकर बुल्गेरिया के ल्युबेन कारावेलाव[10] और सर्व स्वेतोजार मार्कोविच[11] बेलग्रेड लौटे। मार्कोविच तो १८६८ से अपनी मृत्यु तक पुराने लेखको की चाबुक और तरुणो का उपास्य बना रहा। उसने शुद्ध कला, रोमाटिक और भावुकतावाद आदि का घोर विरोध किया। उसने जनता और किसानो के जीवन को साहित्य और कला का आधार बनाने पर जोर दिया। सरकार को यह दृष्टिकोण न रुचा और उसे देश छोडकर भागना पडा। मार्कोविच से प्रभावित मिलोवान ग्लीसिच[12] ने गोगोल[13] की "मृत आत्माए" टाल्सटाय[14] के "युद्ध और शाति" और गोन्चारोव[15] के "आब्लोमोव" के अनुवाद किए। उसकी अपनी कहानियाँ भी बहुत कुछ

---

१ Fran Levstik (१८३१-८७); २ Zmaj Jovan Jovanovic १८३३-१९०४), ३ Branko Radicevic (१८२४-५३), ४ Djura Jaksic (१८३२-७८), ५ Franjo Markovic (१८४५-१९१४), ६ August Senoa (१८३८-८१), ७. Chernyshevsky, ८ Dobrolyubov, ९ Pisarev, १० Lyuben Karayelov, ११ Svetozar Markovic (१८४६-७३), १२ Milovan Th Glisic (१८४३-१९०८), १३ Gogol, १४ Tolstoy, १५ Goncharov

उसी प्रेरणा से प्रस्तुत हुई। अन्य यथार्थवादी साहित्यकारो मे प्रधान याको वेसेलिनोविच[१] और सिमो मातावुल्ज[२] थे। इनमे दूसरे ने अपने उपन्यासो में उस्काको का जीवन चित्रित किया।

क्रोआत यथार्थवादी प्रकृतिवादी लेखको मे मुख्य सान्दोर जाल्स्की-वाकिच[३] था। स्लोवीनो मे योसिप युर्चि[४] विशेषत याको केर्स्निक थे।[५] स्लोवीनो मे निस्सदेह यथार्थवादी प्रेरणा इतनी प्रभावोत्पादक न हो सकी। उनके विशिष्ट साहित्यकार ईवा ककर[६] ने तो प्रतीकवाद की भी शरण ली।

उन्नीसवी सदी का अन्त होते ही युगोस्लाव लेखको मे प्रतीको और उनसे सम्वन्धित आन्दोलनो का आकर्पण जगा। वोजीस्लाव ईलिच[७] जो सर्व कवियो मे सवसे विद्वान था इसी प्रवृत्ति का कवि रह चुका था। फिर भी पुश्किन[८] और लरमन्तोव[९] ने उस पर प्रभाव डाला और उसके साथ ही अगली पीढी के लेखको का दृष्टिकोण विशेपत प्रथम महायुद्ध से कुछ काल पूर्व आशावादी हो चला। योवान दचिच[१०] और वोरिस्लाव स्ताकोविच[११] क्रमश. कवियो और लेखको मे इस दृष्टिकोण के प्रतिनिधि थे। यह दूसरा प्रसिद्ध स्लाव उपन्यास "दूपित रक्त" का लेखक था। क्रोआतो मे उस काल का विशिष्ट साहित्यकार दुब्रोवनिक का निवासी ईवो वोजनोविच[१२] हुआ जिसने अपनी रचनाओ में अभिजातीयता की टूटती दीवारो का अकन किया और समूची युगोस्लाव जाति की एकता पर जोर दिया। आन्ते ट्रेसिच पाविचिच[१३] कारदूची[१४] के प्रभाव मे आया। उसने निराशावादी दर्शन का अपनी "ट्रिलोजी" (तीन भाग में ड्रामा) "फिनिस रर्ई पुब्लिकी" मे वितन्वन किया पर इटली को प्रजासात्मक प्रवृत्तियो का सिंहावलोकन करने के कारण मुसोलिनी ने उसका दूसरा भाग "उतिका का कातो" जव्त कर लिया।

स्लोवीन साहित्य का विशिप्ट कवि ओतोन जुपान्विक[१५] था। उसने पिछले आन्दोलन की अपने दृष्टिकोण द्वारा समप्टि प्रस्तुत की। प्रथम महायुद्ध के वाद सर्व, क्रोआत औ स्लोवीन समान राष्ट्र के अग वने। इससे "युगोस्लोवेन्स्का ओम्लादिना" आन्दोलन को वडी शक्ति मिली और युगोस्लाविया के साहित्य मे एकता भी आई। यह एकता कुछ

---

१ Janko M Veselinovic (१८६२-१९०५), २ Simo Matavulj (१८५२-१९०८), ३ Sandor Djalski-Bakic (जन्म १८५४), ४. Josip Jurcic (१८४४-८१), ५ Janko Kersnik (१८५२-९७), ६. Ivan Cankar (१८७६-१९१८), ७ Vojislav J. Ilic (१८६२-९४), ८ Pushkin, ९ Lermontov, १० Jovan Ducic (जन्म–१८७४), ११ Borislav Stankovic (१८७६–१९२७); १२. Ivo Vojnovic (१८५७–१९२९), १३ Ante Tresic—Pavicic (१८६७–१९४०), १४ Carducci, १५. Oton Zupancic (ज० १८७८)

फ्राक लेव्स्तिक[1] ने लोक वोलियो के आधार पर एक भाषा के निर्माण का प्रयत्न किया। परिणामत स्लोवोन गद्य का जन्म हुआ। वह १९ वी सदी की एक हस्ती था। इस आन्दोलन ने सर्वो में अनेक प्रसिद्ध लेखक उत्पन्न किये। इनमे प्रधान जमाज योवान योवानोविच[2] था। उसकी काव्य धारा ब्राको रादिचेवच[3] सर्व राष्ट्रीय भावना से अनुप्राणित रोमाटिक लिरिको से ही प्रादुर्भूत हुई थी। योवानोविच की काव्य धारा अपनी जनता को प्राय तीस वर्षो तक प्रभावित करती रही। उसने "एपिक", लिरिक, वाल-साहित्य लिखे और उन्हे किसान सस्थाओ की प्रगति का साधन वनाया। जूरा याक्शिच[4] भी उसी दृष्टिकोण का था उसने कविताएँ तो लिखी ही अपनी सर्व जनता के जीवन पर कहानियाँ लिखने वाला वह पहला साहित्यकार था। उसने सर्व-मध्ययुग पर भी कुछ ऐतिहासिक कहानियाँ लिखी।

क्रोआत लेखको मे प्रधान फ्राजो मार्कोविच[5] और ओगुस्त सेनोआ[6] थे। इनमे पहला आलोचक था दूसरा कवि और उपन्यासकार। १८७० के बाद युगोस्लाव लेखको पर रूसी यथार्थवादी साहित्यकारो का प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। उसी काल रूसी जनवादी साहित्यिक आन्दोलन, साहित्य और कला को सामाजिक समाधान का साधन बनाने पर जोर देने लगा था। पिछले युग की निष्क्रियता वहाँ अनीश्वरवादी लोक चेतना मे बदल चली थी। चेर-निशेव्स्की[7] दोब्रोल्युवोव[8] और पिसारेव[9] ने जो समसामयिक समाज व्यवस्था पर चोट की उसका स्लाव लेखको पर वडा प्रभाव पडा। युगोस्लाविया के लेखक उस दिशा में चैतन्य हुए। रूस से इन नये विचारो को लेकर बुल्गेरिया के ल्युवेन कारावेलाव[10] और सर्ब स्वेतोजार मार्कोविच[11] वेलग्रेड लौटे। मार्कोविच तो १८६८ से अपनी मृत्यु तक पुराने लेखको की चावुक और तरुणो का उपास्य बना रहा। उसने शुद्ध कला, रोमाटिक और भावुकतावाद आदि का घोर विरोध किया। उसने जनता और किसानो के जीवन को साहित्य और कला का आधार बनाने पर जोर दिया। सरकार को यह दृष्टिकोण न रुचा और उसे देश छोडकर भागना पडा। मार्कोविच से प्रभावित मिलोवान ग्लीसिच[12] ने गोगोल[13] की "मृत आत्माए" टाल्सटाय[14] के "युद्ध और शाति" और गोन्चारोव[15] के "आव्लोमोव" के अनुवाद किए। उसकी अपनी कहानियाँ भी बहुत कुछ

---

१ Fran Levstik (१८३१-८७), २ Zmaj Jovan Jovanovic १८३३-१९०४), ३ Branko Radicevic (१८२४-५३), ४ Djura Jaksic (१८३२-७८), ५ Franjo Markovic (१८४५-१९१४), ६ August Senoa (१८३८-८१), ७ Chernyshevsky, ८ Dobrolyubov, ९ Pisarev, १० Lyuben Karayelov, ११ Svetozar Markovic (१८४६-७३), १२ Milovan Th Glisic (१८४७-१९०८), १३ Gogol, १४ Tolstoy, १५ Goncharov

२१. रूसी साहित्य

: १ :

विदेशी साहित्य से संबंध

रूसी साहित्य का इतिहास वस्तुत १९ वी सदी मे एलेग्जैण्डर प्रथम के साथ आरम्भ होता है, यद्यपि इसे उसका सर्वथा प्रारम्भ नही कहा जा सकता। रूसी साहित्य का सम्बन्ध स्वाभाविक ही रूसी भाषा से है और फिर रूसी इतिहास से भी, यद्यपि ऐसा नही कि साहित्य सर्वथा भाषा के आरम्भ से ही सम्पर्क रखता हो। साहित्य भाषा का कलेवर धारण करके भी उसके विकास की स्थिति-विशेष मे और उसके बोलने वालो के हर्ष-विषाद, जय-पराजय, सघर्ष जनित भावावेगो के अनुकूल मुखरित होता है। इस विचार से तो निश्चय ही रूसी साहित्य का इतिहास रूसी जनता का इतिहास है परन्तु चूकि इस अव्यवसाय मे उन सीमाओ का समा सकना सम्भव नही, उसकी मूल मजिलो का ही निर्देश कर देना यहाँ समीचीन होगा।

स्लाव जाति का ७ वी-८ वी सदियो में नीपर नद के तट पर खीव, स्मोलेन्स्क और नवगोदर नामक नगरो में बसा होना सम्भवत उस दिशा मे पहली मजिल थी। इन्ही तीनो नगरो में रूसी जाति की पहली सस्कृति फूली। मॉस्को और सेन्टपीटर्सबर्ग को खीव की ही कालातर मे विरासत मिली। इन तीनो नगरो का हवाला रूसी-साहित्य के प्राचीनतम अभिलेखो मे मिलता है।

रूसी साहित्य के इतिहास पर प्रभाव डालने वाली दूसरी ऐतिहासिक घटना नार्वे आदि उत्तर प्रदेशो के रहने वालो का रूस पर हमला था। उन्होने उस इतिहास पर अपने गहरे पदचिन्ह छोडे और स्वय अधिकतर रूसियो मे ही खो गए। अगली मजिल रूस में ईसाई धर्म के प्रचार की थी। १०वी सदी के चौथे चरण मे खीव के राजा व्लादिमीर[1] ने वाइजेन्टियन के रोमन सम्राट् की भगिनी से विवाह किया और तत्काल ईसाई धर्म का प्रचार रूस में होने लगा। इस प्रकार रूस पश्चिमी जगत् की बौद्धिक परिधि के सम्पर्क में आया। स्लावो के बीच विशेषकर बल्गेरिया और सर्बिया में मकदूनिया की बोली का बलात्कार प्रचार भी उसी दिशा में एक कदम था क्योकि यही प्रचार एक सदी बाद रूसी स्लावों के बीच भी जारी हुआ। पहली बार रूस का बने बनाये विदेशी साहित्य से सम्बन्ध स्थापित

---

१ Vladimir

आसान न थी। इसमें दो स्वतन्त्र सास्कृतिक धाराओ लैटिन-इटैलियन-जर्मन और ग्रीक बिजान्तीनी-वाल्कनी-का परस्पर विरोधी योग था। पिछले युद्ध मे सर्व और क्रोआत विरोधी शक्तियों की ओर से लडे थे इससे यह कार्य और कठिन हो गया था।

साम्यवाद ने अब युगोस्लावी आन्दोलनों में प्रवेश किया। तरुण अधिकतर उस क्षेत्र मे प्रयत्नशील हुए। मिरोस्लाव क्रलेजा[1] ने अपनी एक कृति लेनिन को समर्पित की और अपने ग्रन्थ "क्रोआत देवता मार्स" मे युद्ध के सम्वन्ध में जनता का दृष्टिकोण प्रकट किया। नात्सी आक्रमण (१९४१) के समय उसकी मृत्यु हो गई जिससे अकाल ही उसके साहित्यिक नेतृत्व और भाव-सम्पदा का अन्त हो गया।

निकोलाज वेलीमिरोविच[2] आलोचक के रूप मे यूरोप और अमेरिका में प्रसिद्ध हो चुका है। उसने न्येगोश का अच्छा अध्ययन किया।

युगोस्लाव काव्यधारा मे लोक-काव्य का मूलत योग है। लोक साहित्य की परंपराओ में वर्तमान साहित्यिक दृष्टिकोण के समर्थन की अद्भुत शक्ति है। इसी कारण युगोस्लाविया का साहित्य पृथ्वी पर अपने पॉव टिकाए रख सका है और जीवन से सीधा आहार पाता आ रहा है। एकता का आन्दोलन भी साहित्य मे वहाँ अच्छा चला। और इस्लामी बोस्निया की साहित्य शाखा भी मूल धारा मे इधर मिलती जा रही है।

द्वितीय महासमर के वाद साम्यवादी दष्टिकोण का साहित्य अधिक मात्रा मे प्रकाशित होने लगा है, उसमे युगोस्लाविया के विविध प्रातो के लोक साहित्य का योग है वहॉ का रग मच लोक साहित्यिक परपरा में प्राय अभी खडा किया गया है। नृत्य आदि लोक कलाओ का पुनरुत्थान अत्यन्त सराहनीय है।

---

१ Miroslav Krleza, २ Nikolaj Velimirovic

मॉस्को जैसे उधर का नया रोम बन गया । फिर भी रूसियो में सजीवता का सचार करके भी चर्च सर्वत्र की भाँति वहाँ भी प्रतिगामी सिद्ध हुआ। १४ वी सदी से १९ वी सदी के आरम्भ तक ५०० साल रूस के इतिहास मे साहित्य की दृष्टि से प्राय सर्वथा अनुर्वर सिद्ध हुए। पश्चिमी यूरोप उस बीच क्राति पर क्राति करता रहा पर रूस सोया पडा रहा। पन्द्रहवी सदी की "खोजेनिया जात्रिमोर्या" तीन समुद्र पार की यात्रा नामकी एक मनोरजक हस्तलिपि मिली है जिसमें अफासानिया निकितिन की रूस से भारत यात्रा का वर्णन है। वह (१४६६-१४७२) वास्को डिगामा से प्राय ४० वर्ष पहले भारत आया था और वहमनी सुल्तान मुहम्मद शाह तृतीय (१४६२-८३) के राज्य में घूमता फिरा था। यह हस्तलिपि भी जो काराम्जिन के रूसी इतिहास के छठे खड मे छपी, पन्द्रहवी सदी के गद्य का एक सामान्य रूप प्रस्तुत करती है।

रूस के नवनिर्माण में फिर भी जब-तब कुछ प्रयास होते रहे। ईवा तृतीय से विवाह के बाद सोफिया पालिओलोगा कुस्तुन्तुनिया से अनेक इटालियन शिल्पी आदि लेकर रूस आई और रूस का नवीकरण एक प्रकार से शुरू हुआ। "भयानक" ईवा के शासनकाल मे मास्को में जो छापाखाना खुला तो १५६४ में वहाँ पहली पुस्तक छपी। परन्तु साहित्य अभी चर्च के ही आधीन था उसमें अगला कदम वरावर सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था। इसलिए स्वाभाविक ही १७ वी सदी तक उस क्षेत्र मे कुछ प्रगति न हुई। उस सदी में डेमेट्रियस एक साल के लिए मॉस्को की गद्दी पर वैठा। वह अत्यन्त प्रगतिवादी था। परन्तु अभाग्यवश उसे साल भर वाद ही अपनी प्रगतिशीलता का मूल्य अपने रक्त से चुकाना पडा। कुछ काल वाद खीव एक वार फिर जागा और अपना पुराना ज्ञान स्वायत्त करने लगा। खीव की देखादेखी मॉस्को में भी जेसुइट धार्मिक स्कूलो की परपरा जागी और धार्मिक पुस्तको का सुधार होने लगा। १७ वी सदी में खीव से कुछ विद्वान मॉस्को आये जिनमें प्रधान सीमियन था—सीमियन पोलोत्स्की रूस का पहला पद्यकार। १८ वी सदी तक साहित्य में सीमियन की ही परपरा चलती रही।

१७ वी सदी के उत्तरार्द्ध में पोलैंड ने भी रूसी साहित्यक प्रगति में अपना योग दिया। मॉस्को नगर के समीप ही स्लोवोदा नाम की जर्मनो की आवादी थी जो यूरोपियन सस्कृति का केन्द्र वन गई थी। यही रूसी रगमच का जन्म हुआ था। १६७२ ईस्वी में ज़ारेविच के जन्म के अवसर पर जार एलेक्सिस[1] ने यही के प्रोटेस्टेन्ट पादरी ग्रेगरी को एक "कॉमेडी" (विनोद प्रधान नाटक) लिखने का आदेश दिया। एक थियेटर की वहाँ स्थापना हुई और नाटक खेले जाने लगे। १६७४ में वही "वैले" (मूकनृत्य) का आरम्भ हुआ। एक नाटक कम्पनी वहाँ निरन्तर रहने लगी और जर्मन नाटक रूसी अनुवाद में प्रस्तुत किये जाने

१ Tsar Alexis

हुआ। लिखी भाषा का प्रभाव शीघ्र ही सस्कृति, कला और आचार पर पडता है और रूस के सम्बन्ध में भी यह सिद्धान्त सार्थक हुआ। कहना न होगा कि ११ वी सदी में खीव की गणना यूरोप के शिष्टतम नगरो में थी।

खीव के राजकुल का सम्बन्ध फ्रास, हगरी, नार्वे और इगलैंड तक के राजकुलो से था। रूसी हस्तलिपियाँ जिनका सग्रह खीव के राजकुल की सरक्षा मे हुआ उस प्राचीनकाल में भी पश्चिमी यूरोप के किसी सग्रह से घटकर न थी। खीव तब पूर्वी यूरोप की कला और सस्कृति का प्रगतिशील केन्द्र था। परन्तु शीघ्र ही अभाग्यवश जो ईसाई धर्म की पूर्वी और पश्चिमी दो शाखाएँ बनी तो यूरोप भी अनुकूल भूखण्डो में बँट गया। इससे रूस पश्चिमी जगत से कटकर अलग हो गया, यद्यपि उसका वह प्रथकत्व अभी इतने महत्व का न था। ११ वी-१२ वी सदियो में जो इतिहास रूस मे प्रस्तुत हुआ वह गजब का जनवर्गीय था। रूसी गीतो का नायक बराबर किसान का बेटा होता था जो अपनी असामान्य शक्ति से देश के शत्रु को जीत लेता था और तब पुरस्कार के रूप मे उसे तीन साल तक लगातार भट्टी में बैठकर स्वच्छन्द मादकपेय पीने का अधिकार हो जाता था। साहित्य की यह जनपरकता रूस में अविच्छिन्न रूप से कायम रही है।

१२ वी सदी के खीव का साहित्य अधिकतर खीव के "क्रॉनिकल" नेस्टर के "क्रॉनिकल" और "राजा ईगोर के हमलो की कहानी" मे सुरक्षित है। इनमे पहला मठ में लिखा गया था और वह वीर काव्य के गुणो से विभूषित है। रूसी प्रारम्भिक इतिहास लेखन पर इनका बडा प्रभाव पडा। "राजा ईगोर की कहानी" गद्यकाव्य है जो तत्कालीन रूसी लिखी जुबान का अदभुत स्मारक है। इसकी मौलिकता, इसका एतिह्य, इसकी अकन शक्ति यूरोप के साहित्य के इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। ईगोर ने उत्तरी नवगोरद से दक्षिण के पोलोव्त्सी नाम की खानाबदोश जाति पर ११८५ में हमला किया था। पहले तो वह जीतता गया परन्तु बाद में उसे शत्रु ने ऐसा पराजित किया कि उसे घर लौटना पडा। गद्य के रूप में गति और काव्य शक्ति में उस काल की रचनाओ में यह कृति असाधारण है। इसका वर्णन बडा तेजस्वी और भाव प्रधान है। निसर्ग का उसमें निरन्तर अकन है। ईगोर बाल्मीकि के राम की ही भाँति नदी-नालो से, पेड-पत्तो से बात करता है। अन्त में उसका राज्य उसे फिर मिल जाता है और उसकी प्रजा उसे अपना शासक स्वीकार करती है। १८ वी ईस्वी में यह कहानी पहले-पहल चौदहवी सदी की पाण्डुलिपि के आधार पर प्रकाशित हुई। यह अमूल्यकृति मॉस्को के अग्निकाण्ड में बाद में जल गई।

१३ वी सदी में तातारो के धावो ने रूस को प्राय तीन सदियो के लिए निष्क्रिय कर दिया। १२४० में खीव को तातारो ने उजाड डाला और रूसियो को दक्षिण से उत्तर हट जाना पडा। अब रूस के जीवन और सस्कृति का केन्द्र मॉस्को बना। धर्म का क्षेत्र अब भी स्वतन्त्र था और १४५३ मे जब कुस्तुन्तुनिया पर तुर्को की मरणान्तक चोट पडी तब

इसी काल रादिशचेव[1] नामक एक अफसर ने रूसी सर्फो (कृषि मजूर) और श्रमिक गुलामो की दशा अकित करते हुए २० परिच्छेदो में "सेन्ट-पीटर्सबर्ग से मॉस्को की यात्रा" नामक पुस्तक लिखी। १७९० में पुलिस की अनुमति पाकर वह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, फ्रासीसी राज्यक्राति के केवल वर्ष भर बाद ही ग्रन्थकार को अपनी प्रगतिशीलता का मूल्य चुकाना पडा। पहले वह साइबेरिया निर्वासित हुआ, अन्त मे स्वतन्त्र कर दिया गया। फिर उसने आत्महत्या कर ली। रादिशचेव रूसी साहित्य का पहला शहीद था जिसने अपने स्वतन्त्र विचारो के प्रकाशन के लिए प्राणो का बलिदान कर दिया।

लोग आश्चर्य करते है कि उदारवादिनी कैथेरिन के शासन मे साहित्यिक प्रगति क्यो नही हुई, तब एक भी कवि अथवा गद्यकार क्यो नही हुआ? कारण यह है कि कैथेरिन वस्तुत उदार न थी, फ्रेडरिक महान् आदि की नकल भर करने वाली थी। फिर भी तब अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होने पद्य रचनाएँ की यद्यपि उनका साहित्यिक स्तर बहुत नीचा था। उस काल "ओड" काफी लिखे गये और "ओड" लिखने वालो में डेर्ज्हाविन[2] सबसे महान था। वह पहला रूसी कवि था और उसकी कविताएँ प्रभूत साहित्यिक क्राति लेकर भाषा में उतरी। फिर भी राष्ट्रीय साहित्य में विशेष प्रगति न हुई। शिष्टवर्ग की भाषा फ्रैंच थी और रूसी साहित्य स्वय फ्रैंच विधानो के अनुकूल ही बाँधा जाने लगा। ऐसा नही कि रूसी भाषा मे साहित्य सृजन की शक्ति न रही हो। जैसा लोमोनोसोव ने कहा था उसमें फ्रैंच भाषा की शालीनता थी, जर्मन की शक्ति थी, इटैलियन का माधुर्य था, ग्रीक और लैटिन का सूत्रपरक शक्तिम वैभव था; केवल उस भाषा का सही रूप में प्रयोग करने वाला अभी न था।

: २ :

पुश्किन-युग

रूस का नया युग पुश्किन[3] का युग है, १९ वी सदी का। रूसी साहित्य का वास्तविक इतिहास, जैसा पहले लिखा जा चुका है एलेग्जैण्डर प्रथमके राज्यारोहण से शुरू होता है। उस काल जो साहित्य का अरुणोदय हुआ उसके प्रकाश मे रूस का कोना-कोना जगमगा उठा। वह युग नेपोलियन के युद्धो का था। नेपोलियन रूस से भी टकराया और १८१२ मे उसे अपने मुंह की खानी पडी। रूस ने तब प्राय पहले पहल राष्ट्रीय एकता की शक्ति पहचानी।

---

१ Aleksander Nikolayevich Radishchev (१७४९–१८०२), २ Gavrila Romanovich Derz Havin (१७४३–१८१६), ३. Aleksander Sergevevich Pushkin (१७९९-१८३७)

लगे। सीमियन पोलोत्स्की द्वारा लिखा पहला मौलिक रूसी नाटक "फिजूलखर्च बेटा" था।

१७ वी सदी के अन्त तक रूस तातारो के जुए से भी आजाद हो गया था यद्यपि स्वय रूस के भीतर उन सहारक शक्तियो की कमी न थी जो बराबर एक दूसरे से रूस में लोहा लेती रहती थी। एक बार तो पोलो ने मॉस्को तक पर अधिकार कर लिया पर शीघ्र ही रूस अपने पैरो पर खडा हो गया। रूस के नवीकरण में पीटर महान् का बडा हाथ था। उसने देश को धर्म के विधानो से स्वतन्त्र कर दिया और उसकी रूढिवादिता के विरुद्ध कमर कस कर वह खडा हो गया। उसने रूसी लिपि और भाषा सरल कर दी और अनेक विदेशी ग्रथो का रूसी में अनुवाद कराया। पहला रूसी पत्र उसी की सरक्षा में निकला। फिर भी पीटर की सक्रियता से साहित्य में तात्कालिक प्रगति न हुई। उसने राजनीतिक क्षेत्र मे तो निश्चय ही सफलता पाई और यूरोप की ओर अपने देश मे "खिडकी" भी खोल ली परन्तु सफलता अन्तत समय आने पर ही मिली। पश्चिम की ओर से विचारो की अटूट धारा जो चली निश्चय ही रूसी जीवन को, विशेषत उसके साहित्य को, प्रभावित किये विना न रही। १८ वी सदी में फ्रेंच और जर्मन विचारो का रूसी इतिहास पर प्रभूत प्रभाव पडा। तातिशखेव और मिखायल लोमोनोसोव[1] उसके ज्वलन्त प्रमाण हैं।

मिखायल लोमोनोसोव गणितज्ञ, रसायनिक, ज्योतिषी अर्थशास्त्री, इतिहासकार, भूतत्ववेत्ता, वैयाकरण, कवि, सभी कुछ था। उस किसान के बेटे ने बडी कठिन परिस्थितियो मे मारबुर्ग और फ्राइबुर्ग में शिक्षा ग्रहण कर रूसी भाषा मे दूरगामी परिवर्तन किये। उसी के प्रयत्नो से साम्राज्ञी एलिजाबेथ ने १७५५ में मॉस्को यूनिवर्सिटी की स्थापना की। आज मॉस्को विश्वविद्यालय के प्रागण में उस लोमोनोसोव की आदम मूर्ति खडी है। मॉस्को यूनिवर्सिटी की स्थापना से रूसी सस्कृति में एक युगान्तर उपस्थित हो गया। फ्रेंच प्रभाव का कारण प्रिन्स कान्तेमीर[2] था जिसने पहला व्यग्यात्मक रूसी पद्य लिखा, सीमियन की परपरा में नही, शुद्ध साहित्यिक परपरा में। उसकी पद्यरचना मुख्यत: ब्वालो की फ्रेंच शैली पर अवलम्बित थी। परन्तु उससे भी बढकर रूस पर फ्रेंच विचारो का प्रभाव जर्मन राजकुमारी साम्राज्ञी कैथेरिन[3] द्वितीय ने डाला। कैथेरिन उदारवादी निरकुश शासको में गिनी जाती है। फ्रास के विश्व कोष के प्रसिद्ध अनेक लेखक-वोल्तेयर, मोतेंस्क, दिदरो उसके मित्र थे। दिदरो सेन्ट पीटर्सवर्ग आया और रूसी सैनिक स्कूल फ्रासीसी शिक्षको से भर गये। रूसो के विचार भी धीरे-धीरे रूसी प्रतिगामिता की नीव को शिथिल करने लगे। परन्तु फ्रासीसी राज्य-क्राति जारशाही को अगीकार नही हो सकती थी और देश में प्रतिगामिता का शीघ्र ही पोषण होने लगा।

---

१ Mikhaylo Vasilyevich Lomonosov (१७०८–१७६५), २. Antiokh Kantemir (१७०८–४४), ३ Catherine (१७२९–९६)

इसी काल रादिशचेव[1] नामक एक अफसर ने रूसी सर्फो (कृषि मजूर) और श्रमिक गुलामो की दशा अकित करते हुए २० परिच्छेदो में "सेन्ट-पीटर्सबर्ग से मॉस्को की यात्रा" नामक पुस्तक लिखी। १७९० में पुलिस की अनुमति पाकर वह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ, फ्रासीसी राज्यक्राति के केवल वर्ष भर बाद ही ग्रन्थकार को अपनी प्रगतिशीलता का मूल्य चुकाना पडा। पहले वह साइबेरिया निर्वासित हुआ, अन्त मे स्वतन्त्र कर दिया गया। फिर उसने आत्महत्या कर ली। रादिशचेव रूसी साहित्य का पहला शहीद था जिसने अपने स्वतन्त्र विचारो के प्रकाशन के लिए प्राणो का बलिदान कर दिया।

लोग आश्चर्य करते है कि उदारवादिनी कैथेरिन के शासन मे साहित्यिक प्रगति क्यो नही हुई, तब एक भी कवि अथवा गद्यकार क्यो नही हुआ? कारण यह है कि कैथेरिन वस्तुत उदार न थी, फ्रेडरिक महान् आदि की नकल भर करने वाली थी। फिर भी तब अनेक ऐसे कवि हुए जिन्होने पद्य रचनाएँ की यद्यपि उनका साहित्यिक स्तर बहुत नीचा था। उस काल "ओड" काफी लिखे गये और "ओड" लिखने वालो में डेर्जहाविन[2] सबसे महान था। वह पहला रूसी कवि था और उसकी कविताएँ प्रभूत साहित्यिक क्राति लेकर भाषा में उतरी। फिर भी राष्ट्रीय साहित्य में विशेष प्रगति न हुई। शिष्टवर्ग की भाषा फ्रैंच थी और रूसी साहित्य स्वय फ्रैंच विधानो के अनुकूल ही बाँधा जाने लगा। ऐसा नही कि रूसी भाषा मे साहित्य सृजन की शक्ति न रही हो। जैसा लोमोनोसोव ने कहा था उसमे फ्रैंच भाषा की शालीनता थी, जर्मन की शक्ति थी, इटैलियन का माधुर्य था, ग्रीक और लैटिन का सूत्रपरक शक्तिम वैभव था, केवल उस भाषा का सही रूप में प्रयोग करने वाला अभी न था।

: २ :

पुश्किन-युग

रूस का नया युग पुश्किन[3] का युग है, १९ वी सदी का। रूसी साहित्य का वास्तविक इतिहास,जैसा पहले लिखा जा चुका है एलेग्जैण्डर प्रथमके राज्यारोहण से शुरू होता है। उस काल जो साहित्य का अरुणोदय हुआ उसके प्रकाश मे रूस का कोना-कोना जगमगा उठा। वह युग नेपोलियन के युद्धो का था। नेपोलियन रूस से भी टकराया और १८१२ मे उसे अपने मुँह की खानी पडी। रूस ने तब प्राय पहले पहल राष्ट्रीय एकता की शक्ति पहचानी।

---

१ Aleksander Nikolayevich Radishchev (१७४९–१८०२), २ Gavrila Romanovich Derz Havin (१७४३–१८१६); ३. Aleksander Sergeyevich Pushkin (१७९९-१८३७)

उस राष्ट्रीयता का नेता आरम्भ मे ला हार्प का शिष्य स्वय एलेग्जैण्डर प्रथम था जिसने देश में उदार सुधारो की नीव डाली यद्यपि उसकी प्रतिगामिता अपने सुधारवादी दृष्टिकोण को कायम न रख सकी।

एलेग्जैण्डर प्रथम के राज्यारोहण ने साहित्य सबधी प्रतिबन्ध उठा दिये और उस अपेक्षाकृत मुक्त वातावरण से पहला लाभ उठाने वाला ग्रन्थंकार काराम्जिन[1] था। १८०२ में उसने "यूरोप का सन्देशवाहक" नामक अपना "रिव्यू" निकाला। कैथेरिन के शासन-काल में ही वह मॉस्को आया था और जर्मन तथा अग्रेजी साहित्यो का अध्ययन कर स्विट्ज़रलैण्ड, लन्दन और पेरिस आदि की उसने यात्रा की थी। लौटकर अपने ही निकाले मॉस्को जर्नल में उसने अपने यात्रा-वृतान्त "रूसी यात्री के पत्र" नाम से प्रकाशित किये। इगलैण्ड और स्विट्ज़रलैण्ड का हिमायती होने के कारण उसे प्रजातान्त्रिक शासन पसन्द था और उसने उसके पक्ष में लिखा भी काफी। साहित्य में उसकी देन विशेषत सरल स्वाभाविक गद्य की है। अपने "रिव्यू" में उसने साहित्य और आलोचना के लिए काफी स्थान दिया। फिर उसने सरल जोरदार गद्य में बारह जिल्दो में "रूस का इतिहास" लिखा। साहित्यिक गद्य का उसका इतिहास निश्चय ही परिमार्जित रूप था जिसमें न विदेशीपन की बू थी और न रूढिवादिता के रोडे थे पहली बार रूसी गद्य में लिखे ग्रथ को सफलता मिली और उस इतिहास ने रूसियो के सामने रूस को खोलकर रख दिया। स्वय पुश्किन को इस इतिहास ने प्रभावित किया और अपने "बोरिस गोदुनोव" के लिए उसने वही से प्रेरणा पाई।

राष्ट्रीय महत्त्व का पहला रूसी कवि क्रिलोव[2] था। उसका रचनाकाल काफी पहले से आरम्भ होकर एलेग्जैण्डर प्रथम की मृत्यु के बाद तक है। उसके नाटक काफी सफल हुए यद्यपि उनमें टिकाऊ गुणो की कमी थी। १८०५ में उसने नैतिक कहानियाँ लिखनी शुरू की और अपनी मृत्यु तक बराबर "फेबुल" लिखता रहा। उसकी प्रारम्भिक कहानियाँ ला-फोतेन-की नैतिक कहानियो की अनुवाद थी। जिनमें उसने उस फ्रासीसी कवि के छद का ही प्रयोग किया। उस अनुवाद के साथ ही उसने स्वय भी कहानियाँ गढनी शुरू की, यद्यपि उसे उनके लिए भी प्रेरणा ईसप और ला फोन्तेन की कहानियो से ही अधिकतर मिली। उसका अनुवाद भी वास्तव में सीधे अनुवाद नही बल्कि मूल के ऊपर वे स्वतन्त्र कथाएँ हैं। क्रिलोव ने मूल को हृदयगम कर उसे सर्वथा नया करके उस पर अपने व्यक्तित्व की छाप डाल दी है। ला फोन्तेन की फ्रेंच सर्वथा रूसी, नितान्त राष्ट्रीय हो गई है। एक बार क्रिलोव को पढकर कोई मूल की कल्पना नही कर सकता। नीति-सम्बन्धी कहा-

---

१ Nikolay Mikhailovich Karamzin (१७६६-१८२६), २ Ivan Andreyevich Krylov (१७६८-१८४४)

नियो का लेखक मूलत व्यग्यकार होता है परन्तु क्रिलोव व्यग्यकार होता हुआ भी प्रधानत कवि था। कही-कही तो कविता के आधार से उठकर समर्थ-व्यग्य पाठक के चित्त को पकड लेता है। उदाहरणत "किसान और नदी" वाली कहानी में किसान नदी के पास उसकी बाढ से अपने नुकसान की शिकायत करने जाते हैं, पर जब वहाँ पहुँचकर उसके पानी में वे अपनी चीजे तैरते हुए देखते है तब एक दूसरे पर नजर डालते है, सिर हिलाते हैं और घर लौट जाते है। भला शिकायत किस से करें। क्रिलोव की कहानियो का व्यग्य तात्कालिक राजनीतिक पृष्ठभूमि पर खूब उतरता है। नदी वाला व्यग्य स्वय रक्षक की भक्षक वृत्ति को चरितार्थ करता है। अनेक बार तो उसकी कहानियाँ फ्रासीसी राज्यक्राति, नैपोलियन का रूस पर आक्रमण, विएना की काग्रेस आदि के व्यग्यपूर्ण प्रतिबिम्ब बन गई है सिंह वाली कहानी में एलेग्जेंडर प्रथम की शिक्षा पर व्यग्य है। उसमे सिंह अपने बेटे को शिक्षा के लिए ईगल (गरुड) के पास भेजता है, जिससे वह अन्त में घोसला बनाना सीखता है। अनेक कहानियाँ रूसी न्याय की कमजोरियो पर व्यग्य करती है। जैसे एक मे किसान जब अपना मुकदमा भेड़ के विरुद्ध लोमडी के सामने रखता है तो लोमडी उल्टे उसी को अपराधी एलान करती है। इसी प्रकार साहित्य पर सरकारी प्रतिबन्ध का व्यग्य उसने उस कहानी में अकित किया है जिसमें बिल्ली के पजे मे पड़ी बुलबुल को गाने का प्रोत्साहन है। एक दूसरी कहानी मे बडी गम्भीरतापूर्वक भेडो से कहा जाता है कि आक्रान्ता होने पर भेडिये को वे निकटतम मजिस्ट्रेट के पास घसीट ले जायें। इस प्रकार रूसी साहित्य आरम्भ से ही जनपरक है, अपनी सरकार से मोर्चा लेने वाला और वह मोर्चा तब तक चलता है जब तक कि वह सरकार बदल कर सर्वथा जनवादी नही हो जाती।

क्रिलोव द्वारा प्रस्तुत साहित्य का सबसे बड़ा गुण उसकी सुगमता और सरलता है। दुरूहता का उसमें नाम तक नही। निरक्षर भी उसे सहज ही समझ सकता है। फलत उसकी सफलता भी बड़ी व्यापक हुई। उसकी शैली कभी पुरानी नही हो सकती, उसका वर्तमान युग-युग का है। जीवन को वह जीवित घटते हुए देखता है और जैसा वह देखता है वैसा ही लिखता भी है। मुहावरेदार अर्थपूर्ण उसकी भाषा में सहज प्रभाव है और कविता उसकी मनोरम है। उसमें गजब की खूबसूरती है।

रूसी साहित्य के विकास में उसकी आन्तरिक राजनीतिक घटनाओ का बडा योग रहा। वस्तुत इन्ही घटनाओ के फलस्वरूप वहाँ साहित्य में रोमाटिक आन्दोलन का उदय हुआ। नैपोलियन की लडाइयो में अनेक रूसी अफसरो को विदेशो में रहना पडा था। और जब वे विएना की काग्रेस (१८१५) के बाद स्वदेश लौटे तो विचारो और नये आदर्शो से उनके दिमाग भरे थे। जीवन को उन्होने बहुत "सीरियस" तौर मे लिया जिनसे पुश्किन ने उन्हें "उत्तर के प्यूरिटन" कहा। परन्तु निश्चय ही वे क्रातिकारी न थे। प्रतिक्रिया की यूरोप में लहर चलाने वाली विएना काग्रेस और मेटरनिक के सम्पर्क में रहकर वे क्राति-

कारी हो ही नही सकते थे। सस्कृति का नाम अनेक बातो पर पर्दा डाल देता है। उदीयमान क्रातिकारी प्रवृत्तियो से मुह मोड लेने में यह शब्द सहायक होता है। और उसी सस्कृति के नाम पर इन्होंने "उपकार समाज" नामक सस्था खोली जिसके ध्येय परोपकार, शिक्षा और आर्थिक अध्ययन थे। इसके नेता सेन्ट-पीटर्सबर्ग की शरीर-रक्षक सेना के अफसर थे। परन्तु यह सस्था भी १८२१ मे प्रतिक्रियावादी सरकार द्वारा कुचल डाली गई। यद्यपि इसने आगे चल निकलने वाली क्रातिकारी प्रवृत्तियो को सहारा दे ही दिया। १८२५ मे एलेग्जैण्डर प्रथम के मरने के बाद इतिहास प्रसिद्ध "दिसम्बरी" विद्रोह हुआ। सम्राट् के भाई कान्स्टेन्टीन को गद्दी का अधिकार छोडना पडा और निकोलस जार[1] बना। १४ दिसम्बर को विप्लव हुआ और फौजें विद्रोही हो उठी, यद्यपि उसे कुचल डाला गया। अनेको को फाँसी हुई जिनमें कवि रिलीव[2] भी था।

विद्रोह क्राति तो न बन सका। परन्तु साहित्य के क्षेत्र मे उसका परिणाम दूरगामी सिद्ध हुआ। राजनीति का स्थान अधिकतर दर्शन ने ले लिया और उदारवादिता रोमैन्टिक आन्दोलन की जननी हुई। इसी रोमैन्टिक प्रवृत्ति के आधार पर रूसी काव्यधारा नयी शक्ति से फूट पडी। पहली बार रूसी जनता को वाणी मिली। रूसी प्रतिभा राजनीति मे प्रतिबन्ध पा कला और काव्य की ओर मुडी। दिसम्बरी विद्रोह की पूरी विरासत रिलीव को मिली। रूसी कॉमेडी के रूप मे रूसी थियेटर पर उसका कुछ कम प्रभाव न पडा। रिलीव की शैली मँज चली थी। उसकी प्रतिभा प्रौढ हो चली थी कि उसे विप्लव के परिणाम स्वरूप अपने जीवन से ३१ वर्ष की आयु मे ही हाथ धोना पडा। रिलीव की कविता मे निराशावादी करुणा है और इसी रूप मे वह उल्लेखनीय भी है। यद्यपि वह १८वी सदी के शब्दाडम्बर और फ्रैंच मॉडलो की नकल के प्रतिबन्धो से मुक्त नही। रिलीव रूसी स्वतन्त्रता के लिए लडा था और उस दिशा मे वह पहला शहीद था जिसका नाम रूसी इतिहास और साहित्य में अमर हो गया है।

ग्रिबोयेदोव[3] ने स्वय तो दिसम्बरी-क्राति में भाग नही लिया परन्तु था वह उसी युग का और उसी क्राति की उपज। उसकी कामेडी "गोरे आत ऊमा" आज भी रूसी साहित्य में बेजोड है। ग्रिबोयेदोव पर-राष्ट्रविभाग का अफसर था और तेहरान में रूसी राजदूत था जहाँ उसका खून कर दिया गया। जब उस "कॉमेडी" की हस्तलिपि सेन्ट पीटर्स बर्ग में पहले पहल पढ़ी गई तो उसने साहित्यिक केन्द्रो मे उथल-पुथल मचा दी। परन्तु उसका प्रकाशन १८३३ से पहले न हो सका। "गोरे आत ऊमा" पद्य मे लिखी गई थी। उसका घटनाक्रम एक ही दिन एक ही घर में समाप्त हो जाता है। घर मॉस्को के एक सरकारी अफसर फामुसोव

---

१ Tsar Nicholas, २ Kondraty Fedorovich Rylcyev (१७८५-१८२६),
३. Aleksander Sergeyevych Griboyedov (१७९५-१८२९)

का है। नाटक मॉस्को के पश्चिम से प्रभावित कृत्रिम जीवन पर कठोर व्यग्य है। समाज के अन्तरग को खोलने वाली यह कॉमेडी अमर है। नाटकीय दृष्टिकोण से इसके कुछ अश अस्वाभाविक है, पर यथार्थ पर व्यग्य के रूप में उसकी शक्ति अमित है। उसका प्रत्येक चरित्र स्वाभाविक है, दृश्यो की कॉमेडी स्वाभाविक है जो तत्सामयिक रूसी समाज को प्रतिविम्बित करती है, उसके डायलॉग स्वाभाविक है। कृति की भाषा अत्यन्त सवल नुकीली सूत्रवत है, स्पष्ट, स्फटिक की नाईं स्वच्छ। उसकी मौलिकता अपरिमेय है, रूसी जीवन की छाप लिए, रूसी मेवा से प्रसूत, आज भी वेजोड।

इसी काल वासिली जुकोव्स्की[1] हुआ, कवि जिसका रूसी साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने जर्मन और अग्रेजी साहित्य को रूसी भाषा में उतारा। ग्रेकी "एलेजी" और वीर गर के "ल्योनोरे" के अनुवाद ने उसे विख्यात कर दिया। फिर उसने शिलर[2] की "आर्लीन्स की कुमारी" का भी रूसी भाषा में अनुवाद किया। अनेक अन्य जर्मन कवियो की कृतियाँ भी जुकोव्स्की ने अपनी भाषा मे प्रस्तुत की और उनके ऊपर अपने व्यक्तित्व की छाप डाली। उसने १८४८-५० मे होमर की "ओडिसी" का भी, अनुवाद किया। उसने फ्रास के जादू को जो रूसी जवान पर प्रतिवन्ध का काम कर रहा था उडा दिया।

जव तक रूसी भाषा यूरोपीय भाषाओ के घातक वन्वन से मुक्त हो चुकी थी। आवश्यकता इस वात की थी कि कोई और रूसी भाषा के मिठास को साहित्य मे घोल दे, उसके राग को ध्वनि पर साध कर अलाप दे। वह कार्य पुश्किन को करना था, रूसी भाषा और साहित्य के अप्रतिम जादूगर को। पुश्किन आया और तव जव अभी "क्लासिकल" और "रोमेंटिक" के वीच समर ठना था। दोनो की परिभाषाओ में लोगो को आपत्ति थी। प्रत्येक साहित्यकार इन्हे अपनी-अपनी परिभाषा देता था। पुश्किन के लिए जुकोव्स्की ने मैदान साफ कर दिया था और जव उसने रूसी भाषा को राष्ट्रीय साहित्य देना शुरू किया, अपने "मॉडल" सामने रखे तो ये झगडे अपने आप शान्त हो गये।

पुश्किन[3] का जन्म मास्को में १७९९ की २६ मई को हुआ था। उसका घराना प्राचीन था। माता की ओर से उसे नीग्रो (हवशी) रक्त मिला था (उसकी परनानी पीटर महान् के नीग्रो हैनिव्ल की कन्या थी)। वचपन मे ही उसने विविध साहित्यो का गहरा अध्ययन कर लिया। उसकी स्मरणशक्ति गजव की थी और वह जो कुछ पढ़ता उसके दिमाग पर नक्श हो जाता। स्कूल के दिनो मे वह चुपचाप पढ़ता गया, बे-अन्दाजा, अन्धाधुंध। उस काल उसे वोल्तेयर की कविता से वडा स्नेह था। पहली पद्य रचना उसने फ्रेंच मे की, फिर रूसी मे। उसकी उस काल की रचनाओ तक में उसकी अपनी वह वाणी

---

१. Vasily Andreyevich Zhukovsky (१७८३-१८५२); २ Schiller,
३ Aleksander Sergeyevich Pushkin (१७९९-१८३७)

उतर पडी जिसके लिए पीछे वह प्रसिद्ध हुआ। उसकी भावी शक्ति का अन्दाज उसी काल रूस के यशस्वी साहित्यिको डेर्ज़्हाविन, काराम्जिन, जुकोव्स्की को लग गया और उन्होने उसे उत्साहपूर्वक मेटा भी। जुकोव्स्की तो उसके स्कूल में जाकर उसे अपनी कविता सुनाया करता था। जब पुश्किन ने अपने स्कूल जीवन के सस्मरण "जस्कोर्सिलो के सस्मरण" पढे तब जुकोव्स्की के उत्साह की सीमा न रही। ये कविताएँ १८१५ अर्थात् पुश्किन के सोलहवें वर्ष से पूर्व ही लिखी जा चुकी थी। उनकी स्वाभाविकता ने बायरन के "आवर्स ऑव आइ-डिल्नेस" को तिरस्कृत कर कर दिया। दोनो के नाज़ो-अन्दाज मे जमीन-आसमान का अन्तर था। पुश्किन का भविष्य उसके इन सस्मरणो मे नाच उठा। उसने भाषा में एक नई टकसाल खडी कर दी जो सर्वथा रूसी थी, सर्वथा उसकी अपनी।

और जब १८२० मे उसने अपनी कविता "रुस्लान और लुदमिला" प्रकाशित की तब उस पर जमाना टूट पडा। हस्तलिपि की स्थिति में ही उसे पढकर रूसी साहित्य के पेशवा उस पर लुट चुके थे और उन्होने उसे अब समान भूमि पर योग्यता की अपनी ऊँचाई पर स्वीकार कया। जुकोव्स्की ने तो पहला ही अक सुनकर उसे अपनी तस्वीर भेंट करते समय उस पर लिखा—"उस शिष्य को जिसने अपने गुरु को पराजित कर दिया।" क्लासिकल कवि बाव्युश्कोव ने कहा—"ओफ ! शैतान ने क्या गज़ब लिखना शुरू किया है।" रूसी लोकविश्वासो का यह पहला काव्याकन था। सचित्र, सबल, अद्भुत। कुछ आलोचको ने उसकी तीव्र भर्त्सना भी की, उसके कथानक को लेकर कि उसने अशिष्ट ग्राम्य किसान को चमचमाते रूसी ड्राइग रूम में पहुँचा दिया। कविता में, 'पैशन' न था, व्यग्य न था, पर थी वह तरुण, अल्हड, कामुक, स्वच्छन्द। सबने जाना कि एक रूसी नौजवान "मुँह में सोना भरे, आँखो में अरुणोदय लिये" दुनिया को पुकार रहा है।

वह हस्सार होना चाहता था, पर न हो सका। तब वह पराष्ट्रविभाग में अफसर हो गया। उदारवादी तरुणो की गोष्ठी में वह उठने-बैठने लगा। उसे "दिसम्बर" आन्दोलन से भी सहानुभूति थी यद्यपि वह स्वय उसमे भाग न ले सका। कुछ काल बाद उसका दक्षिण मे तबादला हो गया और उसने काकेशस और क्रीमिया की सैर की, जिसकी छाप उसकी कृतियोपर पडी। इन्ही दिनो उसने अग्रेजी और इटैलियन लिखी और बाइरन तथा अद्रेशेनिए से प्रभावित हुआ। इन्ही दिनो जो उसने अपना "काकेशसका कैदी" लिखा तो उस पर "चाइल्ड हेरोल्ड" का स्पष्ट प्रभाव झलका। उस कविता मे काकेशस साफ उतर आया। क्रीमिया की प्रेरणा से उसने "बागचीसराय का स्रोता" लिखा, जिसमें एक तातार खान और उसकी ईसाई गुलाम की कथा है। खान की पुरानी प्रेयसी ईर्ष्यावश गुलाम प्रेयसी को मार डालती है और खान स्वय उसे भी पानी में डुबा कर मरवा डालता है। उसी दक्षिणी इलाके में पुश्किन ने अपनी कुछ अमर कविताएं लिखी, जिसमें उसकी प्रसिद्ध "पुस्तक विक्रेता और कवि की बातचीत" भी थी। इस कविता की चार पक्तियो के लिए तुर्गनेव

ने कहा था कि यदि अपनी सारी कृतियो के बदले इनको वह लिख पाता तो अपने को धन्य मानता। इसी सग्रह में उसकी कविताएँ "जिप्सी" "ओनेगिन" का आरभिक भाग "बोरिस गोदुनोव" और "महर्षि ओलेग" "डाकू भाई" आदि थी।

"जिप्सी" अत्यन्त लोकप्रिय हुई। उसका नायक आलेको जिप्सियो के गिरोह मे शामिल हो जेम्फीरा से विवाह कर लेता है जो दूसरे पुरुष को प्यार करने लगती है। आलेको दोनो को मार डालता है। उसकी पत्नी का पिता, जो अपनी पत्नी की ओर से समान घटना का शिकार है, आलेको को अपने गिरोह से निकालते हुए कहता है—"हमें छोड़कर चला जा, मनस्वी तरुण। हम बनैले जीव हैं। हम कानूनो के कायल नही, हम बदला नहीं लेते, दण्ड नही देते। न तो हम रक्तपात करते हैं, न चाहते हैं। हम खूनीके साथ नहीं रह सकते। तू बनैले जीवन के लिए नही बना है। केवल अपने लिए तू आजादी चाहता है। हम शर्मीले और नेकदिल हैं, तू बद है, मनमानी करने वाला। जा, चला जा, विदा, आमीन।" इसमें जिप्सी जीवन, डेरो आदि का अनूठा वर्णन है।

"बोरिस गोदनोव" की कथा पुश्किन ने काराम्जिन के इतिहास से ली और उसका नायक उस डेमिट्रियस को बनाया जिसने "भयानक" ईवा की मृत्यु के बाद अपने को उसका हतपुत्र घोषित किया। यह नाटक है। नायक गद्दी हासिल कर लेता है, उसकी प्रेयसी उसे प्यार इसलिए करती है कि वह जार का बेटा है। पर भेद खुल जाता है। और वह उसे त्याग देने का संकल्प कर लेती है। तब हारा नायक शर्म से शक्ति पाकर चीख उठता है—"मैं वचक हो सकता हूँ पर मैं बादशाह होने के लिए ही जन्मा हूँ। मैं प्रकृत बादशाह हूँ और मैं तुम्हें ललकारता हूँ—भला बदल दो मेरी स्थिति। चाहो तो जो कुछ मैंने तुमसे कहा है सब से कह दो। कोई तुम्हारी बात का विश्वास न करेगा।" प्रेयसी मारीना उसके साहस और निर्भीकता से विजित हो जाती है। "बोरिस गोदुनोव १८३१ में प्रकाशित हुआ। धीरे धीरे उसके "ग्राफ नूलिन", "कोलोम्ना की झोपडी" और "पोल्तावा" निकले। पहले दोनो में रोमेंटिक परिस्थितियो का अकन था, "पोल्तावा मे पीटर महान संबधी काव्य" १८२९ में पुश्किन फिर काकेशस की ओर गया और वहाँ उसने अनेक मधुर लेख लिखे। १८३१ तक उसके "ओनेगिन" का अन्तिम अक भी समाप्त हो गया।

"ओनेगिन" उपन्यास है, पुश्किन की लेखनी का जादू, रूस का पहला उपन्यास, जिसका नायक युजीन ओनेगिन है। अनेक आलोचको की राय में उस उपन्यास की जोड का रूसी साहित्य में दूसरा नही। इसमें टॉल्सटॉय का यथार्थ है, तुर्गनेव की कलाकारिता। ओनेगिन, नायक सेन्ट पीटर्सबर्ग का साधारण स्थिति-का आदमी है। पिता सरकारी नौकर है जो कर्ज करके तड़क-भड़क के साथ रहता है। ओनेगिन जमाने के अनुसार शिक्षित है, लन्दन मे सिला सूट पहनता है, फ्रेंच बोलता है, "मजुरका" नाच लेता है। सब विषयो पर बोलता है, जब बातचीत का विषय गभीर हो जाता है तो अपने अज्ञान छिपाने के लिए

उतर पडी जिसके लिए पीछे वह प्रसिद्ध हुआ। उसकी भावी शक्ति का अन्दाज उसी काल रूस के यशस्वी साहित्यिको डेर्जहाविन, कारामिजन, जुकोव्स्की को लग गया और उन्होने उसे उत्साहपूर्वक भेटा भी। जुकोव्स्की तो उसके स्कूल में जाकर उसे अपनी कविता सुनाया करता था। जब पुश्किन ने अपने स्कूल जीवन के सस्मरण "जस्कोर्सिलो के सस्मरण" पढे तब जुकोव्स्की के उत्साह की सीमा न रही। ये कविताएँ १८१५ अर्थात् पुश्किन के सोलहवें वर्ष से पूर्व ही लिखी जा चुकी थी। उनकी स्वाभाविकता ने बायरन के "आवर्स ऑव आइ-डिल्नेस" को तिरस्कृत कर कर दिया। दोनो के नाजो-अन्दाज में जमीन-आसमान का अन्तर था। पुश्किन का भविष्य उसके इन सस्मरणो मे नाच उठा। उसने भाषा में एक नई टकसाल खडी कर दी जो सर्वथा रूसी थी, सर्वथा उसकी अपनी।

और जब १८२० में उसने अपनी कविता "ह्स्लान और लुदमिला" प्रकाशित की तब उस पर जमाना टूट पडा। हस्तलिपि की स्थिति में ही उसे पढकर रूसी साहित्य के पेशवा उस पर लुट चुके थे और उन्होंने उसे अब समान भूमि पर योग्यता की अपनी ऊँचाई पर स्वीकार कया। जुकोव्स्की ने तो पहला ही अक सुनकर उसे अपनी तस्वीर भेंट करते समय उस पर लिखा—"उस शिष्य को जिसने अपने गुरु को पराजित कर दिया।" क्लासिकल कवि बाव्युश्कोव ने कहा—"ओफ! शैतान ने क्या गजब लिखना शुरू किया है।" रूसी लोकविश्वासो का यह पहला काव्याकन था। सचित्र, सबल, अद्‌भुत। कुछ आलोचको ने उसकी तीव्र भर्त्सना भी की, उसके कथानक को लेकर कि उसने अशिष्ट ग्राम्य किसान को चमचमाते रूसी ड्राइग रूम में पहुँचा दिया। कविता में, 'पैशन' न था, व्यग्य न था, पर थी वह तरुण, अल्हड, कामुक, स्वच्छन्द। सबने जाना कि एक रूसी नौजवान "मुँह में सोना भरे, आँखो में अरुणोदय लिये" दुनिया को पुकार रहा है।

वह हुस्सार होना चाहता था, पर न हो सका। तब वह पराष्ट्रविभाग में अफसर हो गया। उदारवादी तरुणो की गोष्ठी मे वह उठने-बैठने लगा। उसे "दिसम्वर" आन्दोलन से भी सहानुभूति थी यद्यपि वह स्वय उसमें भाग न ले सका। कुछ काल बाद उसका दक्षिण मे तबादला हो गया और उसने काकेशस और क्रीमिया की सैर की, जिसकी छाप उसकी कृतियोपर पडी। इन्ही दिनो उसने अग्रेजी और इटैलियन लिखी और बाइरन तथा अद्रेशेनिए से प्रभावित हुआ। इन्ही दिनो जो उसने अपना "काकेशसका कैदी" लिखा तो उस पर "चाइल्ड हेरोल्ड" का स्पष्ट प्रभाव झलका। उस कविता मे काकेशस साफ उतर आया। क्रीमिया की प्रेरणा से उसने "बागचीसराय का स्रोता" लिखा, जिसमें एक तातार खान और उसकी ईसाई गुलाम की कथा है। खान की पुरानी प्रेयसी ईर्ष्यावश गुलाम प्रेयसी को मार डालती है और खान स्वय उसे भी पानी में डुबा कर मरवा डालता है। उसी दक्षिणी इलाके में पुश्किन ने अपनी कुछ अमर कविताएं लिखी, जिसमें उसकी प्रसिद्ध "पुस्तक विक्रेता और कवि की बातचीत" भी थी। इस कविता की चार पक्तियो के लिए तुर्गनेव

ट और सुघड है। वह पार्थिव था, सर्वथा मानव, इसी से रूसी कवियो उसकी कविताओ का निवास रूसी हृदय में है। रूसी तरुणो की जवानपर ...वित है। लेनिन पुश्किन की कविताएँ पढकर उमड-उमड पडता था।

: ३ :

लेरमोन्तोव[1]

वैरन देल्विग[2] पुश्किन का मित्र था और उसका सहृदय आलोचक भी। उसने भी कविता लिखी। वह १८३१ में पुश्किन से पहले ही मर गया। उसी परपरा में याजिकोव[3] वारातिन्स्की,[4] वेनोवितिनोव, पोलेजाव आदि ने भी अपनी रचनाएँ की। ये सभी लिरिक कवि थे। पर वस्तुत पुश्किन के रिक्त स्थान पर बैठनेवाला लेरमोन्तोव था, रूसी साहित्य का सुन्दरतम लिरिक कवि। उसका जन्म १८१४ में, हिगेल की मृत्यु के चार वर्ष वाद, मार्क्स के जन्म के चार वर्ष पहले हुआ। प्रोफेसरो से झगड़ा कर उसे मॉस्को विश्वविद्यालय छोड देना पडा। बीस वर्ष की आयु मे वह हस्सार सेना में आफिसर हो गया और तव उसका जीवन आँधी की तरह उठा। आज यहाँ डुएल, कल अफसरो की नाराजगी, परसो जार्जिया को तवादला नवगोरह सेन्ट पीटर्स वर्ग, काकेशस, फिर सेन्ट पीटर्सबर्ग, फिर-फिर काकेशस, और अन्त मे साधारण बात के लिए १८४१ मे वही डुएल से मृत्यु २७ वर्ष की अल्पायु मे।

और इसी बीच वह रूसी साहित्याकाश का अप्रतिम नक्षत्र वन गया। अपने काव्योपन्यास "इन दिनो का नायक (हीरो)" मे उसने अपना ही चरित्र गाया है। वह कठिन मित्र था यद्यपि उसका हृदय तरल था स्नेह से भरा आँधी-सा उसका जीवन था, उसमें व्यवस्थान थी। पर उस में भाव था, तरल आवेग प्रवाह था, अकृत्रिम उल्लास था। उसने अपनी कृतियो में समसामयिक जीवन की उत्कट आलोचना की। जैसे-जैसे उसकी आयु वढती गई उसकी अभिमान की मात्रा भी वढी और एक दिन दुर्दैव का सामना करना ही पडा।

महत्वाकाक्षी जीवन असफल होने से खीझ गया था। और उसे सवसे शिकायत थी, सवसे झगडा था। इसी से वह जीवन से भी विरक्त हो उठा। वह अपनी कृत्तियो में समाज से वदला लेता था। समाज उसे काकेशश भेजकर उससे वदला लेता था। फिर भी उसकी रचनाओ मे निराशा का कही सकेत नही।

---

१. Mikhail Yurevich Lermontov (१८१४-४१), २ Baron Anton Antonovich Delvig (१७९८-१८३१); ३ Nikolay Mikhaylovich Yazykov (१८०३-४६), ४ Evgeny Abramovich Baratynsky (१८००-४४)

यदाकदा एक आध शब्द बोल देता है। समाज का प्रतिबिंब है। पिता के मर जाने पर चचा की जायदाद पा कर देहात मे जाता है। लेन्स्की जर्मनी से आकर उसका एक परिवार से परिचय कराता है जिसमें दो कुमारियाँ हैं जिनमें से छोटी को वह स्वय प्यार करता है। उसका नाम ओल्गा है। तातियाना बडी बहन है। उसका सा यथार्थ चरित टॉल्सटॉय का जीवन-अध्ययन और तुर्गनेव की कला भी नही सिरज सकी। वह रूसी नारी की प्रतीक है। तातियाना ओनेगिन से प्रेम करने लगती है और जब अपना प्रेम व्यक्त करती है तो कविता उसका पानी भरती है। आलोचको का कहना है ससार के काव्यक्षेत्र में ऐसी सरल और हृदयग्राही आत्माभिव्यक्ति और कही नही। कहते हैं, यदि पुश्किन ने केवल यही लिख दिया होता तो ससार के कवियो मे वह अनूठा हो गया होता। वास्तव में तातीयाना का वह पत्र रूसी ही लिख सकता था और रूसियो में भी पुश्किन ही। ओनेगिन उससे कहता है कि वह उसे प्यार नही कर सकता, प्यार के लिए वह बना ही नही। पर नाच मे वह ओल्गा की ओर आकृष्ट होकर लेन्स्की की चुनौती पर उसे डुएल में मार डालता है, फिर चला जाता है। तातियाना उसका इन्तजार करने के बाद सेन्ट पीटर्सबर्ग के एक धनी से ब्याह कर लेती है। ओनेगिन जब वहाँ पहुँचता है तो बुरी तरह उसकी ओर आकृष्ट हो जाता है पर वह उससे साफ कह देती है कि उसके हृदय में अब भी ओनेगिन का ही निवास है पर वह अपने पति को धोखा नही दे सकती। बस कहानी यहा खत्म हो जाती है। "ओनेगिन" पुश्किन की प्रौढ तम कृति है, सर्वथा उसी की सी। काव्य रूप मे लिखा यह उपन्यास अद्‌भुत है।

पुश्किन ने अपने अल्पकालिक जीवन मे और भी कितनी रचनाएँ की, कविताएँ, नाटक और कहानियाँ लिखी, "दुब्रोव्स्की", "कप्तान की बेटी", "आधी", "पिस्तौल की गोली" "किसान-महिला", "हुकुम की रानी" आदि। इनमें अन्तिम अत्यन्त लोकप्रिय हुई। उसकी रचना "मिश्री" दिलचस्प कहानी है। उसने अनेक बैलड भी लिखे—"पोप और बाल्दा की कहानी", "मारचेन", "मृत-जारित्सा", "सोने का मुर्गा", "मछलीमार और मछली की कहानी "वर"। "पीतल का घुडसवार" भी उसकी अच्छी काव्य रचना है। "काजवेक का मठ" के बाद उसने "पैगम्बर" नाम की बडी प्रौढ सर्वथा असामान्य कविता लिखी।

१८३७ में पुश्किन मरा या मारा गया। पत्नी के कारण उसे डुएल लडना पडा और उसी चोट से सैंतीस वर्ष की आयु में वह मर गया। छोटी उमर में मर कर भी उसने रूसी साहित्य को अमर कृतियाँ प्रदान की। जीवनकाल मे भी उसका इतना प्रभाव था कि रूसी साहित्य के दिग्गज—कारामज़िन, जुकोव्सकी, गोगोल—उसे घेरे-घेरे फिरते थे। पुश्किन रूस का राष्ट्रीय कवि था। उसकी प्रतिभा का भेद उसकी सार्वभौमिकता है। वह कवि है, यथार्थवादी कवि, अद्‌भुत लिरिक कवि। उसने रूसी जबान को विदेशी प्रतिबन्धो से मुक्त कर दिया। वह असाधारण कलाकार था और उसकी रची आकृतियाँ सगमरमर की

की प्रतिमाओ सी स्पष्ट और सुघड है। वह पार्थिव था, सर्वथा मानव, इसी से रूसी कवियो मे सबसे महान्। उसकी कविताओ का निवास रूसी हृदय मे है। रूसी तरुणो की जवानपर उसकी पक्ति-पंक्ति है। लेनिन पुश्किन की कविताएँ पढकर उमड-उमड पडता था।

: ३ :

लेरमोन्तोव[१]

वैरन देल्विग[२] पुश्किन का मित्र था और उसका सहृदय आलोचक भी। उसने भी कविता लिखी। वह १८३१ में पुश्किन से पहले ही मर गया। उसी परपरा में याजिकोव[३] वारातिन्स्की,[४] वेनोवितिनोव, पोलेजाव आदि ने भी अपनी रचनाएँ की। ये सभी लिरिक कवि थे। पर वस्तुत पुश्किन के रिक्त स्थान पर बैठनेवाला लेरमोन्तोव था, रूसी साहित्य का सुन्दरतम लिरिक कवि। उसका जन्म १८१४ मे, हिगेल की मृत्यु के चार वर्ष वाद, मार्क्स के जन्म के चार वर्ष पहले हुआ। प्रोफेसरो से झगडा कर उसे मॉस्को विश्व-विद्यालय छोड देना पडा। बीस वर्ष की आयु मे वह हस्सार सेना में आफिसर हो गया और तब उसका जीवन आँधी की तरह उठा। आज यहाँ डुएल, कल अफसरो की नाराजगी, परसो जार्जिया को तवादला नवगोरह सेन्ट पीटर्स वर्ग, काकेशस, फिर सेन्ट पीटर्सवर्ग, फिर-फिर काकेशस, और अन्त मे साधारण वात के लिए १८४१ मे वही डुएल से मृत्यु २७ वर्ष की अल्पायु में।

और इसी वीच वह रूसी साहित्याकाश का अप्रतिम नक्षत्र वन गया। अपने काव्यो-पन्यास "इन दिनो का नायक (हीरो)" में उसने अपना ही चरित्र गाया है। वह कठिन मित्र था यद्यपि उसका हृदय तरल था स्नेह से भरा आँधी-सा उसका जीवन था, उसमें व्यवस्थान थी। पर उस मे भाव था, तरल आवेग प्रवाह था, अकृत्रिम उल्लास था। उसने अपनी कृतियो मे समसामयिक जीवन की उत्कट आलोचना की। जैसे-जैसे उसकी आयु वढती गई उसकी अभिमान की मात्रा भी वढी और एक दिन दुर्दैव का सामना करना ही पड़ा।

महत्वाकाक्षी जीवन असफल होने से खीझ गया था। और उसे सबसे शिकायत थी, सबसे झगडा था। इसी से वह जीवन से भी विरक्त हो उठा। वह अपनी कृत्तियो में समाज से वदला लेता था। समाज उसे काकेशस भेजकर उससे वदला लेता था। फिर भी उसकी रचनाओ मे निराशा का कही सकेत नही।

---

१ Mikhail Yurevich Lermontov (१८१४-४१), २. Baron Anton Antonovich Delvig (१७९८-१८३१), ३ Nikolay Mikhaylovich Yazykov (१८०३-४६), ४ Evgeny Abramovich Baratynsky (१८००-४४)

लेरमोन्तोव भी पुश्किन की भाँति मूलत लिरिक कवि था। अधिकाधिक व्यक्ति-मूलक स्वकीय। परन्तु पुश्किन के विपरीत वह सच्चा रोमान्टिक था। पुश्किन की ही भाँति अल्पायु में ही उसने भी फ्रेंच मे पद्य लिखने शुरू किए। उसे पुश्किन की मृत्यु सबधी कविता से ख्याति मिली। जिसमें उसने उस महाकवि को खून के प्यासे समाज का शिकार बताया। रचना का शब्द-शब्द कठोर था। उसके अविरल प्रवाह में गजब की चोट थी। एक-विचार में उसने इसी शक्ति से अपने समाज पर प्रहार किया। इसी प्रकार नेपोलियन का भस्मावशेष पेरिस ले जाए जाने के अवसर पर जो कविता लिखी उसमें भी तरल तीखापन था कि जिन फ्रासीसियो ने जीवनकाल में उसे त्याग दिया वे अब मरने पर उसकी राख पूज रहे हैं।

परन्तु लेरमोन्तोव की ख्याति इन कविताओ पर अवलबित नही। उसने अपने समकालीनो से कुछ न लिया। न पूर्ववर्तियो से ही, न ही उसने विदेशी प्रतीको को ही अपना आदर्श बनाया। उसने अपने लिए आप राह बनाई और बिना झिझक के उसी पर निरन्तर चलता रहा। लिखा भी उसने उन्ही विषयो पर जिन्हें उसने आरम्भ में चुन लिया था। उसका चुनाव रोमेंटिक था। उसकी रचना—दानव—सबसे अधिक जानी हुई है। उसमें एक नारी के प्रति दानव का प्रेम वर्णित है। नारी काकेशस की है। और अकन के रग विविध हैं। कभी मलिन न होने वाले, सतत उज्बल शैतान कहता है कि मैं वह हूँ जिसे कोई प्यार नही करता, प्रत्येक जन जिसे गाली देता है। अपनी प्रयेसी से जब वह अपना प्रणय निवेदन करता है तब भाव और भाषा सौन्दर्य में होड करते हैं। मूर्ति धारण कर लेते हैं। और पक्ति के बाद पक्ति अनूठी ताजगी लिए रस की हिलोर बनकर हृदय को आप्लावित करने लगती है। काकेशस की पृष्टभूमि का चित्रण तो इसमें पुश्किन से कही सबल है, कही चमत्कारी।

'दान' के अतिरिक्त कुछ अन्य और कहानियाँ लेरमोन्तोव ने काव्यबद्ध की—इस्माइल बे, हाजी अब्रेक, ओरशा। पहली दोनो कहानियो की पृष्ठ भूमि भी काकेशस की उपत्यका ही है। उसका 'मत्सिरी-नौसिखा'-सर्वांग सुन्दर कृति है। इसमें मठ में मरते एक अभागे यतीम का अपराध का स्वीकरण 'कन्फैशन" है। जिसमें वह बाहर की उस पुकारती हुई दुनियाँ के समृद्ध निसर्ग और कमनीया नारी के रुदन का हृदय विदारक कोमल, करुण, अभिराम वर्णन है। काकेशस की भूमि जैसे सजीव होकर अपनी कमनीय आकृति खोलती जाती है। काकेशस का इतना शालीन अकन लेखनी ने शायद कभी नही किया।

"दानव और मत्सिरी" की परपरा में ही जार ईवा वासिलिएविच का गान भी है, उन्ही की भाँति मनोरम शरीर रक्षक सेना का सिपाही एक सौदागर की पत्नी का अपमान करता है। सौदागर उसे ललकारता है और घूसो से मार डालता है फिर प्राण दण्ड भोगता है। कविता लोक कथा के आधार पर उठकर कुछ ऐसे सरल, तरल, यथार्थ, रोमा-

चक दृश्य उपस्थित कर देती है कि उस दिशा मे वह रूसी साहित्य मे बेजोड हो जाती है।

इनके अतिरिक्त लेरमोन्तोव ने कुछ अन्य लिरिक भी लिखे—'पाल', फरिश्ता', 'प्रार्थना'—जो रूसी बच्चे-बच्चे की जबान पर है। उसके रोमेटिक स्पर्श के नीचे जीवन है, यथार्थ रोजमर्रा का जीवन, काँपता, इठलाता, उदास, विषाद भरा, कुचला। उसके वर्णन ज्वलत है, अभिराम, फोटो के से सच्चे। पहाडो जगलो का तो वह अप्रितम चित्रकार है। वर्णनात्मक प्रतिभा में वह बाइरन सा लगता है पर बाइरन लेरमोन्तोव के मुकाबले कल्पना में कितना कगाल है। लेरमोन्तोव उससे कही ऋद्ध रोमेंटिक है।

लेरमोन्तोव की भाषा आमफहम है, साधारण नागरिक की तरह जो कवि स्वयं अपने नित्य के जीवन में बोलता होगा, उसमें कही कृत्रिमता नही, कही दुविधा नही, कही दुर्गमता नही। जहाँ कजाकमाता अपने बच्चे को लोरी सुनाती है वहाँ घर-बाहर का जीवित चित्र खडा हो जाता है, ऐसा जैसा वह माता देखती है। भाषा वैसी ही है जैसी वह बोलती-सुनती है, जिसे बच्चा भी समझ लेता है। बोरोदिनो जो लडाई का वर्णन करता है वह कोई लडाका ही कर सकता है। निश्चय ही लेरमोन्तोव की मछलियाँ कभी ह्वेलो की बोली नही बोलती। लगता है, प्रकृति स्वय उसकी कलम उठा लेती है और लिखने लग जाती है, लेरमोन्तोव बीच में नही आता। पुश्किन तक की शैली को हम सराहते है, वाह-वाह कह उठते हैं पर लेरमोन्तोव की शैली तो हमारे सामने से हट जाती है। दृश्य अपने आप बोल उठते है, प्रत्यक्ष, मूक और मुखरित। पुश्किन की भाँति लेरमोन्तोव की प्रतिभा बहुमुखी नही, पर उसमें व्यजना, रसपाक, ऋद्ध अकन प्रभूत है। पुश्किन के साथ ही रूसी राष्ट्रीय गायन का वसन्त निझर गया।

उसके बाद उस परपरा का बस एक ही कवि हुआ कोल्त्सोव[१] उसीका समकालीन, रूसी लोक कवियो में सबसे महान्। उसका पिता मवेशियो का छोटा-मोटा रोजगार करता था। एक दिन मॉस्को के एक तरुण के हाथ कोल्त्सोव की कविताएँ लग गयी और उसने चन्दा कर के उन्हे छपवाया, बगैर किसी बनावट या भावुक शब्दजाल के। कोल्त्सोव किसानो का जीवन खीचकर रख देता है। उसका जीवन जैसे भीतर से निकलता आता है। उसने अपनी लिरिको में फसलो की बुवाई और कटाई, कुटिया करने वाली कुमारी को अपने अतरग की व्यथा, किसान के हृदय के राग और जीवन के स्वप्न सभी जाग उठे। वह लरेमोन्तोव की मृत्यु के बस साल भर बाद ही मारा गया। और उसके साथ ही रूसी तत्कालीन मयिक कविता का यवनिकापात हो गया। फिर जब यवनिका उठी तो रगमच पर रूसी गद्य का प्रवेश हो चुका था।

---

१ Aleksyey Vasilyevich Koltsov (१८०८-४२)

: ४ :

गद्य का युग

गद्य-युग के प्रारम्भिक काल का महान् कलाकार निकोलेस गोगोल[1] था। गोगोल उपन्यास और नाटक दोनो क्षेत्रो का प्रतिनिधि साहित्यकार था। वह लघु रूसी था, कजाकिस्तान के पोल्तावा का पर १८२९ में वह उक्रेन छोडकर सेन्टपीटर्सबर्ग चला गया। रगमच सम्बन्धी कुछ असफल प्रयत्न कर वह यूनिवर्सिटी मे इतिहास का प्रोफेसर हो गया। यद्यपि उस कार्य में भी उसे सफलता न मिली और तब वह साहित्य की ओर मुडा।

पुश्किन से मित्रता होते ही उसे प्रेरणा मिली। उसने पहले कुछ स्केच लिखे—"खेत की साझ" फिर "मीरगोरोद"। गोगोल रोमेंटिक प्रवृत्ति का था, कल्पना और स्वप्न उसके रोम-रोम में बसे थे। परन्तु अन्य रूसी साहित्यकारो की ही भाँति उसकी रोमेंटिक प्रवृत्ति को भी यथार्थ का योग सुलभ था। साथ ही उसमें हास्य की भी प्रतिभा थी। हास्य की सभी मात्राओ की—ठठाकर हाँसने से लेकर मुस्कराने और व्यग तक की।

उसकी पहली पुस्तक की पहली कहानी मे रूस का असाधारण यथार्थ रूप प्रस्तुत है। दक्षिण की दुपहरी में चमकती धूप मे बालो भरी फसल खडी है, मेले में गेहूँ बेचा जा रहा है, मेले का शोर सही बू-बास के साथ सर्वत्र उठ रहा है। गोगोल अपने प्रारम्भिक प्रयास में ही अपनी विशेषता लिये उतरा। यह पहली पुस्तक उसकी "लाल जाकेट" थी। इसमें ही गोगोल की अलौकिक की भावना अकित हो गई जो निरन्तर उसकी कृतियो मे बनी रही। अप्सराएँ, चाँद चुराने वाला दानव, डाइनें, जादूगर सभी इसमें उतर पडते हैं। "मीरगोरोद" की कहानियाँ—"प्राचीन-पन्थी जमीदार" और "दो ईवानो का झगडा"—में यथार्थ लहराने लगा है। "तारास बुल्बा" इसी प्रकार अपनी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर कजाक जीवन साँचे में ढालकर रख देता है। इन कहानियो के अतिरिक्त उसकी कहानियो के दो सग्रह—"अरावेस्क" (१८३४) और "कहानिया" (१८३६) और निकले। इनकी भूमि अलौकिक से हट कर हास्य मिश्रित तथ्य पर निर्मित होती है। यद्यपि जहाँ तहाँ असाधारण का योग भी बना है। "गाडी" मे यथार्थ और हास्य का मिश्रण है और "ओवर कोट" मे यथार्थ और करुणा का।

इन्ही दिनो गोगोल रगमच के लिये लिखता रहा पर वहाँ दिक्कत सेन्सर से पास होने में थी यद्यपि उसका "तहकीकात" या "इन्स्पेक्टर जेनरल" पास हो गया जो आश्चर्य की बात थी। यह जार की कृपा का परिणाम था। नाटक रूसी नौकरशाही के कृत्यो पर

---

१ Nikolay Vasilyevich Gogol (१८०९-५२)

प्रखर व्यग्य है। इसका प्रत्येक चरित्र झूठा, बेईमान, बुद्धू और हृदय-हीन है, प्रत्येक साहित्यिक कला का नमूना है।

नाटक खेले जाने के बाद गोगोल सदा के लिये रूस छोड रोम में जा बसा। वही उसने अपनी सुन्दरतम और रूसी भाषा की अतिम कृति "मृत आत्माएँ" प्रकाशित की। इसकी प्रेरणा भी "इन्स्पेक्टर जनरल" की ही भाँति उसे पुश्किन से ही मिली थी। गजब की कहानी थी। रूसी जमीदारो के सर्फों (खेत के कृषक-मजूर) को मृत आत्माएँ कहते थे। दस साल पर इनका मुआयना होता था और मरे हुए जीवो पर टैक्स लगता था। बीच में कोई इन्हे नही पूछता था। कहानी के नायक चिचिकोव को एक नई बात सूझी। उसने सोचा कि क्यो न मृत जीवो को खरीद कर सेन्ट पीटर्सबर्ग या मॉस्को मे किसी बैंक मे रहन कर दिया जाये। आखिर दूसरे दशक तक तो उनके विषय में कोई पूछेगा नही। ये मृत आत्माएँ कही क्रीमिया में है और चिचिकोव उनकी खोज में फिर रहा है। कहानी तीन भागो में सम्पन्न होने वाली थी परन्तु दूसरे ही भाग के बाद जब गोगोल की धार्मिक प्रेरणा ने उसे बुरा माना तो समाप्त द्वितीय भाग को उसने दो-दो बार आग में डाल दिया। पुस्तक का पहला भाग और अपूर्ण दूसरा प्रकाशित हुए। इनके प्रकाशन ने शिक्षित रूस पर गजब का असर किया। सचमुच गजब की पुस्तक है "मृत आत्माएँ", बच्चो को हँसा देने वाली, तरुणो को चिन्तनशील कर देने वाली, बूढो को रुला देने वाली। इसमें "सेक्स" कही न था, प्रेम का स्पर्श कही न था। साहित्य मे यह क्राति थी क्योकि प्रणय का नशा कहानी के लिये स्वाभाविक अनिवार्य भूमि माना जाता था।

उपन्यास-कला के साथ ही साथ गद्य के क्षेत्र मे आलोचना का भी विकास हुआ। कारामजिन ने ही साहित्यिक आलोचना की बुनियाद डाल दी थी अब कुछ और भी आलोचक हुए जिन्होने उसका विकास किया। प्रिन्स व्याजेम्सकी उनमें प्रथम था। परन्तु पहला पेशेवर जर्नलिस्ट पोलेव्या था जिसने आलोचना के क्षेत्र में नितान्त पैनी कलम चलाई। परन्तु आलोचना की रुचिपूर्ण शैली का वास्तविक निर्माता बेलिन्सिकी[1] था। पोलेव्या की ही भाँति वह भी निम्न वर्ग का था। और आत्म-शिक्षण के बल पर बढा था। उसका जीवन बडे सघर्ष का था। कगाल, रुग्ण आवश्यकताओ से भरा। सेन्सर ने उसे बडा परेशान किया पर वह अपना काम कर गया और जागृत आलोचना की नीव पड गई। फिर तो उसे अगली पीढी के गोन्चारोव, दॉस्त्वाएव्स्की, हैर्ज़ेन और दूसरो ने और आगे बढाया। बेलिन्सकी ने पुश्किन, लेरमोन्तोव, गोगोल, ग्रिबोयेदोव, जुकोवस्की आदि की व्याख्या और समीक्षा की। उसके विचारो का साका चल गया। उसने जीवन को कला के ऊपर रखा। कला कला के लिए—वाले सिद्धात का वह प्रबल शत्रु था।

---

१. Vissarion Grigorievich Belinsky (१८१०-४८)

: ४ :

गद्य का युग

गद्य-युग के प्रारम्भिक काल का महान् कलाकार निकोलेस गोगोल[1] था। गोगोल उपन्यास और नाटक दोनो क्षेत्रो का प्रतिनिधि साहित्यकार था। वह लघु रूसी था, कजाकिस्तान के पोल्तावा का पर १८२९ में वह उक्रेन छोडकर सेन्टपीटर्सवर्ग चला गया। रगमच सम्बन्धी कुछ असफल प्रयत्न कर वह यूनिवर्सिटी में इतिहास का प्रोफेसर हो गया। यद्यपि उस कार्य मे भी उसे सफलता न मिली और तब वह साहित्य की ओर मुडा।

पुश्किन से मित्रता होते ही उसे प्रेरणा मिली। उसने पहले कुछ स्केच लिखे—"खेत की साझ" फिर "मीरगोरोद"। गोगोल रोमैंटिक प्रवृत्ति का था, कल्पना और स्वप्न उसके रोम-रोम मे बसे थे। परन्तु अन्य रूसी साहित्यकारो की ही भाँति उसकी रोमैंटिक प्रवृत्ति को भी यथार्थ का योग सुलभ था। साथ ही उसमे हास्य की भी प्रतिभा थी। हास्य की सभी मात्राओ की—ठठाकर हँसने से लेकर मुस्कराने और व्यग तक की।

उसकी पहली पुस्तक की पहली कहानी में रूस का असाधारण यथार्थ रूप प्रस्तुत है। दक्षिण की दुपहरी में चमकती धूप मे बालो भरी फसल खडी है, मेले में गेहूँ बेचा जा रहा है, मेले का शोर सही बू-वास के साथ सर्वत्र उठ रहा है। गोगोल अपने प्रारम्भिक प्रयास में ही अपनी विशेषता लिये उतरा। यह पहली पुस्तक उसकी "लाल जाकेट" थी। इसमे ही गोगोल की अलौकिक की भावना अकित हो गई जो निरन्तर उसकी कृतियो मे बनी रही। अप्सराएँ, चाँद चुराने वाला दानव, डाइनें, जादूगर सभी इसमें उतर पडते हैं। "मीरगोरोद" की कहानियाँ—"प्राचीन-पन्थी जमीदार" और "दो ईवानो का झगडा"—में यथार्थ लहराने लगा है। "तारास वुल्बा" इसी प्रकार अपनी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर कजाक जीवन साँचे में ढालकर रख देता है। इन कहानियो के अतिरिक्त उसकी कहानियो के दो सग्रह—"अरावेस्क" (१८३४) और "कहानिया" (१८३६) और निकले। इनकी भूमि अलौकिक से हट कर हास्य मिश्रित तथ्य पर निर्मित होती है। यद्यपि जहाँ तहाँ असाधारण का योग भी बना है। "गाडी" मे यथार्थ और हास्य का मिश्रण है और "ओवर कोट" में यथार्थ और करुणा का।

इन्ही दिनो गोगोल रगमच के लिये लिखता रहा पर वहाँ दिक्कत सेन्सर से पास होने में थी यद्यपि उसका "तहकीकात" या "इन्स्पेक्टर जेनरल" पास हो गया जो आश्चर्य की वात थी। यह जार की कृपा का परिणाम था। नाटक रूसी नौकरशाही के कृत्यो पर

१ Nikolay Vasilyevich Gogol (१८०९-५२)

: ५ :

सुधार का युग

बेलिन्स्की की मृत्यु के बाद ७ वर्ष का समय (१८४८-५६) रूसी साहित्य के लिए बडा घातक था, भयानक जार निकोलस का शासन काल था और सेन्सर ने गजब की छान-बीन शुरू की थी। विशेषत इसलिए कि पेरिस की १८४८ की क्राति ने रूसी राजनीति और साहित्य के नरम-गरम दोनो दलो पर समान रूप से अपना असर डाला था।

फिर भी साहित्य को जीवित रखने और नई चेतनाओ का प्रचार करने के लिए कुछ साहित्यकार बराबर प्रयत्नशील रहे थे। इनके एक दल का नाम 'पेत्राशेव्स्की' था, इसी नाम के नेता के नाम पर नेता परराष्ट्र-विभाग मे अफसर था। शुक्रवार के दिन ये लोग मिलते और विविध विषयो पर परामर्श-आलोचना करते। दल क्रातिकारी नही था पर पुलिस को जो उसका पता चला तो उस पर आफत ढा दी गई। उनमे से २१ को फाँसी का हुक्म हुआ इन्ही में दॉस्त्वाएव्स्की भी था। अन्त मे ये लोग प्राणदण्ड से मुक्त कर इधर-उधर जेलो में भेज दिए गए या निर्वासित कर दिए गए। १८५५ मे जार निकोलस के मरने पर अलेग्जेडर द्वितीय सम्राट बना और रूस मे सुधारो का युग शुरू हुआ—'सर्फ' स्वतन्त्र कर दिए गए, न्याय, स्थानीय स्वतन्त्रता आदि सभी मे कुछ न कुछ प्रगति हुई और एक नया जीवन नया सवेरा लिए रूस की जमीन पर उतरा। नए दिन ने रूसी साहित्य मे जो नव सृष्टि आरम्भ की उसका दूरगामी प्रभाव हुआ और ससार के साहित्य मे रूस अधिकारी बनकर आया। ससार के उपन्यास-क्षेत्र मे शीघ्र ही रूस के असाधारण उपन्यासकार बेजोड अग्रणी बने तुर्गेनेव, टॉल्सटॉय और दॉस्त्वाएव्स्की।

ईवा तुर्गेनेव[1] ने पहले पद्य लिखना शुरू किया पर शीघ्र ही मोपासा की भाँति उसने जान लिया कि वह उसका क्षेत्र नही। १८४७ मे किसान-जीवन के आधार पर उसने "समकालीन" लिखा "खोर और कालीनिच" भी उसी साल लिखा गया जो बाद में (१८५२ में) "खिलाडियो के स्केच" का अग बना।

पुश्किन की ही भाँति तुर्गेनेव को भी सरकार ने दो-दो बार दक्षिण की ओर निर्वासित कर दिया जो उसके लिए प्रचुर उपादेय सिद्ध हुआ। वहाँ उसने जीवन को प्रत्यक्ष देखा। फिर वह पश्चिमी यूरोप चला गया। पेरिस और जब-तब रूस आता-जाता रहा। उसने अधिकतर सुधार-युग से पहले के रूस का अकन किया, पर जब वह समसामयिक रूस को अपनी कृतियो में आधार बनाकर चला तब सैद्धान्तिक झगडे खडे हो गए। उसका "रुदिन" १८६० मे, "पिता और पुत्र" "गिष्टो का नीड" १८५९ में, "सांझ को" १८६० मे, "पिता

---

१ Ivan Sergeyevich Turgenev (१८१८-८३)

बेलिन्स्की की परपरा का सीधा रुख समाजवादी था जिसका शुद्ध विकास एलेग्जेडर हैर्जेन[1] के साहित्य मे हुआ। हैर्ज़ेन का असली नाम याकोव्लेव था। वह समृद्ध रूसी पिता का पुत्र था। पिता ने जर्मनी मे विवाह किया पर रूस लौटकर विवाह को जायज़ नही करवाया जिससे बच्चो को माता का उपनाम गृहण करना पडा। हैर्ज़ेन ने इसी से अपना जर्मन नाम ही चलने दिया।

हैर्ज़ेन अपने जमाने का बडा प्रभावशाली व्यक्तित्व था। असाधारण महान्। फिर वह अप्रतिम सस्मरण-लेखक भी था। यूनिवर्सिटी मे उसने गणित की शिक्षा पाई पर उतरा वह साहित्य के क्षेत्र मे। उसका उपन्यास "दोष किस का है?" साहित्य में असामान्य स्थान रखता है। अपने विचारो के प्रचार के कारण वह पहले पर्म फिर व्यात्का को निर्वासित कर दिया गया। फिर तो उसने १८४७ में सदा के लिए रूस छोड दिया। पहले वह पेरिस गया। फिर लन्दन गया। वहाँ उसने "दि बेल" का सम्पादन किया। हैर्ज़ेन समाजवादी था। मार्क्स का समकालीन वह सामूहिक स्वत्व का प्रचारक था और निहिलिस्टो का पूर्ववर्ती। उसके सस्मरण—"मेरा अतीत और मेरे विचार"—शैली के आकर्षण मे बेजोड ह। १८-७० में वह मरा, रूसी साहित्य और इतिहास दोनो में अमर होकर।

स्लाव-विशिष्ट-चेतना को "स्लावोफिल" कहते हैं। इस प्रवृत्ति मे विश्वास करने वालो का विचार है कि पश्चिमी सभ्यता सड गई है, उसका उद्धार रूसी किसान (स्लाव) करेगा। इस विचार का नेता रूस का असाधारण सुसस्कृत और शिष्ट व्यक्ति होम्याकोव[2] था, द्वन्दवादी कवि, अतीतवादी। त्यूचेव[3] और ईवाँ अक्साकोव[4] भी उसी परपरा के कवि थे। सेर्गे अक्साकोव हैर्ज़ेन की ही भाँति अपने विचारो के अनुकूल सस्मरण लिखने में सिद्धहस्त था। वह ईवाँ-कवि[5]-का पिता था जो १७९१ मे जन्मा था और १८५९ मे मरा। अपनी मृत्यु के तीन वर्ष पहले उसने अपना "पारिवारिक तवारीख" प्रकाशित किया जो अट्ठारहवी सदी के अन्त और एलेग्ज़ेंडर के युग के इतिहास के लिए बडे महत्व का है। उसमें गद्य की चिरस्मरणीय शैली में चरितात्मक निबन्धो का सग्रह है। उसने जिन कृषको का चित्र खीचा है वे उसके विचारो के अनुकूल ही निरक्षर होकर भी आचारवान् और स्तुत्य है, आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता से अविकृत, प्रकृति के स्वच्छ "मॉडल" और यह सारा जिस गद्य में प्रस्तुत है उसका अविरल प्रवाह अप्रतिम है। फिर भी इसकी शैली भाषा की पच्चीकारी है।

---

१ Aleksander Ivanovich Herzen (१८१२-७०), २ Alcksyey Stepanovich Khomyakov (१८०४-६०), ३ Fedor Ivanovich Tyutchev (१८०३-७३), ४ Sergey Timofeyevich Aksakov (१७९१-१८५९), ५ Ivan (१८०६-५६)

उसकी यात्रा के बाद प्रकाशित हुए। "आब्लोमोव" इनमे सबसे सुन्दर कृति है। जो १८५८ मे प्रकाशित हुई। "आब्लोमोव" ड्रेसिंग गाउन और स्लिपर पहन कर ड्राइंग रूम मे रहने वाले पीटर्सबर्ग के श्रीमानो का प्रमादी रूप प्रस्तुत करता है।

इसी काल कुछ और भी गद्यात्मक रचनाएँ हुई जिन्होने रूस के साहित्य और इतिहास पर आलोचना मे अपनी छाया डाली। इनमे अराजक बकनिक तो रूसी निहिलिज्म का अवतार ही था। ग्रिगोरिव ने कला का सम्बन्ध रूसी राष्ट्रीय भूमि से स्थापित किया था और उसका प्रभूत प्रभाव दॉस्त्वाएव्स्की पर पडा। कात्कोव पहले हेरजेन और बकूनिन की परपरा मे था। पहले वह दर्शन का अध्यापक था परन्तु उसे यूनिवर्सिटी अपने विचारो के कारण मजबूरन छोड देनी पडी। फिर उसने जर्नलिस्ट का जीवन अख्तियार कर लिया और "मास्को समाचार" का सम्पादन करने लगा। पोलैण्ड के विद्रोह के अवसर पर जो उसने राष्ट्रीय विचारो का नेतृत्व किया उससे हैर्ज़ेन के प्रकाशन "दि बेल" पर घातक चोट पड़ी। परन्तु कुछ ही दिनो बाद कात्कोव सकीर्ण राष्ट्रीयतावादी बन गया। स्लावोफिल परपरा के दो अन्य आलोचक स्त्राखोव और दानिलोव्स्की थे, दोनो ही दॉस्त्वाएव्स्की की ही भाँति ग्रिगोरिव के शिष्य थे जिन्होने साहित्य मे पाश्चात्यता का विरोध किया।

इस दिशा में रेडिकल विचारो का कर्ण चेरनिशेव्स्की[1], दोब्रोल्यूबोव[2] और पिसारेव[3] के हाथ रहा। चेरनिशेव्स्की ने जान स्टुअर्ट मिल के विचारो का अनुवाद किया, कला और यथार्थता के पारस्परिक सम्बन्ध पर एक पुस्तक प्रकाशित की सात वर्ष की कडी कैद झेली और २० वर्ष निर्वासित जीवन व्यतीत किया। उसने उत्कट समाजवादी प्रचारात्मक आलोचना द्वारा अभौतिक दर्शन की रीढ तोड दी और अपने उपन्यास—"क्या करना है ?" द्वारा अपनी और अगली पीढी पर असाधारण प्रभाव डाला। इस उपन्यास का विषय निहलिज्म है। दोब्रोल्यूबोव जो २४ वर्ष की आयु में ही मर गया, उसी यथार्थवादी दृष्टिकोण का था - उसकी प्रधान आलोचना यह थी कि रूसी साहित्य आब्लोमोव की चित्तवृत्ति से जकड गया है, किचात्स्की, पिचोरिन और रुदिन सभी आब्लोमोव है। पिसारेव भी यथार्थवादी दार्शनिकता मे चेरनिशेव्स्की का ही अनुयायी था और सौन्दर्य को जीवन से अलग देखने का विरोधी था। उसके विचार मे कला का एकमात्र कर्त्तव्य जीवन को व्यक्त करना है। पिसारेव ने तुर्गेनेव के 'बाजारोव' को उपन्यासकार की ही प्रतिमूर्ति मानी जो तुर्गेनेव पर कुछ ओछा व्यग्य न था। पिसारेव भी अल्पायु मे ही मरा।

---

१ Nikolay Gavrilovich Chernyshevsky (८०८—८९), २ Nikolay Aleksandrovich Dobrolyubov (१८३६—६१); ३ Dmitry Ivanovich Pisarev (१८४०—६८)

और पुत्र" १८६२ में, और "धुवाँ" १८६७ मे लिखे गए। जब उसने अपने उत्कर्ष के समय यूरोप का भ्रमण किया तब उसे बडा आदर मिला। यूरोप के साहित्यकार और आलोचक उसकी ओर युग-प्रवर्तक के रूप में देखने लगे। फ्लाबर्ट उससे चमत्कृत हो गया, जॉर्ज सैण्ड ने उसे शिष्य की शिष्टता से भेंटा, टेन ने उसकी कृतियो को सोफोक्लीज की कृतियो के बाद कला का अनुपम निखार माना। उसने यूरोप को सर्वथा जीत लिया।

रूस में तो उसको तत्काल लोकप्रियता मिली। उसके "शिष्टो का नीड" ने उसे अमित ख्याति दी। केवल उसके "पिता और पुत्र" ने उसकी ख्याति को बडी क्षति पहुँचाई। क्रातिकारी दृष्टिकोण ने उसके नायक बाजीराव को सर्वथा निन्द्य ठहराया और प्रतिगामियो को वह लुसिफर (शैतान) का अवतार तथा उपन्यास निहिलिज्मका प्रचार जान पडा। गरज कि तुर्गनेव दोनो दलो के क्रोध का शिकार हुआ।

तुर्गनेव मूलत कवि है और उसने रूसी गद्य के क्षेत्र में वह किया जो पुश्किन ने पद्य के क्षेत्र में किया था—उसने शैली के "मॉडल" प्रस्तुत किए। उसकी शैली में पुश्किन की सी ही स्वच्छता और स्पष्टता थी। उसकी कृतियो में देहात सम्बन्धी घटनाएँ और किसान जीवन के चित्र यथार्थ पर अवलम्बित हैं और इन सबसे ऊपर कलाकार की सुरुचि में वह अपना प्रतीक आप था। इस रूप में उसका "खिलाडियो के स्केच" प्रमाण है। उसका "बेजिन मैदान" जिसमे बच्चे एक दूसरे से डरावनी कहानियाँ कहते है, यूरोपीय साहित्य मे आज भी अप्रतिम है। उसी प्रकार उसके "गायक" "मृत्यु" आदि सभी असाधारण कृतियाँ है। "रूदिन" बडी करुण कृति है यद्यपि समय ने उसके प्रभाव को आज कमजोर कर दिया है। उसका "चश्मे का पानी" पद्य की मुखरता लिए हुए है। "पिता और पुत्र" विपरीत आलोचको के बावजूद भी अद्‌भुत कृति है, कला की दृष्टि से अनूठी। "कुँवारी भूमि" में तुर्गनेव ने क्रातिकारी आन्दोलन अकित किया जिसमें वह सफल न हो सका। फिर भी अपने जीवन के उत्तर काल में, जो उसने "गद्य में कविताएँ" प्रस्तुत की तो उनसे उसने ध्वन्यात्मक माधुर्य का स्रोत खोल दिया। गद्य मे यदि कही गायन की सामग्री किसी को देखनी हो तो तुर्गनेव की इस कृति में देखें।

रूस के लिए तुर्गनेव महान् था और यूरोप के लिए महत्तर। क्राति की नयी धारा ने उसकी लोकप्रियता को झकझोर दिया और टॉलसटॉय तथा दॉस्त्वाएव्स्की की सशक्त रचनाओ ने तुर्गनेव की नाजुक कलाचातुरी पर प्रचुर आघात किया यद्यपि स्रष्टा की कलात्मक रचना प्रणाली मे वह आज भी अनोखा है।

गोन्चारोव[1] उच्चवर्गीय था और उसने ससार के भ्रमण के बाद यात्रा-सम्बन्धी अपने पत्र लिखे। उसके तीन उपन्यास—"रोजमर्रा-की कहानी" "आब्लोमोव" और "भूपात"

---

१ Aleksander Ivanovich Goncharov (१८१२–९१)

परन्तु १९०२ तक यद्यपि सारे रूस ने उसकी कृतियो को पढा, किसी ने उसका मूल्याकन न किया और वह उपेक्षित ही रहा। इसका एक विशेष कारण था। आज का समाज अब वर्ग विशेष या गिने चुने लोगो का न रहा और उसकी इकाइयो ने जो फैलकर एक ठोस सिलसिला कायम किया है उस पर वही ठहर सकेगा जो उससे अपनी आत्मीयता स्थापित कर सके। लेस्कोव समाज को उथल-पुथल कर देने वाली तत्कालीन रूसी विचार-धाराओ के सघर्ष से अलग था। इसी से वह उपेक्षित भी हुआ। कार्य के उपसहार के रूप में उसने एक निर्माणात्मक परिशिष्ट जोडा। वह सुधारवादियो की आलोचना में लिखने वाला पहला उपन्यासकार था। उसकी आलोचना केवल नकारात्मक ही न होकर क्रियात्मक भी थी।

लेस्कोव की ही भाँति पिसेम्की[1] भी असामान्य प्रतिभा से सम्पन्न था और उसी की भाँति उसने भी नये आचार विचारो, सुधारो और सुधारको की आलोचना की। पिसेम्स्की फिर भी लेस्कोव से कही अधिक तिक्त और निराशावादी था। उसने समसामयिक सुधारवादी जनसत्ता की प्रवृत्ति को बुरी तरह धिक्कारा यद्यपि वह स्वय पुराणपथी न था उसका 'क्षुब्ध सागर' (१८६२) क्रातिकारी और रैडिकल रूस पर भयानक आघात था जिसका परिणाम उसे भी लेस्कोव की ही भाँति भोगना पडा। दोनो साहित्यिक ससार से जैसे बहिष्कृत हो गये। ओस्त्रोव्स्की[2] का सम्बन्ध अधिकतर रगमच के इतिहास से था जहाँ उसने मध्यवर्ग के जीवन और नागरिक तथा निम्नवर्गीय अफसरो, सौदागरो आदि का समसामयिक रूप प्रस्तुत किया। वह एक अर्थ में आधुनिक रूसी यथार्थवादी कॉमेडी और ड्रामा का विधाता था। उसने रगमच को उसकी पुरानी मान्यताओ से मुक्त कर प्राय सर्वथा आधुनिक बना दिया।

इस सुधारवादी युग की साहित्यिक प्रगति का अकन ग्रिगोरीविच के उल्लेख बिना समीचीन नही हो सकता। वह भी उपन्यासकार था और यद्यपि उसकी सर्जनात्मक शक्ति पिसेम्स्की और लेस्कोव के स्तर पर नही रखी जा सकती, निस्सदेह रूसी साहित्य के किसानपरक कृतियो का वह प्राय प्रवर्तक था। उसने तुर्गनेव से भी पूर्व किसानो के जीवन का जो चित्रण पहली बार किया तो उसके पाठक उस जगत के प्रति सहृदय हो सहानुभूति से सराबोर हो उठे। अपने 'मांझी' में उसने तुर्गनेव की ही भांति चित्रण मे कुशलता प्रदर्शित की और अपने 'देहात की सडकें' में तो उसने पूर्ण जमाने का बडी चातुरी से चित्र खींचा। विनोद, हास्य, करुण और नैसर्गिक सहानुभूति की तो उसने एक नयी धारा ही बहा दी।

---

१ Alekseyey Feofilaktovich Pisemsky (१८२०-८१), २. Aleksander Nikolayevich Ostrovsky (१८२३-८६)

व्लादिमिर सोलोनीव[१] १८। साहित्य का एक असाधारण निर्माता है। वह कवि, दार्शनिक और समालोचक तीनो था। समालोचना के क्षेत्र में उसने निहायत स्वाधीन वृत्ति का आचरण किया। वह राजनीतिक दलो की चेतनाओ से पृथक् था। उसे पुराने स्लावो-फिलो से सहानुभूति थी परन्तु कात्कोव के से राष्ट्रीयतावादियो पर उसने गहरी चोट की। उसकी शैली शक्तिम और मार्मिक थी और महान् विचारको की भाँति वह अपने युग से आगे था। उसे रूससे अगाध प्रेम था और वह ईसाई धर्मका बडा हिमायती था, उसके आचार विधान में ईसाई आचार की गहरी पुट है। उसी की परपरा में मिखेल साल्तिकोव भी था।

साल्तिकोव[२] ने "शेद्रिन" नाम से लिखा और प्रतिभा तथा ससार के प्रधान व्यग्य-कारो के नाते रूसी साहित्य मे उसका असामान्य स्थान है। उसकी व्यग्यात्मक चोट क्रिलोव, गोगोल और ग्रिकोयेदोव सबसे भिन्न थी, उन सबकी शक्ति से परे। उसने बहुत लिखा। उसकी कृतियो के सग्रह ग्यारह जिल्दो में प्रकाशित हुए। उसमें अनेक साहित्यिक अमर रचनाएँ है। आरम्भ में ही वह व्यात्का निर्वासित कर दिया गया, जहाँ उसे आठ-नौ वर्ष रहना पडा। वहाँ उसके अनुभव ने बडी समृद्धि अर्जित की। उसने उसका प्रकाशन (१८५६-५७) में अपने "प्रातीय जीवन के स्केच" में किया। उसकी दृष्टि सर्वत्र पहुँची, श्रीमानो के जीवन से लेकर किसानो और कैदियो के जीवन तक और उसके व्यग्य की प्रखर चोट प्रस्तुत विषय पर गहरी पडी। रूसी साहित्य में शायद उसका सा व्यग्यकार दूसरा नही हुआ। अधिकतर उसके व्यग्य का प्रहार मध्यवर्ग, ऊँचे नीचे अफसरो और रूढियो के ऊपर हुआ। उसकी सबसे ख्यातिलब्ध अमर कृति "मूल प्रमाणो के आधार पर एक नगर का इतिहास" है। इसमें ग्लोपोव नामक एक मूर्ख नगर का वर्णन है। जहाँ के लोग इतने मूर्ख हैं कि वे अपने से भी अधिक मूर्ख व्यक्ति को अपना शासक स्वीकार करते है। ग्लोपोव का अतिम शासक वह है जो नगर को बैरक बना देता है। स्पष्टत व्यग्य निकोलस प्रथम पर है।

साल्तिकोव की एक दूसरी अद्भुत रचना "पाम्यद्रूरी" है। जिसमे उसने उच्च पदस्थ अधिकारियो के अन्तरग को चीर कर खोल दिया है। कला की दृष्टि से व्यग्य की भूमि पर कही कोई ऐसी कृति सुघड न उतरी। साल्तिकोव नितान्त मौलिक है, व्यग्य की भूमि पर खडा अतिमानव। साल्तिकोव की ही परपरा मे लेस्कोव[३] था जिसने पहले "स्तेव-नित्स्की" नाम से लिखा। लेस्कोव का स्थान भी रूसी आलोचना-साहित्य में पहली पक्ति मे है। उसमें प्रतिभा है, हास्य और विनोद है, रग और भावनाओ की गहराई है, साथ ही कल्पना की समृद्धि भी है। परन्तु यह सब होते हुए भी शायद लेस्कोव के बराबर दूसरा आलोचक उपेक्षित न हुआ। १८६० में उसने अपना साहित्यिक जीवन आरम्भ किया।

---

१ Vladimir Sergeyevich Solovyev (१८५३–१९००), २ Mikhail Evgrafovi Saltykov Shchedrin (१८२६–८९), ३ Nikolay Semenovich Lyeskov

परन्तु १९०२ तक यद्यपि सारे रूस ने उसकी कृतियो को पढा, किसी ने उसका मूल्याकन न किया और वह उपेक्षित ही रहा। इसका एक विशेष कारण था। आज का समाज अब वर्ग विशेष या गिने चुने लोगो का न रहा और उसकी इकाइयो ने जो फैलकर एक ठोस सिलसिला कायम किया है उस पर वही ठहर सकेगा जो उससे अपनी आत्मीयता स्थापित कर सके। लेस्कोव समाज को उथल-पुथल कर देने वाली तत्कालीन रूसी विचार-धाराओ के सघर्ष से अलग था। इसी से वह उपेक्षित भी हुआ। कार्य के उपसहार के रूप मे उसने एक निर्माणात्मक परिशिष्ट जोडा। वह सुधारवादियो की आलोचना में लिखने वाला पहला उपन्यासकार था। उसकी आलोचना केवल नकारात्मक ही न होकर क्रियात्मक भी थी।

लेस्कोव की ही भाँति पिसेम्स्की[1] भी असामान्य प्रतिभा से सम्पन्न था और उसी की भाँति उसने भी नये आचार विचारो, सुधारो और सुधारको की आलोचना की। पिसेम्स्की फिर भी लेस्कोव से कही अधिक तिक्त और निराशावादी था। उसने समसामयिक सुधारवादी जनसत्ता की प्रवृत्ति को बुरी तरह धिक्कारा यद्यपि वह स्वय पुराणपथी न था उसका 'क्षुब्ध सागर' (१८६२) क्रातिकारी और रेडिकल रूस पर भयानक आघात था जिसका परिणाम उसे भी लेस्कोव की ही भाँति भोगना पडा। दोनो साहित्यिक ससार से जैसे बहिष्कृत हो गये। ओस्त्रोव्स्की[2] का सम्बन्ध अधिकतर रगमच के इतिहास से था जहाँ उसने मध्यवर्ग के जीवन और नागरिक तथा निम्नवर्गीय अफसरो, सौदागरो आदि का समसामयिक रूप प्रस्तुत किया। वह एक अर्थ में आधुनिक रूसी यथार्थवादी कॉमेडी और ड्रामा का विधाता था। उसने रगमच को उसकी पुरानी मान्यताओ से मुक्त कर प्राय सर्वथा आधुनिक बना दिया।

इस सुधारवादी युग की साहित्यिक प्रगति का अकन ग्रिगोरीविच के उल्लेख बिना समीचीन नही हो सकता। वह भी उपन्यासकार था और यद्यपि उसकी सर्जनात्मक शक्ति पिसेम्स्की और लेस्कोव के स्तर पर नही रखी जा सकती, निस्सदेह रूसी साहित्य के किसान-परक कृतियो का वह प्राय प्रवर्तक था। उसने तुर्गनेव से भी पूर्व किसानो के जीवन का जो चित्रण पहली बार किया तो उसके पाठक उस जगत के प्रति सहृदय हो सहानुभूति से सराबोर हो उठे। अपने 'माँझी' मे उसने तुर्गनेव की ही भाँति चित्रण में कुशलता प्रदर्शित की और अपने 'देहात की सडकें' मे तो उसने पूर्ण जमाने का बडी चातुरी से चित्र खींचा। विनोद, हास्य, करुण और नैसर्गिक सहानुभूति की तो उसने एक नयी धारा ही बहा दी।

---

१ Aleksyey Feofilaktovich Pisemsky (१८२०-८१), २. Aleksander Nikolaevich Ostrovsky (१८२३-८६)

: ६ :

टॉल्सटॉय और दॉस्त्वाएव्स्की

तुर्गनेव ने रूसी साहित्य को यूरोपीय धरातल पर खड़ा कर दिया था। उससे रूसी साहित्य को असाधारण आदर मिला। उसी युग ने टॉल्सटॉय[१] और दॉस्त्वाएव्स्की[२] को भी उत्पन्न किया जो अपने देश के साहित्य के विशाल स्तम्भ होते हुए भी वस्तुत विश्व-साहित्य के कर्णधार बन गये। उपन्यासो के क्षेत्र में उनके नाम आलोचक की लेखनी सम्भ्रम लिख जाती है। दोनो विचारवादी थे, दोनो ही क्रातिकारी, दोनो सुधारक और असाधारण कलाकार थे।

टॉल्सटॉय ने तो धर्म और जीवन के क्षेत्र मे भी एक वैयक्तिक क्राति की थी। वह खोजी था, असाधारण खोजी। उसकी आँखें गरुड की आँखें थी जिससे समाज में कही कुछ छिप न सकता था। वह सुकरात की परपरा मे जन्मा था और जिस दिन से उसने अपने साहित्यिक अथवा चिन्तक जीवन का आरम्भ किया उस दिन से लेकर अपनी मृत्यु के दिन तक कभी कोई बात ऐसी अगीकार न की जो केवल पारस्परिक थी। वह विचारो को, कथित सत्यो को, पूर्णत विशिष्ट करके देखता था और उसके अनुसधान की इस वृत्ति में एक नयी विश्लेषक चेतना का आविर्भाव हुआ। उसकी इस विश्लेषक शक्ति के साथ निर्माता की शक्ति का भी गहरा योग था। उपन्यासो की दुनिया मे उसने चिन्तन का राज़ स्थापित किया परन्तु कला को उपेक्षित न होने दिया, उसकी महानता केवल रूसी साहित्य की निधि नही ससार के साहित्य का गर्व है। उपन्यास के क्षेत्र में तो वह ससार का सबसे बडा कलाकार है। कुछ अजब नही कि लेनिन का सा क्रातिकारी उसकी कृतियो पर रीझ गया हो और गोर्की के सामने उसने उन्हे आदर्श रूप मे धर दिया हो।

टॉल्सटॉय की रचनाएँ उसके अनुसधान की परिणाम है, उसकी चेतनाओ और अनुभूतियो का कलात्मक निरूपण, अपने "बचपन,कैशोर और तारुण्य" मे उसने इन तीनो विकासकालो पर दृष्टिप्रक्षेपण किया है। इसे हम दृष्टि-प्रक्षेपण इसलिये कहते है कि वह केवल अतीत पर सिहावलोकन नही वरन् उसका एक प्रकार से पुनराकन है। जीवन की उन आरम्भिक मजिलो से हटते ही वह प्रौढ पुरुष के वातावरण के अनुसधान में लगा, "जमीदार की सुबह" में उसने जमीदार का जीवन खोलते हुए दिखाया, जो वास्तव मे उसका अपना जीवन था, कि वहाँ सिवा असन्तोष के और कुछ न था। फिर वह काकेशस की ओर भागा और वहा से शक्ति पाकर सूझ के साथ उसने अपनी अद्भुत कृति "कज्जाक" रची फिर वह दुनियाँ की ओर लौटा और क्रीमिया के युद्ध मे शरीक हुआ। उसने उस को युद्ध के दर्शन

---

१ Count Leo Nikolayevich Tolstoy (१८२८-१९१०), २ Feodor Dostoyevsky

पर एक दृष्टि दी । क्रीमिया के युद्ध से लौटकर वह भ्रमण के लिये निकला, विदेशो की यात्रा करता रहा । वहाँ से लौटकर उसने विवाह किया और गृहस्थ बना । गृहस्थ के जीवन का सुख उसने अपने "गार्हस्थ्य सुख" मे व्यक्त किया । और तब १८६५ में अपना "युद्ध और शाति" लिखा । "दिसम्बरी" आन्दोलन पर लिखने की उसकी उत्कट इच्छा थी और "युद्ध और शाति" जैसे उसने उसकी भूमिका के रूप में लिख दी । उपन्यास उसके अपने ही सस्मरणो पर आधारित था, उसका जगत् काल्पनिक किंचित् न था । पहली बार ऐतिहासिक उपन्यास मे उस ने अनुभूत सत्य को शरीरी बनाया। लगता है जैसे उस उपन्यास के पात्रो के बीच हम स्वय जा पडे हो, उनको हम जानते हो और उसकी पृष्ठभूमि हमारा अपना ही अनुभूत अतीत हो । उसमे उसने एक समूची पीढी का अकन किया । उसके "पियर बेजुखोव" के रूप मे उसकी अपनी खोज मूर्तिमान हुई और रोस्तोवो के चरित सा पारिवारिक जीवन का सुन्दर निरूपण तो साहित्य मे कही मिलने का नही और न "नताशा" का सा मनोरम व्यक्तित्व ही । तुर्गनेव की नारियाँ अपने रूप मे कलाकार की चित्रण कुशलता में अपनी सानी नही रखती, सही, पर टॉल्सटॉय की नताशा के मानव सौन्दर्य को कोई देखे और उसके विधाता कलाकार टॉल्सटॉय की निपुणता को । युद्ध और शाति ऐतिहासिक उपन्यासो की दुनिया मे, चिन्तन और कला के क्षेत्र में वेजोड है ।

टॉल्सटॉय का दूसरा ससार प्रसिद्ध उपन्यास "अना केरेनिना" (१८७५-७६) में प्रकाशित हुआ । इसमे वेलास्क की भाँति एक विशाल कन्वेस पर उस असाधारण कलाकार ने सेन्ट पीटर्सवर्ग और देश के उच्च वर्ग के समसामयिक जीवन को उतार दिया । "अना केरेनिना" का नायक लेविन स्वय टॉल्सटॉय है । इस उपन्यास में भी टॉल्सटॉय की कला उसकी अन्य कृतियो की ही भाँति रूस की भौगोलिक सीमाओ को लाँघकर वाहर निकल गयी है क्योकि इसके पाठक को भी क्षण मात्र के लिये क्षोभ नही होता कि वह विदेशी कहानी पढ रहा है । लगता है, अना प्रत्यक्ष देख रही है, कुछ गुन रही है । अप्रतिम कुशलता के साथ व्रोन्स्की के प्रति अना के प्रेम का उद्घाटन और विकास हुआ है । उपन्यास का प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक घटना , प्रणय के चढाव-उतार, आखिरी विपद् तक सभी कुछ अदभुत है, यद्यपि सारा सत्य, सुगम और स्वाभाविक है ।

अपने "आत्मोद्घाटन" मे भी टॉल्सटॉय ने अपनी विश्लेपक दृष्टि वरकरार रखी और स्वय अपने को भी उसमे तार-तार कर दिया । उसे विश्वास हो गया था कि सम्पत्ति ही सारे दु खो का मूल है। और उसने स्वय सर्वथा मुक्त हो जाना भी चाहा यद्यपि वह ऐसा न कर सका । उसने तृष्णा का शमन कर लिया था और सम्पत्ति उसके लिये कोई आकर्षण न थी परन्तु पारिवारिक सम्बन्ध उसके मार्ग में वाधक सिद्ध हुए । फिर भी जीवन के अन्तिम दिनो मे घर से उसका पलायन सिद्ध करता है कि सम्पत्ति छोडने की उसकी इच्छा वनावटी न थी ।

"अना केरेनिना" के बाद टॉल्सटॉय ने साहित्य का क्षेत्र कुछ काल के लिये छोड़ दिया। फिर भी वह लिखता रहा। पहले उसने बच्चो के लिये कहानियाँ लिखी फिर धर्म सम्बन्धी कुछ पेम्फलेट लिखे। १८८६ मे वह फिर साहित्य के क्षेत्र में जो लौटा तो उसके हाथ में किसान जीवन का वह सबल निरूपण "अन्धकार की शक्तियाँ" था। फिर एक के बाद एक, उसके "क्रूत्सेर सोनाता" "ईवा ईलिच की मृत्यु और रिसरेक्शन" आये, एक से एक सुघड। रिसरेक्शन तो कुछ आलोचको की दृष्टि में उसकी सर्वोत्कृष्ट कृति है। टॉल्सटॉय के मरने के बाद भी उसकी कुछ रचनाएं प्रकाशित हुईं। उनमे प्रधान "जीवित लाश" है।

टॉल्सटॉय की कला चिन्तनशील पर सरल और स्वाभाविक है, उसमें क्रातिकारी का साहस सर्वत्र है और निर्माण के लिये पुकार है। टॉल्सटॉय ने महात्मा गाधी पर कितना गहरा प्रभाव डाला यह उस भारतीय सुधारवादी नेता ने स्वय स्वीकार किया है। टॉल्सटॉय ने ससार के अन्य महापुरुषो को भी अपनी सूझ और साहस से प्रभावित किया। ससार के साहित्याकाश मे तो वह चन्द्रमा की शीतल चन्द्रिका के साथ उदित हुआ।

दॉस्त्वाएव्स्की[1] रूसी गद्य साहित्य मे टॉल्सटॉय के बाद सबसे बडा व्यक्ति माना जाता है। यूरोप ने, जो तुर्गनेव से प्रभावित था, पहले दॉस्त्वाएव्स्की की उपेक्षा की। उसकी कृतियाँ उपलब्ध भी न थी परन्तु आज वहाँ के आलोचक साधारणत स्वीकार करते हैं कि दॉस्त्वाएव्स्की तुर्गनेव से उसी मात्रा में महान् है जिस मात्रा में लियोनार्दो दा विंची फान्डाइक से कला के क्षेत्र मे महान् था। यूरोप ने तब अभी सिवा "अपराध और दण्ड" के दॉस्त्वाएव्स्की का और कुछ न जाना था। परन्तु जैसे-जैसे उसकी कृतियाँ पश्चिमी यूरोप की भाषा में अनूदित होती गई वैसे ही वैसे उसकी सत्ता का बोध लोगो को होता गया। कुछ आलोचको की दृष्टि मे तो वह टॉल्सटॉय से भी बडा है। जो भी हो है वह टॉल्सटॉय का एक प्रकार से साहित्य मे जवाब, उसका 'एन्टीथेसिस'। टॉल्सटॉय पार्थिव और स्वस्थ का सबल चित्रकार था, दॉस्त्वाएव्स्की असाधारण, अपराधियो, पागलो, रहस्यो का उद्घयिता था। टॉल्सटॉय अपने ही विस्तृत परिवार मे सम्पन्न शान्त जीवन बिताता था, दॉस्त्वाएव्स्की दर दर की ठोकरे खाता फिरा, कानून और घृणित दण्ड विधान का शिकार था। पहले उसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिली, फिर चार बरस तक साइबेरिया मे उसने कठिन कैद की सजा भोगी, छ वर्ष निर्वासित रहा। घर की आर्थिक स्थिति सत्यानाश को पहुंच गई थी, सदा, ऋण में रहता था पुलिस और अधिकारी उसे एक ओर पीसते थे। प्रतिगामी उदारवादी दूसरी ओर उसे गाली देते थे। हजार-हजार विपत्तियो को झेलने वाला, पैसे कपडो के अभाव मे दिन-दिन रात-रात कलम घिसने वाला, उस लेखनी के अहर्निश श्रम

---

१ Feodor Mikhailovich Dostoyevsky (१८२१-८१)

से भी कुछ कायदे से न कमा सकने वाला दॉस्त्वाएक्की टॉल्सटॉय से इस दिशा मे सर्वथा भिन्न था। उस महान् साहित्यकार ने इतनी विपत्ति कही कभी न झेली।

दॉस्त्वाएव्स्की की पहली पुस्तक "कगाल" १८४६ मे निकली और उस कृति से यतीमो और अभागो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति का पता चल गया। उसकी दूसरी पुस्तक "मरणागार से भेजे पत्र" मे यह मानव सहानुभूति और व्यापक हो उठी। कैद के दिनो पर आधारित यह कृति कारावास के जीवन का अद्भुत उद्घाटन है। उसके शव्द शव्द से मानव भाव की पुकार उठती है। १८६६ मे उस उपन्यासकार का प्रसिद्ध उपन्यास-"अपराध और दण्ड" प्रकाशित हुआ जिसने उसे प्रभूत ख्याति प्रदान की। मनोविज्ञान का साहित्य में इतना सही निरूपण और निर्वाह कम हुआ है। आशा, भय, घबड़ाहट इसके विशेष स्थल है। वृद्धा का खून करके मौक्वेथ स्वरूप रास्कोलिनोव की जो मन स्थिति हो जाती है वह व्यक्त करना कठिन है। राजुमिखिन जब वारागना के सामने घुटने टेक कर कहता ह—"मै तुम्हारे सामने नही झुका हुआ हूँ, मानव जाति की समूची पीड़ा के सामने झुका हूँ" तव जैसे उपन्यासकार अपनी कुल सहानुभूति सारी वेदना मे अपने साहित्यादर्श को खोलकर रख देता है। जब दॉस्त्वाएव्स्की ने अपना यह उपन्यास लिखा तब तक यूरोप मे अभी "मनोवैज्ञानिक उपन्यास" का पारिभाषिक उपयोग न हुआ था। पर वाद मे जिस उपन्यास परपरा की इस नाम से घोषणा हुई उसके उपन्यास इस "अपराध और दण्ड" के सामने नगण्य हो गये।

"अपराध और दण्ड" के वाद ही 'मूर्ख' (१८६८) का प्रकाशन हुआ। इसका नायक म्विश्किन, जिसकी सज्ञा पुस्तक के साथ ही मूर्ख है, वास्तव मे बुद्धिमान मूर्ख है। उसमे व्यग्य घृणा, अभिमान का अभाव है। उसकी सरलता धूर्तो, झूठो, चोरो और पापो से निरन्तर रक्षा करती है और उन सब पर वह अपने अकृत्रिम व्यक्तित्व की छाप छोडता जाता है। उसकी नेकनियती सारी वदी की सफल दवा है। उसमें आचरण का अदभुत माधुर्य है। उसके जवाव मे सौदागर रोगोजिन अविनीत तृष्णाओ का गुलाम है। और जिस नताशा को प्यार करता है उसी को मार डालता है। उपन्यास के साधारण चरित्र भी अचरज की सफलता से नक्श है। अनेक लोगो को 'मूर्ख' दॉस्त्वाएव्स्की सबसे सुघड कृति लगी है।

१८७१ मे उसने "भूत" लिखा जो निहिलिज्म के विरोध मे प्रस्तुत हुआ। पिछले दशक मे निहिलिज्म का भडा-फोड हो चुका था फिर भी अभी अनेक उसका पल्ला पकड़े हुए थे और अपनी आदर्शवादिता के कारण स्वार्थ-साधको के शिकार हो रहे थे। स्थिति विशेप के परिचय मे पुस्तक अतिरजित कही गई यद्यपि अगली घटनाओ ने "भूत" के दृष्टिकोण की सचाई प्रतिष्ठित कर दी। इसके वाद ही उसने फिर जर्नलिस्ट का जीवन अख्त्यार किया यद्यपि कुछ काल वाद वह फिर अपना 'कारामाजाव वन्धु' लेकर उपन्यास क्षेत्र मे

उतरा। यह उसके उपन्यासो मे सबसे लम्बा है, फिर भी अपूर्ण ही है। इसमें दिमिमि, इवा और अल्योशा नामक तीन भाइयो का चरित है। इनमें पहला कामुक है, दूसरा लोकवादी और तीसरा मानवता का प्रेमी। पुस्तक पूरी होने के पहले ही दॉस्त्वाएव्स्की ससार से चल बसा।

पुश्किन की मूर्ति उद्घाटित करते समय दॉस्त्वाएव्स्की ने जो व्याख्यान दिया था उससे उसके अनेक राजनीतिक शत्रु भी मित्र बन गए थे। और १८८१ मे जब वह मरा तब उसकी अर्थी के साथ सभी प्रकार के नर नारियो की असख्य भीड इकट्ठी हो गई थी। इससे उसके रूसी समर्थको की निष्ठा का परिचय मिलता है। दॉस्त्वाएव्स्की का स्थान रूसी साहित्य की चोटी पर है, टॉल्सटॉय के बराबर उसने ससार के मनोवैज्ञानिक उपन्यासोकी परपरा का आरम्भ करते हुए अपने विचारो को साहित्य का कलेवर दिया। उसका जीवन कष्टकर और सघर्षमय था। फिर भी किसी मे इतनी निर्भीकता, इतना साहस न था। कभी उसने परिस्थितियो से मजबूर होकर विचारो से समझौता न होने दिया।

: ७ :

कविता का पिछला युग

कविता का यह पिछला युग 'कला कला के लिए का' का उपासक था। इस उन्नीसवी सदी के तीसरे चरण मे स्वय रूस मे भी कुछ कवि इस विचार के हुए जिन्होने इस सिद्धात का पोषण किया परन्तु साधारणत वहाँ की राजनीतिक स्थिति ने इसे अधिक प्रश्रय नही दिया। उपन्यास और गद्य साहित्य का, जो विचारो का वाहन बन चला था, बोल-बाला था। हाँ जार अलेग्जेंडर द्वितीय की हत्या के बाद फिर एक बार पद्य के क्षेत्र मे कुछ प्रयास हुए और उस साहित्य ने कुछ प्रगति की।

इस काल के कवियो मे पहला नाम त्यूचेव[1] का है जो पुश्किन का समकालीन था, इससे चार वर्ष छोटा, पर जिसकी कृतियो की दीर्घकाल (१८५४) तक बडी उपेक्षा हुए। उसकी कविता में विचारो की गहराई और लिरिक की मिठास है। प्रकृति को भी वह सुन्दर अकित करता है। मनुष्य का भयानक अदृष्ट और सर्वथा शून्यता की छाया जैसे उसे घेरे-घेरे फिरती है। यद्यपि जहाँ तक उसकी कविता मे वसन्त की ताजगी और धूप भी फैल जाती है। वसन्त के चित्रो के अतिरिक्त रात का जितना आह्लादकर, भयकारक, स्वप्निल वर्णन उसने किया है किसी और रूसी कवि ने नही किया।

---

१. Fedor Ivanovich Tyutchev (१८०३-७३)

नेक्रासोव[1] जन कवि था और उसने अपनी प्रेरणा सीधे जीवन से ली और जनता के हर्ष-विपाद का उसने काव्याकन किया। उसकी कविता में मनुष्य और प्रकृति साथ आते है। परन्तु प्रकृति शेली, वर्डस्वर्थ की भाँति आदर्श भडार की भाँति नही मनुष्य का मित्र-शत्रु होकर। क्रैब की भाँति वह भी सर्वथा यथार्थवादी है। उसी की तरह उसमें भी करुण रस का प्रभूत प्रवाह है। उसकी सबसे महत्वपूर्ण कृति जनपरक महाकाव्य थी "रूस मे सुखी कौन है" इसमें अलौकिक कल्पना की बहुलता है। इसमे भी काफी तीव्र विषाद है, व्यग्य है, कठोर यथार्थवाद है, प्रकृति-पर्यवेक्षण है, अमित विविधता है। उसकी दो लम्बी कविताओ मे साइबेरिया में भेजे जाने वाले दिसम्बरी क्रातिकारियो की पत्नियो का करुण वर्णन है।

यूरोप की "पारनेसियन" परपरा के तीन रूसी कवि मइकोव (१८२१-८७) फेत[2] और पोलोन्स्की (१८२०-९८) है। ये तीनो राजनीतिक और सामाजिक समस्याओ से मुक्त है। माइकोव क्लासिकल विषयो का प्रेमी है, इटली और पुराने बैलेडो से प्रभावित परन्तु उसकी शक्ति रूसी प्रसग के चित्रण में है। माइकोव की ठोस मूर्तिवत रूपायनता के विपरीत फेत की कला उसकी काल्पनिक स्वप्निल मायावी शैली में है। उसकी कल्पना उसकी भावना, शब्द योजना सभी नाजुक है। पोलोन्स्की की कविता मधुर आकर्षक व्यक्तित्व का भेद खोलती है। उसमे सगीत का माधुर्य है और सादगी है। परन्तु तीनो मे से कोई नेक्रासोव के स्तर को न छू सका। उसके मुकावले तीनो साधारण कवि है। हाँ यदि उसके समीप इस काल का कोई कवि पहुँचता है तो वह काउण्ट अलेक्सीटॉल्सटॉय[3] है। वह भी पारनेसियन परपरा का ही कवि था और नैतिक काव्यत्व से अलग था। यद्यपि कुजमा पुत्कोव के नाम से जो व्यग्य उसने लिखा वह रूस मे घर-घर प्रचलित है। उसने प्रिन्स-सेरेब्रियानी-नामक एक ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखा और रूसी इतिहास के प्रसिद्ध भयानक ईवा युग पर नाटको की एक ट्रिलोजी भी। इनमे 'भयानक ईवा की मृत्यु' 'जार फयोदोर इवानोविच' और 'जार बोरिस' सग्रहीत है जो अकसर खेले जाते है और रगमच पर अच्छा प्रभाव लाते है। परन्तु अलेक्सी टॉल्स्टॉय की ख्याति उसकी लिरिक कविताओ पर अवलवित है और उसकी बहुमुखी प्रतिभा पुश्किन की याद दिलाती है। उसकी लिरिक सौन्दर्य और माधुर्य की प्रतीक है। वसन्त और पतझड पर उसने सुन्दर कविताएँ लिखी। वसन्त के सौरभ ताजगी, प्रेमवेग, प्रभात आदि पर तो उसकी कविताएँ यूरोप के साहित्य मे भी अपना सानी नही रखती।

---

१. Nikolay Alekseyevich Nekrasov (१८२१-७७), २ Afanasi Afanasyevich Shenshin-Fet (१८२०-९२), ३. Aleksvey Kostantinovich Tolstoy (१८१७-७५)

इस साधारणत सूखे युग मे भी कोल्त्सोव की परपरा मे कवि निकितिन हुआ। उसने अपने विषय सीधे जीवन से लिए। क्रीमिया के युद्ध काल मेंउसने जो देश प्रेम सम्वन्धी कविताएँ लिखी उनसे उसे खासी ख्याति मिली। परन्तु अधिक सफल वह हुआ प्रकृति के वर्णन मे। उसकी सूर्यास्त, प्रभात, अबावीलो के घोसलो आदि पर कविताएँ अधिक सफल हुयी। उस काल के दो और कवियो के नाम उल्लेखनीय है जिनकी तव तो काफी उपेक्षा हुई पर जो वाद मे काफी पढे गए। वे थे स्लुचेव्स्की और अपुख्तिन। इनमे पहला दार्शनिक कवि है और उसकी शैली वोझिल है। अपुख्तिन पारनेसियन, परपरा का कवि था। १८-८० के बाद रूस मे कवियो की बाढ-सी आ गई। इस काल के कवियो मे सबसे महत्व का नादसन (१८६२-८७) था। वह चौबीस साल की आयु मे ही यक्ष्मा से मर गया। उसकी मृत्यु के वाद उसकी कविताओ के इक्कीस सस्करण हुए और उनकी १,१०,००० प्रतियाँ विकी। दस सस्करण तो उसके जीवनकाल मे ही हो चुके थे। नादसन ने युवावस्था के विषाद, स्वप्न, निराशा आदि गाए। उसके सामने अन्य कवियो की कृतियाँ लोगो को बडी फीकी लगने लगी। उसकी प्रकृति सम्वन्धी वसन्त, रात, विशेषत रिवियश की रात पर कविताएँ बडी लोकप्रिय हुईं। वे उन्हे बडी मादक लगी।

परन्तु अगली पीढी ने उसकी अवहेलना कर दी। वह वर्तमान काल्पनिक जगत से दूर हटकर यथार्थ के समीप आता जाता था जिसकी आवश्यकताएँ, प्रवृत्तियाँ, प्रेरणा नई थी, अपनी। इस नवीन परपरा मे सर्वथा सावधि के पहले सोलोगुब ब्रूसोव, वाल्मोन्त, इवानोव और वेली ने अपनी रचनाएँ की जिनकी उपेक्षा नही की जा सकती। अलेग्जेण्डर ब्लाक इनमें प्रधान था। रूस के वर्तमान कवियो मे उसका स्थान वडा ऊँचा है। अपनी सुन्दरतम कृति "बारह" में उसने क्राति की आत्मा के गीत गाए। परन्तु रूस इधर निरन्तर आगे बढता गया है और उसकी समाजवादी निर्वर्गवादी परपरा को नित्य नए कवियो का शक्तिम योग मिलता जा रहा है।

: ८ :

बीसवीं सदी और वर्तमान

तुर्गेनेव और दॉस्त्वाएव्स्की की मृत्यु के साथ एक महान् साहित्यिक युग का अन्त हुआ। उसके वाद का युग साहित्यिक निर्माण के विचार से अन्धकारमय था जो रूस-जापान के युद्ध तक कायम रहा। १९०५ मे क्रातिकारी आन्दोलन की लहर उठी जो धीरे-धीरे अपने जवडे खोलती प्रथम महासमर के ही समय पुराने रूस को निगल गई।

परन्तु इस बीच कुछ ऐसे साहित्यिको का प्रादुर्भाव हुआ जो न केवल रूस के लिए अमर हुए वरन ससार के साहित्य पर अपनी छाप छोड गए। इनमे प्रधान चेखोव[१] और मक्सिम गोर्की[२] थे। इनके अतिरिक्त गार्शिन, कोव्रलेंको और मेरेज्कोस्की ने भी अपनी प्रतिभा से रूसी साहित्य का कल्याण किया। इनमे चेखोव और गोर्की असाधारण है। चेखोव ने मध्यवर्ग और शिक्षित जनता का चित्रण कर रूसी साहित्य की परिधि विस्तृत की और उस साहित्य का खोया हुआ विनोद उसे फिर दिया। गोर्की तो अप्रतिम है। उसने सर्वथा नई भूमि तैयार की और अपनी कृतियो मे सर्वहाराओ, अभागो, मजूरो, कगाल शिल्पियो, ऐरो-गैरो का चित्रण किया। परन्तु उनके विपाद का निराशामय करुण रूप उसने अपने साहित्य में नही रखा, और यदि रखा भी तो उन्हे सचेत करने के लिए पृष्ठ भूमि के रूप मे जिससे वे अगले सहार और निर्माण का स्वप्न पूरा कर सकें। उसमे कही मायूसी नही। कही बुजदिली नही।

गोर्की की कला एक नया सन्देश ले आई, एक नई दुनियाँ लिए जिसकी किसी ने कल्पना तक न की थी। जीवन के प्रति उसके नायको का रुख उसके पूर्व के सारे उपन्यास-कारो के रुख से भिन्न था। उसके हीरो जीवन मे हैमलेट का स्वाग नही करते, जीवन की विषमताओ और कठिनाइयो को हल करने के लिए दैन्य नही प्रदर्शित करते, न दान की भिक्षा माँगते या आत्मसमर्पण करते है। वे जीवन के सघर्ष मे बचे हुए वीर है इससे वे हेय नही हो सकते। उनमें बदला लेने की ताकत और तमीज है।

गोर्की साहित्य का नया विधाता है, नया निर्माता। जीवन का वातावरण अभि-सृष्ट करने, उसके अमिट चित्रण मे उसे कमाल हासिल है। और प्रकृति के चित्रण मे तो वह जादू का असर पैदा कर देता है। रूसी गद्य साहित्य मे पहली बार पुराणपन्थी प्रकृति निरीक्षण से हमारा छुटकारा होता है और हम असल प्रकृति के रूबरू खडे होते है। लगता है जैसे साहित्य में नए प्राण फूंक दिए गए है, नई बयार बह गई है। गोर्की की सक्रिय कल्पना के साथ यथार्थ का निरूपण होता है जिसमे मेधा और हृदय दोनो अपना उचित भाग पाते है।

चेखोव ने पुरानी परपरा मे लिखा। उसकी भूमि दूसरी जरूर है पर जैसे वह तुर्गनेव का वारिस है। उसने रूसी अन्धकार युग को अपनी कृतियो मे प्रकाशित किया। उसमे यथार्थ जैसे केमरे के लेन्स में उठ जाता है। पर साथ ही वह अप्रतिम कलाकार भी है। उसका निराशावाद मानवता और हास्य के पुट से सदा सह्य हो रहता है। यदि कही

---

१ Anton Pavlovich Chekhov (१८६०-१९०४), २ Maxim Gorky (Aleksey Nikolayevich Pyeshkov), (१८६९-१९३९)

ऐसा न होता तो उसके चित्रित जगत का विषाद झेले नही बनता, सर्वथा असह्य हो उठता। उसकी कुछ कृतियाँ स्टेज के लिए लिखी गईं और उसने उनमें देहाती जीवन का खरा प्रतिबिम्ब रखा "काका कान्या" इसी प्रकार की उसकी रचना है। उसकी कहानियो की ही भाँति यहाँ भी वही थके, सरल, सुस्त लोग हैं, आशा से रहित, विचारो में कगाल, परन्तु यहाँ भी ओछे और क्षुद्र जीवन के पीछे मानवता की मिठास है।

रूसी जापानी युद्ध छिडने के बाद ही १९०४ में चेखोव मरा। गोर्की उसके दशकों बाद तक लिखता रहा। उसी काल मेरेज्कोव्स्की ने भी लिखा, आलोचना, काल्पनिक ऐतिहासिक उपन्यास उसकी ख्यातिलब्ध कृति, गद्य में ट्रिलोजी, "देवताओ की मृत्यु" (नास्तिक जुलियन की कहानी) और "अनार्किस्ट" (अराजक पीटर महान् और उसके पुत्र अलेक्सी की कहानी) और "देवताओ का पुनरुत्थान" (लियोनार्दा दा विंची की कहानी) है। इस ट्रिलोजी का अनुवाद प्रत्येक यूरोपीय भाषा में हो चुका है। आलोचना के क्षेत्र में टॉल्स्टॉय, दॉस्त्वाएव्स्की और गोगोल सम्वन्धी उसके ग्रंथ उत्कृष्ट है।

रूसी जापानी युद्ध काल में कुप्रिन[1] ने "यामा" लिखकर बडा नाम कमाया। वह उपन्यास है भी सुन्दर। अपने दूसरे उपन्यास 'डुएल' और बाद की कृतियो में भी उसने अपनी वर्णन शक्ति पूर्ववत कायम रखी। उसी काल लियोनिद आन्द्रीव ने भी अपनी कहानियाँ और नाटक लिखे जिनमे सुन्दर प्राजल शैली में निराशावाद अपना दम तोड़ चला।

१९०५ में पहला क्राति-आन्दोलन अपनी अनन्त साधो और आशाओ के साथ उठा। राजनीतिक दृष्टि से तो वह कुचल दिया गया परन्तु उसके परिणाम स्वरूप जिन प्रवृत्तियो ने साहित्य में पदार्पण किया उनमें लोकवादी आशावादी सवल गोर्की अनुयायी साहित्य परम महत्व का था। १९०५ के राजनीतिक प्रयत्नो का लाभ १९१७ की सफल क्राति से हुआ।

नए रूस-सोवियत जनतत्र—की मानव जाति को (साहित्येतर भी) देन उसकी अभिव्यक्ति है, सरल स्पष्ट सवल अकृत्रिम अभिव्यक्ति। सत्य के प्रति उसकी निष्ठा सर्वथा वेजोड है क्योकि गद्य या पद्य समूचे रूसी साहित्य का मूल यथार्थ की भूमि में है। उसकी मानवता, मानव सहानुभूति, हृदय वडा व्यापक है, इतना व्यापक कि उसमें अपनी अपरिमित सहानुभूति, वन्धुत्व दया, दान और प्यार द्वारा वह ससार की सारी वेदना को डुवा सकता है।

---

१ Aleksander Kuprin (१८७०–१९३९)

: ९ :

क्रान्ति के बाद

क्राति-पूर्व और उत्तरकाल के मैक्सिम गोर्की का उल्लेख ऊपर हो चुका है। उसके अतिरिक्त भी अनेक साहित्यकार है जो दोनो युगो मे लिखते रहे है। कुछ तो सर्वथा नए है जिन्होने उत्तरकाल मे ही लिखना शुरू किया। पुराने लेखको मे से जिन्होने उत्तरकाल में लिखा उनमे से कुछ वोरिल पिलनिएक, इवानिन और लियोनेव हैं। पहले ने "ऊसर साल" दूसरे ने "साइवेरिया की कहानी" और तीसरे ने "आइज़क वैबेल" लिखा। उस काल का एक और उपन्यास "रक्तस्नान रूस" है।

उसके वाद ही प्रोलेतारियन (सर्वहारा) उपन्यासो की रचना विशेष शक्तिमती हुई। जामयतिन बुनिन[1], कुप्रिन[2] आदि भी पहले से लिखते आरहे थे और पीछे तक लिखते रहे परन्तु उन्हे अपने दृष्टिकोण मे कुछ परिवर्तन करना पडा। क्राति बाद के उपन्यासो में असामान्यकृति सेराफिमोविच का "लौह वाष्प" है। आलेग्जान्दर फेदेयेव ने "उन्नीस" लिखकर अपना स्थान उत्तरकालीन उपन्यासकारो मे ऊँचा किया। उसमे मजूरो की दुनियाँ सिरजी गई। मिखेल शोलोकाव इन पिछले काल के उपन्यासकारो का अग्रणी रहा है। "और डान धीरे वहती है" लिखकर वह अमर हो गया। इस उपन्यास का सारे ससार में प्रचार हुआ। उसका दूसरा उपन्यास है "जोती हुई जमीन"। आलेग्जान्दर एवदेन्की का उपन्यास "मै प्यार करता हूँ" वडा लोकप्रिय हुआ है। उसमें कामिक जीवन की महिमा प्रदर्शित हे।

इधर के रूसी उपन्यासकारो मे प्रधान इल्या एहरेनवुर्ग है। उसका 'पेरिस का पतन" द्वितीय महासमर से सम्बन्ध रखता है और पेरिस के सर हो जाने के बाद के वहाँ के जीवन पर प्रकाश डालता है। रूस की लेखिकाओ में अन्नाकोरावेवा विशेष प्रसिद्ध हुई है। उसने रूस और फिनलैंड के युद्ध के अवसर पर अपना सफल उपन्यास "अशग्रव की लेना" लिखा था। आलेक्सी टॉलसटॉय आज के प्रधान रूसी लेखको मे है। रूस के गृह-युद्ध का वडा सुन्दर चित्रण उसने अपने उपन्यास "कलवरी की राह" में किया। उसका उपन्यास "पीटर प्रथम" काफी विख्यात है। इसी पिछले महायुद्ध के समय वाण्डा वासिलेव्स्का ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास "इन्द्रधनुष" लिखा था। युद्धकालीन उपन्यासो में वासिलीग्रास-

---

१ Ivan Aleksyeyvich Bunin (जन्म १८७०), २ Aleksander Ivanovich Kuprin (१८७०-१९३९)

मान का "जनता अमर है" अपना स्थान रखता है। इसी प्रकार लिओ सलाविन का "मेरे देश भाई" भी मार्मिक कृति है। पोलेकाव का प्रसिद्ध उपन्यास "शत्रु सेना के पीछे" भी पिछले युद्ध को ही मार्मिक रूप से चित्रित करता है। युद्ध के शीघ्र ही बाद स्तेपानोव का "पोर्ट आर्थर" प्रकाशित हुआ जिसका प्रसग नाम से ही प्रकट है।

२२. लातीनी (लैटिन-साहित्य)

: १ :

रिपब्लिक-युग

जिस हिन्दी-यूरोपीय-आर्य-शाखा ने उत्तर से आकर इटली के प्राचीनतर निवासियो को भगा दिया, उसे 'लातिन' कहते थे। उन्ही की भाषा "लातीनी" (लैटिन) कहलाती है। उनके आने के बाद ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दी मे एशिया माइनर से आकर एक और जाति के उत्तर तिबेर (टाइबर) नद की घाटी में बस गई। वह इत्रुस्कन[1] कहलाती है। उसकी रोम अपनी लिपि और भाषा थी जिन्हे जाति के ही नाम पर इत्रुस्कन कहते थे। कालान्तर में लातिन इनके ऊपर भी हावी हो गए और इटली का इतिहास उन्होने ही बनाया।

इटली का अधिकतर इतिहास रोम (रोमा) का इतिहास है। इस नगर में इत्रुस्कनो की भी अपनी जनसख्या थी, परन्तु कालान्तर मे लातिन सख्या, बल और महत्त्व सबमें उनसे बढकर वहाँ के स्वामी हो गए। रोमा या रोम के मूल का अर्थ है "बहना" जिससे "स्रोततटीय" नगर (रोम) उसका नाम पडा। कुछ काल बाद लातिनो का सम्बन्ध ग्रीको से हुआ और उन्होने उनसे उनकी वर्णमाला सीख ली। वह इस प्रकार थी A B C D E F Z H I K L M N O P Q R S T V X ई० पू० तृतीय शती में Z के स्थान पर G कर ली गई, पर ई० पू० प्रथम शती मे Z फिर लौट आया। जब वही ग्रीक वर्णमाला रोमन कहलाई और भाषा तो लातिनो की होने से "लातीनी" कहलाती ही थी।

पहले तो "इत्रुस्कन" ही रोमन किसानो के स्वामी जमीदार थे, राजा और निरकुश शासक भी। पर धीरे-धीरे रोमनो ने इनकी शक्ति तोड दी और इनके निरकुश शासको को भगाकर उनसे शक्ति छीन ली। उस काल की इस लातिन या रोमन वीरता की कुछ कथाएँ प्राचीन लातीनी साहित्य मे सुरक्षित है। यह बताना कठिन है कि प्राचीनतम लातीनी साहित्य कैसा था परन्तु जो सामग्री उपलब्ध है उससे सकेत मिलता है कि पहले स्वाभाविक ही उसमें प्रकृति के देवताओ के प्रति कहे मत्रो का प्राचुर्य था और वही आज अनुपलब्ध लातीनी साहित्य की आधार शिला है। लातीनी के प्रारम्भिक साहित्य का एक रूप हमें उसके "विधान के द्वादश पत्रो" (कानून के बारह खाके) मे मिलता है। ये ग्रीक आधार से उठे थे।

प्राचीनतम लातीनी साहित्य का कुछ ज्ञान हमें पहली सदी ईस्वी पूर्व के प्रख्यात

---

१ Etruscan

राजनीतिज्ञ, कवि और प्रवक्ता सिसेरो[१] की रचनाओ से होता है। सिसेरो स्वय हुआ तो था रिपब्लिकन (साधारणत प्रजातत्र परन्तु रोम मे "अभिजातकुलीय-तत्र") युग (ई० पू० २३०-३०) के अन्त में परन्तु उसकी कृतियो में प्राचीन लातीनी-साहित्य के प्रसग भी उद्धृत और सरक्षित हैं। उससे पहले साहित्यकार लिवियस आन्द्रोनिकस[२] का पता चलता है जिसने लातीनी मे होमर[३] की "ओदिसी" का अनुवाद किया था। उसकी शैली सम नही ऊबडखाबड है, "सातुर्नी" छद मे प्रस्तुता उस अनुवाद की कुछ पक्तियाँ पश्चात्कालीन वैयाकरणो ने दृष्टान्तत अपनी कृतियो में उद्धृत की है। उस प्राचीन कला के साहित्यकारो की कृतियाँ पाठ्यपुस्तको के रूप में रोमन स्कूलो मे पढाई जाती थी और "ओदिसी" का यह अनुवाद प्रथम शती ई०पू० के महाकवि स्वय होरेस[४] ने बचपन में पढा था। लिवियस भाषाओ का शिक्षक था और उसने ग्रीक "ट्रैजेडियो" (दुखात नाटक) के भी कुछ अनुवाद किए। २४० ई० पू० में होने वाले रोम के विख्यात खेल-उत्सव के अवसर पर खेले जाने के लिए लिवियस ने एक ग्रीक नाटक को लातीनी मे प्रस्तुत किया था। सिराक्यूज में पहले प्यूनिक युद्धो के बाद रोमन जनरलो ने यूरिपिदिज[५] और मेनान्दर[६] के नाटक देखे थे। इन्ही सभ्रान्तकुलीय जनरलो के प्रोत्साहन से ग्रीक नाटको के अनुवाद हुए जो काफी स्वच्छन्द रूप से घटा-बढा दिए गए थे। लिवियस अर्ध ग्रीक था जो रोम बन्दी के रूप में आया था।

नीवियस[७] कम्पानिया का रोमन था और प्यूनिक युद्ध में लड चुका था। उसने भी ग्रीक नाटको के लातीनी रूपान्तर किए। इस प्रकार के उसके अनुवाद पहली बार २३५ ई पू मे प्रस्तुत हुए। वह लातीनी साहित्य का भी पहला नाटककार था। उसने कई प्रकार के मचोपयोगी नाटकीय वेश भी प्रस्तुत किए। अपने "तारेन्तुम (स्थान विशेप) की लडकी" में उसने एक नागरिक लडकी के मन्दिर विलास का प्रदर्शन किया है। उसने प्यूनिक युद्ध पर एक ऐतिहासिक (एपिक) काव्य भी लिखा था। उसके कुछ खण्डित अश भी मिले है जिनसे उसकी प्रतिभा प्रकट होती है। उस काव्य ने इनियस और वर्जिल[८] दोनो को प्रभावित किया था।

क्विन्टस इनियस[९] नीवियस का समकालीन था। वह लातीनी साहित्य का "जनक" कहा गया है। लिवियस की ही भाँति वह भी ग्रीक और लातीनी दोनो भाषाओ का आचार्य था परन्तु जहाँ लिवियस कगाल और सामाजिक दृष्टि से उपेक्ष्य मुदर्रिस था, इनियस सभ्रान्त वर्ग का था। स्वय मार्क्स की उसपर बडी कृपा थी। उसने अपने वीरकाव्य "एनाल्स" का विषय स्वभावत ही राष्ट्रीय चुना। उसने अपना यह काव्य अठारह लघु

---

१ Cicero; २ Livius Andronicus (Ca २८४-Ca २०४), ३ Homer, ४ Horace, ५ Euripides, ६ Menander, ७ Cn Naevius (Ca २७०-Ca.१९९ B C), ८ Virgil, ९ Quintus Ennius (२३९-१६९ ई० पू०)

खण्डो और ६०० पद्यो मे रचा। इससे एक ओर तो होमर की वीर छन्द की परपरा में पश्चात्कालीन काव्यकारो को लिखने का "मॉडल" मिला, और दूसरी ओर पहली वार होमर के षट्पदीय छन्द का रोमन कविता में व्यवहार हुआ। उसने नीतिपरक प्रबन्ध काव्य के रूप में व्यग्य लिखने की भी परिपाटी प्रचलित की।

इनियस की परिपाटी का ही उसके भतीजे पासूवियस[१] ने विकास किया। वह भी राष्ट्रीय नाटककार था और उसकी ट्रैजेडियो की सत्तर पक्तियो के अश आज भी उपलब्ध है। आक्कियस[२] उसका समसामयिक था। सिसेरो लिखता है कि दोनो के नाटक खेल महोत्सवो में खेले जाते थे। तब पासूवियस ८० वर्ष का था और आक्कियस तीस-पैंतीस वर्ष का।

माक्कियस प्लातस[३] भी इनियस का समकालीन था। उसकी २१ "कॉमेडियो" का उसके सौ वर्ष बाद होने वाले विद्वान वारो[४] ने जिक्र किया है। अधिकतर ये नाटक ग्रीक कॉमेडी नाटको के आधार पर लिखे गए थे परन्तु नाटककार ने इटली के वातावरण मे उन्हें "उगाकर" सर्वथा देशी बना लिया है। उनमे तृतीय-द्वितीय शती ई पू का रोमन जीवन अपने सारे विनोद-वैभव के साथ बुना पडा है। वह उम्ब्रिया का निवासी था, परन्तु वाद मे रोमन नागरिक हो गया था।

सिसीलियस स्तातियस[५] अपने प्रौढ समकालीन साहित्यक प्लातस से आयु मे तीस वर्ष से भी अधिक छोटा था। वह पो नदी की घाटी के इन्सुब्रिया का "गॉल" था जो युद्ध के बन्दी के रूप में गुलाम वनाकर पहले लाया गया था। फिर स्वतन्त्रता लाभ कर वह इनियस[६] और तेरेन्स[७] दोनो का मित्र बन गया। वह ग्रीक मूल के आधार पर चालीस कॉमेडी नाटको का रचयिता माना जाता है। शैली के दृष्टिकोण से वह प्रहास्यप्रिय प्लातस और शिष्ट कला प्राण तेरेन्तियस के वीच खडा है, दोनो की सन्धि पर। स्तातियस, तेरेन्तियस से प्राय बीस वर्ष बडा था।

तेरेन्स अथवा तेरेन्तियस आफेर[८] अफ्रीका का रहनेवाला था और युद्ध मे गुलाम बना कर रोम लाया गया था। और उसी से उसने अपने नाम का एकाश पाया। फिर वह स्वतत्र कर दिया गया। वाद मे उस पर हैनिबल के विजेता रोम के प्रधान राजनीतिज्ञ जनरल और ग्रीक सस्कृति के पोषक स्कीपियो आफ्रिकानस[९] की कृपा दृष्टि पड़ी जिससे तेरेन्तियस का भविष्य चमका। गुलाम रह चुकने के कारण लोगो ने प्रसिद्ध कर दिया कि उसके

---

१ M Pacuvius (२२० Ca १३० ई पू), २ Accius (ज० १७०), ३ T Maccius Plautus (२२०-१८४ ई पू), ४ Varro, ५ Caecilius Statius; ६ Ennius, ७ Terence (Ca १९५-१५९ ई पू), ८ P Terentius Afer; ९ P Scipio Africanus

नाटक उसकें स्वामी के लिखे है। इसका निराकरण उसने अपनी रक्षा में, अपने नाटको कि भूमिका लिख कर किया। उसकी कॉमेडियो के चरित्र बारीक रेखाओ से खिंचे लगते हैं और उनकी रूपरेखा सुकुमार परन्तु स्पष्ट है। आज उसकी छह समूची कॉमेडी (विनोद नाटक-प्रहसन-सुखान्त) उपलब्ध हैं। अपने "आन्द्रोस की महिला" में उसने प्लातस के विपरीत सम्भ्रान्त वारागना का चित्रण किया है। उसी प्रकार उसका "आत्म-पीडक" भी सम्भ्रान्त कला का स्वच्छ आमोदयुक्त आदर्श प्रस्तुत करता है।

वर्जिल ने इटली की जमीन में लगाई इस ग्रीक-कला पर बडा सुन्दर व्यग्य किया है। वह कहता है कि "वह फल-वृक्ष आश्चर्य के साथ अपने उन फलो को देखता था जो उसके न थे।" इसलिए चाहे जितनी सतर्कता और प्रतिभा से ग्रीक आधार से उठे नाटको की रचना की गई, यह शीघ्र स्पष्ट हो गया कि आखिर वे विदेशी मॉडल थे। पहली सदी ई पू का रोमन समाज जनसकुल लीलाओ, नकली और फार्सों का कायल था। भँडैती के प्रसग और दृश्य उस काल की जनता को विशेषकर अपने रोमन वर्ष के चार त्योहारो पर अधिक आकृष्ट करते थे। उस काल सम्भ्रान्त रोमनो का स्वभाव अन्य प्रकार का था, जहाँ वे अपनी विजयो के स्मारक मे बडे-बडे जलूस निकाल अपनी महत्वाकाक्षा की तृष्णा मिटाते थे वहाँ वे लोकप्रिय, अपने विचार से फूहड, नाटक (भँडैती आदि) प्रदर्शन हेय समझ हीन जनसाधारण के लिए ही छोड देते थे। स्वय वे दर्शन और सत्साहित्य में रुचि रखते थे और तेरेन्तियस, वारो या सिसेरो की भाँति "कृषि" अथवा "राज्य" पर डायलॉग रचने नगर से बाहर के अपने निभृत आवासो मे चले जाते थे। आम जनता और सम्भ्रान्त कुलीय रोमन शासको के बीच का यह प्रशस्त विषम अन्तर स्वाभाविक ही तत्कालीन ई पू प्रथम शती और पश्चात्कालीन साहिय की नई दिशा और नए "अभिप्रायो" का स्रष्टा था, इस कारण जनता की अधिकाधिक प्रकाशित साहित्य-कृतियो में इन्ही सम्भ्रान्तकुलीयो (जो प्राचीनता, विजय, राजनीति, सम्पत्ति या शक्ति के कारण सम्भ्रान्त) के राग-द्वेप, गुण-दोष, महत्वाकाक्षा, विफलता आदि प्रतिविंबित होने लगे। अधिकतर रचयिता इसी अल्पसख्यक शक्ति की सेवा में लगे।

कम्पानिया का लूसिलियस[१] भी हेलेनिक् (ग्रीक) साहित्य-प्रिय स्कीपियो आफ्रिकानस की ही गोष्ठी का था। उसकी कृतियाँ आज समूची और स्वतत्र रूप से उपलव्ध नही, केवल उन हजारो छन्दो के रूप में वची है जो दो सौ वर्ष वाद लातीनी कोप में एक कोपकार ने दृष्टान्त रूप में एकत्र कर दी थी। इमसे उस प्रवल व्यग्यकार का मूल्याकन करना कठिन हो जाता है। जो हो यह असन्दिग्ध है कि उस लूसिलियस ने ही काव्य में व्यग्य की लातीनी में प्रतिष्ठा की। नए रूपसे अव समसामयिक घटनाओ और व्यक्तियो

१. C Lucilius (C १८०–१०३ ई पू)

का काव्य मे व्यग्याकन होने लगा । अब भी सही, अरिस्तोफेनिज[१] (पाँचवी सदी ई पू एथेन्स का प्रसिद्ध कॉमेडीकार) की पुरानी कॉमेडी के प्रेत रोम की गलियो और राज मार्गों पर चलते हैं परन्तु उनके स्थानीय वातावरण की आचार-चेतना शान्त-शालीनता सब दूसरे हैं, सर्वथा नए, अपने । रोमन सम्भ्रान्तकुलो के गम्भीर, कष्टसिद्ध विनयाचरण, उनका गर्वीला, अधिकार-अहकारयुक्त और आशु क्षुब्ध स्वभाव लूसिलियस की कृतियो में फिर से स्पष्ट उतर आया । व्यग्यकार होने के अतिरिक्त लूसिलियस ने भाषा का भी निर्माण किया और प्रभूत मात्रा में जन-भाषा का उपयोग किया । पश्चात्कालीन अनेक कवियो और नाटककारो ने उसे व्यग्य-शैली का आदर्श माना ।

इसी तीसरी शती ईस्वी पूर्व मे सिकन्दरिया के ग्रीक कवि (ग्रन्थागाराध्यक्ष) कालिमाचुस[२] की आत्मपरक लिरिक कविता की भी रोमके तरुणो के हृदय में ई पू प्रथम शती मे प्रतिध्वनि उठी । वह ग्रीक दार्शनिक बडे ग्रन्थ को बड़ा दोष कहा करता था और उसी चित्र-वृत्ति का जो रोम में विकास हुआ तो वहाँ के तरुण भारी भरकम ऐपिक (वीर) काव्यो से घृणा करने लगे । लघु कविताओ, स्केचो और लिरिक-रचनाओ का परिणामत उदय हुआ । इस काव्य-शैली का आरम्भ ई पू प्रथम शती में हुआ जिसकी धारा अविरल गति से कुछ काल लातीनी साहित्य मे बही । उस ग्रीक लघु-काव्य शैली में लिखने वाले लूताशियस कातुलस[3], वालेरियस इदीतुअस[४] और पोर्सियस लिसिनस[५] थे । लीवियस[६] नाम के एक कवि ने तो इसके रूप को एक विशेष चेष्टा दी । उसने काव्य को कानो ही का विषय न रहने दिया । उसे नेत्रो का विषय भी बनाया । उसकी कविताओ में वैसे चित्र (छन्दध्वनि के माध्यम से) बनते जाते थे कि बराबर दृश्य देखने का आभास होता था। लिखने में भी उसका अजब रूप रखा जाता था और लीवियस ने तो अपनी एक भ्रमणपरक कविता की लिखावट को एक फीनिक्स (काल्पनिक पक्षी) का रूप दे दिया था। फूरियस विबाकुलस[७] भी इसी वर्ग का कवि था। वह कुछ पीछे हुआ और उसकी कविताओ का बडा मजाक उडाया गया। आगुस्तसकालीन आलोचकों ने उसका मखौल उडा कर भी उसके अप्राप्य वीरकाव्य के अनेकस्थलो को सराहा था ।

हेल्वियस चिन्ना[८] इसी वर्ग का एक तबके का था जिसने अपने लघु (खिलौना) काव्य पर नौ वर्ष खर्च किए । वही चिन्ना जूलियस सीज़र को मारने वाले षड्यन्त्रकारियो में भी था। शेक्सपियर की कृति मे बदला लेने वाले नागरिको में से एक उसे "उसकी बुरी

---

१ Aristophanes, २ Callimachus, ३ Q Lutatius Catulus; ४ Valerius Aedituus, ५ Porcius licinus, ६ Laevius, ७ M. Furius Bibaculus; ८ C Helvius Cinna

कविताओ के लिए" (फॉर हिज वैड वर्सेज) मार डालना चाहता है। चिन्ना, फूरियस और आगुस्तस युगो का सेतु है।

यहाँ कातुलस[1] पर दो शब्द लिखदेना अनिवार्य है। यह वेरोना का निवासी था और उसकी कविताओ मे वैयक्तिक चेतना और अनुभूति की गहरी ध्वनि थी। वस्तुत जितना यूरोपीय लिरिक काव्यधारा पर उसका प्रभाव पडा है प्राचीनो में सैफो[2] को छोड कर शायद किसी और का नही। सैफो की एक विख्यात लिरिक को जो कातुलस ने अनुवाद किया तो उसकी आकृति और ध्वनि पर स्वय अपनी छाप डाल दी। लेस्बिया[3] जिसका वास्तविक नाम क्लोदिया था, उसकी कविताओ की मूल प्रेरणा थी। इस प्रान्तीय तरुण के हृदय पर लगता है, उस चतुर नारी ने अपने सारे हावभावो से आघात किया और कातुलस बेबस हो गया। तुकान्त छन्द में वह लिखता है—

"मै प्रेम करता हूँ, उतना ही घृणा भी। पूछती हो क्यों?
नहीं जानता, क्यों, पर है यह सच, पीडा का स्वाद लग गया है।"

लातीनी आलोचकों ने उसे "विद्वान" कहा है, सकेत उसके ग्रीक काव्य-ज्ञान की ओर है। उसकी विवाहपरक कविताएँ शायद उस काल पसन्द न की गई परन्तु यूरोप के कवियो ने उन्हे खूब सराहा। कातुलस की काव्य-प्रतिभा बहुमुखी थी।

लुक्रेशियस[4] कातुलस के विपरीत दार्शनिक कवि था जिसका आकर्षण वस्तुओ के वास्तविक स्वभाव के प्रति अधिक था। वह विश्व की जलती दीवारो के उस पार चला जाना चाहता था। उसने अपना आचारपरक काव्य छह खण्डो में समाप्त किया। वह एपिक्यूरस[5] का अनुयायी था। उसने एपिक्यूरस शान्ति को उस रोमन सम्भ्रान्तकुलीय परुष विनयन से समन्वित किया जिसके आदर्श एम्पेदोक्लीज[6] के से दार्शनिक ग्रीक कवि थे। एम्पेदोक्लीज ज्वालामुखी पर्वत के अग्निविस्फोटक मुख में कूद पडा था, कहते हैं, लुक्रेशियस ने भी "मृत्यु की अमरता" अपनाने के लिए आत्महत्या कर ली। वह मृत्यु को अमर कहता है उसे सराहता है उस जीवन के विपरीत जिसे जीवन-लोलुप रोगियो ने मरणान्तर का लोक कहा है। उसका आणुविक सिद्धात प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक डेमोक्रितस[7] के आधार पर बना है परन्तु महाकवि ने उसे अपनी रसमयी विवेचना से सरस कर दिया है। सिसेरो ने उसके "हजारो पक्तियो के बीच" कुछ अद्भुत शक्ति प्रेरणा, रस और सौन्दर्य की मानी है। लुक्रेशियस कवि था परन्तु कवि से अधिक शायद दार्शनिक था।

अन्य साहित्यो की ही भाँति लातीनी मे भी गद्य का आविर्भाव पद्य के पश्चात्

---

१ C Valerius Catullus of Verona (Ca ८४–५४Bc), २ Sappho, ३ Lesbia (Clodia), ४ Lucretius (९५-५४ ई पू), ५ Epicurus, ६ Empedocles, ७ Democritus

हुआ और जब हुआ भी तब पहले ग्रीक प्रतीको की छाया मे। कातो (सेन्सोर)[१], पहला जाना हुआ गद्यकार है यद्यपि जिनकी कृतियाँ नष्ट हो गई है ऐसे कुछ गद्यकारो ने उससे पूर्व इतिहास पर ग्रन्थ लिखे थे। कातो इटली की देशी परपरा का प्रबल पोपक था। वह ग्रीक विचारो का विरोधी था और ग्रीक-भाषा भी उसने इनियस के कहने से बहुत पीछे सीखी। स्वय उसकी गद्य शैली प्रौढ है। उसके व्याख्यानो की भाषा भी प्रखर और शक्तिम है।

कातो के बाद और सिसेरो से दस वर्ष पूर्व मार्क्स तेरेन्तियस वारो[२] हुआ। वह बडा पण्डित था और उसने अनेक ग्रन्थ लिखे। डायलॉग-शैली मे कृपि-सम्बन्धी उसकी कृति का वर्जिल पर काफी असर पडा। विविध विपयो पर लिखी उसकी चालीस पुस्तको का पता चलता है। भाषा-शास्त्र पर भी उसने अधिकारी की योग्यता से लिखा। सिकन्दरिया के विद्वानो की भाँति उसने भी एक वृहद् कोप-ग्रन्थ मे इटली के प्राचीन पाखण्डो और धार्मिक विश्वासो आदि का सग्रह किया। सिसेरो ने भी अपने निबन्धो मे उसी के लातीनी में प्रचलित किए ग्रीक-डायलॉग का प्रयोग किया। सम्भवत निबन्ध की शुष्कता दूर करने के लिए यह नाटकीय स्वरूप निबन्धो को दिया गया। सिसेरो का वह बडा आदर करता था, उसे गद्यकारो में सबसे महान् और अनुपम मानता था।

मार्क्स तुलियस सिसेरो[३] मानव इतिहास का असाधारण वक्ता और लातीनी साहित्य का सुन्दरतम गद्यकार अपने काल का महान् राजनीतिज्ञ भी था। ससार के गद्य पर जितना गभीर प्रभाव उसका पडा है उतना और किसी का नही। वारो ने अपना लातीनी भाषा-साहित्य सबधी ग्रन्थ सिसेरो को समर्पित किया था। आज उसकी ४७ वक्तृताएँ उपलब्ध है जो अपनी प्रखरता, मार्मिकता, तर्क और वाक्शक्ति में ससार के साहित्य मे वेजोड है। ग्रीको में वक्तृता का बडा आदर था और वे उस कला को विशिष्ट वाचालो से, विशिष्ट पीठो मे सीखते थे। सिसेरो ने भी अपनी कला ग्रीस जाकर ही प्रौढ की थी। उसके उपलब्ध ७०० पत्रो में गजब की सरणिक ताजगी है, साथ ही उनसे तत्कालीन राजनीतिक-दार्शनिक स्थिति पर भी प्रकाश पडता है। उसके व्यक्तित्व की शब्द-शब्द पर छाप है। दर्शन के क्षेत्र में भी सिसेरो ने बडा काम किया। उस क्षेत्र में उसके प्राय एक दर्जन ग्रन्थ उपलब्ध है। इनमे उसने ग्रीक दर्शन को खोलकर फिर एक वार लातीनी भापा में रखा। १६वी सदी मे ग्रीक साहित्य के पुनरुद्धार के पहले ग्रीक दर्शन का प्राय एक मात्र आधार सिसेरो की कृतियाँ थी। उसका पद्य उस प्राचीन काल मे भी वोझिल न हो सका। उसका अन्त हत्या से हुआ। जीवन के पिछले दिनो में हृदय की कमजोरी उसे कभी अन्तोनी कभी आगुस्तस के प्रति विश्वासघात करने को वाध्य करती रही।

---

१ Cato (Censor) (२३४–१४९ ई पू), २. Marcus Terentius Varro (११६–२७ ई० पू०), ३ Marcus Tullius Cicero (१०६–४३ ई पू)

प्रवल विजेता जूलियस सीजर[१] जो सिसेरो से छह साल छोटा था, गद्यकार भी था। उसकी विशिष्ट रचना गाल के युद्धो से सम्बन्ध रखती है जो शैली की दृष्टि में लातीनी साहित्य मे असामान्य है। वह रचना उसके युद्धो के चित्र खीच देती है, और वडी कसी हुई है। उसने उसमे अपने प्रति सकेत अन्य पुरुष के रूप में किया है। भापा का तो वह सुईकार है। कभी एक शव्द जाया नही करता फिर भी अनेक स्थल इस खूवी से वर्णित है कि वे नाटक के दृश्य बन जाते है। उसका एक प्रशसक सालस्त[२] था उसके दल का मित्र और रोम के सम्भ्रान्तकुलीन शासको का अनुपम शत्रु। उसने कातिलीनी के षड्यन्त्र और जुगुर्थी युद्ध पर दो ग्रन्थ लिखे। उसकी शैली मे काफी लोच और प्रौढता थी। लातिन आलोचको ने उसे सराहा है।

: २ :

आगुस्तस का युग

आगुस्तस[३] का युग लातीनी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है। ई पू पहली सदी रोमन इतिहास मे घोर रक्तपात और भयानक हत्याकाण्ड की थी। पहले तो वहुत दिनो तक कुलीनो और "रजीलो" में लडाई चलती रही फिर जूलियस सीजर की हत्या के वाद वह लडाई प्राय कुलीनो मे ही परिमित हो गई। अन्त में अन्तोनी आदि पर विजयी हो, सीजर की वहिन का पोता ओक्तेवियस आगुस्तस के नाम से रोम का सम्राट् हुआ। रिपव्लिक की रक्षा के लिए सैकडो महान रोमनो ने तप और साधना की थी, हजारो ने अपने प्राण होम कर दिए थे, स्वय जूलियस सीजर की इसीलिए ब्रुट्स जैसे दार्शनिक ने, पुत्र होकर भी, हत्या की थी और अव उसी रिपव्लिकन रोमन साम्राज्य का आगुस्तस सम्राट् वन गया।

आगुस्तस का शासन-काल फिर भी वडी शान्ति और अद्भुत साहित्य-सृजन का था। लातीनी साहित्य के प्रधान कवि वर्जिल[४] होरेस,[५] प्रोपर्तियस,[६] ओविद[७] सव इसी युग में हुए। इनमें से पहले तीन ने तो नए शासन के गीत भी गाए, दरवारी कवि भी हुए। तीनो राजनीति मे असफल रहे थे, तीनो की सपत्ति हाथ से निकल गई थी, तीनो सव कुछ खोकर रोम के वीर और कला के प्रवल सरक्षक मिकेनास[८] के पास वारी-वारी पहुँचते थे। इन तीनो में वय और प्रतिभा में वडा वर्जिल था, लातीनी साहित्य के उत्कर्प काल का प्रमुख गायक।

---

१ Julius Caesar (१००–४४ ई पू), २ Sallust (८६–३५ ई पू), ३ Augustus (४३ ई पू–१४ ई०), ४ Virgil (७०–१९ ई पू) ५ Horace ६ Propertius ७ Ovid ८ Maecenas

वर्जिल की मन्तुआ की जमीदारी छीन कर सैनिको मे बाँट दी गई थी क्योकि फिलिपी के युद्ध मे वह कैसियस[१] और ब्रुतस[२] की ओर रहा था। रोम पहुँचने के वाद ४१ और ३९ ई० पू० के बीच उसने गडरिया-जीवन सम्वन्धी प्रसिद्ध दस कविताएँ रची जिनका नाम "एकलोग" पडा। इनकी पृष्ठभूमि सर्वथा इटली और सिसिली की है। उसका आदर्श उसमे ग्रीक थियोक्रितस[३] है। वर्जिल की कृति "ज्योर्जिक्स" मे इटली की साँस निहित है। प्राचीनता का पोषण समाज मे आरम्भ होगया था। वारो आदि ने वेकार ही लेखनी नही घिसी थी। और जब सेनेट[४] ने जूलियस सीजर के दत्तक पुत्र आँक्तेवियन[५] को "आगुस्तस" (परम श्रद्धेय) का विरुद प्रदान कर दिया तब तो जूलियस का अपनी कुल परपरा देवताओ से जोडने का अध्यवसाय भी सिद्ध हो गया। आगुस्तस पुराने देववर्ग में देवी वीनस को मानता था। उसके कुल का प्रादुर्भाव इसी वीनस के पुत्र से माना गया। वह पुत्र ईनिस[६] था जो त्रॉय के युद्ध मे एचिलिस[७] से लडा था। त्रॉय के विध्वस के वाद त्रीयन वीर गृह विहीन होकर द्वीप-द्वीप फिरते है। उनके दुर्भाग्य से आर्द्र होकर कार्थेज की रानी दीदो[८] ईनिस से विवाह कर लेती है। वाद देव वाणी सुनकर ईनिस पत्नी को छोड इटली चला जाता है और वहाँ युद्धो में विजयी हो अपना राजकुल स्थापित कर लेता है। जूलियस और आक्तेवियस उसी कुल मे उदित देवाश है। वर्जिल का यह महाकाव्य दृश्य वर्णन, चरित्र-चित्रण, रागाभिव्यजन, सभी दृष्टि से असाधारण है। इसके चरित्र कभी स्मृति से लुप्त नही होते। ससार के महाकाव्यो में "ज्योर्जिक्स" का स्थान अपना है। उसके छठे खण्ड में वह अद्भुत और प्रख्यात भावी रोम का स्वप्न है।

होरेस[९] ने भी एक दृष्टि से वर्जिल का ही अनुकरण किया। रोमन लडाइयो में वह प्रजातात्रिक (जन) दल की ओर से लडा था। उसके वाद उसे रोम में सालो क्लर्क का कठिन जीवन विताना पडा था। यद्यपि उस काल उसे लिखने-पढने की कुछ फुर्सत मिली। परिणामत उसने कविताएँ (इपोड और सटायर—व्यग्य) लिखी। वर्जिल ने उसे अपने सरक्षक मिकेनास[१०] से मिलाया जिससे होरेस को वडा प्रोत्साहन मिला। उसी के प्रोत्साहन से पहले उसने अपना "इपोड" लिखा जिसमें उसकी प्रसन्न और गम्भीर दोनो प्रकार की कविताएँ सग्रहीत हुई, फिर उसने अपने विश्वविश्रुत "ओड" लिखे। ई पू २३ में उसके "ओडो" (कसीदो) का सग्रह निकला और उन लिरिक कविताओ के सौन्दर्य-माधुर्य न ससार को मोह लिया। लिरिक रूप में उन कविताओ का स्थान मानवजाति के इतिहास मे अक्षुण्ण हो गया। उसके ओड तीन भागो में विभक्त थे। २० और १३ ई पू के वीच

---

१. Cassius, २ Brutus, ३ Theocritus, ४ Senate; ५. Octavian, ६ Aeneas, ७ Achilles, ८ Queen Dido, ९ Horace (६५–८ ई पू); १० Maecenas

उसने दो भागो मे अपने "एपिस्तल" लिखे, उसकी मेधा की प्रौढ कृति। "आर्स पोएतिका" (एपिस्तल की द्वितीय पुस्तक मे सग्रहीत) मे उसने काव्यकला पर अभिराम विचार प्रगट किए।

लातीनी के "एलेजी" (मरसिया) लिखने वाले प्रमुख कवि कातुलस[१], प्रोपर्तियस[२] तिबुलस[३], और ओविद[४] थे। कातुलस ने व्यक्तिजन्य प्रणय को प्रश्रय दिया जिसे उसके परवर्ती लिरिक कवियो ने भी अपना ध्येय बनाया। कातुलस की लेस्बियाकी ही भाँति प्रोपर्तियस की लिरिको का ध्येय सिन्थिया[५] थी, तिबलस की देलिया[६] और ओविद की कोरिन्ना[७]। आलोचक क्विन्टिलियन[८] ने लिखा कि लातानी की लीरिक कविताएँ अपनी प्रकार और भावव्यजना में ग्रीक लिरिको से किसी प्रकार घटकर नही है। सेक्सतस प्रार्पतियस की तीन खण्डो मे प्रस्तुत "एलेजियो" की ७१ कविताओ की काव्यकारिता गजब की है। कही कही सिकन्दरिया की पद्धति झलक पडी है और तब कविता का अर्थ दुरूह हो जाता है। पर साधारणत प्रोपर्तियस नितान्त मधुर है और उसकाप्रवाह अविच्छिन्न है। फ्रेंच कवि विलो[९] की भाँति राबर्ट बर्न्स[१०] की भाति। अल्बियस तिबुलस की सोलह "एलेजियो" का मुकाबला तो केवल वर्जिल ही कर सकता है। उनकी अभिराम गति निर्बाध है। देहात का जीवन उसे अपने जादू से मुग्ध कर लेता है। देहाती जीवन की हँसी-खुशी उसके व्रत त्योहार उसकी कविताओ में रूपायित होते है और तब उसकी देलिया की रेखाएँ भी धुंधली पड जाती हैं।

ओविद की अधिक कविताएँ भी एलेजी के "मीटर" में ही है। इसमें उपवाद केवल उसका पुराणपरक एपिक "मेतामारफोसेज़" और "रोमन कैलेण्डर" है जिन्हे उसने बाद में लिखा, सन् आठ ईस्वी मे निर्वासित होने के पहले। मेतामारफोसेज" में पुराणव्यजित रोम (ससार) का इतिहास है—सृष्टि के आदि से आगुस्तस तक १०००० छन्दो में सम्पन्ना ओविद की मृदुल भावना सर्वत्र उसकी कविताओ का प्राण है। उसकी प्रेयसी कोरिन्ना उसकी कृतियो मे से टपकी पडती है। अपनी "हिरोइन्स" पत्रो मे लिखकर उसने उपेक्षित और विपादग्रस्त नायिका और महिलाओ के प्रति औचित्य का समर्थन किया। उसकी "प्रणय की कला" अतीव हृदयग्राही है यद्यपि अनेक रूप से आज की नैतिक दृष्टि से वह अश्लील है। तब के रोमन ससार की आचार व्यवस्था के वह अनुकूल है और उसका तब के पाठको—श्रोताओ पर प्रभाव भी प्रभूत पड़ा।

उसका "प्रणय का उपचार" तो और भी आचारहीन है, अश्लील। उसके प्रवास

---

१ Catullus २ Sextus Propertius (४७–१५ ई पू) ३ Albius Tibullus (५५–१९ ई पू) ४ Ovid (४३–१८ ई पू) ५ Cynthia, ६ Delia ७ Corinna ८ Quintilian ९ Villon १० Robert Burns

मे लिखी कविताओ मे आत्मग्लानि है पर साथ ही काव्यकारिता मे वे आत्मविश्वास प्रकट करती है ।

उस आगुस्तसीय स्वर्ण-युग मे गद्य सृजन भी प्रभूत हुआ । लिवी[1] ने अपना वृहत् इतिहास लिखकर उस दिशा मे बडी प्रगति की । काव्य में अपनी जनता के लिए जो काम वर्जिल ने किया वही लिवी ने गद्य मे किया । प्राचीनतम काल से समसामयिक रोम तक का इतिहास उसने अपने असाधारण नगर और रोमनो का लिखा और अतीत के प्रति अपने पाठको की भावना जगा दी । यद्यपि स्वय वह अतीत से प्रभावित हो वर्तमान को तिरस्कृत कर देता है। और अनेक बार उसकी वैयक्तिक चेतना घटनाओ के ऊहापोह में दब जाती है । वह उस काल की दृष्टि से सफल इतिहासकार है और अनेक स्थलो पर उसके वर्णन-चित्रण कविकृत से चमक उठते है ।

: ३ :

रजत-युग

१४ ई से ११७ ईस्वी तक का काल लातीनी के साहित्यिक इतिहास में रजत-युग कहलाता है। इस काल गद्य ने अपना प्रखर और सफल रूप धारण किया । तासितस[2] और सुतोनियस[3] दोनो ने गद्यो मे तत्कालीन इतिहास प्रस्तुत किए । तासितस का दृष्टि-कोण सर्वथा एकागी था और वह घटनाओ मे घुसकर लिखता था । फिर भी उसने समसा-मयिक राजनीतिको को तार-तार करके रख दिया । जितना घटनाओ का विश्लेपण उसने किया है प्राचीन जगत के किसी इतिहासकार ने नही किया । अपने इतिहास-ग्रन्थ "एनाल्स" और हिस्ट्रीज" में उसने पहली सदी के ऐतिहासिक व्यक्तियो के उद्देश्य जैसे—उनके भीतर से निकालकर इतिहास के पृष्ठो पर रख दिए । इनके अतिरिक्त उसने साहित्यिक आलोचना पर भी एक पुस्तक लिखी और इग्लैंड के रोमन शासक का एक जीवन-चरित भी । उसकी "जर्मेनिया" प्रचुर प्रसिद्ध हुई जिसमे उसने अपने समकालीन विषयी, प्रमादी और स्वार्थपर रोमनो की तुलना तत्कालीन जर्मनो से उनका, उस ग्रन्थ मे, चित्र खीच कर की है । तासितस की भाषा उसकी विश्लेपणात्मक शैली के अनुरूप ही कसी हुई और सूत्रवत् है। सुतेनियस का "सीजरो का जीवन चरित्" प्रसिद्ध है जिसमें उसने स्पष्ट सरल भाषा में जूलियस सीजर से लेकर डोमीशियन तक के रोमन सम्राटो का इतिहास लिखा है । वह स्वय सम्राट हाद्रियन का सेक्रेटरी था और उसे सम्राटो के जीवन की इतिहास-सामग्री प्रभूतमात्रा में उपलब्ध थी । उसने उनके चरित लिखने

१ Livy (५९ ई पू –१७ ई०); २ Cornelius Tacitus (५५–११८ ई), ३ Suetonius (७५–१६० ई०)

समय कुछ न छोडा, अच्छा-बुरा सभी लिख दिया और वैयक्तिक जीवन का यह उद्घाटन निस्सन्देह इस क्षेत्र मे बेजोड है। उसी काल एक और इतिहासकार हुआ, प्लिनी[१] जो प्रसिद्ध तो काफी हुआ है पर जिसकी प्रतिभा लिवी, तासितस आदि के सामने कुछ नही है। वह श्रीमानो का मित्र था, उन्ही की गोष्ठियो में रमा करता था। उसकी रचना में प्राचीन गौरव के प्रति आस्था झलकती है। तब भारत का रोम के साथ व्यापार उत्कर्ष पर था। मोती, मलमल और मसाले मे भारत का व्यापारिक एकाधिकार था। प्लिनी ने उस व्यापार का बडा विद्रोह किया कि रोमन साम्राज्य का "सारा सोना विदेश बहा लेजाता था"। उसने सेनेट तक में इस व्यापार के विरुद्ध वक्तृताएँ दिलवाईं, सौ फीसदी कर भी भारत से आने वाले माल पर लगवाया पर रोम के छैले श्रीमानो उनकी प्रेयसियो और गृहपत्नियो ने अपने राग से भारत के उस व्यापार की रक्षा कर ली और भारतीय व्यापारी रोम के सम्बध से समृद्ध होते रहे।

उस रजत-युग की एक विशेषता व्यग्य-साहित्य (सेटायर) थी। पर्सियस फ्लाकस[२] और जुवेनाल[३] ने सेटायर लिखे। पर्सियस ने अपने छह व्यग्य चित्रो में समसामयिक समाज पर उत्कट् व्यग्य करते हुए नैतिक और आचार चेतना का प्रतिपादन किया। वह स्तोइक के दर्शन से प्रभावित था और प्रसिद्ध स्तोइक दार्शनिक कोर्नतस[४] के व्याख्यान सुना करता था। उसकी व्यग्य-रचनाएँ मध्यकालीन यूरोप में खूब पढी गईं। पर्सियस स्वय सभ्रान्त कुल का होने के कारण प्राय शक्तिमान् श्रीमानो के भय के कारण अपनी रचनाओ में तरह दे जाता था, बचा जाता था। जुवेनाल में इस प्रकार की कोई कमजोरी न थी और उसने शक्तिमान् श्रीमानो को भी अपनी रचनाओ में व्यग्य-चोट से जर्जर कर दिया। उसने चाटुकारो (जिनकी सख्या समसामयिक रोम में बेहद बढ गई थी) की खूब खिल्ली उडाई। जुवेनाल के लिए कुछ भी "पावन" नही जो छुआ नही जा सकता। अपने दुर्गुण और पाप सम्बन्धी व्यग्यो में उसने ऐसे किसी को न छोडा जो आलोचना के पात्र हो सकते थे। जुवेनाल का विशेप रोप उन पौर्वात्यो के विरुद्ध था जो रोम में घुसकर उसके निवासियो को धीरे-धीरे पदविचलित कर उनके स्थानापन्न होते जा रहे थे।

क्विन्तिलियन[५] का स्थान तासितस के समीप है। उसी की भाँति वह भी प्रथम शती ईस्वी का प्रतिनिधि लेखक है। वह जन्म से स्पेन का था परन्तु अनेक सम्राटो के शासन में रोम मे "रेटोरिक" (वक्तृता, अलकार, आदि) पढाता रहा था और उससे वहाँ विशेप सामादृत हुआ था। "ओरेटरी" (वक्तृत्व के सिद्धान्त) पर लिखा उसका ग्रन्थ न केवल शिक्षा, वक्तृता और भापालकरण पर वरन् साहित्यालोचन पर भी प्रामाणिक

१. Pliny, २ A Persius Flaccus (३४–६२), ३ Juvenal (५५–१३०), ४ Cornutus, ५ Quintilian (३५–१००)

निरूपण है। ग्रन्थ के दसवे स्कन्ध में ग्रीक और लातीनी साहित्य पर अद्‌भुत आलोचना-सामग्री उपलब्ध है। क्विन्तिलियन की आलोचक प्रतिभा प्रखर है और उसका वह ग्रन्थ आज भी आलोचना की दृष्टि से असाधारण और व्यापक प्रभाव का माना जाता है।

प्रथम शती ईस्वी के चार एपिक काव्यो में पाम्पेयाई के फार्सलस-युद्ध पर लिखा अन्नियस लुकानस[1] का काव्य सराहनीय है। उसका स्थान मध्यकालीन पठनीय कवियो में वर्जिल के पास ही था और यद्यपि क्विन्तिलियन ने उसके काव्य में "वक्तृता अधिक कवित्व कम" देखा। उस काल के अन्य काव्यो मे लुकानस का काव्य निश्चय ही श्रेष्ठ है। लुकानस प्रसिद्ध सेनेका का भतीजा था। उसके काव्य का हीरोतो पाम्पेयाई है पर पाठक की समवेदना सीजर के साथ ह।

अन्नियस सेनेका[2] स्तोइक आचार समन्वित साहित्य के नए क्षेत्र में अग्रणी था। सिसेरो के समकालीन सालुस्त की भाँति सेनेका और उसका भतीजा लुकानस दोनो प्राचीनता-विरोधी थे। प्रतिष्ठित मान्यताएँ रूढिगत हो गई थी और प्रगति में स्पष्ट बाधक हो रही थी। सेनेका ने उनका प्रबल विरोध किया। उसके नौ ट्रैजेडी नाटक प्रवास (निष्कासन) में लिखे गए। वह और उसका भतीजा दोनो सम्राट् नीरो[3] के समकालीन थे, दोनो को ही देशद्रोही कहकर निर्वासित कर दिया गया, दोनो को मजबूर होकर आत्महत्या कर लेनी पडी।

ऊपर तासितस और प्लिनी का उल्लेख किया जा चुका है। वे दोनो भी इसी रजत-युग के रत्न थे। इनमें प्लिनी (प्लिनियस सिसिलियस सेकुन्दस)[4] आसाधारण धनी था। उसके प्राय: ३६८ सुन्दर पत्र उपलब्ध हैं जिनसे तत्कालीन रोम की वस्तु-स्थिति पर बडा प्रकाश पडता है। इन्ही में कुछ तासितस और सुतोनियस को भी लिखे गए थे। परन्तु जो पत्र प्राचीन जगत् के सुरावादी सारे कवियो में श्रेष्ठ मार्तियल[5] पर उसने लिखा, उससे इस महाकवि की शक्ति प्रकट होती है। पत्र उस कवि की मृत्यु पर लिखा गया था जिसने उस शक्तिशाली धनाढ्य की सरक्षा कभी माँगी थी। प्लिनी उसे महाकवि मानता है, उसके काव्यगत् भाषा के ओज की सिसेरो की शब्दशक्ति से तुलना करता है। सेनेका और क्विन्तिलियन की ही भाँति मार्तियल भी स्पेन का था। वह स्वयं कहता है कि मेरी कविताएँ तब पढो जब दावत खत्म हो चुकी हो और शराब के दौर चल रहे हो। लिखा उसने सुन्दर परन्तु अपनी प्रतिभा उसने बेच दी थी और अपने सरक्षको के मनोरजन

---

१. M Annaeus Lucanus (३९–६५ ई०), २ Annaeus Seneca (Ca ४ ई पू–६५ ई०), ३ Nero, ४ C Plinius Caecilius Secundus ५ Martial

के लिए उनके बताए किसी विषय पर वह कुछ भी लिख सकता था। परन्तु उसकी कविताओ मे रोम का घृणित सामाजिक जीवन खुल पडा है।

उसी प्रकार गेयस पेत्रोनियस[१] की कृतियो में भी रोम के प्रमादी, कामुक, घृणित जीवन का पर्दाफाश अमित मात्रा मे हुआ है। उसने अपने व्यग्य चित्रो (विशेषत त्रिमाल्चियो की दावत) में समाज के भीतर घुसकर जैसे उसे विश्लिष्ट कर दिया है। मार्तियल ने रोम का जीवन बाहर से देखा और पेत्रोनियस ने भीतर से।

उसी प्रकार दूसरी सदी ईस्वी के मध्य होने वाले अपूलियस[२] ने गद्य में उस काल के रोम के धार्मिक और सास्कृतिक ह्रास का चित्र अपने "हिरण्य-गर्दभ" मे सवल शव्दो में खीचा। उस आत्मकथापरक गद्य "सुनहरे गद्य" में क्यूपिड[३] और साइकी[४] का प्रणय-निवेदन है पर उसी वहाने रोमन समाज रूपायित हो उठा है। इस कथा को वाल्टर पेटेर[५] ने पीछे फिर से साहित्य का आधार बनाया। अपूलियस प्रसिद्ध ग्रीक जीवन चरितकार प्लूतार्च[६] का समकालीन था।

द्वितीय शती ईस्वी में लातीनी साहित्य का पूर्वार्द्ध इतिहास समाप्त हो जाता है। ऊपर का विवरण "क्लासिकल" लातीनी का है।

: ४ :

उत्तरकालीन लातीनी साहित्य

उत्तरकालीन लातीनी साहित्य अधिकतर ईसाई साहित्य है। ईसाई-लातीन का पहला गद्य तरतूलियन[७] की पुस्तक "अपोलोजेतिकस" में है जिस साधन से उसने ईसाई धर्म की रक्षा मे रोमन मूर्तिपूजक धर्म को ललकारा, उसकी मुख्य रचना "द प्रिस्क्रिप्तिओने हिरेतिकोरम" है। यह ग्रथ कुवाच्य और व्यग्य का भण्डार है। इसमे अग्निमय शव्दो मे चर्च का पक्षसमर्थन किया गया है। तरतूलियन की भापा मे गजव का तीखापन है। उसकी भापा अफ्रीकी लातीनी है, उसकी शैली शक्तिम और ओजभरी अलकृता। शत्रु का विध्वस करने में शत्रु जैसे सारे अस्त्रो का उपयोग करता है। तरतूलियन भी रोम के "पेगन" धर्म के विरुद्ध भापाशैली की सारी शक्तियो का उपयोग करता है जैसे व्यग्य, अलकार, उपमा, प्रखर शव्दावली।

इसी काल (तृतीय शती ईस्वी) एक प्रभावशाली "डायलाग" की रचना हुई जिसका नाम "आक्तावियस" है। इसे मिनूसियस फेलिक्स[८] ने लिखा। इसकी शैली में

---

१ Gaius Petronius (मृ ७७), २ L Apuleius, ३ Cupid, ४ Psyche, ५ Walter Pater, ६ Plutarch, ७ Tertullian (१६०-२२०), ८ Minucius Felix

वडा आकर्षण है। यह भी डायलॉग के रूप मे ईसाई धर्म के समर्थन मे लिखा गया। इसी स्पिरिट मे अर्नोनियस[१] ने अपना "अदवर्सस नातिओनिज" लिखकर "पेगन" (रोमन-ग्रीक) देवताओ की परपरा पर आक्रमण किया। लाक्तान्तियस[२] वकील था और अपने पेशे की समूची मेधा प्रकाशित करते हुए उसने ईसाई धर्म के सिद्धान्तो के प्रतिपादन और पेगन देव मण्डल के खडन मे अपना "इन्स्तुतिओनिज् दिवीनी" लिखा। साहित्य की दृष्टि से इन सारी रचनाओ (सिवा तरतूलियन के) का स्तर क्लासिकल लातीनी की शालीनता से उतरता गया है, यद्यपि इनमें असाधारण तीव्रता और प्रखरता है।

जव "पेगन" धर्मावलम्बियो ने ईसाई लेखको को अपने (पेगन) साहित्य की सम्पत्ति उपयोग करने से रोका तब सन्त जेरोम[३] और सन्त आगस्तिन[४] दोनो ने उसका इस्तैमाल "प्रभु" और सत्य के कार्य मे उचित बताया। और इस प्रकार चर्च प्राचीन लातीनी और इटली की सास्कृतिक दाय का उत्तराधिकारी वन गया। अगला काल सन्त आगस्तिन का युग कहलाता है। इस युग में बडा साहित्य निर्माण (साहित्य निस्सदेह धार्मिक अथवा धर्ममण्डन-खण्डन का था) हुआ। सन्त आगस्तिन के अतिरिक्त अन्य "चर्च-पिताओ" सन्त जेरोम[५] और सन्त अम्ब्रोस[६] तथा पौलिनस[७] ने भी अपनी हृदयग्राहिणी कविताएँ लिखी और दोनातस[८] तथा मार्तियानस कापेला[९] ने अपने मार्मिक प्रवचन। इन महान् ईसाई सन्तो और लेखको की सैकडो रचनाएँ वाइविल, आचार, सिद्धात, दर्शन, प्रवचन आदि पर विद्यमान हैं जिनका वरावर अध्ययन हुआ है और जो यूरोप के मध्यकाल में ईसाई तत्वविवेचन के स्तम्भ वन गईं। सन्त जेरोम ने पहली वार वाइविल का अनुवाद लातीनी में किया, सन्त आगस्तिन ने "द सिवितात देई" में ईसाई दर्शन और इतिहास का प्रणयन किया और उसके "कन्फेशन्स" (आत्मानुभूतियाँ) तो आत्मानुभूति और आत्मानुचिन्तन की अद्भुत पोथी है। सन्त अम्ब्रोस ने पहली वार पद्य-सूक्त का प्रयोग किया। सन्त जेरोम का गुरु दोनातस उस काल का प्रमुख वैयाकरण था और कापेला प्रधान भाषाशास्त्री। कापेला का "सातो ललित कलाओ" पर प्रस्तुत ग्रन्थ "द नुप्तीस फिलोलोगी एट मेरकुरी" शब्द शास्त्र के साथ ही शिक्षा के अनेक विषयो पर भी प्रकाश डालता है और मध्यकालीन यूरोप का तो वह अनिवार्य महत्त्वपूर्ण ग्रथ वन गया था।

इस क्रिश्चियन-पेगन द्वन्द्ववाद से प्रजनित एक समन्वित साहित्यिक और सास्कृतिक सम्पदा उठ रही थी, तभी उसे एक और शक्ति का योग मिला। रोमन साम्राज्य के

---

१ Arnobius (३०३), २ Lactantius (२५०-३१०), ३ St Jerome; ४ St Augustine (३५४-४२०), ५. St Jerome (३४५-४२०); ६ Ambrose (३४०-३७९); ७ Paulinus (३५३-४३१); ८ Donatus (४थी सी), ९ Martianus Capella

आक्राता जिन्हे रोमन "बर्बर" कहते थे, धीरे-धीरे ईसाई धर्म में दाखिल हो गए जिससे उस काल के साहित्य को एक और पाया मिला। इन सारे तत्वो को एकत्र कर उनको समष्टि-भूत एक पिण्ड बनाने का काम जिन धार्मिक साहित्यकारो ने किया, उनमें प्रधान थे—बीथियस[१] कासियोदोरस[२] सन्त बेनेदिक्त[३] और ग्रेगरी महान्[४]। इनमें से पहले दोनो ने प्राचीन ग्रीक–रोमन सम्पदा की रक्षा की। कासियोदोरस ने तो अरस्तू के "ओर्गानो" का जो सस्करण प्रस्तुत किया वह मध्ययुगीय ध्वनि की शिला भित्ति बन गया। उसके अध्यवसाय और साहित्यिक प्रयास से ईसाई–मठो में ज्ञान-शोध का कार्य शुरू हुआ और सन्त बेनेदिक्त की तद्विषयक योजनाओ ने तो उन मठो को विद्यापीठो का रूप दे दिया। इन दोनो के प्रोत्साहन से वहाँ ग्रथो के अनुवाद हुए, विशेषत हस्तलिपियाँ प्रस्तुत कर प्राचीन साहित्य की रक्षा की गई। ग्रेगरी ने ईसाई धर्म के सगठन मे अचरज का काम किया। उसने तरतूलियन की शक्ति से पेगन-विश्वासो पर चोट की। उसकी निष्ठा इस लोक की न थी। उसके ग्रन्थो मे जीवन को परलोक के योग्य बनाने का विशेष राग मिलता है। ग्रेगरी उस धर्म के विशिष्ट और महान् प्रचारको में हो गया है।

सन्त इसीदोर[५] ने ज्ञान की दिशा को दूसरी ओर मोड दिया। उसने प्राचीन ज्ञान की रक्षा के लिए "एतिमालोगी" नाम का एक विश्वकोष रचा जो सदियो ज्ञानकोष का काम करता रहा। सेदूलियस[६] ने तभी ईसाई धर्म सम्बन्धी अनेक कविताएँ लिखकर यह प्रमाणित कर दिया कि आखिर पेगन साहित्य ही साहित्य नही, यद्यपि प्राचीन ऊँचाइयो को छू सकना उसके लिए असम्भव था। साहित्य के लौकिक भावतत्व निस्सदेह धर्म के विश्लेषण पर नही खडे हो सकते। हाँ, फोरतुनातस[७] निश्चय ही काव्यकला मे निष्णात था और उसने अपने मधुर सूक्तो द्वारा गायन को शक्ति दी। अब तक लातीनी की प्रधान शैली बिखर चली थी। विविध जातियो के योग से यह सम्भव न था कि उनकी अपनी अपनी भाषा-विशेषताओ के सामने क्लासिकल लातीनी अपने प्राचीन शालीन रूप की रक्षा कर सके। उसमें प्रभूत सकरता का प्रादुर्भाव होने लगा जो तूर्स के ग्रेगरी[८] की कृतियो में विशेषत लक्षित है।

पश्चिमी यूरोप मे साहित्य निर्माण-कार्य पहले आयर्लैंड और इग्लैड मे आरम्भ हुआ। कोलम्बानस[९] और बीड[१०] ने अपने लातीनी ग्रन्थो मे प्रभूत साहित्य का सृजन किया।

---

१ Boethius (४८०-५२५); २. Cassiodorus (४८०-५७०), ३ St Benedict (४८०-५४७), ४ Gregory the Great (५४०-६०४), ५ St Isidore of Seville (५७०-६३६), ६ Sedulius, ७ Fortunatus (५३५-६००); ८ Gregory of Tours (५३८-५३९), ९. Columbanus (५४३-६१५), १० Bede (६७३-७३५)

वीड का "इग्लैंड का धार्मिक इतिहास" तो उस काल के लातीनी साहित्य मे शैली का एक नमूना माना जाता है। महान् सम्राट शार्लमान[१] का शिक्षामत्री अल्कुइन[२] उस काल का अप्रितम ईसाई साहित्यकार था। शार्लमान स्वय पढा लिखा न होने पर भी विद्वानो का सरक्षक था और उसने बाइबिल और अन्य धर्मग्रथो के पाठ सुधार को बडा प्रोत्साहन दिया। अल्कुइन के सहायक उस काल के प्रधान पडित ये थे—थियोडल्फ[३], पॉल[४], अगिल्बर्त[५], आइनहार्ड[६], लूपस सेरवातस[७]। उसी परपरा का ह्राबानुस माऊस[८] भी था। वालाफ्रिद स्त्रावो[९] ने तभी प्रकृति सम्बन्धी अपनी सुन्दर कविताएँ लिखी और प्रतिभाशाली गायक कवि गोत्सचाक[१०] ने अपने सम्मोहक लिरिक। नवी सदी में जान[११] (स्कॉट) और सेदूलियस स्कोतस[१२] (आयीश) ने अपने ग्रीक ज्ञान का परिचय दिया। साम्राज्य के विभक्त हो जाने से निस्सदेह दसवी सदी में ज्ञान और लातीनी साहित्य का ह्रास हुआ, फिर भी अनेक प्रतिभाएँ उस काल भी अपनी मेधा का प्रकाश फैलाती रही। गर्वर्त[१३] और भिक्षुणी ह्रात्स्विथा[१४] थे। गर्वर्त उस काल का प्रकाण्ड गणितज्ञ था और ह्रात्स्विथा साहित्यानुरागिणी कवियित्री भी थी। उसने रोमन तेरेन्तियस अफर का अनुकरण कर लातीनी में अनेक "कॉमेडी" लिखी।

ग्यारहवी सदी में यूरोप की जन-भाषाओ का उदय हुआ यद्यपि उन पर लातीनी का प्रभाव इतना गहरा पडा कि उनकी सज्ञा ही रोमान्स भाषा हो गई। स्वय उन्होने लातीनी पर अपना प्रभाव कुछ कम न डाला। यही युग विश्वविद्यालयो के उदय का भी था इन दिनो और यूरोप में अनेक विश्वविद्यालयो की प्रतिष्ठा हुई जहाँ साहित्य, विशेषत धार्मिक लातीनी का निर्माण होने लगा। रोमान्स भाषाओ का उदय तो हुआ परन्तु सैद्धान्तिक निरूपण—विशेष कर धार्मिक—सभी लातीनी में ही होते थे, यद्यपि वह लातीनी "क्लासिकल" लातीनी से बडी भिन्न थी। विषयतत्व में भी अब अन्तर पडा। आन्सेलम[१५] ने धार्मिक पैम्फलेट लिखने शुरू किए। सन्त पीटर दामियान[१६] ने ने सिसेरो[१७] के विरोध में दर्शन शास्त्र लिखा। आबेला[१८] ने पेरिस यूनिवर्सिटी को अपना केन्द्र बनाया। उसकी "हिस्तोरिया कालामितातुम" उसके अपने दु खो का विवरण है। प्राचीन क्लासिकल साहित्य का असाधारण पडित और शैली मे सिसेरो का अनुगामी सैलिस्बरी का जान[१९] आबेलार

---

१. Charlemagne, २. Alcuin (७३५-८०४), ३ Theodulf, ४ Paul, ५. Angilbert, ६. Einhard, ७ Lupus Servatus; ८ Hrabanus Maurus; ९. Walafrid Strabo, १० Gottschalk, ११ John the Scot, १२ Sedulius Scottus, १३ Gerbert (लग०-१०००); १४ Hrotswitha; १५. Anselm of Bec; १६. St Peter Damian, १७ Cicero; १८. Abailard (१०७९-११४२); १९ John of Salisbury (१११५-८०)

का शिष्य था। मध्यकालीन यूरोप का वह सबसे बडा विद्वान माना जाता है। क्लेफो का वर्नार[1] इस युग का स्तुत्य चर्चपिता है जिसके तप और तप-पूत तथा रहस्यवादी ग्रन्थो ने सारे यूरोप को प्रभावित किया। फिर भी उस काल का सबसे ऊँचा व्यक्तित्व सन्त तामस अक्विनस[2] का हैं। उसकी कृति "सुमा थियोलोजिका" की उपमा मध्यकालीन चर्च की गोथिक इमारत से दी गई है जो अपने वास्तु मे सर्वत्र पूर्ण है, जिसमें कही कोई खामी नही। कहते हैं कि सिसेरो के समय दार्शनिक विवेचन के लिए लातीनी उपयुक्त न थी। उसे दर्शन का सही वाहन इसी सन्त तामस ने अपनी महान मेधा से बनाया। सदियो इस महापुरुष के साहित्य का अनुशीलन हुआ है। मध्यकालीन यूरोप में जो चर्च और स्टेट के बीच निरन्तर दार्शनिक युद्ध हुआ था। उसमें भाग लेने वालो में सबसे महान् सन्त तामस ही था।

बारहवी-तेरहवी सदी में काव्य की प्रभूत साधना हुई। ओविद[3] विशेष लोकप्रिय हुआ। उसका फ्रेंच और अग्रेजी कविता के विषय और रूप दोनो पर गहरा प्रभाव पडा। उसका अनुकरण भी खूब हुआ। मध्यकालीन यूरोप का सबसे महान् कवि दाते[4] है। उसकी प्रधान कृति तो निश्चय ही इतालियन भाषा मे है। 'दिवीना कोमेदिया" (दिव्य कॉमेडी) परन्तु उसकी लातीनी रचनाएँ भी बडी सुन्दर हैं। फिर भी वह इतालियन भाषा का हिमायती था और उसके पक्ष साधन के लिए उसने अपनी प्रसिद्ध लातीनी कृति "दि वुल्गारी एलोक्वेन्तिया" लिखी। दाते के साथ ही यूरोपीय मध्य-युग का अन्त हो गया। उसके बाद पुनर्जागरण का युग आरम्भ हुआ।

रेनेसा (पुनर्जागरण) के युग में प्राचीन ग्रीक और रोमन ससार की कला, साहित्य, विचार धारा के प्रति नई चेतना, नई अभिरुचि उत्पन्न हुई। हालैंड के टामस केम्पिस[5] ने मध्ययुगीय शैली मे अपना "इमितातियो क्रिस्ती" लिखा। फ्रान्सिस्कस पेत्रार्का[6] ने पहलीबार यूरोप मे हस्तलिखित ग्रथो की खोज शुरू की। उसने अपने पत्रो की शैली सिसेरो की शैली (अक्तिकस को पत्र) पर अवलम्बित की। उसने अपने प्रारम्भिक "स नेटो" को छोड बाकी सारी मुख्य रचनाएँ लातीनी में की। उसके पत्र, उसका एपिक सभी लातीनी में हैं। एपिक तो वर्जिल का अनुयायी है। सिसेरो और क्विन्तिलियन धीरे-धीरे फैशन हो गए। कोई बगैर उन्हे पढे-रटे शिक्षित नही कहलाता था। "एलोक्वेन्तिया" से प्रभावित होने का अर्थ था लातीनी धाराप्रवाह बोलना। फिर तो लातीनी पढाने वाले अनेक शिक्षक उत्पन्न

---

१ St Bernard of Clairvaux (१०९०-११५३), २ St Thomas Aquinas (१२२४-७४), ३ Ovid, ४ Dante (१२६५-१३२१), ५ Thomas Kempis (१३८०-१४७१), ६ Franciscus Petrarca (१३०४-१३७४)

हो गए। वल्ला[1] ने अपनी पुस्तक "एलिगान्ती सेरमोनिस लातीनी" मे मध्य-युग की बर्वता को धिक्कारा और सिसेरो आदि की शैली को सराहा। उसी परंपरा का पोप लियो दशम का सेक्रेटरी बेम्बो[2] भी था। परन्तु इस दिशा में मुरेतस[3] सबसे स्तुत्य था। उसने सिसेरो के असामान्य शब्दो के प्रयोग से अपने आलोचको को चक्कर में डाल दिया। उत्तर में आक्सफोर्ड का प्रसिद्ध पडित और ग्रीक तथा लातीनी का परम उपासक एरैस्मस[4] हुआ। वह उस काल के प्रसिद्ध मानवतावादियो में अग्रणी था।

सोलहवी सदी में भी रेनेसा के भावुक अनुयायी लातीनी मे ही लिखते रहे। उनमे प्रसिद्ध दो स्कालीगर्स,[5] कासोबन,[6] लिप्सियस[7] और सल्मासियस[8] थे। सत्रहवी सदी मे अद्भुत आलोचक रिचार्ड बेन्टली[9] हुआ जिसने केम्ब्रिज के आधार से सारे यूरोप के रेनेसावादियो को प्रभावित किया। मिल्टन[10] ने अपनी कविता तो अधिकतर लातीनी मे ही लिखी, उसका आधे से ज्यादा गद्य भी लातीनी में ही लिखा गया। आरम्भ में उसने पद्य भी लातीनी मे ही लिखा। उसके अधिकतर निबन्ध, पत्र, धार्मिकग्रथ, तर्क सम्बन्धी पुस्तक सब लातीनी मे ही लिखी गईं। इसी प्रकार बेकन[11] अपनी सूत्रवत् चुस्त शैली के प्रसिद्ध निबन्धो के लिए अग्रेजी को अपने विचारो का वाहन न बना सका। उसने अपना "नोवम आर्गेनन" और न्यूटन[12] ने अपना "प्रिन्सिपिया" लातीनी मे ही लिखाऔर लातीनी मे ही जेसुइतो का प्रसिद्ध "आक्ता साक्तोरम" लिखा गया। लिपिशास्त्र धर्मशास्त्र, आचार-व्यवस्था सब लातीनी मे ही है। जेसुइतो मे कविताए बराबर लातीनी में ही लिखी जाती थी। सारबिन्स्की[13] ने लातीनी मे एक एपिक और लिरिको की चार पोथियाँ लिखी। इसी प्रकार रीपिन[14] ने वाटिकाओ पर एक लम्बी कविता लिखी। आन्द्रियास स्कॉट[15] ने गद्य-पद्य दोनो लातीनी मे लिखे और उस भाषा की अनेक हस्तलिपियाँ सम्पादित की तथा पाठ शुद्ध किए। हारदुइन[16] मुद्राशास्त्र के प्रारम्भिक जानकारो मे से है। उसने अपने अनेक ग्रथ इस विषय पर लातीनी में लिखे, साथ ही अनेक धर्मशास्त्र पर भी।

अब विविध देशो को अपनी-अपनी भाषा के साहित्य प्रस्तुत हो जाने से लातीनी की विशेष महत्ता न रही। उन्नीसवी सदी तक उसका विशेप प्रभाव था। वैसे आज भी अनेक

---

१ Valla (१४०७-१४५७), २ Bembo (१४७०-१५४७), ३ Muretus (१५२६-८५), ४. Desiderius Erasmus, ५ Scaligers, ६ Casaubon, ७ Justus Lipsius, ८ Salmasius, ९ Richard Bentley, १० Milton, ११. Bacon, १२ Newton, १३. Sarbiewski, १४ Rapin, १५ Andreas Schott, १६ Hardouin

यूरोपीय और अमेरिकन विश्व विद्यालयो में थीसिस-कुछ विषयो में लातीनी में ही दी जाती हैं। पोप के वैटिकन राज्य के विधान लातीनी में ही होते हैं और मठो में अनेक ईसाई विद्वान आज भी लातीनी मे लिखना अपना धर्म समझते हैं। फिर भी उसका इधर काफी ह्रास हुआ है और उसके पुनर्जागरण की कोई आशा नही।

२३. संस्कृत, पाली और प्राकृत

संस्कृत

: १ :

वैदिक साहित्य

सहिता-काल

'सस्कृत', जिसे श्रद्धालु हिन्दू देववाणी कहता है, हिन्दी यूरोपीय भाषा की प्राचीनतम शाखा है और "वेद" उसका प्राचीनतम साहित्य। "वेद" "विद्" धातु से बना है जिसका अर्थ है "जानना", इसी से "वेद" का अर्थ हो गया है ज्ञान जो दैवी आधार से उठा। भावुक श्रद्धालु वैदिक ज्ञान को मनुष्यकृत न मानकर ईश्वरकृत मानता है। इसी से वेद का दूसरा नाम "श्रुति" भी पडा, अर्थात् वह ज्ञान जो सुना गया, 'इलहामी'। श्रुति का ज्ञान उस ज्ञान से पृथक् है जो "स्मृति" कहलाता है, स्मृति अर्थात् ज्ञान जो याद रखा गया। श्रुति ज्ञान अपरिवर्तनशील शाश्वत है। स्मृति ज्ञान श्रुति पर अवलम्बित है, उसी का अनुकारी, उसी की याद है वह। जो उसके अनुकूल नही है वह स्मृति नही है, क्योंकि वह "मूल की याद" नही। स्मृति ईश्वरकृत श्रुति के विपरीत मनुष्यकृत है। श्रुति से एक और स्थिति का बोध होता है, उस अलिखित साहित्य का जो केवल सुनकर याद रखा गया। लिपि और लेखन का उस अति प्राचीन काल मे अभाव होने से वह सदियो मौखिक रूप से ही सरक्षित हुआ और उसका ज्ञान पिता पुत्र को अथवा गुरु शिष्य को उच्चारण द्वारा कराता था। श्रुति "सुनी हुई" तो कही ही जाती है, प्राचीन आचार्यों ने उस ज्ञान को देखा हुआ भी माना है। आखिर उसके सहितामत्रो का सम्बन्ध ऋपियो से है, ऋपियो को मन्त्रकार कहते है परन्तु उस रूप मे नही जिस रूप में कवि छद की रचना करता है वल्कि दृप्टा के रूप मे। ज्ञान पहले से था, वह केवल "देखा गया" इसी से ऋपियो की परिभापा में कहा भी गया है—साक्षात्कृत धर्माण ऋपय मन्त्रद्रष्टार ऋपय।

जो भी हो वेद भारतीय आर्यों और हिन्दुओ के धर्म और धार्मिक साहित्य के प्रधान स्रोत और आदि विन्दु माने जाते हैं और उन्होने हजारो वर्षों मे उनका आदर पाया है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद। इनमें से पहले तीन विशेप श्रद्धा के केंद्र थे और एक साथ "त्रयी" कहलाते थे। अपने प्रतिपादित विपय के कारण शायद अथर्ववेद को वहुत काल तक "त्रयी" का आदर नही मिला था। अब वह भी चारो वेदो में से एक है।

वेदो की शुद्ध श्रुति मत्रो में है, छदोवद्ध सूक्तो मे। यद्यपि यजुर्वेद के अनेकाश गद्य में भी है। इन्ही मत्रो-सूक्तो का सग्रह "सहिता" कहलाता है। बहुत काल तक ये मत्र विविध पुरोहित परिवारो की निधि थे और यत्रतत्र लोगो की स्मृति मात्र में बिखरे थे, पश्चात् इन्हे एकत्र कर लिया गया और वही एकत्र किया हुआ साहित्य "सहिता" कहलाया। चार वेद वस्तुत शुद्ध रूप मे यही चार सहिताएँ है। इन चारो मे प्राचीनतम "ऋग्वेद" है, हिन्दी-यूरोपीय आर्यों की प्राचीनतम पुस्तक। "ऋग्वेद" अधिकाश मे अन्य तीनो सहिताओ का मूलाधार भी है। "सामवेद" के केवल ७५ मत्र अपने है, शेष ऋग्वेद के है। इसी प्रकार यजुर्वेद के भी अधिकतर मत्र ऋग्वेद के है और अथर्ववेद का भी बीसवाँ भाग उसी आधार का ऋणी है।

"ऋग्वेद" दस मडलो में विभक्त है, मडल अनेक अनुवाको (अध्यायो) में, अनुवाक सूक्तो मे और सूक्त मत्रो मे। सूक्तो के विषय विविध हैं—देवस्तुति, दानप्रशस्ति, कुलेतिहास आदि। और इनके क्रम में स्थान-स्थान पर अभिराम कवि-ग्रन्थि खुल पडी है। विविध ऋषिकुलो में विविध वेदो का अध्ययन होता था और यह स्वाभाविक था कि अलिखित साहित्य केवल मौखिक होने के कारण वितरित होते समय उच्चारणादि भेद से पाठभेद प्रस्तुत कर दे। इसी से ऋषि–"चरणो" की अपनी अपनी वेद–"शाखाए", बन गई। ऋग्वेद की जो शाखा आज उपलब्ध है उसे "शाकल" शाखा (शौनक की) कहते है। उसमें १०२८ सूक्त (अनेक मत्रो का एक सूक्त होता है) है, और १०,६०० मत्र। ये सूक्त सदियो के काल–विस्तार में रचे गए, अनेक ऋषियो द्वारा अनेक कालस्तरो में। इसी से ऋग्वेद के पहले ही सूक्त मे प्राचीन और नूतन ऋषियो का उल्लेख हुआ है।

ऋग्वैदिक आर्यों के देवता प्राकृतिक शक्तियो के प्राय मानुष रूप थे। उनकी चेष्टाएँ मानुष थी। देवता अनेक थे, एकेश्वर वाद की कल्पना अभी नही हुई थी। इन देवताओ के तीन प्रकार थे। उच्चतम स्वर्ग अथवा आकाश के देवता–द्यौस, वरुण, मित्र, सूर्य, सवितृ, पूषन् (पिछले चारो सूर्य के ही अश विशेष या नामान्तर थे) अश्विन (अश्विनी कुमार) और देवियाँ उषस और रात्रि, अन्तरिक्ष के देवता-इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु, पर्जन्य, और पृथ्वी के देवता–अग्नि, सोम और पृथिवी (देवी)। इनके अतिरिक्त अनेक देवता-देवी और थे। यह देवकुल द्यौस और पृथ्वी की सन्तान थे। अनेक अमूर्त देवी-देवताओ का उल्लेख भी हुआ है और नद-नदी, देव-देवियो के प्रति भी मत्र कहे गए है। आर्यों का धर्म यज्ञ-परक था और यज्ञो मे पशुबलि भी दी जाती थी। यज्ञावसर पर मत्र और सूक्त देवताओं की स्तुति में गाए जाते थे और यज्ञपूत मास खाया जाता था, सोम पिया जाता था। पुरोहितो की परपरा आवश्यकतावश निरन्तर बढती ही गई।

अनेक सूक्तो में डायलॉग का प्रयोग हुआ है, जैसे यम-यमी में, इन्द्र-इन्द्राणी में, पुरूरवा–उर्वशी मे। इनमें से अन्तिम को तो महाकवि कालिदास ने उत्तरकाल मे अपने

नाटक "विक्रमोर्वशी" का आधार वनाया। वस्तुत संस्कृत नाटको का मूल इन ऋग्वैदिक डायलॉगो को ही बताया जाता है।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सूक्त छदोवद्ध मत्रो में ह। प्रत्येक मन्त्र में साधारणत "चार पद है। छदो में विशेषत "त्रिष्टुभ" "गायत्री" और "जगती" का उपयोग हुआ है। "ऋग्वेद" की भाषा प्राचीनतम आर्यों की साहित्यिक भाषा है जिसका अन्तिम रूप "क्लासिकल" सस्कृत मे निखरा, 'जिसका व्याकरण पाणिनि ने प्रस्तुत कर उसे निश्चित रूप दिया। सरल सम्मोहक भाषा मे ऋग्वेद के अनेक सूक्त अत्यन्त मार्मिक है। ऊषा के प्रति गाए गए छद लिरिक के रूप मे प्राचीन साहित्य मे अनुपम है। इन्द्र वाले मन्त्र शक्ति के परिचायक है और वरुण सम्बन्धी असामान्य शालीन। दसवे मण्डल में एक अत्यन्त मनोरम सूक्त (३४) जुआरी का है। हृदयस्पर्शी गायन में उसने द्यूत सम्मोहक आकर्षण का करुण वर्णन किया है। मृत्यु सम्बन्धी कविताएँ गम्भीर और रहस्यवादी हैं और वागम्भृणी की नितान्त ओजस्विनी। इन ऋग्वैदिक मन्त्रो की रक्षा के लिए ऋषियो ने 'पद' 'क्रम' 'जटा', 'वन' आदि पाठो का निर्माण किया। ऋग्वेद के दसवे मण्डल मे ही वह प्रसिद्ध "पुरुष सूक्त" है जिसमें वैदिक साहित्य मे पहली वार वर्णों के उदय का उल्लेख हुआ है। "सामवेद" गेय मन्त्रो की सहिता है। इसमें ७५ ऋचाओ को छोड शेष सभी "ऋग्वेद" की है। (विशेषत उसके आठवे-नवें मण्डल से आकृष्ट) इनको उद्गातृ और उसके सहकारी पुरोहित यज्ञ के अवसर पर गाते थे। इस सहिता की तीन शाखाएँ—'राणायनीय' 'जैमिनीय' और 'कौथुम' इसके दो भाग हैं—पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। "यजुर्वेद" केवल यज्ञ-मन्त्रो की सहिता है। इसकी अनेक शाखाएँ थी परन्तु अब इसकी केवल पाँच शाखाएँ मिलती है—चार "कृष्ण" यजुर्वेद की और एक "शुक्ल" यजुर्वेद की। कृष्ण यजुर्वेद में यजुस (यज्ञपरक मन्त्र) और स्तुतियो के साथ-साथ अनेक स्थल पर उनकी गद्यात्मक व्याख्या भी है जिन्हे "ब्राह्मण" कहते है और शुक्ल मे ये ब्राह्मण पृथक् कर दिए गए है जो एकत्र होकर "शतपथ" ब्राह्मण कहलाते है।

"अथर्ववेद" की नौ शाखाओ मे से आज केवल दो—"पैप्पलाद" और "शौनकीय" उपलब्ध हैं। शौनकीय शाखा बीस मण्डलो ७३१ सूक्तो और ६००० पक्तियो मे सग्रहीत है। इसके अनेकाश ऋग्वेद से लिए गए है परन्तु इसके कुछ अश अनुवृत्त और परपरा के रूप में सम्भवत ऋग्वेद से भी प्राचीन है। इस सहिता के अधिकतर मन्त्र झाड फूंक, मारन उच्चाटन, भूत-प्रेत, रोग व्याधि सम्बन्धी मतर हैं। उससे स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक आर्यो की सामाजिक और सास्कृतिक चेतना मे अव तक प्रभूत अन्तर पड गया था। अथर्ववेद के भी अनेक स्थल अत्यन्त मार्मिक है। वरुण के प्रति कहे कुछ मन्त्र (४, १०) तो अपनी शालीनता मे समूचे वैदिक-साहित्य मे अपनी जोड नही रखते। माता भूमि सम्बन्धी सूक्त (१२,१,६३) भी देश प्रेम का रोमाचक आदर्श प्रस्तुत करता है। उसने कुछ वडे महत्व के

मन्त्र राज्यारोहण सम्बन्धी भी हैं जिनका उपयोग राज्यारोहण के समय हिन्दू राजा बराबर करते रहे हैं। उस वेद में पहले-पहल "इतिहास-पुराणो" का उल्लेख हुआ है।

वेदो का काल-निर्णय बडा कठिन है और इस विषय पर भी मत अनेक है। यह तो असन्दिग्ध है कि ऋग्वेद उनमें प्राचीनतम है और अथर्ववेद सबसे पीछे का। स्वय ऋग्वेद सहिता के अनेक कालान्तर है और उसके मत्रो के रचयिता-द्रष्टा ऋषियो तथा दान-स्तुतियो के नायक कुलागत राजाओ की परपरा से प्रगट हो जाता है कि उसके मन्त्रो की रचना अनेक पीढियो में हुई है। फिर मत्रो का रचना-काल भी स्वाभाविक ही सहिता काल से भिन्न है। सर्वांगीय दृष्टि से ऋग्वेद का रचनाकाल ३००० ई० पू० और १३०० ई० पू० के बीच माना जा सकता है। सम्भव है उस वेद के प्राचीनतम मत्र ३००० और २५०० ई० पू० में कभी रचे गए हो। राजा शान्तनु आदि महाभारतकालीन राजाओ का उसमें उल्लेख होने से यह भी सिद्ध है कि उसका अन्तिम अश चौदहवी शती ई० पू० से पहले नही रखा जा सकता। "अथर्ववेद" निश्चय ही बहुत पीछे का है और मत्रो के रचना काल में भी परस्पर सदियो का अन्तर है। उसके समाज, सस्कृति, भूगोल आदि को देखते हुए उसकी रचना और पीछे सहिता का समय ई० पू० १००० के लगभग होना चाहिए। सभवत उसके मत्रो की वर्तमान सहिता तब तक प्रस्तुत हो चुकी थी।

उत्तरकालीन वैदिक साहित्य

ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्

"ब्राह्मण" वेदमत्रो की व्याख्या और यज्ञ सम्बन्धी टीकाएँ हैं। यज्ञ के अवसर पर जो अनेक बार विधि की कठिनाइयाँ हो जाती थी, उन्ही के समाधान के लिए समय-समय पर सम्भवत ये "ब्राह्मण" लिखे गए। इनमें सृष्टि सम्बन्धी उन कथाओ पौराणिक आख्यानो आदि का भी उल्लेख है जो यज्ञो से सम्पर्क रखती थी। इनमें विशेषत पुरोहितो को उनकी विधि-क्रियाओ के सम्बन्ध में विधिपरक अनुशासन भी मिलते है। वस्तुत ब्राह्मणो—पुरोहितो के पेशे सम्बन्धी इसमें भेद बताए गए हैं जिनसे इनकी सज्ञा "ब्राह्मण" सार्थक जान पडती है। ये ज्ञानग्रथ नही यज्ञग्रथ है, पौरोहित्य के। "ब्राह्मण" गद्य में लिखे गए और सस्कृत गद्य की प्राचीनतम कठिन शैली प्रस्तुत करते है। उनमे बीच-बीच में पद्यबद्ध "गाथाएँ" भी दी हुई हैं। सम्भवत प्रत्येक वेद की प्रत्येक शाखा के अपने-अपने ब्राह्मण थे। प्राचीनतम ब्राह्मण के एक रूप का दर्शन हमें कृष्ण यजुर्वेद के गद्याशो में होता है। साधारणत प्राचीनतम ब्राह्मण "पचविश" "तैत्तिरीय," "ऐतरेय", "जैमिनीय" और "कौषीतकि" माने जाते हैं, फिर "शतपथ" तब अथर्ववेद का "गोपथ" और अन्त में सामवेद के लघु ब्राह्मण। उनमें वेदो में आई आख्यायिकाएँ आदि विशेष रूप से महत्व धारण कर लेती हैं। "शतपथ" ब्राह्मण में अक्कादी साहित्य की जलप्रलय की कथा भी (जो वहाँ "गिलगमेश" काव्य में

मिलती है) कही गई है। अन्तर बस इतना है कि उसमें अक्कादी जिउद्रुस्रू के स्थान पर नायक मनु है जो अपनी रक्षा के बाद यज्ञ के लिए "असुर-ब्राह्मण" को पुरोहित बनाता है। यह जलप्रलय (ई० पू० ३२०० के लगभग सुमेर (इराक का दक्षिणी भाग दजला-फरात का मुहाना, ऊर, उरूक आदि नगरो मे) हुआ था। "गिल्गमेश" ई० पू० २००० के पहले लिखा गया और शतपथ ब्राह्मण ई० पू० १००० और ८०० के बीच कभी। "ब्राह्मणो" मे देवता वेदो के ही है परन्तु प्रजापति (यज्ञ का देवता और उसका स्वरूप) धीरे-धीरे प्रबल हो गया है। प्रजापति स्वय यज्ञ है और यज्ञविधि का सर्वत जानकार पुरोहित ब्राह्मण स्वय देवता है।

"ब्राह्मणो" के अन्तिम अश "आरण्यक" कहलाते है। विद्वानो का मत है कि इनका रहस्यमय ज्ञान अरण्य के एकान्त मे शिष्य को दिया जाता था, इसी से इनका यह नाम पडा। उपनिषदो का भी अधिकतर यही अर्थ है। आरण्यक और उपनिषद् दोनो कभी "वेदान्त" कहलाते थे। बाद में यह सज्ञा केवल उपनिषद्-दर्शन की हो गई। प्राय २०० उपनिषद् आज हमें उपलब्ध है। इनमें अनेक विविध सम्प्रदायो के है और प्राचीनो में भी काफी सामग्री बाद में मिलाई गई है। उपनिषदो में दार्शनिक विवेचन और रहस्यमय प्रसगो के अतिरिक्त प्रणय-प्रसग और रोग-मत्रादि भी है (कौषीतकि और छादोग्य)। उपनिषदो में ब्राह्मण-कर्मकाण्ड के विरुद्ध साफ विद्रोह प्रगटित है। यज्ञपरक धर्म के स्थान पर उसमें दार्शनिक चेतना और ज्ञान का प्रतिपादन हुआ है। ब्रह्म-आतममय जगत् का प्रतिपादन हुआ है। काशी के अजातशत्रु और गार्ग्य बालाकि के बीच, याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी में और नचिकेता के उपाख्यान में भारतीय दर्शन का बीज उपलब्ध है यद्यपि इस बीज का कोई न कोई रूप स्वय ऋग्वेद में भी झलक जाता है। उपनिषद्विद्या के द्रष्टा क्षत्रिय हैं, ब्राह्मणो के कर्मकाण्ड और पौरोहित्य के विरोधी। उन्होने रक्तहीन यज्ञ-बौद्धिक चिन्तन और ज्ञान को उत्तम माना जिसकी पराकाष्ठा जैन और बौद्ध धर्मान्दोलनो में हुई। ऋग्वैदिक काल में ही ब्राह्मण-क्षत्रियो में जो पारस्परिक द्वन्द्व चला आता था उपनिषद् उसी की परिणति थे। उनके सिद्धातो का विश्वव्यापी प्रभाव पडा। ग्रीस के नौ अफलातूनी और सोफी सिद्धात, सिकन्दरिया आदि के ईसाई दर्शन और ईरान-अरब के सूफी चिन्तन वेदान्त से ही प्रभावित माने जाते है। उपनिषदो में अनेक स्थल काव्य के निखरे प्रसाद-गुण-युक्त रूप है। शैली प्राचीन और कभी-कभी प्रसगवश दुरुह होती हुई भी सरल और शालीन है। भाषा और छन्द के रूप मे उपनिषदो की भूमि वैदिक और "क्लासिकल" सस्कृत के बीच की है। कुछ प्रामाणिक उपनिषदो के नाम है—कौषीतकि, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर, मैत्रायणीय, कठ, मुण्डक, और माण्डुक्य।

वेदांग

"श्रुति" का बाह्य परिमाण उपनिषद् है। वस्तुत अनेक तो सहिताओ तक ही

उसकी सीमा मानते हैं। वेदागो का प्रकाश और विकास वेदो के अध्ययन के लिए हुआ, उनके अध्ययन में इनसे सहायता मिली। वेदाग ६ प्रकार के हैं।—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष्। इन सभी पर आज अलग-अलग प्रभूत साहित्य सस्कृत में प्रस्तुत है जो अनेक रूप से विज्ञान का स्थान ग्रहण कर चुका है। इनमे शिक्षा में उच्चारण आदि पर प्रकाश डाला गया है, कल्प मे यज्ञ और समाज सम्वन्धी विधि-निपेध है, व्याकरण में भाषा का निदान है, निरुक्त शब्दशास्त्र अथवा कोषविज्ञान का आरम्भ करता है, छन्द वैदिक छन्दो पर विचार कर परवर्ती "मीटर" पर शास्त्रीय विवेचन है और ज्योतिष् तत्सम्वन्धी ज्ञान का निरूपण करता है। इन वेदागो पर ग्रन्थ सूत्र पद्धति से लिखे गए। कम से कम शब्दो में अधिक से अधिक विचार और भाव भरे गए।

सूत्र विचारो के साकेतिक वीज है। इस साहित्य शैली का उदय केवल सस्कृत में हुआ, ससार की किसी अन्य भाषा मे नही। यह सूत्र-सरणि भाषा की सुईकारी है। सूत्रो का अनेकार्थ में निर्माण-काल ब्राह्मणो, आरण्यको का ही है। उन्ही के अधिकतर वे विकास हैं। उन्ही के आचार्य आश्वलायन, शौनकादि के रूप मे इनके भी प्रारभिक प्रणेता है।

सवसे महत्व का वेदाग कल्प है। कल्प (यज्ञविधि—निरूपण) सभी वैदिक चरणो के अपने-अपने थे। इनके तीन मुख्य भाग है—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। श्रौत सूत्रो मे विविध वैदिक यज्ञो के विधान है—अग्निहोत्र सोमज आदि विभिन्न यज्ञो का। इन्ही के एकाश (अन्त्याश) "शुल्वसूत्र" भारतीय गणित का (यज्ञ-वेदी के माप आदि द्वारा) प्रारम्भ करते है। गृह्यसूत्रो मे गृह और शरीर सवधी आचार का विचार और वर्णन है। उसमे ४० सस्कारो का निरूपण है जिनमे सोलह शरीर से सवध रखते हैं। ये सस्कार वस्तुत मनुष्य के जन्म से भी पहले शुरू होकर उसकी मृत्यु के वाद तक चलते रहते है। धर्म सूत्रो में सामाजिक और धार्मिक क्रियाओ के सवध में विधि-निपेध प्रस्तुत हैं। राजधर्म विविध वर्ण धर्म, दण्डनीति उसके विपय है। व्याकरण आदि के सूत्रग्रन्थ वस्तुत विज्ञान से तात्पर्य रखते है और उनका उल्लेख यथा स्थान किया जायेगा।

: २ :

इतिहास-पुराण

ऐतिहासिक काव्य

"इतिहास-पुराण" का उल्लेख "अथर्ववेद" मे हुआ है। जहाँ तक पौराणिक आख्यायिकाओ आदि का सवध है, वे तो वेदो और ब्राह्मणो आदि प्राचीन ग्रन्थो में मिलती ही है, सस्कृत के दो प्राचीन महाकवियो के नायको और उनके कुलो का भी सकेत वहाँ किसी न किसी रूप मे मिलता है। ऐतिहासिक काव्य की मूल परपरा किसी न किसी रूप में वैदिक

काल मे कायम थी और चारणो की भाँति सूत अथवा अन्य गायक उन्हें यत्र-तत्र गाया करते थे। फिर एक दिन वह कवि वाल्मीकि उत्पन्न हुआ जिसने भारत और सस्कृत को उसका पहला महाकाव्य "रामायण" दिया। "रामायण" से पहले भी सस्कृत में कोई महाकाव्य था इसमें विद्वानो ने सन्देह किया है, यद्यपि उसके होने का सकेत मिलता है। द्वितीय शती ई पू के पतजलि ने अपने "महाभाष्य" मे वाल्मीकि के ही पूर्व-पुरुष च्यवन के रामकाव्य से दो श्लोक उद्धृत किए है। और प्रथम शती ईस्वी के बौद्ध-साहित्य-कार और दार्शनिक अश्वघोष ने अपने "बुद्धचरित" में लिखा है कि किस प्रकार वाल्मीकि रामायण की रचना मे अपने पूर्वज च्यवन से प्रौढतर सिद्ध हुए। जो भी हो आज जो रामायण हमे उपलब्ध है वह एक कवि की कृति है और उसका रचयिता वाल्मीकि परपरया "आदिकवि" कहलाता है। प्रगट है कि वाल्मीकि के आदि कवि होने से 'रामायण' भी सस्कृत का आदिकाव्य हुआ। रामायण की चुस्त और शालीन शैली तथा उसकी कथा की एक और प्रधान स्रोतज धारा प्रमाणित करती है कि उसका रचयिता वाल्मीकि अथवा जो कोई रहा हो, रहा वह अकेला। रामकथा को उसने काव्य का रूप देकर खडा किया। फिर धीरे-धीरे और कथाएँ भी उसके आकार में आ मिली।

रामायण की मूल कथा इस प्रकार है। अयोध्या के राजा दशरथ के तीन रानियाँ थी, कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। कौशल्या के पुत्र राम ने अपने गुणो से प्रजा का मन हर लिया था और अवस्था ढल जाने पर दशरथ ने राम को युवराज बनाने का निश्चय किया इसी बीच कैकेयी की दासी मन्थरा ने उसे फुसलाकर अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी माँगने को मजबूर कर दिया। कैकेयी की एक पुरानी सेवा के बदले राजा ने उसे वर देने का वचन दिया था जो कैकेयी ने भरत को गद्दी और राम को चौदह वर्ष के वनवास के रूप मे माँगा और राजा को देना पडा। राम अपनी प्रिय पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन चले गए। भरत मामा के यहाँ थे। पिता राम का वियोग न सह परलोक सिधारे तब श्राद्ध मे आने पर जब भरत को अपनी माँ का कृत्य मालम हुआ तो वह भागे हुए वन पहुँचे और भाई को मना लेने के बडे प्रयत्न किए। परन्तु जब राम पिता का वचन मिथ्या करने पर राजी न हुए तब भरत उनकी खडाऊँ लेकर लौट आए और उसे गद्दी पर रख प्रतिनिधि के रूप मे प्रजा-पालन करने लगे। उधर लका के राक्षस राजा रावण ने राम की सुन्दर पत्नी सीता को हर लिया। राम और रावण मे भयानक युद्ध हुआ जिनमें रावण को सपरिवार मारकर राम ने सीता का उद्धार किया। फिर चौदह वर्ष बीत जाने पर वह अयोध्या लौटे। रामायण का प्रस्तुत आकार ई पू २०० के लगभग सम्भवत समाप्त हो गया था। कुछ आश्चर्य नही यदि उसका प्रधान कथाकाव्य ई पू के लगभग ही समाप्त हो गया हो।

रामायण गार्हस्थ्य-गुणो का अद्भुत काव्य है। आज का हिन्दू परिवार अपने

कूर्म, मत्स्य, गरुड, और ब्रह्माण्ड। प्रगट है कि इनमे से अनेक साम्प्रदायिक है। इनके अतिरिक्त छोटे बडे सौ के लगभग अन्य पुराणो का भी जहाँ तहाँ उल्लेख मिलता है।

पुराणो की रचना का काल प्राय असम्भव है। समय-समय पर ये बनते गये है और इनमे सामग्री तो अभी हाल तक जोडी जाती रही है। अनेक प्रधान पुराणो का सकलन गुप्त काल मे पाँचवी सदी ईस्वी के आसपास हुआ।

रामायण-महाभारत की ही भाति पुराणो का भी सस्कृत और प्राकृत साहित्यो पर गहरा असर पडा है। इन तीनो ने केवल सस्कृत और प्राकृत के ही साहित्यो को प्रभावित नही किया वरन् समूचा भारतीय साहित्य, सस्कृत से लेकर जन बोलियो तक—अपनी सामग्री के लिए पुराणो के अमित भडार का ऋणी है।

: ३ :

"क्लासिकल" साहित्य

"क्लासिकल" सस्कृत साहित्य का चरम विकास कालिदास है। परन्तु कालिदास पाँचवी शती ईस्वी में हुए, गुप्तशासनकाल में। उनसे पहले अनेक कवि और नाटककार हो गए है। अपने पूर्ववर्ती तीन साहित्यकारो—भास, सौमिल्ल, कविपुत्र—का तो उसी महाकवि ने अपने "मालविकाग्निमित्र" में उल्लेख किया है। वैसे उनसे भी पहले के कवियो का निर्देश साहित्य मे हुआ है आखिर जिस प्रतिभा का परिचय रामायण और महाभारत ने दिया उसके और पाँचवी सदी के कालिदास के बीच साहित्यभूमि अनुर्वर कैसे रह सकती थी?

महाभाष्यकार पतजलि (ल० १८५—ई० पू०) ने कविताओ और नाटको का उल्लेख किया है। महर्षि च्यवन-कृत रामायण के प्रति सकेत का उल्लेख ऊपर किया ही जा चुका है, यहाँ यह और लिख देना असगत न होगा कि "महाभाष्य" से जालूक और तित्तिरि के अनुष्टुभ श्लोको का भी हवाला मिलता है और उसी आधार से वररुचि की एक कविता का भी पता चलता है। वररुचि वैयाकरण था। उसका दूसरा नाम कात्यायन था। यदि वररुचि ही कात्यायन रहा हो तो उसके चन्द्रगुप्त मौर्य-पूर्व नन्द का मत्री होने में कोई सन्देह नही। पतजलि के अतिरिक्त राजशेखर ने भी वररुचि को "कण्ठाभरण" नामक काव्य का प्रणेता माना है। इसी प्रकार भोज ने भी अपने "शृगार प्रकाश" मे कात्यायन की कृति कहकर दृष्टान्तत "वसन्ततिलका" का अर्धांश उद्धृत किया है। महान् वैयाकरण पाणिनि की कुछ कविताएँ भी सुभाषितो मे जहाँ तहाँ मिल जाती हैं। क्षेमेन्द्र ने उसे उसके उपजाति छदो की सुन्दरता पर सराहा है। राजशेखर ने तो पाणिनि को "जम्बवती जय" (पाताल विजय) काव्य का रचयिता ही माना है। पाणिनि पाँचवी सदी ई० पू० के थे और सम्भवत वररुचि (कात्यायन जो उसका रन्ध्रान्वेषी था) नन्दराज के समसामयिक थे, शायद नन्द

के दरबारी भी। निश्चय ही पाणिनी कात्यायन से पहले हुए थे क्योकि कात्यायन ने उनके सूत्रो का खडन और पतजलि ने उनका समाधान किया है।

वररुचि के बाद की तीन सदियो के साहित्य का पता नही चलता। यह मानना कठिन होगा कि साहित्य की प्रतिभा उस काल म्लान हो गई थी क्योकि सस्कृत साहित्य के इतने रत्नो का लोप हो गया है कि कुछ आश्चर्य नही यदि उस काल की कुछ रचनाएँ नष्ट हो गई हो। सुबन्धु और भास का नाम इस काल के लेखको मे लिया जाता है जो मानना कठिन है। उनका समय प्रमाणत पीछे है। पहली शती ईस्वी मे एक महान् काव्यकार और नाट्यकार अश्वघोष का प्रादुर्भाव हुआ। अश्वघोष साकेत का रहने वाला ब्राह्मण था और उसकी माता का नाम सुवर्णाक्षी था। अश्वघोष बौद्ध हो गया था और उस सम्प्रदाय का वह दिग्गज दार्शनिक हो गया है। उसे कुषाणराज कनिष्क पाटलिपुत्र से बलपूर्वक पेशावर ले गया और कश्मीर में जब उसने तीसरी बौद्ध सगीति की तब प्रधान की अनुपस्थिति में अश्वघोष ने ही उसका सचालन किया था। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है अश्वघोष ने काव्य और नाटक दोनो लिखे। उसने अपने विचारो के प्रकाशन और बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए साहित्य को वाहन बनाया, यह वह स्वय अपने "बुद्धचरित" में स्वीकार करता है। उसने "रामायण" के बाद फिर महाकाव्यो की परिपाटी चलाई और "बुद्धचरित" तथा "सौन्दरनन्द" नाम के दो महाकाव्य लिखे। इनमें से पहला जैसा नाम से प्रगट है बुद्ध का चरित है, दूसरे में बुद्ध के वैमात्र भ्राता नन्द और उसकी पत्नी सुन्दरी की रोमाचक कथा है। बुद्ध भिक्षा के लिये जब आते है तब नन्द पत्नी का प्रसाधन करता होता है। कोई भिक्षा नही देता, सभी नौकर प्रसाधन प्रस्तुत करने मे व्यस्त है। बुद्ध को रिक्तपात्र लिए जाते नन्द खिडकी से देख लेता है और उन्हे फिरालाने जाने के लिए पत्नी से अनुमति माँगता है। सुन्दरी कहती है—जाओ, पर कपोलो के "विशेपक" सूखने के पहले ही लौट आना! नन्द जाता है तो बुद्ध उसे अपना भिक्षापात्र थमा देते है और दूसरो से बात करने लगते हैं, फिर उसे लिए-दिए विहार मे चले जाते है। नन्द को उन्हे पात्र पकडाकर घर लौटने का साहस नही होता और इधर बुद्ध अपने प्रवचनो में व्यस्त हो जाते है। नन्द उनसे मिलना चाहता है, घर जाने की अनुमति के लिए, पर मिल नही पाता। बहुत काल इसी प्रकार बीत जाता है तब बुद्ध एक दिन उसे आकाश-विहार और स्वर्ग को ले जाते है। फिर नन्द को विरक्ति हो जाती है और वह सघ मे शामिल हो जाता है। "सूत्रालकार" भी अश्वघोष की ही रचना मानी जाती है। अश्वघोष रामायण से प्रभावित था परन्तु स्वय उसने अनेक परवर्ती कवियो को प्रभावित किया। स्वय कालिदास उससे इतने प्रभावित थे कि उन्होंने अपने "रघुवश" और "कुमार सम्भव" दोनो मे अश्वघोष के अनेक श्लोक सोच-सम्हाल कर इस्तेमाल कर लिए। जैसे बुद्ध को देखने नगर की स्त्रियाँ दौडती है, उसी प्रकार प्राय उन्ही शब्दो मे अज और शिव को भी नारियाँ दौडकर देखती है।

अश्वघोष के तीन नाटको के अश भी तुरफान से मिले हैं। एक मे शारीपुत्र अथवा शारद्वतीपुत्र का चरित नौ अको मे प्रस्तुत है, दूसरे मे काल्पनिक रूपकीय पात्रो का उपयोग हुआ है और तीसरे मे वारागना, दुष्ट आदि का नट्याकन है।

दूसरी शती ईस्वी के मध्य (१५० ई) गिरनार की शिला पर सुदर्शन हृद का बाँध ठीक करने मे महाक्षत्र रुद्रदामन का प्रशस्त काव्यमय अभिलेख खुदा है। उसमें लिखा है कि शकराज ने बगैर प्रजा पर नया कर लगाए सुदर्शन झील के टूटे बाँध की प्रभूत व्यय से मरम्मत करादी। उस अभिलेख मे सस्कृत गद्य की पहली प्राजल शैली मिलती है। उसमे आश्चर्य की बात नही कि एक विदेशी ने "देववाणी" की पहली सुथरी गद्य शैली भारत को दी क्योकि भारतीय सस्कृति की अनेक इकाइयाँ इन्ही विदेशी योगो से बनी हैं।

यद्यपि सुबन्धु और भास के काल का ठीक पता नही है, यहाँ उनपर विचार कर लेना अनुचित न होगा। सुबन्धु के नाट्यान्तर्गत नाटक "वासवदत्ता नाट्यधारा" का उल्लेख वामन और अभिनव गुप्ताचार्य दोनो ने किया है। भास का उल्लेख कालिदास ने अपने "भाससौमिल्लकवि पुत्रादीनाम्" पद मे किया है। भास के अनेक नाटक गणपतिशास्त्री ने प्रकाशित किए थे। उसके नाटको मे सबसे प्रसिद्ध और महत्व का "स्वप्नवासवदत्ता" है। उसमें भी उदयन की कथा है। उदयन ने प्राचीन काल के अनेक काव्य-नाटको को अपने नायकत्व से सनाथ किया। भास के इस नाटक से बुद्ध-कालीन राजकुलो पर प्रकाश पडता है। भास सम्भवत तीसरी सदी ईस्वी में हुए थे। भास के साथ ही कालिदास ने जिन सौमिल्ल और कविपुत्र दो कवियो को "प्रथित यशसा" कहा है, उनका भी कुछ ठीक पता नही चलता। राजशेखर ने एक सौमिल को रामिल के साथ "शूद्रकथा" का रचयिता माना है। परन्तु यह कह सकना कठिन है कि सौमिल्ल और सौमिल एक ही थे। वल्लभदेव के सुभाषित में दो "कविपुत्रो" का उल्लेख है। उनके एकाध श्लोक उसमें उद्धृत है पर कहा नही जा सकता कि कालिदास का कविपुत्र उन्ही में से एक है या तीसरा अथवा इनसे सर्वथा भिन्न।

शिलालेख-काव्य की ओर ऊपर सकेत किया जा चुका है। गुप्तकाल मे अभिलेखो में काव्य का उपयोग साधारण हो गया। समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति सबल शब्दावलि में उसके दरबारी कवि हरिषेण ने रची थी। वह स्तम्भ लेख लगभग ३४५ ई का है। इसे अधिक हरिषेण के विषय में हम कुछ नही जानते, और न कुमारगुप्त के उस दरबारी कवि वत्सभट्टि के विषय मे जिसने मन्दसोर का विख्यात काव्यबद्ध अभिलेख (लग ४७३-४) रचा था। मन्दसोर का वह अद्भुत अभिलेख तो कालिदास की याद दिलाने लगता है। उस पर पडा भी है उस महाकवि का प्रभूत प्रभाव। दो और गुप्तकालीन अभिलेखो का यहा उल्लेख कर देना उचित होगा। दोनो स्कन्दगुप्त के है, एक सैदपुर भीतरी का दूसरा जूनागढ का। दोनो प्रौढकाव्य धारा प्रवाहित करते है। परन्तु उनके रचयिताओ का पता नही।

हरिषेण और वत्सभट्टि दोनो कालिदास के समकालीन थे, एक बडा दूसरा छोटा। गुप्त अभिलेखो से तो उस काल की कवि प्रतिभा व्यक्त ही है। गुप्त सम्राटो की भी, प्रगट है, कविमेधा जाग्रत थी। कम से कम समुद्रगुप्त की तो "कविराज" आदि विरुदो द्वारा कवि शक्ति प्रयाग स्तभवाले लेख मे प्रदर्शित की ही गई है। जान पडता है महाकवि कालिदास का आविर्भाव समुद्रगुप्त के शासनकाल ही मे हो गया था यद्यपि लिखते वे कुमारगुप्त के शासनकाल (स्कन्दगुप्त के जन्म) तक रहे थे। विशेषत वे चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (लग ३७५-८०-४१४ ई) के समकालीन थे। और सम्भवत उसके दरबारी भी। कालिदास के समय पर बडा मतभेद रहा है। विद्वानो ने उस महाकवि का समय दूसरी शती ई पू (पुष्यमित्र शुग के पुत्र अग्नि-मित्र का समकालीन) से लेकर छठी शती ईस्वी तक आँका है। परन्तु महाकवि के काव्यो और नाटको की आन्तरिक सामग्री गुप्तकालीन काव्यधारा, मुद्रा-अभिलेख, सस्कृति आदि सभी पुकारकर कालिदास का रचनाकाल चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का समीपवर्ती घोषित करते है। दिग्नाग प्रसिद्ध बौद्धदार्शनिक और "कुन्दमाला" का सम्भावित रचयिता, के प्रति भी शायद कालिदास ने अपने "मेघदूत" में सकेत किया है। दिग्नाग समुद्रगुप्त का समकालीन था यद्यपि उसके कुन्दमाला के रचयिता होने में लोगो को सन्देह है।

कालिदास ससार के प्रधान कवियो मे से है। उसकी कृतियो ने देशी-विदेशी सभी काव्य मर्मज्ञो को अपनी काव्य प्रतिभा से प्रभावित किया है। भारत मे तो वह "कविकुल-गुरू" माना ही जाता है। उसका महत्व और बातो के अतिरिक्त तो इसी से प्रगट है कि उसके "मेघदूत" के अनेक अनुकरण हुए और अनेक पश्चात्कालीन कवियो ने उसके नाम से कविता लिखी। अनेक काव्य-कृतियाँ और ग्रन्थ इसी से कालिदास के नाम से सबवित है यद्यपि वे उसकी रचनाएँ है नही। काव्य और नाटक दोनो क्षेत्रो में वह महाकवि औरो से गुणत अग्रणी है। काव्यशक्ति की वह चरम परिणति है। "क्लासिकल" काव्य का वह चरम उत्कर्ष प्रकाशित करता है। आदि-कवि वाल्मीकि ने काव्य का प्रारम्भ किया था, महाकवि कालिदास ने उसे पराकाष्ठा दी। वह वाल्मीकि और अश्वघोष दोनो से प्रभावित था। एकाध दिशा मे उसने दोनो का अनुकरण भी किया परन्तु उन दोनो से वह कितना भिन्न था।

महाकवि कालिदास की सात रचनाएँ आज उपलब्ध हैं, चार काव्य—'रघवश' 'कुमारसम्भव,' 'मेघदूत' और 'ऋतुसहार'—और तीन नाटक—'अभिज्ञानशाकुन्तल' 'विक्रमोर्वशी' और 'मालविकाग्निमित्र'। उसकी एक और कृति "कौन्तलेश्वरदौत्य" का भी साहित्य मे उल्लेख मिलता है परन्तु वह रचना उपलब्ध नही। रघुवश प्रबन्ध काव्य का सुन्दरतम आदर्श है। महाकाव्यो में बेजोड। उसके सैकड़ो सौन्दर्यो का वर्णन यहाँ असम्भव है। वाल्मीकि की कथा और पुराणो के सूर्यवश का इतना अद्भुत और समन्वित रूप रघुवश

मे अभिव्यक्त हुआ है कि काव्य गुणेतर कला चातुरी मे भी वह अप्रतिम है । रघुवश की कथा विशेषत रघु, राम और अग्निवर्ण के चतुर्दिक निर्मित हुई । इनमें से पहला शक्ति और साम्राज्य का परिचायक है, दूसरा कर्तव्यशीलता का प्रतीक, तीसरा अनुपम कामुक । रघुवश उन्नीस सर्गो मे रचा गया है । "कुमारसम्भव" आठ सर्गो मे सम्भवत अपूर्ण काव्य है । इसमे तारकासुर के वध के लिए देवताओ की प्रार्थना पर "कुमार" (स्कन्द) की उत्पत्ति के लिए शिव द्वारा पार्वती का पत्नी के रूप मे पाणिग्रहण वर्णित है । स्कन्द के जन्म के पूर्व ही काव्य समाप्त हो जाता है । इसमें पार्वती का शिव के लिए तप जिस साधना से वर्णन किया गया है उसी कला-नैपुण्य से शिव पर काम का आक्रमण भी अभिव्यजित है, और उसी प्रतिभा-प्रगल्भता द्वारा आठवे सर्ग का शिवविलास भी । "मेघदूत" लिरिक काव्य मे ससार का सबसे अभिराम नमूना है। अभिशप्त विरही यक्ष अपनी प्रेयसी से वर्ष भर के लिए दूर है । चुपचाप दीर्घकाल तक वह विरहवेदना का सहन करता है, परन्तु जब आषाढ के आरम्भ मे मेघ घुमडने लगते है तब उसका हृदय भी असह्य द्रवित हो जाता है और वह मदिर शब्दो मे दूर की प्रेयसी को अपना सन्देश मेघ द्वारा भेजता है । पूर्वमेघ मे बादल के मार्गों का उसने वर्णन किया है, उत्तरमेघ मे प्रियानिकेत अलका और प्रेयसी यक्षिणी का । करुण मन्दाक्रान्ता मे मधुर गति से वेदना जैसे रूपायित होकर चल पडती है । मेघदूत ससार के लिरिक काव्यो मे बेजोड है । सैफो की रचनाएँ उसके सामने सर्वथा मलिन पड जाती है। मेघदूत के सैकडो अनुकरण हुए परन्तु मूल की सफलता का आँचल भी वे न छू सके । कालिदास का "ऋतुसहार" भारत की षड्ऋतुओ का मनोहर वर्णन करता है और यद्यपि उसे उस अप्रतिम कवि के 'मेघदूत' आदि की श्रेणी मे नही रखा जा सकता, उसकी अपनी सुन्दरता भी कुछ कम नही ।

कालिदास का नाटक "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाट्य क्षेत्र मे एक चुनौती है । इसके वर्णन की सुकुमारता, वस्तु की गठन, शैली की मनोरमता, कला का चातुर्य सभी अनुपम है । जो सफलता इस नाटक को विदेशी आलोचको के मूल्याकन मे मिली, वह सम्भवत किसी विदेशी साहित्य को कभी यूरोप मे नही मिली । ग्रीक नाटको की यूरोप मे धूम के बावजूद भी समीक्षको ने स्वीकार किया कि शाकुन्तल वस्तु की एकता भावावेगो की अभिव्यक्ति और शैली के अभिराम निर्वाह मे उनसे कही आगे है । उस नाटक का ऐतिह्य कुरुकुल के दुष्यन्त और उसकी प्रेयसी आश्रमवासिनी शकुन्तला से सबधित है । कथा महाभारत की है यद्यपि कालिदास ने उसे काफी बदल दिया है । पिता की अनुपस्थिति मे शकुन्तला सखियो के साथ आश्रम मे अकेली है । दुष्यन्त आखेट के लिए जाता है और शकुन्तला के रूप-प्रणय का स्वय शिकार हो जाता है। गन्धर्व सबध के बाद वह हस्तिनापुर लौट जाता है और शकुन्तला के राजधानी आने पर शापवश उसे पहचान नही पाता । शकुन्तला कश्यप के आश्रम में चली जाती है और अन्त मे पुत्र सर्वदमन के साधन से दोनो

मिलते है। दु ख दोनो की अनीत को जैसे धो डालता है और पति-पत्नी पुत्र के साथ सुखी होते है। शाकुतल सर्वांगसुन्दर कृति है। "विक्रमोर्वशी" की कथा ऋग्वेद के पुरूरवा-उर्वशी के सवाद से ली गई है। उर्वशी को देख राजा प्रेम मे पागल हो उठता है। देवकार्य के वाद इन्द्र की अनुमति से उर्वशी उसे कुछ काल के लिए मिलती है, पर केवल कुछ ही काल के लिए। प्रणय-सुख-जनित अल्प-कालिक मदनिद्रा तव सहसा टूट जाती है जब उर्वशी के पार्थिव निवास की अवधि पूरी हो जाती है। पुरूरवा का विलाप दिगन्त को व्याप्त कर देता है, चराचर को द्रवित, करुणा से ओतप्रोत। इस नाटक का भी अपना असाधारण स्थान है यद्यपि वह किसी भी दृष्टि से शाकुन्तल के समकक्ष नही रखा जा सकता। "मालविकाग्निमित्र" कालिदास का तीसरा नाटक है, सम्भवत यह आरम्भ काल मे रचा गया। वह पुष्यामित्र शुगकालीन कथा का उद्‌घाटन करता है। पुष्यमित्र शुग मगध का ब्राह्मण सम्राट् था। जिसने १८५ ई पू के लगभग वृहद्रथ को मार मौर्यवश का अन्त किया और जो महाऋषि पतजलि का समकालीन था। "मालविकाग्निमित्र" मे उसी पुष्यमित्र के पुत्र और विदिशास्थित प्रान्तीय शासक अग्निमित्र तथा उसकी प्रेयसी मालविका का प्रणय निर्दशित है। उसमे गजव की शान्ति और रसो का परिपाक हुआ है। सगीत के सिद्धातो का भी उसमे अच्छा निरूपण है। शुगकालीन इतिहास पर इस नाटक द्वारा वडा प्रकाश पडा है। इसी मे पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र की राजसूय के अवसर पर अश्वरक्षा के क्रम मे उन यवनो (ग्रीको) का उल्लेख है जिन्हे उस शुग युवराज ने सीमा के सिन्धुतट पर परास्त किया था।

कालिदास की भारती अपनी कला और रूप मे अप्रतिम है। वह भारती अनेक अलकारो से मण्डित है अनेक छन्दो द्वारा निरूपित। वैदर्भी वृत्ति का उपयोग जैसा उस महाकवि ने किया है वैसा अन्यत्र कही दृष्टिगोचर नही होता। उस कविकुलगुरु के वैयक्तिक जीवन के सबध मे हमारा ज्ञान नही के वरावर है।

इसी काल में अथवा कुछ पहले चौथी सदी मे कुछ वौद्धकाव्यो का भी प्रणयन हुआ। "अवदानशतक", "दिव्यावदान" और आर्यसूर की "जातकमाला" सम्भवत उस काल की रचनाएँ है। पर उनका सम्यक् उल्लेख यहाँ प्रासगिक नही। वौद्ध मातृचेट की कृतियो का उल्लेख वौद्ध ग्रन्थो में मिलता है। मातृगुप्त को भी अनुवृत्त असाधारण कवि माना जाता है जिसकी रचनाओ से प्रसन्न होकर विक्रमादित्य ने उसे कश्मीर का राज्य दे दिया था। राजतरगिणीकार कल्हण का यह उल्लेख सर्वथा स्वीकार करना कठिन है। कश्मीर कभी किसी मालव विक्रमादित्य के अधिकार में नही रहा। इससे इस वक्तव्य की सत्यता में सदेह होना स्वाभाविक है। फिर भी मातृगुप्त कवि और राजा दोनो हो सकता है। वह नाटक और नृत्यविषयक रचनाओ का कर्त्ता माना जाता है। वह भी सम्भवत चौथी सदी ईस्वी का ही था। कुछ विद्वानो का मत है कि कल्हण द्वारा उल्लिखित "महाकाव्य हयग्रीववध" का रचयिता भ्रातृमेठ इसी मातृगुप्त का दरवारी कवि अथवा कम से कम सरक्षित मित्र

था। मेण्ठ उल्लेख अन्यत्र भी हुआ है। राजशेखर ने अपने "वालरामायण" के आरम्भ मे उसे रामकथा सम्वन्धी कोई काव्य रचने का श्रेय दिया है। कल्हण ने मातृगुप्त और मेण्ठ के अतिरिक्त इनसे पूर्व के राजा तुजिन प्रथम द्वारा सरक्षित नाटककार चन्द्रक का भी उल्लेख किया है। परन्तु उसका ज्ञान हमे नही के वरावर है। हाँ यदि "पद्यचूडामणि' 'के रचयिता बुद्धघोप प्रसिद्ध दार्शनिक बद्धघोप ही हो तो उसका समय भी पाँचवी सदी ही होना चाहिए।

यह चौथी-पाँचवी सदी का गुप्तकाल इतिहास में राजनीति, कला और साहित्य की दृष्टि से स्वर्णयुग माना जाता है। वहुत कुछ पेरिक्लियन, आगस्तन और एलिजावेथन युगो की भाँति। यह सर्वथा सही है। उस काल के उन साहित्यिक अग्रणियो का ऊपर उल्लेख किया जा चुका है जिनमे प्रधान कालिदास थे। समुद्रगुप्त तो कवि था ही। एक मत के अनुसार तो चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य भी कवि था। "सूक्ति-मुक्तावली"में साहसाक को "गन्धमादन" नामक काव्य कारचयिता माना गया है और साहसाक को कुछ लोग चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ही मानते हैं। गन्धमादन आज उपलव्ध नही। प्राचीन अनुवृतो और अनुश्रुतियो के अनुसार "(चन्द्रगुप्त) विक्रमादित्य" बडा कवि-नाटककार-पण्डित सरक्षक था। उसके दरवार मे "नवरत्न" थे। इन नवरत्नो में कौन कौन से ऐतिहासिक व्यक्ति थे, यह कहना आज कठिन है। परन्तु उनमें से अनेक उसके समकालीन ज्ञात होते हैं। कालिदास के उसके समसामयिक होने मे तो कोई सन्देह होना ही नही चाहिए, प्रसिद्ध वैद्य धन्वन्तरि भी यदि तभी हुआ हो तो कुछ आश्चर्य नही। प्रसिद्ध ज्योतिषी वराहमिहिर (५०५-८७ ई)कुछ वाद हुआ और विख्यात गणितज्ञ आर्यभट (जन्म ४७६ ई) भी कुछ ही वाद अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने लगा था। गणितज्ञ व्रह्मगुप्त निश्चय बाद का है, क्योकि उसका जन्म ५९८ मे हुआ, यद्यपि वह भी गुप्तपरिधि के अन्तर्गत ही माना जाता है। "अमरकोश" का रचयिता अमरसिह सम्भवत चन्द्रगुप्त का समकालीन ही था। उसी गुप्तकालीन परिधि में अनेक पुराणो की रचना हुई और "मनुस्मृति"का अन्तिम सस्करण हुआ तथा "याज्ञवल्क्यस्मृति" रची गई। परन्तु ललित काव्य न होने के कारण इन कृतियो का यहाँ उल्लेख अप्रासगिक है।

गुप्तकालीन कवियो में कालिदास परवर्ती कवि विशाखदत्त का उल्लेख यहाँ अनिवार्य है। वह सम्भवत गुप्तो का कोई सामन्त था। उसकी कृतियाँ जानी हुई है। एक तो प्रसिद्ध नाटक "मुद्राराक्षस" ही है जिसमें चाणक्य की कूटनीति का उद्घाटन हुआ है। नाटक चन्द्रगप्त मौर्य और चाणक्य के सम्मिलित प्रयास द्वारा नदवश के नाश के बाद आरम्भ होता है। इसमे नष्ट नन्दवश के आमात्य राक्षस और चन्द्रगुप्त के मन्त्री परमकूटनीति चाणक्य के परस्पर कूटसघर्ष की कथा है जिसमे चाणक्य विजयी होता है। राजनीति "प्लाट" के रूप मे ससार का कोई नाटक इतना महत्त्वपूर्ण नही

जितना "मुद्राराक्षस"। इसी विषय पर विशाखदत्त द्वारा रचित एक दूसरा नाटक "प्रतिज्ञा-चाणक्य" भी गिना जाता है। कुछ साल हुए फ्रेंच पण्डित सिल्वॉलेवी ने विशाखदत्त के एक तीसरे नाटक "देवी चन्द्रगुप्तम्" का हवाला दिया था। "जूर्नाल अशियातिक" मे उस विद्वान् ने "नाट्यदर्पण" मे उद्धृत इस नाटक के कुछ अश भी प्रकाशित किए। इस नाटक अथवा इसके विषय का उल्लेख अनेक स्थलो मे अनेक व्यक्तियो द्वारा स्वतत्र रूप से हुआ है जिससे उसकेअस्ति तत्व में तो किसी प्रकार का सन्देह नही किया जा सकता। परन्तु नाटक समूचे रूप मे उपलब्ध नही है। उसकी कथा इस प्रकार है। समुद्रगुप्त के बाद उसके बडे बेटे रामगुप्त को साम्राज्य मिला। परन्तु वह दुर्बल था। उसकी दुर्बलता का लाभ उठाकर शकराज ने उस पर आक्रमण किया और सन्धि की शर्त में गुप्त सम्राट् की रानी ध्रुवस्वामिनी को भी माँगा जिसे देने को उसका पति रामगुप्त राजी हो गया। ध्रुवस्वामिनी के लाज की रक्षा रामगुप्त के अनुज ने ध्रुवदेवी के वेश में शकराज को मार कर की। फिर उसने ध्रुवदेवी से विवाह किया और गुप्त साम्राज्य के स्वामी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस ध्रुवदेवी का पता गुप्त अभिलेखो से भी चलता है। उसी के पुत्र कुमारगुप्त और दामोदरगुप्त थे। नाटक की सत्यता सिद्ध है। प्रगट है कि विशाखदत्त का ऐतिहासिक ज्ञान अत्यन्त प्रौढ था और उसका ऐतिहासिक निरूपण सर्वथा सफल। "मुद्राराक्षस" से चन्द्रगुप्त मौर्य के इतिहास पर प्रभूत प्रकाश पडा है और "देवीचन्द्रगुप्तम्" ने तो समुद्रगुप्त द्वितीय और विक्रमादित्य के बीच एक रामगुप्त राजा ही ढ़ढ निकाला है। कहते है कि विशाखदत्त ने "अभिसारिकावचित" नामका एक उदयनपरक प्रणयकाव्य भी लिखा था पर वह प्राप्त नही है।

इसी गुप्तकाल की कृति "कौमुदीमहोत्सव" मानी जाती है जिसकी रचयित्री एक नारी थी। इससे भी गुप्तकालीन राजनीति पर कुछ प्रकाश पडा है। काशीप्रसाद जायसवाल ने इसके चण्डसेन को गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम माना है। उसमे अभिभावक चण्डसेन द्वारा राजपुत्र से पाटलिपुत्र का राज्य हडप लेने की बात लिखी है। । छठी सदी ईस्वी मे सिहल के राजा (जिसे कालिदास का मित्र भी कहा जाता है) कुमारदास ने अपना "जानकीहरण" लिखा। "जानकीहरण" पर कालिदास का गहरा प्रभाव स्पष्ट है।

"मृच्छकटिक" नाटक (प्रकरण) के रचयिता शूद्रक का समय निश्चय करना इस समय असम्भव-सा है। उसके नाम के साथ अनेक अनुश्रुतियां, किम्वदन्तियां और ख्याते जुड गई है, जिनसे इतिहास को पृथक् करना आसान नही। फिर भी उसको इस काल के आसपास रखना अयुक्तियुक्त न होगा। "मृच्छकटिक" नाना रसो और दृश्यो से युक्त प्रकरण है। इसमे नायक दरिद्र ब्राह्मण चारुदत्त है और ब्राह्मण ही चोर भी है जो चोरी प्राय सिद्धान्तपरक दृष्टि से करता है और जिसका यज्ञोपवीत ही सेंध लगाने के लिए आवश्यक मानसूत्र है। इस नाटक की नायिका वेश्या कन्या है। गरज की उदात्त नाटक के ठीक विपरीत

मृच्छकटिक की लीलाभूमि है। फिर उसका केन्वस वडा विस्तृत है। मजाक, जुआ, चोरी, कैद, पलायन, राज-विप्लव, न्याय की विडम्बना सभी कुछ उसमे है। उसके दस अको में जीवन के सारे दृश्य उपस्थित कर दिये गये है। सवसे वडी वात तो यह है कि जहाँ सस्कृत के नाटक प्राय सभी गम्भीर है मृच्छकटिक अकृत्रिम और विनोद वहुल वातावरण प्रस्तुत करता है। व्यग्य और विनोद उसमे प्रभूत मात्रा मे विद्यमान है। उसका प्रतिपाद्य विपय तो चारुदत्त और वसन्त सेना का प्रेम और विरह है परन्तु भारतीय साहित्य में यदि ग्रीक अर्थ मे (जो हँसाते हँसाते पेट मे वल डाल दे) कोई "कॉमेडी" है तो वह मृच्छकटिक है। इसमे स्फुट हास्य, सस्वर हास्य के लिए वडी सामग्री है और रगमच के लायक यह कृति अतीव सुन्दर भी है।

भारतीय काव्य परपरा मे "पच महाकाव्य" प्रधान माने गये है। इनमे दो तो कालिदास के ही "रघुवश", "कुमारसम्भव" है, शेप तीन है—भारवि का "किरातार्जुनीय," माघ का "शिशुपालवध" और श्रीहर्प का "नैपधीय चरित"। ६३४ के पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल वाले लेख में कालिदास के साथ ही भारवि का भी उल्लेख हुआ है। कवि दण्डिन को "अवन्तिसुन्दरी" मे महाकवि भारवि का शैव और वगी के चालुक्यकुल के प्रतिष्ठाता कुब्ज विष्णुवर्धन (६०८ ई) का मित्र लिखा है। गगराज दुर्विनीत ने भारवि के काव्य पर एक टीका लिखी थी। "किरातार्जुनीय" अठारह सर्गों में प्रस्तुत महाकाव्य है जिसका वर्णन विपय अर्जुन का शिवप्रसादन के लिए तप है। अर्जुन ने कौरवो को परास्त करने के लिए पाशुपतास्त्र के अर्थ तप किया था। भारवि का यह काव्य अपने "अर्थगौरव" के लिए विख्यात है।

माघ भी सस्कृत के पाँच प्रथितयशस् कवियो में से है। उसका "शिशुपालवध" ७०० ई के लगभग लिखा गया यद्यपि न कवि न उसकी कृति के लिए सही तिथि निर्धारित की जा सकती है। माघ के काव्य को कालिदास और भारवि दोनो के गुणो का केन्द्र कहा गया है परन्तु निस्सन्देह यह मूल्याकन अतिरजित है। माघ का काव्य असाधारण है परन्तु न तो वह कालिदास के कृतित्व को छू पाता है न भारवि के ही स्तर पर है। फिर भी उसका काव्य सुन्दर है और "शिशुपालवध" के सातवें और नवें सर्ग में तो गजब का वर्णन-सौन्दर्य है। कथा चेदिराज शिशुपाल और वासुदेवकृष्ण के वैमनस्य की है और महाभारत से ली हुई है। जैसा नाम से प्रगट है कृष्ण द्वारा उसमे चेदिराज का वध प्रदर्शित है। श्रीहर्ष के महाकाव्य "नैषधीयचरित" का उल्लेख यथास्थान करेंगे।

नवी सदी के कश्मीरराज अवतिवर्मन् के दरवार से चार कवियो—मुक्ताकण, शिवस्वामिन्, आनन्दवर्धन, और रत्नकार का सम्पर्क था। मुक्ताकण की कृतियाँ सिवा सुभाषितो में कुछ श्लोको के नष्ट हो चुकी है। शिवस्वामिन् ने अनेक रचनाएँ की। वह आशुकवि था और द्विपदी में भी वाक्यरचना कर लेता था। उसके सात महाकाव्य वताए

जाते है और अनेक नाटक, परन्तु उपलब्ध काव्य उसका एक ही है—"कप्फिणाभ्युदय" —जिसमे राजा कप्फिण के राज्य छोड बौद्ध भिक्षु हो जाने की कथा वर्णित है। रत्नकार "वागीश्वर" कहलाता था। उसने पचास सर्गों मे शैव महाकाव्य "हरविजय" लिखा जिसकी भाषा मधुर और शैली परिमार्जित है। आनन्दवर्धन प्रसिद्ध समीक्षक हो गया है, परन्तु वह स्वय अच्छा कवि भी था। सस्कृत और प्राकृत दोनो में उसने काव्यरचना की। उसका काव्य "अर्जुनचरित" आज उपलब्ध नही। उसकी रचना "देवी-शतक" चित्र-काव्य का सफल नमूना है।

नवी सदी मे अनेक महाकाव्य लिखे गये। जैनो ने भी रामायणादि की भाँति अपने तीर्थंकरो के चरित काव्यबद्ध किये। जिनसेन और उसके शिष्य गुणभद्र के "हरिवश" और "आदिपुराण" इसी प्रकार के काव्य है। इसी प्रकार "जटासिहनन्दी" ने "वरागचरित" वादिराज और माणिक्यसूरि ने अपने-अपने "यशोधरचरित", हरिश्चन्द्र ने "धर्मशर्मा-भ्युदय" और अमरचन्द ने "पद्मानन्दकाव्य" लिखा।

नाट्यप्रणयन भी साथ ही चलता रहा। सातवी सदी के आरम्भ का हर्ष वाणभट्ट का संरक्षक था। हर्ष (६०६-४८) ने स्वय "नागानन्द" नाटक और "प्रियदर्शिका" तथा "रत्नावली" नाटिकाएँ रची। नागानन्द मे जीमूतवाहन का बौद्ध चरित प्रदर्शित है। रत्ना-वली बडी प्रौढ कृति मानी जाती है। हर्ष के दरबार मे मातगदिवाकर, द्रोण, मयूर आदि अनेक कवि रहते थे परन्तु इन सब मे प्रधान सस्कृत का मुख्य शैलीकार और प्रसिद्ध "हर्षचरित" तथा "कादम्बरी" का प्रणेता वाणभट्ट था। वह लम्बे समस्पदीय वाक्य लिखता था। "कादम्बरी" तो एक मधुर "रोमान्स" है। उसका "चण्डीशतक" काफी विख्यात है। उसने महाभारत के आधार पर मुकुटताडित" नामक एक नाटक भी लिखा था जो अब प्राप्य नही है परन्तु जिसका उल्लेख नाट्यालकार की पुस्तको में हुआ है। "सूर्यशतक" का रचयिता कवि मयूर वाण का श्वशुर कहा जाता है।

हर्षवर्धन के पश्चात् कनौज की राजनीति पर कुछ काल के लिए पटाक्षेप हो गया परन्तु प्राय सौ वर्ष के बाद जो वहाँ पर्दा उठता है तो अनेक साहित्यकार वहाँ प्रविष्ट दीखते है। आठवी सदी के आरम्भ मे वहाँ का राजा यशोवर्मन (लग ७२५-७५०) हुआ जिसे कश्मीर राज ललितादित्य मुक्तापीडे ने परास्त किया। स्वय यशोवर्मन ने "रामाभ्युदय" नाम का एक नाटक लिखा जिसके एकाध अश ही आज उपलब्ध है। परन्तु कनौज राज के दरबार के कवियो मे महान् और सारे भारतीय नाट्यक्षेत्र मे अग्रणी भवभूति था। भवभूति के तीन नाटक "मालतीमाधव" "उत्तररामचरित" और "महावीर-चरित" सस्कृत साहित्य की अक्षय निधि है। महावीरचरित अपूर्ण है। उत्तररामचरित मे राम के सीता-परित्याग की कथा है और मालतीमाधव मे मालती और माधव के प्रणय का दोनो मे करूणारस का बाहुल्य है। करूणारस के प्रदर्शन मे भवभूति बेजोड है। मालती

सुन्दरी" नामक गद्य-काव्य भी शुरू किया, परन्तु वह अपूर्ण ही रह गया। दण्डी की शैली अनेक लोगो को वाण की शैली से सुन्दर लगती है। उसमे पद पद पर वाण की भाँति श्लेप नही है और भापा मे ओज और प्रवाह अमित है।

वैदिक काल से ही गद्य-पद्य की एक मिश्रित शैली चली आती थी जिसका कालान्तर मे "चम्पू" नाम से विकास हुआ। त्रिविक्रम (लग० ९१५) के "नलचम्पू" अथवा "दमयन्ती-कथा" इसी चम्पू शैली मे लिखा है। उस साहित्यकार ने सभवत एक "मदालसाचम्पू" भी लिखा था जो अव उपलव्ध नही है। जैन साहित्यकार सोमदेव ने दसवी सदी मे अपना प्रसिद्ध "यशस्तिलकचम्पू" रचा। ग्रन्थ अन्त मे आचार और नीति परक हो जाता है। उसी प्रकार हरिचन्द्र ने भी "जीवन्धरचम्पू" लिखा। परन्तु सवसे सुन्दर चम्पू प्रसिद्ध राजा भोज (ग्यारहवी सदी के आरम्भ मे) ने लिखा जो "रामायण चम्पू" के नाम से आज भी वडे चाव से पढा जाता है। राजा भोज द्वारा प्रणीत ग्रन्थो की एक खासी तालिका है जिसमे सभी प्रकार और दिशा के ग्रन्थ गिनाये जाते हैं। फिर भी यह सच है कि भोज केवल साहित्यिको का सरक्षक ही नही था, स्वय साहित्यकार और कवि भी था और अपनी अटूट लडाइयो के वावजूद भी काव्य विनोद करता रहता था। उसने धारा में सस्कृत का एक कालेज खोला था। वस्तुत उस काल एशिया मे अन्यत्र भी शोध सवधी कालेज खोले जा रहे थे जिनमे वगदाद का तो वडा प्रसिद्ध हुआ। भोज का ही समकालीन महमूद गजनी था जिसके दरवार मे ससार के सवसे वडे मेधावी थे, उदाहरणत अलउतवी, अल-वेरुनी, फरिश्ता। भोज से कुछ पूर्व कोकण के सोढल थे चम्पू परपरा में ही अपनी "उदयसुन्दरी-कथा" लिखी थी। नवी दसवी सदी में ऐतिहासिक अथवा जीवनचरित काव्यो का आरम्भ होता है। यशोवर्मन और भवभूति के समकालीन वाक्यतिराज ने प्राकृत में "गौडवहो" लिखा। समीक्षक शकक ने किसी काश्मीरी युद्ध पर "भुवनाभ्युदय" लिखा जो अप्राप्य है। "नवसाहसाचरित" पद्मगुप्त (परिमल) का राजा भोज के पिता सिन्धुराज नव-साहसाक अथवा सिन्धुल पर लिखा पहला वास्तविक ऐतिहासिक वीरकाव्य है। यह लगभग १००० ई० के लिखा गया। कल्यान के चालुक्य विक्रमादित्य पर कश्मीरी कवि बिल्हण ने अपना "विक्रमाकदेवचरित" (११वी के लगभग) लिखा। उसने अपने नाटक "कर्णसुन्दरी" मे भी उसने ऐतिहासिक सामग्री का ही उपयोग किया। प्रणय प्रसग की कविताओ के लिये यह कवि प्रभूत विख्यात है। दूसरा कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र (११वी सदी) ने छोटे वडे अनेको काव्य, व्यग्य, नाटक, नीति काव्य आदि लिखे। उसकी रचनाओ की सख्या पचास से भी ऊपर है। उसकी 'राजावली' का उपयोग कल्हण ने भी अपनी "राजतरगिणी" की सामग्री के अर्थ किया था। कल्हण सस्कृत ऐतिहासिक काव्य का सबसे महान् प्रणेता है। उसकी "राजतरगिणी" कश्मीर के इतिहास पर अत्यन्त महत्व का ग्रन्थ है जिसके लिए सामग्री उसने क्षेमेन्द्र के अतिरिक्त

अभिलेखो और राजकीय रेकार्डों से भी लिया था। जोनराज ने उसी इतिहास के क्रम मे अपनी "द्वितीय राजतरगिणी" लिखी। उसमें श्रीवरप्राज्य और शुकक्रामीयोग था। कल्हण की राजतरगिणी बारहवी सदी के मध्य लिखी गई थी, जोनराज की मुस्लिम काल मे समाप्त हुई। बारहवी सदी मे ही पथ्वीराजविजय लिखा गया। तजौर के विरूपाक्ष ने प्राय तभी चोलचम्पू लिखा जिसका आधार चोल शासन था।

रूपको—उपरूपको का आरम्भ ड्रामा साहित्य मे चन्देलराज कीर्तिवर्मन् (११वी सदी) के आश्रित कवि कृष्णमिश्र ने किया। इस वर्ग के नाट्क-साहित्य की सुन्दरतम रचना जयदेव का "गीत गोविन्द" है। जयदेव उडीसा का था। परन्तु वगाल के सेन वशीय अन्तिम नरेश लक्ष्मण सेन (११७५-१२००) का राजकवि था। गीतगोविन्द राधा और कृष्ण के प्रणय, विरह और सयोग का काव्य है। सस्कृत साहित्य मे इतना मधुर और सगीत परक काव्य और दूसरा नही। जयदेव ने "प्रसन्नराघव" नाम का एक नाटक और अलकार ग्रन्थ भी लिखा। उसी दरबार में कवि धोयिक भी था जिसने मेघदूत के अनुकरण मे पवनदूत लिखा। स्वय लक्ष्मण सेन ने पिता के प्रारम्भ किए "अद्भुतसागर" को समाप्त किया।

कुछ काव्य व्याकरण को लेकर श्लेष में लिखे गए। भट्टि ने अपना "भट्टिकाव्य" (रावणवध) इसी शैली मे लिखा। इस प्रकार के काव्यो को "दृयाश्रय" कहते थे। भूमक ने भी अपना व्याकरण ग्रन्थ "रावणार्जुनीय" इसी पद्धति से लिखा जिसमे रावण और कार्तवीर्यार्जुन (सहस्रबाहु) का युद्ध भी साथ ही साथ निरूपित हुआ। उसी परपरा में राष्ट्रकूटराज कृष्ण तृतीय (लग ९५०) के राजकवि ने अपने सरक्षक का चरित लिखते हुए अपना व्याकरण ग्रन्थ "कविरहस्य" रचा। इसी प्रकार हेमचन्द्र (१०८८-११७२) ने अपने "द्वयाश्रयकाव्य" को सस्कृत और प्राकृत व्याकरण का वाहक बनाया। उसका दूसरा नाम "कुमारपाल प्रतिवोध" था। इस प्रकार का काव्य व्याकरण, इतिहास और काव्य तीनो का वाहन होता था। उदाहरण तो ऐसे काव्यो के भी है जो अपना विषय प्रतिपादित करते हुए रामायण महाभारत की कथाएँ भी साथ कहते जाये। कविराज का "राघवपाण्डवीय" इसी प्रकार का एक काव्य है। ग्यारहवी सदी के अन्त मे सन्ध्याकरनन्दी ने इस प्रकार का अपना काव्य "रामचरित" लिखा जिसमे रामकथा के साथ ही वगाल के नृपति रामपाल का जीवन चरित भी अकित है। लगभग ३२ काव्य ऐसे है जिनमे तीन अर्थ की कथाएँ एक साथ कही गई है। जैन पण्डित हेमचन्द्र के लिए तो अनुश्रुति है कि उसने सात-सात कहानियो का एक ही काव्य (सप्तसन्धान) लिखा। परन्तु कहना न होगा कि इस प्रकार का काव्याकन काव्य को गुणहीन कर देता है। इस शैली को चित्रकाव्य कहते है।

एक प्रकार के काव्य जो सौ श्लोको मे सम्पन्न होते थे "शतक" कहलाते थे। ऊपर मयूर के "सूर्यशतक" और वाण के चण्डीशतक का उल्लेख किया जा चुका है। सातवी सदी के आसपास के भर्तृहरि ने तीन शतक लिखे—"शृगारशतक" वैराग्यशतक" और

"नीतिशतक"। कश्मीरी कवि अमरुक ने "अमरूशतक" लिखा जिसकी एक-एक पक्ति प्रणय का अभिराम वर्णन करती है। सातवी सदी से ही, सम्भवत उसने अपना शतक लिखा वह लोकप्रिय हो गया और उसके श्लोक निरन्तर उद्धृत किए जाते रहे हैं। विल्हण ने अपनी "चौरपचाशिका" में पचास पक्तियो मे पचास अभिराम अनुभूतियो का वर्णन किया है। जयदेवकालीन गोवर्धन की "आर्यासप्तशती" मे ७०० श्लोक हैं। इसी प्रकार भर्तृहरि के अतिरिक्त घटकर्पर, वररुचि और वेतालभट्ट के क्रमश नीतिसार "नीतिरत्न, और नीतिप्रदीप" है। इस प्रकार के अनेक अन्योपदेश काव्य कवियो ने लिखे। वल्लट (कश्मीरी) (नवी सदी) इनमे मुख्य था। क्षेमेन्द्र की भी अनेक इस प्रकार की रचनाएँ हैं। साथ ही उसने व्यग्य भी काफी लिखा। "कलाविलास" में उसने वैद्यो, सगीतज्ञो, वारागनाओ का खूब मजाक उडाया है। उसके "देशोपदेश" और नर्ममाला" मे कायस्थो, गणको, लेखको आदि पर प्रशस्त व्यग्य है। उसकी "समयमातृका" में वारागनाओ को अपना पेशा सम्हालने की अनुभव जन्य सलाह दी गई है। इसका आधार अधिकतर "कुट्टनिमत" है जिसे कश्मीरनरेश जयापीड के मत्री दामोदर गुप्त ने रचा था। इसी प्रकार जल्हण ने अपने "मुग्धोपदेश" मे वारागनाओ और उनके कृपापात्रो पर उत्कट व्यग्य किए। सत्रहवी सदी के दीक्षित ने "कलिविडम्बन" लिखकर वैद्यो, अनाडी शिक्षको, ज्योतिषियो आदि का मजाक उडाया। उसका "सभारन्जन" भी इसी प्रकार का काव्य है। तजोर के कुट्टि कवि (वाछेश्वर यन्वन्) ने "महिषशतक" में तजोर के ह्रास शील मराठा दरबार पर व्यग्य किया। इस प्रकार की कविताएँ "चाटू" कहलाती हैं। प्रशस्तिवाचक होती हैं। चाटुकारिता से भरी ये अधिकतर प्रेमियो और सरक्षक राजाओ तथा श्रीमानो के प्रति कही गई है। सुभाषितो का भी सस्कृत मे बाहुल्य है। ये कविकृतियो के सग्रह है। अनेक कवियो की सूक्तियाँ अनेक प्रकार से इनमे सगृहीत है। इनमें प्राचीनतम और विषयानुसार सगृहीत सुभाषित "कवीन्द्रवचनसमुच्चय" है। इसमें विषयो के कवियो के नाम भी दिए हुए हैं। इसके अतिरिक्त कश्मीरी वल्लभदेव की "सुभाषितावली" बगाली श्रीधरदास (१२०५) की "सदुक्ति कर्णामृत" वैद्यभानु पण्डित रचित (देवगिरि के यादवराज कृष्ण के महावत कश्मीरी जल्हण कृत "सूक्तिमुक्तावली"—१२५७ शार्गंधर पद्धति (१४वी सदी के जिसमें कालिगराय सूर्य का सूक्ति रत्नहार है) आदि बडी उपादेय हैं। सैकडो काव्य सग्रह इस प्रकार के मुस्लिम-शासन काल मे भी बने जिनमें प्रधान "सुभाषितरत्न-भाण्डागार" है। इन्ही सुभाषितो से कवियो के अतिरिक्त ४० कवियित्रियो का पता चला है। इनमे सबसे महत्व की पुलकेशिन द्वितीय की पुत्रवधू और चन्द्रादित्य की रानी विज्जिका (विजयाका—७वी सदी) थी।

कुछ नारी कवियो ने महाकाव्य और चम्पू आदि भी स्वतन्त्र रूप से लिखे हैं। कम्पराय (१४वी सदी) की रानी ने "मदुरा विजय" में अपने पति की विजयो का बखान

किया। तिरूमलाम्बा ने राजा अच्युतराय (१६ वी सदी) के वादम्बिका के साथ विवाह पर एक चम्पू लिखा। रामभद्राम्बा ने अपने पति तन्जोर के राजा रघुनाथ (१७ वी सदी) के जीवन पर एक महाकाव्य लिखा। इसी प्रकार तन्जोर दरबार की मधुरवाणी नाम्नी कवियित्री ने रामायण नामक एक काव्य लिखा।

स्तोत्रो (भक्तिकाव्यो) का भडार भी सस्कृत में बडा है। अनेक भक्त कवियो ने अपने इष्टदेव की प्रशसा और प्रार्थना में स्तोत्र लिखे। इनमें अनेक तो अत्यन्त हृदयग्राही हैं। उनकी परपरा तो बहुत प्राचीन है, वैदिक मत्रो आदि की और निकटतम भगवद्गीना के ग्यारहवे अध्याय की है। ये स्तुतियाँ अधिकतर शिव, शक्ति, विष्णु, सूर्य आदि की अर्चना में गाई गई है। प्राचीनता में बौद्ध मातृचेट का "शतपचाशतिक" अधिक प्रसिद्ध है। मयूर ने "सूर्यशतक" और बाण ने "चण्डीशतक' लिखा। पुष्पदन्त का "शिवमहिम्नस्तव" दण्डी, हलायुध, बिल्हण, मल्हण, और मलयराज की स्तुतियाँ एकत्र "शिवपचाष्टवी" भट्टनारायण की "स्तवाचिन्तामणि" उत्पलदेव (१० वी सदी) का "शिवस्तोत्रावली" कुलशेखर की "मुकुन्दमाला", यामुनाचार्य का "स्तोत्ररत्न" श्री वत्साक की "पचष्टवी" सौन्दर्यलहरी "देवी-पचष्टवी" आदि अनेक स्तोत्र हैं जि नकी शैली बडी मधुर और गेय है। कृष्ण के ऊपर भी प्रभूत स्तोत्र साहित्य रचा गया इनमें लीला शुक विल्वमगल (दसवी-ग्यारहवी सदी) का "कृष्णकर्णामृत" तो वालकृष्ण पर अत्यन्त मधुर रचना है। कुछ आश्चर्य नही यदि सूरदास की कृतियो पर इसका प्रभाव पडा हो।

कथा साहित्य का आरम्भ सम्भवत भारत में ही हुआ। वेदो में भी अनेक आख्यायिकाएँ है। फिर पुराणो की कितनी ही कथाएँ तो ऋग्वेद से भी प्राचीन मानी जाती है। महाभारत मे भी सैकडो कथाएँ सग्रहीत है। "पचतन्त्र" का अनुवाद अरबी मे सदियो पहले हुआ। "तन्त्राख्यायिका" और "हितोपदेश" भी कहानियो के आकर है। गुणढ्य की "वृहत्कथा" पैशाची में ईस्वी दूसरी सदी में ही लिखी जा चुकी थी। इसका मूल तो नष्ट हो गया परन्तु सातवी सदी के गगराज दुर्विनीत ने इसका सस्कृत सस्करण प्रस्तुत कर दिया। कश्मीर के राजा अनन्त की रानी सूर्यमती के मनोरजन के लिए सोमदेव द्वारा प्रस्तुत (१०६३-८१) "कथासरित्सागर" कहानियो की खान है। अन्य कथासग्रह है—"शुकसप्तति", सिंहासनद्वत्रिंशिका, शिवदासकृत "कथार्णव" राजशेखर का "प्रवन्धकेश" मेरुतुग की "प्रवन्धचिन्तामणि" विद्यापति की "पुरुषपरीक्षा" बौद्धो की "जातकमाला" आदि।

पिछले काल में भी काफी काव्यरचना हुई। सोलहवी सदी के शाहजहाँकालीन पडितराज जगन्नाथ अपने ज्ञान और काव्य शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। इधर की सदियों में उनका सा कवि और रसमर्मज्ञ दूसरा नहीं हुआ। उनकी "गगालहरी" माधुर्य और शब्दलालित्य मे सस्कृत साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखती है। "भामिनीविलास" भी बडा मधुरकाव्य है।

इस काल अथवा कुछ पूर्व से ही फारसी कृतियो के सस्कृत अनुवाद शुरू हो गए थे। पन्द्रहवी सदी मे ही श्रीवर ने युसुफ और जुलेखा की कहानी "कथा कोयुक" मे लिख डाली थी। "अकबरनामा"का सस्कृत रूपान्तर भी "अकबरनाम" नाम से प्रस्तुत हुआ। फारसी से एक और कहानीग्रथ का अनुवाद "सर्वदेशवृत्तान्त सग्रह" है। अब्दुल रहमान ने "अपभ्रशदूतकाव्य" और "सदेशवाहक" लिखा। अकबरशाह ने "श्रगार-मजरी" रचा और लक्ष्मीपति ने सैयद-भाइयो मे से एक पर "अबदुल्ला-चरित" प्रस्तुत किया। इसी प्रकार बाइबिल के दाऊदपुत्र सुलेमान (सालोमन) पर (अनुवाद रूप में) कल्याणमल्ल ने "सुलेमच्चरित" की रचना की।

: ४ :

पाली

वस्तुत पाली (पालि) भी प्राकृत ही है, बुद्ध कालीन मगध की प्राकृत। बौद्धो का साहित्य विशेपत पालि-प्राकृत मे ही लिखा गया यद्यपि सस्कृत भी, विशेपत उत्तर काल मे, उनकी व्याख्या और चिन्तन का माध्यम बनी। साधारणत हीनयानियो का साहित्य पाली में है। और महायानियो का सस्कृत में। कुछ लोगो का मत है कि पाली गौतम बुद्ध के पितृस्थान की भापा न थी बल्कि अनेक प्राकृत भाषाओ के सम्मिश्रण से बनी थी जो पहिले बुद्ध के उपदेशो की सज्ञा बनी फिर उनके साहित्य की। आज उसका साहित्य विशेषत सिंघल, बर्मा और स्याम मे प्रचलित है।

बौद्धो के सिद्धान्त अधिकतर त्रिपिटको मे सगृहीत है। त्रिपिटक-साहित्य प्रायः समूची मात्रा में आज हमे उपलब्ध है। उसके तीन भाग है—विनय पिटक, सुत्तपिटक, और अभिधम्म पिटक। इनमें उपदेशो, गीतो, आख्यानो, सघ के विधानो और दार्शनिक तत्वचेतना का सग्रह है। इनके अश विविधकाल मे सगृहीत होते गये। उनको एकत्र करने का पहला प्रयास बुद्ध की मृत्यु के शीघ्र ही बाद राजगृह में हुआ। दूसरा १०० वर्ष बाद सघ में विधान और सिद्धान्त सम्बन्धी विवाद उपस्थित होने पर प्रस्तुत हुआ। तीसरा सग्रह अशोक द्वारा आहूत पाटलिपुत्र का तीसरा बौद्ध सगीति में हुआ। उसी काल तीसरी सगीति के प्रधान तिस्सामग्गलिपुत्त ने विरोधियो के उत्तर में अपना "कथावस्तु" रचा। कथावस्तु भी त्रिपिटको में ही प्राय मान लिया गया है और बौद्ध धार्मिक सिद्धान्तो का एक अग बन गया है।

बौद्ध धार्मिक सिद्धान्तो के अतिरिक्त अन्य साहित्य भी पाली भापा मे लिखा गया। "नेत्तिप्पकरण" और "पेटकापदेश" भाषा और शैली सम्बन्धी ग्रन्थ है। पाली का एक विशिष्ट ग्रथ "मिलिन्दपन्ह" है जिसे साकल (स्यालकोट) के ग्रीक राजा मिलिन्द (मेनान्दर) के दार्शनिक प्रश्नो के उत्तर मे उसके गुरु नागसेन ने प्रस्तुत किया। इस प्रश्नोत्तर

के परिणामस्वरूप यवनराज मेनान्दर बौद्ध हो गया। इस ग्रथ की सी साहित्यिक प्रवीणता पाली के अन्य ग्रन्थो मे नही मिलती। मेनान्दर का समय १५० ई० पू० के लगभग माना जाता है। जातक कहानियो का सग्रह पाली साहित्य मे अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी कथाएँ ५५० के लगभग है और बुद्ध के (बोधिसत्व के रूप मे) जन्म से सम्बन्ध रखती है। भारतीय सभ्यता के इतिहास मे इनका वहुत ऊँचा स्थान है। ईसा पूर्व तृतीय शती से पाँचवी शती ई० तक का भारतीय जीवन इनमे प्रतिबिम्बित है।

बौद्ध साहित्य की अनेक टीकाएँ और भाष्य पाली में ही लिखे गये। वुद्धदत्त, वुद्धघोप और धर्मपाल ने अपनी साहित्यिक चर्या द्वारा पाली साहित्य का भडार भरा। वुद्धदत्त ने अपने "विनय-विनिच्चय" में विनय पिटक को सक्षिप्त किया। वुद्धघोप ने त्रिपिटको पर अपनी अनेक टीकाओ के अतिरिक्त "विसुद्धिमग्ग" नाम का अनुपम ग्रथ लिखा। धम्म-पाल की "विमानवत्थु" और "थेर-थेरिगाथा" पर टीकाएँ वस्तुत कथाओ और आख्यानो के सग्रह है। सिहल के प्रसिद्ध धार्मिक इतिहास दीपवस और महावस भी पाली मे ही है। जो वौद्ध धर्म के इतिहास पर प्रभूत प्रकाश डालते है। इनके अतिरिक्त "चूलवस" "दाया-वस" "सासनवस" आदि भी इसी वस-साहित्य के अग है। पाली में महाकाव्य तो उपलब्ध नही परन्तु कुछ छदोवद्ध कृतियाँ फिर भी उपलव्व है। इनमे "जिनचरित" "तेलकठाहगाथा" "पजमधु" और "सद्धम्मोपायन" सस्कृत की पद्धति के अनुसार ही कच्चायन और मोग्ग-ल्लान ने भी पाली व्याकरण का निर्माण किया। "सद्दनीति" नाम का पाली व्याकरण भी उसी काल रचा गया। मोग्गल्लान ने भी पाली व्याकरण का निर्माण किया। मोग्गल्लान वैयाकरण होने के अतिरिक्त कोषकार भी थे। उनकी "अभिधान-प्पदीपिका" इस दिशा में पर्याप्त प्रसिद्ध है। "वुत्तोदय" और "छदोविचिति" मे छदशास्त्र का अध्ययन हुआ और "सुवोधालकार" मे अलकार शास्त्र का। परन्तु निस्सदेह सस्कृत अनुशीलन का अनुयायी पाली साहित्य इस क्षेत्र म मूल की तुलना में सर्वथा नगण्य है।

: ५ :

संस्कृत में वौद्ध साहित्य

सस्कृत मे प्रस्तुत वौद्धो का प्रभूत साहित्य मूल मे नष्ट हो गया है और आज उनके कुछ अनुवाद चीनी और तिव्वती भापाओ मे ही उपलव्व है। उस सस्कृत की शैली पाली और प्राकृतमिश्रित है। उसमे माधुर्य और प्रवाह है।

धार्मिक चिन्तन का पर्याप्त साहित्य सस्कृत मे निर्मित हुआ। वुद्ध को लोकोत्तर मानने वाला और उनके जीवन के चमत्कारो का उल्लेख करने वाला (विनयपिटक का) "महावस्तु" सस्कृत मे ही था। महाकाव्य के रूप मे वुद्ध का जीवन "ललितविस्तर"

मे छदोवद्ध हुआ । वस्तुत यह ग्रथ गद्य और पद्य दोनो मे प्रस्तुत है । सभवत चीनी में इसका पहला अनुवाद ३०८ ई० मे हुआ और तिब्वती मे ९वी सदी में । सूत्रो की मर्यादा महायान शाखा के बौद्धो मे बढी है । इनकी रचना भी सस्कृत में हो हुई । नैपाल में विशेप आदृत नवधारणीयो मे इस सस्कृत मे लिखी "अष्टसाहास्निका" "प्रज्ञापारमिता" "सद्धर्मपुण्डरीका" "लकावतार" सुवर्णप्रभास" की गणना है । इन सूत्रो मे "प्रज्ञापारमिता" विशेष महत्व की है । बौद्ध सस्कृति के महान कवियो मे नागार्जुन, आर्यदेव, अश्वमेघ और कुमारलव्ध (कुमारलाभ) हुए । अश्वमेघ तो सस्कृत का महाकाव्यकार हो गया है । इनमें से पहले दो महायान के शून्यवाद के प्रवर्तक थे । नागार्जुन ने उसी सिद्धान्त की व्याख्या मे "मध्यमक शास्त्र" रचा । नागार्जुन के दो और ग्रथ "युक्तिषष्टिका" और "शून्यतासप्तति" पर्याप्त प्रसिद्ध है । नागार्जुन के शिष्य आर्यदेव ने "चतु शतक" की रचना की । महायान सम्प्रदाय का दूसरा दिग्गज दार्शनिक वसुवन्ध असग था जिसने "अभिधर्मकोप" और उसके ऊपर एक सक्षिप्त भाष्य लिखा । यशोमित्र ने "अभिधर्म कोषव्याख्या" नाम की टीका रची जिसका ज्ञान-विस्तार अपूर्व है ।

दिंगनाग बौद्ध तर्क शास्त्र का प्रतिष्ठाता था । बौद्ध दर्शन मे उसकी ऊँचाई के नाम कम है । वह गुप्तकाल म हुआ, सभवत चौथी शती ईस्वी मे और "न्यायप्रवेश" तथा "प्रमाणसमुच्चय" लिखकर उसने तर्क शास्त्र की नीव डाली । दिंगनाग की साहित्यिक सक्रियता केवल बौद्ध दर्शन तक ही सीमित न थी । कुछ विद्वानो के मत से "कुन्दमाला" का भी रचयिता वही है । पडितो ने उसको कालिदास का समकालीन भयावह समीक्षक भी माना है । सातवी सदी के विचक्षण बौद्ध दार्शनिको मे महान् धर्मकीर्ति हुआ जिसके "प्रमागवार्तिक" और "न्यायविन्दु बौद्ध तर्कशास्त्र के अनुपम स्तम्भ है । इस दिशा के महापडितो मे ही "बोधिचर्यावतार" के रचयिता शान्तिदेव और तत्वसग्रह के प्रणेता शान्तरक्षित की भी गणना है ।

अश्वघोष का नाम ऊपर आ चुका है । उसने "बुद्धचरित" और "सौन्दरानन्द" नाम के काव्य लिखे । मध्यएशिया से मिले कुछ नाटकाशो से विदित होता है कि अश्वघोप नाटककार भी था । "शारिपुत्रप्रकरण" उसका एक प्रकरण-नाटक था जिसके अश मिले है ।

जातको का उल्लेख पहले किया जा चुका है । इन पाली जातको की शैली मे ही सस्कृत में "अवदान" लिखे गये । "दिव्यावदान" इसी प्रकार का बौद्ध महापुरुपो के महान् कार्यों का सग्रह है । आर्यसूर ने सस्कृत मे "जातकमाला" और कुमारलात ने "कल्पनामण्डितिका" लिखी । अवदानो में सबसे प्राचीन "अवदान शतक" है जो तीसरी सदी ईस्वी मे ही चीनी भाषा मे अनूदित हो चुका था । स्वय "दिव्यावदान" जिसमे सहज गद्य और अलकृत काव्य दोनो का सुन्दर एकत्र सग्रह है ४०० ई० के पहले प्रस्तुत हो चुका था । अवदानो की परपरा मे ही "कल्पद्रुमावदानमाला" "रत्नावदानमाला" "भद्रकल्पना-

वदान" "विचित्रकार्णिकावदान" और "अवदानकल्पलता" लिखे गये। इनमे से अन्तिम प्रसिद्ध कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने १०५२ ई० में लिखा। क्षेमेन्द्र के अवदानो में उसके पुत्र सोमेन्द्र ने "जीमूतवाहनावदान" नाम के एक नये अवदान के साथ एक भूमिका भी जोड़ी।

बौद्ध साहित्य का एक अग तन्त्र है। उनका विस्तार देश मे वडा है, यद्यपि उनका आरम्भ वस्तुत आसाम और बगाल में हुआ। ८वी सदी ई० अथवा उससे कुछ पहले से भारतीय तन्त्र तिब्वती और चीनी में भी अनूदित होने लगे थे। ७२० ई० के लगभग वज्रवोधि और अमोघवज्र नामक दो आचार्यों ने चीन जाकर वहाँ तन्त्रो का प्रचार किया। तन्त्रो की सस्कृत शैली वडी वर्बर है। उतनी ही बर्बर जितना उनका प्रतिपाद्य विपय। तन्त्रो का प्रभाव भारत और एशिया पर गहरा पडा। कछ लोग तो उन्हे अत्यन्त प्राचीन मानते हैं और उनके साथ के आगमो की प्राचीनता तो वेदो की सी पुरानी घोषित की गई है।

: ६ :

प्राकृत

प्राचीन भारतीय भाषा मे साधारणत दो प्रधान भाग किये जाते हैं—सस्कृत और प्राकृत। प्राकृत का अर्थ है स्वाभाविक अथवा साधारण, वस्तुत सस्कार रहित, और सस्कृत का सस्कारयुक्त अर्थात्, शिष्ट। कुछ लोगो ने प्राकृत को सस्कृत का विगडा हुआ रूप भी माना है जो नितान्त असगत है। सच तो यह है कि जिस स्वाभाविक जन साधारण की भापा का सस्कार हुआ और जिसे सस्कृत कर शिष्ट व्यवहार मे लाने लगे वह प्राकृत थी—जनभाषा—और सस्कारयुक्त होकर वही सस्कृत कहलाई। इससे उसका प्रधान, मूलभूत और संस्कृत पूर्व होना अनिवार्य है, यद्यपि यह भी स्वीकार किया जा सकता है कि सस्कृत भी अनेकवार जनसाधारण के सम्पर्क मे आकर जो सरल रूप मे व्यवहृत हुई वह भी कालान्तर मे प्राकृत की अपनी स्वतन्त्र, साहित्यिक शैली वनी और उस शैली का विविध प्रातो मे विविधत विकास होकर अनेक स्वतन्त्र प्राकृत शैलियो का जन्म हुआ।

वैदिक सस्कृत साहित्य के समकालीन प्राकृतो के हमें दर्शन नही होते परन्तु नि-सन्देह छठी सदी ई० पू० के महावीर और वुद्ध के प्राकृत प्रवचनो से सिद्ध है कि प्राकृतो का प्रादुर्भाव शैलियो के रूप मे भी उस सदी से काफी पूर्व हो चुका था। क्रमश तीसरी और दूसरी ई० पू० की सदियो के अशोक और खारवेल के लेख भी प्राकृत में ही सम्पन्न हुए। वैसे ही सातवाहनो के भी अभिलेख प्राकृतो मे ही है। पहली मे पहली सदी ने ही कुछ पात्रो की प्राकृत वोलने की परपरा चल पडी। स्वय अश्वघोप इसका प्रमाण है। नाटको में राजा और महान् कर्मा वीर तथा ब्राह्मण पुरोहित आदि तो सस्कृत मे वोलते हैं परन्तु महिलाएँ

और निम्नपात्र प्राकृतो मे। महिलाओ का साधारणत वक्तव्य शौरसेनी में होता है और निम्नवर्गियो का मागधी मे।

प्राकृत की विभिन्न शैलियो मे प्रधानत महाराष्ट्रीय, शौरसेनी मागधी, पैशाची, अपभ्रश आदि मानी गई है। पाली और अर्ध-मागधी भी जिनका उपयोग बौद्ध तथा जैन धार्मिक सिद्धात ग्रन्थो मे हुआ है प्राकृत ही थी। प्राकृत का पहला रूप पाली और पैशाची में मिलता है और दूसरा शौरसेनी तथा मागधी मे। अर्धमागधी यद्यपि उत्तरकालीन है, पाली से ही बहुत मिलती है। महाराष्ट्रीय अनेक काव्यकृतियो की भाषा बनी। पाँचवी सदी ईस्वी तक प्राकृत भी सस्कृत की ही भाँति शैली के रूप में रूढिगत हो चुकी थी और एक नयी जनबाली, अपभ्रश जो शिष्टो के सम्पर्क से अपनी शक्ति अब तक नष्ट होने से बचाए हुए थी, अब साहित्य की नयी शैली के रूप मे प्रयुक्त हुई लगता ऐसा है कि शिष्टो की भाषा और काव्य, कथा आदि की वाणी सस्कृत होते हुए भी उसकी परिष्कृत शैली के बावजूद भी व्यजना को जब-जब शक्ति और नवीनता की आवश्यकता हुई तब-तब उसने अपने रूढि आधार को छोड प्राकृतो को वरा। शूद्रक ने "मृच्छकटिक" में महाराष्ट्री का प्रयोग किया और कालिदास ने "विक्रमोर्वशी" में (यदि उनको प्रक्षिप्त न माना जाय) गीतो के लिए अपभ्रश का। हजार वर्ष बाद प्राय १४०० ई० मे विद्यापति ने अपने सस्कृत–प्राकृत नाटको में मैथिली छदो का उपयोग किया।

एक विशेष प्रकार के ड्रामा, सट्टक, मे मात्र सस्कृत का प्रयोग होता है। सस्कृत नाटिका के वह अत्यन्त निकट है। इस प्रकार का एक नाटक "कर्पूरमन्जरी" है जिसे ९०० ई० के आसपास राजशेखर ने लिखा। इसका कथानक प्रलय-कलह है जिसके अन्त में चण्डपाल और कर्पूरमन्जरी का विवाह सम्पन्न होता है। राजशेखर साहित्यिक व्यजना और छद शैली का अनुपम पडित है और उसके छदो में असाधारण सागीतिक झकृति है। प्रवाह भी उसका तरल और अविरल है। प्राय ९०० वर्ष बाद कालीकट के जमूरिन (समुद्रिन) की सभा के रुद्रदास ने चन्द्रलेखा नामक सट्टक लिखा जिसमें मानवेद और चन्द्र-लेखा के विवाह की कथा है। तजोर के मध्य १८ वी सदी के राजा तुलजाजी के राजकवि घनश्याम ने "आनन्दसुन्दरी" नामका सट्टक लिखा। उत्तरकाल मे उत्तरापथ मे भी प्राकृत में नाटक लिखने के कुछ प्रयोग हुए जिनमे मुख्य "नयचन्द्रगाथा" है। वह पन्द्रहवी सदी के लगभग हुआ और उसने अपने सट्टक "रम्भामजरी" में काशी के राजा जैत्रसिह और गुज-रात के मदवर्मन की कन्या रम्भा की कथा प्राकृत और सस्कृत की परस्पर गुथित शैली में लिखी।

यह तो हुई प्राकृत के धर्मेतर साहित्य की बात, परन्तु उस साहित्य का प्रधान अग तो धार्मिक जैन सिद्धातो मे विकसित हुआ। जैन आगम मे महावीर और उनके शिष्यो के उपदेश अर्धमागधी मे सग्रहीत हैं। चौथी शती ईस्वी पूर्व में पाटलिपुत्र की सगीति में इनका सग्रह

सम्पन्न हुआ और प्राय ९०० वर्ष वाद वल्लभी सगीति ने देवर्द्धि के नेतृत्व में जैन धर्म के इन प्राकृत सिद्धान्तो का विशेष वर्गीकरण किया। इन ग्रथो की सीमा में सारा मानव ज्ञान जैसे सिमट कर आ गया है। "आचाराग" "देशवैकालिक" आदि ने भिक्षु आचार का वृहत उल्लेख किया। "जीवाधिगम" आदि मे प्राणियो के सम्वन्ध के विचार विखरे "उपासक दशा" "प्रश्नव्याकरणाग" ने आदर्शों और गृहस्थो के आचारो का विवेचन किया। अन्य ग्रथो मे विशदरूप से सुकर्म, सृष्टि, उपदेश सम्वन्धी आख्यानो का सग्रह हुआ। "भगवती" के से ग्रथ तो विश्वकोष का रूप धारण कर चुके हैं।

"आचाराग" के गद्य मे छदो का भी सन्निवेश है। जैन प्राकृत शैली में सूत्र और प्रवाहतरल दोनो रूपो का विकास हुआ है। दर्शन अथवा प्रतिपाद्य विपय के अनुकूल उनकी प्राकृत शैली चुन ली गई है। महावीर ने अर्धमागधी मे अपने प्रवचन कहे थे। इसी से जैन सिद्धात ग्रथो की भाषा की सज्ञा अर्धमागधी है। शास्त्रीय प्रवचनो के अतिरिक्त साहित्यिक व्यजना के वाहन स्वरूप प्राकृत के प्रयोग का श्रेय श्वेताम्बर जैनो को है। दिगम्वरो और श्वेताम्बरो की शैलीगत भाषा के प्रयोग में काफी अन्तर है।

एक मनोरजक जैन प्राकृत शैली उत्तरापथ के पर्यटको ने दक्षिण के सम्पर्क से विकसित की। चौथी शती ई० पू० के प्राय अन्त में चन्द्रगुप्त मौर्य मगध के अकाल से पीडित हो जैनाचार्य भद्रबाहु और उनके कुछ अनुयायियो के साथ दक्षिण चले गये। अपने सम्प्रदायिको की मनस्तुष्टि के लिए भद्रवाहु आदि ने अपने स्मृतिगत भावो को लिख डाला। इनका एक विशिष्ट वर्ग वन गया जो जैन सम्प्रदाय में आदर और महत्व का विपय बना। इनमें से प्राचीनतम "सत्कर्म" और "कषायप्राभृत" है जो दृष्टिवाद के अवशेष माने जाते हैं। ८१६ ईस्वी मे वीरसेन--जिनसेन ने अपने ग्रथ मे प्राकृत की पूर्वकालीन टीकाओ का समावेश किया। इन टीकाओ में कर्म के सिद्धात का अद्भुत वितन्दन है। इस प्रकार के सिद्धात परक ग्रथो मे वट्टकेर का "मूलाचार" और शिवराम की "आराधना" भी गिनी जाती है। इनमें जैन-प्रवृजित जीवन के आचार-विधान सागोपाग वर्णित है। जैन-प्राकृत मे एक वर्ग का साहित्य "भक्ति" कहलाता है जिसमे स्वाभाविक ही भक्तिमूलक गायनो का वाहुल्य है।

जैनग्रथो का एक पूरा परिवार कुन्दनकुन्द के नाम से सम्वन्वित है। कितना उन यती का है, कितना दूसरो का आज यह नही कहा जा सकता। वह सारा परिवार आज हमें उपलव्ध भी नही। "पचासतिकाय" और "प्रवचनसार" निश्चय ही माननीय ग्रथ हैं जो उस महाभूत की लेखनी से प्रसूत हुए। उसका "समयसार" अद्भुत प्रेरणामूलक कृति है। यतिवृपभ का "तिलोयपणत्ति" अनेक विपयो का सग्रह है। कुन्दकुन्द और यतिवृपभ के ग्रथ ईसा की प्रारम्भिक सदियो मे रचे गये। मूलग्रथो पर अनेक टीकाऐं भी लिखी गईं जिनमे कई तो छदोवद्ध हैं और "निर्युक्ति" कहलाती हैं। इनमे से अनेक भद्रबाहु की लिखी वताई जाती हैं। इनका तर्क और दार्शनिक शैली असाधारण है। आवश्यक निर्युक्ति पर

९ ई० में जिनभद्र क्षमाश्रमण ने प्राकृत मे जो भाष्य लिखा वह इसी परपरा का अ
य ग्रथ माना जाता है। भाष्य निर्युक्तियो के ऊपर यत्र-तत्र उनके पूरक के रूप में छन्दो
लिखे गये। उन्ही निर्युक्तियो की गद्य टीकाएँ प्राकृत और सस्कृत के अनोखे मिश्रण
रूप मे सम्पन्न होकर "चूर्णि" कहलाए। जिनदास महत्तर द्वारा लिखा "लन्दीचूर्णि"
६ ईस्वी मे सम्पन्न हुआ।

प्राकृत का काव्य-साहित्य भी वडा अनमोल और पर्याप्त प्राचीन है। अनेक
अथवा लिरिक कविताओ की हाल से भी पहले रचना हुई। प्राचीनतम विशद गाथा
ना हाल की "सत्तसई" है जिसमें ७०० गाथाओ का सग्रह है। हाल वस्तुत इस
मुत सग्रह का सम्पादक है। इनमे से उसकी अपनी कुछ ही गाथाएँ हैं। अधिकतर
ने लोकगीतो से ही सग्रह किया और उनका सग्रह करते समय निस्सदेह उसने
की शैली, विपय, भावादि का विशेष ध्यान रखा। हाल का यह सग्रह केवल अपनी
ात्मक मधुरता अथवा काव्यगत सौदर्य के लिए ही प्रख्यात नही वरन् उसकी महत्ता
के प्रारम्भिक प्राकृत लोक-साहित्य होने मे भी है जिसकी रचना में मूलरूप में अनेक
ेयो ने भी सक्रिय भाग लिया था। हाल आन्ध्रसातवाहन राजा था जिसके समय का
ेचत पता तो हमें नही है परन्तु जो सभवत ईसा की पहली और तीसरी सदियो के बीच
ी हुआ था। कम-से-कम हाल का यह सग्रह दूसरी अथवा तीसरी सदी ईस्वी तक प्रस्तुत
चुका था। सस्कृत और हिन्दी में इस सत्तसई के अनुकरण मे अनेक सग्रह प्रस्तुत हुए
न्तु मूल प्राकृत के सौंदर्य तक कोई नही पहुँच सका। हिन्दी की विहारी आदि की सत्त-
ियाँ भी इसी हाल की "गाथा सत्तसई" पर अवलम्बित हुई। "गाथासत्तसई" का विषय
ानत और साधारणत जनपदो के जन-जीवन पर अवलम्वित है, परन्तु किसी मात्रा मे
हित्यिक रुचि अथवा शिष्टता को उसकी शैली दूपित नही करती। ऋतुओ की पृष्ठ-
म, देहात का काव्योपकरण, गाँव की जनता का भाव विलास, और निस्सीम चराचर
अभिराम निरूपण यथार्थ रूप से "सत्तसई" के एक-एक दो-दो पक्तियो में उभर पडे है।
व्य का प्रधानभाव शृगार और करुणा है और प्रणय के प्रसग विविध रूप से अकित हुए
विरह और सयोग, अनग रग और परिताप रोमाचक प्रवीणता से चित्रित हुए है। अनेक
ो मे करुणा का अविरल प्रवाह है। प्रमदा पिपासु पर्यटक को जल पिला रही है, जल
धार अटूट रूप से ऊपर से गिरती है, नेहमूढ पिपासु के स्निग्ध लोचन ऊपर टँग गये
और शिथिल उँगलियो के वीच से जल नीचे अविराम टपकता जाता है। कभी ऊपर से
रने वाली धारा अनगाहत नारी के शैथिल्य से नितान्त पतली होकर अपेय हो जाती है।
ो की क्रिया में सचेतक प्रमाद है, सद्योजात प्रणय से सम्भूत, और दोनो ही अपने-अपने
ोके से मिलन की अवधि लम्वी कर रहे है। "गाथा—सत्तसई" ससार के जनसाहित्य में
य सवाद के रूप में, शैलीगत साहित्य के रूप में, प्राचीनतम और अनुपम है।

ऊपर कहा जा चुका है कि "सत्तसई" के अनुकरण मे अनेक ग्रथ सगृहीत हुए। सस्कृत और हिन्दी मे तो उनके अनुकरण हुए ही, सस्कृत सुभाषितो के "पर्याय" सग्रह स्वय प्राकृत मे भी कुछ कम सख्या मे नही बने। यहाँ पर्याय लिखने से तात्पर्य किसी प्रकार यह नही कि प्राकृत सत्तसईया सस्कृत सुभाषितो की अनुवर्ती है। हाँ, भावो की समता निश्चय ही सिद्ध है। परन्तु वह अधिकतर इस कारण है कि दोनो का (पारस्परिक आदान-प्रदान से भिन्न) आधार, समान कोष, लोकचर्या है, यद्यपि इस लोकचर्या से सामीप्य सस्कृत की अपेक्षा प्राकृत का सर्वदा अधिक रहा। हाल से मिलता-जुलता एक सग्रह "वजालग्गइन्" नाम से जयवल्लभ ने किया। यह भी एक प्रकार की सत्तसई ही है यद्यपि पाठभेदो के कारण इसके छदो की सख्या ठीक ७०० नही। इसमें हाल के अनेक छद मिलते है। इसमे तीन विशेष प्रसगो-धर्म, अर्थ और काम—का निरूपण है, यद्यपि काम सम्बन्धी अश शेष दोनो से कही अधिक और ग्रथ का प्राय आधा है। सत्तसईकार जैन है परन्तु सग्रह मे साम्प्रदायिकता का स्पर्श तक नही। गाथाएँ महाराष्ट्री में है जिनमे अपभ्रश की मात्रा भी कुछ कम नही।

नीतिपरक छदो के भी अनेक सग्रह प्राकृत में मिलते है। इस प्रकार का प्राचीनतम सग्रह "उवएसमाला" है जिसमे श्रमणो और गृहस्थो के आचार ५४० छदो मे निवद्ध है। सग्रह का रचयिता महावीर का समकालीन या कुछ वाद का प्रव्रजित राजा धर्मदास माना जाता है। ग्रथ की रचना उसने अपने पुत्र कुमार रणसिह के लिए की। नवी सदी ईस्वी से ही इस पर टीकाएँ लिखी जाने लगी जिनकी सख्या की अनेकता से इसकी लोकप्रियता प्रकट है। इसमे जैन सिद्धातो का भी आख्यायिकाओ के रूप मे विवेचन है। प्राय हजार गाथाओ में हरिभद्र का सग्रह "उपदेशपद" है जो आठवी सदी में सग्रहीत हुआ। इसको वस्तुत, साहित्यिक कृति कहना अन्याय होगा क्योकि इसकी शब्द योजना नितान्त दुरूह है और इसकी शैली असाधारण पाण्डित्यपूर्ण। हेमचन्द्र की "उपदेशमाला" की ५०० गायाएँ प्राय २० धार्मिक विषयो पर उपदेश करती है, शैली अलकार वोझिल है। हेमचन्द्र गुजरात के प्रसिद्ध राजा जयसिह सिद्धराज (१०९४-११४३) का समकालीन था। ११९१ में आसड ने १४० दोहो मे धार्मिक जागरण के लिए अपनी "विवेकमन्जरी" लिखी। उत्तरकाल में भी इस प्रकार के अनेक सग्रह हुए यद्यपि उनकी शैलीगत काव्यता ने कही अधिक महत्व की उनकी धार्मिकता है।

उपासना के लिए भी प्राकृत मे, विशेपकर जैन सिद्धान्तो ने अनुप्राणित अनेक प्रार्थना परक प्राकृत स्तोत्र लिखे गये। स्तोत्रकारो मे प्रधान भद्रवाहु, मानतुग, धनपाल और अभयदेव हुए। "ऋषिमण्डल स्तोत्र" श्रमणो का एक प्रकार से इतिहास ही प्रस्तुत करता है और "द्वादशाग प्रमाण" अर्धमागधी में रचित जैनानुशासन का ग्रथ है। सोमसुन्दर ने १५ वी सदी मे विविध प्राकृत वोलियो मे अपनी प्रार्थनाएँ रची। यह प्रार्थनाओ की परम्परा

भारत की अनेक प्रान्तीय बोलियो मे प्राय अद्यावधि सन्तो ने जीवित रखी है। प्राकृत में साहित्यिक प्रबन्धो की एकान्त प्रचुरता है विशेषत जैन महाराष्ट्री और अपभ्रंश में। इनमे "वृहत्कथा" के अतिरिक्त शलाका पुरुषो के चरित प्रव्रजित महात्माओ की कथाएँ और लौकिक-अलौकिक ऐतिहासिक अनैतिहासिक प्रसगो का कथागत सग्रह है। "वृहत्कथा" की रचना गुणाढ्य ने पैशाची मे की। आज स्वय "वृहत्कथा" तो प्राप्य नही परन्तु उसकी तीन सस्कृत अनुकृतियाँ उपलब्ध हैं। उससे प्रगट है कि मूलग्रथ कितना विशद और शालीन रहा होगा। उत्तर-कालीन साहित्यिको की रचनाओ के लिए अनन्त कथानक इस "बृहत्कथा" ने प्रदान किये। दण्डी, सुबन्धु, बाण और अन्य साहित्य-धुरीणो ने निरन्तर श्रद्धापूर्वक गुणाढ्य की इस अनुपम कृति का उल्लेख किया है। गुणाढ्य का व्यक्तित्व तिमिराच्छन्न है। सभवत वह भास से पूर्व ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियो मे हुआ हो।

रामकथा का एक जैन रूप विमल द्वारा प्रणीत "पऊमचर्या" मे मिलता है जो चौथी सदी ईस्वी की कृति है। इसमे रावण और मारुति (हनुमान) को क्रमश राक्षस और बन्दर न मानकर विद्याधर माना गया है। ग्रथ की काव्यकारिता इसकी शक्तिम और तरल शैली से प्रगट है। प्राय उसी काल पादलिप्त ने आज अप्राप्य धार्मिक उपन्यास "तरगवयी" प्राकृत मे लिखा। कहानी प्रणय की थी परन्तु उसका अन्त उपदेशपरक था। यदि उसे उपन्यास माना जाय तो सम्भवत ससार के साहित्य में वह पहला उपन्यास रहा होगा, यद्यपि उसकी अनुपस्थिति मे आज यह कह सकना कठिन है कि आधुनिक उपन्यासो के किस रूप का वह प्रकाशन करता है। इसके साहित्यिक सौंदर्य का कुछ पता हमे एक अन्य विशद प्राकृत ग्रथ "तरगलना" से मिलता है। ६०० ई० से पहिले सघदास और धर्मदास ने "वसुदेव हिन्दी" नाम की एक वृहद् गद्य-कथा लिखी जिसमें हरिवश के वसुदेव के भ्रमणो और अनेक दन्तकथाओ का वर्णन है।

८६८ ई० मे शीलाचार्य ने प्रधानशलाका पुरुषो के चरितो का अपने "महापुरुष चरित" मे सग्रह किया। दसवी सदी ईस्वी के लगभग प्रसिद्ध जैनग्रथ "कालकाचार्य कथानक" की रचना हुई जिससे शक इतिहास पर प्रभूत प्रकाश पडता है। सन्तकालक शक क्षत्रयशाहियो के पास जाकर अपनी भगिनी सरस्वती के आहर्त्ता उज्जैन के राजा गर्दभिल्ल के नाश में उनकी सहायता माँगता है। कथानक के साथ ही ग्रथ में प्रौढ शैली का प्रयोग हुआ है। १०३८ ई० मे लिखा धनेश्वर का "सुरसुन्दरीचर्य" एक लम्बा रोमान्स (काल्पनिक उपन्यास) है जिसके १६ सर्गों में विद्याधर राज की प्रणय कथा का निर्वाह हुआ है। इसमे कथानक के अन्तर्गत कथानक प्रस्तुत है और उनका वर्णन धारावाहिक है। महेश्वरसूरि ने उदाहरणो द्वारा सूत्रपचमी केशव का महत्व अपनी "पचमीकहा" में लिखा है। विजयचन्द्र केवलिन्, वर्द्धमान आदि ने भी अपने ग्रथ इसी ग्यारहवी सदी में लिखे। कुमारपाल की मृत्यु के केवल ग्यारह वर्ष बाद सोमप्रभ ने अपना "कुमारपाल प्रतिबोध" लिखा

जिसमे उस राजा के जैन सम्प्रदाय मे दीक्षित होने की कथा है। अपभ्रंश के प्रादुर्भाव से प्राकृतो मे एक नया जीवन, नया चाचल्य झलक पडता है। भाषा का प्रवाह, भावो की यथार्थ चेतना, शैली की सहज तरलता सभी कुछ नवजीवन लिए आते है और कुशल कवि के अकन से अमर बन जाते है। ऊपर कहा जा चुका है कि किस प्रकार कालिदास ने अपनी "विक्रमोर्वशी" मे अपभ्रंश गीतो का उपयोग किया। वस्तुत प्रत्येक भारतीय भाषा के अपने-अपने विशिष्ट छद रहे है—सस्कृत मे श्लोक, प्राकृत मे गाथा और अपभ्रंश मे दोहा। दोहो का प्रभाव प्राकृत, सस्कृत और अनेक जन-बोलियो पर पडा है।

अपभ्रंश के प्राचीनतम कवियो मे से एक चतुर्मुख है। अपभ्रंश के "पद्धदिया" छद का सभवत उसी ने प्रकाश किया। आठवी सदी में स्वयम्भू और उसके पुत्र त्रिभुवन् स्वयम्भू ने अपभ्रंश साहित्य को श्रीसम्पन्न किया। अपभ्रंश का सबसे महान् कवि पुष्पदन्त दसवी सदी के मध्य हुआ। राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज तृतीय के मन्त्री भरत की सरक्षा में उसकी मेधा श्रीसम्पन्न हुई और उसने अपने अद्भुत ग्रथ महापुराण "जसहर चरिऊ" और "नायकुमारचरिऊ" रचे। उनकी शैली काव्य सौन्दर्य में अपभ्रंश साहित्य मे अपना सानी नही रखती। कनकामर सभवत उसका समकालीन था। उसने "करकण्डचरिऊ" की रचना तरल शैली में की। हरिभद्र के प्राय ढाई सौ वर्ष बाद मैथिल विद्यापति हुआ जिसने अपभ्रंशोत्तर भाषा में अपनी "कीर्तिलता" रची।

कालान्तर मे प्राकृत में भी सस्कृत की ही भाँति काव्यो और रोमान्सो की रचना हुई। प्रवरसेन का "सेतुबन्ध" रामायण की ही एक घटना पर अवलम्बित है परन्तु काव्य के रूप में सारे गुणो का उसका रचयिता अपनी कृति मे प्रतिबिम्बित करता है। इसकी कल्पना, भावाकर्षण और श्लेप काव्यरचना मे अपना स्थान रखते है। बाण और दण्डी दोनो ने "सेतुबन्ध" की प्रशसा की है। आठवी सदी के कन्नौज के राजा यशोवर्मन के राजकवि वाकपतिराज ने "गाऊडवले" की रचना की। वाक्पति जनपद कवि है। उसमे देहात के जीवन का इतना बाहुल्य है कि उसके सौन्दर्य और ताजगी से वह अपने काव्य को अनुपम बना देता है।

हरिभद्र ने आठवी सदी में "समराइच्चकहा" नाम का अपना प्राकृत चम्पू लिखा। मानवजीवन का वह गम्भीर अध्येता है, यद्यपि उसके इस चम्पू मे आत्माओ के सघर्ष का ही निरूपण है। हरिभद्र ने भारतीय साहित्य मे अनुपम अपना अद्भुत व्यग्य "धूर्ताख्यान" लिखा जिसमे चार पुरुप और एक स्त्री धूर्त अपनी अपनी अनुभूतियो का वर्णन करते है। साहित्यिक कृतीत्व के रूप में यह ग्रथ अपने समय से बहुत आगे है। हरिभद्र के शिष्य उद्योत्तन ने "कुवलयमाला" लिखकर हूण, तोरमान के ऊपर काफी प्रकाश डाला है। वह उस दिशा में साहित्यिक और अच्छी ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है, कुतूहल का "लीलावती" रोमाचक काव्य है जिसमे गतिमान वर्णन हुआ है और जो निस्सदेह भोज से

पहले रची गई। काव्य में सातवाहनराज और सिंहल की राजकुमारी लीलावती का प्रणय वर्णित है। कथा के तन्तु निश्चय ही उलझे हुए हैं। परन्तु भावो का प्रवाह आकर्षक है।

ग्यारहवी सदी मे जैन महाराष्ट्री गद्य-पद्य में गुणचन्द्र ने "महावीर-चरित" लिखा। ग्रथ १०८२ ई का है और उसमे व्याकरण की चुस्ती अपूर्व है। काव्याकन दूषित नही होता। जैन साहित्य मे विशेषकर उसके धार्मिक क्षेत्र मे हेमचन्द्र (१०८९-११७२) का नाम अग्रणी है। गुजरात में तो जैन सम्प्रदाय के विस्तार का सबसे अधिक श्रेय इसी महापुरुष को है। उसने अपने व्याकरण और कोषकारिता द्वारा प्राकृत शब्दशास्त्र की नीव रखी। उसका "कुमारपालचरित" जीवन चरित होकर भी व्याकरण का प्रकाश करता है। काव्य की पद्धति अपूर्व है जो चरित के साथ-साथ ही प्राकृत व्याकरण का वर्णन करती है।

दक्षिण मे भी प्राकृत साहित्य का प्रणयन हुआ और श्री कठ, रामपाणिवाद आदि ने अनेक काव्यकृतियाँ इस भाषा को भेट की।

कर्म सिद्धान्त के निरूपण मे भी प्राकृत में जैनो ने अनेक मूलग्रथ और टीकाएँ लिखी, शिववर्मन, चन्द्रर्षि और नेमिचन्द्र की कृतियो पर विशद भाषा सस्कृत में रचे गये यद्यपि उनके मूल-क्रमश "कम्मपयदि" "पचसैन्ग्रह" "गोम्मटसार" प्राकृत मे थे। सातवी सदी के सिद्धसेन दिवाकर ने नयस् और अनेकान्तवाद नामक जैन सिद्धान्तो पर अपना अद्भुत पाण्डित्यपूर्ण प्राकृत ग्रथ "सन्मतितर्क" लिखा। इसी प्रकार हरिभद्र का "धर्म सगहणि" भी विशेष प्रसिद्ध हो गया है। कुमारदेव, सेन, जोइन्दु आदि ने भी प्राकृत साहित्य को अपनी मेधा से परिपूर्ण किया। हिन्दी के प्रारम्भिक दोहाकार कन्हपा और सरहपा ने भी कान्ह और सरह नाम से अपने दोहाकोष प्राकृत में ही लिखे।

प्राकृत में व्याकरण की दिशा मे भी कुछ प्रयास हुए जैसा अनेक उद्धरणो से प्रमाणित होता है परन्तु अभाग्यवश आज वे उपलब्ध नही। आज जितने भी प्राकृत सम्बन्धी व्याकरण उपलब्ध हैं वे सस्कृत मे ही है। हाँ, कोपकारिता के क्षेत्र में अनेक स्तुत्य प्रयत्न हुए हैं। धनपाल ने ९७२-७३ ई० मे अपनी भगिनी सुन्दरी के लिए प्रसिद्ध पर्याय कोष "पाइयलच्छीनाममाला" प्रस्तुत किया। इसी प्रकार जिन देशी शब्दो का सम्बन्ध सस्कृत मूल से नही किया जा सकता ऐसो की एक तालिका उनके प्रयोग सम्बन्धी उद्धरणो के साथ हेमचन्द्र ने "देशीनाममाला" मे प्रस्तुत की। हेमचन्द्र ने अपने इस ग्रथ में प्राय एक दर्जन पूर्वगामी प्राकृत कोषकारो की ओर सकेत किया है परन्तु उनकी कृतियाँ आज उपलब्ध नही। अलकार सम्बन्धी "अलकारदर्पण" नामक एक ग्रथ मिलता है जिसके रचयिता का पता नही। अपभ्रश ग्रथो मे छदो की नयी सरणियो का उद्घाटन हुआ है। नन्दीनाथ्य ने अपने "गाथालक्षण" में गाथा के प्रकारो पर प्रकाश डाला है। इसी प्रकार स्वयम्भू ने अपने "स्वयम्भू छद" में विविध छदो का उल्लेख मय उनके- [illegible] के किया है। प्राकृत कोष और पिंगल सम्बन्धी कुछ [illegible] "वृत्तजातिसमु[illegible] [illegible]", "छद कोप"

और "प्राकृतपायगल" आदि है। इस दिशा मे हेमचन्द्र के "छदोनुशासन" से प्राकृत छदो पर प्रभूत प्रकाश पडता है। इनके अतिरिक्त प्राकृत में ज्योतिष और चिकित्सा सम्बन्धी भी कुछ ग्रथ उपलब्ध है।

प्राकृत साहित्य बहुमुखी है और उसमे जनसम्बन्धी उन जीवित स्तरो का साहित्य है जिसे सस्कृत की शिष्टता न अपना सकी और जो प्रान्तीय वोलियो की सम्पदा बन गया। साहित्य और आन्दोलन के वाहन के रूप में उसके प्रयोग का श्रेय महावीर और बुद्ध को है और राजकीय घोषणाओ का महामना अशोक को। प्राकृतो का मूल रूप मे अध्ययन आज की प्रान्तीय जन वोलियो के अध्ययन मे प्रचुर सहायक होगा।

पहले रची गई। काव्य मे सातवाहनराज और सिहल की राजकुमारी लीलावती का प्रणय वर्णित है। कथा के तन्तु निश्चय ही उलझे हुए हैं। परन्तु भावो का प्रवाह आकर्षक है।

ग्यारहवी सदी मे जैन महाराष्ट्री गद्य-पद्य मे गुणचन्द्र ने "महावीर-चरित" लिखा। ग्रथ १०८२ ई का है और उसमे व्याकरण की चुस्ती अपूर्व है। काव्याकन दूषित नही होता। जैन साहित्य मे विशेषकर उसके धार्मिक क्षेत्र मे हेमचन्द्र (१०८९-११७२) का नाम अग्रणी है। गुजरात में तो जैन सम्प्रदाय के विस्तार का सबसे अधिक श्रेय इसी महापुरुष को है। उसने अपने व्याकरण और कोषकारिता द्वारा प्राकृत शब्दशास्त्र की नीव रखी। उसका "कुमारपालचरित" जीवन चरित होकर भी व्याकरण का प्रकाश करता है। काव्य की पद्धति अपूर्व है जो चरित के साथ-साथ ही प्राकृत व्याकरण का वर्णन करती है।

दक्षिण मे भी प्राकृत साहित्य का प्रणयन हुआ और श्री कठ, रामपाणिवाद आदि ने अनेक काव्यकृतियाँ इस भाषा को भेंट की।

कर्म सिद्धान्त के निरूपण में भी प्राकृत में जैनो ने अनेक मूलग्रथ और टीकाएँ लिखी, शिववर्मन, चन्द्रर्षि और नेमिचन्द्र की कृतियो पर विशद भाषा सस्कृत मे रचे गये यद्यपि उनके मूल-क्रमश "कम्मपयदि" "पचसंग्रह" "गोम्मटसार" प्राकृत मे थे। सातवी सदी के सिद्धसेन दिवाकर ने नयस् और अनेकान्तवाद नामक जैन सिद्धान्तो पर अपना अद्भुत पाण्डित्यपूर्ण प्राकृत ग्रथ "सन्मतितर्क" लिखा। इसी प्रकार हरिभद्र का "धर्म सगहणि" भी विशेष प्रसिद्ध हो गया है। कुमारदेव, सेन, जोइन्दु आदि ने भी प्राकृत साहित्य को अपनी मेधा से परिपूर्ण किया। हिन्दी के प्रारम्भिक दोहाकार कन्हपा और सरहपा ने भी कान्ह और सरह नाम से अपने दोहाकोष प्राकृत में ही लिखे।

प्राकृत मे व्याकरण की दिशा मे भी कुछ प्रयास हुए जैसा अनेक उद्धरणो से प्रमाणित होता है परन्तु अभाग्यवश आज वे उपलब्ध नही। आज जितने भी प्राकृत सम्बन्धी व्याकरण उपलब्ध है वे सस्कृत मे ही है। हाँ, कोषकारिता के क्षेत्र मे अनेक स्तुत्य प्रयत्न हुए है। धनपाल ने ९७२-७३ ई० में अपनी भगिनी सुन्दरी के लिए प्रसिद्ध पर्याय कोष "पाइयलच्छीनाममाला" प्रस्तुत किया। इसी प्रकार जिन देशी शब्दो का सम्बन्ध सस्कृत मूल से नही किया जा सकता ऐसो की एक तालिका उनके प्रयोग सम्बन्धी उद्धरणो के साथ हेमचन्द्र ने "देशीनाममाला" में प्रस्तुत की। हेमचन्द्र ने अपने इस ग्रथ में प्राय एक दर्जन पूर्वगामी प्राकृत कोषकारो की ओर सकेत किया है परन्तु उनकी कृतियाँ आज उपलब्ध नही। अलकार सम्बन्धी "अलकारदर्पण" नामक एक ग्रथ मिलता है जिसके रचयिता का पता नही। अपभ्रश ग्रथो में छदो की नयी सरणियो का उद्घाटन हुआ है। नन्दीनाढ्य ने अपने "गाथालक्षण" मे गाथा के प्रकारो पर प्रकाश डाला है। इसी प्रकार स्वयम्भू ने अपने "स्वयम्भू छद" मे विविध छदो का उल्लेख मय उनके प्रयोगो के किया है। प्राकृत कोष और पिंगल सम्बन्धी कुछ कृतियाँ "वृत्तजातिसमुच्चम", "कविदर्पण", "छद कोष"

२४. स्पेनी साहित्य

: १ :

मध्य युग

वीर काव्य

स्पेनी भाषा की उत्पत्ति लातीनी से हुई, लातीनी और स्थानीय वोलियो के योग से। उसका आरम्भ अरबो और स्पेनियो की विजय से होता है। उस काल का स्पेनी साहित्य "वीर कृत्यो के गीतो" (कान्तार)[1] का है। इनमे प्राचीनतम दसवी सदी ईस्वी की हत्या और प्रतिशोध हे मुख्य विषय है। तव का अधिकतर काव्य साहित्य इन्ही खूनी कारनामो से भरा है। इस प्रकार के अनेक छोटे वडे वीर काव्य पूर्ण-अपूर्ण दशा मे आज स्पेनी भाषा मे उपलव्घ हैं। प्राचीन स्पेन के वीर काव्यो का सुघड और समूचा रूप "इल कान्तार द मिओ किद" (विदेशो में "किद' मात्रसे प्रसिद्ध) है नामक एपिक में मिलता है। यह ११४० ई० मे प्रस्तुत काव्य अशेप रूप मे उपलव्घ भी है। उसके तीन भाग हैं। दोन 'रोद्रिगो' (किद) का अल्फोज़ो षष्ठ द्वारा लगभग १०७५ के निर्वासन, उसकी कन्याओ का उनके पतियो द्वारा अपमान, समझौता और काउण्टो को दण्ड। काव्य शालीन और मधुर है, दृश्यो मे सम्पन्न और शक्तिम भावाक मे समृद्ध। इसी प्रकार के एक और वीर काव्य "रोसेन्वालेस" के कुछ खडो का पता चलता है। यह एपिक १३ वी सदी का है। कहानी काउण्ट जूलियन की कन्या के साथ अन्तिम गोथ राज रोद्रिगो के वलात्कार की है। परिणाम स्वरूप काउण्ट मूर तारीक को वुला भेजता है। ७११ मे जव्र-अल-तारीक स्पेन जाकर उस पर कब्जा कर लेता है और वहाँ अरवी साम्राज्य के पाये खडे हो जाते हैं। उसी अरव विजेता के नाम पर जिब्राल्टर नाम पडता है। यह कहानी कुछ ही हेर-फेर के साथ लातीनी, अरवी और स्पेनी तीनो में मिलती है। अरबी पाठ ११ वी सदी का है।

स्पेनी काव्य धारा पर फ्रेंच का भी प्रभाव पडा। उस प्रभाव ने अनेक वार धार्मिक रूप धारण किया। फ्रेंच प्रभाव में प्रस्तुत १३वी सदी का एक काव्य "ला विदा द सान्ता मारिया ईगिप्सियाका" है। इसके रचयिता का नाम अज्ञात है। उसके वाद की गोन्ज़ाल्ो द वर्सियो[2] पादरी और गायक ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की। उनने छदो में अनेक सन्तो के चरित्र लिखे। उसके अनेक गीत सुरक्षित है। युआन लोरेन्ज़ो द आस्तोर्गा[3] द्वारा १०,०००

---

१ Cantares; २ Gonzalo de Berceo (११९८-१२६५); ३ Juan Lorenzo de Astorga

परक नीतिकथाओ का स्पेनी भापा में प्रादुर्भाव तो पूर्वात्य देशो के प्रभाव से हुआ है। उनका उपयोग पादरी और उपदेशक अपने प्रवचनो तथा उपदेशो में करते थे। इन दृष्टातपरक कहानियो मे सबसे रुचिकर भारतीय "पचतत्र" की कहानियाँ हैं। जो अरबी अनुवाद "कलील-ए-दिम्न" (करकट-दमनक पचतत्र के सियारो के नाम) मे सग्रहीत हुईं। कास्तिल के युवराज दौन युवान मानुएल[1] ने उनका कास्तिली कथाओ के सम्मिलित सस्करण के रूप मे "एल कोन्दे लुकानोर" प्रकाशित किया। कास्तिल के जनपदो का वातावरण भारतीय परिस्थितियो मे घुल-मिल कर एक हो गया है।

नीतिपरक कहानियो का एक सग्रह "एल लिब्रो द इयेप्म्पलोज" नाम से क्लिमेन्त सान्शेज[2] ने किया। इनमे नारियो के आचार पर बडी शका की गई है। वस्तुत युवराज दोन फाद्रीक[3] के आदेश से १२५३ मे अरबी "सेन्देवार" से अनूदित त्रियाचरित्र के प्रचार के बाद नारी के प्रति घृणा और बढी। "दिसिप्लिना क्लेरिकालिस" पर यहूदी प्रभाव स्पष्ट है। "एल-लिब्रो देल कावालेरो जिफार" पहला वीर-उपन्यास है जिसमें कथा मे कथा निकलती आती है। प्राचीन स्पेनी साहित्य का पहला उपन्यास "एल सिएर्वो लिव्रे द आमोर" (ल० १४४०)—युवान रोद्रिगेज़ द कामार[4] का है। पेद्रो रोद्रिगेज द लेना द्वारा वर्णित एक ऐतिहासिक वृतान्त को सौ वर्ष बाद उपन्यास की सज्ञा दी गयी।

कोप्लाज़ देल प्रोविन्शियल" (ल० १४७०) मे दरबार सम्बन्धी एक व्यग्य है। इसी प्रकार "कोप्लाज़ द यिगो रेविल्गो" मे एन्रिक चतुर्थ[6] के विरुद्ध जनता की शिकायत है। इनिगो लोपेज द मेन्दोजा[7] की वृद्धाओ की कहावतें नामक सग्रह मे घरेलू सीखो का बाहुल्य है। कारियोन के रब्बी (यहूदी पुरोहित) सेम तोव[8] ने "क्रूर" पैद्रो[9] के लिए छन्दोबद्ध व्यग्यात्मक कहावतो का एक सग्रह" प्रोवर्वियोस मोरालेज" नाम से प्रस्तुत किया था। कहावतो और कहानियो का विस्तार मध्ययुगीय स्पेनी साहित्य में बहुत बडा है। स्वय बौद्धधर्म का उस पर कुछ कम प्रभाव न पडा। बुद्ध सबधी कथाओं का आयात स्पेनी भाषा मे लातीनी द्वारा हुआ। "ला एस्तोरिया द योसाफात ए द वरलाम" की अनेक स्पेनी कथाओ पर बौद्ध कहानियो ने प्रभाव डाला।

युवान रुइज[10] और आरग्मीप्रेस्त द हिता[11] दोनो मध्यकालीन प्रख्यात कवियो ने ७००० पक्तियो मे "एल-लिब्रो द बुएन आमोर" नाम का एक सग्रह लिखा जिसमे

---

१ Don Juan Manuel (१२८२-१३४९), २ Climente Sanchez (१३७९-१४२६), ३ Don-Fadrique, ४ Juan Rodriguez de la Camar, ५ Pedro Rodriguez de Lena, ६ Enrique IV, ७ Inigo Lopez de Mendoza; ८ Sem Tob (The Rabbi of Carrion), ९ Pedro the Cruel (१३५०-६९), १० Juan Ruiz; ११ Arcipreste de Hita

पक्तियो में प्रस्तुत सिकदर सम्बन्धी एक काव्य लिब्रो द आलिजान्द्रे (ल० १२५०) है। जिसमे बावली नरेश के विरुद्ध सिकन्दर के युद्ध का वर्णन है। नैसर्गिक सौन्दर्य और पार्थिव सम्पदा का उसमे मार्मिक वर्णन है। १३ वी सदी के साधु सान पेद्रो द आर्लान्जा[१] की एक बडी हृदयग्राही कविता—"एल पोएमा द फर्नान गोन्जाले"—उपलब्ध है। इस प्रकार के अनेक एपिक काव्य खण्डश अथवा सम्पूर्णत सुरक्षित हैं। जो स्पेनी भाषा की गेयता प्रमाणित करते हैं। १४ वी सदी के लगभग स्पेन की एपिक काव्य धारा और छदोवद्ध इतिहासो का अन्त हो गया।

एपिक काव्य की ही भाँति प्राचीन स्पेन मे लिरिक काव्य भी फूला-फला। उसके निर्माण में जिन आधारो का योग था उनमें अरबी "ज़ेजेल" (गज़ल) प्रधान था। उत्तर कालीन लातिनी गीतो का भी उस काल पर्याप्त प्रचार था। वस्तुत उत्तर कालीन लातिनी और प्राचीन स्पेनी भाषाओ की सीमाएँ काल रूप से प्राय समान थी। फिर "रोमास" काव्य धारा अल्फोन्जो षष्ठ[२] के काल तक देशी गायन-समारोहो में अत्यत लोकप्रिय थी। गडरियो—नर-नारी दोनो—के गीत भारतीय अहीरो के बिरहाओ की भाँति देश मे सदा और सर्वत्र गाये जाते थे। फ्रेंक प्रभाव की ओर सकेत ऊपर किया जा चुका है। कास्तिल के १३वी सदी के गीतो पर फ्रेंच "देवा" का प्रभाव स्पष्ट है। अल्फोन्जो दसवा स्पेन का पहला "त्रोवादोर" (त्रूवादूर, कवि, गायक) था। कवि होने के अतिरिक्त वह सुन्दर गद्यकार और प्रकाड पडित (१२२०-८४) भी था। कास्तिल की सभ्यता का वह जनक कहा जाता है। उसने प्रोवेन्स—पुर्तगाली शैली मे सान्ता मारिया सबधी ४५० गीत लिखे। इनमें अधिकतर चमत्कारी कहानियाँ थी। फिर भी उनमें "लूर" (स्तोत्र) ४१ थे और सूक्त १५। उनकी शैली नितान्त सरल है।

लोक-बोलियो में गीत लिखने और गाने वाले अनेक "त्रोवादोरो" के नाम भी मिलते है। इनमें प्रधान "पैद्रो आमिगो द सेविला[३], राजा साचो प्रथम[४], ऐरास नूजे द सान्तियागो[५], और पुर्तगाल के राजा दोन दिनिस[६] हैं। नारी-गीतो के अनुकरण में युवान जोरो[७] और पैरो मेओगो[८] तथा पुरुष-गीतो के अनुकरण में नुजो फर्नान्दिज़ तोर्नियोल[९] ने गीत लिखे। मधुर और लोकप्रिय लिरिको के अनेक प्राचीन सग्रह आज उपलब्ध हैं।

मध्य-युग का गद्य प्राय समूचा ही नीत्यात्मक है। कानून पुराण इतिहास के अतिरिक्त कहानियो, कहावतो, कथोपकथनो, आदि के लिए गद्य का प्रयोग हुआ है। दृष्टात-

---

१ San Pedro de Arlanza, २ Alfonso VI (१२२६-५७), ३ Pedro Amigo de Sevilla, ४ King Sancho I, ५ Airas Nunes de Santiago, ६ King Don Dinis of Portugal; ७ Juan zorro, ८ Pero Meogo, ९ Nuno Fernandes Torneol

परक नीतिकथाओ का स्पेनी भाषा मे प्रादुर्भाव तो पूर्वात्य देशो के प्रभाव से हुआ है। उनका उपयोग पादरी और उपदेशक अपने प्रवचनो तथा उपदेशो मे करते थे। इन दृष्टातपरक कहानियो मे सबसे रुचिकर भारतीय "पचतत्र" की कहानियाँ है। जो अरबी अनुवाद "कलील-ए-दिम्न" (करकट-दमनक पचतत्र के सियारो के नाम) मे सग्रहीत हुई। कास्तिल के युवराज दौन युवान मानुएल[1] ने उनका कास्तिली कथाओ के सम्मिलित सस्करण के रूप में "एल कोन्दे लुकानोर" प्रकाशित किया। कास्तिल के जनपदो का वातावरण भारतीय परिस्थितियो मे घुल-मिल कर एक हो गया है।

नीतिपरक कहानियो का एक सग्रह "एल लिब्रो द इयेम्पलोज" नाम से क्लिमेन्त सान्शेज[2] ने किया। इनमें नारियो के आचार पर बडी शका की गई है। वस्तुत युवराज दोन फाद्रीक[3] के आदेश से १२५३ में अरबी "सेन्देबार" से अनूदित त्रियाचरित्र के प्रचार के बाद नारी के प्रति घृणा और बढी। "दिसिप्लिना क्लेरिकालिस" पर यहूदी प्रभाव स्पष्ट है। "एल-लिब्रो देल कावालेरो जिफार" पहला वीर-उपन्यास है जिसमें कथा में कथा निकलती आती है। प्राचीन स्पेनी साहित्य का पहला उपन्यास "एल सिएर्वो लिब्रे द आमोर" (ल० १४४०)—युवान रोद्रिगेज़ द कामार[4] का है। पेद्रो रोद्रिगेज द लेना द्वारा वर्णित एक ऐतिहासिक वृतान्त को सौ वर्ष बाद उपन्यास की सज्ञा दी गयी।

कोप्लाज़ देल प्रोविन्शियल" (ल० १४७०) मे दरबार सम्बन्धी एक व्यग्य है। इसी प्रकार "कोप्लाज़ द यिगो रेविल्गो" मे एन्रिक चतुर्थ[6] के विरुद्ध जनता की शिकायत है। इनिगो लोपेज द मेन्दोजा[7] की वृद्धाओ की कहावते नामक सग्रह मे घरेलू सीखो का बाहुल्य है। कारियोन के रब्बी (यहूदी पुरोहित) सेम तोब[8] ने "क्रूर" पैद्रो[9] के लिए छन्दोबद्ध व्यग्यात्मक कहावतो का एक सग्रह" प्रोवर्वियोस मोरालेज" नाम से प्रस्तुत किया था। कहावतो और कहानियो का विस्तार मध्ययुगीय स्पेनी साहित्य में बहुत बडा है। स्वय बौद्धधर्म का उस पर कुछ कम प्रभाव न पडा। बुद्ध सबधी कथाओ का आयात स्पेनी भाषा मे लातीनी द्वारा हुआ। "ला एस्तोरिया द योसाफात ए द बरलाम" की अनेक स्पेनी कथाओ पर बौद्ध कहानियो ने प्रभाव डाला।

युवान रुइज[10] और आरसीप्रेस्त द हिता[11] दोनो मध्यकालीन प्रख्यात कवियो ने ७००० पक्तियो मे "एल-लिब्रो द बुएन आमोर" नाम का एक सग्रह लिखा जिसमे

---

१ Don Juan Manuel (१२८२-१३४९), २ Climente Sanchez (१३७९-१४२६), ३ Don-Fadrique, ४. Juan Rodriguez de la Camar, ५ Pedro Rodriguez de Lena; ६ Enrique IV, ७ Inigo Lopez de Mendoza, ८ Sem Tob (The Rabbi of Carrion), ९ Pedro the Cruel (१३५०-६९), १० Juan Ruiz, ११ Arcipreste de Hita

धार्मिक चमत्कार, दृष्टात-कहानियाँ सभी कुछ थे। ये कृतिकार बोकाचो[१] और चौसर[२] के प्राय समकालीन है और उन्ही की रुचि के स्मारक है। इस सग्रह की शब्दावली प्रखर है और प्रणय, प्रकृति आदि का वर्णन सजीव है। अनेक स्थल पर चरित्र-चित्रिग भी सुन्दर हुआ है। मनुष्य की कमजोरियो का उसमें अच्छा चित्रण है। पैरो लोपेज द आयाला[३] राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था। उसके "रिमादो दि पालासियो" में दरबारी रहन-सहन पर गहरा व्यग्य है। अविग्नान मे कैद पोप की स्थिति और परिणामत चर्च के अभाग्य पर उसने दु ख प्रकट किया है। कगालो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है। दोन एन्रिक द विलेना[४] की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह जादूगर और स्वप्नो का व्याख्याता भी था। उसने काव्य रूपक और शिष्टाचार पर विचार लिखे, साथ ही काव्यकला पर भी "आर्ते द ट्रोबार" नामक एक ग्रन्थ लिखा। उसने "ईनिद" और 'दैवी कोमेदी" का अनुवाद भी किया। सान्तिलाना का मार्क्विस दोन इनीगो लोपेज द मेन्दोजा[५] मध्य वर्ग का असाधारण व्यक्तित्व था। उसने प्राचीन स्पेनी काव्य शैली का विकास किया और इतालियन सरणी का स्पेनी मे उपयोग किया। युवान द मेना[६] ने "ईलियद" का अनुवाद किया। उसने सन्तो के भी कुछ सुन्दर चरित भी लिखे है।

अल्फोन्जो मर्तीनेज द तोलेदो[७] तालावेरा का प्रधान पादरी था। परन्तु उसकी कृतियो में यौन श्रृगार का खुला वर्णन हुआ। अद्भुत शब्द बाहुल्य से उसने नगरनारियो की चपलता और धूर्तता का वर्णन किया है। गोमेज मान्रिक[८] मार्क्विस द सान्तिलाना[९] का भतीजा था। अपनी "पोएजिया" में उसने अच्छी काव्य शक्ति का परिचय दिया है। उसके अनेक धार्मिक नाटक लीलाओ की तरह खेले गये। योर्गे मान्रिक[१०] गोमेज का भतीजा था। उसकी ५१ कविताएँ उपलब्ध है। अधिकतर वे मनुष्य की अन्तर चेतना से सबध रखती है। मृत्यु पर उसने कुछ सुन्दर लाइने लिखी है। फर्नान पेरेज द गुज्मान[११] पहला सुन्दर चरित्रकार है। उसने दो खडो में सन्तो, वीरो और समकालीनो के मनोहर और आलोचनात्मक चरित लिखे हैं। वैसे उससे भी अभिराम चरित हरनान्दो द पुल्गार[१२] ने लिखे है।

पन्द्रहवी सदी के कवियो की कृतियाँ अधिकतर सग्रहो में सग्रहीत है जो आरा-

---

१ Boccaccio, २ Chaucer, ३ Pero Lopez de Ayala (१३३२-१४०७), ४ Don Enrique de Villena (१३८४-१४३४), ५ Don Inigo Lopez de Mendoza, ६ Juan de Mena (१४११-५६), ७ Alfonso Martinez de Toledo (१३९८-१४७०), ८ Gomez Manrique (१४१२-९०), ९ Marques de Santillana, १० Jorge Manrique, ११ Fernan Perez de Guzman (१३७६-१४६०), १२ Hernando de Pulgar (१४३६-९३)

गान और कास्तिल के राजाओ के आदेश से समय-समय पर प्रस्तुत हुए। इस प्रकार के एक सग्रह मे ५४ कास्तिली कवियो की रचनाएँ हैं। उसी में प्रसिद्ध आल्फोजो द विला-सान्दिनो[1] के हृदयग्राही और यौन-शृगारिक लिरिक भी हैं। फ्रासेस्को[2] और रे द रिबेरा[3] की रचनाएँ भी उसमे सग्रहीत है। इनके अतिरिक्त अनेक विनोदप्रिय कवियो की कविताएँ उस सग्रह के कलेवर में गुथी है। पन्द्रहवी सदी के विनोद-शील कवियो में में सबसे प्रतिभाशाली युवान अल्वारेज गातो है।[4]

: २ :

पुनर्जागरण-युग[5]

रूढिवादी परपरा पर आघात

रेनेसाँ की जिस धारा ने यूरोप के अन्य देशो को आप्लावित किया उससे स्पेन का साहित्य भी वचित न रह सका। पुनर्जागरण का उद्गम मूलत इटली में हुआ था। और स्पेन उसका केवल निकटतम पडोसी ही नही लातीनी का आशिक उत्तराधिकारी भी था। अरवो और यहूदियो के कारण स्पेनी साहित्यकारो का सम्वन्ध वैसे भी पूर्वात्य ज्ञान-भडार से किसी न किसी मात्रा में हो चुका था और जब पुनर्जागरण की लहर चली तव उसे उस लहर को प्रयोगश अपनाने की आवश्यकता न पडी। वह जैसे उसका स्वाभाविक उत्तराधिकार बन गया स्पेन मे शीघ्र ही लातीनी ग्रीक और इब्रानी ग्रथो का अध्ययन आरभ होने लगा। वस्तुत रेनेसॉ की दिशा मे स्पेन की प्रगति औरो से अधिक सहज न हुई। कारण कि उसकी भौगोलिक खोजो और तत्सम्वन्धी आविष्कारो ने उसे एक नई चेतना और साहित्यिक एकता प्रदान कर दी थी जिससे रेनेसा का कलम आसानी से वहाँ लग सका।

विज्ञान के उदय से स्पेन मे जिज्ञासा की प्रवृत्ति और प्रवल हो उठी। इरैस्मस के लेखो ने उसे और भी जागरूक वना दिया और १६ वी सदी के पहले चरण मे स्पेन ने वस्तुओ को आलोचनात्मक दृष्टि से देखना शुरू किया। फ्रासिस्को सान्शेज एल ब्रोकेन्जे[6] ने फतवा तक दे दिया कि धर्म के विषय को छोडकर अन्य सारे विपयो की समीक्षा होनी चाहिए। पोप की सत्ता के अनुकूल और प्रतिकूल दोनो प्रकार के साहित्य का आलोचक दृष्टि से निर्माण होने लगा। अनेक नारियो ने भी उसमे भाग लिया। पहली वार जुआन ने "दियालोगो द ला लेगुआ" मे साहित्य का शुद्ध साहित्यिक दृष्टि से मूल्याकन किया। भापा और शैली सम्वन्धी विचारो को रक्खा। अनेक स्वतन्त्र चिन्तको ने रूढिवादी परपरा पर

---

१ Alfonso de Villasandino, २ Francisco, ३ Rey de Ribera; ४ Juan Alvarez Gato (१४४०-१४९६), ५ The Renaissance, ६ Franciso Sanchez el Brocense (१५२३-९९)

धार्मिक चमत्कार, दृष्टात-कहानियाँ सभी कुछ थे। ये कृतिकार बोकाचो[1] और चौसर[2] के प्राय समकालीन है और उन्ही की रुचि के स्मारक है। इस सग्रह की शब्दावली प्रखर है और प्रणय, प्रकृति आदि का वर्णन सजीव है। अनेक स्थल पर चरित्र-चत्रिग भी सुन्दर हुआ है। मनुष्य की कमजोरियो का उसमे अच्छा चित्रण है। पैरो लोपेज द आयाला[3] राजनीतिज्ञ और इतिहासकार था। उसके "रिमादो दि पालासियो" में दरबारी रहन-सहन पर गहरा व्यग्य है। अविग्नान में कैद पोप की स्थिति और परिणामत चर्च के अभाग्य पर उसने दु ख प्रकट किया है। कगालो के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है। दोन एन्रिक द विलेना[4] की प्रतिभा बहुमुखी थी। वह जादूगर और स्वप्नो का व्याख्याता भी था। उसने काव्य रूपक और शिष्टाचार पर विचार लिखे, साथ ही काव्यकला पर भी "आर्ते द ट्रोब्रार" नामक एक ग्रन्थ लिखा। उसने "ईनिद" और 'दैवी कोमेदी" का अनुवाद भी किया। सान्तिलाना का मार्क्विस दोन इनीगो लोपेज द मेन्दोजा[5] मध्य वर्ग का असाधारग व्यक्तित्व था। उसने प्राचीन स्पेनी काव्य शैली का विकास किया और इतालियन सरणो का स्पेनी मे उपयोग किया। युवान द मेना[6] ने "ईलियद" का अनुवाद किया। उसने सन्तो के भी कुछ सुन्दर चरित भी लिखे है।

अल्फोन्जो मर्तीनेज द तोलेदो[7] तालावेरा का प्रधान पादरी था। परन्तु उसकी कृतियो में यौन श्रृगार का खुला वर्णन हुआ। अगुत शब्द बाहुल्य से उसने नगरनारियो की चपलता और धूर्तता का वर्णन किया है। गोमेज मान्रिक[8] मार्क्विस द सान्तिलाना[9] का भतीजा था। अपनी "पोएजिया" मे उसने अच्छी काव्य शक्ति का परिचय दिया है। उसके अनेक धार्मिक नाटक लीलाओ की तरह खेले गये। योर्गे मान्रिक[10] गोमेज का भतीजा था। उसकी ५१ कविताएँ उपलब्ध हैं। अधिकतर वे मनुष्य की अन्तर चेतना से सबध रखती है। मृत्यु पर उसने कुछ सुन्दर लाइने लिखी है। फर्नान पेरेज द गुज्मान[11] पहला सुन्दर चरित्रकार है। उसने दो खडो में सन्तो, वीरो और समकालीनो के मनोहर और आलोचनात्मक चरित लिखे हैं। वैसे उससे भी अभिराम चरित हरनान्दो द पुल्गार[12] ने लिखे है।

पन्द्रहवी सदी के कवियो की कृतियाँ अधिकतर सग्रहो में सग्रहीत हैं जो आरा-

---

१ Boccaccio, २ Chaucer, ३ Pero Lopez de Ayala (१३३२-१४०७), ४ Don Enrique de Villena (१३८४-१४३४), ५ Don Inigo Lopez de Mendoza, ६ Juan de Mena (१४११-५६), ७ Alfonso Martinez de Toledo (१३९८-१४७०), ८ Gomez Manrique (१४१२-९०), ९ Marques de Santillana, १० Jorge Manrique, ११ Fernan Perez de Guzman (१३७६-१४६०), १२ Hernando de Pulgar (१४३६-९३)

स्पेनी रगमच को धार्मिक ड्रामा से भी बडी सहायता मिली। प्राचीन रहस्यवादी लीलाओ का स्थान धीरे-धीरे बाइबिल के नाटको ने ले लिया। ट्रैजेडी विशेषत बडी सफलता से खेली जाने लगी और तब जैसा कॉमेडी के क्षेत्र में भी सगत है, ग्रीक-दृष्टिकोण का समाविष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। कुछ नाटककारो ने तो क्लासिकल कथानको को उनके रूपक तत्व को छोडकर, अपने प्लॉट के लिये चुना। फर्नान पेरेज़ द ला ओलिवा[1] का 'ला वैगान्ज़ा द आगामेम्नोन" (१५२८) तथा जुआन द तिमोनेडा[2] का "फिलोमेना" (१५६४) इसी प्रकार के ग्रीक कथानको से सनाथ कृतियाँ हैं। परन्तु उस दिशा मे अनेक कृतियाँ तो समसामयिक घटनाओ को लेकर चली। फ्रे जेरोनिमो बर्मूदेज सालामान्का[3] के नाटक "नीजे लास्तिमोजा" और "नीजे लारियादा" (१५७७) समकालीन वस्तु से ही सगठित हुए। क्रुस्तोबाल द विरूएज[4] ने सेनेका[5] की पद्धति स्वीकार कर लडाई-भिडाई और खून-खराबे के ड्रामे लिखे। उसकी "आत्तिला फूरियोजो" "एलिसा दिडो" और "ला इन्फेलिके मार्केला" उसी परपरा की कृतियाँ हैं।

स्पेन की सामुद्रिक विजयो ने जो एक औपनिवेशिक साम्राज्य का निर्माण कर दिया तो उसके साहित्यकारो का अनेक मानव-जातियो से परिचय हुआ और यह सभव न था कि उनके प्रति उनकी किसी मात्रा में प्रतिक्रिया न हुई हो। सेविल के अभिनेता लोपे द रुएदा[6] ने चटपटी भाषा मे अनेक लोकप्रिय यथार्थवादी लघुनाटको की रचना की जिनमे "लास असितुनास" और "यूफेमिया" तथा "आर्मेलिन्दा" जानी हुई हैं। उसने नीग्रो पात्रो को भी अपने रगमच पर स्थान दिया। जुआन द ला कुएवा[7] ने ट्रैजेडी और कॉमेडी दोनो लिखी, जिनका विस्तार क्लासिक कथानको से लेकर समसामयिक कहानियो तक था। दोन जुआन[8] की कहानी ने भी बीज रूप मे उसके एक नाटक मे स्थान पाया।

स्पेनी रेनेसाँ का सबसे महान् नाटककार लोपे द वेगा[9] था। उसने क्लासिक कथानको का भी परित्याग कर अपने प्लॉट स्थानीय लोकप्रिय लोककथाओ से लिये। उसके पात्रो मे विविधता थी और शैली मे बडी सजीवता। पशुपालन सम्बन्धी कॉमेडी, "किसान अपने कोने में" मे उसने देहाती जीवन का चित्रण किया। वह यथार्थ को कल्पना के स्पर्श से सम्मोहक बना देता था। उसकी कृतियो मे देश-प्रेम की भी काफी मात्रा होती थी और ईमानदार तथा वीर नारियो के मनोवैज्ञानिक चित्रण मे ईर्ष्या और मान का योग दे वह कृतियो को सर्वथा मानवीय तथा सफल बना देता था। उसने बहुत लिखा। उसके नाटको

---

१ Fernan Perez de La Oliva, २ Juan de Timoneda, ३ Fray Jeronimo Bermudez Salamanca, ४ Cristobal de Virues (१५५०-१६०९); ५ Senecan blood and Thunder Drama, ६ Lope de Rueda (म० १५६५), ७ Juan de la Cueva (१५५०-१६१०), ८ Don Juan, ९. Lope de Vega,

आघात भी किया। धर्म को इस प्रकार समीक्षक की दृष्टि से देखने मे एक वडा खतरा था क्योकि हमें यह बात न भूलनी चाहिए कि कैथोलिक धर्म के विरोधियो पर क्रूर प्रहार करने वाले "इन्क्विज़िशन" का प्रारम्भ स्पेन मे ही हुआ था। वहाँ उसकी सत्ता सर्वथा निरकुश थी।

मानवतावादी-साहित्य का अधिकाधिक सृजन स्पेन मे होने लगा था। उस दिशा मे गद्य के क्षेत्र मे विविध प्रयोग हुए थे। और अब दर्शन की दिशा में ग्रीक दार्शनिको का अध्ययन भी शुरू हो गया। रेनेसाँ के क्षेत्र मे स्पेन के लेखको और चिन्तको का ध्यान पहले ग्रीक-ज्ञान की ओर गया। अफलातून काव्य के क्षेत्र में और अरस्तू दर्शन के क्षेत्र मे उनके आराध्य बने। प्रेम की एक नयी व्याख्या हुई और नारी के सम्पर्क मे उसकी आराधना होते हुए भी उसका एक पक्ष भगवान की दिशा में जागरूक हुआ। इस प्रकार की कविताएँ जिनमें मानव प्रेम मनुष्य की सीमाओ को पार कर शृगारिक चेतना से अलौकिक का स्पर्श करता है, स्पेन में पहले भी अनजानी न थी। सूफी अरबो और इब्रानी लेखको ने किसी न किसी मात्रा मे उसका आरम्भ स्पेन मे कर दिया था। फिर प्राचीन ग्रीस की सोफिस्ती परपरा स्वय उस दिशा मे कृतकार्य हुई। अब सौन्दर्य का अनुशीलन भी ग्रीक परपरा के अनुसार शुरू हुआ। हाँ अन्य देशो की रेनेसा परपरा और स्पेनी दृष्टिकोण में एक विशेष अन्तर पड चला। जहाँ अन्य देशो मे तर्क सगत चेतना मानव और प्रकृति के सम्बन्ध में साहित्य मे मुखरित हुई वहाँ स्पेन मे मनुष्य और ईश्वर सम्बन्धी सीमाओ को भी पार कर वह चेतना अन्तर प्रेरणा तथा धनी भक्ति के प्रति दृढ हुई।

रेनेसा का साहित्य-गौरव स्पेन मे उसके नाट्य-क्षेत्र में विशेषत प्रतिष्ठित हुआ। जुआन देल एन्सिना[१] ने नाटको को इटालियन रेनेसा सम्बन्धी सिद्धान्तो पर उतारा। "क्रिस्तिनो इ फैबी" में गडरिया-जीवन का अच्छा चित्रण है, और स्वय ईसाई साधु पशु-पालन का जीवन अपने से उच्चतर मानते है। बार्तोलोमे द तोरेस नाहारो[२] ने अपनी कॉमेडी "ला सोल्दादेस्का" (सैनिक) अथवा "ला तिनलारिया" मे सुन्दर हास्यमय यथार्थवादी दृश्यो का आकलन किया है। "कोमेदिया हिमेनी" स्पेन के उस काल की एक सुन्दर कामेडी है जो लोक चेतना और पैने व्यग्य को भी चरितार्थ करती है। गिल विकेन्ते[३] इन प्रारम्भिक नाट्यकारो में सबसे समर्थ था। वह पेशे से सुनार था। उसने पुरानी ख्यातो और पौराणिक आख्यायिकाओ का अच्छा प्रयोग किया। चर्च की उसने वडी तीखी आलोचना की और शृगारिक चेतना को विनोद द्वारा हल्का कर दिया। उसके नाटको की शैली वडी रोचक और शक्तिम है।

---

१ Juan del Encina (१४६९-१५२९), २ Bartolome de Torres Naharro (मृत्यु १५३० के वाद); ३ Gil Vicente (१४६५-१५३९)

उन्होने एकत्र किया और उनकी परपरा आगे बढाई। मूरो और सरहदी-बैलैडो को भी उन्होने अपनी निष्ठा प्रदान की और देशी-विदेशी विविध विषयो पर उनकी कल्पना ने हृदयग्राही कृतियाँ रची। १६ वी सदी के कवियो ने इन लोक-गीतो के आधार पर अधिकतर अपनी रचनाएँ की। उस काल की अनेक कविताएँ विविध सग्रहो में आज भी उपलब्ध है। क्रिस्तोबाल द कास्तिलेजो[1] ने ओविद[2] और कातुलस[3] का अनुकरण तो किया, परन्तु छद, शब्द-योजना, पैनी उक्ति अपनी भाषा के ही प्रयुक्त किये। उसने अपनी कृतियो मे शृगार-रस का अधिकाधिक उपयोग किया है। जुआन बोस्कान द आल्मोगावेर[4] उसका समकालीन था। बोस्कान ने स्पेनी काव्य टैकनीक को निखार कर उसे एक नई इटैलियन चमक दी। वह शैली अधिकतर इटैलियन टैकनीक पर ही मँजी। उसकी कविताओ के तीन सग्रह उसके निधन के बाद उसकी पत्नी ने १५४३ मे प्रकाशित किये। बोस्कान की शैली तो बडी प्राजल थी। परन्तु उसमें जीवन की कमी थी। उस जीवन की ताजगी का उसके मित्र गार्सिलासो दे ल वेगा[5] ने अपनी कविताओ मे सचार किया। बोस्कान की कविताओ के साथ ही गार्सिलासो के लिरिक भी प्रकाशित हुए। स्पेन के रेनेसाँ युग के सबसे सुन्दर लिरिक इसी ने लिखे। उनकी करुणा उसके अपने ही असफल प्रणय की अभिव्यजना थी। उसकी कृतियो मे तर्क और भावुकता, सौन्दर्य और नेकी-बदी-सुख और दुख एक साथ घुले-मिले है।

काव्य जगत् में तब सबसे अधिक गौरव सेविल के कवि फरनान्दो द हेरेरा[6] को मिला। उसने, तुर्की, पुर्तगालियो, मूरो आदि पर स्पेन की विजयो से प्रेरणा ली और उनके आधार पर अत्यन्त सबल "ओड" रचे। प्रणय सम्बन्धी उसके लिरिक भी अत्यन्त क्षमता रखते है। उसके समकालीनो ने फिर भी उससे कही अधिक गार्सिलासो का अनुकरण किया। फर्नान्दो से भी अधिक शृगारिक फ्रासिस्को द फिगेरोआ[7] है। उसकी शैली बडी प्रभावोत्पादक और शब्द-योजना नितान्त चित्र-बहुल है। रोद्रिगो कारो[8] ने अपनी कविताओ मे रोमन गौरव की पुकार उठाई। लुपरसिओ[9] और बार्तोलोमे[10] नामक दो भाइयो ने भी भी उस काल सुघरी कविता की। क्लासिकल रूप के बावजूद भी उनके व्यग्य और सॉनेट स्वदेशी भावनाओ के वाहन बने।

गद्य की दिशा मे भी स्पेन ने रेनेसाँ काल मे कुछ कम उन्नति न की। फ्रास, जर्मनी आदि विदेशो से तो धारावाहिक रूप मे उसे नया साहित्य मिलता ही रहा, स्वय उसका अपना

---

१ Cristobal de Castillejo (१४९०-१५५०), २. Ovid, ३ Catullus, ४ Juan Boscan de Almogaver (१४९५-१५४२), ५ Garcilaso de le Vega; ६ Fernando de Herrera, ७ Francisco de Figueroa (१५३६-१६१७), ८ Rodrigo Caro (१५७३-१६४७), ९ Lupercio Leonardo de Argensola (१५५९-१६१३), १०. Bartolome Leonardo de Argensola (१५६२-१६३१)

में ५०० रचनाओ की गणना की जाती हैं। उनमें से अधिकतर तीन-तीन अको की हैं। उसने कुछ धार्मिक नाटक भी लिखे। जिनमे "आत्मा की यात्रा" प्रसिद्ध है। उसकी कॉमेडी "मिथ्या-सत्य" अनेक समीक्षको की दृष्टि मे सुघड कृति है। उसने ऐतिहासिक नाटक भी लिखे जिनमे स्पेनी इतिहास के रोमासो पर आधारित रचनाएँ तो निस्सदेह अत्यन्त आकर्षक है। "आस्तूरिया की प्रसिद्ध कुमारियाँ" "सेविल का नक्षत्र" "फ़ुएन्ते ओवेज़ना" और "एल अल्काल्दे द ज़ालामी" उनमे सवसे अधिक सफल रचनाएँ है। इनके अतिरिक्त उसने पूर्वात्य कथानको के आधार पर भी कुछ नाटक लिखे। लोपे की कृतियो में गति और चित्रण में बडा समुचित सन्तुलन है।

तिर्सो द मोलीना[1] ने धार्मिक और दार्शनिक नाटको की रचना की। उसकी शव्द-योजना लोपे से भी अधिक सुन्दर है। उसका दृष्टिकोण उससे कही वैयक्तिक है। अपनी कृतियो को वह बराबर सुधारता रहता था और इस प्रकार उसने उन्हे एक नया रूप प्रदान किया। वह जीवन का तत्व तप मे खोजता था। इसी से उस की कृतियो में आचार की शक्ति सदा मोह और घृणा पर विजय पाती है। अपने नाटक "गृह शासिका नारी" और "राज प्रसाद की लज्जाशीला" मे उसने पतनोन्मुखी नारी के निकट आचारवान तरुण को खडा कर दिया है। उसने नारी की साधुता और मातृ-स्नेह तथा साहस का भी चित्रण किया है। "सान्ता जुआना" दोयाँ मार्या द मोलीना "सेविल का रसिया" और "दोन गिल" उस दिशा मे प्रमाण है।

दोन गिलेन द कास्त्रो ई बेलविस[2] स्पेन का बडा लोकप्रिय नाटककार हो गया है। उसने भी राष्ट्रीय कथानको को ही अपनाया और विदूषक के सम्वन्ध में शेक्सपियर की शैली का ही अनुकरण किया। यद्यपि उसकी गहराई वह न पा सका। अपने प्रधान पात्रो को वह सर्वथा प्रतिकूल चित्रण में उपस्थित करता है। ईसाई और मूर (अरव) पुरुप और नारी उसके परस्पर विरोधी पात्र होते है। उसकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है। "किद का यौवन" "किद के कृत्य", "वालेन्सिया का असम विवाह" और "एल कूरीओसो इमपर-तिनेन्त"।

जुआन रूइज़ द आलारकोन ई मेन्दोजा[3] मैक्सिको में उत्पन्न हुआ था। उसने सुन्दर काव्य-पद्धति में २१ नाटक लिखे, जिनमे प्रधान निम्नलिखित थे —"सदिग्ध सत्य", "मित्र-चयन", "दीवालें सुनती हैं" "पति-परीक्षा", "उसका छाया पुरुप" और "गुफा"।

मानवतावादी स्पेनी कवियो ने क्लासिकल तथा इटैलियन काव्य का अध्ययन तो किया, परन्तु अपने देश की काव्य-धारा से वे कभी विमुख न हुए। प्राचीन रोमान्सो को

---

१ Tirso de Molina, २ Don Guillen de Castro Y Bellvis, ३ Juan Ruiz de Alarcon Y Mendoza (१५८१-१६३९)

उन्होने एकत्र किया और उनकी परपरा आगे बढाई। मूरो और सरहदी-बैलैडो को भी उन्होने अपनी निष्ठा प्रदान की और देशी-विदेशी विविध विषयो पर उनकी कल्पना ने हृदयग्राही कृतियाँ रची। १६ वी सदी के कवियो ने इन लोक-गीतो के आधार पर अधिकतर अपनी रचनाएँ की। उस काल की अनेक कविताएँ विविध सग्रहो में आज भी उपलब्ध है। क्रिस्तोबाल द कास्तिलेजो[1] ने ओविद[2] और कातुलस[3] का अनुकरण तो किया, परन्तु छद, शब्द-योजना, पैनी उक्ति अपनी भाषा के ही प्रयुक्त किये। उसने अपनी कृतियो में शृगार-रस का अधिकाधिक उपयोग किया है। जुआन बोस्कान द आल्मोगावेर[4] उसका समकालीन था। बोस्कान ने स्पेनी काव्य टैकनीक को निखार कर उसे एक नई इटैलियन चमक दी। वह शैली अधिकतर इटैलियन टैकनीक पर ही मँजी। उसकी कविताओ के तीन सग्रह उसके निधन के बाद उसकी पत्नी ने १५४३ मे प्रकाशित किये। बोस्कान की शैली तो बडी प्राजल थी। परन्तु उसमे जीवन की कमी थी। उस जीवन की ताजगी का उसके मित्र गार्सिलासो दे ल बेगा[5] ने अपनी कविताओ मे सचार किया। बोस्कान की कविताओ के साथ ही गार्सिलासो के लिरिक भी प्रकाशित हुए। स्पेन के रेनेसाँ युग के सबसे सुन्दर लिरिक इसी ने लिखे। उनकी करुणा उसके अपने ही असफल प्रणय की अभिव्यजना थी। उसकी कृतियो मे तर्क और भावुकता, सौन्दर्य और नेकी-बदी-सुख और दुख एक साथ घुले-मिले है।

काव्य जगत् मे तब सबसे अधिक गौरव सेविल के कवि फरनान्दो द हेरेरा[6] को मिला। उसने, तुर्की, पुर्तगालियो, मूरो आदि पर स्पेन की विजयो से प्रेरणा ली और उनके आधार पर अत्यन्त सबल "ओड" रचे। प्रणय सम्बन्धी उसके लिरिक भी अत्यन्त क्षमता रखते है। उसके समकालीनो ने फिर भी उससे कही अधिक गार्सिलासो का अनुकरण किया। फर्नान्दो से भी अधिक शृगारिक फ्रासिस्को द फिगेरोआ[7] है। उसकी शैली बडी प्रभावोत्पादक और शब्द-योजना नितान्त चित्र-बहुल है। रोद्रिगो कारो[8] ने अपनी कविताओ में रोमन गौरव की पुकार उठाई। लुपरसिओ[9] और बार्तोलोमे[10] नामक दो भाइयो ने भी भी उस काल सुघरी कविता की। क्लासिकल रूप के बावजूद भी उनके व्यग्य और सॉनेट स्वदेशी भावनाओ के वाहन बने।

गद्य की दिशा मे भी स्पेन ने रेनेसाँ काल मे कुछ कम उन्नति न की। फ्रास, जर्मनी आदि विदेशो से तो धारावाहिक रूप मे उसे नया साहित्य मिलता ही रहा, स्वय उसका अपना

---

१ Cristobal de Castillejo (१४९०-१५५०), २. Ovid; ३. Catullus, ४ Juan Boscan de Almogaver (१४९५-१५४२), ५ Garcilaso de le Vega; ६ Fernando de Herrera, ७ Francisco de Figueroa (१५३६-१६१७); ८ Rodrigo Caro (१५७३-१६४७), ९ Lupercio Leonardo de Argensola (१५५९-१६१३), १०. Bartolome Leonardo de Argensola (१५६२-१६३१)

ने ५०० रचनाओ की गणना की जाती है। उनमे से अधिकतर तीन-तीन अको की है। उसने कुछ धार्मिक नाटक भी लिखे। जिनमे "आत्मा की यात्रा" प्रसिद्ध है। उसकी कॉमेडी "मिथ्या-सत्य" अनेक समीक्षको की दृष्टि मे सुघड कृति है। उसने ऐतिहासिक नाटक भी लिखे जिनमे स्पेनी इतिहास के रोमासो पर आधारित रचनाएँ तो निस्सदेह अत्यन्त आकर्षक है। "आस्तूरिया की प्रसिद्ध कुमारियाँ" "सेविल का नक्षत्र" "फुएन्ते ओवेज़ना" और "एल अल्काल्दे द ज़ालामी" उनमे सबसे अधिक सफल रचनाएँ है। इनके अतिरिक्त उसने पूर्वात्य कथानको के आधार पर भी कुछ नाटक लिखे। लोपे की कृतियो में गति और चित्रण मे बडा समुचित सन्तुलन है।

तिर्सो द मोलीना[1] ने धार्मिक और दार्शनिक नाटको की रचना की। उसकी शब्द-योजना लोपे से भी अधिक सुन्दर है। उसका दृष्टिकोण उससे कही वैयक्तिक है। अपनी कृतियो को वह बराबर सुधारता रहता था और इस प्रकार उसने उन्हे एक नया रूप प्रदान किया। वह जीवन का तत्व तप मे खोजता था। इसी से उस की कृतियो में आचार की शक्ति सदा मोह और घृणा पर विजय पाती है। अपने नाटक "गृह शासिका नारी" और "राज प्रसाद की लज्जाशीला" मे उसने पतनोन्मुखी नारी के निकट आचारवान तरुण को खडा कर दिया है। उसने नारी की साधुता और मातृ-स्नेह तथा साहस का भी चित्रण किया है। "सान्ता जुआना" दोयाँ मार्या द मोलीना "सेविल का रसिया" और "दोन गिल" उस दिशा मे प्रमाण है।

दोन गिलेन द कास्त्रो ई बेलविस[2] स्पेन का बडा लोकप्रिय नाटककार हो गया है। उसने भी राष्ट्रीय कथानको को ही अपनाया और विदूषक के सम्बन्ध में शेक्सपियर की शैली का ही अनुकरण किया। यद्यपि उसकी गहराई वह न पा सका। अपने प्रधान पात्रो को वह सर्वथा प्रतिकूल चित्रण में उपस्थित करता है। ईसाई और मूर (अरब) पुरुष और नारी उसके परस्पर विरोधी पात्र होते है। उसकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित है। "किद का यौवन" "किद के कृत्य", "वालेन्सिया का असम विवाह" और "एल कूरीओसो इमपरतिनेन्त"।

जुआन रूइज़ द आलारकोन ई मेन्दोज़ा[3] मैक्सिको में उत्पन्न हुआ था। उसने सुन्दर काव्य-पद्धति में २१ नाटक लिखे, जिनमे प्रधान निम्नलिखित थे —"सदिग्ध सत्य", "मित्र-चयन", "दीवाले सुनती है" "पति-परीक्षा", "उसका छाया पुरुष" और "गुफा"।

मानवतावादी स्पेनी कवियो ने क्लासिकल तथा इटैलियन काव्य का अध्ययन तो किया, परन्तु अपने देश की काव्य-धारा से वे कभी विमुख न हुए। प्राचीन रोमान्सो को

---

१ Tirso de Molina, २ Don Guillen de Castro Y Bellvis, ३ Juan Ruiz de Alarcon Y Mendoza (१५८१-१६३९)

उन्होने एकत्र किया और उनकी परपरा आगे बढाई। मूरो और सरहदी-बैलैडो को भी उन्होने अपनी निष्ठा प्रदान की और देशी-विदेशी विविध विषयो पर उनकी कल्पना ने हृदयग्राही कृतियाँ रची। १६ वी सदी के कवियो ने इन लोक-गीतो के आधार पर अधिकतर अपनी रचनाएँ की। उस काल की अनेक कविताएँ विविध सग्रहो मे आज भी उपलब्ध है। क्रिस्तोबाल द कास्तिलेजो[1] ने ओविद[2] और कातुलस[3] का अनुकरण तो किया, परन्तु छद, शब्द-योजना, पैनी उक्ति अपनी भाषा के ही प्रयुक्त किये। उसने अपनी कृतियो मे शृगार-रस का अधिकाधिक उपयोग किया है। जुआन बोस्कान द आल्मोगावेर[4] उसका समकालीन था। बोस्कान ने स्पेनी काव्य टैकनीक को निखार कर उसे एक नई इटैलियन चमक दी। वह शैली अधिकतर इटैलियन टैकनीक पर ही मँजी। उसकी कविताओ के तीन सग्रह उसके निधन के बाद उसकी पत्नी ने १५४३ मे प्रकाशित किये। बोस्कान की शैली तो बडी प्राजल थी। परन्तु उसमें जीवन की कमी थी। उस जीवन की ताजगी का उसके मित्र गार्सिलासो दे ल बेगा[5] ने अपनी कविताओ में सचार किया। बोस्कान की कविताओ के साथ ही गार्सिलासो के लिरिक भी प्रकाशित हुए। स्पेन के रेनेसाँ युग के सबसे सुन्दर लिरिक इसी ने लिखे। उनकी करुणा उसके अपने ही असफल प्रणय की अभिव्यजना थी। उसकी कृतियो मे तर्क और भावुकता, सौन्दर्य और नेकी-बदी-सुख और दुख एक साथ घुले-मिले है।

काव्य जगत् मे तब सबसे अधिक गौरव सेविल के कवि फरनान्दो द हेरेरा[6] को मिला। उसने, तुर्को, पुर्तगालियो, मूरो आदि पर स्पेन की विजयो से प्रेरणा ली और उनके आधार पर अत्यन्त सबल "ओड" रचे। प्रणय सम्बन्धी उसके लिरिक भी अत्यन्त क्षमता रखते है। उसके समकालीनो ने फिर भी उससे कही अधिक गार्सिलासो का अनुकरण किया। फर्नान्दो से भी अधिक शृगारिक फ्रासिस्को द फिगेरोआ[7] है। उसकी शैली बडी प्रभा-वोत्पादक और शब्द-योजना नितान्त चित्र-बहुल है। रोद्रिगो कारो[8] ने अपनी कविताओ मे रोमन गौरव की पुकार उठाई। लुपरसिओ[9] और बार्तोलोमे[10] नामक दो भाइयो ने भी भी उस काल सुथरी कविता की। क्लासिकल रूप के बावजूद भी उनके व्यग्य और सॉनेट स्वदेशी भावनाओ के वाहन बने।

गद्य की दिशा में भी स्पेन ने रेनेसाँ काल मे कुछ कम उन्नति न की। फ्रान्स, जर्मनी आदि विदेशो से तो धारावाहिक रूप में उसे नया साहित्य मिलता ही रहा, स्वय उनका अपना

---

१ Cristobal de Castillejo (१४९०-१५५०); २ Ovid, ३. Catullus, ४ Juan Boscan de Almogaver (१४९५-१५४२); ५. Garcilaso de le Vega; ६ Fernando de Herrera, ७ Francisco de Figueroa (१५३६-१६१७), ८ Rodrigo Caro (१५७३-१६४७), ९ Lupercio Leonardo de Argensola (१५५९-१६१३), १० Bartolome Leonardo de Argensola (१५६२-१६३१)

तत्व भी उस दिशा मे कुछ कम न था। तपशील और रहस्यवादी धार्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक रहन सहन की तीखी आलोचना, भाषा और शैली सम्बन्धी विचार सभी स्पेन मे स्थानीय दृष्टि से विकसित हुए। फ्रे हरनान्दो द तालावेरा[1] आलेजो वेनेगास[2] आदि उस दिशा मे प्रारम्भ मे अग्रणी रहे। सन्त इग्नातियस ऑफ लोयोला[3] "इनक्विजिश" की धार्मिक न्याय परपरा का प्रवर्तक होने से अधिकतर निन्दा का पात्र हुआ। परन्तु उस काल के प्रवचन और पत्र गद्य की दिशा मे एक शक्तिम शैली के द्योतक हुए। उसी धार्मिक चिन्तन का समर्थन बर्नार्दिनो[4] ने भी किया और जुआन द आविला[5] ने भी। इस दूसरे का शिष्य लुइस द ग्रानादा[6] अपने प्रवचनो, उपदेशो और रचनाओ मे बडा समर्थ सिद्ध हुआ। उसके उपदेश असाधारण वाग्मिता के उदाहरण है। उसने अनेक लैटिन कृतियो के सुन्दर स्पेनी मे अनुवाद भी किये। उसके व्याख्यान रहस्यवादिता के सिद्धात भी भाषा के आधार से मधुर से मधुर वाणी मे प्रस्तुत करते है। उस रहस्यवाद का एक सतही निरूपण फ्रांसिस्को द ओसुना[7] ने भी किया। ओसुना स्पेन के उस युग का एक विशाल कृतिकार हो गया है उसमे लुइस की सी गहराई तो न थी परन्तु रहस्यवाद का स्पष्ट और सरल विवेचन उसी ने किया। उसी का अनुकरण ओलोन्जो द ओरोज्को[8] और फ्रासिस्कन जुआन द लास एन्जिलिस[9] न किया। जुआन स्वय अपनी शैली मे चित्रकार की क्षमता रखता था।

सान पेद्रो द आल्कान्तारा[10] रहस्यवाद को प्रेम का विज्ञान बना देता है। स्पेनी रहस्यवाद की पराकाष्ठा सान्ता तेरेसा द जसूज[11] ने की। यह साधुनी सर्वथा निपढ थी। परन्तु उसकी बहुश्रुत मेधा ने रहस्यवाद के क्षेत्र मे इतने मौलिक प्रतीको को रूप दिया कि उस आधार से अनेक नई रहस्यवादी धाराएँ फूट पडी। उसकी अनेक कृतियाँ उपलब्ध है, उनमे प्रसिद्ध "लिम्रो द परफेक्सिओ" (१५८५) है। उसने भगवान के स्वरूप को पहचान कर उसमे रम जाने की पुकार उठाई। वह समाधि द्वारा अनेक बार अपनी चेतना अन्तर-प्रविष्ट कर एक प्रकार की तुरियावस्था उत्पन्न कर लेती थी। उसकी कविताएँ अद्भुत रहस्य-तत्वो से सरस हुई। फ्रे लुईस द लिओन[12] तेरेसा की कृतियो का सम्पादक था। वही सन्तो के उद्गारो को एकत्र करता था। स्वय उसने अफलातूनी, इजीली और रहस्यवादी तत्वो का समुचित साहित्य प्रस्तुत किया। उसके चिन्तनो में उसका प्रकृति प्रेम प्राय

---

१ Fray Hernando de Talavera (१४२८-१५०७), २ Alejo Venegas (१४९३-१५५४), ३ St Ignatius of Loyola (१४९१-१५५६), ४ Bernardino de Laredo (१४८२-१५४५), ५ Juan de Avila (१५००-६९), ६ Luis de Granada, ७ Francisco de Osuna, ८ Alonso de Orozco (१५१२-९१), ९ Franciscan Juan de los Angeles, १० San Pedro de Alcantara (१४९९-१५६२), ११ Santa Teresa de Jesus, १२ Fray Luis de Leon

झलक जाता है। उसकी काव्य-कृतियाँ तो मधुर है ही, गद्य रचनाएँ भी कुछ कम आकर्षक नही। उसके लिरिक अपनी गेयता मे रहस्यवाद को भुला बहुत ऊँचे उठ जाते हैं। सानुजुआन द ला क्रुज[1] का जीवन जितना तप शील था उसका गद्य भी उतना ही रहस्यवादी हुआ। परन्तु उसमे एक खूवी यह थी कि वह अपने प्रतीको और उनके भावो को पहचानने योग्य वना देता था। उस दिशा मे उसकी कल्पना और शैली सहायक थी।

स्पेन के प्रारम्भिक साहित्य-निर्माण के युग मे इतिहास अथवा "क्रॉनिकल" की रचना अन्य देशो की ही भाँति सर्वथा अवैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न होती थी। तर्क हीनता उसकी शैली थी, रोचकता उसका उद्देश्य था। रेनेसाँ के युग मे इतिहास की जिस परपरा का विकास हुआ वह अपने पूर्व-पर तथा कारणो और परिणामो से भली प्रकार मडित थी। उसमे घटना के कारणो और विकास का पर्याप्त विश्लेषण होने लगा। फिलिप द्वितीय १५५६-९८ के विरुद्ध प्रवल मोस्किो विद्रोह पर दियेगो हर्तादो द मेन्दोजा[2] ने अपना "ग्रानादा का युद्ध" (गेर्रा द ग्रनादा) लिखा। कृति मे इतिहासकार ने वक्ताओ तक को उद्-धृत कर साक्षात् दृष्टा का चित्र उपस्थित कर दिया। जेरोनिमो ज़ुरिता[3] मे दियेगो की साहित्य-शैली तो न थी परन्तु आलोचक की पैनी दृष्टि उससे कही अधिक थी। इसी प्रकार इस्तेवा द गारिबे[4] फ्लोरियन द ओकाम्पो[5] आम्ब्रासिओ द मोरालेस[6] आदि ने भी अनेक दिशाओ मे ऐतिहासिक रचनाएँ की। जुआन द मार्याना[7] का "स्पेन का इतिहास" १६०१ तो एक साहित्यिक अभिसृष्टि है जिसकी शैली का सौंदर्य समसामयिक समान रचनाओ मे नही मिलता। विशप वार्तोलोमे द लास कासस[8] ने अपने इतिहास की पुकार अमेरिका के इडियनो के पक्ष मे उठाई। फ्रे जोजे द सिगुएन्जा[9] की इतिहास सम्वन्धी कृति क्लासिकल शैली मे लिखी गयी है परन्तु रचयिता की वैयक्तिक चेतना का भी पूरा विकास हुआ है।

अनेक इतिहासकारो ने तो छदोबद्ध इतिहासो की रचना की। वस्तुत उनकी कृतियो का रूप वीर-काव्यो सा हो गया। इन रचयिताओ मे प्रधान वर्नार्दो[10] वाराहोना,[11] आलोन्जो[12] फ्रे दियगो[13] आदि थे।

---

१ Sanjuan de la Cruz, २ Diego Hurtado de Mendoza, ३ Jeronimo Zurita (१५१२-८०), ४ Esteban de Garibay (१५२५-९९), ५ Florian de Ocampo (१४९५-१५५८), ६ Ambrosio de Morales (१५१३-९१), ७ Juan de Mariana, ८ Bishop Bartolome' de las Casas (१४७५-१५६६), ९ Fray Jos'e de Siguenza (१५४४-१६०६), १०. Bernardo de Balbuena (१५६८-१६२७), ११ Barahona de Soto (१५४८-९५), १२ Alonso de Ercilla (१५३३-९४), १३ Fray Diego de Hojeda (१५७०-१६१५)

उपन्यासो की परपरा तो वास्तव में जैसे सर्वत्र बाद मे चली, स्पेन में भी उसका
म्भ देर में हुआ। परन्तु वहाँ कथा-साहित्य काफी फूला-फला और उस साहित्य
निक कृतियाँ तो विदेशी कथा साहित्य की आधार बन गईं। कहना न होगा कि प्राचीन
-साहित्य अधिकतर काल्पनिक ही था यद्यपि उसमे यथार्थ का जहाँ-तहाँ योग होता
वस्तुत पहला यथार्थ तत्वो से घुला-मिला उपन्यास- "तिरान्लो व्लाश" जुआन
तोरेल[1] ने १४९० मे लिखा। फिर "एस्प्लान्दियान" "पालमैरीन द ओलिवा",
पुआरते द ग्रेकिया" और पिछले साल "दोन फ्लोरिसेल द निकिया' एक के बाद १५५१
प्रकाशित हो गए। जिन उपन्यासो ने साहित्य मे यश कमाया उनका आधार इस काल
खे गये रोमान्स ही थे। इस सम्बन्ध में इतना जान लेना ही पर्याप्त होगा कि पश्चा-
ीन उपन्यासो को अनेक बार इन रोमान्सो की ओर देखना पडा जो गद्य और पद्य
में रचे गये थे।

प्रेमियने के प्रणय को आधार बनाकर चलने वाले इन रोमासो के अतिरिक्त अनेक
कथानक भी रोचक उपन्यास के रूप में लिखे गये जिनका आधार प्रणय न होकर
का ऐतिहासिक गौरव हुआ करता था। मूरो की विजय पर इस प्रकार की अनेक रच-
हुईं। स्पेनी रोमासो की जो विशिष्ट शैली रेनेसाँ युग में विकसित हुई उसका कथानक
कतर "धूर्त" से सम्बन्ध रखता है। धूर्त सम्बन्धी उपन्यासो की उस काल अनेक रच-
हुईं। १५५४ मे रचे "लाजारिलो द तोरमेस" के तो अब तक १२२ सस्करण हो चुके
जिससे उसकी लोकप्रियता सिद्ध है। उसके रचयिता का पता नही। उस काल के कथा-
में मातिओ आलेमन[2] विख्यात थे। उसके उपन्यास "गुजमान द आल्फाराशे" में
वनी धूर्त का चित्रण हुआ है। इस प्रकार की बीसियो कहानियाँ धूर्तो, चोरो, कामुको
सैनिको विशेपत उपनिवेशो में नौकरी करने वाले के आधार पर लिखी गईं।

स्पेन के रेनेसाँ काल के उपन्यासकारो में जिस प्रतिभाशाली व्यक्तित्व ने यूरोप
ाहित्यकारो को अपने कृतित्व से अचम्भे मे डाल दिया वह मिगुएल द सैरवान्तिस[3]
उसने उन कथानको की अनेक घटनाओ का अपनी प्रसिद्ध कृति "दोन कुइजोते" (अंग्रेजी
क्विक्जोट) में पिरो दिया। उसकी कृति न केवल स्पेन में ही लोकप्रिय हुई बल्कि
यूरोपीय भाषाओ में अनूदित हुई। अधिकतर उन साहित्यो मे कथाकारो को उपन्यास
ने की प्रेरणा सैरवान्तिस की उसी कृतिसे मिली। उसी पर अनेक भापाओ के
मिक उपन्यास अवलम्बित हुए। पहले सैरवान्तिस ने "गालातिया (१५८५) लिखा"
में कविता और साहित्यिक आलोचना दोनो थे। उसने अपने "वियाजे दैल पारनासो"
ए कवियो की प्रशसा की। उसने कुछ नाटक भी लिखे उसके कुछ उपन्यास आदर्शवादी

१ Juan Martorell; २ Mateo Aleman, ३ Miguel de Cervantes

और साहित्यकार इतिहासकार फ्रे मार्तिन सार्मिएन्तो[१] उसका शिष्य था। उसके भाषा सबधी विचारो का अध्ययन और प्रचार जेसुइट पादरी लोरेन्जो हेर्वास इ पान्डुरो[२] ने किया। यह वैज्ञानिक भाषा शास्त्री था। इसी प्रकार जुआन आन्द्रेज[3] और एस्तेवान अर्तियागा[४] ने भी फेइजो की अन्य साहित्यिक प्रवृतियो का अध्ययन किया। जनता के अन्धविश्वास पर फेइजो के मित्र जोजे फ्रासिस्को द इस्ला[५] ने अपने व्यग्य उपन्यास "फ गेरुन्दिओ द कम्पाजास" द्वारा किया। साथ ही गणित के पडित दोन दियेगो द तोरेस विलारोएल[६] ने समसामयिक साहित्यिक रिक्तता का भडाफोड किया। उसने अपने "सेजोज मोरालेज (१७४३), 'विदा' और मसखरे पचागो द्वारा राष्ट्रीय ह्रास की ओर उँगली उठाई। और बौद्धिक क्रान्ति की आवश्यकता सिद्ध की।

मानव कार्यों में सापेक्ष्यता का सिद्धान्त जोजे कादाल्सो[७] ने प्रचलित किया। उसे नि शेष प्रगति में विश्वास नही। न मनुष्य की स्वाभाविक नेकी मे ही था। उसने मूर (अरब) की दृष्टिकोण से तत्कालीन स्पेन की दशा पर पत्र लिखे। जो उत्कट् व्यग्य प्रमाणित हुए। साथ ही उसने अनुवादो की शैली पर विचार प्रकट किये और यथार्थ तथा कृत्रिम ज्ञान की सही व्याख्या की। शिक्षण के सबध में भी उसने अनेक दृष्टिकोणो से विचार व्यक्त किये। विश्वकोषीय ज्ञान का वह विरोधी था। उसे एक विपय का सागोपाग ज्ञान अधिक अभीष्ट था। फ्रेच फिजिओक्रात दार्शनिको के विचारो से प्रभावित दोन गास्पर मेलकोर द जोवेलानोज[८] ने अपने "दिस्कुर्सोज" (विचारो') और सस्मरणो द्वारा सार्वजनिक शिक्षा नारी के अधिकारो और रगमचीय सदाचरण का प्रबल समर्थन किया। वह फ्रासिसी राज्य क्राति और प्रेस की स्वतन्त्रता का वैसे विरोधी था। दोन पेद्रो रोद्रिगेज द काम्पोमानेज[९] ने उसी की भाँति सार्वजनिक शिक्षा और न्याय आदि का समर्थन किया यद्यपि वह चर्च का विरोधी था।

शुद्ध साहित्य के क्षेत्र में दोन फेलिक्स मारिया समानिएगो[१०] ने देशी सामग्री के आधार पर अपने "फाबुलाज मोरालेज" लिखे। उस दिशा में विशेष यत्नवान तामास द इरियार्ने[११] हुआ जिसने प्राचीन कहानियो के दृष्टातो को समकालीन कवियो पर घटाया।

---

१ Fray Martın Sarmıento (१६९५-१७७१), २ Jesuıt P Lorenzo Hervas Y Panduro (१७३५-१८०९), ३ P Juan Andres (१७४०-१८१४), ४. P Eesteban Arteaga (ज० १७४७), ५ Jose Francısco de Isla (१७०३-८१); ६. Don Dıego de Torres Vıllarroel (१६९३-१७७०), ७ Jose Cadalso (१७४१-८२), ८ Don Gaspar Melchor de Jovellanos (१७४४-१८१०), ९ Don Pedro Rodrıguez de Campomanes (१७२३-१८०२); १० Don Felıx Marıa Samanıego (१७४५-१८०१), ११ Tomas de Irıarte (१७५०-९१)

और दोन निकासियो अल्लवारेज द सियेन्फुएगोज[1] की करुण कृतियो पर उसका खारा प्रभाव पडा। साथ ही निकासिया गालेगो[2] ने नव-क्लासिकवाद, साचेज वार्बेरो[3] ने मानवतावाद और कला मे आल्बर्तो लिस्ता[4] ने उसकी विरासत पाई। पर इसी काल धीरे-धीरे रोमाटिक और यथार्थवादी प्रवृत्तियाँ भी साकार होती जा रही थी। उनका विशेष विकास अगली सदी मे हुआ।

: ४ :

उन्नीसवीं सदी

स्पेन ने साहित्य की रचनाओ मे इतनी रोमाटिक प्रवृत्ति नही दिखाई जितनी उसके सिद्धान्तो के निरूपण में। स्पेन मे उन सिद्धान्तो का प्रचार हर्डर[5] और श्लेगेल[6] से सीख कर निकालेस बोल फावर[7] ने किया। वहाँ ओसियन शैली का विकास "एल यूरोपिया" नामक पत्र द्वारा हुआ। दुके द रिवाज[8] के "एल मोरो एक्सपोजिये" की भूमिका में गालियानो[9] ने रोमाटिक सिद्धान्तो की सबलतम प्रतिष्ठा की। १८१४ और २३ के बीच अनेक स्पेनी नागरिक फ्रास जर्मनी और इग्लैड से लौटे और वहाँ जो कुछ उन्होने उस दिशा मे जाना-सुना था उससे स्वदेश की साहित्य चेतना में अभिवृद्धि की। लापेज सोलर,[10] एस्प्रोन्सदा[11] दूरान[12] जोजे गोमेज द ला कोर्तिना[13] आदि ने ह्यूगो[14] बायरन[15] बुतरवेक[16] की कृतियो के अनुवाद प्रस्तुत कर या उनके अनुकरण मे अपनी रचनाएँ कर रोमाटिक प्रवृत्तियो का प्रचार किया। रोमास और ड्रामा सबधी जर्मन विचार भी बडी तेजी से स्पेनी साहित्य की सिद्धान्त-कृतियो मे भर चले। स्पेन की कृतियो मे फिर भी इस उधार ली हुई प्रवृत्ति का उज्ज्वल रूपायन न हो सका। उसके ऐतिहासिहक उपन्यासो और नाटको का स्तर ऊँचा न उठा। हाँ, लिरिक काव्य और कहानियो की दिशा में निश्चय ही उसने मौलिक और सफल प्रयोग किये। उन क्षेत्रो में उसने स्थानीय रग-राग का विकास किया। उस व्यापक स्थानीय रग-राग का साकेतिक नाम "कोस्तुम्ब्रिस्ता" पडा।

१८३४ से १८४४ तक दस वर्ष स्पेन मे रोमाटिक ड्रामा के थे। रगमच परिणामत

---

१ Don Nicasio Alvarez de Cienfuegos (१७६४–१८०९), २ Nicasio Gallego (१७७७–१८५३), ३ Sanchez Barbero (१७६४–१८१९), ४ Alberto Lista (१७७५–१८४८), ५ Herder, ६ Wilhelm Schlegel, ७ J Nicolas Bohl de Faber, ८ Duque de Rivas, ९ Galiano, १०. Lopez Soler; ११ Espronce Da, १२ Duran, १३ Jose Gomez de la Cortina; १४ Hugo; १५ Byron, १६ Bouterweck

प्रेम, कामुकता, घृणा पागलपन भूत-प्रेतो और लोमहर्षक दृश्यो का केन्द्र वन गया। यूरोप के अन्य देश उस रोमाटिक वीभत्सता से अभी-अभी मुक्त हुए थे। स्पेन मे उसका अभी आरभ ही हुआ था। अलौकिक का प्रादुर्भाव बारोक शैली की विश्वास सपदा थी रोमाटिक परपरा मे उपादान की टेकनीक। स्पेन मे उस क्षेत्र मे अनेक साहित्यिको ने प्रयत्न किये। फ्रासिस्को मार्तीनेज द ला रोजा[1] जिसने अपनी कृतियो की लोकप्रियता से पेरिस मे यश कमाया था। १८३४ के स्पेन मे अपनी कृति "ला कोजुरासियो द वेने-सिया" लिए आया। भावो के अन्तर्द्वंद्व मे उसी प्रकार तीखा आलोचक मारियानो जोजे द लारा[2] का "मासियाज" था। उसको उसने उपन्यास के रूप मे भी प्रकाशित किया। दोंन एन्जेल द सावेद्रा[3] की प्रसिद्ध रचना "दोन आल्वारो" अथवा नियति की शक्ति" मे उसी प्रकार भाग्य के उलट फेर है।

सावेद्रा रिवास का ड्यूक था। प्रण और रहस्य का उद्घाटन आन्तोनियो ग्रासिया गुतिएरेज[4] ने अपने "एल त्रोवादोर" (१८३६) में किया। रोमाटिक क्षेत्र के अन्य नाटककार थे—जुआन उगानिओ हार्त्जेनवुश[5] आन्तोनियो गिल इ जाराते[6] जोजे जोरिला[7] आदि। जोजे जोरिला का प्रसिद्ध नाटक "दोन जुवान तेनोरियो" (१८४४) विख्यात दोन जुआन कहानी परपरा का एक रूप प्रकाशित करता है। यह स्पेन मे एक विशिष्ट त्योहार पर सालो खेला जाता रहा है।

रोमाटिक लिरिक पहले तो विदेशी कवियो के अनुकरण में लिखे गये। फिर अपनी स्थानीय विशेषताओ से सजे। स्पेन की भाव-सपदा से ऋद्ध लिरिको का सौंदर्य अधिक निखरा, अधिक स्वाभाविक हुआ। जोजे द एस्प्रोन्सेदा[8] के वायरन के ऋण मे मुक्त होने ही उसके लिरिक अकृत्रिम वैभव से लद गये। प्रेम और करुणा की भाव-सत्ता सुनने वालो को विभोर कर चली। गुसतावो आदोल्फो वेकर[9] की रचनाएँ—"लयेन्दाज" और "रीमाज"—आदर्श प्रणय और अभिराम काव्यधारा की प्रतीक है। उनकी शैली भी अतीव प्राजल है। दान रामोन द काम्पोआमोर[10] के गभीर "दोलोराज, छुन्न और ताजे" "हुमोरादाज" और भावुक पुकारो से ध्वनित "पेकेजो पोएमाज" अपनी विविध भावनाओ मे अनुपम है।

रोमाटिक उपन्यासो का आरभ कॉस्ट प्रभावित ऐतिहासिक कृतियो द्वारा हुआ।

---

१ Francisco Martinez de la Rosa (१७८७–१८७२); २. Mariano Jose de larra, ३ Don Angel de Saavedra; ४ Antonio Garcia Gutierrez (१८१३-८४), ५ Juan Eugenio Hartzenbusch (१८०६-८०), ६. Antonio Gil Y Lzarate (१७९६-१८६१), ७ Jose Zorilla, ८ Jose de Espronceda, ९ Gustavo Adolfo Becquer, १० Don Ramon de Campoamor (१८१७-१९०१)

तोलेस्फोरो द त्रेबा इ कोसिओ[1] का "गोमेज आरीयाज" (१८२८) पात्रीसियो द ल एस्कासूरा[2] का "नीरेनी रोक" (१८३५) एगिलक इ कारास्को[3] का "एल सेजोर द बाम्बिव्रे" (१८४४) आदि सभी ऐतिहासिक उपन्यास थे। उजेनियो द ओकोआ[4] ने अपने उपन्यास "एल आतो द फे" (१८३७) मे दोन कारलोस की कथा दुहराई। नाट्य-कार और लिरिक कवि गर्त्रेदिस गोमेज द आवेलानेदा[5] के अनेक उपन्यासो में कम से कम दो—"मैंजिको" (१८४६) और दोस मुजेरेस (१८४३)—हृदयग्राही हैं। निकोमिदिज पास्तोर दियाज[6] के उपन्यास "विलह्मोंसा आ ला चीना" (१८५८) में करुण-भावुकता का विकास हुआ।

धीरे-धीरे यथार्थवादी भाव-धारा भी उपन्यासो में बही। पेरेज़ एसृख[7] और जुआन द आरिजा[8] ने यथार्थवादी उपन्यासो का आरम्भ किया। अर्द्ध जर्मन फर्नान कावालेरो[9] ने लाक्षणिक रूप से यथार्थवाद का अपनी कृतियो में उपयोग किया। उसका उपन्यास "ला गोविओता" (१८४९) सागर-पक्षी-मल्लाह की काया की स्वाभा-विक कहानी है। धूप की तेजी, सडको का शोर, बच्चो, की चिल्ल-पो, लोगो की दौड-धूप इस स्वाभाविकता से चित्रित हुए है कि समाज जैसे कहानी में जीवित हो उठा है। उसके "ला फामीलिया द आल्वारेदो (१८५६) मे उस किसान की कहानी है जो डाकुओ के साथ रहने लगा है और उनके साथ रह कर भी वह उनसे भिन्न है।

दोन पेद्रो आन्तोनियो द आलारकौन[10] की सुन्दरतम कृति "तिकोनी टोपी" (१८७४) है। उसमे पर-पत्नी-गमन और प्रतिशोध का प्लॉट विनोद से मुखरित हो उठा है। उसकी दो रचनाएँ "एल एस्कान्दालो" (१८७५) और "एल निजो देला बोला" (१८८०) है।

"मसीआज" नाटक के रचयिता ने अपने और अन्य पत्रो में सामाजिक रीति-रस्मो के विरुद्ध अनेक व्यग्य लिखे। अपने इन निबन्धो के लिए मारियानो जोजे द लारा[11] प्रसिद्ध हो गया है। उसके निबन्धो ने यथार्थ की ओर लोगो का रुख स्पष्टत फेर दिया। मेसोनेरो रोमानोज[12] ने अपनी रचनाओ मे पुराने माद्रिद के दृश्य चित्रित किये। उसके

---

१ Telesforo de Trueba Y Cossio (१७९९-१८३५), २ Patricio de la Escosura (१८०७-७८), ३ Enrique Gil Y Carrasco (१८१५-४६), ४ Eugenio de Ochoa (१८१५-७२), ५ Gertrudis Gomez de Avellaneda (१८१४-७३), ६ Nicomedes Pastor Diaz (१८११-६३), ७ Perez Esrich (१८२९-९७), ८ Juan de Ariza (१८१६-७६), ९ Fernan Caballero, १० Don Pedro Antonio de Alarcon, ११ Mariano Jose de Larra, १२ Mesonero-Romanos (१८०३-८२)

सस्मरणात्मक लेख भी बडे सुन्दर हैं। दोन सेराफीन स्तेवानेज काल्देरोन[१] की कृतियाँ रग-बिरगे लोक-चित्रो से भरी हैं। इसी प्रकार जोजे मारिया काद्रादो[२] ने सारे स्पेन के विविध सौंदर्यो का बखान किया। जाइमे बाल्मेज[३] ने अपने "एल क्रितेरियो" (१८४५) मे इतिहास के तर्क सगत दर्शन का विकास किया है। जुआन दोनोसो कोर्टेस[४] के उदारवादी विचारो तथा समाजवाद पर आघात किये।

कास्तुम्ब्रिस्ता (स्थानीयता) के आन्दोलन ने यथार्थवादी उपन्यास को अपने सिद्धान्त की चोटी पर पहुँचा दिया। जोजे मारिया द पेरेदा[५] ने स्थानीय रग अपनी कृतियो पर खूब चढाए। उसकी प्रवृत्ति धार्मिक थी और भक्त की निष्ठा से उसने इस दिशा मे साधना की। वह उदार मध्यवर्गीयो पर प्रहार करते समय भी उनके प्रति सदय होता है, विशेष कर स्वतत्र-विचारको के प्रति उनके प्रोत्साहन पर। वह कभी अपने देहातो को नही भूलता। उसकी यथार्थवादी प्रतिभा "सोतिलेजा" (१८८५) और "पेंजाज अरीबा" (१८९५) मे पूर्णतया खुल पडी है। पहली में मछुओ की कहानी है, दूसरी में एक नगर का निवासी प्रकृति के जादू का शिकार हो आस्ट्रिया के पर्वतो पर लुभा जाता है। उसका चरित्र-चित्रण तो इतना प्रौढ नही है, परन्तु उसका वर्णन अनुपम सुन्दर होता है। उसकी शैली बडी मनोहर है। सुन्दर डायलॉगो से भरी, सक्षिप्त ललित पदावली से सयुक्त जिसमे भाषा की काकली लोकबोली के हाशिये से चमक उठी है।

पेरेदा का उदार चेता मित्र बेनितो पेरेज गाल्दोज[६] उससे भी महान् साहित्यकार है। उसकी कृतियो का दायरा पेरेदा के दायरे से कही बडा है और अपनी उन्ही कृतियो में वह स्पेन के समसामयिक समाज को ढाल देता है। अपनी ४७ "नेशनल कहानियो" और ३३ "समकालीन उपन्यासो" मे उसने तत्कालीन समाज, राजनीति, रुढिवादी परपरा पर राष्ट्रीय, सुधारवादी और आवश्यकतावश क्रातिकारी दृष्टिकोण से विचार किया है। उसकी रचनाओ मे प्रधान "दोजा परफेकता" (१८७६) "ग्लोरिया" (१८७७) और "ला फामिलिया द ल्योन रोच" (१८७९), है। इनमे से पहले मे उसने धार्मिक असहिष्णुता का वर्णन किया है। (तब का स्पेन यहूदी तथा अन्य विधर्मियो के रक्त में नहा रहा था।) दूसरे में जातीय असहिष्णुता का सत्यानाशी परिणाम प्रदर्शित है (ग्लोरिया एक यहूदी से प्रेम करने लगती है) और तीसरा ढुलमुल स्वतत्रता की ट्रेजेडी प्रस्तुत करता है।

---

१ Don Serafin Estebanez Calderon (१७९९-१८६७), २ Jose Maria Quadrado, ३ Jaime Balmes (१८१०-४), ४ Juan Donoso Cortes (१८०९-५३), ५ Jose Maria de Pereda, ६ Benito Perez Galdos

दोन जुआन वालेरा[1] का दृष्टिकोण अधिक मनोवैज्ञानिक है और शैली अधिक प्राजल। "आमोर ई मीस्तिका एस्पाजोला" उसका आलोचनात्मक अध्ययन है जिसमे तप की निष्ठा रूपायित है। उसका उपन्यास "पेपिता जैमेनेज" (१८७४) व्यग्यपरक है जिसमे प्रेम की महिमा मूर्त हो उठी है। तप और प्रेम की ही विविध स्थितियाँ और पारस्परिक तनाव वालेरा के "एल कोमेन्डादोर मेन्दोजा" (१८७६) "दौन्जा लूज" (१८७९) तथा "मोर्समोर" (१८९९) मे भी है। जीवन के प्रच्छन्न चित्र उसके "लास इलजिओनेज देल दाक्तर फास्तीनो" (१८७५) और "पासार्से द लिस्तो" मे खुल पडे हैं। पिछली कृति का नायक तो अपनी कमी के कारण अपने को अपनी पत्नी के अयोग्य ठहराता है और उधर वह उसके साथ बराबर विश्वासघात करती जा रही है। वालेरा का एक अन्य उपन्यास "गेनिओ इ फिगुरा" (१८९७) भी इसी व्यग्य-विरोध को प्रकाशित करता है। गभीर दृष्टिकोण और मनोवैज्ञानिक चेतना मे तो ये उपन्यास निश्चय ही प्रशस्य है। परन्तु डायलॉगो का विकास सामाजिक स्तर पर नही हो पाता और स्वाभाविकता पाण्डित्य के घटाटोप मे लोप हो जाती है।

अकृत्रिम प्रकृतिवाद का पक्ष काउन्टेस एमीलिया पार्दो वजान[2] ने अपने प्रसिद्ध पैंफ्लेट "ला केस्तियो पाल्पितान्ते" (१८८३) मे सम्हाला। स्पेन के प्रकृतिवादी (नेचुरलिस्टिक) उपन्यासो में पहली बार एमीलिया ने स्थानीय चित्रण मे मनोवैज्ञानिक सूझ से काम लिया। उसकी सर्वोत्तम कृति "लोस पाजोज द अलोआ" (१८८६) है। उसका उपसहार "ला माद्रे नाचुरालेजा" (१८८७) है। उस रचना मे उसने गालीशिया के एक प्राचीन हासोन्मुख कुल का अध्ययन किया है। "ला त्रिबूना" (१८८२) भी उसकी प्रौढ कृति है जिसमे एक विद्रोही नारी की कहानी है। "एल किज्नेन द विलामोर्ता" (१८८५) में एक रोमाटिक और कामुक क्लर्क के लिए सत्यानाश का चित्र है। 'मोरिजा' (१८८९) की करुण कहानी मे यत्र-तत्र विनोद की लौ चमक जाती है। दोना एमीलिया[3] छोटी कहानियाँ भी उसी क्षमता से लिखती है जिससे अपने उपन्यास "लास मेदियास रोजाज", और 'रिकोसिलिआदोज' उसकी सुन्दर सफल कहानियाँ है।

समाज के भ्रष्टाचार और चर्च के छल-कपट का भडाफोड आर्मान्दो पालसियो वाल्देज[4] अपने उपन्यासो मे करता है। "मार्ता ई मारिया" (१८८३) "ला हर्माना सान सान सुल्पिसियो' (१८८९) और 'ला फे' (१८९२) इसी परपरा के उपन्यास है। 'ला एस्पूमा' मे पार्थिव जीवन का एक विशेष चित्र उतर पडा है। साथ ही अभिजात जीवन का 'एल

१ Don Juan Valera, २ Countess Emilia Pardo Bazan, ३ Dona Emilia, ४ Armando Palacio Valdes

माइस्त्रोन्ते' (१८९३) में और 'कादिज' के वहिरान्त का "लोस माजोस द कादिज" (१८९६) में। उसकी छोटी कहानियाँ भी बडी प्रौढ हैं। सीलो में बच्चा अपने पिता को डूबते हुए देखता है। गजब की शक्ति है इस कहानी में।

जासिन्तो ओक्तावियो पिसोन[1] के प्रकृतिवाद (नेचुरलिज्म) को उसकी कला के लिए कला प्रवृत्ति ने विकृत कर दिया है। वह इस विचार का समर्थक तो नही है। परन्तु उसकी भाषा की सुन्दरता और शब्दो का एकान्ततम चयन इसकी पुष्टि करते हैं। उसके 'लाजरो', 'पेकेजेसेज' आदि इसके प्रमाण हैं। पादरे-लुइस कोलोमा[2] ने भी कैथोलिक सिद्धान्तो और मानवीय नेकी पर जोर देने के लिए प्रकृतिवादी लक्षणो और दृश्यो का उपयोग किया है।

उस काल में रगमच का भी नया सुधार हुआ। नाट्यकार, गीतकार अभिनेता, अभिनेत्रियो ने भी उस दिशा मे अनेक नई सूझें प्रदर्शित की। उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में तो सभी प्रकार के नाटको की स्पेन मे बाढ सी आ गई। जोजे एकागारे[3] ने अकेले ६० नाटक लिखे जिनमें समसामयिक जीवन का प्रतिबिब था। उस काल के बीसियो नाट्यकारो मे वस्तुत साहित्यिक और सैद्धान्तिक मूल्यो को नाट्यकारिता की टेकनीक के साथ सही सयोग करने वाला विचक्षण नाट्यकार जाकिन्तो वेनावेन्ते[4] था। उसके नाटको का मूल्य अन्तर्राष्ट्रीय है। यद्यपि स्पेन उसमें सर्वत्र वोलता है। उसकी कृतियो का मूलाधार नेकीवदी है।

: ५ :

वर्तमान काल

१८९८ के युद्ध ने स्पेन की राजनीति कुण्ठित कर दी। उसका गौरव प्राय नष्ट हो चुका था और उसके उपनिवेश स्पेन के साम्राज्यवादी शिकजे मे आजाद हो चुके थे। स्वयं उनमे अपना साहित्य ऊँचे तवके का एक जमाने से प्रस्तुत हो रहा था। फिर भी यदि उन पर राजनीतिक सत्ता नही स्थापित की जा सकी तो कम मे कम उन उपनिवेशो के साथ सास्कृतिक और साहित्यिक एकता तो स्थापित की ही जा सकती थी। इसी विचार के अनेक पोषक पिछली सदी के अन्त मे स्पेन में थे। आलोचको ने उस दिशा की ओर सकेत भी किया।

---

१ Jacinto Octavio Picon (१८५३-१९२४); २ Padre Luis Co'oma (१८५१-१९१४); ३. Jose Echegaray (१८३२-१९१६); ४ Jacinto Benavente

उस दिशा मे अग्रणी बार्तोलोम जोजे गालार्दो[1] था। उस एकता के क्षेत्र में दोन मासलीनो मेनेन्देज ई पेलायो[2] उससे भी आगे बढ गया। उसने कैथोलिक धर्म को ही तत्व-महत्ता और साहित्य तथा कला सौंदर्य का आधार माना। अपनी महान् कृति में उसने अरबो और यहूदियो के सास्कृतिक आदानो को भी अगीकार किया। वह साहित्य के रसास्वादन मे सौंदर्य विश्लेषण की शक्ति अनिवार्य मानता है, साथ ही साहित्यिक समीक्षा के लिए भाषा-शास्त्रीय और ऐतिहासिक ज्ञान आवश्यक।

उस राष्ट्रीय ह्रास के विषय मे जो स्पेन में विवाद चला उसमें अनेको धीमानो ने भाग लिया जिससे आलोचना, यद्यपि सदा वह आलोचना साहित्यिक ही न थी परन्तु उसमे प्रौढ चिन्तन शैली का प्रयोग तो निरन्तर ही हुआ, साहित्य को शक्ति मिली। इन आलोचको मे प्रधान आगेल गानिवेत[3], मिगुएल द उनामुनो[4] आजोरिन (जोजे मार्तीनेज)[5] और जोजे ओर्तेगा इ गासेत[6] थे। अन्य विशिष्ट और विवादास्पद विषयो पर निम्नलिखित समीक्षको और चिन्तको ने अपने विचार प्रगट किये। रूबियो इ ओर्स[7] मादरियागा[8] रोद्रीगेज मरीन[9], रामोन मेनेन्देज पिदल,[10] मिगुएल आर्तिगिज[11], सेन्ज रोद्रिगेज[12] वालुवुएना प्रात[13], एन्त्राम्बासागुआज[14] दामासो[15], अमादो अलोन्सो[16], और दिआस प्लाजा।[17] ये प्राय सभी जीवित हैं।

हमारे समकालीन राजनीतिक और सामाजिक उपन्यासकारो में प्रधान पिओ बारोजा[18] है। उसने शोहदो, लुटेरो आदि की मुसीबतो का अपने उपन्यासो मे चित्रण किया है। 'ला-बुस्का', 'माला हिएर्बा' आदि उसी प्रकार की कृतियाँ हैं। पूंजीवाद के विरुद्ध विद्रोह कर सकने वाले सर्वहाराओ का चित्रण उसके 'आरोरा रोजा' (लाल सवेरा १९०४) मे हुआ है। यह उपन्यास रूसी क्राति के पहले का है। परन्तु अपनी किसी रचना मे बारोजा स्पेन को नही भूल पाता। विन्सेन्ते ब्लास्को इबानेज़[19] ने भी अनेक उपन्यास लिखे हैं। उसकी कृतियाँ अधिकतर धर्म-विरोधी हैं। उसका आपोकालिप्से के चार घुडसवार (१९१६) बहुत लोकप्रिय हो गया है।

रामोन पीरेज द आयाला[20] ने अपने उपन्यासो में धर्मव्यवस्थित गार्हस्थ्य सदाचार

---

१ Bartolome Jose Gallardo (१७७६-१८५२), २ Don Marcelino Menendez Y Pelayo, (१८५६-१९१२), ३ Angel Ganivet, (१८६२-९८), ४ Miguel de Unamuno, ५ Joes Martinez ruiz (जन्म १८७४), ६ Jose Ortega Y Gasset, ७ Rubio Y Ors, ८ Madariaga, ९ Rodriguez Marin, १० Ramon Menendez Pidal, ११ Miguel Artigas, १२ Sainz Rodriguez, १३ Valbuena Pratt; १४. Entrambasagua, १५ Damaso, १६ Amado Alonso, १७ Dias-Plaja, १८ Pio Baroja (ज० १८७२), १९ Vicente Basco Ibanez (१८६७-१९२८), २० Ramon Perez de Ayala (ज० १८८०)

के स्थान पर विश्रृंखलित यौन-सबध का चित्रण किया है। उसमें व्यग्य भी कम नही, परन्तु वह उसके मनोवैज्ञानिक सविस्तार रसिया जीवन के चित्र को नीरस नही होने देते। यौन-सौंदर्य जो जीवन से हट कर स्वप्न देश मे चला जाता है। रामोन मारिया देल वाले-इक्लान[1] ने विशेष अकित किया है।

लिरिक काव्य की आधुनिक प्रेरणा वस्तुत स्पेनी अमेरिका से आई, रूबेन दारियो[2] से। उसी ने आधुनिक कवियो के लिए लिरिक का मार्ग प्रशस्त किया। आन्तोनिओ माकादो[3] के लिरिक सौंदर्य सत्य और भगवान के लिए अपने अन्तर मे झाँकते हैं।—अन्धकार से अन्धकार की ओर! एक उदाहरण—

> कल मैंने स्वप्न देखा कि मैंने देखा भगवान् को और
> कि मैं बोला भगवान् से और मैंने कि भगवान् ने
> मेरी बात सुनी—तब मैंने स्वप्न देखा कि मैंने स्वप्न देखा

जुआन रामोन जिमेनेज[4] ने भी अन्तर्निविष्ट चेतना से ही अपना मार्ग आलोकित किया है। उसके मूलाधार निराशा, शून्य और माया (इलूजिओन) हैं। उससे अधिक सार्थक कविता जोजे मारिया गाब्रिएल इ गलान[5] और पेद्रो सालिनास[6] की हैं। फेदेरिको गार्सिया लोर्का[7] सुरियलिस्ट (अवचेतन अथवा अतिचेतन) कवि हैं। इनके अतिरिक्त अनेक कवि स्पेन में आज विविध प्रकार के काव्य प्रयोग कर रहे हैं। पिछले गृहयुद्ध के बीच और बाद भी कुछ अच्छे साहित्य का स्पेन मे सृजन हुआ है। परन्तु वस्तुत सुन्दर साहित्य विशेषत काव्य की अभिसृष्टि स्पेन में नही स्पेनी अमेरिका मे हुई है।

: ६ :

स्पेनी अमेरिका

सोलहवी सदी में ही अमेरिका के स्पेनी उपनिवेशो में किसी न किसी मात्रा मे साहित्य रचना होने लगी थी। अमेरिका मे अनेक स्पेनी बोलने वाले देश हैं। जैसे उत्तर अमेरिका मे मैक्सिको, और दक्षिण अमेरिका मे चिली, क्यूबा, कोलबिया, वेनेजुएला, ग्वातामाला, इक्वेडोर, पेरू, आर्जेन्टाइना, उरूगुए, ब्राजील आदि। यहाँ हम नितान्त सक्षेप में, कुछ, केवल कुछ (अधिकतर आधुनिक) साहित्यकारो का उल्लेख करेंगे। ये

---

१ Ramon Maria del Valle-Inclan (१८६९-१९३६), २ Rubendario, ३ Antonio Macnado, (ज० १८७५) ४ Juan Ramon Jimenez (ज० १८८१) ५ Jose Maria Gabriel Y Galan (१८७०-१९०५), ६ Pedro Salinas (ज० १८९२), ७, Federico Garcia Lorca, (१८९९-१९३६)

अधिकतर ऐसे होगे जिन्होंने अपना प्रभाव स्वदेश के साहित्य पर डाला है, अथवा अन्त-र्राष्ट्रीय यश कमाया है। अन्यथा विस्तार इतना बडा है कि प्रधान साहित्य-कारो, अथवा स्पेनी अमेरिका की साहित्यिक प्रगति का साधारण परिचय भी स्थान की असुविधा उत्पन्न कर देगा।

आर्जेन्टिना मे यथार्थवादी ड्रामा की परिणति फ्लोरेन्सिओ सान्चेज[1] ने की। वह पैदा तो उरूगुए मे हुआ था परन्तु जीवन उसने अधिकतर आर्जेन्टिना में बिताया। सान्चेज इब्सन का अनुयायी था और प्लॉट के निर्माण मे उसकी प्रतिभा अद्‌भुत क्षमता रखती थी। उसके चरित्र स्पष्टाकृतिक हैं और देहात तथा नगर दोनो के जीवन से आकृष्ट हुए हैं। दर्शको में अपने नाटको द्वारा भावान्दोलन उत्पन्न करने में वह बेजोड है। राष्ट्रीय प्रभाव भी उसमे काफी है। वह स्वय समाजवादी विचारो से प्रभावित था। उसने प्राय २० नाटक लिखे जिनमे सबसे अधिक प्रशसा "मीजो एल दोतोर" (१९०३) और "ला ग्रिंगा" को मिली है।

वर्तमानवादी यथार्थ शैली के साहित्यिको में अग्रणी पेरू का रहने वाला मनुएल गोन्जा-लेज प्रादा[2] और क्यूबा का जोजे मार्ती[3] थे। प्रादा, पेरू के विचार क्षेत्र का नेता था और साहित्य में भी वह शक्तिमान आलोचक हो गया है। उसने रुढिवादिता पर गहरा आघात किया और राजनीतिक तथा धार्मिक व्यवस्थाओ पर उसने निर्भीक और निर्दय चोट की। कोई शक्ति उसे उसके मार्ग से हटा न सकती थी। न उसे धन का लालच जीत सकता था न दण्ड का भय। वह देश के तरुणो की नवचेतना के क्षेत्र में प्रेरणा बन गया। गद्य की उसकी शैली नितान्त प्रखर थी। वह बडी ऊँची कोटि का कवि था। उसने छन्द को कुछ नए रूप और काव्य की भाषा को नए शब्द दिये। जोजे मार्ती क्यूबा की आजादी का पहला स्तम्भ था। अत्याचार के प्रति घृणा और समकालीन व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह उसकी कृतियो को गति प्रदान करते थे। दो-दो बार वह देश से निर्वासित कर स्पेन भेज दिया गया। फिर न्यूयार्क में रहकर वह क्यूबा की सेवा में तत्पर हो गया। १८९२ में उसने एक क्रांति-कारी दल का निर्माण किया। वह लडते हुए मारा गया। क्यूबा का तो वह राष्ट्रीय हिरो था। उसका साहित्यिक प्रभाव उसके राजनीतिक प्रभाव से भी ऊँचा था। वह अमेरिका के नितान्त मौलिक लेखको मे से था। उसकी शैली में गजब की मर्म-स्पर्शिता और असा-धारण शालीनता थी।

रूबेन दारियो[4] का उल्लेख अन्यत्र किया जा चुका है। वह स्पेनी अमेरिका के

---

१. Florencio Sanchez (१८७५-१९१०), २. Manuel Gonzalez Prada (१८४८-१९१८); ३. Jose Marti (१८५३-९५), ४. Ruben Dario (१८६७-१९१६)

कवियो मे सबसे महान् था। वहाँ का वही पहला पेशेवर लेखक भी था। अपनी कृति "आजूरे" (१८८८) द्वारा उसने, वर्तमानवादी आन्दोलन का सूत्रपात किया। और "प्रेजाज प्रोफानाज" (१८९६) द्वारा उसकी परिणति की। स्पेन और स्पेनी अमेरिका दोनो पर उसका काफी गहरा प्रभाव पडा। उसकी प्रतिभा असामान्य थी और छन्द की दिशा में भी उसने कुछ नए प्रयोग किये। "जीवन और आशा के गीत" (१९०५) में उसकी कविता नितान्त सरल और अद्भुत सुन्दर वन पडी है। उसने "याकी" साम्राज्यवाद का प्रवल विरोध किया। वह उत्पन्न तो दूर के नीकारागुआ मे हुआ था परन्तु घूमता यूरोप और उत्तर अमेरिका मे रहा।

स्पेनी अमेरिका के गद्यकारो में उरूगुए के जोजे एन्रिक रोदो[1] का स्थान वडा ऊँचा है। वह निवन्धकार और दार्शनिक था। उसने अपने बाद की पीढी पर विचारो से गहरा प्रभाव डाला। उसका प्रधान ग्रन्थ "आरिएल" था। उसकी शैली प्राजल और प्रभावशाली है। वह स्पेनी अमेरिका का सबसे वडा निवन्धकार माना जाता है। उसने चिन्तन के अतिरिक्त साहित्यिक समीक्षा में भी निवन्ध लिखे। उसके निवन्धो की भाषा वडी अलकृत है।

वर्तमानवाद साहित्य के प्रधान स्पेनी निर्माताओ में ही रूफिनी वलाको फोम्वोना[2] भी था। वह उपन्यासकार और लेखक था। उसने वेनेजुएला के समाज पर अपना गहरा प्रभाव डाला। वह अत्याचार तथा राजनीतिक असभ्यता का प्रवल विरोधी था और अपना अधिकतर जीवन उसे प्रवास मे ही विताना पडा। उसकी शैली का भी काफी अनुकरण हुआ। उसका उपन्यास "केन्तोज अमेरिकानोज" (१९०४) में वेनेजुएला की राजनीतिक समस्याओ का अच्छा प्रतिविम्व मिलता है।

स्पेनी अमेरिका के उत्तर वर्तमानवादी साहित्यिको में प्रधान आर्जेन्टिना के मानुएल गाल्वेज[3] और रिकार्दो गिराल्दिज[4] उरुगुए के होरासिओ किरोगा[5], मैक्सिको के मार्यानो आजुएला[6], क्यूवा के कार्लोस लोवेहरा[7], कोलम्विया के जोजे उस्तानिओ रिवेरा[8] और वेनेजुएला के रोमूलो गाले गोस[9] गिने जाते हैं। इन्होने अपने-अपने देश में उपन्यास के क्षेत्र मे काफी नाम कमाया। गाल्वेज ने आर्जेन्टिना के जीवन को अपनी कहानियो और उपन्यासो मे चित्रित किया। उसने अपने उपन्यासो मे वेश्या से लेकर कैथोलिक

१. Jose Enrique Rodo (१८७२-१९१७), २. Rufino Blanco Fombona (१८७४-१९४५); ३ Manuel Galvez (ज० १८८२); ४. Ricardo Guiraldes (१८८६-१९२७), ५. Horacio Quiroga (१८७८-१९३७); ६ Mariano Azuela (ज० १८७३), ७ Carlos Loveira (१८८२-१९२८), ८ Jose Eustacio Rivera (१८८९-१९२८); ९. Romulo Gallegos (ज० १८८४)

मिशन तक का अकन किया है। उसका सर्वोत्तम उपन्यास "नार्मल स्कूल की शिक्षिका" है। किरोगा स्पेनी अमेरिका का सुन्दरतम कहानीकार माना जाता है। उसकी तुलना पो और मोपासाँ के साथ की जाती है। वर्णन की दृष्टि से उसकी "सोलिटेयर", "सिर कटी मुर्गी" और "किराये के हाथ" नामक कहानियाँ उसकी कृतियो मे सुन्दरतम है। आजुएला ने वैद्य का पेशा करते हुए भी साहित्य में बडा नाम कमाया। उसकी प्रारभिक कृतियो से ही सर्वहारा वर्ग के प्रति उसका दायित्व प्रकट हो गया। उसने मैक्सिको की क्राति सबधी उपन्यास भी अनेक लिखे। अधिकतर वे मैक्सिको नगर के निचले स्तर के लोगो का अकन करते है।

"लोस द अबाजो" (१९१५) अनेक समीक्षको की दृष्टि मे उसकी सफलतम कृति है। लोविहरा क्यूबा का सबसे महान् उपन्यासकार है। वह समाज का प्रबल आलोचक है। उसने अपने देश के सर्वहाराओ की स्थिति सुधारने मे जीतोड परिश्रम किया। अपने उपन्यास "अमर" मे उसने तलाक के कानून की पुकार की। उसका अतिम उपन्यास "जुआन" उसकी सबसे सुन्दर कृति है। वह असाधारण यथार्थवादी है और उसने अपनी कृतियो मे सामाजिक समस्याओ पर विचार किया है। उसके चरित्र क्यूबा के जीवन से जैसे सीधे ले लिये गये है। उसने साहित्य के निर्माण मे सौदर्य से अधिक सत्य को महत्त्व दिया। रिवेरा की सुन्दरतम रचना "वोरतेक्स" है। उसमें उसने कोलम्बिया के फैले मैदानो और जगलो का चित्र खीचा। उसके चरित्रो के चित्रण ने रबड उत्पन्न करने वालो के पक्ष में ससार को जीत लिया। उनकी दयनीय स्थिति को उसने खोलकर रख दिया और उनको सताने वालो की स्वार्थपरता पर घने आघात किये। रिवेरा ने अपनी कविताओ का भी एक सग्रह प्रकाशित किया था। गोलेगोस अपने उपन्यास "दोया बर्बर" (१९२९) द्वारा जगत्-प्रसिद्ध हुआ। उसके माध्यम से वेनेजुएला का जीवन ससार के साहित्य मे मूर्त्त हुआ। उसकी इस कृति मे सभ्यता और बर्बरता के सघर्ष का अकन है।

चिली के साहित्यिक जीवन में लुसिला गोदोय अल्कायागा[1] ने भी पर्याप्त यश अर्जित किया। उसका कवि नाम गाब्रियेला मिस्त्रलथा। गाब्रियेला उच्चकोटि की कवियित्री है और निचले वर्ग के पक्ष में अधिकतर रचनाएँ करती है। उसके आकर्षण के विशेष केन्द्र माँ और बच्चे भी है। उसकी कविताओ मे बडी सादगी, गेयता और भावुकता है। मृत्यु सबधी सॉनेटो ने उसे पर्याप्त यश दिया। १९४५ मे उसे नोबुल पुरस्कार मिला।

वर्तमानवाद काव्य का निकटतम विकास एक नई दिशा में हुआ। जिसे सावधि फ्रेंच लिरिककारो से प्रभावित कवि "शुद्ध काव्य" कहते है। इस क्षेत्र के कवियो मे टेकनीक की मौलिकता का विशेष पक्षपात है। उन्होने अधिकतर तुकान्त छन्द का त्याग कर अतु-

---

१ Lucila Godoy Alcayaga (ज० १८८९) or Gabrielamistral

कान्त छन्द का प्रयोग किया है और उस दिशा में अनेक नयी शैलियाँ चलाई हैं। उनकी कविता (गद्य भी) सरल होती हुई भी अनेक नयी प्रतीको से भरी होती है। और उनकी उपमाएँ सर्वथा विचित्र। स्पेनी अमेरिका मे इस क्षेत्र के कवियो मे प्रधान मैक्सिको के तोरेसबोदेत[१] के पद्य और गद्य दोनो स्पेनी अमेरिकी साहित्य की परिवर्तनशील प्रवृत्तियो के साथ ही उसके निजी विकास के भी प्रमाण है। उसकी शैली में सरल से सरल से लेकर नितान्त अवचेतन 'सुपर रियलिज्म' तक का विकास प्रस्तुत है। पहली स्थिति के द्योतक उसके "गीत" (१९२२) है और दूसरी का उसका "निर्वासन" (१९३०)। उसकी सुन्दरतम कृतियाँ नितान्त कवित्वपूर्ण गद्य मे है। उसकी शैली में गजब की साहित्यिक शालीनता है। नेरूदा[२] का प्राकृत नाम नेफताली रेयस है। वह आज के स्पेनी-अमेरिकी तरुण कवियो मे सबमे प्रतिभाशाली है। उसके प्रारभिक सग्रह "दावत का गीत"—ने ही उसकी गहरी काव्यानुभूति का परिचय दिया था, यद्यपि उसकी प्रतिभा की प्रतिष्ठा एकान्त वर्तमानवादी कृति "कैंपुस्कुलम्" से हुई। उससे उसकी मेवा की गहराई का परिचय मिला। १९२७ से जो वह राजनीतिक दौत्य के प्रसग में देश-देश घूमता रहा है उससे उसका कृतित्व और भी चमक उठा है। पहले उसकी कविताओ में एक आत्मगत निष्ठा थी और रोमाटिक प्रवृत्ति से बोझिल निराशा का अकन होता था। परन्तु आज नेरूदा ससार के जन कवियो मे अग्रणी है। राजनीतिक स्वार्थपरता को उसने वहुत पास से देखा है। और उसके विरुद्ध उसकी लेखनी ने बगावत की है। उसका स्वर आज सर्वहारा वर्ग के थके नयनो मे प्राण फूंक रहा है। वह साम्यवादी यथार्थवादी है और उसकी कविताएँ निरन्तर 'प्रोलोतारिएत' के अधिकारो तथा शाति के पथ मे मुखरित हो रहीं है। उसकी अनेक कविताएँ आज देश-देश के मजदूरो और उनके अधिकारो के लिए लडने वालो की जबान पर है। परन्तु स्टालिनग्राड वाली कविता तो नितान्त असाधारण है। उसमे अनुपम शक्ति और गीत है।

---

१ Jaime Torres Bodet (ज० १९०२); २ Pablo Neruda (Neftali Reyes ज० १९०४)

२५. स्वीड साहित्य

: १ :

मध्यकालीन साहित्य बाइबिल के अनुवाद

स्वीडन मे लिपि का पर्याप्त प्रयोग प्राचीन काल से ही होने लगा था। वहा ८०० ई० से भी पूर्व के अभिलेख मिले हैं। इनसे ज्ञात होता है कि वहाँ लिरिक और वीर काव्य तभी लिखे जा चुके थे। नार्वे और आइसलैंड की भाँति "एद्दा" साहित्य-सा भी कुछ प्रस्तुत हो चुका था। ११वी सदी के आरम्भ में ईसाई धर्म के प्रचार के वाद वहाँ का वह साहित्यनष्ट कर दिया गया। प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य प्रान्तीय न्यायालयो के कानून से सम्वन्ध रखता है।

१३ वी सदी तक स्वीडन का दक्षिणी और पश्चिमी यूरोप से सम्वन्ध स्थापित हो चुका था और उसके विद्यार्थी पेरिस यूनिवर्सिटी में पढने लगे थे। मध्यकालीन साहित्य की विख्यात साहित्यिकारिणी सन्त बर्गिता[1] थी। उसके प्रवचन यूरोप मे लिखे-पढे जाने लगे और उसका वादस्तेना का मठ शिक्षा का केन्द्र वन गया। मध्यकालीन धर्मेतर साहित्य अधिकतर छदोवद्ध इतिहास था। तव की कुछ कविताएँ, वैलेड और लोकगीत मिली हैं।

१५२७ मे स्विडन प्रोटेस्टेंट सप्रदाय का हिमायती होने से चर्च की सरक्षा से अलग हो गया जिससे उसकी शिक्षा को कुछ क्षति हुई। स्वीड ओलौस पेत्री[2] लूथर[3] का शिष्य था। उसने तत्कालीन स्वीड साहित्य को अपनी रचनाओ से पुष्ट किया। उसके प्रवचनो की शैली अत्यन्त प्रौढ है। वाइविल की "नई पोथी" का उसका अनुवाद इतना सुन्दर हुआ कि पेत्री "स्वीड गद्य का जनक" कहलाने लगा। १७ वी सदी मे जो स्विडन मे एक प्रकार का पुनर्जागरण हुआ उससे उस देश के साहित्य का वडा लाभ हुआ। १४७७ में ही स्थापित "उपसाला" यूनिवर्सिटी[4] पहले केवल पुरोहितो की सस्था थी जो १७ वी सदी मे अव गुस्तवस अदोल्फस[5] के प्रयत्न से वास्तविक यूनिवर्सिटी वनी और आज भी अपनी वौद्धिक क्रियाशीलता के लिए विख्यात है।

स्विडन का पहला लिरिक कवि लार्स विवालियस[6] था। वह घुमक्कड था जो विना रुपये-पैसे के यूरोप मे फिरा करता था। एकाव वार तो उसे कैद भी भुगतनी पडी। उसने प्रकृति और पर्यटन सम्वन्धी कुछ वडी सुन्दर कविताएँ लिखी। वैसी कविताएँ स्विडन में तव तक नही लिखी गई थी। वे वडी लोकप्रिय हुई। अन्य यूरोपीय देशो की ही भाँति स्विडन मे भी ड्रामा पहले बाइविल के दृश्यो के प्रकाशन तक ही सीमित था।

---

१ St Birgitta, २ Olaus Petri, ३ Luther; ४ Uppsala University; ५ Gustavus Adolphus, ६ Lars Wivallius (१६०५-६९)

उसके ओपेरा "मेदिया" (१७८४) में उस काल की कुछ सर्वोत्तम कविताएँ हैं। उसकी प्रसिद्ध कविता है, "इत्तेर्स्ता दोमेन" (अन्तिम निर्णय, १७८८) जो अन्य यूरोपीय साहित्यो के धार्मिक आन्दोलनो के अनुकूल थी।

उसी काल कार्ल गुस्ताफ ऑफ लियोपोल्द[१] ने भी अपनी दार्शनिक कविताएँ नाटक और व्यग्य लिखे। आना मारिया लेनग्रेन[२] मध्यवर्गीय यथार्थवादी कविताओ के लिए देश में काफी विख्यात हुई। स्वीडी काव्यक्षेत्र में शिशु को पहली वार विपय वनाने वाला कवि फ्रास माइकेल फ्रान्जेन[३] था।

पहला स्वीडी उपन्यास १७४२-४४ में प्रकाशित हुआ। उसका लेखक हेन्रिक्र मोर्क[४] था। परन्तु लोग विदेशी उपन्यासो को अधिक पसन्द करते थे। इससे उनका प्रचार विशेष नही हुआ। हाँ, नाटको की रचना काफी हुई। स्विडन का रगमच जर्मन और विशेषत फ्रेंच प्रभाव से चमका फिर गुस्ताफ तृतीय की सरक्षा में वह वढ चला। तभी ओपेरा की भी प्रतिष्ठा हुई। जोहान ओलोफ वालिन[५] ने "रोमेन्टिक" प्रवृत्तियो का प्रचार किया। उस साहित्य प्रवृत्ति का प्रधान नायक अत्तरबोम[६] था जो शेलिंग[७] से प्रभावित था। उसी भावना से प्रेरित लोरेन्जो हेमरशोल्ड[८] ने स्विडन का पहला साहित्यिक इतिहास लिखा। वह काल स्विडन के साहित्य का स्वर्णयुग था। उसके प्रतिनिधि स्वरूप बोम ने अपने दो पौराणिक नाटक "आनन्द का द्वीप" और "नीला पक्षी" लिखे। उसी काल तेग्नेर[९] स्ताग्नेलियस[१०] और गेइजेर[११] ने अपनी सुघड काव्य कृतियाँ प्रस्तुत की जिनकी गणना उस देश के साहित्य की अमर रचनाओ में की जाती है। एरिक स्योवर्ग[१२] का कविनाम "वितालिस" था। वह रोमान्टिक आदर्शवादी था। वह काफी मानी था और यक्ष्मा का शिकार होकर भी लोगो की सहायता लेने से उसने इनकार कर दिया। गेइजेर को १८०३ मे स्वीडी अकेडेमी का उसके वीरकाव्य पर पुरस्कार मिला। वह इगलैड भी कुछ काल जाकर रहा था और उसका उस पर खासा असर पडा था। उसने प्राचीन विषयो पर कुछ वडी मधुर कविताएँ लिखी। वह उपसाला विश्वविद्यालय मे इतिहास का अध्यापक नियुक्त हुआ और रोमान्टिक दृष्टिकोण से ऐतिहासिक विवेचना की। आचार्य की हैसियत से वह वडा प्रभावशाली हो गया। परन्तु उस युग का महान कवि तेग्नेर[१३] था। वह आन्दोलनो मे रहता हुआ भी स्वतन्त्र रूप से कविताएँ लिखता था। उसकी कविताओ को राजनीतिक

---

१ Carl Gustaf af Leopold (१७५९-१८२९), २ Anna Maria Lenngren (१७५५-१८१७), ३ Frans Michael Franzen (१७७२-१८४७), ४ Henrik Mork (१७१४-६३), ५ Johan Olof Wallin, ६ Atterbom, ७ Schelling, ८ Lorenzo Hammarskiold (१७८५-१८२७), ९ Tegner, १० Stagnelius, ११ Geijer, १२ Eric Stoberg (Vitalis) (१७९४-१८२८), १३ Tegner

पृष्ठभूमि से वस्तुत. प्रेरणा मिली। स्विडन पर रूस की विजय पर उसने अपनी प्रसिद्ध कविता "सेना का युद्धगीत" (१८०८) लिखा। उसका राजनीतिक करुणस्रोत उससे भी अधिक "देत एविगा" (अन्तहीन, १८१०) और "स्वेआ" (१८११) में फूटा और इन्ही के कारण वह विशेषत स्विडन का राष्ट्रीय कवि कहलाने लगा। उसकी सवसे विशिष्ट कृति "फ्रितिओफ्स सागा" (१८२०-५) है।

आल्मकिस्त[1] था तो अत्तरबोम का समकालीन परन्तु उसकी कृतियो का प्रकाशन पीछे हुआ। फ्रेंच उदारवादी आन्दोलन से प्रभावित उसने अनेक लोकप्रिय निवन्ध और कहानियाँ श्रमिको के पक्ष मे लिखी। इस प्रकार वह यथार्थवादी आन्दोलन का अग्रदूत वन गया और उस दिशा में निरतर बढता हुआ प्राय अराजक क्रान्तिकारी होगया। वह उस काल का सर्वोत्तम उपन्यासकार तो था ही, आदरणीय नाटककार भी था। उसके पहले ओगुस्त ब्लाश[2] और फ्रास हर्डवर्ग[3] ने स्वीडी भाषा मे कुछ नाटक लिखे थे। आल्म किस्त के बाद दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यासकार फ्रेडिका ब्रेमेर[4] था।

धीरे-धीरे स्कैन्डिनेविया (नार्वे, स्विडेन, डेन्मार्क) के देशो में पारस्परिक एकता का आन्दोलन जोर पकड रहा था। उस आन्दोलन के कवि आस्कर पात्रिक स्टूर्जेन्वेकेर[5] (उपनाम ओर्वारआद) कार्ल विलहेल्म आगुस्त स्त्रान्दवर्ग[6] (उपनाम तालिस क्वालिस) और गुन्नार वेनेरबर्ग[7] थे। वैसे उस काल का सवसे विशिष्ट कवि जोहनलुड्विग रुनेवर्ग[8] था, यद्यपि उसका अधिक सम्वन्ध फिन्लैंड के साहित्य से है।

सही अर्थ में महान कृतिकार स्विडन में १८७० के वाद हुए। विक्तर रिदवर्ग[9] और कार्ल स्नोइल्स्की[10] उस दिशा में विशेष उल्लेखनीय हैं। रिदबर्ग उदारवादी था परन्तु उसकी कविता रोमान्टिक आदर्शवादी है, रहस्यवादी भावधारा लिए हुए। उसमे रूप और टेकनीक का आकर्षण और आदर्शवाद की दार्शनिकता है। वह निम्नवर्गीय था। उसके विपरीत स्नोइल्स्की सम्भ्रातकुलीय था यद्यपि उदारवादी आन्दोलन को समझने का उसने निश्चय प्रयत्न किया। अपनी कविताएँ उसने आनन्द विभोर होकर लिखी। "'स्वेन्स्का विल्डर" (स्वीडी चित्र) में उसने तीन सदियो के विखरे चित्र अंकित किए। रिदवर्ग निस्सदेह उससे विशिष्ट कवि था। पर जहाँ तक प्रभाव का सम्वन्ध है साहित्य के

---

१. Almquist, २. August Blanche (१८११-६८), ३ Frans Hedberg (१८२८-१९०८), ४. Fredrika Bremer, ५ Oscar Patric Sturzen-Becker (Orvar Odd १८११-६९), ६ Carl Vilhenlm August Strandberg (Talis Qualis १८१८-७७), ७ Gunnar Wennerberg (१८१७-१९०१); ८ Johan Ludvig Runeberg, ९ Viktor Rydberg, १० Carl Snoilsky (१८४१-१९०३)

इतिहास में तत्कालीन आन्दोलन प्रकृतिवाद के प्रतिनिधि-स्ट्रिन्डवर्ग[1] का महत्व अधिक है। उस आन्दोलन के अन्य प्रतिनिधि हाइडेन्स्ताम,[2] फ्रोदिंग[3] सेलमा लागरलोफ[4] आदि हैं। स्ट्रिन्डबर्ग की रचनाएँ १९ वी सदी के साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण देन मानी जाती हैं वडी जल्दी वह उस दार्शनिक आदर्शवाद से मुक्त हो गया था जो उस काल स्वीडी यूनिवर्सिटियो को अपने सिद्धातो से जकडे हुए था। उसने अपने पहले वर्तमानकालीन ड्रामा "मास्टर ओलोफ" (१८७८) मे अपने क्रातिकारी यथार्थवादी उत्साह की घोपणा की। "मास्टर ओलोफ" की ही भाँति उसका "रोदा रूम्मेत" (लाल कमरा, १८७९) स्वीडी साहित्य का पहला महान सामाजिक उपन्यास था। वह फिर भी समाजद्रोही था। उसने "गिफ्ताज" (विवाहित, १८८४) में नारी-स्वतन्त्रता का विरोध किया। अपने दृष्टिकोण के कारण उसे स्वदेश छोडकर जाना पडा। १८८७ मे उसने देहाती जीवन व्यक्त करते हुए अपनी भाषा का सुन्दरतम उपन्यास "हेम्सोबोर्नी" (हेम्सो के निवासी) लिखा। उसका "फ्रोकेन जूली" सारे यूरोप मे खेला गया। उसने अनेक रहस्यवादी ड्रामा भी लिखे। अपनी रचना "स्वर्ता फानोर" (स्याह झडे) १९०४ मे उसने अपने पुराने मित्रो पर आघात किया। अपने अन्तिम विशिष्ट लिरिक ड्रामा, "स्तोरा लान्दस्वागेन" (प्रशस्त राजमार्ग, १९०९) मे उसने आत्मविरोधी जीवन का हल ढूँढने का प्रयत्न किया।

स्ट्रिन्डबर्ग के यथार्थवादी युग का प्रसार १८७९ से १८८८ तक है। उस काल के साहित्यिको मे दो प्रधान नारियाँ एन-चारलोती-एडग्रेन[5] और विक्टोरिया बेनेडिक्टसन[6] हैं। इनमें से पहली ने ड्रामा और कहानियाँ लिखी और वह इब्सन तथा स्ट्रिन्डबर्ग से प्रभावित थी। दूसरी ने कहानियाँ और उपन्यास लिखे। उसका साहित्यनाम अर्न्स्ट आलग्रेन[7] था। उसका जीवन दुखमय था। इसलिए उसने आत्महत्या कर ली। उस दल का सबसे प्रतिभावान कवि ओला आन्सन[8] था। उसने अच्छी कविताओ के अनेक सग्रह प्रकाशित किए जिनसे उसे समर्थ लिरिककार की प्रतिष्ठा मिली। अल्बर्ट उलरिक वाथ[9] ने भी अपनी लोकप्रिय कविताओ द्वारा यश कमाया। गुस्ताफ आफ गेइजरस्तान[10] यथार्थवादी उपन्यासो और नाटको का लोकप्रिय रचयिता था।

तोर हेडवर्ग[11] ने पहले कुछ यथार्थवादी उपन्यास लिखे। फिर इब्सन की प्रेरणा से यथार्थवादी नाटक। उसने कुछ प्रतीकवादी कविताएँ भी लिखी। आस्कर लेवर्तीन[12]

---

१ Strindberg, २ Heidenstam, ३ Froding, ४ Selma Lagerlof, ५ Anne-Charlotte Edgren (१८४९-९२), ६ Victoria Benedictson (१८५०-८८), ७ Ernst Ahlgren, ८ Ola Hanson (१८६०-१९२५), ९ Albert Ulrik Baath (१८५३-१९१२), १० Gustaf af Geijerstam (१८५८-१९०९), ११ Tor Hedberg, १२ Oscar Levertin (१८६२-१९०६)

ने हेइदेन्स्ताम[1] के साथ नए रोमान्टिक आन्दोलन का आरम्भ किया। उसने अपने "लिजेन्डेर-ओसविजोर" (ख्याते और बैलेड) मे रोमान्टिक परपरा का निर्वाह किया। और "न्या दिक्तर" (नई कविताएँ, १८९४) मे अभिजात व्यक्तिवाद की ओर वह झुका। उसकी कविताओ मे एकाकीपन का चित्रण है। वह विद्वान और आलोचक था। स्वीडी सस्कृति का वह प्रेमी था। परन्तु युग के साहित्य का नेतृत्व वर्नेर फान हाइडेन्स्टाम ने किया। वर्नेर अभिजात कुलीय था। स्वास्थ्य सुधारने के लिए उसे विदेश जाना पडा। दक्षिण और पूर्व मे वह फिरता और उधर की सस्कृति का अध्ययन करता रहा। २९ वर्ष की आयु में उसने अपनी कविताओ का सग्रह "वालफार्त ओख वान्द्रिग्सार" (तीर्थयात्रा और पर्यटन के वर्ष) प्रकाशित किया उसने झट स्विडन के कवियो, आलोचको और पाठको के हृदय जीत लिए। सात वर्प उसने "कविताएँ" प्रकाशित की। उसके पहले उसने "रेनेंसास" निवन्ध और आत्मकथा "हान्स आलिएन्स" (१८९२) लिख लिया था। उसने प्रकृतिवाद को पुराना और हेय कहकर उसके स्थान पर राष्ट्रवाद को प्रतिष्ठित किया। उसकी कविताओ ने स्विडन के अतीत के प्रति लोगो की सुप्त निष्ठा जगा दी।

हाइडेन्स्टाम की विशिष्ट गद्यकृतियाँ "कारोलिनेर्ना" हेलिगा ब्रिगितास "पिल्ग्रिम्स्फार्द" और "फोल्कुग्स्त्रादेत" थी। उनके जरिए उसने चार्ल्स बारहवें और सन्त बिर्गित्ता[2] आदि के प्राचीन उदात्तचरितो को पत्थर की मूर्ति की भाँति कोर कर रख दिया। "क्लासिकल के प्रति उसकी प्रेरणा उसकी इस अतीत साधना मे बडी सहायक हुई। उसने ओलेतारियन उसूलो को स्विडन के लिए घातक बताया। पीछे की ओर मुँह कर खडे होने वाले राष्ट्रीयतावादियो की यह सर्वत्र लचर दलील रही है। उसने स्ट्रिन्डवर्ग के साथ भी वादविवाद शुरू किया। और उसके विचारो के विरोध मे अपने निवन्ध—सर्वहारावर्ग का ह्रास और पतन (१९११) लिखे। उसके वाद वह अपने पाठको से केवल पद्य में बोला। १९१५ मे उसने "न्या दिक्तेर" (नई कविताएँ) प्रकाशित की। इनके भाव गम्भीर है, रूप प्रौढ है, आवेग अकन स्फटिक की भाँति स्पष्ट है। उसके वाद उसने केवल अपनी आत्मकथा लिखी जो उसकी मृत्यु के वाद छपी। हाइडेन्स्टाम को नोवुल पुरस्कार मिला।

सेल्मा लागेरलोफ[3] की प्रतिभा शालीन अतीत के अध्ययन से द्युतिमती हुई। उसने अतीत के अध्ययन मे भौगोलिक सीमाएँ न वाँधी। दक्षिणी स्विडन में वह कई वर्प तक शिक्षिका रह चुकी थी। उसके वाद उसने अपना उपन्यास "गोस्ता वर्लिग्स्मागा" लिखा जिसे लेर्वातिन ने हाइडेन्स्टाम-लेर्वातिन परपरा की पहली कृति मानी। उसमें कहानी कहने की क्षमता अनुपम थी। उसके उपन्यास ने पाठको का मन मोह लिया। स्विडन का तो वह

---

१ Heidenstam (Verner Von Heidenstam १८५९-१९४०); २ Saint Birgitta, ३ Selma Lagerlof

सर्वप्रिय उपन्यास है ही, अब वह उसकी सीमाओ को लाँघ चुका है। तीस भाषाओ में उसका अनुवाद हो चुका है और आज वह ससार के साहित्य का अग है। इसी प्रकार उसने अपने दूसरे उपन्यास "चमत्कार" (१८९७) में इटली (सिसिली) के देहाती जीवन का सबल चित्र अकित किया। इसी प्रकार "ईसा-शिशु" "खजाना" "जेरुसलेम" में उसने पूर्वात्य वातावरण मे किसान और श्रद्धालु का चित्र खीचा। उसे भी नोबुल पुरस्कार मिला।

गुस्ताफ फ्रोदिग[1] पर हाइडेन्स्टाम का गहरा प्रभाव पडा था। उसकी कविताओ का पहला सग्रह "गितार ओख दागरमोनिका" (१८९१) उसका प्रमाण है। लेवर्तीन[2] ने उसकी कविताओ को पसन्द नही किया, परन्तु जनसाधारण की वे बडी प्रिय बन गईं। उनमे काफी हास्य है। उसका दूसरा सग्रह "न्या दिक्तर" (१८९४) भी हास्य-प्रधान है परन्तु "स्ताक ओख फ्लिकर" मे विषाद की धारा बही।

उपसाला सदा साहित्यिको का केन्द्र रहा था। फ्रोदिग ने स्वय एक विद्यार्थी एरिक एक्सेल कार्लफ़ेल्ट[3] को दिखाकर कहा था कि वह उसे कवित्व शक्ति में लाँघ जाएगा। एरिक कार्ल फेल्ट समर्थ कवि हुआ। उसके सग्रह "फ्रिदोलिन्स विजोर" और "फ्रिदोलिन्स लुस्तगार्द" किसान जीवन के सम्मोहक चित्रो को लेकर साहित्य-क्षेत्र मे उतरे और अपनी अमिट छाप छोड गए।

उस युग का अन्तिम विशिष्ट कृतिकार हाल्स्ट्राम[4] था। वह करुणा से भरा है और उसके चित्रण अधिकतर निराशाजनक है। वह बडी सहृदयता पूर्वक "विल्स्ना फाग्लर" (१८९४) और "एन गायल-हिस्टोरिया" (१८९५) में अभागो के चित्र अकित करता है। उसके ड्रामा उपन्यासो के से ऊँचे नही, फिर भी काफी प्रशसित हुए हैं। उनमें उसने अपनी स्वस्थ मानवता का परिचय दिया है। उसकी सबसे अधिक लोकप्रिय कृति "चार तत्व" (१९०४) है। उसमें प्राय सेल्मा लागरलोफ की कला से किसानो का जीवन अकित हुआ है।

: ३ :

नयी कविता का उदय

१८८० और १९०० का साहित्य स्विडन के साहित्यक इतिहास में महान माना जाता है। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये कि वह सदी के साथ ही समाप्त हो गया। वस्तुत उसके अनेक विशिष्ट निर्माता बीसवी सदी के पिछले दशक तक लिखते रहे हैं। कम से कम उन उन्नीसवी सदी के पिछले दशको में जिस लोक-साहित्य और किसान परपरा का साहित्य में विकास हुआ वह मर न सकी। उस दृष्टिकोण ने स्विडन की सस्कृति

१ Gustaf Froding, २ Levertin, ३ Erik Axel Karlfeldt; ४ Per Hallstrom (१८६६)

का अनुपधान कर लोक चतना जगाई, नगर-नगर, गाँव-गाँव में संग्रहालय (म्यूजियम) स्थापित किए।

लोक-सस्कृति का एक प्रबल प्रतिनिधि कार्ल एरिक फोस्लुड[1] हुआ जिसने श्रमिक-वर्ग के लिए एक विशिष्ट स्कूल की स्थापना की। उस वर्ग के अनेक प्रतिनिधि वहा से कवि और उपन्यासकार होकर निकले। फोस्लुड का उपन्यास "स्टोरगार्डन" जो कि रूसो के सिद्धातो पर आधारित था, काफी उत्साह से पढा गया। बाद मे उसने अपना समय पुरातत्व के अनुपधान में लगाया। कार्ल गुस्ताव ओसियननिल्सन[2] फ्रोदिंग और अग्रेज कवियो द्वारा प्रभावित है और अपनी कविताओ में सामाजिक सहानुभूति के चित्र प्रस्तुत करता है। उससे कही अधिक राजनीतिक रुचि का कवि तूरे नरमान[3] है परन्तु उसकी प्रेरणा विशेषत' यौन है, घोर शृगारिक।

अनेक नए कवियो और उपन्यासकारो की प्रेरणा स्विडन की पिछली सदी के राष्ट्रवाद और राजनीतिक तथा सामाजिक चेतना से उदासीन हो गई है। अनातोले फ्रास[4] आस्कर वाइल्ड[5] हरमान वाग[6] से प्रभावित उनका दृष्टिकोण अधिकतर निराशा सूचक हो गया है। उस दल का एक प्रतिनिधि ह्यालमार सोदरबर्ग[7] है जिसकी प्रभाववादी टैकनीक और दुशील नायको ने आस्कर द्वितीय युग के स्वीडी पाठको को व्यथित कर दिया था। वो बर्गमान[8] ने अपनी कहानियो में जीवन के प्रति उसी दृष्टिकोण का अकन किया है। परन्तु प्रधानत वह लिरिककार है। धीरे-धीरे पिछले सालो मे उसकी सहानुभूति ने एक नया रूप धारण किया है, मानवतावादी।

सोदरबर्ग, बर्गमान, विलहेल्म एकेलुड[9] आडर्स ओस्टर्लिंग[10] आदि सभी पिछले काल के कवियो ने अधिकतर देश के स्थानीय सौन्दर्य को ही अपनी विविध शैलियो से काव्य में व्यक्त किया। बात यह है कि जिस अभिजातीय व्यक्तिवाद का साहित्य में इस सदी के आरम्भ में उदय हुआ था वह चल न सका और फिर यथार्थवादी सामाजिक समस्याओ को साहित्य का विषय बनाना पडा। स्वेन लिदमान[11] जो उस व्यक्तिवाद का नेता था, धार्मिक साहित्य उत्पन्न करने लगा और व्यक्तिवाद सर्वथा अनुपयुक्त सिद्ध हुआ। उस पर पहली गहरी चोट अपनी कहानियो द्वारा अलवर्ट एगस्त्रोम[12] ने की। उसने कृत्रिम मनोवैज्ञानिक परपरा के विपरीत प्राकृतिक स्वस्थ यथार्थवाद का समर्थन किया

---

१ Karl Erik Forsslund (१८७२-१९४१); २ Karl Gustav Ossiannilsson (जन्म १८७५); ३ Ture Nerman (जन्म १८८६); ४. Anatole France; ५ Oscar Wilde; ६ Hermann Bang; ७ Hjalmar Soderberg; ८ Bo Bergman (जन्म १८६९); ९ Vilhelm Ekelund (जन्म १८८०); १० Anders Osterling (जन्म १८८४); ११ Sven Lidman (जन्म १८८२); १२. Albert Engstrom

और किसानो तथा मछुओ के रंग-बिरगे चित्र अपनी कृतियो मे प्रस्तुत किये। ओलोफ होग्वर्ग[1] ने वही रुचि प्रारम्भिक लोक साहित्य मे प्रदर्शित की। होग्वर्ग की ही भाँति उत्तरी स्वीडन के प्रतिनिधि साहित्यकार पेले मोलिन[2] और लुड्विग नोर्दस्त्रोम[3] भी थे। लुडविग के उपन्यासो की पृष्ठिभूमि सामाजिक है। पहले महासमर के बाद उसने सामाजिक रिपोर्ताज लिखे। ह्यालमार वर्गमान[4] ने मध्य स्विडन के जीवन के चित्र अपनी कृतियो में अकित किये। वर्गमान में कल्पना की बडी शक्ति थी, उसकी शैली भी थोडी वहुत रोमान्टिक है। कई बार तो उसका दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक होकर दोस्तोएवस्की[5] की याद दिलाने लगता है। उसके कुछ उपन्यास विनोद प्रधान हैं, कुछ विषाद प्रधान। वर्गमान नाटककार भी सुन्दर था और उस दिशा में तो केवल स्ट्रिन्डबर्ग ही उससे वडा कहा जा सकता है। उसने कुछ दिनो हालीवुड मे फिल्मी सिनेरिओ भी लिखे। सीगफ्रिड सीवेर्त्स[6] भी उसी साहित्यिक दल का था और व्यक्तिवाद को छोड जीवन के सक्रिय पहलुओ का अकन करने लगा था। उसकी कृतियो ने समसामयिक जीवन का चित्रण अपना आदर्श वनाया। उसकी प्रतिनिधि रचना "एल्डेन्स आर्क्सकेन" (१९१६) प्रथम महासमर के वीच लिखी गई थी। उसकी रचनाओ मे सवसे सुन्दर पारिवारिक उपन्यास 'सेलाम्बस' (१९२०) है। उसमें बडी चतुराई से आज के विलासी धुनवादी स्वार्थत व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का उन्मूलन किया गया है। उसने वडी सुन्दर शैली मे अनेक असामान्य कहानियाँ भी लिखी। पर अनेक बार वह यथार्थ को इतना प्रतीक वना देता है कि उसकी शैली से "कला के लिए कला" की ध्वनि निकलने लगती है। समसामयिक समस्याओ ने उससे कही अधिक गुस्ताफ हेलस्त्रोम[7] को आकृष्ट किया। उसके उपन्यासो में सुन्दरतम् "लेस बनाने वाले लेकहोलम का एक विचार" है (१९२७) जिसमे उसने स्वीडन जनसख्या पर विचार किया। सेलमा लागरलोफ[8] के निधन के वाद स्वीडी एकेडमी में उसका स्थान एलिन वाग्नर[9] को मिला। वह पहले जर्नलिस्ट थी। उसकी नायिकाएँ अधिकतर आधुनिक नारियाँ हुईं जो स्वतन्त्र रूप से अपना खर्च चलाती है। स्वावलम्वन उनका मूल मन्त्र है। उसने नारी-आन्दोलनो में सक्रिय भाग लिया और अपनी कृति "पेन्स्काफ्तेर" (कलम) में उसने स्विडन में नारी-स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक वर्षों का अकन किया। उसके उपन्यास सुधार के द्योतक है और समाज के जीवन का अच्छा विश्लेषण करते है। "आसा-हन्न"

---

१. Olof Hogberg (१८५५-१९३२); २ Pelle Molin, ३ Ludving Nordstrom, ४ Hjalmar Bergman, ५ Dostoievsky, ६ Sigfrid Siwertz (जन्म १८८२), ७ Gustaf Hellstrom (जन्म १८८२), ८ Selma Lagerlof, ९ Elin (जन्म १८८२)

(१९१८) उसकी सफल कृति है। मारिका स्टीअर्नस्टेड[1] ने उच्चवर्गीय जीवन का अपने उपन्यासो मे अकन किया है। उसका उपन्यास "उल्लाबेल्ला" (१९२२), जो युवतियो का वर्णन करता है, देश मे काफी लोकप्रिय हुआ। नारी-उपन्यासकारो मे उसका अपना स्थान है। गेर्ट्रुड लिल्जा[2] मारिका से प्राय १२ वर्ष छोटी है। कहानीकारो मे उसका ऊँचा स्थान है और उसके उपन्यासो मे "स्थानीय" पष्ठभूमि अधिकाधिक चित्रित हुई है। उसने असफल व्यक्तियो का काफी सफल अकन किया है। उसी की भाँति उसकी सहकारिणी अना-लेना-एल्गस्त्रोम[3] ने भी अपने समाज के निचले स्तर के चित्र प्रस्तुत किये है। इस दिशा मे उसके उपन्यास "कगाल लोग" (१९१२) और "माताएँ" (१९१७) खासे सफल हुए है। स्वय वह मध्यवर्ग की है, परन्तु उसकी सहृदयता निम्नवर्गीयो के प्रति है। इस प्रकार के चित्र-निरूपण मे मार्टिन कोच[4] योग्यता और ज्ञान दोनो दृष्टियो से उससे वडा है। उसके चित्रण में रूसी साहित्यकारो की परख और पकड मूर्तिमान हो गई है। अपने "आर्वेतारे" (मजूर, १९१२) मे उसने देश के साहित्य मे पहली वार श्रमिको के जीवन का सही अकन किया है। उसकी सुन्दरतम रचना "भगवान का सुन्दर ससार" (१९१६) है। उसम उसन निचले स्तर के लोगो की स्थिति का, उनके अनिवार्य अपराधो का समाजवादी दृष्टि से अद्भुत अकन किया है। फावियन मान्सोन[5] ने अनेक ऐतिहासिक उपन्यास लिखे और उनमें वढते हुए जीवन को प्रतिविम्बित किया। गुस्ताव-हेदन्विन्ड एरिक्सोन[6] उससे अधिक समर्थ-कलाकार था और उसने मजूरो तथा गिरी स्थिति के लोगो का समर्थ चित्र खीचा। अलवर्ट विक्स्टेन[7] के आर्कटिक महासागर सम्बन्धी उपन्यास भी स्विडन में चाव से पढे जाते है।

प्रथम महासमर ने स्विडन के साहित्य पर भी स्वाभाविक ही गहरा प्रभाव डाला। परिणामत समकालीन समस्याओ पर गहरा विचार होने लगा। लुण्ड यूनीवर्सिटी के दर्शन के प्रोफेसर हान्स लारसन[8] ने समसामयिक प्रश्नो पर अपने डायलॉग-उपन्यासो मे विचार किया। उस युद्ध के बाद अनेक कवियो ने जीवन के दुखो का अकन आरम्भ किया। अनेक धर्म की ओर झुके। दूसरो ने कठिनाइयो को हल करने वाले सघर्ष को अपनाया। परन्तु इनकी चेतना अधिकतर मध्यवर्गीय थी जो दुख के कारणो पर इतना विचार नही करती जितना उसके समसामयिक रूप पर और उसी के परिणामस्वरूप वे कभी कुठा और कभी विषाद के शिकार होते है, वास्तविक समस्या सम्बन्धी कृतियाँ १९२० के बाद काव्य-क्षेत्र मे प्रस्तुत होने लगी जब मजूर वर्ग के अधिकारी साहित्यकारो ने उस क्षेत्र में पदार्पण किया।

---

१ Marika Stiernstedt (जन्म १८७५), २. Gertrud Lilja (जन्म १८८७); ३ Anna Lenah Elgstrom (जन्म १८८४); ४ Martin Koch, ५ Fabian Mansson (१८७२-१९३८), ६ Gustav Hedenvind-Eriksson (जन्म १८८०); ७ Albert Viksten (जन्म १८८९), ८ Hans Larsson (१८६२-१९४४)

उन्होने परपरा और सांस्कृतिक दाय को मानकर भी समसामयिक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ और उनके समाधान को उनके ऊपर रखा। उनके शब्दो में सादगी और ताजगी है और रोजमर्रा का जीवन सस्वर हो उठता है। इस दल के कवियो मे विशिष्ट और दीर्घायु बिरगेर सिओवर्ग[१] है। उसकी प्रसिद्ध रचना "फ्रिदाज वोक" (फ्रीदा की पुस्तक, १९२२) बडी सुन्दर कृति है और साधारण से धीरे-धीरे उठकर कला का अद्भुत प्रतीक बन जाती है। वह ४४ वर्ष की अल्पायु में ही मर गया और वर्तमान स्वीडी साहित्य को परिणामत वड़ी हानि हुई। डान ऐण्डरसन[२] भी उसी की भाँति 'प्रोलेतारियेत'[३] का कवि है। उसकी मृत्यु १९२० में ३८ वर्ष की अवस्था में ही हो गई। उसने कविता के अतिरिक्त कुछ उपन्यास भी लिखे और वह आधुनिक स्वीडी साहित्य में काफी ऊँचा साहित्यिक माना जाता है।

एरिक लिन्डोर्म[४] वर्तमान परपरा का कवि था जो १९४१ में मरा। उसकी कविताएँ मधुर और मृदुल कल्पनाओ द्वारा जीवन का स्पर्श करती हैं। वह दृष्टिकोण से क्रातिकारी था। रोजमर्रा के जीवन को विशेषत कार्ल आस्प्लुन्ड[५] और गुन्नार मास्कोल सिल्फरस्तोल्पे[६] ने अपनी कृतियो का आधार बनाया। प्रथम महासमर की घटनाओ को लेकर जो सिल्फर स्तोल्फे ने अपना "स्वाल्लार्ना" (हिरो, १९१९) लिखा तो उसकी बडी ख्याति हुई। उसने अपने प्रात के स्थानीय चित्रो का भी लिरिको में अकन किया है। वह स्विडन के देहातो के भी अभिराम चित्र प्रस्तुत करता है। रागनर यान्देल[७] ने अपनी कविताओ मे पहले गहरी सामाजिक सहृदयता दिखाई। वह स्वय सर्वहारा वर्ग का था। एक नितात करुण संघर्ष वहुल लिरिक में उसने क्रातिकारी नायको की स्तुति की है। धीरे-धीरे उसकी कृतियो मे एक धार्मिक चेतना का विकास हुआ जिसने उसकी सबल समाजवादी प्रेरणा को कुठित कर दिया। जिन अन्य कवियो ने स्विडन को अपने लिरिक दिये उनमें प्रधान बेरित स्पोग[८] गाब्रियल जोन्सन[९] आइनर माल्म[१०] आदि है। स्टेन सेलान्दर[११] सस्कृति और सामाजिक प्रश्नो पर विचार रखता है। उसकी कविताओ के अनेक सग्रह हैं जिनमे शैली का सुन्दर विकास हुआ है। पार लागरक्विस्त[१२] पहले महासमर की क्रूर स्मृतियो से उद्वेलित कवि है। उसने ड्रामा के क्षेत्र में एक प्रकार के पुनर्जागरण का

---

१ Birgar Sjoberg; २. Dan Andersson, ३ Proletarian Poet, ४ Erik Lindorm, ५ Karl Asplund (जन्म १८९०), ६ Gunnar Mascoll Silfverstolpe (१८९३-१९४२); ७ Ragnar Jandel (१८९५-१९३९); ८ Berit Spong (जन्म १८९५); ९. Gabriel Jonsson (जन्म १८९२), १० Einar Malm (जन्म १९००); ११ Sten Selander (जन्म १८९१); १२ Par Lagerkvist (जन्म १८९१)

भी स्वप्न देखा। जर्मन अभिव्यजनावाद से भी वह काफी प्रभावित है। सास्कृतिक दृष्टि से वह मानवतावादी है और उस मानवतावाद का हिंसक शक्तियो से उसने अपने "जल्लाद" और "बौना" नामक नाटको मे बचाव किया है। बर्तिल माल्मबर्ग[1] पलायनवादी है जो ससार के दुखो से भागकर अनन्त सौन्दर्य के उपचेतन ससार में शरण लेता है। उसकी कविताओ मे वैयक्तिक रग है, विषादपूर्ण, निराशावादी अपने कवितासग्रह "ऐटलान्टिस" (१९१६) और सीमा की कविताएँ (१९३५) में उसका यह दृष्टिकोण मूर्त्त है। एरिक ब्लोमबर्ग[2] ने पार्थिव ससार को काल्पनिक के ऊपर स्थान दिया है, यद्यपि आदर्शवाद उसका भी इष्ट है। कारिनबोये[3] उसी चेष्टा का कवि है। यद्यपि उसके आदर्शवाद का आधार धर्म नही है। काव्य-क्षेत्र में उसका स्थान ऊँचा माना जाता है। १९४१ में ४१ वर्ष की आयु मे उसका निधन हुआ।

प्रथम महासमर के बाद मजूर वर्ग की शक्ति बढ चली। उसमे शिक्षा का विशेप प्रचार हुआ और उसके "सर्वहारा कवि" देश के साहित्य मे अग्रणी हुए। समसामयिक जीवन उनकी कृतियो मे स्पष्टत मूर्त हो उठा है। सामाजिक दृष्टिकोण प्रोलेतारियन पृष्ठभूमि से अकित होता है। कुछ तरुण प्रोलेतारियन लेखको के आत्मकथात्मक उपन्यासो ने मजूर वर्ग की स्थिति को समाज के दृष्टिकोण का केन्द्र बना दिया। कविताओ की दिशा मे भी सर्वहारा वर्ग के कवियो ने लम्बे कदम बढाये।

परन्तु ऐसे साहित्यकारो की विदेश में कमी न रही जिन्होने उपस्थित सत्य की अवहेलना कर "सब्जेक्टिव" का पोषण किया। एग्निस वान क्रूसेन्स्त्येर्ना[4] इसी वर्ग की लेखिका थी। श्रृगारिकता के अमर्यादित निरूपण ने उसके दृष्टिकोण को शीघ्र ही विकृत कर दिया। आइविन्द जान्सन[5] बौद्धिक और व्यापक दृष्टिकोण से उससे ऊँचा मनोवैज्ञानिक है। उसकी पिछली कृतियो मे मजूर जीवन का अच्छा मनोवैज्ञानिक अध्ययन हुआ है। तरुण मनोविज्ञान के चित्रण में स्वीडी साहित्य मे जान्सन के बराबर कोई कृती नही। अपने युद्धकालीन उपन्यासो में उसने व्यक्तिवाद और शक्ति पूजा का प्रबल विरोध किया है। रूडोल्फ वार्नलुण्ड[6] ऊँचे तपके का उपन्यासकार है और उसकी कृतियो मे मजूर जीवन छलका पडता है। जोजेफ करयेलग्रेन[7] उसी दल का लेखक है और उसके मूर्तन का विषय भी साधारण श्रमिक है।

स्वीडी देहात का जीवन चित्रित करने वालो में अग्रणी विल्हेल्म मोबर्ग[8] है।

---

१ Bertil Malmberg (जन्म १८८९); २ Erik Blomberg (जन्म १८९४), ३. Karin Boye; ४. Agnes Von Krusenstjerna; ५ Eyvind Johnson (जन्म १९००), ६ Rudolf Varnlund (१९००-४५), ७ Josef Kjellgren (जन्म १९०७), ८ Vilhelm Moberg (जन्म १८९८)

उसका उपन्यास "रास्केन्स" (१९२७) काफी प्रसिद्धि पा चुका है। उसने ड्रामा और उपन्यास दोनो साधनो से किसान जीवन का सफल चित्रण किया। ऐतिहासिक उपन्यास "रिद ईनात" (१९४१) उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। उसमे उसने अत्याचार और तानाशाही के विरुद्ध स्विडन की जनता की प्रतिक्रिया अकित की है। उसने किसी स्कूल मे शिक्षा न पाई थी। इवार लो-जोहान्सन[१] भी उसी की भाँति आत्म-शिक्षित है। उसने अपने उपन्यासो मे समाज का चित्रण काफी खूबी के साथ किया है। उसके "गोड नाटयोर्द" (१९३२) मे मजूरो की शक्ति, भावावेग और लक्ष्य का वडी यथार्थवादी उत्तमता से मूर्त्तन हुआ है। सर्वहारा चेतना की यह एक अदभुत कृति है। मोआ मर्तिन्सन्[२] भी उसी दृष्टिकोण से देहाती सर्वहारा वर्ग का अपनी कृतियो में अकन करती है। वह स्वय देहात का जीवन देख-जान चुकी है। जान फ्रिडगार्द[३] भी उसी दल का साहित्यकार है।

स्विडन मे एक पाँच तरुणो का दल है जिसके सदस्यो ने आलोचको को घनी मात्रा मे आकृष्ट किया। उनमे हैरी मार्तिन्सन[४] काफी समर्थ साहित्यकार है। उसने आधुनिक गद्य मे समुद्र सम्बन्धी कुछ सुन्दर प्रकाशन किये। १९४५ में प्रकाशित उसके कविता सग्रह ने उसे प्रतिभाशील कवियो की पक्ति मे खडा कर दिया। उसी दल का गुस्ताव सेन्टग्रेन[५] ने वर्तमानवादी कवि के रूप में पहले लिखना शुरू किया, फिर वह गद्य मे स्केच लिखने लगा। उस दल का वास्तविक प्रतिनिधि आर्थर लुण्डक्विस्त[६] है। उसने अपनी कविताओ मे उत्साहपूर्वक अकृत्रिम जीवन के आनन्द की प्रशसा की है। नैराश्य का उनमे कही नाम नही। फिर भी १९३० के बाद के अनेक कवियो मे कुठा और निराशा मूर्तिमान हुई है। निल्स फर्लिन[७] ऐसा ही निराशावादी कवि है, परन्तु उस दिशा मे जीवन की निरर्थकता का प्रतिपादन ह्यालमार गुलबर्ग[८] ने दार्शनिक की निष्ठा से किया। उसी निराशावादी चेतना के साहित्यकार जोहान्स एडफेल्ट[९] और कार्ल रागनर गिएरो[१०] भी हैं। पिछले काल के कुछ वर्तमान उपन्यासकारो में आचारवादी भी हुए है, जैसे ओले हेडवर्ग[११] हेराल्द वेइजर[१२] हैरी ब्लोमबर्ग[१३] और स्वेन स्तोलपे[१४]।

---

१ Ivar Lo-Johansson (जन्म १९०१), २ Moa Martinsson (Helge Svarts १८९०); ३ Jan fridegard (जन्म १८९७); ४ Harry Martinson (जन्म १९०४), ५ Gustav Sandgren (जन्म १९०४), ६ Arthur Lundkvist (जन्म १९०६), ७ Nils Ferlin (जन्म १८९८), ८ Hjalmar Gullberg (जन्म १८९८), ९ Johannes Edfelt (जन्म १९०४), १० Karl Ragnar Gierow (जन्म १९०४), ११ Olle Hedberg (जन्म १८९९), १२ Harald Beijer (जन्म १८९६), १३ Harry Blomberg (जन्म १८९३), १४ Sven Stolpe (जन्म १९०५)

स्विडन का साहित्य उत्तरी यूरोप के साहित्यो मे विशिष्ट स्थान रखता है। पिछले काल निम्नवर्गीय जीवन को जितना उसके साहित्यकारो ने आलोकित किया है, उतना दूसरे साहित्यो मे कम हुआ है। पिछले युद्ध-काल मे भी वहाँ के साहित्यकार अपने नात्सी विरोधी प्रयत्नो मे लगे रहे। नात्सी जुल्म के शिकार अनेक नार्वे और डेन-साहित्यकारो ने स्विडन मे ही शरण ली और वहाँ अपनी कृतियो का विकास किया था।

२६. हित्ती साहित्य

बोगजकोइ के खण्डहर

हित्तियो के अपूर्व साहित्य भडार के प्रतीक

हित्ती[1]—साहित्य को भी हम आज के अर्थ मे साहित्य नही कह सकते । परन्तु जो कुछ भी उस भाषा और लिपि मे उपलब्ध है उसका यहाँ कुछ हाल लिख देना समीचीन होगा। हित्ती, वैसे, हिन्द-यूरोपीय भाषा परिवार की ही एक शाखा है परन्तु उसकी लिपि और साहित्य अक्कादी (आसुरी-बाबुली) अथवा उससे भी पूर्ववर्ती सुमेरी से प्रभावित है।

अभी हाल तक तो पता भी न था कि हित्ती सस्कृति या इतिहास का भी कोई अपना अस्तित्व है। परन्तु अब पुराविदो के फावडे ने प्रभावित कर दिया है कि तुर्की (एशि-याई) साम्राज्य के एक बडे भाग के स्वामी हित्ती थे और उनका अपना साम्राज्य था जो प्राचीन काल के मध्य-पूर्व के साम्राज्यो में (ई० पू० १७ वी-१२ सदियो मे) तीसरा स्थान रखता था। उससे बडे साम्राज्य अपने-अपने समय मे केवल मिस्रियो और आसुरी-बाबु-लियो के ही रहे थे।

जर्मन पुराविद् ह्यूगो विंक्लर[2] ने प्राचीन हित्ती साम्राज्य की राजधानी बोग-जकोइ (प्राचीन का आधुनिक प्रतिनिधि) से खोद कर जब कीलनुमा अक्षरो मे लिखी प्राय बीस हजार ईंटें और पट्टिकाएँ रखदी तब हित्तियो के उस भडार का पता चला। भारत के लिए इन खोजो का बडा महत्त्व था क्योकि बोगजकोइ से ही मिली एक चौदहवी सदी ई० पू० की पट्टिका पर ऋग्वेद के इद्र, वरुण, मित्र आदि देवताओ के नाम "पदपाठ" (सिलेबिक लिखावट) मे मिले। पट्टिका हित्ती-मितन्नी दो राष्ट्रो के युद्धान्तर का सन्धि पत्र थी जिस पर साक्ष्य के लिए इन देवताओ के नाम दिए गए थे। इस अभिलेख ने आर्यो के सक्रमण-ज्ञान पर प्रभूत प्रकाश पडा है ।

हित्ती कब उठकर प्रबल हो गए यह कहना तो बडा कठिन है परन्तु इतना निश्चित है कि अट्ठारहवी सदी ई० पू० मे उनकी शक्ति का लोहा बाबुली और मिस्री दोनो साम्रा-ज्यो ने माना और फिलिस्तीन, एशिया माइनर, सीरिया और दजलाफरात के द्वाब पर उनका दबदबा बढा। उनका पहला साम्राज्य-काल सत्रहवी से पन्द्रहवी सदी ई० पू० तक रहा और दूसरा चौदहवी से बारहवी सदी ई० पू० तक ।

---

१. Hittite; २ Hugo Winckler

पूर्वी एशिया माइनर के स्थानीय निवासी "खत्ती" कहलाते थे। उन्ही के नाम से हित्ती या हत्ती शब्द निकला। परन्तु खत्ती न तो हित्तियो की भाँति हिन्द-यूरोपीय भाषा बोलते थे, न हित्तियो के रक्त सम्बन्धी थे। ई० पू० की तीसरी सहस्राब्दी मे कभी हित्तियो का एशिया माइनर के पूर्वी भाग में प्रवेश हुआ और उन्होंने स्थानीय सस्कृति की अनेक बातें अपना ली। बोगजकोइ से मिली पट्टिकाओ मे एक बडे महत्त्व की थी क्योकि इस पर कालम बनाकर बराबर सुमेरी, अक्कादी, हित्ती आदि भाषाओ के शब्द पर्याप्त दिए हुए थे। इससे यह भी पता चला कि किस प्रकार अनेक भाषाओ से हित्तियो का सम्पर्क था और उन्होंने उन सारी भाषाओ और उनके साहित्यो से सीखा और अपना ज्ञान भडार भरा। अनेक बार तो बाबुली आदि के साहित्य के लिपिपाठ हित्ती समानान्तर अनूदित साहित्य से शुद्ध किए गए हैं। प्रसिद्ध बाबुली काव्य "गिल्गमेश" के अनेक अश, जो पट्टिकाओ के टूट जाने से नष्ट हो गए थे, हित्ती पट्टिकाओ से ही पूरे किए गए।

हित्ती ऐतिहासिक साहित्य का अधिकाश राजवृत्तो से भरा है। लेखक वृत्त गद्य की साहित्यिक शैली में वृत्त लिखते थे और उनके नीचे अपना हस्ताक्षर कर दिया करते थे। इन वृत्तो मे अनेक प्रकार का ऐतिह्य है—असुर-बाबुली-मिस्री राजाओ और सम्राटो के साथ सुलहनामें, राजघोषणाएँ और राजकीय दानपत्र, नगरो के पारस्परिक झगडो मे बीचबचाव, विद्रोही सामन्तो के विरुद्ध साम्राज्य के अपराध-परिगणन, सभी कुछ इन हित्ती अभिलेखो में भरा पडा है। इनमे विशेष महत्त्व के वे अगणित पत्र है जो हित्ती सम्राटो ने दूसरे समकालीन नरेशो को लिखे थे या उनसे पाए थे। इन पत्रो को साधारणत अमरना (तेल-एल-अमरना) पत्र कहते है। प्राचीन काल की यह पत्र-निधि सर्वथा अद्वितीय और अनुपम है। इन पत्रो मे एक बडे महत्त्व का है। उसे हित्तियो के राजा शुप्पिलुलिउमाश[१] के पास मिस्र की मल्का ने लिखा था। उसमे मल्का ने लिखा था कि हित्ती नरेश कृपया अपने एक पुत्र को उसका पति बनने के लिए भेज दे। कुछ काल बाद राजा का एक पुत्र भेजा भी गया परन्तु मिस्रियो ने शीघ्र ही उसे पकड कर मार डाला।

बोगजकोइ के उसी लेखभाडार से एक बडा महत्त्वपूर्ण हित्ती और मिस्र के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सन्धिपत्र उपलब्ध हुआ। जब हित्ती नरेश मुत्तालिश की सेनाओ ने मिस्री विजेता रामसेज[२] द्वितीय की सेनाओ को १२८८ ई० पू० मे कदेश के युद्ध मे बुरी तरह पराजित कर दिया तब मुत्तालिश[३] के उत्तराधिकारी खुत्तुशिलिश[४] तृतीय और मिस्र राज के बीच सन्धि हुई। उसमें तै पाया कि मिस्र और हित्ती साम्राज्य के बीच बराबर मैत्री और पारस्परिक शान्ति रहेगी। ई० पू० १२७२ में इकरारनामा लिख डाला गया।

---

१ Shuppiluliumash (१३८५-१३५०), २ Ramesses (Rameses) II,
३ Muttalish ४ Khattushilish III,

उसमे १८ पैराग्राफ हैं और वह चाँदी की पट्टिका पर खुदा है। खोदकर वह रामसेज के पास भेजा गया था उसकी मुख्य शर्ते निम्नलिखित थो दोनो में से कोई दूसरे पर आक्रमण न करेगा, दोनो पक्ष दोनो देशो के वीच की पहली सन्धियो का फिर से समर्थन करते हैं, दोनो शत्रु के आक्रमण के समय एक दूसरे की सहायता करेंगे, विद्रोही प्रजा के विरुद्ध दोनो का सहयोग और राजनीतिक भगडो का परस्पर परिवर्तन। यह सन्धि इतनी महत्त्वपूर्ण समझी गई कि मिस्री और हित्ती रानियो ने भी परस्पर सन्धि की खुशी मे बधाई के पत्र भेजे। पश्चात् हित्ती नरेश की कन्या मिस्र भेजी गई जो सम्राट् रामसेज द्वितीय की रानी बनी।

वोगजकोइ की पट्टिकाओ पर २०० पैरो मे हित्ती कानून-विधान लिखा हुआ है। साधारणत हित्तियो की दण्डनीति आसुरी, बावुली, यहूदी दण्डनीति से कही मृदुल थी। प्राणदण्ड अथवा नाक-कान काटने की सजा शायद ही कभी दी जाती थी। कुछ यौन सम्बन्धी दण्ड तो इतने नगण्य है कि हित्तियो की आचार-चेतना पर विद्वानो को सन्देह होने लगा है। उस विधान का एक वडा अश राष्ट्र के आर्थिक जीवन से सम्वन्ध रखता है। उससे प्रगट है कि वस्तुओ के मूल्य, नाप-तोल के वटखरे पैमाने आदि निश्चित कर लिये गये थे। कृषि और पशुपालन-प्रधान सभ्यता की समस्याओ का उसमें आश्चर्यजनक मृदु-उपायो से हल हुआ है। कानून और न्याय के प्रति उसमे प्रगटित आदर वस्तुत अत्यन्त सराहनीय है। अनेक अभिलेखो मे महाई धातुओ के प्रयोग युद्ध-वन्दियो के प्रवन्ध, चिकित्सा और शालिहोत्र आदि पर हित्ती मे प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। मध्यपूर्व मे ही सम्भवत पहले-पहल अश्व का प्रयोग शुरू हुआ। उस दिशा में अश्व-विज्ञान पर पहला साहित्य (शालिहोत्र) मितनियो ने प्रस्तुत किया। उनसे हित्तियो ने सीखा और वे अपने पडोसियो तथा उत्तरवर्ती सभ्यताओ को सिखा गए।

इस साहित्य-भाण्डार मे सवसे अधिक भाग धर्म को मिला है। उसमे प्रगट है कि हित्तियो के देवताओ की सख्या विपुल थी और वे प्राय छह आत्याचारो ने लिये गये थे। ऊपर सन्धि पत्रो पर देवसाक्ष्य का उल्लेख किया जा चुका है। इन्ही सन्धिपत्रो पर देवताओ के नाम हैं जो सुमेरी-वावुली, हुर्री, लूवी, खत्ती, हित्ती और भारतीय है। उन देवताओ के अतिरिक्त हित्ती आकाश, पृथ्वी, पर्वतो, नदियो, कूपो, वायु और मेघो की भी आराधना करते थे।

पौराणिक अनुवृत्तिक साहित्य में प्राधान्य उनका है जो सुमेरी-बावुली से ले लिये गए है। हित्तियो मे वावुली आधार से अनूदित गिल्गमेश वडा लोकप्रिय हुआ। उस काव्य के अनेक खड अक्कादी हित्ती और हुर्री मे लिखे वोगजकोई ने उस अपूर्व भडार मे मिले थे। हुर्री मे लिखे "गिल्गमेश के गीत" तो पन्द्रह से अधिक पट्टिकाओ पर मिले थे। हित्तियो से ग्रीको ने गिल्गमेश का पुराण पाया।

जैसा ऊपर कहा जा चुका है कि हित्तियो का धार्मिक साहित्य प्रचुर था। उसमें भी अक्कादी साहित्य की ही भाँति सूक्त और गायन थे। मन्दिरो मे यज्ञ आदि पर जो क्रिया होती थी उसे पुरोहित पुरुप और नारी दोनो सम्पन्न करते थे। दोनो के नाम क्रियाओ मे लिखे जाते थे। मत्रदोप, प्रायश्चित, क्रिया सभी सम्बन्धी थे। अपनी सस्कृति के निर्माण मे जितना योग अन्य सस्कृतियो से सर्वथा उदारभाव से हित्तियो ने लिया उतना सम्भवत. और किसी जाति ने नही। कोष निर्माण का पहला प्रयत्न उन्होने ही अनेक भाषाओ के पर्याय एक साथ समानान्तर लिख कर किया। विविध भापाओ के समानान्तर पर्यायो से ही भाषा-शास्त्र की नीव की पहली ईंट रखी जा सकी, और वह ईट हित्तियो ने ही प्रस्तुत की। हित्तियो के अन्तकाल में आर्यग्रीको (डोरियनो) का आक्रमण ग्रीस पर हुआ और एशिया माइनर पर भी धीरे-धीरे उनका दबदबा बढा जब उन्होने ट्रॉय का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर नष्ट कर दिया। तब हत्ती राष्ट्रसत्ता निस्तेज होकर केवल अपने साहित्य के उपकरणों से ग्रीस के नवागन्तुको के पुराण भरने लगी।